

प्रकाशक—

श्रीविश्वदेव मुखोपाध्याय एम, ए
६६११ एफ, कार्नवालिस स्ट्रीट, ग्यामवाजार,
कलकत्ता—४

मुद्रक—

श्रीअन गकुमार मुखोपाध्याय
चलन्तिका प्रेस
२, रानी देवेन्द्रवाला रोड, पाइकपाड़ा
कलकत्ता—२

भूमिका

इस कोशमें विशेष रूपसे ठेठ बंगलाके शब्दोंकी ही व्याख्या दी गयी है। आधुनिक बंगला साहित्यमें कथित भाषाके जो संक्षिप्त रूप प्रचलित हो रहे हैं, वे भी साथ-साथ दिखा दिये गये हैं। बंगलामें प्रचलित हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओंके अनेक शब्द तथा कुछ संस्कृत, तत्सम, तद्भव, अपभ्रष्ट शब्द और विज्ञान, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद, ज्योतिष, छन्दशास्त्र, अलंकार, इतिहास, भूगोल आदिके भी अनेक शब्द इसमें सम्मिलित कर दिये गये हैं। हिन्दी और बंगला दोनों भाषाओंमें प्रचलित एक ही अर्थवाले संस्कृत शब्द प्रायः छोड़ दिये गये हैं।

वर्णानुक्रम

निम्नलिखित वर्ण-क्रमसे मूल बंगला शब्द सजाये गये हैं—

अ आ इ ई उ ए औ ऋ ॠ ऌ ॡ ः ञ। क ख ग घ ङ च छ ज झ ण ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न प फ ब भ व ष स य र ल श ष ङ ह।

स्वरवर्ण समास होनेके बाद (ः) अनुस्वार और (:) विसर्ग युक्त शब्द दिये गये हैं; जैसे—निडेमोनिश के बाद निःफान, निः; काउशानो के बाद काः।

ञ। एक स्वतन्त्र स्वर है। अ समास होनेके बाद इसे स्थान दिया गया है; जैसे—अशत्राव के बाद अं।। अन्य अक्षरोंमें स्वरवर्ण समास होनेके बाद इसका स्थान है; जैसे—मोश्म के बाद माः, डोंम डोंम के बाद डा, कोम के बाद का।

चंद्रविन्दु-रहित अक्षरके बाद उसी अक्षरका चंद्रविन्दु-युक्त शब्द दिया गया है; जैसे—कां, कां; कां, कां; कां, कां; कां, कां।

वर्गीय और अन्तस्थ दोनों व के शब्द एक ही साथ वर्गीय व के स्थानमें मिलित अकारादि-क्रमसे दिये गये हैं। व यदि दूसरे व्यंजनके आगे युक्त होकर वर्गीय व की तरह उच्चारित होता हो तो उसका स्थान भ के बाद ही रखा गया है, जैसे—कण्ठाव के बाद कथल, मथौति के बाद मथल; परन्तु यदि वह उस व्यंजनका केवल दुगुना उच्चारण मात्र कराता हो तो उस व का स्थान न के बाद ही रखा गया है, जैसे—अशत्रा के बाद अथ, भौ के बाद भव।

वर्ण-विन्यास

क ख ग घ के पूर्व (ः) अनुस्वार हो तो उसके स्थानमें विकल्पसे ङ होता है; जैसे—अशकाव अशकाव, मथौ। मथौ।, मथौ। मथौ।, मथौ। मथौ।; अनुस्वारके आगे ङ क व रहनेसे उसके स्थानमें ञ, ट ठ ड ढ रहनेसे न, उ थ द ध न रहनेसे न और भ क व ड म रहनेसे न होता है (अनुस्वार नहीं रहता); जैसे—भक, भाकाव, भका, वथ, थथ, नन, मथिविथ; कथ, भाकाव, मथिलन। य व ल (अन्तस्थ) व भ व ग ह के पूर्व अनुस्वार ही रहता है; जैसे—मथम, मथाम, अथ, भा।, वथ।

गाढ़ि, घटि, बड़ि, झड़ि आदिकी तरह आवकादि, झमिनादि, दकमादि, दोकानमादि, पाइठादि, पागनामि आदि संज्ञा-शब्दों को इस कोशमें ह्रस्व इ-कारान्त तथा अष्टमूथी, वड्डाथी, डागागानी, द्रमथी आदिकी तरह व्यावकाथी, झमिनाथी, दकमाथी, दोकानमाथी आदि विशेषण शब्दोंको दीर्घ ई-कारान्त रखा गया है। परन्तु अनेक लेखक इस नियमको नहीं मानते। कुछ पुस्तकमें इसकी उलटी रीति भी दिखाई पड़ेगी। वहाँ वह शब्द सज्ञा हो तो इस कोशमें सज्ञाका अर्थ और विशेषण हो तो विशेषणका अर्थ ही ले लेना चाहिये।

घाथी, ठाँथी, छेथी, न्वझी, भूझाथी, मान्नी आदि पेशा-सूचक संज्ञा-शब्दोंमें दीर्घ ई-कार ही अधिक प्रचलित है।

अधिकाथी (-दिन्), गृथी (-शिन्), वादमाथी (-शिन्), छथी (-छिन्) आदि इन भागान्त संस्कृत संज्ञा-शब्दोंके कर्ताके रूप दीर्घ ई-कारान्त हैं, परन्तु आगे कोई स्त्रीलिंगका प्रत्यय या संस्कृत विभक्ति, शब्द अथवा अक्षर युक्त हो तो ईन् के अन्तिम न् का लोप हो जाता है; इस कारण अन्तमें ह्रस्व इ-कार ही रह जाता है; जैसे—अधिकाथिनी, गृथिनी, श्छिनी; दकमादिर्द्ध, श्छिठिदिग्गा, श्छिप।

ठेठ वगला शब्दोंमें इ-कार, उ-कार का प्रायः खयाल नहीं किया जाता; जैसे—एकठि (-ठा), झमि (-थी), वाड़ि (-झी); श्छिठि (श्छि-), छुना (छु-), मकूर (-दू-), छेठ (छेठ), छेपत्र (छेपत्र), पिछन (पिछन), पिछन (पिछन), छिछन (छिछन)।

कम, कवा, कना; कनथ, कनथ, कनथि, कनथी; काडान, काडान, काडानी, काडानी, काडना, काडना; कथन, कथन, कथन, काशत्र, काशत्रो, कादथ, कादथो—इस प्रकार एक ही शब्दके प्रचलित विभिन्न वर्ण-विन्यास एक ही स्थानमें दिखा दिये गये हैं। लोग शिज को शिद, शिद को शिज, कथना को कथना आदि भी लिखते हैं।

अधिकांश रेफाक्रान्त वर्ण दुगुना लिखा जाता था, जैसे—चार्ल, कर्ध, धर्ध, कादी। परन्तु आधुनिक रीति एक वर्ण लिखनेकी है; जैसे—चूर्ध, नम, भूर्ध, निक्पर्ध। इस कोशमें दोनों प्रकारके रूप हैं।

अकार और आकार युक्त कुछ शब्दोंको कुछ अति आधुनिक लोग प्रायः ओकार युक्त करके बोलते और लिखते हैं, जैसे—नतून (नातून), कनिकार्ता (कानकार्ता), बर्छो (बोछो), बरिदात्र (बोदवात्र), छुछा (छुछो), शता (श्छो), दूषा (दूषो) आदि।

कोटो (कोटो), छछि (छछि, यक्ष किछू), द्वाङ्गो (द्वाङ्गो), बछि (बेछ), नतून (नतून), डिडि (दीदी), ठामाद (दामाद), काजत्र (कावशत्र), बोद्ध (बोद्ध), कद्ध (कतद्ध), निजि (नोड), दंदा (ग्राकदू), नाव (नाथव), झुछात्र (झुछात्र, घत तेरी), गेवाम (वाम), पिछिन (पिछि), झुछा (झुछा), केलोन (कोरून), छेन (अका), भूविभूद्ध (भोदभूद्ध), पिठि (पिठ), छिन (छिड), छिछेन (छिछाना), छान (छेन), छछाछि (छक्कछी), झण्णा (झण्ण), छेन (दवने), वूछेन (वूछेन), गेवन (गिवाछि) आदि बहुतसे शब्द कुछ प्रचलित होने पर भी अभी कोशमें स्थान पाने योग्य नहीं हैं।

रीति

बंगलाके हर एक मूल शब्दके आगे, सं (संज्ञा), वि (विशेषण) आदि व्याकरणका पद-परिचय है। जिस शब्दके उच्चारणमें विशेषता है उसका उच्चारण नागरी लिपिमें कोष्ठकके भीतर मूल शब्दके बाद ही है। पद-परिचयके आगे (—) डैश देकर व्याख्या दी गयी है। व्याख्यामें कहीं कहीं कोष्ठकके भीतर विशेष विशेष प्रयोग तथा समास-युक्त पद भी हैं। ऐसे स्थलोंमें मूल शब्द बार बार न लिखकर उसके स्थानमें (—) डैश दिया गया है; जैसे— शब्दमें (—पाठ्य, —छात्र, —भाषा), (नाम—) यहाँ शब्द पाठ्य, शब्द छात्र, शब्द भाषा; नामशब्द ऐसा समझना चाहिये। यदि व्याख्या समास होने पर (।) पाईके बाद (—) डैश देकर नया शब्द लिखा हो तो वहाँ भी उस डैशके स्थानमें मूल शब्द हो पढ़ना चाहिये, जैसे— उसी शब्दमें—(शोक, —रु, —विक, —विराज, —वाज। इस प्रकारके समास-युक्त पदके आगे यदि कोष्ठकके भीतर डैश मिले तो वहाँ वह समास-युक्त पद ही पढ़ना चाहिये, (केवल मूल शब्द नहीं); जैसे— वृष शब्दमें—(कथा (छोटे शब्द—) यहाँ (छोटे शब्द—) वृष कथा समझना होगा।

एक शब्दके भीतर यदि समासयुक्त सारे शब्द न मिले तो नीचे नया शब्द देखना चाहिये, जैसे— दो शब्दके भीतर नामना, नामश आदि हैं; परन्तु नामना, नामश आदि पृथक दिखाये गये हैं।

मूल शब्दके आगे कहीं कहीं उसके दूसरे रूप कोष्ठकमें (—) इस प्रकार समासचिह्न (हाइफेन) और कहीं कहीं (—) डैशके साथ संक्षेपमें दिये गये हैं; जैसे— वाटनै, (—नै, —नै); नफनै, (—नै)। यहाँ (वाटनै, वाटनै), (नफनै) पढ़ना होगा। कहीं कहीं कोष्ठक न देकर भी दूसरा रूप लिखा गया है; जैसे— शू, शू; ७५५५, ७५५५।

एकार्थक होनेपर मूल शब्दके आगे—इस प्रकार समान-चिह्न देकर दूसरा शब्द लिखा गया है; जैसे, शब्दक=शब्दक, शब्दक=शब्दक।

एक शब्दके क्रिया, संज्ञा, विशेषण आदि एकाधिक पद-परिचय हों तो प्रायः एककी व्याख्याके बाद (।) पाई देकर दूसरेकी व्याख्या दी गयी है; जैसे— शब्द क्रि, वि, सं; ७५ सं, वि आदि; कहीं कहीं ऐसे शब्दोंकी एकाधिक बार नये शब्द रूपसे भी व्याख्या की गयी है; जैसे— ७५, ७५, ७५, ७५ आदि।

किसी किसी शब्दका अगला आधा अंश कोष्ठकमें दिया गया है, जैसे— अवि (कृ), अन (कृ), अश (कृ) आदि। उसका आशय यह है कि, उन शब्दोंकी व्याख्याके भीतर जो (—) डैश देकर दूसरे शब्द लिखे गये हैं वहाँ उस (—) डैशके स्थानमें कोष्ठकके बाहर वाला प्रथमांश ही पढ़ना होगा, जैसे अवि, अवि; अन, अन; अश, अश; अश, अश।

एक मूल शब्दसे अनेक शब्द उत्पन्न होते हैं। उनकी व्याख्या प्रायः उस मूल शब्दके

भीतर ही दी गयी है, जैसे—पूजा शब्दके भीतर पूजक, पूजन, पूजाई, पूजात्री; वधन शब्दके भीतर वधक, वधमान, वधिष्ठ, वधिष् आदि।

क्रियाके केवल मूल कृदन्त रूप (जो क्रियार्थक संज्ञा और विशेषण भी है) इस कोशमें हैं। परन्तु बगलाकी पुस्तकोंमें एक एक क्रियाके अनेक रूप मिलेंगे। उनका मूल रूप खोज निकाल लेना आवश्यक है। जैसे—कचन, कचछ, कचिछिण, कचछ आदिका मूल रूप कच; इच्छ, इछेन, इच्छे, इच्छे आदिका मूल रूप इच्छ; गच्छ, गिच्छ, गच्छे, गिच्छिण आदिका मूल रूप गच्छ है। कोशमें इस मूल रूपके सामने कोष्ठके भीतर (क्रि परि ..) में जो संख्या नागरी लिपिमें लिखी है, परि (शिष्ट) में उस संख्या पर जिस क्रियाके रूप मिले उससे काल आदि मिलाकर उसी परिशिष्टकी पहली क्रिया कच के काल आदिसे मिलान करने पर उस क्रियापदका अर्थ या उच्चारण जाना जा सकता है।

किसी शब्दकी व्याख्याके बाद [ऐसे चिह्नके आगे जो शब्द मिले, समझना चाहिये कि वह निम्न शब्दकी व्याख्याका बाकी अंश है; जैसे—षड्नि में [मैंढक। अगवष में [असम्बद्ध, अडवंड।

कहीं कहीं व्याख्यामें केवल बंगाल बंगला भाषा या बंगाली जाति ही समझनी चाहिये; जैसे—शम देशाक्षी—चैत-वैशाखकी सन्ध्याकी आंधीपानी—यहां 'बंगालमें'; इस भूमिकाके प्रथम पृष्ठमें—या। एक स्वतन्त्र स्वर है—यहां 'बंगला भाषामें'; मृत्पाषाणाय—ब्राह्मणोंकी एक उपाधि—यहां 'बंगाली ब्राह्मणोंकी'—ऐसा समझना चाहिये।

उच्चारण

हिन्दीकी तरह धन मान गाह बाग आदिका अन्तिम अक्षर हलन्त उच्चारित होता है। इन शब्दोंके साथ दूसरा शब्द मिलनेसे भी प्रायः अन्तिम अक्षर हलन्त ही उच्चारित होता है; जैसे—गाहछनि, बागछाड़, माश्चबात्रा (कन)। परन्तु आगे संयुक्ताक्षर या संस्कृत शब्द आनेपर पिछले अक्षरका अकार उच्चारित होता है; जैसे श्रवच्छात्र, श्रावश्चान, कनक्षत्र, मनक्षत्र; श्रवक्षत्र, कनक्षत्र, श्रवक्षत्र, मनक्षत्र। परन्तु आगे ठेठ बंगला शब्द आनेपर पिछले अ-कारका हलन्त ही उच्चारण होता है। जैसे—भ्रवक्षत्र, मनक्षत्र, नक्षत्र, नक्षत्र, माश्चबात्रा। अनुस्वार और विसर्गके आगेके अक्षरका अकार उच्चारित होता है; जैसे—कक्षत्र, इक्षत्र।

जिस शब्दके अन्तिम अक्षरका अ-कार उच्चारित होता है उसके आगे कोष्ठके भीतर (-अ) ऐसा लिख दिया गया है। कुछ लोग ऐसे अ-कारका लघु ओ-कार-सा उच्चारण करते हैं, जैसे—इठ (-अ) कृतो, इण (-अ) कृतो, गड़गड़ (पड़-अपड़-अ) पड़ोपड़ो; कड़े (-अ) कटो, अछ (-अ) अन्तो, नरु (-अ) शको। संयुक्ताक्षरका अ-कार सर्वत्र उच्चारित होता है।

स गीतमें आवश्यकतानुसार अन्तिम अक्षरका अ-कार उच्चारित होता है; कहीं कहीं तो उस अ-कारका ओ-कार-सा भी उच्चारण होता है; जैसे—किरा जन जन (दलो दलो) कीरा अक्षर (-अ) लावनि धरनि बरिषे बाव।

जिस बंगला मूल शब्दके उच्चारणमें विशेषता है उसका पूरा था आंशिक उच्चारण उस शब्दक सामने कोष्ठकके भीतर नागरी लिपिमें लिख दिया गया है, जैसे—निशूल (निजुक्त-अ), अन्न (प्रस्न अ), वान (-नो), वन (-नशा) । इस अन्तिम शब्दमें न के अ-कारका स्पष्ट उच्चारण होता है—यही दिखाया गया है ।

तीन अक्षरवाले शब्दके अन्तिम अक्षर हलन्त उच्चारित हो तो प्रायः मध्यम अक्षरके अ-कारका उच्चारण होता है, जैसे—कात्र, जन, वन, वन, वन आदि । परन्तु अन्तिम अक्षरमें आ-कारादि की कोई मात्रा रहे तो अ-कारयुक्त मध्यम अक्षर प्रायः हलन्त उच्चारित होता है, जैसे—कन, जन, वन, वन, वन आदि । परन्तु वन, विप, वग, वान, वग आदि कुछ शब्दोंमें अन्तिम अक्षर मात्रायुक्त रहने पर भी मध्यमाक्षरका अ-कार स्पष्ट उच्चारित होता है, यह यथास्थान दिखा दिया गया है; जैसे—वन (-नशी), वन (-नशी) ।

चार अक्षरवाले शब्दका द्वितीय अक्षर अ-कारयुक्त हो तो वह प्रायः हलन्त उच्चारित होता है; जैसे—कात्र, वन, वन, वन, वन आदि । परन्तु सस्कृत शब्दोंमें प्रायः ऐसे शब्दोंके द्वितीय अक्षरका अकार उच्चारित होता है; जैसे—उपश, वन, वन, वन, वन आदि । चार अक्षरवाले शब्दोंका तृतीय अक्षर अ-कारयुक्त हो तो उसका भी स्पष्ट उच्चारण होता है; जैसे—आलो, वन, वन, वन, वन आदि ।

अन्तमें य या उ प्रत्यय रहनेसे उसके पिछले अक्षरका अ-कार उच्चारित होता है । जैसे—अव, वन, वन, वन, वन आदि ।

बंगलाके कुछ शब्दोंमें ए-कारका उच्चारण हिन्दीके ऐ-की तरह होता है, जैसे—अ, वन, वन, वन, वन आदि । परन्तु हिन्दीके उस ऐ के उच्चारणके अन्तमें जो य की ध्वनि निकलती है उसे छोड़कर उसके प्रथमांशका ही उच्चारण होता है ।

क, वन, नि, नः आदि शब्दोंके (ः) अनुस्वारका उच्चारण अल कार, अ ग आदिके अनुस्वारके समान है ।

बंगलामें दीर्घ स्वरोंका प्रायः ह्रस्वकी तरह उच्चारण किया जाता है । परन्तु गाने या पुकारनेमें सभी स्वरोंका आवश्यकतानुसार दीर्घ उच्चारण होता है । मूर्धन्य व का उच्चारण दन्त्य न की तरह तथा मूर्धन्य व और दन्त्य न का उच्चारण तालव्य श-की तरह है । परन्तु न या न के साथ अ, व या न लगनेसे और न के साथ उ या व लगनेसे उस न और न का उच्चारण स-की तरह होता है; जैसे—अ, वन, वन, वन, वन आदि । व का उच्चारण ज-की तरह है । परन्तु व यदि शब्दके बीच या अन्तमें रहे तो उसका रूप व ऐसा हो जाता है और उसका उच्चारण य की तरह ही होता है; जैसे—वन, वन, वन, वन, वन आदि । अ, वि, न आदि उपसर्गके आगे व हो तो उसके नीचे बिन्दी नहीं दी जाती और उसका उच्चारण ज-की तरह ही होता है, जैसे—अ, वन, वन, वन, वन आदि । दोनो व का रूप एकसा है और दोनोंका उच्चारण व-की तरह है । किसी व्यंजनके आगे व, न, या व आवे तो उस व्यंजनका केवल दुगुना उच्चारण होता है, जैसे—अ, वन, वन, वन, वन आदि ।

परन्तु, ऐवाष्ट, यवा, कथन, कथ, ऐवाप्त, ऐवाप्तन, ऐवाप्तग आदि कुछ विशेष विशेष शब्दों में उन अक्षरों का स्पष्ट व, म और ज की तरह उच्चारण होता है। इस कोशमें उनका यथास्थान उच्चारण दिखा दिया गया है।

कुछ शब्दों के उच्चारण-भेदसे अर्थमें भेद होता है, जैसे—कान (काल=समय; कल), कान (कालो=काला); जाठ (जात्=जाति); जाठ (जातो उत्पन्न); देवान (देवान्=दिलाते हैं); देवान (देवानो=दिलाना); नाम (नाम्=नाम, उत्तर); नाम (नामो=उत्तरो); जान (भाल=कपाल); जान (भालो=अच्छा); मठ (मत्=राय); मठ (मतो=तरह, तल्य) आदि।

जिस अक्षरमें उच्चारणकी विशेषता है उस श्रेणीके प्रथम शब्दमें ही प्रायः उच्चारण दिखाया गया है। उसके अनुसार उसके नीचेके शब्दों में भी वैसा ही उच्चारण जानना चाहिये। जैसे—नक, विक्रुत, यमकीर्ण, यद्व।

मेरा शरीर बहुत वृद्ध है, प्रायः अस्वस्थ रहता है। ग्रंथकोश कलकत्तेमें छपा है। कुछ अंशका प्रूफ मैं नहीं देख सका, इस कारण कुछ अशुद्धियाँ रह गयी हैं। अन्तमें शुद्धिपत्र देकर अशुद्धियोंके शुद्ध रूप दिखा दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दीकी कुछ मात्राएँ छपते समय दूट गयी हैं। पाठक उन्हें अपनी प्रतिमें शुद्ध कर लेनेकी कृपा करें।

व गला, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृतके कई कोशोंसे शब्द शब्दार्थ-प्रयोग-संग्रहमें मुझे सहायता मिली है, उनके लेखकों का मैं आभारी हूँ। लगभग ५० वर्षों तक निरन्तर हिन्दीकी सेवा करनेसे मुझे हिन्दीका जो थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ है उसीपर भरोसा करके मैंने बड़े ही सकोचके साथ इस कोशके प्रणयनमें हाथ डाला था। कहाँ तक सफल हुआ हूँ, उसके विचारका भार मैं सुविज्ञ पाठकों पर हो छोड़ता हूँ। उन्हें जा भूल-शुटियाँ दिखाई पड़ें निम्न पते पर मुझे सूचित करनेसे मैं आगामी संस्करणमें उन्हें शुद्ध कर दूँगा तथा सूचना देनेवाले विद्वानों का कृतज्ञ रहूँगा।

वाराणसी
३० जून, १९५७ ई०

गोपालचन्द्र चक्रवर्ती वेदान्तशास्त्रा

४७/१२८ रामापुरा, वाराणसी

संक्षिप्ताक्षर

अ, अन्य=अन्यथ

उप=उपसर्ग

क्रि=क्रिया

क्रि वि=क्रिया विशेषण

क्रि परि=क्रिया परिशिष्ट

पुं=पु लिंग

पूर्व=पूर्वकालिक क्रिया

प्र=प्रत्यय

प्रे=प्रेरणार्थक क्रिया

बहु=बहुवचन

वि=विशेषण

विभ=विभक्ति

स. स=सज्ञा

सर्व=सर्वनाम

स्त्री=स्त्रीलिंग

बंगला-हिन्दी-शब्दकोश

(बांग्ला-हिन्दी-शब्दकोश)

अ

अ-वर्णमाला का पहला अक्षर; अभाव
भिन्नता कमी आदि सूचक उपसर्ग; जैसे—
अक्षर, अक्षर, अक्षर, अनिश्चय आदि।

अरे, अरे, अरे सर्व-वह; वहाँ।

अक्षरी वि-उच्चारण, अक्षर से मुक्त, अक्षर-रहित।

अक्षर, अक्षर, अक्षर=अक्षर, अक्षर, अक्षर।

अक्षर (-अ) सं-अक्षर, भाग, हिस्सा, टुकड़ा;
भाग्य, भिन्न। अक्षर=अक्षर, अक्षर, अक्षर।
हिस्से में। अक्षर=अक्षर, अक्षर, अक्षर।
या विषयों में। अक्षर=अक्षर, अक्षर, अक्षर।
हिस्सा से।

अक्षर: क्रि वि-हिस्से के अनुसार; कुछ
अंशों में।

अक्षरी (-अ) वि-भाग करने योग्य, विभाज्य।

अक्षरी, अक्षरी वि-हिस्सेदार, साझेदार;
अंश पाने योग्य।

अक्षर (-अ) वि-विभक्त, भाग किया हुआ।

अक्षरी, अक्षरी वि-हिस्सेदार, अक्षरी।

अक्षर सं-किरण, अक्षर सूर्य की किरण, अक्षर;
अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर, अक्षर।

अक्षर सं-अक्षर; महीन कपड़ा।

अक्षर, अक्षर स-सूर्य की किरणें।

अक्षर, अक्षर स-सूर्य, दिवाकर।

अक्षर वि-उज्ज्वल, चमकदार। स-सूर्य।

अक्षर वि-विभक्त किया जानेवाला।

अक्षर (-अ) स-कंधा, अक्षर कंधा। —अक्षर,
—अक्षर स-अक्षर की चौड़ी हड्डी।

अक्षर वि-बलवान, हट्टाकट्टा, पुष्ट।

अक्षर वि-कांटा-रहित; निर्विघ्न, बाधा-रहित।

अक्षरी (-अ) वि-अनिवार्य अयोग्य न कहने
योग्य, अवर्णनीय; अश्लील।

अक्षर सं-अक्षर बुरी बात, अनुचित या अश्लील
बात; गाली।

अक्षर (-अ) वि-न कहा हुआ।

अक्षर (-अ) वि-न कहने योग्य; अश्लील;
प्रकट न करने योग्य।

अक्षर वि-निष्कपट, भोला, सरल, सीधा।

अक्षर (-अ) वि-स्थिर, अचल, स्पन्दन-रहित।

अक्षरी (-अ) वि-अक्षर न करने योग्य,
विवाह सम्बन्ध न करने योग्य।

अक्षर वि-निर्द्वय निर्द्वयी, निष्ठुर, बेरहम।

अक्षर (-अ) वि-करने के अयोग्य, अनुचित,
खराब।

अक्षर वि-न करने वाला, निष्क्रिय, हुकुमत न
करनेवाला; उदासीन।

अक्षर (-अ) सं-कर्तृत्व या उसके अभिमान
का अभाव।

अक्षर (-अ) सं-अक्षर कर्मका अभाव; अक्षर
बुरा काम, अपराध, कसूर, आलस्य, छुस्ती।

अक्षर वि-निष्क्रिय; कर्म-रहित; बेकार।

अकर्मण्य (-अ) वि—कर्म अकर्म अनाड़ी, निकम्मा, अयोग्य, सुस्त, आलसी ।

अकर्म वि—निकर्म बेकार ; निकम्मा, आलसी ।
सं—अनाड़ी या आलसी आदमी ।

अकर्मण्य (-अ) वि—निकर्मण्य कलंक-रहित ; वेदांग, निर्मल ; पवित्र ।

अकर्मण्य (-अ) वि—अकर्मण्य सच्चा, असली ।

अकर्मण्य सं—अमंगल, अशुभ ।

अकर्मण्य (अकर्मणात्) क्रि वि—एकाएक, अचानक ।

अकर्मण्य स—दुरा काम ; अनुचित कार्य, बुरा कार्य ।

अकर्मण्य (-अ) वि—भौंदू, बेचकूफ ; जाहिल ।

अकर्मण्य (-अ) वि—शुद्धिवादा अशुद्धिवादी युक्तिते खंडन करने के अयोग्य, न काटने योग्य ।

अकर्मण्य वि—अकर्मण्य न धराराया हुआ, सहनशील ।

अकर्मण्य क्रि वि—आसानी से, अनायास, बिना क्लेश ।

अकर्मण्य वि—निकर्म कामना-रहित, अनिच्छुक ।

अकर्मण्य=अकर्म ।

अकर्मण्य वि—अशुद्धिवादी शरीर-रहित । स—राहु ; परमात्मा ।

अकर्मण्य क्रि वि—अनर्थक बिना कारण ; कारण-रहित ।

अकर्मण्य (-ज-अ) सं=अकर्म ।

अकर्मण्य स—अयोग्य काल, अशुभमुहूर्त ; दुर्मिक्ष ।

—अकर्मण्य (-कुशाग्र-अ) वि—अकर्मण्य मालायक, निकम्मा । सं—कुलनाशक पुत्र ।

—अकर्मण्य (-पक-अ) वि—समयसे पहले पका ; अकर्मण्य पादा अचपनमें बड़ा-सा बर्ताव करने वाला । —आश्विन सं—असमय में जगाना ।

अकर्मण्य क्रि वि—अकर्मण्य असमय में, समय से पहले ।

अकर्मण्य वि—निःश गरीब ; दुःखी ; साधारण ।

अकर्मण्य वि—नगण्य, दृष्ट तुच्छ, ओझा ।

अकर्मण्य स—अकर्मण्य, अनाड़ी वदनामी । —अकर्मण्य वि—निन्दायोग्य ।

अकर्मण्य—घटना ; दगा । —अकर्मण्य, —अकर्मण्य स—जहाँ खून चोरी आदि घटना हुई हो ।

अकर्मण्य वि—अकर्मण्य, भोला, सरल ।

अकर्मण्य, अकर्मण्य (-अ) वि—अकर्मण्य ।

अकर्मण्य वि—निर्लोक निडर, भय-रहित ।

अकर्मण्य (-अ) वि—अकर्मण्य, अनुत्तेजित ।

अकर्मण्य स—अकर्मण्य जिस कुल के साथ विवाह-सम्बन्ध नहीं किया जा सकता, नीच कुल ।

अकर्मण्य, अकर्मण्य स—अकर्मण्य अभाव, कमी ।

अकर्मण्य स—अकर्मण्य अनभल, अहित । वि—अकर्मण्य ।

अकर्मण्य वि—अकर्मण्य तट-रहित, असीम । स—अकर्मण्य, विपत्ति, अथाह समुद्र । —अकर्मण्य स—अथाह समुद्र ; महान विपत्ति ।

अकर्मण्य (-अ) वि—न किया हुआ, असमाप्त ।

—अकर्मण्य (-अ) वि—नाकामयाव, असफल ।

—अकर्मण्य स—नाकामयावी, असफलता ।

—अकर्मण्य (-अ) वि—उपकार स्वीकार न करने वाला, कृतघ्न । —अकर्मण्य वि—अविवाहित, क्वारा ।

अकर्मण्य वि—जिसने अपराध नहीं किया है, निरपराध ।

अकर्मण्य (-अ) वि—अकर्मण्य असफल, नाकामयाव ।

अकर्मण्य (-अ) सं—अयोग्यता, असामर्थ्य ।

अकर्मण्य वि—अकर्मण्य, अनाड़ी, अनिपुण ।

अकर्मण्य (-अ) वि—अकर्मण्य, करने के अयोग्य ; अनुचित । सं—निन्दित कार्य, दुरा काम ।

अकर्मण्य वि—अकर्मण्य असली, सच्चा, मिलावट-रहित, वास्तविक ; पवित्र ; भोला ।

अकर्मण्य (-अ) वि—न जोता हुआ ; ऊसर ।

अक्षर वि—निकम्मा, अयोग्य, अनाड़ी, तुच्छ ।
 अक्षर—निपुणता का अभाव, अनाड़ीपन ;
 मनमुटाव, विरोध ।
 अक्षर स—मृत्यु, मौत । —गोला कि—मर जाना ।
 अक्षर स—अक्टुबर, अंग्रेजी दसवाँ महीना ।
 अक्षर (-अ) वि—पोता हुआ, चुपड़ा हुआ ।
 अक्षर वि—घीसे चुपड़ा हुआ ।
 अक्षर (-अ) वि—क्रिया-रहित, स्थिर ; आलसी ।
 अक्षर स—अनुक्ति कार्य, बुरा काम ; कार्यका
 अभाव । —चरण स—बुरा बर्ताव, अवध
 आचरण । —चित्त (अक्रियामित-अ) वि
 —कुरूपवत् बुरे काम में लगा हुआ ।
 अक्षर (-अ) वि—बाकावा महंगा ; खरीदने
 के अयोग्य ।
 अक्षर स—क्रोधका अभाव । वि—क्रोधहीन ।
 अक्षर वि—क्रोध-रहित ।
 अक्षर (-अ) वि—न थका । —जाते कि वि—
 न थककर ।
 अक्षर स—छान्तिका अभाव ।
 अक्षर स—छेश का अभाव । अक्षर कि वि—
 अनायास ।
 अक्षर (अक्षर-अ) सं—गोला पासा ; धुरा ; इन्द्रिय
 (अक्षर) । —काहि सं—अक्षरकाहि । —कौड़ा
 सं—पासे का खेल । —गुठ (-अ) सं—धुरा ।
 —गोला स—जपमाला, रुद्राक्षमाला । —द्वेष
 स—भुमण्डल के केन्द्र से दोनों ओर
 समानान्तर कल्पित रेखा, अक्षरेखा a line of
 latitude —गुठ (-अ) सं—माला का सूत ;
 माला ।
 अक्षर (अक्षर-अ) वि—घाव-रहित ; समूचा,
 अखण्ड । सं—अक्षत, चावल । —गोनि
 (-जोनि) सं—कुमारी जिस स्त्री का पुरुष-
 ससर्ग नहीं हुआ है ।
 अक्षर वि—असमर्थ, दुर्बल, अयोग्य ।

अक्षर सं—क्षमा का अभाव ।
 अक्षर (अक्षर-अ) वि—क्षय-रहित, नित्य, अविनाशी ।
 अक्षर सं—वर्ण, अक्षर, हरफ ; ब्रह्म । वि—सदा
 एकसा रहनेवाला, नित्य । —बोदक सं—
 विभिकर, भगिजीवी लेखक, मुन्शी, कर्क ।
 —भक्ति स—वर्णज्ञान । —गुठ (-अ)
 सं—वर्ण-सख्यानुसार छन्द । अक्षर स—
 शब्द से प्राप्त अर्थ, शब्दार्थ, वाच्यार्थ ।
 अक्षर (-अ) सं—अक्षरेखाओं के बीच का
 अंश a degree of latitude. —
 अक्षर वि—क्षार-रहित, नमक-हीन ।
 अक्षर (अक्षर) सं—छू, छाँख आँख, नेत्र ।
 —गोला सं—आँख का गोला । —काष्ठ सं—
 आँख का गढ़ा । —ताँका स—पुतली । —गो
 (-पक्ष-अ) सं—बरौनी । —डिक् सं—
 आँख का चिकित्सक ।
 अक्षर (-अ) वि—धुरेका, धुरा सम्बन्धी ।
 अक्षर (-अ) वि—अक्षर क्षोभ-रहित ; बिना
 दूटाफूटा, समूचा । [लगाना ।
 अक्षर स—क्षुधा का अभाव, भूख का न
 अक्षर (-अ) वि—क्षोभ-रहित, शान्त, स्थिर ।
 अक्षर सं—अमंगल ; दुर्भाग्य ; विपत्ति ।
 अक्षर स—क्षोभ का अभाव, शान्ति, स्थिरता ।
 अक्षरिणी स—एक बड़ी सेना जिसमें ६५६१०
 घोड़े, २१८७० हाथी, २१८७० रथ और
 १०६३५० पदल सैनिक हों ; अगणित सैन्य ।
 अक्षर स—अक्षर आक्सिजन गैस Oxygen
 अक्षर (-अ) वि—अक्षर बिना दूटा हुआ, समूचा ;
 प्रचण्ड (-अक्षर) । —गोला स—पूर्ण सख्या ।
 —नीत्र (-अ) वि—अक्षरिणी नीत्र परिवर्तित न
 होने वाला ; खण्डन करने के अयोग्य ।
 —गोला स—गोल ; सवैयापक ।
 अक्षर (-अ) वि—अविभक्त, बिना दूटा हुआ ।
 अक्षर वि—अक्षर निकम्मा, तुच्छ, ओढ़ा ।

अश्वनि (-अ), अश्व (अ) वि—न खोदा हुआ
(जैसे मील नदी समुद्र आदि) ।

अश्व (अ) वि—अश्व खाने के अयोग्य । स—
अस्वाद्य वस्तु, निषिद्ध खाद्य ।

अश्वि (-अ) वि—खेद-रहित, प्रसन्न, खुश ।

अश्वि वि—नम्र, नावहीन सब, सारा । सं—
ससार ।

अश्व (अ) वि—अप्रसिद्ध ; निन्दित, बदनाम ।

अश्वि वि—अप्रसिद्ध, जिसका नाम कोई
नहीं जानता ।

अश्वि स—यशवान् निन्दा, बदनामी । —रुद्र,
—इन्द्र वि—निन्दाजनक ।

अश्वि (-अ) वि—गंगा-रहित । —अश्वि स—
गंगा से दूर का प्रदेश ।

अश्वि-अश्वि स—अनाप-शनाप, अंडवड ।

अश्वि वि—अनगिनत, असंख्य ।

अश्वि (-अ) वि—न गिनने योग्य, असंख्य ।

अश्वि (-अ) वि—न गिना हुआ ; अनगिनत,
असंख्य ।

अश्वि (-अ) वि—अश्वि ।

अश्वि वि—गति-रहित, स्थिर ; निरुपाय,
असहाय ; मृतक-संस्कार-रहित ।

अश्वि क्रि वि—लाचार होकर, निदान ।

अश्वि वि—अश्वि ।

अश्वि (-अ) वि—न जाने योग्य ।

अश्वि वि—छिड़ला, कम गहरा ।

अश्वि वि—न चलने वाला । सं—पैड़ ; पहाड़ ।

अश्वि (-अ) वि—अश्वि न जाने योग्य ;
गूढ़, अवोच्य ।

अश्वि स—जिस स्त्री के साथ सम्भोग अनुचित
है । —शश्वि वि—व्यभिचारी ।

अश्वि स—अश्विजी अगस्त मास ।

अश्वि (-अ) स—अगस्त्य मुनि । —शश्वि स—
वगल सौर मास की पहली तिथि, इस

दिन की यात्रा अशुभ मानी जाती है क्यों कि
अगस्त्य मुनिने भाद्रपद की इसी पहली तिथि
को विन्ध्याचल से दक्षिण की यात्रा शुरू की
थी और वहाँ से वह फिर लौट न आये ।

अश्वि वि—वेवकूफ, भौंदा मूर्ख । —शश्वि वि—भौंदा ।

अश्वि वि—अति गलीब बहुत गहरा । —अश्वि
सं—बहुत अधिक धन ।

अश्वि स—अवगुण, दोष, ऐव । —शश्वि वि—
हानिकारक ।

अश्वि, अश्वि वि—अनगिनत, असंख्य ।

अश्वि वि—हलका । सं—एक सुगन्धित लकड़ी,
अगर ।

अश्वि (अगुप्त-अ), अश्वि (-अ) वि—अगूढ़, न
छिपा हुआ ; खुला हुआ । [अज्ञात ।

अश्वि वि—अदृश्य, इन्द्रिय के अग्राह्य ;
अश्वि क्रि वि—अनजान में, बिना जाने, गुप्त
रूप से ; पीठ पीछे ।

अश्वि वि—न छिपा हुआ, खुला हुआ ।

अश्वि (-अ) वि—न छिपाने योग्य ।

अश्वि वि—प्रधान, मुख्य ।

अश्वि क्रि वि—बिना विलम्ब, तुरत, शीघ्र,
जल्दी ।

अश्वि स—बदनामी, वेद्वज्जती ; अख्याति ।

अश्वि सं—आग, आँच ; पचाने की शक्ति ;
अग्निदेव । —अश्वि स—आश्विन का चिनगारी,
स्फुलिंग । —अश्वि, —अश्वि, —अश्वि स—

अश्वि-अश्वि मृतक-संस्कार, शवदाह ।

—अश्वि (-अ) वि—आग के समान ; बहुत
गमे ; बहुत खफा, आग-बबूला । —अश्वि

(-अ) स—अश्वि घरका जलना ; प्रचण्ड
आग । —अश्वि सं—दक्षिण-पूर्व कोना । —

अश्वि स—आग का खेल, आतिशवाजी । —

अश्वि (-अ) वि—भीतर आग वाला, आगभरा । सं—
आतशी शीशा । —अश्वि (अ) सं—वारुद ।

—अ (-अ), —आठ (-अ) वि—आग से उत्पन्न ।
 —अ (-अ) वि—घरमें आग लगाने वाला । —अ
 (-अ) वि—आग से जला या जलाया हुआ ।
 —आठ स—दाग देने वाला ; आग देने वाला ।
 —आठ (-अ) स—शवदाह ; आग से भस्म
 करण, भारी आग । —आठ (-दाह-अ) वि—
 आग से जलने योग्य । —अठ (-अ) वि—आग
 से पकाया हुआ, भुना हुआ ; जलाया
 हुआ । —अठ (-अ) स—आग से जला कर परीक्षा
 या सर्वाई की जाँच ; बहुत कठिन परीक्षा ।
 —अठ (-अ) वि—आगसा, अग्निमुल्य ;
 चमकदार । —अठ स—चक्रमणि आथर्व चक्रमक
 पत्थर । —अठ वि—हाजमा बढ़ाने वाला ।
 —आठ स—आग लगाने वाला वाण ; तोप
 बन्दूक राकेट आदि । —अठ स—आग की
 बवों, गोलों का लगातार गिरना । —आठ
 (-अ) स—मन्दाग्नि, बद्धजमी, अजीर्ण । —अठ
 वि—आगबबूला, आगे सा । —आठ (-अ) वि
 —बहुत महंगा । —आठ वि = अग्निगृहि । —आठ
 स—आग की लौ, ज्वाला । —अठ वि—
 आग से शोधा हुआ । —आठ स = अग्निकर्ष ।
 —अठ (-अ) स—अग्नि का मित्र, वायु । —अठ
 (-अ) वि—आग से न जलने वाला fire-
 proof. —आठ वि—आग में गिरा हुआ ;
 जलाया हुआ, भस्म । —आठ स—आठन
 गोशन आग का तापना । —आठ (-अ)
 स = अग्निर्ण ।

अध्यायः वि = अग्निगृहि ।

अध्याय (-अ) स—आग्नेय अस्त्र ; तोप बन्दूक
 राकेट आदि ।

अध्याय स—होलीका उत्सव ।

अध्याय, अध्याय स—ज्वालामुखी से आग
 का निकलना ।

अध्याय (-अ) वि—प्रथम, प्रधान ; आगे वाला ,

पहलेका ; नामी । स—सिरा ; अग्रभाग ;
 सामना ; नोक ; लक्ष्य ; आरम्भ । —अ (-अ)
 वि—पहलेका । स—अगुआ, नेता । —अ
 (-अ) वि—पहले नाम लेने योग्य, श्रेष्ठ,
 उत्तम । —आठ वि—आगे जाने वाला, अगुआ,
 नेता । —अ (-अ) वि—अथर्व आठ पहले जन्मा
 हुआ । स—बड़े भाई ; ब्राह्मण । —आठ स—बड़ी
 बहिन, दीदी, जीजी । —आठ स—पूर्वज्ञान,
 दूर दृष्टि । —आठ वि = अथर्व आठ । —आठ स—
 आठमें प्रथम दान लेने वाला, पतित ब्राह्मण ।
 —आठ स—अथर्व आठ सबसे पहले
 जाकर या आकर खबर देनेवाला, अगुआ ।
 —आठ स—आगा-पाछा, कामका आरम्भ
 और फल । —आठ वि—सामनेका, आगेवाला ।
 —आठ स—आगे का अंश, सामना ।
 —अठ वि—आगे बढ़ा हुआ । —आठ स—
 पहले से सूचना, पूर्वाभास । —अठ स—
 अज्ञान भाग अगहन ।

अध्याय (-अ-अ) वि—ग्रहण करने के अयोग्य,
 अमान्य, तुच्छ । स—उपेक्षा ।

अध्याय वि—प्रथम, प्रधान । स—पेशगी, अगाऊ ।

अध्याय वि—पहले ; आगे, सामने ।

अध्याय (-अ) स—पाप, दोष, अपराध ।

—आठ वि—पाप नाशक ।

अध्याय वि—असम्भव, नामुमकिन, न होने
 वाला । —आठ-अठिग्रही स—अघटन घटाने
 वाली ब्रह्मशक्ति माया ।

अध्यायौ (-अ) वि—असम्भव, न घटने योग्य ।

अध्याय (-अ) वि—न घटा हुआ, अभूत-पूर्व ।

अध्याय वि—गहरा (—निष्ठा), अघोर,
 बेहोश । स—शिव । —अठ स—अभक्ष्य
 खानेवाला सन्यासी, अवोरी ।

अध्याय (-अ) वि—न सूँघा हुआ, घ्राण न
 लिया हुआ ।

अञ्जन सं = अक्षयशत्रु ।

अक्ष (-अ) सं—अक्ष, संख्या, चिह्न, दाग, छाती, गोदी, नाटक का अंश । —कषा क्रि—हिसाब लगाना । —अक्ष (-अ) वि—गोदी में स्थित या प्राप्त, हस्तगत । —आनी सं—धाय, सेविका । —अक्ष सं—गुना, गुणन-क्रिया । —विश सं—अक्षशास्त्र, गणित, हिसाब । —अक्ष सं—भाग, विभाजन । —अक्षी (-लक्ष्मी) सं—पत्नी, स्त्री । —न सं—चित्रण, चित्र-निर्माण । —नौष (-अ) वि—चित्र खींचने योग्य । अक्षि (-अ) वि—चित्रित; चिह्नित, वर्णित, मुद्रित ।

अक्ष सं—अक्षुर, कौपल; प्रथम अवस्था । बीजाक्षराक्षर—बीज से अक्षुर और अक्षुर से बीज होने का सिद्धान्त ।

अक्षि (-अ) वि—अक्षुर निकला हुआ ।

अक्षिभ्रातृ सं—अक्षुर का निकलना ।

अक्ष सं—हाथी हाँकने का अक्षुर, रोक ।

अक्षक्ष (-अ) सं—अक्ष महावत ।

अक्ष (-अ) सं—अंग, शरीर का अक्ष, शरीर, देह (कामनाक्ष), अक्ष, उपकरण । —अक्ष (-अ) सं—आक्षेप, धैर्य अक्ष, सरोड़, ऐंठन ।

—अक्ष, —अक्ष सं—शरीर का संचालन, व्यायाम, कसरत । —अक्ष, —अक्ष सं—अंग-विच्छेद, किसी अंग का काट डालना ।

—अक्ष सं—अंग काटने वाला डाक्टर, जराह । —अक्ष (-अ) वि—आत्मज । सं—पुत्र, वेदा; लालसा । —अक्ष सं—अक्ष कवच, वकतर, जिरह । —अक्ष (-अ) सं—अक्ष धातुवन्द, वालि का पुत्र । —अक्ष सं—अक्ष आंगन, चौक । —अक्ष सं—महिला, नारी, स्त्री । —अक्ष सं—पूजा के समय हृदय मस्तक आदि का स्पर्श । —अक्ष (-अ) सं—शरीर के सारे अंग और उपांग ।

—अक्षि (-अ) सं—मरणाशौच-काल की

देहाशुद्धि दूर करने का एक संस्कार । —अक्षि सं—ऐंठन, सरोड़, आक्षेप, किसी अंग का विच्छेद हो जाना । —अक्षि सं—आक्षेप ऐंठन, सरोड़; हावभाव । —अक्ष, —अक्ष सं—अक्ष, हावभाव; सकेत, अंग हिलाकर मन के भाव का प्रकाश । —अक्ष सं—शरीर का मलना । —अक्ष सं—उबटन, शृंगार । —अक्ष (अ) सं—रोम, रोमाँ, ऊन । —अक्ष सं—उबटन । —अक्ष सं—शृंगार, शरीर की सजावट । —अक्ष सं—अक्ष सं—शरीर की सुन्दरता, खूबसूरती । —अक्ष सं—किसी अंग की हानि, किसी कार्य के एक अंश का पूरा न होना, त्रुटि । —अक्ष वि—अक्ष हीनांग, अपूर्ण, शरीर रहित । अक्षिभ्रातृ सं—गौण-मुख्य भाव, अक्षेय सवध, धनिष्ठता ।

अक्ष सं—ओढ़ना, चादर ।

अक्ष सं—आधवा अगारा, कोयला; कानि, स्याही, कलंक । —अक्ष सं—लकड़ी का कोयला carbon —अक्ष (-अ) वि—कोयला-सा काला ।

अक्ष (-अ) सं—एक तेजाब carbonic acid —अक्ष (-अ) सं—carbonic acid gas.

अक्ष वि—अक्ष वाला, शरीरी, प्रधान, मुख्य ।

—अक्ष, —अक्ष सं—स्वीकार, प्रतिज्ञा, ग्रहण ।

—अक्ष (-अ) वि—स्वीकृत, गृहीत । —अक्ष

(अ) वि—अंतर्गत, शामिल, शरीरस्थ ।

अक्ष सं—अंगूर, दाख ।

अक्ष, अक्ष सं—आणि अंगूठी, छला ।

अक्ष (-अ), अक्ष सं—अंगूठी ।

अक्ष, अक्ष, अक्ष सं—आधवा उंगली, अंगुली । —अक्ष क्रि—उंगली से इशारा करना ।

—अक्ष सं—उंगली की गाँठ । अक्ष (अ),

—काण सं—दरजी की उंगली में पहनने की टोपी, अंगुष्ठाना। —क्षनि सं—उंगली चटखने का शब्द, चुटकी की आवाज। —निर्दिष्ट सं—उंगली से प्रदर्शन। —अक्ष (-अ) सं—उंगली की गाँठों के भीतर का भाग। —फाटने सं—उंगली का चटखना।

अक्षर (-अ) सं—वृक्षान्ति, वृष्टि आदि अंगुठा।
अक्षराना, अक्षराना सं=अक्षरान्ति।

अक्षरित (-अ) वि—न चौंका हुआ, स्थिर, निडर।
अक्षर वि—न चलने वाला, गति-रहित, स्थिर, स्थावर।

अक्षरित (-अ) वि—न चबाया हुआ।

अक्षर—न चलने वाला, स्थिर, अटल, दृढ़। सं—पहाड़। —छका सं—छोटा रूपया। —गजात्र सं—गृहस्थी का निर्वाह कठिन, न चलने वाला व्यापार। —ति वि—अप्रचलित। —न सं—अप्रचलन, अव्यवहार। —नौव (अ) वि—न चलने योग्य।

अक्षर सं—श्रुति पृथ्वी। —उक्ति सं—न डिगने वाली दृढ़ भक्ति।

अक्षरिणी (-अ), अक्षरिणी (-अ) वि—चिकित्सा के अयोग्य, असाध्य।

अक्षरि, अक्षरि वि=अक्षरि।

अक्षरिणी (-अ) वि—चिन्तन के अयोग्य, अज्ञेय, दुर्बोध।

अक्षरित (-अ), अक्षरितार्थ (-अ) वि—पहले से न विचारा हुआ।

अक्षरि (-अ) वि—चिन्तन के अयोग्य, अकल्पनीय।

अक्षर (-अ) वि—अस्थायी, शीघ्र, जल्दी।
—काल सं—अल्प समय। —कालशक्ति वि—थोड़े समय में। —क्षिप्र (-अ) वि—देर न लगाने वाला, फुर्ती से काम करने वाला, शीघ्रकारी।
—शक्ति सं—बिजली, विद्युत्। —शारी वि—

अस्थायी, बहुत दिनों तक न ठहरने वाला।
अक्षरि क्रि वि—थोड़े समयमें, एकाएक, सहसा।

अक्षरि क्रि वि—शीघ्र, तुरंत, क्षणभरमें।

अक्षरित (-अ) वि—चिह्न न किया हुआ।

अक्षरित वि—जड़, चेतना-रहित।

अक्षरि वि—अप्रतिष्ठित अनजान, अज्ञात।

अक्षरि (-अ) वि—चेष्टा-रहित।

अक्षरित (-अ) वि—जिसके लिए कोई चेष्टा न की गयी हो।

अक्षरित (-अ) वि—चेतना रहित, मूर्छित, बेहोश।

अक्षर (-अ) वि—शुद्ध पारदर्शक, साफ, पवित्र।

अक्षर वि—छत-रहित, आवरण रहित, उधारा, पत्र रहित।

अक्षर (-अ) वि—छेद-रहित, ठोस, दोष रहित।

अक्षर (-अ) वि—न कटा हुआ। —शक् वि—लिंग की अप्रत्यक्षा न कटा हुआ।

अक्षर वि—अस्पृश्य, अद्भुत।

अक्षर (-अ) वि—न काटने योग्य, अलग होने के अयोग्य।

अक्षर (-अ) वि—न हटने वाला, अविनाशी।
सं—विष्णु विष्णु, कृष्ण।

अक्षर सं—बली, नावालिग की सम्पत्ति का प्रबन्धकर्ता। [मिस।

अक्षरि सं—छूला, अक्षरित वहाना, हीला,

अक्षर सं—क्षण बकरा। वि—बिलकुल। —

भाड़ा सं—बिलकुल दिहात। —भाड़ा सं—

सं, वि—बिलकुल दिहाती, उजड़, गँवार। —वृक्ष

वि—वेवकूफ, भोंदू। —वृक्ष वि—बिलकुल

मूर्ख। —गत्र सं—अजदहा, अजगर।

अक्षर (-अ) वि—जन्म-रहित, अनादि। सं—

ईश्वर, ब्रह्म, परमात्मा।

अक्षर वि—बहुत, प्रचुर, यथेष्ट।

अक्षर सं—फसल का न होना, अकाल।

अक्षरा स—ज्वास, साँस, ज्वास के साथ मंत्र का जप ।

अक्षर स—श्राद्धहार, पराजय, सन्ताल परगने की एक नदी ।

अक्षर वि—जरा-रहित, अविनाशो । अक्षराम्र वि—जरा-मृत्यु-रहित, नित्य । [अविक ।

अक्षर (-अ) क्रि वि—लगातार, निरंतर । वि—बहुत अक्षर स—शायनी बकरी ।

अक्षर (-अ) वि—न जन्मा हुआ । —अक्षर वि—शत्रु रहित । स—युधिष्ठिर । —अक्षर (शस्त्र) वि—जिसकी दाढ़ी निकली न हो । स—बालक, किशोर ।

अक्षर (-अ) क्रि वि—अनजान में ।

अक्षर, अक्षरानि (-अ) वि—अनजान । अक्षरानिडावे, अक्षरानि क्रि वि—अनजान में ।

अक्षर (-अ) वि—न जीता हुआ ।

अक्षरानि (-अ) वि—इन्द्रिय-परवश, कामुक, विषयी ।

अक्षर स—अक्षर मृगदाला । [मंडक ।

अक्षर (-अ) वि—जीम-रहित । स—

अक्षर (-अ) वि—न पचा हुआ । स—बद्धजमी ।

अक्षर स—नमाज के पहले हाथ-पैरों का घोना ।

अक्षर स—उज्र, बहाना, हीला ।

अक्षर (-अ) वि—जीतने के अयोग्य अजेय ।

अक्षर (-अ) वि—जो जीव से उत्पन्न न हुआ हो inorganic

अक्षर (अग्र-अँ) वि—मूर्ख वेवकूफ, नासमझ ।

अक्षर स—मूर्खता, नासमझी । —अक्षर वि—मूर्खताजनित ।

अक्षर (-अ) वि—अक्षराना न जाना हुआ, अविदित, गुप्त । —अक्षरानि वि—जिसका कुल-शील अज्ञात है । —अक्षरानि वि—जिसका नाम ज्ञात नहीं है । —अक्षर स—गुप्त रूप से निवास । —अक्षर स—अज्ञात सख्या (बीजगणित में) ।

—अक्षर, अक्षरानि क्रि वि—अनजान में, गुप्त रूप से ।

अक्षरानि वि—वेहोग मूर्खित ; मूर्ख, नासमझ । स—अज्ञता, मूर्खता, माया (दर्शन में) । —अक्षर

(-अ) वि—अनजान में किया हुआ । —अक्षर

(-अ) वि—अज्ञान से उत्पन्न । —अक्षर क्रि वि—

अज्ञान से, अनजान में । —अक्षर (-अ) स—

अज्ञान, मूर्खता । —अक्षर स—ससार का मूल

तत्त्व अज्ञेय है —ऐसा मत agnosticism.

अक्षरानि वि—मूर्ख, नासमझ ।

अक्षरानि क्रि वि—अनजान में ।

अक्षर (-अ) वि—न जानने योग्य, ज्ञानातीत, अज्ञेय । —अक्षर स—अक्षरानिवाद ।

अक्षरानि क्रि वि—लगातार (—अक्षर, —अक्षर) ।

अक्षर स—साड़ी या चादर का सिरा, पछा ;

प्रदेश, प्रान्त । —अक्षर स—पत्नी का प्रभुत्व ।

अक्षर स—छरमा, काजल, स्थाही, विविध

घातुघटित आयुर्वेदीय औषध (ब्रह्मण, नीलाक्षर) ।

अक्षरानि स—विलनी ।

अक्षरानि स—ब्रह्मण अंजलि, अजलिपूर्ण

फूल-तुलसी आदि । —अक्षरानि क्रि वि—हाथ जोड़

कर । —अक्षर (-अ) वि—कृतांजलि, हाथ

जोड़ा हुआ ।

अक्षरानि स—अक्षर सभा, समिति, मजलिस ।

अक्षरानि, अक्षरानि—सं वन, अरण्य, जंगल ।

अक्षरानि वि—अचल, स्थिर, दृढ़ ।

अक्षरानि वि—बाल समूचा, न दूदा हुआ ।

अक्षर (-अ) वि—ऊँचा । स—महल, इमारत ।

—अक्षर स—बड़ी जोर आवाज । —अक्षर, —

अक्षर, —अक्षर (-अ) स—छाका, ऊँची हँसी ।

अक्षरानि स—अक्षरानि महल, इमारत ।

अक्षरानि वि—प्रचुर, यथेष्ट, उत्तर देने के अयोग्य ।

अक्षर, अक्षर स—अक्षर की दाल ।

बलम वि—प्रचुर, यथेष्ट । क्रि वि—बहुतायतसे ।
अनिम स—सूक्ष्मता, योग की एक विभूति
जिससे कहा जाता है कि शरीर अणु के
समान बनाया जा सकता है और लोगों
को दिखाई नहीं पड़ता ।

अणु स—कण, अणु, जरा । —अध्याय स—अध्याय
का एक अंश paragraph. —दर्शन स—सूक्ष्म-
दर्शक यंत्र Microscope —बटिका स—बहुत
छोटी गोली । —बाद स—परमाणुओं से
संसार की सृष्टि—ऐसा सिद्धान्त । —बोझ
स=अवभरण । —बाज (-अ) वि—कणा
मात्र, बहुत थोड़ा । क्रि वि—कुछ भी, बिल्कुल ।
बड (-अ) स—डिम अंदा, अंडकोष, फोता ।
—कावस—फोता । —अ वि—अंडे से पैदा होने
वाला । —अ धानी स—मछली मेंढक आदि ।
—अर वि—अंडा देनेवाला, अंडा पैदा करने
वाला । —अरि स—फोते में पानी उतरने का
रोग Hydrocele.

अशकार, अशक्ति वि—अंडे के आकार का ।
अशय स—गर्भाशय, अंडाशय Ovary.
अठ (-अ), अठो वि—अष्टाश्रित, उत्तना ।
—अला वि—उतने । —अ क्रि वि—अष्टाश्रित
अतः, इसलिए । —अ (-अ) वि—अशक्त
मिथ्या, झूठा । स—झूठ । —अवादी,
—अवादी वि—विश्वावादी झूठा । —अ वि—
शरीर-रहित । स—कामदेव । —अ (-अ),
—अ (-अ) वि—तद्राहीन, सजग, सावधान ।
—अ (-अ) स—कुतर्क, वृथा बहस । —अ (-अ)
(-अ) वि—तर्क करने के अयोग्य, निश्चित ।
—अ (-अ) वि—पहले से विचार न किया
हुआ । —अ, —अ अवश्य,
—अ डाव क्रि वि—असावधान अवस्थामें,
अवानक, एकाएक । —अ वि—अशक्त बहुत
गहरा, अगाध । —अ (-अ) वि—

जिसका तला छा न जा सके, अगाध ।
—अ (-अ) वि—वह सब (—अनि ना) ।
—अ स—अति तीसी, एक पीला फूल ।
अशय (अतप्पर) क्रि वि—अशय अतः उसके
बाद, अनन्तर, तत्पश्चात् ।

अशक्त स—अतलांतक Atlantic Ocean
अति वि—अतिशय, अत्यंत अति, बहुत, अधिक ।
—अ वि—विशाल शरीर वाला । —अ स—
—लघन, अतिक्रमण । —अ (-अ) वि—
लघन या अतिक्रमण करने योग्य । —अ
(-अ) वि—लघन या अतिक्रमण किया हुआ,
गत, बीता हुआ । —अ स—किसी की
मृत्यु के बाद का जीवन survival.
—अ (-अ) वि—दूसरे स्थान से प्राप्त,
आरोपित धर्मयुक्त, प्रबलतर आदेश
द्वारा पूर्व आदेशसे मुक्त । —अ स—
एक के गुणका दूसरे पर आरोप । —अ
स—यापन (कानातिशय), उल्लंघन,
हानि । —अ स—महापाप । —अ
वि—महापापी । —अ (-अ) स—लक्षण
का लक्ष्य से बाहर गमन, अत्युक्ति, बहुत
अधिक चर्चा, अतिशयोक्ति । —अ (-अ)
वि—अनैसर्गिक, अलौकिक । —अ स—
—अतिक्रमण, लघन । —अ (-अ) वि—
लंघने के योग्य । —अ (-अ) वि—लंघा
हुआ, अतिक्रान्त । —अ वि—बहुत बलवान ।
—अ स—बहुत अधिक घमंड; बहुत
वृद्धि । —अ स—यापन (कानातिशय) ।
—अ (-अ) वि—बिताया हुआ । —अ
अतिशय (-अ) स—दादा का परदादा ।
—अतिशय (-अ) स—दादा की परदादी । —
अतिशय (-अ) स—नाना का परदादा ।
—अतिशय (-अ) स—नाना की परदादी ।
—अति स—लक्षण का लक्ष्य से बाहर गमन ।

[अतिथि]

—छक्ति सं—बनावटी भक्ति । —उवाकांक्ष

(-अ) वि—बहुत अधिक बोझ लादा हुआ ।

—मात्र (-अ) वि—यथार्थ बहुत अधिक ; मात्रा से अधिक । —मान सं—बहुत अधिक घमंड, शेखी । —मानव, —मायव वि—मनुष्य-लोक

से अतीत, अलौकिक superhuman

—व्रक्ष सं—बहुत अधिक मिथ्या का रंग चढ़ाया हुआ वर्णन, अत्युक्ति । —व्रक्षित

(-अ) वि—मिथ्या का रंग चढ़ा कर वर्णित ।

—व्रथ सं—एक बड़ा सेनापति जो अगणित शत्रुओं से एक ही समय लड़ सकता हो ।

—व्रिष्ठ (-अ) वि—यथार्थ अधिक, ज्यादा (-गत्रम) । —व्रिष्ठ सं—आधिक्य

अधिकता, बहुतायत । —व्रिष्ठ वि—यथार्थ

अधिक, ज्यादा । —व्रिष्ठालि सं—बढ़ाकर

वर्णन, एकअल कार । —व्रिष्ठ (-अ) वि—अधीर,

चंचल, घबराया हुआ । —व्रिष्ठ सं—उदरामय, पतला दस्त ।

अतिथि सं—मेहमान, पाहुना । —माना सं—अतिथियों के ठहरने का मकान, धर्मशाला ।

—मन्दा सं—मेहमानदारी, आतिथ्य ।

अतीत (ख-अं) वि—भोधरा, कुन्द ।

अतीत (-अ) वि—विगत होता हुआ । सं—भूतकाल । [योग्य ।

अतीति (-अ) वि—इन्द्रिय से न जानने

अतीत (-अ) वि—यथार्थ बहुत अधिक ।

अतुल, अतुलनीय (-अ) वि—तुलनारहित, अनुपम ।

अतुल (-अ) वि—तुलिरहित, असन्तुष्ट ।

अतुल सं—असन्तोष, तुल्य का अभाव ।

अतुल, अतुल (-अ) वि—बहुत अधिक ।

अतुल सं—नाश, मृत्यु ; अभाव ; अतिक्रमण ।

अतुल (-अ) वि—बहुत थोड़ा । [दुराचार ।

अतुल सं—अतुल ज्यादाती, तुल्य ;

अतुल वि—अत्याचार करने वाला ; दुराचारी ।

अतुल (-अ) वि—न त्यागने योग्य ।

अतुल वि—अधिक आवश्यक, बहुत जरूरी ।

अतुल (-अ) वि—बहुत विलक्षण, बहुत आचमने का ।

अतुल (-अ) वि—बहुत आसक्त ।

अतुल सं—बहुत आसक्ति । [आसक्त ।

अतुल (-अ) वि—बहुत निकट का, अति

अतुल सं—अतिभोजन । अतुल वि—अतिभोजी । [अतिशयोक्ति ।

अतुल सं—बढ़ाचढ़ाकर कही हुई बात ;

अतुल (-अ) वि—बहुत क्रोधी ; बहुत तीखा ।

अतुल वि—बहुत चमकीला, अति उज्ज्वल ।

अतुल (-अ), अतुल वि—अति उत्तम, बहुत उमदा ।

अतुल (-अ) वि—बहुत गरम ।

अतुल (-अ) वि—अतुल यहाँ, इस जगह ।

—अतुल (-अ) वि—अतुल यहाँ का । —अ

(-अ)=अतुल ।

अतुल (-अ) वि—अनन्तर, बाद, पश्चात् ।

—अतुल वि—अगाध, बहुत गहरा । —अतुल (-अ)

अतुल—अतुल तथापि, तोभी ; परन्तु । —अतुल

अतुल—या, किवा, अथवा । —अतुल (-अ) वि

—अतुल सं—अतुल वेद ।

अतुल वि=अतुल । [के अयोग्य ।

अतुलनीय (-अ), अतुल (-अ) वि—सजा

अतुल सं—भोजन, भक्षण, खाने की क्रिया ।

अतुल (-अ), अतुल वि—दन्तहीन, दाँतरहित ।

अतुलनीय (-अ), अतुल (-अ) वि—दमन के अयोग्य, अजेय ; बहुत प्रबल ।

अतुलनीय सं—परिवर्तन, हेरफेर ।

अतुलनीय (-अ), अतुल (-अ) वि—जलाने के अयोग्य ।

अधिष्ठि स—पृथ्वी ; एक दक्ष-कन्या, देवमाता ।
—नमन स—देवता ।

अग्नि स—बुरा दिन, सकट का समय ।

अद्भुत स—थोड़ी दूर, निकट । —दृष्टि स—
भविष्य दृष्टि का अभाव, नासमभी ।
—दर्शी वि—भविष्य न देख सकने वाला ;
नासमभी । —दर्शी वि—निकट का । —ह
(-अ) वि=अद्भुतदर्शी । अद्भुत क्रि वि—निकट,
थोड़ी दूर पर ।

अदृष्टि(-अ) वि—दोषरहित, शुद्ध, पवित्र । [गायब ।
अदृष्ट (-अ) वि—न दिखाई पड़ने वाला ;
अदृष्ट (-अ) वि—न देखा हुआ । स—भाग्य,
नसीब, तकदीर । —कर्म क्रि वि—भाग्य से ;
अचानक । —उत्तर, —पूर्व (-अ) वि—पहले से
न देखा हुआ । —परीक्षा (-कृत्वा) स—भाग्य
की परीक्षा । —वशः क्रि वि—भाग्यानुसार,
नसीब से । —वान स—भाग्य से ही सब कुछ
होता है ऐसा सिद्धांत । —वादी वि, स—
भाग्यपर सम्पूर्ण भरोसा रखने वाला,
भाग्यपरायण । —वान वि—भाग्यवान,
किस्मतवर । [हुआ, अदृष्ट ।

अदेखा (अदेखा) वि—अनदेखा, बिना देखा
अदेख (-अ) वि—देनेके अयोग्य ।

अदृष्ट वि—विश्वकर्मा विलक्षण, आश्चर्यजनक,
अनोखा ; बेढगा । —कृत्वा वि—असाधारण
कार्य करने वाला ।

अद्य (-अ) क्रि वि—आज ; अब । —का वि—
आजिकार आजका । —तन वि—आज होने
वाला, आज का, अभी का । —अद्यत् क्रि वि
—आज से ।

अद्यापि क्रि वि—आज भी, अभी तक ।
अद्यावधि क्रि वि—आज तक ; आज से ।

अधि स—पहाड़, शैल, पर्वत । [शान्ति ।

अध्याश (-अ) स—बद का अभाव, अहिंसा ,

अध्याशै वि—अहिंसक, डाह न करने वाला ।

अध्व (अध्व) वि—अधितीय, अद्वितीय । स—
ब्रह्म । —वान स—अद्वैतवाद, ब्रह्मवाद, एक ही
ब्रह्म की कल्पना, से ससार की सृष्टि ऐसा
सिद्धान्त । —वादी वि, स—अद्वैतवादी ।

अधितीय (-अ) वि—वेजोड़, तुलना-रहित, एक
ही ; दूसरी-सत्ता-रहित । स—ब्रह्म । एकगवा-
धितीय वि—केवल एक ही, सर्वेसर्वा । स—
ससार का एकमात्र कारण ब्रह्म ।

अद्वैत (-अ) वि—द्वितीय-रहित, अद्वितीय । स—
ब्रह्म । —वान स—अध्ववाद । —वादी वि,
स—अध्ववादी ।

अधः क्रि वि—नीचे, तले, भीतर । —का (-अ)
स—पेड़ का जमीन के भीतर वाला तना । —
का स—शरीर का निचला भाग । —कृत (-अ)
वि—नीचे फेंका या उतारा हुआ ; पराजित ।
—कर्म स—नीचे की ओर का 'सिलसिला,
निम्नक्रम । —क्रिष्ठ (-क्रिस्त-अ) वि—नीचे
फेंका हुआ ; पेदी में तलछट के रूप में जमा
हुआ । —कृष (-कृषेप) स—तलानि तलछट ।
—कृष (-कृषेपन) स—नीचे निक्षेप । —गतन

स—नीचे पतन, अवनति ; दुर्दशा, नीचता,
चरित्रहीनता । —गतन वि—नीचे गिरा हुआ,
अवनत, नीचता प्राप्त । —गतन स—अधःगतन ।
—गतन वाक्य क्रि—चरित्रहीन होना ; आवारा
हो जाना ; भरसाई में जाना ; नष्ट होना ।
—गतन वि—नीचे गिराया हुआ । —गतन
वि—निर्लज्ज, वेहया, आवारा । —ह (-अ),
—क्रिष्ठ (-अ) वि—नीचे का, निम्नस्थ ।

अधम वि—नीच, बुरा, दुराचारी । [देनदार, ऋणी ।
अधम (-अ) स—जनादात्र, शत्रु कर्जदार,
अधमात्र (-अ) स—नीचे का अंग, पैर ।
अधमाधम वि—अधम से भी अधम ।
अधम स—नीचेका होंठ ; ओठ । —अधम स—

नया पल्लव-सा होंठ । —नक्ष, —नक्ष, —नक्ष,
 अक्षदानक (अ) सं—बहु थूक ।
 अक्षदानक (अ) सं—नीचे का होंठ ।
 अक्ष (अ) सं—अन्याय, पाप, कुकर्म ।
 अक्षवि—अन्यायी, पापी ।
 अक्षदानक सं—दुराचार, पाप ।
 अक्षदानक वि—अक्षदानक ।
 अक्षवि—अधार्मिक, पापी ।
 अक्ष (अ) वि—धर्मविलुद्ध, पापजनक ।
 अक्ष सं—चोर, सेंध लगाने वाला ।
 अक्ष वि—निवृत्त, नीचे का (—अक्षदानक) ।
 —अक्ष सं—वशज, नीचे की पीढ़ी ।
 अक्षवि—अक्षवि ।
 अक्ष वि—अधिक, बहुत, ज्यादा । —अक्ष वि
 —सबसे अधिक । —अक्ष वि—दो वस्तुओं में
 अधिक ।
 अक्षि (अक्ष) वि—आरंभ और भी, उसके
 ऊपर । —अक्ष सं—आधार, पात्र, स्थान;
 दखल; अधिकरण कारक; विचारालय,
 न्यायालय (अक्षविद्वान्) । —अक्षि सं—
 विचारपति, न्यायाधीश । —अक्षि सं—निरीक्षक,
 अध्यक्ष, सचालक । —अक्षि सं—अक्षि जग
 अधिक अक्ष, ज्यादा हिल्ला । —अक्ष
 सं—स्वत्व, स्वामित्व, हक; दावा, दखल,
 कब्जा; प्रभुत्व; जानकारी, ज्ञान; शक्ति;
 इलाका । —अक्षि (अ) वि—अधिकार में
 प्राप्त । —अक्षि (अ), —अक्षि (अ) वि
 —अधिकारसे अछूट । —अक्षि सँ—मालकिन,
 खामिनी । —अक्षि सँ—मालिक, स्वामी;
 दखील । वि—योग्य, अभिज्ञ । —अक्षि (अ)
 वि—अधिकार में आया हुआ; प्राप्त । —अक्षि
 सँ—अधिकार । —अक्षि (अ) वि—प्राप्त,
 ज्ञात । —अक्षि सँ—उपार्जन, आय; प्राप्ति,
 बोध । —अक्षि (अ), —अक्षि (अ),

—अक्षि (अ) वि—प्राप्त, ज्ञेय, जानने
 योग्य, बोध्य । —अक्षि वि—अक्षि पर का ।
 —अक्षि—पहाड़ के ऊपर की समतल
 भूमि । —अक्षि, —अक्षि, —अक्षि सँ—अक्षिदेव,
 कुलदेवता । —अक्षि सँ—सरदार, नायक,
 चालक, मुखिया, सेनापति । —अक्षि (अ),
 —अक्षि सँ—राजा, प्रभु । —अक्षि सँ—
 वकील Advocate —अक्षि सँ—नाम, पदवी,
 उपाधि । —अक्षि सँ—समाप्ति, अन्त । —अक्षि
 सँ—अंग्रेजी ३६६ दिन का वर्ष Leap year
 —अक्षि सँ—निवास, स्थिति; मकान, डेरा;
 किसी पूजा या उत्सव के पूर्व दिनका कृत्य ।
 —अक्षि सँ—सुगन्धित करण । —अक्षि (अ)
 वि—अक्षि हुआ, डेरा दिया हुआ;
 सुगन्धित किया हुआ । —अक्षि सँ—निवासी,
 रहनेवाला । —अक्षि (अ) वि—विद्वान्,
 पण्डित । —अक्षि सँ—अध्यात्म विद्या ।
 —अक्षि सँ—एक पत्नी के रहते हुए दूसरी स्त्री
 से विवाह करने वाला पुरुष । —अक्षि सँ—
 एक स्त्री के रहते दूसरी से विवाह । —अक्षि
 सँ—सभा की बैठक । —अक्षि सँ—अक्षि
 अधिक मास । —अक्षि सँ—सारथि; सेनापति ।
 —अक्षि सँ—महाराजा, सम्राट । —अक्षि (अ)
 वि—अक्षि अन्तराष्ट्रीय । —अक्षि (अ) वि
 —अक्षि, चढ़ा हुआ । —अक्षि सँ—चढ़ाना,
 ऊपर बैठाना । —अक्षि (अ) वि—चढ़ाया
 हुआ । —अक्षि सँ—आरोहण । —अक्षि सँ—
 जिंड़ि सोपान, सीढ़ी । —अक्षि सँ—
 आरोहिणी, सवार स्त्री । —अक्षि सँ—आरोही,
 सवार । —अक्षि (अ) वि—लेटा हुआ ।
 —अक्षि (अ) वि—लिटाया हुआ । —अक्षि
 सँ—सभापति, अध्यक्ष; बैठे हुए आदमी ।
 —अक्षि सँ—सभानेत्री, अध्यक्ष; बैठे
 हुई स्त्री; अक्षिदेवी । —अक्षि सँ—अवस्थिति,

रहने का स्थान ; नगर ; उपवेशन । —ठाँथकवर्ग
(-अ) सं—अधिकारी लोग । —ठिठ (-अ)
वि—अवस्थित, बैठा हुआ, स्थापित,
नियुक्त ।

अधी (ठ) (-अ) वि—पठित, पढ़ा हुआ । —न वि
—मातहत, अधीन, आश्रित । —नठा सं—
अधीनता, मातहती । —ना स्त्री—अधीन स्त्री ।
—नान वि—पढ़नेवाला, छात्र, विद्यार्थी ;
विद्वान् । —न वि—अश्वि चंचल, आतुर,
व्याकुल । —नठा सं—अश्वि चंचलता,
व्याकुलता, घबराहट । —न, —न सं—
अधिपति, महाराजा, प्रभु, मालिक ।

अधून क्रि वि—आजकल, मध्यमि आजकल,
इन-दिनों, अभी । —उन वि—आजकल
का, आधुनिक ।

अधुष (-अ) वि—अजेय, न जीतने योग्य ।
अधुषी (-अ) सं—अधीरता, चंचलता, बेचैनी ।
वि—अधीर, बेचैन, व्याकुल ।

अधो (गठ) (-अ) वि—नीचे गिरा हुआ, उतरा
हुआ । —गठि स—अवनति, पतन, दुर्दशा ।
—गठन सं—अधोगति । —गोभी वि—नीचे
जानेवाला, उतरने वाला । —गुठि सं—नीचे की
ओर नजर, निम्न दृष्टि । —गुठिठि क्रि वि—नीचे
की ओर देखते हुए । —गुठन, —गुथ वि—नीचे
की ओर मुँह किया हुआ, सिर झुकाया हुआ ;
औंठा, उदास । —गुथे क्रि वि—अधोगति ।
—लोठ सं—पाताल ।

अधुष (क) (-कव-अ) सं—अध्यक्ष, कर्ता,
सचालक, नायक ; कर्मचारी (कोषाध्यक्ष) ।
—कठा सं—अध्यक्ष का पद, सचालन, प्रबन्ध,
इन्तजाम । —कथा सं—अविवाह छेड़ी लगातार
प्रयत्न, उद्योग । —कथावि वि—लगातार प्रयत्न
करने वाला, उद्योगी । —न सं—पाठ पाठ,
पठन, पढ़ाई । —न (-अ) वि—एक में दूसरे का

आरोप किया हुआ, जैसे, रस्सी में
साँप ।

अधा (ख) (-त्त-अ) वि—आत्मा सम्बन्धी,
पारमार्थिक । —अक सं—शिक्षक, उपाध्याय,
आचार्य । —अन, —अना सं—शिक्षादान,
शिक्षण । —अिका स्त्री—शिक्षयित्री । —अिठ
(-अ) वि—पढ़ाया हुआ । —अ सं—अश्व
अविच्छिन्न अध्याय, प्रकरण । —अठ (-अ) वि—
चढ़ा हुआ, सवार । —अठा, —अ सं—एक
में दूसरे का आरोप, जैसे रस्सी में साँप का
भान । —अन सं—उपवेशन, आरोपण । —अिठ
(-अ) वि—अधुष । —अन वि—अधिष्ठित,
उपविष्ट, बैठा हुआ । —अन, —अन सं—दूसरे
के लेख या वाक्य का उल्लेख, उद्धरण । —
अन (-अ) वि—उद्धरण-योग्य । —अठ (-अ)
वि—उद्धृत । [किया हुआ inhabited.

अधुषिठ (-अ) वि—अवस्थित, अधिष्ठित, वास
अधुषिठ (-अ) वि—पठनीय, पाठ के योग्य ।
अधुषिठ सं—पाठक, छात्र, विद्यार्थी ।

अधुष (-अ) वि—अनित्य ; अनिश्चित, अस्थायी ।
स—अनित्य वस्तु ।

अधुष (अधुष) सं—यज्ञ ।

अधुष सं—अश्वि, यज्ञ करने वाला ।

अन—स्वर के पहले बैठने वाला निषेध अभाव
आदि सूचक उपसर्ग ; जैसे—अनञ्ज, अनावश्यक,
अशक्ति, अनेक, अनेक आदि ।

अन (अन) (-अन) वि—निवृत्त अपद,
अशिक्षित । —अ (-अ) वि—पाप-रहित,
निष्पाप, निर्मल, पवित्र । —अ (-अ) वि—
सं—कामदेव, कन्दर्प । —अ (-अ) वि—
अनिर्मल, मैला । —अ सं—अभाव, कमी ।
—अ वि—अचल, स्थिर । —अठा (-अ) वि—
—निस्सन्तान, सन्तानहीन, बेऔलाद ।
—अक (-अ) वि—अपेक्षा-रहित,

निरपेक्ष । —दक्ष सं—अवज्ञाश का अभाव ।
 —दृष्ट (अ) वि—दोष-रहित, निर्मल, साफ,
 पवित्र । —दक्षान वि—असावधान, लापरवाह ।
 —दक्षानता सं—असावधानता, लापरवाही ।
 —द्वन्द्व (अ) क्रि वि—लगातार, निरन्तर ।
 —द्वन्द्व सं=यनद्वन्द्व । —द्विष्ट (अ)
 वि=यनद्वन्द्व । —द्विष्ट (अ) वि—अनुभव-
 रहित, अनादी । —द्विष्टता सं—अनादीपन,
 अनुभवहीनता । —द्विष्टता (अ) वि—
 अवांछित । —द्विष्ट (अ) वि=यनद्वन्द्व ।
 —द्विष्ट (अ) वि=यनद्विष्टता । —द्विष्टा
 सं—दृष्ट्या का अभाव । —द्विष्टा वि—
 अनिच्छुक । —द्विष्ट (अ, वि)—अभ्यासरहित ।
 —द्विष्ट सं—अभ्यास का अभाव । —द्विष्ट
 वि—वाधाररहित, अनर्गल, बेरोकटोक । —द्विष्ट
 (अ) सं—अमगल, अनिष्ट, गलत अर्थ ।
 वि—अर्थहीन ; तुच्छ । —द्विष्ट क्रि वि—द्विष्ट
 वृत्त्या, निरर्थक । —द्विष्टा सं—विपत्ति, आफत
 का गिरना । —द्विष्ट वि—आलस्यरहित, फुर्तीला ।
 —द्विष्ट (अ) वि—बहुत, अधिक, ज्यादा ।
 —द्विष्ट सं—उपवास, लवन, फाका । —द्विष्ट
 (अ) वि—नष्ट न होनेवाला, नित्य ।
 अनतिक्रान्त (अ) सं—अल्प काल, थोड़ा समय ।
 —अनतिक्रान्त (अ), —अनतिक्रान्त (अ) वि—लांघने
 के अयोग्य । —अनतिक्रान्त (अ) वि—न लांघा हुआ ।
 —अनतिक्रान्त (अ) वि—बहुत लम्बा नहीं, छोटा ।
 —अनतिक्रान्त सं—बहुत दूर नहीं, अल्प दूर । —अनतिक्रान्त
 वि—बहुत दूर का नहीं, निकट का । —अनतिक्रान्त
 क्रि वि—थोड़ीदूरपर । —अनतिक्रान्त क्रि वि—बहुत
 पहले नहीं, अल्प समय पहले । —अनतिक्रान्त (अ)
 सं—बहुत विलम्ब नहीं । —अनतिक्रान्त (अ)
 क्रि वि—बहुत देर से नहीं, अति शीघ्र । —
 अनतिक्रान्त (अ) वि—बहुत फैला हुआ नहीं ।
 अनतिक्रान्त (अ) वि—अल्प, थोड़ा ; अन्दर (अ)

अनतिक्रान्त (अ) । —अनतिक्रान्त सं—अधिकार का अभाव,
 अधिकार का न होना । —अनतिक्रान्त सं—बिना
 अधिकार चर्चा । —अनतिक्रान्त सं—बिना
 अधिकार प्रवेश । —अनतिक्रान्त वि—अधिकारहीन ;
 अयोग्य । —अनतिक्रान्त (अ) वि—अधिकार न किया
 हुआ ; न जीता हुआ । —अनतिक्रान्त (अ) वि—
 न पढ़ा हुआ ; न पहुँचा हुआ । —अनतिक्रान्त
 (अ) वि—न जानने योग्य, अज्ञेय ; न जाने
 योग्य ।

अनतिक्रान्त (अ) वि—न पढ़ा हुआ ।
 अनतिक्रान्त वि—स्वाधीन, स्वतन्त्र, आजाद ।
 अनतिक्रान्त सं—शास्त्र न पढ़ने-पढ़ाने का दिन ।
 अनतिक्रान्त (अ) वि—नकल करने के
 अयोग्य । —अनतिक्रान्त (अ) वि—आदेश न दिया
 हुआ । —अनतिक्रान्त (अ) वि—अनुमान से निर्णय
 करने के अयोग्य । —अनतिक्रान्त (अ) वि—न किया
 हुआ, अकृत ।

अनतिक्रान्त (अ) वि—अन्तहीन, असीम, बेहद ;
 नित्य । सं—बाँह का एक गहना ; विष्णु,
 बलदेव, शेषनाग, ब्रह्म । —अनतिक्रान्त, —अनतिक्रान्त
 (अ) सं—अनन्तचौदस । —अनतिक्रान्त सं—एक
 जड़ी, गौरीसर । —अनतिक्रान्त क्रि वि—आशत्र भव
 उसके बाद ।

अनतिक्रान्त (अ) वि—अन्य से सम्बन्ध न
 रखनेवाला, एकनिष्ठ, अभिन्न । —अनतिक्रान्त
 (अ) वि—एक ही ओर चित्त लगा हुआ,
 एकाग्र । —अनतिक्रान्त वि—दूसरी ओर मन न
 लगा हुआ, एकाग्र-चित्त । —अनतिक्रान्त वि—
 असाधारण ; खास ; अनोखा । अनतिक्रान्त
 वि—अन्य उपाय रहित ; असहाय ।

अनतिक्रान्त सं—अग्नि, आग ।

अनतिक्रान्त (अ) वि—न आया हुआ, अनुपस्थित ;
 भावी । —अनतिक्रान्त सं—दुराचार ; दुरा चरताव ।
 —अनतिक्रान्त वि—दुराचारी । —अनतिक्रान्त वि—वेदब,

अनोखा (बुरे अर्थ में) । —टन सं=अनटन ।
 —उग्र वि—आढम्बर-रहित । —औग्र (-तीय-अ)
 वि—सम्बन्धहीन, नाता-रहित । —थ वि—
 अनाथ, यतीम । —थ, थिनी वि, स्त्री—नाथहीना,
 विधवा । —द्व सं—स्नेहका अभाव, उपेक्षा,
 असम्मान, बेइज्जती । —दा सं—धेवसूली ।
 वि—बाकी । —दात्री वि—बाकी । —दि वि—
 जन्मरहित, आदिहीन । —दृठ (-अ) वि—
 उपेक्षित, बेइज्जत । —वशक वि—प्रयोजन-रहित,
 गैरजरूरी । —विन वि—निर्मल, साफ, निर्दोष ।
 —विक्कठ (-अ) वि—आविष्कार न किया हुआ ।
 —विष्ट (-अ) वि=अमनोवांशी । —वृठ (-अ)
 वि—न ढँका हुआ, खुला । —वृष्टि सं—आवृत्ति
 का अभाव, अनभ्यास । —वृष्टि सं—वृष्टि का
 अभाव, सूखा । —वृष सं—रोग का अभाव,
 निरामय । —वा वि—नामरहित, गुमनाम ।
 —विका सं—छोटी उंगली के बगल वाली
 उंगली, अनामिका । —ग्रूथ (-अ), —ग्रूथा वि
 —मनहूस चेहरा वाला । —ग्रुठ (-अ) वि—
 कब्जे में न आया हुआ, अप्राप्त । —ग्राम सं—
 प्रयास का अभाव, अल्प परिश्रम । —शाल क्रि
 वि—अनायास । —शाला वि—आराम होने
 के अयोग्य, असाध्य । —शु (-ज-अ) वि—आर्य
 जाति से भिन्न । सं—अनार्य, नीच जाति ।
 —लाण्टि (-अ) वि—आलोचना न किया
 हुआ, अपठित । —लाण्टी (-अ), —लाण
 (-अ) वि—आलोचना के अयोग्य । —शमी वि
 —गार्हस्थ्य आदि चारों आश्रमों से रहित ।
 —गठ (-अ) वि—निर्लिप्त, अनुराग-रहित । —
 शृष्टि वि=अनाश्रुष्टि । —हा सं—अविश्वास,
 उपेक्षा । —शान्त (-शशादित-अ) वि—स्वाद
 न लिया हुआ । —शान्तपूर्ण (-अ) वि
 —पहले स्वाद न लिया हुआ । —शठ (-अ)
 वि—आघात अप्राप्त । सं—विना आघात

सुनाई पड़ने वाला शब्द । —शठ छक सं—
 योग-शास्त्र के अनुसार शरीर के भीतर
 के छ. चक्रों में से एक । —शत्र सं—उपवास,
 फाका । —शत्रो वि—उपवासी । —शत्र
 क्रि वि—उपवास में, बिना भोजन ।
 —शूठ (-अ) वि—न बुलाया हुआ,
 अनिमन्त्रित ।

अनिच्छा सं—अनिच्छा, अरुचि, असम्मति,
 आपत्ति । —कूठ (-अ) वि—अनिच्छा से किया
 हुआ । —गच्छे क्रि वि—इच्छा न रहते हुए भी ।

अनिच्छूक वि—इच्छाहीन, पराङ्मुख ।

अनिष्ठ (-अ) वि—अस्थायी, नश्वर, नाशवान ।

अनिद्र (-अ) वि—निद्राहीन ; चौकस ।

अनिद्रा सं—निद्रा का अभाव, निद्राहीनता ।

अनिन्दनीय (-अ) वि—निन्दा के अयोग्य ;
 उत्तम, सुन्दर ।

अनिमित्त (-अ) वि—निन्दा न किया हुआ ।

अनिन्द्य (-अ) वि=अनिन्दनीय । —अनन्द वि—
 अत्यन्त सुन्दर ।

अनिपू वि—अदक्ष, अनाड़ी ।

अनिवात्र क्रि वि—बार बार, लगातार, निरन्तर ।

अनिवार्य (-ज-अ) वि—रोकने के अयोग्य,
 अवश्य लेने रखने या मानने योग्य ।

अनिश्रुत (-अ) वि=अनाश्रुत ।

अनिशेष वि=अशेषक ।

अनिश्च (-अ) वि—अनिश्चित, अस्थिर ।

अनिश्चित (-अ) वि—प्रतिबन्ध-रहित, बिना
 रोक-टोक का, मनमाना ।

अनिश्चय सं—नियम का अभाव, अव्यवस्था ।

अनिश्चित (-अ) वि—नियम-रहित, बेकायदा ।

अनिर्दिष्ट (-अ) वि—अनिश्चित, अनिर्धारित ।

अनिर्द्वन्द्वीय (-अ), अनिर्द्वन्द्व (-अ) वि—

वर्णनातीत, बोलने के अयोग्य, अकथनीय ।

अनिर्भय वि—मैला, गन्दा, मलिन ।

धनि स—वायु, पवन, हवा । —न (-अ)

सं—वायु का सहचर, अग्नि, आग ।

धनिष्ठ सं—निश्चय का अभाव, सन्देह ।

—ठ, —इ (अ) सं—निश्चय का अभाव, सन्दिग्धता ।

धनिष्ठ (-अ) वि—सन्देहयुक्त, अनिर्दिष्ट, सन्दिग्ध ।

धनिष्ठे (-अ) सं—हानि, क्षति, अपकार, अहित, अमंगल । वि—अनचाहा, अनभिलषित ।

—क, —कनक वि—हानिकारक, अमंगलजनक । —काक वि—हानिकारक, नुकसान पहुँचाने वाला । —गाठ सं—दुर्दैव, आपत्ति, आफत का गिरना । [पहुँचाना ।

धनिष्ठोच्छ्रं स—हानि करना, नुकसान धनिष्ठोच्छ्रं सं—हानि की शक्ति ।

धनौक सं—सेना, फौज ; सैनिक ।

धनौकनी सं—सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६३६१ घोड़े और १०६३५ पैदल सिपाही हों । [अन्धेरे ; चरित्रहीनता ।

धनौक स—नोति का अभाव, अन्धाय, धनौक वि—नास्तिक, ईश्वर को न मानने वाला । —दात सं—नास्तिकता, ईश्वर पर अविश्वास । —दात वि—नास्तिक ।

धृ (दृष्ठा) सं—दया, कृपा, मेहरबानी, हमदर्दी । —दृष्ट सं—नकल, देखा देखी कार्य ; अनुसरण । —दृष्टी (-अ) वि—नकल करने योग्य । —दृष्ट (-अ) सं—गौण कल्प, मुख्य नियम का व्यतिक्रम, विकल्प ।

—दात सं=यदृष्ट । —दात-शब्द सं—ध्वनि के अनुरूप शब्द ; जैसे—छक्के, भनभन (सनसन) आदि । —दात्री वि—अनुकरण करने वाला ; सदृश । —दात्री (-ज-अ) वि—अनुकरण करने योग्य । —दौर्जन सं—घोषणा, वाद में वर्णन । —दृष्ट वि—अनुरूप,

सहायक ; सदृश । —दृष्ट सं—सहायता, दया । —दृष्ट (-अ) वि—नकल किया हुआ, अनुसृत । —दृष्टि सं=यदृष्ट ।

—ल (-अ) वि—न कहा हुआ, अकथित ।

—क्रम सं—क्रम, सिलसिला । (वगैरह्रस्व —अक्षर क्रमसे) । —क्रम सं—अनुसरण ।

—कर्मिका स—भूमिका, अवतरणिका, विषय-सूची । —कर्म (-कर्म) क्रि वि—सदा,

हर समय, निरन्तर । —ग (-अ) वि, सं—अनुगामी, अनुयायी, सेवक, चेला, पीछे

चलने वाला । —गत (-अ) वि—आश्रित, वशीभूत ; वाध्य, आज्ञाकारी । —गमन

सं—गमन मृत पति के साथ विधवा पत्नी का जल मरना ; अनुसरण, पीछे

गमन । —गामी वि—पीछे चलने वाला, अनुयायी, अनुसरण करने वाला, सहयात्री ।

—गृहीत (-अ) वि—उपकृत, कृपाप्राप्त, कृतज्ञ । —गृह (-अ) सं—कृपा, दया ;

रिआयत ; सहायता । —गृहणी वि—कृपालु, अनुग्राहक । —गृहपूर्वक क्रि वि—कृपया,

कृपापूर्वक । —गृहक वि अनुग्रह करनेवाला । —गृह वि—साथ चलनेवाला । स—सेवक,

नौकर, चेला । —गृही स्त्री—दासी, नौकरानी, सेविका । —गृही सं—नकल करने की

इच्छा । —गृहीत वि—नकल करने के इच्छुक । —गृह वि—अन्याय, नासुनासिब ;

बुरा । —गृह, —गृह सं—पीछे चिन्ता, वादका विचार, सदा चिन्तन । —गृह (-अ)

वि—अल्प उच्च, थोड़ा ऊँचा । —गृह (-अ) वि—उच्चारण न किया हुआ ।

—गृहीत (-अ), —गृही (-ज-अ) वि—उच्चारण के अयोग्य । —गृह सं—छोटा

परिच्छेद, अध्याय का एक अंश । —गृह सं—छोटा भाई । —गृह स्त्री—छोटी

बहिन। —बौद्धी वि—आभित। स—पोष्य
व्यक्ति, मौकरी। —छा स—आज्ञा, आदेश,
हुक्म, स्वीकृति। —छाठ (-अ) वि—
आदिष्ट, आदेश-प्राप्त। —छाठ (-अ) वि—
पद्धताया हुआ, परितप्त। —छाठ स—
परिवात्ताप, पद्धतावा, अफसोस। —छाठ वि
—बहुत उत्तम; निकृष्ट, बुरा, खराब।
—छाठ वि—निरुत्तर, लाजवाब, चुप।
—छाठ (-अ) स—उत्साहका अभाव,
उत्साह-रहित। —छाठ वि—अक्षय्य
स कीर्णचित्त, कंजूस, कृपण। —छाठ कि वि
—प्रतिदिन, रोज-रोज। —छाठ (-अ) वि—
खोज न मिला हुआ, लापता। —छाठ
(-अ) वि—न उगा या न खिला हुआ,
पूणता अप्राप्त। —छाठ स—मनोनिवेश,
गौर, ध्यान, खोज, अनुसरण। —छाठ स—
विनती, अनुरोध, प्रार्थना। —छाठ वि—
नाकसे उच्चारित होने वाला। —छाठ वि—सं
—छाठ वि—न मिला। —छाठ (-अ) वि—
अल्प-उन्नत, थोड़ा ऊँचा; नीच, अद्भुत।
—छाठ वि—अशुभ। —छाठ स—अपकार,
हानि, नुकसान। —छाठ वि—अपकारी,
हानि-कारक, नुकसानदेह, अपकारी।
—छाठ (-अ) वि—न पहुँचा हुआ,
उपनयन-संस्कार-रहित। —छाठ वि—उपमा-
रहित, अतुलनीय, बेजोड़, अति उत्तम।
—छाठ (-अ) वि—उपमाके अयोग्य,
बहुत अच्छा। —छाठ वि—अयोग्य;
निकम्मा। —छाठ स—समयका
एक सूक्ष्म विभाग जो १ विपलका ६०
या १० सेकंडका १५०वाँ हिस्सा होता
है। —छाठ वि—अशुभ। —छाठ वि—गैरहाजिर,
अव्ययमान। —छाठ स—गैरहाजिरी,
अव्ययमानता। —छाठ स—अनुमान

स्थिति, गणितकी त्रैराशिक क्रिया। —छाठ
स—औषधके साथ खायी जाने वाली
दूसरी चीज। —छाठ वि—निरुपाय, उपाय-
रहित। —छाठ (-अ) वि—भीतर घुसा
हुआ। —छाठ स—छुपकेसे भीतर प्रवेश।
—छाठ स—शक्ति-संचार, प्रेरणा।
—छाठ (-अ) वि—उत्साहित; प्राण या
जोश डाला हुआ। —छाठ स—एक ही
अक्षरके बार-बार आनेका एक अलंकार
जैसे काँची-काँची, कना-कौशन, दिन-शुद्ध
आदि। —छाठ (-अ) स—अवतारणा,
उपक्रम, प्रसंग, सम्बन्ध। —छाठ स—
अनुवृत्ति; अनुसरण; नकल। —छाठ वि—
अनुगामी, अनुयायी, वशीभूत, बाध्य,
आज्ञाकारी। —छाठ स—उल्था, तर्जुमा,
भाषान्तर। —छाठ स—तर्जुमा करने
वाला। —छाठ (-अ) वि—उल्था किया
हुआ, भाषान्तरित। —छाठ स—अनुवर्तन,
पुनः कथन; पेन्शन pension —छाठ स—
बोध, ज्ञान, अनुभूति, उपलब्धि, अभिरुता।
—छाठ (-अ) वि—ज्ञात, उपलब्ध, विदित,
परीक्षित, तजरबा किया हुआ। —छाठ
स—अशुभ। —छाठ वि—क्षितिजके
समानान्तर। —छाठ (-अ) वि—अनुमोदित,
आज्ञा-प्राप्त, स्वीकृत। —छाठ स—आज्ञा,
आदेश, हुक्म, सम्मति। —छाठ वि—
आज्ञा देना, अनुमोदन करना,
स्वीकार करना। —छाठ वि—आदेशदाता,
हुक्म देनेवाला। —छाठ स—अनुमान,
अटकल, अंदाजा, प्रत्यक्ष
दृष्टान्तसे अप्रत्यक्ष विषय का निर्धारण।
—छाठ वि—अनुमान किया हुआ, अंदाजा लगाया
हुआ, अनुमित। —छाठ स—अनुमान। —छाठ

(-अ) वि—अनुमानके योग्य। —आहन
सं—सम्मतिदान, समर्थन। —आदिष्ठ (-अ)
वि—समर्थित; स्वीकृत। —आदिष्ठ सं=
चरुज। —आदी वि—अनुगामी, अनुचर, सेवक;
सदृश। —आग सं—अभियोग, उलाहना;
निन्दा; धमकी। —आशि वि—उलाहना
देने वाला; नालिश करने वाला, निन्दक।
—आसक (-अ) वि—आसक्त, भक्त। —आसक
सं—आसक्ति, भक्ति, प्रेम प्यार, ध्यान।
—आसक वि, सं—दिल बहलाने वाला, मनो-
रंजनकारी, आनन्ददायक, रंगसाज।
—आसन सं—दिल-बहलाव, मनोरजन, आनन्द-
प्रदान, रंगसाजी। —आसित (-अ) वि—
रंजित, रंगया हुआ; आनन्दित, प्रफुल्लित।
—आसन सं—प्रतिध्वनि, गूँज। —आश सं—
प्रेम, प्रीति, भक्ति; भुकाव, ध्यान।
—आशि वि—प्रेमी, आसक्त, भक्त। —आश
(-अ) वि—अनुरोध किया हुआ, प्रार्थित;
रोका हुआ। —आश वि—सदृश, तुल्य,
योग्य। —आश सं—प्रार्थना, सिफारिश,
विनती; खातिर। —आश (-अ) क्रि वि—
आशिशेष्ट गिर चढ़ाई की ओर। वि—
खड़े बल का। —आशन सं—उबटन लेपन।
—आन सं—निम्न क्रम, उतार। —आदिष्ठ
(-अ) वि—उल्लेख न किया हुआ। —आन
सं—आदेश, उपदेश, विधान, नियम, कानून;
नियन्त्रण; आज्ञापत्र (धर्मादेश)। —आन
(-अ) स—शिष्यका शिष्य। —आन
सं—चर्चा, अभ्यास, चिन्तन, मनन।
—आनो सं—अभ्यासार्थ प्रश्नावली।
—आनोद (-अ) वि—अभ्यास-योग्य।
—आनो सं—अनुताप, पश्चात्ताप, पछतावा,
सेद। —आनोद (-अ) वि—पछताने
योग्य, सेदजनक। —आ (-अ) सं—सम्बन्ध-

-युक्त विषय, प्रसंग; दया; सम्बन्ध। —आन
वि, सं—करने वाला, सम्पादक। —आन
सं—आरम्भ, क्रिया, सम्पादन, अभ्यास।
—आठ (-अ) वि—आवरित, कृत, सम्पादित।
—आठ (-अ) वि—अनुष्ठान-योग्य, सम्पादन-
योग्य। —आ (अनुष्ठा-अ) वि—शीतल,
छाया; छस्त। —आन सं—अन्वेषण, खोज,
हूँद, जाँच, खोजपणा। —आश सं—
अनुसन्धान करनेकी इच्छा। —आश
वि—अनुसन्धान करनेके इच्छुक। —आश
(-अ) वि—अनुसन्धानके योग्य। —आश
सं=अश्वमेध। —आदि क्रि वि—अनुसार।
—आश सं—अनुस्वार, यह चिह्न।
अनूठ (-अ) वि—अविवाहित, क्वारा।
अनूठ स्त्री—अविवाहिता, क्वारी।
अनूठि वि=अनूठादि।
अनूठ वि—रुख टेढ़ा; कपटी।
अनूठ (-अ) वि—मिथ्या, झूठा।
अनेक वि—अनेक, बहुत, अधिक। —अ
(-अ) स—बहुत्व। —अ क्रि वि—अनेक
प्रकारसे, तरह तरह से। —अ (-अ)
वि—नाना प्रकार का। —अनेक सर्व-
अनेक मनुष्य, बहुत आदमी।
अनेक (अनङ्क्य-अ) स—विरोध, अनमिल,
वैर, मत-भेद, फूट।
अनेकशक्ति वि—अस्वाभाविक।
अनेकशक्ति (अनङ्क्य-अ) सं—अयुक्ता,
अनुचित होनेका भाव।
अनूठ (अनूठ) सं—दिल, मन, बुद्धि, चित्त।
—आजी वि—मध्यवर्ती, भीतरमें स्थित,
अंतर्गत। —अ सं—अनङ्क्य जनानखाना,
रनवास, हरम। —अ स्त्री—जनान-
खानेमें रहने वाली महिला। —अ सं—
गृहशत्रु, राज्यके भीतरका दुश्मन; मनके काम

क्रोध आदि रिपु । —महा विस्त्री—गर्भवती ।
 —गात्र सं—भीतरका सार, तत्त्व । —ह
 (-अ) वि—भीतरी, बीचका ; अन्तिम ।
 बह (-अ) सं—शेष, समाप्ति ; सीमा, सिरा ;
 मृत्यु । —क सं—यम, यमराज, मृत्यु,
 विनाशक । —काल सं—मृत्युका समय,
 अन्तिम घड़ी । —उः क्रि वि—कमसे कम ।
 —व सं—मध्य ; अन्तर, फासला ; भेद ;
 मन ; दूर ; बाद । —व्रज (-अ) वि—मित्र,
 दोस्त, आत्मीय । —व्रजता, सं—घनिष्टता ।
 —वृष्णि सं—पीछेसे चोट, गुस्सेसे
 मर्म-स्थान पर दबाव जिससे आदमी बेकाम
 हो जाय ; ताना । —वृह (-अ) वि—भीतरी,
 बीचका ; मनोगत, दिल का । —वा सं—
 गीतका दूसरा करण । —वाञ्छा (-ता)
 सं—जीवात्मा । —वाञ्छा वि स्त्री—गर्भवती ।
 —वाय सं—विघ्न, बाधा, अड़चन । —वान
 सं—बाढ़ान ओट, आड़, फासला ; अदृश्य
 स्थान । —विष्ठ (-अ) वि—छिपा हुआ,
 ढंका हुआ ; वियुक्त, अलग किया हुआ ;
 मृत ; अर्पित ; सरकारी आज्ञासे किसी
 निर्दिष्ट स्थानमें कैद interned. —विलिख
 (-अ) सं—मन, अन्तःकरण । —व्रीक
 (-कख-अ) सं—आकाश, स्वर्ग । —व्रीण
 वि=अष्टत्रिंश । —व्रीण सं—रास, नुकीला
 स्थलभाग जो समुद्रके भीतर बहुत दूर तक
 फैला गया है । उल्लेखनीय अष्टव्रीण सं—अफ्रीकाके
 दक्षिण का रास । —व्रीण (-अ) सं—नीचे
 का कपड़ा, धोती साड़ी आदि । —व्र क्रि
 वि—दिलमें, मनमें ; दूर ; भीतर । —वृष्ठ
 (-अ) वि—मध्यवर्ती, बीचका । —वृष्ट
 (-अ) सं—घरके भीतरका कमरा ।
 —वृजि सं—नाभिगत पारलौकिक मंगलके
 लिए मुमुर्षु व्यक्ति का निम्नांग गंगा

आदिमें डुबाये रखनेकी विधि । —वृण
 सं—अपने मनकी चिन्ता या भावकी
 जाँच । —वृणी वि—मनके भीतर तक
 देख सकने वाला । —वृष्टि (-अ) सं—
 सन्ताप, मनकी जलन, पश्चात्ताप ।
 —वृष्टि सं—भीतर तक देखनेकी शक्ति ।
 —वृण सं—बीचका स्थान, भीतरका
 अंश ; उपत्यका, देशका भीतरी भाग ।
 —वृण सं—तिरोधान, अदर्शन, छिपाव ।
 वि—गायब । —निश्चित (-अ) वि—भीतर
 स्थित ; मनमें गुप्त । —वृष्टी वि=अष्टःपदा ।
 —वृष्टी वि=अष्टःपदा । —वृष्टि (-अ)
 सं—देशके भीतरका व्यापार । —वृष्ट
 सं—भीतरी पहनावा । —वृष्ट सं—
 गृहयुद्ध, भीतरी विद्रोह । —विवाह (-अ)
 सं—स्वकुलमें या स्वगोत्रमें विवाह । —वृष्ट
 सं—मनका आवेग, जोश । —वृष्ट सं—
 मानसिक दुःख, गुप्त शोक । —वृष्ठ (-अ)
 वि=अष्टर्ग । —वृष्ट, —वृष्टी वि—आत्म-
 विचारशील । —वृष्टी (जामी) सं—भीतर रह
 कर मनकी बात जाननेवाला, ईश्वर । —वृष्ट
 (-अ) वि—गायब, गुप्त, अदृश्य । —वृष्ट
 सं—मृत्यु-शय्या । —वृष्ट सं—भीतरी भाग ;
 नीचेका स्तर ; पदी ; मन । —वृष्ट (-अ) वि=
 अष्टः ।

अष्टिक वि—निकटका । सं—निकटता ।
 अष्टिक वि—आखिरी, मृत्यु-समयका ।
 अष्टिकी सं—शिष्य, चेला, छात्र ।
 अष्टिक (-अ) वि—अन्तिम, आखिरी ; नीच ।
 अष्टिक सं—नीच जाति, हरिजन ।
 अष्टिक सं—मृतक-संस्कार, क्रिया-कर्म ।
 अष्टिक (-अ) सं—आँत, अँतड़ी । —वृष्टि स
 —आँत उतरनेका रोग Hernia
 अष्टिक वि—डिठर भीतर, में । सं—

भरन-]

जानान-खाना; हरम। —भरन सं=

अरु (-अ) वि-अन्धा, नेत्रहीन। —दिशान
सं-विना विचारे विद्वास। —गद सं-
अँघेरा, निमिर; अज्ञान। —दूष सं-
अँला दूँला अघेरा कुआँ; गुप्त गढ़ा
black hole —उ, —ए (-अ) सं-
अन्धापन, सूर्यता। —श्राव वि-क्षीणदृष्टि,
करीब-करीब अन्धा। —रु क्रि वि-अन्वेकी
तरह, बिना विचारे।

अक्षिहि सं-गुप्त स्थान, दूराख, छिद्र; भेद।
अक्षौड (-अ) वि-अन्धा बनाया हुआ।
अह (-अ) सं-उठ भात, उवाला हुआ
चावल। —कृष्ट (-अ), सं-अन्नका कष्ट,
अन्नाभाव, दुर्भिक्ष, अकाल। —कृष्ट सं-
जालछत्र लूँ भातका ढेर। —गठ-क्षी वि-
अन्नके ऊपर ही निर्भर। —छि सं-
जीविकाके लिए चिन्ता। —वन स-
दाना-पानी। —त वि-अन्न देनेवाली।
सं-दुर्गा, भगवती। —ता वि-अन्न
देने वाला, पालनहार, प्रतिपालक। —ता
वि-पेटके लिए दूसरेके अधीन रहने
वाला। —तावी सं-नरेटी, गलेसे पेट
तक अन्न जानेकी नली। —श्री स-
भगवती, दुर्गा। —श्रावण सं-चटावन,
शिशुके मुखमें प्रथम अन्न देनेका
संस्कार। —अक्षर स-स्थूल शरीर।
—अक्षान स-जीविकाका प्रबन्ध, भोजनका
संग्रह। —अव (-अ) स-सदावर्त,
लंगरखाना। —अवडा स-जीविकाकी
समस्या। —शेन वि-गरीब, भूखा।
अवाहान स-भोजन-वस्त्र, खाना-कपड़ा।
अवाचार स-अन्नका अभाव, गरीबी।
अवाश वि-भोजन माँगने वाला, भूखा।

अवाशिही वि-माता जाने वाला।
अव (अ) वि-गैर, दूसरा, अपर, भिन्न।
—आनी वि-अभिचारी। स्त्री, —आमिनी।
—उव वि-अनेकोंमें एक। —उव वि-
दोनोंसे एक। —अ (-अ) क्रि-वि-दूसरे
स्थान या विषयमें। —श. क्रि-वि-नछूना
नहीं-तो अन्य प्रकारसे। वि-अन्य
प्रकारका, भिन्न। स-परिवर्तन।
—शक्ति स-परिवर्तन-साधन, उलटनेकी
क्रिया, आज्ञाकी अवहेलना। —शब्द
सं-विपरीत वतांव, आज्ञासंग। —नैव-
(-अ) वि-दूसरेका। —श्री, स-
दूसरेकी वारदत्ता कन्या। —दिव (-अ)
वि-दूसरे प्रकारका। —उव क्रि वि-
दूसरी प्रकारसे। —अव (-अ) वि-
अनमना, दूसरी तरफ ध्यान लगा हुआ,
वेखर।
अवाञ्छ (-अ) वि-दूसरे दूसरे, और और।
अवाञ्च स-अन्याय, अन्धेर, अत्याचार,
पाप। वि-न्याय-विरुद्ध, गैरकानूनी,
अनुचित।
अवाञ्च (-ज-अ) वि-अनुचित, अवैध; बुरा।
अवाञ्च (-अ) वि-दूसरेके प्रति आसक्त।
अवाञ्च वि-कम नइ कमसे कम।
अवाञ्च (-अ) वि-परस्पर, आपसका।
अवञ्च (अन्वय) स-पदोंका परस्पर सम्बन्ध,
पद्यका गद्यके रूपमें विन्यास; क्रम;
वंश। —अवञ्च स-एकके-भाव या
अभावमें-दूसरेका भाव या अभाव, युक्ति-
विशेष।
अवञ्च वि-सम्बन्ध-युक्त।
अवञ्च (-अ) वि-अर्थानुरूप, यथार्थ, सत्य।
अविठ (-अ) वि-युक्त, सम्पन्न; अन्वय-
किया हुआ।

अक्षर-वि-खोजने वाला । (२५)
 अक्षर-सं-खोज, जाँच, अनुसन्धान ।
 अक्षरणीय (अ), अक्षरणीय (अ) वि-खोज
 के योग्य ।
 अक्षर, सं-झगड़, जल, पानी ।
 अक्षर-(-अ) उप-निन्दा, विरोध, हानि
 आदि सूचक उपसर्ग । —कर्म (-अ) सं-
 कुर्म, बुरा काम । —कर्म (-अ) सं-
 अवनति, हीनता । —कार-सं-हानि, क्षति,
 नुकसान । —कारक, —कारि वि-हानि
 करने वाला । —कौटि सं-बदनामी,
 अपयश । —दृष्टे (-अ) वि-निकृष्ट, बुरा,
 नीच । —क (-क-अ) वि-कच्चा ; न सीका
 हुआ । —कभी-सं-निरपेक्षता, बेतरफदारी,
 पक्षपात-राहित्य । —कभी-वि-निरपेक्ष,
 बेतरफदार । —गत (-अ) वि-गत, बीता
 हुआ, मृत, रहित । —गम, —गमन सं-
 प्रस्थान, रवानगी ; मृत्यु, पलायन, विच्छेद ।
 —गा सं-निम्नगामिनी नदी । —ग्रह
 (-अ) सं-प्रतिकूल ग्रह । —घात सं-
 दुर्घटनासे मृत्यु, अस्वाभाविक मृत्यु,
 दुर्घटना । —घातक, —घाती वि-हत्यारा ।
 —घ्न सं-नाश, हानि, क्षय, व्यय ।
 —घ्न सं-अपच, बदहजमी, अजीर्ण,
 निन्दित आचरण । —चिकीर्षा सं-अपकार
 करनेकी इच्छा । —चिकीर्षु वि-अपकार
 करनेके इच्छुक । —ह वि-अनिपुण,
 अनाड़ी, रुझ । —ठिठ (-अ) वि-न पढ़ा
 हुआ । —ठिठ वि-अशिक्षित, मूर्ख ।
 —शोक वि-पत्नी-रहित, रूढ़ आ । —श
 (-अ) सं-सन्तान, पुत्र या कन्या, औलाद ।
 —श-निक्षिपेय क्रि वि-अपनी सन्तानके
 साथ भेद न करके, सन्तानकी तरह ।
 —श सं-बुरा मार्ग ; बुरा आचरण ।

—श (अ) सं-कुपेय, घट-परहेजी ।
 —श (अ) वि-अपमानित, बेहजत,
 पदच्युत । —श (अ) वि-निकम्मा,
 अयोग्य । —श सं-भूत, प्रेत । —नदन
 सं-अपसारण, हटाव ; खण्डन । —नीठ
 (-अ) वि-हटाया हुआ, अपसृत ; खण्डित ।
 —नग्न सं-अपनयन । —श्राव सं-
 अशुद्ध अर्थमें शब्दका प्रयोग, दुरुपयोग ।
 —वर्ग (-अ) सं-मोक्ष, मुक्ति ।
 —वाद सं-निन्दा, बदनामी, आक्षेप,
 इलजामें । —वादक वि-इलजाम लगातेवाला,
 निन्दक । —विविध (-अ) वि-अशुद्ध ;
 गन्दा । —विविध सं-अशुद्धता, गन्दगी ।
 —वाक्य सं-दुरुपयोग । —वाच सं-बुधा
 व्याय, फजूल स्वच । —वाची वि-बुधा व्याय
 करनेवाला, फजूलस्वच । —उश सं-
 नीच भाषा, गाली । —उश (-अ) सं-
 मूल शब्दका विकृत रूप, जैसे-पानीयसे
 पानी, स्वर्णसे सोना आदि । —गान
 सं-अनादर, बेहजती । —मानिठ (अ)
 वि-अनादृत, बेहजत । —गृह सं-
 अपघात मृत्यु, अस्वाभाविक मृत्यु । —श
 सं-निन्दा, बदनामी । —श वि-अदम्य,
 अनोखा, अपूर्व ; बैडौल, बदशकल, कुरूप ।
 —श्राव (-क-अ) सं-स्वानुभव,
 आत्माका स्वाभाविक ज्ञान । वि-प्रत्यक्ष,
 इन्द्रिय-गोचर । —शी सं-पावती, दुर्गा ।
 —शील (-ज-अ) वि-प्रचुर, यथेष्ट,
 आवश्यकतासे अधिक, असीम ; अप्रचुर,
 अल्प, थोड़ा । —नक वि-अनिमेष,
 एकटक । —नाश सं-अस्वीकार, मिथ्या
 भाषण, नाश । —नका वि-उग्रध्वज,
 भवका भगुर, भुरभुरा । —नस सं-नीच
 शब्द, गाली, अशुद्ध शब्द । —नस सं-

पलायन, हटना, भागना। —भाष्य सं—
दूरीकरण हटाना, भागना; रहित-करण।
—भाष्य (-अ) वि—हटाया हुआ, भागाया
हुआ। —शुठ (-अ) वि—हटा हुआ; भागा
हुआ—भाष्य (अपगृहण) सं—शुष्क मिरगी,
नूछां रोग। —शुठ (-अ) वि—नष्ट, निहत,
मारा हुआ। —शुष्ट शं—हत्यारा, घातक।
—शुष्ट सं—शुष्टि चोरी; गवन। —शुष्टी,
—शुष्टि वि—हरनेवाला। स—चोर, लुटेरा;
ढाकू। —शुठ (-अ) वि—चुराया हुआ,
लुटा हुआ—शुष्ट सं—अस्वीकार, इनकार;
चोरी; छिपाव।

अश्व वि—अभागा, वदनसीव।

अश्व वि—दूसरा, गैर, अन्य; विपरीत।
—अ (-अ), —अ क्रि वि—और भी,
इसके सिवाय। —अ (-अ) क्रि वि—
दूसरे स्थान पर; परलोक में। —अ
(-अ) सं—कृष्ण पक्ष; दूसरा पक्ष,
विरुद्ध पक्ष। [दुगां।

अश्वविष्ठा सं—एक लताका नीला फूल;

अश्वविष्ठा (-अ) वि—हरानेके अयोग्य।

अश्वविष्ठा सं—द्रोप, कछर, पाप।

अश्वविष्ठा वि—द्रोपी, जुर्मवार; पापी। स्त्री—
अपराधिनी अश्वविष्ठा।

अश्वविष्ठा वि—स्वाधीन, स्वतन्त्र, आजाद।

अश्वविष्ठा वि—दूसरे दूसरे, अन्यान्य।

अश्वविष्ठा (-अ) सं—दूसरा आधा।

अश्वविष्ठा (-अ) सं—दिक्कान तीसरा पहर।

अश्वविष्ठा (दश) (-अ) सं—दानका अग्रहण,
अस्वीकार; त्याग। —अश्व वि—चलने
न देने वाला nonconductor. —अश्व
(-अ) वि—अज्ञान अनजान, अज्ञात।

—अश्व (-अ) वि—मैला, मलिन, गन्दा।

—अश्व सं—मैलापन, मलिनता, गन्दागी।

—अश्व (-अ) वि—असीम, बेहद। —अश्व
(-अ) वि—अज्ञात, अनजान। —अश्व
(-अ) वि—अपूर्ण, अधुरा; कच्चा। —अश्व
सं—विवाहका न करना। —अश्वविष्ठा
सं—अविष्य या परिणाम देखनेकी अशक्ति।
—अश्वविष्ठा वि—अविष्य या परिणाम न
देखने वाला, अदूरदर्शी। —अश्व (-अ) वि—
अविवाहित, फारा। —अश्व (-अ) वि—
कच्चा; अनादी, अनिपुण। —अश्व सं—
बदहजमी, अजीर्ण। —अश्व (-अ) वि—
अविकृत, ज्योंका त्यों। —अश्व (-अ)
वि—बहुत ज्यादा; असीम, बेहद। —अश्व
(-अ) वि—अकृत, परिमाणके अयोग्य,
बेअंदाज। —अश्वविष्ठा (-अ) वि—शोधन न
होने योग्य; न लौटाने योग्य। —अश्वविष्ठा
(-अ) वि—न लौटाया हुआ। —अश्व
वि—अश्व मलिन, मैला, गन्दा, अपवित्र;
अस्पष्ट, सं—गन्दागी, अपवित्रता। —अश्व
(-अ) वि—मैला; अपवित्र; अशोधित।
—अश्व वि—कम चौड़ा, सँकरा; निकटका।
—अश्व वि—असीम, बेहद; बहुत ज्यादा।
—अश्व (-अ) वि—अस्पष्ट; अनखिला।
—अश्व (-अ) वि—त्यागनेके अयोग्य,
न छोड़ने योग्य; अति आवश्यक।

अश्वविष्ठा (-अ), अश्वविष्ठा (-अ) वि—
पंक्तिभोजनके अयोग्य, जातिवाहर। [हुआ।

अश्व सं—अजीर्ण, बदहजमी। वि—न पचा
अश्वविष्ठा सं—अश्वविष्ठा। [अ गहीन।

अश्व (-अ) सं—कनखी, कटाक्ष। वि—
अश्व (-अ) वि—न पचने योग्य।

अश्व (-अ) वि—पढ़नेके अयोग्य; अग्लील।

अश्व (-अ) सं—अयोग्य पात्र, कुपात्र।

अश्वान सं—अपादान कारक।

अश्व सं—अधोवायु, पाद।

अपापविद्ध (-अ) वि—निष्पाप ।

अपावदन सं—आवरण-मोचन ।

अपावृत्त (-अ) वि—खुला, उन्मुक्त ।

अपात्र सं—हानि, क्षति; नाश; कुश; बाधा, विघ्न । [बेहद ।

अपात्र वि—फूल-रहित, विशाल; असीम,

अपात्रक (-ग) वि—असमर्थ; अयोग्य ।

अपार्थिव (-अ) वि—पृथ्वीसे सम्बन्ध न रखनेवाला, अलौकिक ।

अपार्थमाने क्रि वि—असमर्थ होने पर ।

अपिठ अव्य—आरु—और भी, सिवाय ।

अपिठ अव्य—किन्तु, परन्तु, दूसरी ओर; यद्यपि ।

अपूजक वि—पुत्रहीन, बे-औलाद । [कच्चा ।

अपूठे (-अ) वि—अपूर्ण, दुबला-पतला,

अपूजक वि—फूल-रहित ।

अपूर्ण (-अ) वि—अधूरा, असमाप्त ।

अपूर्व (-अ) वि—अतिनव अनोखा, अद्भुत; विचित्र; उत्तम । [प्रार्थनीय ।

अपेक्षणीय (-अ) वि—इच्छा करने योग्य,

अपेक्षा (-क्त्वा) सं—आशा, इच्छा, चाह,

प्रयोजन; परवाह; प्रतीक्षा, विलम्ब;

तुलना । क्रि वि—तुलनामें । —कृत्वा क्रि

प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना । —कृत

(अ) क्रि वि—तुलनामें, मुकाबलेमें ।

अपेक्षित (-अ) वि—अत्यागित इच्छित, चाहा हुआ । [आदि ।

अपेक्ष (-अ) वि—पीनेके अयोग्य (मदिरा

अपेक्षित (-अ) वि—शिशु; नाबालिग ।

अपेक्ष सं—पुरुषके अयोग्य आचरण,

साहसका अभाव । —अपेक्षणीय (-अ) वि—

मनुष्यके द्वारा अकृत; ईश्वरकृत; स्वाभाविक,

प्राकृतिक; असाधारण । [छिपा हुआ ।

अप्रकाश वि—अप्रकाशित, अव्यक्त, गुप्त,

अप्रकाश सं—गोपन छिपाव गुप्तता । वि—अप्रकाशित, गुप्त, छिपा हुआ । —अप्रकाश (-अ) वि—प्रकट करनेके अयोग्य, निजी, खास, गुप्त ।

अप्रकृत (-अ) वि—कृत्रिम, बनावटी, मिथ्या । सं—अप्रेम, स्नेहका अभाव; बैर ।

अप्रतिबद्ध (-अ) वि—प्रतिबन्ध-रहित, बेरोकटोक ।

अप्रतिष्ठ (-अ) वि—अप्रसिद्ध-लज्जित, हक्काबक्का, घबड़ाया हुआ; उत्तर देनेमें असमर्थ ।

अप्रतिष्ठ वि—अनुपम, तुलना-रहित ।

अप्रतिष्ठ सं—निन्दा, अख्याति, बदनामी ।

अप्रतिष्ठ (-अ) वि—अवाध बाधा-रहित ।

अप्रतीति सं—सन्देह, शक, अविश्वास ।

अप्रतुल सं—अभाव, कमी ।

अप्रत्यक्ष (-क्त्वा अ) वि—परोक्ष, आँखोंसे ओझल, इन्द्रियके अगोचर, अदृश्य ।

अप्रत्यक्ष सं—संशय, सन्देह, शक, अविश्वास ।

अप्रत्यागित (-अ) वि—न चाहा हुआ; अचानक होनेवाला ।

अप्रतिष्ठ (-अ) वि—अविख्यात, अप्रसिद्ध ।

अप्रधान वि—गौण; अधीन; निकृष्ट ।

अप्रवीण वि—अनुभव-रहित, अदक्ष, अनाड़ी ।

अप्रमत्त (-अ) वि—सचेत, चौकस, सावधान ।

अप्रमाण सं—प्रमाणका अभाव, मिथ्या प्रमाण ।

अप्रमाणित (-अ) नि—प्रमाण-रहित; झूठा, मिथ्या ।

अप्रमाण सं—अमका अभाव, अभ्रान्ति, सचेतपन, सावधानी । अप्रमादी वि=

अप्रमत्त । [अयोग्य, अज्ञेय; विशाल ।

अप्रमत्त (-अ) वि—प्रमाणसे निर्णय करनेके

अप्रमाणनीय (-अ) वि—अनावश्यक; तुच्छ ।

अप्रमत्त (-अ) वि—ऋकोर्ण सँकरा, कम चौड़ा;

निकृष्ट, निन्दित, खराब ।

अथनत्र (-अ) वि—असन्तुष्ट, नाराज, नाखुश ।

अथनिक (-अ) वि—अथविष्ठ । अथनिकिः स
—अयशः, अलयाति ।

अथनूत वि—न बनाया हुआ ; हल्कावका ।

अथानूत (-अ) वि—अस्वाभाविक, अलौकिक ।

अथाल (-अ) वि—न पाया, हुआ ; न पहुँचा
हुआ । —अथक (-अ) वि—नावाक

नावालिग । स्त्री, —अथक । —यौवन वि—
यौवन तक न पहुँचा हुआ, तरुण, बालक ।
स्त्री, —यौवना ।

अथालि सं—अप्राप्ति, न पाना ; अभाव ।

अथाना (-अ) वि—पानेके अयोग्य ; दुर्लभ ।

अथानागिक वि—प्रमाण-रहित, माननेके
अयोग्य, ऊटपटांग । [मानने योग्य ।

अथानाग (-अ) वि—प्रमाणके अयोग्य, न
अथानागिक वि—अवाह्य प्रसंगके विलुप्त
असन्वद । [असन्तोषजनक ।

अथिव (-अ) वि—अहंकार, अप्रीतिकर
अथीति सं—अनानागिक मनमुटाव, अनवन,
असन्तोष, वैर, विरोध ।

अथवा सं—परी, स्वर्ग की नर्तकी ।

अथवानिनिष्ठ (-अ) वि—परीसे भी सुन्दर ।

अथन वि—फलहीन ; ऊसर ।

अथन (-अ) वि—फल पैदा न होनेवाला ।

अथन वि—अथन । —अथन वि—फल न
चाहने वाला, निष्काम ।

अथन सं—अथन दफ्तर, आफिस, कार्यालय ।

अथन (-अ) वि—अनखिला, न खोलता हुआ ।

अथन (-अ) वि—असीम, अनन्त ; समाप्त न
होनेवाला ।

अथन (अथकाश) सं—छुट्टी ; मौका ;

खाली म्यान, खाली समय, विराम ।

(अथकाश कि वि—अथकाश इतनेमें ।

अथकाश सं—गर्मी की छुट्टी) ।

अथक (-अ) वि—न कहने योग्य, अश्लील ।

अथक (-अ) वि—फँका हुआ ।

अथक गं—नीचे क्षेपण ; तलेछटा ।

अथक (-अ) वि—ज्ञात, विदित, मालूम ।

—अथक क्रि—जताना, मालूम कराना ।

—अथक क्रि—जानना, मालूम करना ।

अथक सं—ज्ञान खबर, सूचना ।

अथकाश सं—अथकाश नामिना जलमें उतर
कर स्नान ; खोज, छानबीन ; ध्यान,
विचार ।

अथक सं—अथकाश । धूँधट । अथक

(-अ) वि—अथकाश-गका धूँधट काढ़ी हुई ।

अथक स्त्री—धूँधटवाली ।

अथक (-अ) वि—विच्छिन्न, अलग किया

हुआ ; सीमावद्ध (अथक अथक) ।

अथक सं—सीमा, छेद ; विराम ; परिच्छेद ।

अथक वि—सीमावद्ध करनेवाला ।

अथक (अथकाश) सं—अनादर, उपेक्षा ।

धृणा । अथकाश (-अ) वि—अनादर,

वेद्वज्जत, उपेक्षित । अथक (-अ) वि—

अवज्ञाके योग्य, न मानने योग्य ।

अथक (-अ) सं—भूषण, अलंकार ;

शिरोभूषण । अथकाश सं—कुलका भूषण ।

अथक सं—अथकाश नीचे उतरना ; पार

होना, जन्म लेना । [सीढ़ी ।

अथक सं—भूमिका, प्रस्तावना ; सोपान,

अथक वि—अथकाश कड़ाहीके गढ़ेके समान

नतोदर concave

अथक सं—देवता का मूर्तिमें ग्रहण तथा ससार

आगमन ; अवतीर्ण देवता ; मूर्त रूप, प्रतीक

(अथक) । अथकाश सं—धर्मकी मूर्ति,

विचारपतिके लिए सम्योधान,

अथकाश सं—नीचे उतारना, प्रस्ताव ।

अथकाश सं—भूमिका, प्रस्तावना ।

अवतौर्ण (-अ) वि—उतरा हुआ, अवतार धारण किया हुआ।

अवदात (-अ) वि—शुद्ध, पवित्र, निर्मल।

अवदान सं—उपहार; कीर्ति; महान कार्य।

अवद्व (-अ) वि—खुला, मुक्त, असम्बद्ध।

अवद्व (-अ) वि—निन्दायोग्य; अकथनीय।

अवधान सं—मनोयोग; सावधानी, चौकसी, आदर।

अवधान (-अ) क्रि—(श्रेष्ठ जनके प्रति छननेके लिए प्रार्थना) कृपया छनिये (—नवर्णित)।

अवधात्रण सं—निर्द्धारण, निरूपण; निश्चय।

अवधात्रणैश्च (-अ) वि—निरूपण करने योग्य।

अवधात्रित (-अ) वि—निर्द्धारित, निश्चित, स्थिर। अवधार्य (-ज्ज-अ) वि—अवधारण-योग्य; निश्चित।

अवधि अव्य—इहेते से (जेदिन—आख पर्वाल), पर्वाल तक (जेदिन इहेते आख—)। सं—सीमा; अधिकता (इत्थे—नाहे); मियाद, समय।

अवधूत सं—एक शैव सम्प्रदाय, योगी।

अवधेश (-अ) वि—ध्यान देने योग्य।

अवधोतिक वि—अवधूत-सम्बन्धी।

अवध्र (-अ) वि—वध या हत्याके अयोग्य।

अवनत (-अ) वि—झुका हुआ, विनत, पतित (—जाति)। —गल्लके क्रि वि—सिर नीचा किये, विनयसे। अवनति सं—पतन, अधोगति, हीन दशा; विनय।

अवनमन सं—ज्ञानान्ना झुकाना, नीचे लाना, पातन। अवनशित, (-अ) वि—झुकाया हुआ, नीचे लाया हुआ।

अवनि, अवनी सं—पृथ्वी, धरती; देश। —जति सं—राजा राजा, सम्राट, बादशाह। —रूश् (-अ) सं—वृक्ष, पौधा।

अवनिवना, अवनिवनाउ, अवनावनि सं—

गनाशानिष्ठ मनसुटाव, अनमेल, पटरीका न बैठना; वेर।

अवलि सं=अवनिवना।

अवलि, अवली सं—मालव-देश।

अवली सं—उज्जयिनी, उज्जैन, मालव देशकी राजधानी। [योग्य। स्त्री—अवल्या।

अवक, (-अ) वि—उपजाऊ, फल पदा होने अववाशिक। सं—नदीके आसपासकी भूमि जहाँसे जल आकर नदीमें गिरता है basin

अवबूझ (-अ) वि—प्रबुद्ध, जागा हुआ; सावधान; ज्ञात।

अवबोध सं—ज्ञान, होश; सावधानी।

अवभाज सं—अभाग एकमें दूसरेका आरोप; ज्ञान, प्रतीति।

अवगल वि—अनादर करनेवाला।

अवमान, अवमानना सं=अपमान।

अवमानित (-अ) वि=अपमानित।

अवश्व सं—अंग, हाथ पर आदि, अंश; शरीर, मूर्ति।

अवश्वी वि—अंगयुक्त; साकार।

अवव वि—निकृष्ट, अधम, नीच, छोटा।

अवक्क (-अ) वि—रुंधा या रुका हुआ; बन्द किया हुआ, कैद, घेरा हुआ।

अवक्काध सं—प्रतिबन्ध, रुकावट, कैद; अन्त पुर, हरम; घेराव, परदा (—अव)।

अवक्काधक वि—रोकनेवाला; घेरनेवाला।

अवक्काह (-अ) सं—अवतरण, नीचे उतरना; उतार, गिराव, अवनति; कारणसे कार्यका अनुमान। अवक्काह सं—अवतरण।

अवव्वज्जनीश्च (-अ) वि—न त्यागने योग्य, अति आवश्यक।

अवव्वमान वि—अविद्यमान, अनुपस्थित।

अवव्वमाने क्रि-वि—मरनेके बाद; न रहने पर।

अवलश्च (-अ) वि—लटकने वाला। सं—

आश्रय, सहारा। अवनयन सं—आश्रय,
सहारा, आधार; उपाय; आश्रय-ग्रहण।
अवनयित (अ) वि—आश्रित, लटकता
हुआ; गृहीत। अवनयि वि—निर्मरशील,
सहारा लेनेवाला; अनुयायी (क्षीरानयि,
नद्यानयि)।

अवनयि वि—निबला। सं—खी, औरत।

अवनयि (अ) वि—उबटन लगाया हुआ,
घमण्डी।

अवनयिनायन कि वि—अनायास, सहजमें।

अवनयन सं—इन्तून, गङ्गागङ्गि जमीनमें
लोटना। अवनयित (अ) वि—जमीनमें
लोटा हुआ (क्षीरानयित, घूलमें लोटा हुआ)।

अवनयन सं—प्रलेप, उबटन, दोपारोप।

अवनयन सं—उबटन लगाना;
उबटन, घमण्ड प्रकाश।

अवनयन (अ) सं—चाटकर खाने योग्य खाद्य या
औषध। अवनयन सं—गले चाटनेका भाव,
या क्रिया, लेहन।

अवनयन सं—दर्शन, जाँच-पड़ताल करनेके
लिए दगन। अवनयनौत्र (अ) वि—
दर्शन-योग्य। अवनयनित (अ) वि—दृष्ट,
देखा हुआ।

अवनयि वि—विवश, लाचार, अवाध्य; विकल,
छुन्न। अवनयि (अ) सं—छुन्न अंग,
लकवा मारा हुआ अंग।

अवनयि (अ) वि—रादो घाकी, शेष बचा
हुआ (छूलादिनिष्ठ, छूटन; उच्छिष्ट
खाद्य)। अवनयिनायन (अ) सं—घाकी बचा
अंग।

अवनयित (अ) वि—अवाध्य, स्वेच्छाचारी।

अवनयन सं—शेष, अन्त, समाप्ति। अवनयन
क्रि—अन्तमें।

अवनयन (अ) क्रि—निगूँथ, जल, निस्सन्देह;

अवाध्य। —दुर्लभ (अ), —दुर्लभ (अ)

वि—अवश्य करने योग्य, अनिवार्य।

—शान्तौत्र (अ) वि—अवश्य पालने योग्य।

—हादौ वि—अवश्य होनेवाला, अटल, निश्चित।

अवनयन (अ) वि—क़ान्त, थका हुआ;

उदास, दुःखी। —उ सं—क़ान्ति, थकावट;

उदासी; कमजोरी।

अवनयन सं—अवकाश, छुट्टी; मौका। —अवनयन

सं—अपने पदसे बराबरके लिए अवकाश

ग्रहण retirement. —अवनयन (अ) वि—

अपने पदसे बराबरके लिए छुट्टी पाया हुआ
retired.

अवनयन सं—क़ान्ति, थकावट, विषाद, खेद,

उत्साहका अभाव, कमजोरी।

अवनयन सं—अन्त, समाप्ति, मृत्यु, सीमा।

अवनयन सं—सत्ता-रहित वस्तु, असार वस्तु।

अवनयन सं—दशा, हाल, स्थिति। —अवनयन सं—

दूसरी दशा। —अवनयन (अ) वि—सम्पन्न,

घनवान। —न सं—स्थिति, वास, ठहराव,

स्थान। —न दश क्रि—रहना, टिकना।

अवनयित (अ) वि—स्थित, ठहरा हुआ;

एकाग्र (—चित्त)। अवनयित सं—अवस्थान,

स्थिति; सत्ता, रहना।

अवनयित (अ) वि—एकाग्र, ध्यान लगाया

हुआ, सावधान। —चित्त क्रि—वि—ध्यान

लगाकर, सावधानीसे।

अवनयन सं—अवज्ञा, अनादर, बेपरवाही।

अवनयन सं—उपेक्षा, अवज्ञा, अनादर,

अमनोयोग। अवनयन क्रि—वि—अनायास,

सहजमें।

अवनयन वि—विस्मयके कारण चुप, मौन,

हक्काबक्का; गूँगा। —अवनयन (अ),

—अवनयन सं—आश्चर्य घटना।

अवनयन-गोत्र वि—वाक्य और मनके अगोचर

या अविषय, मन-वाणीसे परे (आत्मा, ब्रह्म) ।

अवाङ्मय वि=अश्रोतव्य ।

अवाणी स'—दक्षिण दिशा ।

अवाण्य (-अ) वि=अकथ्य ।

अवाध वि—बाधा-रहित, प्रतिबन्ध-हीन (—वागिच्छा) । अवाधित (-अ) वि—न रोका हुआ ; स्वच्छन्द, स्वतन्त्र । अवाधे क्रि वि—बिना बाधाके, स्वच्छन्दतासे ; अनायास, सहजमें ।

अवाध (-अ) वि—अवशीभूत, अबाध्य ; हठी ।

अवाञ्छ वि—प्रसंगसे बाहरका ; अप्रधान, गौण ; अन्तर्गत ।

अवाक्ष्य वि—बन्धु-रहित, सहायक-हीन ।

अवाञ्छ (-अ) वि—प्राप्त, पाया हुआ ।

अवाञ्छनीय (-अ) वि—रोकनेके अयोग्य ; अनिवाय ; अत्याज्य ।

अवाञ्छित (-अ) वि—अबाध, खुला, मुक्त ।
—वाञ्छ वि—दरवाजा खुला हुआ, सहजमें प्रवेश करने योग्य ।

अवाञ्छ (-ज्ज-अ) वि=अवाञ्छनीय ।

अवाञ्छय, अवाञ्छयि वि—सत्ता-हीन, मिथ्या ।

अविकल वि—वशवश ज्योंका त्यों, ठीक ठीक ।

अविकलित (-अ) वि=अशूट ।

अविकार, अविकारी वि—विकार-रहित, परिवर्तित न होनेवाला । अविकार्य (-ज्ज-अ) वि—विकृत होनेके अयोग्य । अविकृत (-अ) वि—न बिगड़ा हुआ ; सच्चा, असली, शुद्ध ।

अविकृति स'—अविकृत अवस्था ।

अविक्रीड (-अ) वि—न बिका हुआ ।

अविक्रय (-अ) वि—बिकनेके अयोग्य ।

अविश्रात (-अ) वि=अप्रतिष्ठ ।

अविच्छिन्न वि—बुद्धिहीन, मूर्ख, अज्ञ ।

अविचल, -लित (-अ) वि—अचंचल, स्थिर ।

अविचार स'—अन्याय ; अत्याचार ।

अविच्छिन्न (-अ) वि—अविच्छिन्न लगातार, विराम-हीन ।

अविच्छात (-अ) वि—न जाना हुआ, अज्ञात ।

अविच्छेद (-अ) वि—न जानने योग्य, अज्ञेय ।

अविहित (-अ) वि=अविच्छात ।

अविच्छिन्न वि—अनुपस्थित, गैरहाजिर ; सत्ता-हीन । —ता स'—अनुपस्थिति ; सत्ताहीनता ।

अविच्छा स'—माया, प्रकृति ; अज्ञान, रखेली ।

अविधि स'—अनियम, शास्त्र-विरुद्ध विधि ।

अविधेय (-अ) वि—न करने योग्य, अनुचित ।

अविनय स'—उक्ता दृष्टता, ठीकाई ; उजड़पन ।

अविनयी वि—उक्ता दृष्ट, ठीक ; उद्धत, उदंड अशिष्ट ।

अविनय (-नयन), अविनायी वि—अमर, नाश-रहित, अक्षय ।

अविनोत (-अ) वि=अविनयी ।

अविवाहित (-अ) वि—कुंआरा, क्वारा ।

अविवेक स'—अविचार ; भलाई-बुराईका अज्ञान ।

अविवेकी वि—अविचारी, भलाई-बुराई न समझनेवाला ।

अविवेक वि—विचार-रहित, मूर्ख ।

अविवेचना स'—विचारका अभाव ।

अविभाज्य (-अ) वि—विभक्त होनेके अयोग्य ।

अविमिश्र (-मिश्र-अ) वि—वेमेल, असली, शुद्ध ।

अविग्रह (-अ) वि=अविवेक । —कावित्रा स'—अविवेचना । —कात्री वि—बिना सोचे काम करनेवाला ।

अविग्रह (-अ) क्रि-वि=अनवग्रह । अविग्रहि स'—विरामका अभाव, निरन्तर स्थिति ।

अविग्रन वि—घना, सघन ; लगातार ।

अविग्राम वि—विराम-रहित ; लगातार ।

अविरुद्ध (-अ) वि—अनुकूल ।

अविवेक स'—उक्ता एकमत, विरोधका अभाव, मेल । अविवेकी वि—अशून्य

विरोध न करनेवाला। अविद्रोह क्रि वि—
विना विरोध, एक-मतसे।

अदिनश् (-अ) स—त्तरा, शीघ्रता। वि—शीघ्र,
जल्दी। अदिनश् क्रि वि—शीघ्र, जल्दी,
तुरंत।

अदिव्र (-अ) वि—अपवित्र, अशुद्ध, गन्दा।

अदिग्व स—अभेद; साधारण, एकसा।

अविश्रां (-आन्त-अ), अविश्रां क्रि वि—
अविश्राम निरन्तर, लगातार।

अदिक्षुत (-क्षुत-अ) वि—अप्रसिद्ध, अख्यात।

अविश्वास स—विश्वासका अभाव; सन्देह।

अविश्वासी वि—न माननेवाला, विश्वासके

अयोग्य; वेईमान। अविश्रां (-अ) वि—
विश्वासके अयोग्य; वेईमान।

अदिव्र वि—अगोचर, अदृश्य, अज्ञेय।

अदिव्रान स—अविरोध।

अदिव्रान्ति (-अ) वि—मतभेद-रहित।

अविनाशनी वि=अविद्रोही।

अविद्योर्ण (-अ) वि—न फैला हुआ, सक्षित।

अदिक्षुत (-क्षुत-अ) वि—न भूला हुआ।

अदिक्षित (-अ) वि—निषिद्ध, शास्त्रविरुद्ध,
गरकानूनी, अकृत।

अदीना स—सन्तान-रहित विधवा। वि—पति-
पुत्र-हीना, अनाथा।

अद्वय वि—नासमभ, अज्ञ, मूर्ख।

अद्वय वि—निरीक्षक, देखनेवाला।

अद्वय स—दर्शन, देखरेख, जांच-पड़ताल।

अद्वयक्षेत्र (-अ) वि—दर्शनीय, देखने योग्य।

अद्वयक्षेत्र वि—जो देख रहा है। [दृष्ट; पठित।

अद्वय स=अद्वय। अद्वयक्षेत्र (-अ) वि—

अद्वयक्षेत्र (-अ), अद्वय (-अ) वि=अद्वय।

अद्वय (अवैला) स—अपमय; दिनशेष।

अद्वयक्षेत्र वि—वेतन-रहित; बिना वेतन काम
करनेवाला।

अद्वय (-अ) वि—नियम-विरुद्ध, शास्त्र-विरुद्ध;
गैरकानूनी; अनुचित; निषिद्ध। —अ स—
नियम-विरुद्धता, निषिद्धता।

अद्वय वि—नासमभ, नादान, भोला।

अद्वय (-अ) वि—समभमें न आनेवाला।

अद्वय, अद्वय वि—गूंगा, बोलनेकी शक्ति-
रहित (-अ)।

अद्वय (-अ) स—पद्म, कमल।

अद्वय (-अ) स—साल, वर्ष। अद्वय-शतवर्ष।

अद्वय (-अ) स—आधा साल, छ मास
का समय।

अद्वय स—समुद्र, सागर।

अद्वय (-अ) वि—अप्रकाशित; अगोचर,
अज्ञेय। स—प्रकृति, माया, ब्रह्म।

अद्वयान स—अभ्यास या अनुभवका अभाव,
अनधिकार; चेष्टाका अभाव; लापरवाही।

अद्वयान्ति वि—व्यवसाय-बुद्धि-रहित, अनाड़ी;
अनधिकारी।

अद्वय (-अ), अद्वयक्षेत्र (-अ) वि—
विश्रंखल, अस्त-व्यस्त, गड़बड़। अद्वयक्षेत्र
स—विश्रंखला, बड़-हुन्तजामी, गड़बड़ी।

अद्वयक्षेत्र (-अ) वि=अद्वयक्षेत्र। —छिन्न (-अ)
वि—अस्थिर चित्तवाला, ख्याली, मौजी, लहरी।

अद्वयक्षेत्र स—व्यवहारका अभाव।

अद्वयक्षेत्री (-ञ्ज-अ) वि—व्यवहारके अयोग्य,
निकम्मा, तुच्छ; पतित।

अद्वयक्षेत्र (-अ) वि—व्यवधान-रहित, मिला
हुआ, संलग्न। [लाया हुआ; अप्रचलित।

अद्वयक्षेत्र (-अ) वि—व्यवहार या प्रयोगमें न
अद्वयक्षेत्र स—व्यभिचारका अभाव; अच्युति;
एकनिष्ठा। अद्वयक्षेत्री वि—अपरिवर्तनीय;

व्यभिचार न करनेवाला; एकनिष्ठ (-ञ्ज)।

अद्वय वि—अक्षय, अविनाशी। स—ब्रह्म;
(व्याकरणमें) परिवर्तित न होनेवाला शब्द।

अवार्थ (-अ) वि—अमोघ, सफल ; सार्थक ।
 अव्याप्ति सं—व्याप्तिका अभाव ; (न्यायमें)
 समूचे लक्ष्यपर लक्षणका न घटना, जैसे—
 'फूल लाल हैं'—यह लक्षण पीले नीले सफेद
 आदि अन्य रंगके फूलोंपर नहीं घटता अतः
 यह लक्षण अव्याप्ति-दोष-युक्त है ।
 अव्याहत (-अ) वि—वे-रोक, बाधा-रहित ।
 अव्याहति सं—दृशारे रिहाई, छुटकारा ।
 अव्यापन्न (-अ) वि—अशिक्षित, अनपढ़ ।
 अव्याप्त (-अ) वि—अविवाहित, क्वारा ।
 अव्यापन्न (-अ) सं=अशिक्षणोक्त ।
 अव्यक्त (-रुय-अ) वि=अथाक्त ।
 अव्यक्त (-अ) वि—न टूटा हुआ ।
 अव्यक्त (-अ) वि—असम्य, अशिष्ट ।
 अव्यक्त (-अ) वि—न होनेवाला ; असम्य ।
 अव्यक्त सं—निडरपन, साहस । वि—निडर,
 निमय । —भक्त सं—मुक्ति ।
 अव्यक्त वि—इतना भाग्यहीन, बदकिस्मत ।
 स्त्री—अव्यक्ती, अव्यक्तिनी ।
 अव्यक्त (-अ) सं—दृष्टे बदकिस्मती ।
 अव्यक्त सं—अयोग्य व्यक्ति, नालायक आदमी ।
 वि—गरीब ; अयोग्य ।
 अव्यक्त सं—न होना, अविद्यमानता ; कमी,
 घनाभाव । —व्यक्त (-अ) वि—गरीब, दरिद्र ।
 —नौव (-अ) वि—चिन्तनके अयोग्य,
 आकस्मिक । अव्यक्त (-अ) वि—चिन्तन
 न किया हुआ, अचिन्तित, आकस्मिक ।
 अव्यक्त (-अ) सं—शार्धकर्षण केन्द्रकी ओर
 आकर्षण gravity. [centripetal
 अव्यक्त (-अ) वि—केन्द्रकी ओर जानेवाला
 अव्यक्त सं—परीक्षा, जाँच ।
 अव्यक्त (-अ) वि—उभड़ा हुआ projected
 अव्यक्त सं—उभड़ projection
 अव्यक्त सं—सामने गमन ; प्राप्ति ।

अव्यक्त वि—सामने जानेवाला । [हुआ ।
 अव्यक्त (-अ) वि—कथित ग्रन्थित, पकड़ा
 अव्यक्त (-अ) सं—आक्रमण, हमला ।
 अव्यक्त सं—वृत्त लट्ट ।
 अव्यक्त सं—आघात, चोट ; अत्याचार ; हत्या ।
 अव्यक्त सं—संज्ञ-यन्त्र द्वारा मारण उच्चाटन
 आदि हिंसाकर्म ।
 अव्यक्त सं—उच्च कुलका मनुष्य, कुलीन,
 खानदानी आदमी ।
 अव्यक्त (-अ) वि—उच्च वंशका, कुलीन,
 खानदानी । —उच्च (-अ) सं—उच्च वंशीयों
 द्वारा राज्यशासन Aristocracy
 अव्यक्त (-अ) वि—अनुभवी, विशेषज्ञ, दक्ष,
 निपुण । —उच्च सं—अनुभव, विशेष ज्ञान ।
 अव्यक्त सं—प्रथम ज्ञान । अव्यक्त (-अ)
 वि—ज्ञात, चिह्नद्वारा परिचित । अव्यक्त
 सं—निर्दर्शन परिचय-चिह्न, स्मारक निशान ।
 अव्यक्त सं—नाम, संज्ञा, उपाधि, शब्दका
 अर्थबोधक शक्ति । अव्यक्त सं—शब्दकोश,
 लुगत । अव्यक्त (-अ) वि—वाच्य, कहने
 योग्य, बोधक । सं—नाम, संज्ञा ।
 अव्यक्त सं—प्रशंसा द्वारा सम्मान, स्वागत ;
 पूजा । —भक्त (-अ) सं—सम्मान और
 प्रशंसा जतानेके लिए उपहार-रूपसे प्रदत्त
 पत्र । अव्यक्त (-अ) वि—प्रशंसा द्वारा
 सम्मानित ; स्वागत किया हुआ ।
 अव्यक्त वि—नया, अपूर्व, अनोखा ।
 अव्यक्त सं—नाटकका खेल, स्वांग ।
 अव्यक्त (-अ) वि—लवलीन ; एकाग्र ।
 अव्यक्त सं—एकाग्रता, मनोयोग, तल्लीनता ;
 मरणत्रास । [हुआ, अभिनय किया हुआ ।
 अव्यक्त (-अ) वि—(नाटक आदि) खेला
 अव्यक्त सं—अभिनय करनेवाला, नाटक
 खेलनेवाला, नट । स्त्री—अव्यक्ती । अव्यक्त
 (-अ) वि—अभिनय-योग्य ।

अभिन्न (-अ) वि—भेदरहित, समान, मिला हुआ । —रुद्र वि—हम-दिल, एकचित्त ।
 अदिश्या स—इच्छा, आग्रह, मतलब, उद्देश्य, इरादा । अदिश्रुत (-अ) वि—इच्छित, लज्ज ।
 अदिशान्द वि—प्रणाम करनेवाला ।
 अदिशान्न स—प्रणाम, नमस्कार वन्दना ।
 अदिशान्ति (-अ) वि—प्रणम्य, नमस्कारके योग्य ।
 अदिशारु (-अ) वि—प्रकट, व्यक्त, स्पष्ट ।
 अदिशालि स—प्रकाश, विकास ।
 अदिश्व स—शत्रुत्व हार, पराजय ।
 अदिशवद स—देख-रेख करनेवाला, रक्षक guardian स्त्री—दड़िजाविका ।
 अदिशवद स—ज्याख्यान, भाषण ।
 अदिशुत (-अ) वि—हराया हुआ, पराजित ; किसी भावके आवेशमें आया हुआ, जैसे—
 शोकदिशुत ।
 अदिनठ (-अ) वि—अनुमोदित, सम्मत, मनोनीत, स्वीकृत । अदिनठ (-व्) स—
 मत, राय, सम्मति, विचार ।
 अदिमान स—अश्रद्धा, शर्क घमण्ड, शेखी ; प्रियजनकी त्रुटिके कारण श्रोम, रुठ ।
 अदिमानो वि—घमण्डी, अहंकारी, थोड़ेमें ही रुठनेवाला । स्त्री—अदिमानिनी ।
 अदिभूष, (-श्री) वि—सामनेका ; किसीकी ओर जानेवाला (शृङ्गदिभूष) ।
 अदिभूषीन वि—सामनेका ।
 अदिवान स—युद्धयात्रा, हमला, यात्रा ।
 अदिभूष (-अ) वि—अभियोग लगाया हुआ । स—मुलजिम । अदिशारु वि—अभियोग करनेवाला । स—वादी, मुहर्त ।
 अदिशाय स—शोषारोप, फरियाद, नालिश ।
 अदिशान वि—सुन्दर, रमणीक, मनोहर ।
 अदिश्रुति स—रचि ; इच्छा ; पसन्द ।
 अदिश्रुत (-अ) वि—अभिलाषके योग्य ।

अदिश्रुत (-अ) वि—इच्छित, चाहा हुआ ।
 अदिशार स—शेखर इच्छा, चाह, आकांक्षा ।
 अदिशायी वि—इच्छुक, आकांक्षी ।
 अदिश्रुत (-अ) वि—शापित, सराप दिया हुआ ; बदनसीब (-शौवन) ।
 अदिशाय स—शाप, बद हुआ, सराप ।
 अदिश्रुत (-अ) वि—राज-पद पर नियुक्त ; अभिषेक किया हुआ ।
 अदिश्रुत स—राज-पद पर बिठानेके निमित्त स्नानादिका अनुष्ठान ; स्नान ; छिद्रकाव ।
 अदिश्रुति स—दुरा मतलब, गुप्त अभिप्राय ; पड्यन्त्र ।
 अदिश्रुतात स—शाप, बद हुआ, सराप ।
 अदिशाय स—प्रियसे मिलनेके लिए सकेत-स्थल पर गमन । अदिशायक स—अभिसारमें जानेवाला पुरुष या नायक । अदिशायिका, अदिशायिणी स्त्री—अभिसारमें जानेवाली स्त्री या नायिका । अदिशायी स=अदिशायक ।
 अदिश्रुत (-अ) वि—वायल ; पराजित ।
 अदिश्रुत (-अ) वि—उक्त, कथित ।
 अदी वि—निडर, साहसी, भयहीन ।
 अदीश्रुत (-अ) वि—इच्छित, चाहा हुआ ।
 अदीश्रु वि—इच्छुक, आकांक्षी ।
 अदीश्रु (-अ) वि—वांछित, चाहा हुआ ; प्रिय ।
 अदीश्रु (-अ) वि—न खाया हुआ ; अनाहारी ।
 अदीश्रु (-अ) वि—अवदित ; अजन्मा ; अविद्यमान । —शूर्क (-अ) वि—पहले अवदित ; अपूर्व, अनोखा, विलक्षण ।
 अदीश्रु स—अभिन्नता, समानता । वि—अभिन्न, समान ।
 अदीश्रु (-अ) वि—भदके अयोग्य, आविभा-जनीय ।
 अदीश्रु (-अ) वि=अदीश्रु ।
 अदीश्रु वि—निराकार, सूक्ष्म, निरवयव ।

अभाङ्ग (-अ) स—तेल उबटन आदि द्वारा शरीर-मर्दन ।

अभाङ्गन स—शरीरमें लगानेका तेल आदि ; तेल-मर्दन ।

अभाङ्गस्र स—भीतरका भाग, मध्य ।

अभाङ्गव्रीण वि—भीतरी, अंदरूनी ।

अभाङ्गर्था स—अगवानी, स्वागत ।

अभाङ्गिष्ठ (-अ) वि—स्वागत किया हुआ ।

अभाङ्गिष्ठ (-अ) वि—पूजित, सम्मानित, पूज्य, माननीय ; मूल्यवान ।

अभाङ्गन स=अभाङ्ग ।

अभाङ्ग (-अ) वि—आदी ; कंठ किया हुआ ।

अभाङ्गागत (-अ) स—अतिथि, मेहमान, पाहुना ।

अभाङ्ग स—आवृत्ति ; आदत ; स्वभाव ।

अभाङ्गावि वि—अभ्यास करने वाला, साधक ।

अभाङ्ग स—छिड़काव ।

अभाङ्गान (-अभ्युत्थान) स—उदय, उठान, वृद्धि, उन्नति, विद्रोह । अभाङ्गिष्ठ (-अ) वि—उदित, उठा हुआ ; वर्धित ।

अभाङ्गस्र स—उन्नति, वृद्धि, बढ़ती, उदय ।

अभाङ्गिष्ठ (-अ) वि—उदित, उन्नत ।

अभाङ्गागत (-अ) वि—स्वीकृत, माना हुआ ।

अभाङ्गागत स—स्वीकार ; अनुमान ।

अभाङ्गागत स—भेंट, उपहार ।

अभाङ्गागत (-अ) वि—स्वीकृत ; प्राप्त ।

अब्ज (-अ) स—अभ्रक, अबरक, बादल, मेघ, आकाश । —उद्गी वि—मेघका भेदन करने वाला, बहुत ऊँचा ।

अब्जांशु वि—भाई-रहित ।

अब्जांशु (-अ) वि—अम-रहित, अचूक, ठीक ।

अभङ्गल स—अकल्याण, अहित । वि—अशुभ ।

—अनक वि—अशुभकारी ।

अभङ्ग स—असम्पत्ति ।

अभङ्ग वि—अथकात्र, अथकात्र वैसा, उस प्रकारका । किं वि—वैसे, उस प्रकारसे ।

अभङ्गि किं वि—वैसे, उस प्रकारसे ; मुफ्तमें ; बिना कारण ; खाली ; बिना प्रयास ; उसी समय ।

अभङ्गोत्थाग स—लापरवाही, उदासीनता ।

अभङ्गोत्थागी वि—लापरवाह, उदासीन ।

अभङ्ग वि—सदा जीवित रहने वाला, चिरजीवी । स—देवता ।

अभङ्गावती स—स्वर्ग, अमरलोक ।

अभङ्ग (-अ) वि—न मरने वाला ।

अभङ्गात्ता स—अनादर, बेइज्जती ।

अभङ्ग (-अ) स—क्रोध, गुस्सा ; असन्तोष ।

अभङ्ग वि—निर्ममल, स्वच्छ, पवित्र ।

अभङ्गक स—आमलकी आँवला ।

अभा स—अभावशः अमावस ।

अभांशु वि—मातृहीन, माता-रहित ।

अभाङ्ग (-अ) स—सचिव, मन्त्री, वजीर ।

अभाङ्ग स—अमानत, धरोहर ।

अभाङ्गना स—अपालन, न मानना ।

अभाङ्ग वि=अभाङ्ग ।

अभाङ्गिणि स—अमावस्याकी रात्रि ।

अभाङ्गी वि—घमंड-रहित, निरहकार ।

अभाङ्ग वि—मनुष्यत्व-रहित, पशु-सा, दुराचारी, मनुष्यसे ऊपरका, अलौकिक । अभाङ्गिक वि—मनुष्यत्वके विरुद्ध, पशु-तुल्य ।

अभाङ्ग (-अ) वि—न मानने योग्य, अश्रद्धेय । स—लंघन ।

अभाङ्ग स—कृष्णपक्षकी अन्तिम तिथि ।

अभाङ्गिक वि—सरल, भोला, निष्कपट ।

अभाङ्गिष्ठ (-अ) वि—न माँजा हुआ, संस्कार न किया हुआ ; क्षमा न किया हुआ ।

अभिठ (-अ) वि—अपरिमित, असीम, बेहद ।

—राष्ट्र स—वेष्टिवादी राष्ट्र वेष्टिसाव खर्च,

फञ्जूलखर्वी । —रात्री वि—यशवाग्री
 फञ्जूलखर्व ।
 यमिठागव स—असंयम, अन्याय आचरण ।
 यमिठागवो वि—असंयमी, अन्याय आचरण करनेवाला ।
 यमिठाउ (-अ) स—बुद्धदेव, गौतम बुद्ध ।
 यमिठाकव वि—तुक-रहित । —इन् स—तुक-रहित छन्द blank verse
 यमिठ (-अ) स—सुधा, अमृत ।
 यमिठ स—अनमेल ; मनमुटाव ।
 यमिष्ठ (-अ), यमिष्ठित (-अ) वि—न मिला हुआ, बिना मिलावटका, शुद्ध, खरा ।
 यमीमाणिठ (-अ) वि—फसला न किया हुआ ।
 यमूद वि—यज्ञातनान फलाना ।
 यमूद (-अ) क्रि वि—परलोकमें, स्वर्गमें ।
 यमूट (-अ) वि—मूर्ति-रहित, निराकार ।
 यमून, यमूद वि—मूल-रहित, मिथ्या ।
 यमू, (-अ) वि—अनमोल, बहुमूल्य ।
 यमू (-अ) स—सुधा, पोथूप, दूध ; बहुत मीठी चीज ; मुक्ति ; देवता । वि—न मरा हुआ । —रन स—आम । —जशौ वि—मीठा बोलने वाला ।
 यमूठ, यमूठौ स—अमिरती, इमरती, एक प्रकारकी बड़ी जलेबी जो दाल से बनती है ।
 यमूठागव वि—सुधा-सा, बहुत स्वादिष्ट ।
 यमूठ (-अ) वि—अपवित्र । स—विष्टा, मल ।
 यमूठ (-अ) वि—अव्यर्थ, अवक ।
 यमूठ स—आकाश आसमान ; वस्त्र (दिशमूठ) ; बादल, तेल मझलोकी आँतसे निकाला हुआ एक गन्धद्रव्य ।
 यमूश वि—अंदरसे सुवासित (-ठानाक) ।
 यमूश स—खटाई ; अम्ल रोग । वि—खट्टा ।
 यमूश (-अ) स—ब्राह्मण पिता और वैश्या

यश स—माता, माँ ; दुर्गा ।
 यश स—जल, पानी । —ज (-अ) वि—जलसे उत्पन्न । स—पद्म, कमल । —जा स्त्री—लक्ष्मी । —न (-अ) स—बादल, मेघ । —निषि स—समुद्र, सागर । —राठि, (-छौ) स—सौर आपाढ़के ता० ७से ६ तक तीन दिन (प्रवाद है—इस समय पृथ्वी रजस्वला होती है) इस समय ब्राह्मण तथा उच्च वर्ण की विधवायें व्रत रहती हैं ।
 यशौ वि—यशव्री ।
 यशः स—जल, पानी ।
 यशः (-अ) स—कमल ; शंख ; चन्द्रमा ।
 यशः (-अ) स—मेघ, बादल ।
 यशः, यशःनिषि स—समुद्र, सागर ।
 यश (-अ) स—आम आम ।
 यश (-अ) वि—ठेक खट्टा । स—खटाई ; अम्लरोग ।
 यशवान स—आकिसजन, एक गैस ।
 यशान वि—न मुरझाया हुआ, प्रफुल्ल, खुश, स्वच्छ । —यशन क्रि वि—नि.सकोच, बिना हिचकिचाये ।
 यशानाग स—खट्टी डकार ।
 यश (अजल -अ) स—अवहेलना, उपेक्षा ।
 यश वि—असत्य, झूठा, अनुचित । क्रि वि—झूठमूठ, व्यर्थ, अनुचित रीतिसे ।
 यशार्थ (-अ) वि—मिथ्या, झूठा, नकली ।
 यशन (अयन) स—पथ, मार्ग, गृह, निवास-स्थान ; गति, चाल (दिशयशन, छेड़यशन) ।
 यशन (अजश) स—अपयश, निन्दा, बदनामी ।
 यशनक वि—निन्दाजनक । यशनौ (अजशशी) वि—निन्दित, बदनाम ।
 यशन स—लोहा । यशः (-अ) स—सुम्बक ।
 यशाक वि—न मांगनेवाला । यशाकौय (-अ) यशाक (-अ) वि—न मांगने योग्य ।

अशाठि (-अ) वि—न मांगा हुआ, अप्रार्थित ।

—भावे कि वि—बिना मांगे ।

अशाखनौष (-अ), अशाख (-अ) वि—याजनके अयोग्य । [वाला ।

अशाखशाखी वि—पतित जातिका याजन करने-
अशाखा स—अशुभ यात्रा, यात्राके लिए अशुभ लक्षण ।

अश्वि अव्य—स्त्री-वाचक स्नेह-सूचक सम्बोधन ।

अशुल (-अ) वि—न मिला हुआ, असयुक्त, पृथक्, अलग, अनुचित, अडबड । अशुलि स—असम्बद्धता, पृथक्ता ; युक्तिका अभाव गड़बड़ी ।

अशूर्ण (अजुग्म-अ) वि—वेजोड़ ; पृथक् ।

अशूठ स—दस हजार, १०००० ।

अश्वत्थ-कथ स—पानी न सोखनेवाला कपड़ा, मोमजामा । [योग, कुसमय ।

अश्वोत्त स—सम्बन्धका अभाव ; वियोग, बुरा

अश्वोत्त (-अ) वि—अयोग्य, नालायक, नि-
कम्मा । —ता स—अनुपयुक्तता, निकम्मापन ।

अश्वानि वि—जन्मरहित, नित्य । —अ (-अ),
—गच्छवि—स्त्रीके गर्भसे न उत्पन्न होनेवाला ।

स्त्री —जा, —गच्छा ।

अश्लोकि वि—युक्तिविरुद्ध, वाहियात ।

अश्व स—पहियेका आरा ।

अश्वकवीर्य (-अ) वि—न रखने योग्य ।

अश्वकवीर्य कथा स्त्री—रजस्वला हो जानेके भयसे जो कन्या विवाह बिना किये रखी नहीं जा सकती । [किया हुआ ।

अश्वक्रिंत (-अ) वि—न रखा हुआ, रक्षा न

अश्वघटे (-अ) स—अरहट, रहँट, कूआँ । [काष्ठ ।

अश्वि, (-नी) स—यज्ञके लिए अग्निमन्थन-

अश्व (-अ) स—वन, जंगल । —श्री स—

न्यैष्ठ शुक्ला षष्ठी, इस दिन बंगाली स्त्रियाँ दामादकी पूजा करती हैं ।

अश्वगानी स—महावन, भारी जंगल ।

अश्वघ्न स—भाद्र सक्रान्ति, इस दिन बंगालमें प्राय लोग रसोई नहीं पकाते वासी अन्न खाते हैं ।

अश्वविम्भ (-अ) स—पद्म, कमल ।

अश्वगिरि वि—अरसिक, काव्यके रसका न समझनेवाला ।

अश्वारूढ वि—राजशक्ति-रहित, राजा-हीन, बिना राजाका, राज्यमें अव्यवस्था उत्पन्न करनेवाला ।

—ता स—राजशक्तिका अभाव, हलचल ; विप्लव, गदर । [(-अ) स—शत्रु-नाश ।

अश्वारि स—अरि, वैरी, शत्रु, दुश्मन । —लक्ष

अश्वि स—अश्वारि शत्रु । —कूल स—शत्रुदल ;

वैरी-वश । —नश्व स—शत्रुदमनकारी, वैरी-

नाशक ; विजेता । —शत्रु (-अ) स—शत्रुका

मित्र, दुश्मनका दोस्त । —शत्रु (-अ) स—

शत्रु-राज्य, विपक्षी राष्ट्र । [आयुर्वेदीय औषध ।

अश्विष्ट (-अ) स—गुड़ मिली हुई एक

अश्विष्टि स—अनरीति, कुरीति ।

अश्विष्ट वेग स—पहियेका वेग, चक्रगति ।

अश्विष्टि स—अनिच्छा, घृणा ; क्षुधाका अभाव ।

अश्विष्ट स—नवोदित सूर्य, बालार्क ; ऊषाकी लाल

किरण । वि—लाल (-नयन) । अश्विष्टि स—

स—लाल रंग, लाली । अश्विष्टि स—

सूर्योदय, ऊषाकाल, तड़का ।

अश्विष्ट वि—अश्विष्टि हृदयवेधी, बहुत दुःखदायी ।

अश्विष्टि स—सप्तर्षि-मण्डलका एक तारा ।

अश्विष्टि वि—रूप-रहित, निराकार, वेडौल ।

अश्विष्ट अव्य—अश्विष्ट अवे ।

अश्विष्टि स—ध्रुव-ज्योति aurora

अश्विष्ट (-अ) स—सूर्य ; मदार, आक ; अरक ।

—शत्रु स—रविवार, इतवार । [बाधा, अड़चन ।

अश्विष्ट स—थिन, दृक्कात्र इड़का अर्गला, रोक,

अश्विष्ट (-अ) स—दाम, मूल्य ; पूजाका एक

उपकरण । अश्विष्ट (-अ) वि—पूज्य, बहुमूल्य ।

सं—पूजामें देने योग्य जल फूल आदि ।

चर्क सं—पूजक, पुजारी । चर्कन, चर्कन, चर्का
सं—पूजा, उपासना ।

चर्कठ (-अ) वि—पूजित, उपासित । चर्क
(-अ), चर्कनौठ (-अ) वि—पूजनीय, उपास्य ।

चर्कद, चर्कद्विठा सं, वि—कमानेवाला ।

—चर्कन सं—उपार्जन, कमाना । चर्कठ
(-अ) वि—कमाया हुआ, प्राप्त किया हुआ ।

चर्कन सं—घनज्ञय, मकले पागडवका नाम,
एक वृक्ष । [सं—जहाज ।

चर्कसं—समुद्र, सागर । —चर्क, —चर्क, —चर्क
चर्क (-अ) सं—आशय, मतलब, माने; घन,
वित्त, निमित्त, प्रयोजन; इच्छा, अभिलाषा ।

—चर्क वि—घनदायक (-चर्कनाद, चर्कद्विठा
दिष्टा) । —चर्क (-अ), —चर्क (-अ) सं—
घनका अभाव, दारिद्र्य । —चर्क वि—
घनलुब्ध, लालची; कृपण, कंजूस । —चर्क
(-अ) सं—जुमाना । —चर्क वि—घनके
लिए स्नेह दया आदिका त्याग करनेवाला ।

—चर्क (-अ) वि=चर्कद्विठा । —चर्क सं—
प्रशंसा-वाक्य, मूल विषयकी प्रशंसाके लिए
कहानीका वर्णन, फलश्रुति । —चर्क वि—
घनवान, दौलतमद । —चर्क वि—शब्दायका
जाननेवाला, ज्ञानी, विद्वान । —चर्क वि—
सं—घनका लगाना, महाजनी । —चर्क
सं—घनका व्यवहार या प्रयोग । —चर्क
सं—खर्च, लागत । —चर्क सं—आयका
भेद । —चर्क सं—अयसचिव, वित्तसचिव

Finance Minister —चर्क, —चर्क, —चर्क
सं—घनकी लालसा, लालच । —चर्क, —चर्क
(-अ), —चर्क वि—घनका लालची ।

—चर्क वि—घनवान, दौलतमद । —चर्क (-अ)
सं—घन शिल्पकला राजनीति आदि सम्बन्धी
ग्रन्थ (कोडेन्स—), economics —चर्क

सं—घनका सचय । —चर्क सं—आशयका
मेल, घन या वित्तका संचय । —चर्क सं=
चर्कद्विठा । —चर्क (शपेक्ष-अ) वि—
घनपर निर्भर । —चर्क (-अ) सं—घनकी
मदद । —चर्क सं—उद्देश्य की सिद्धि ।

चर्कसं सं—आय, आमदनी ।

चर्क अन्य—अर्थ यह है कि, यानी ।

चर्कसं सं—दूसरा अर्थ, अन्य आशय ।

चर्कचर्क सं—एक प्रकारका अनुमान जिसमें
एक बातसे दूसरी बातकी सिद्धि हो जाती है ।

चर्कचर्क वि—घन चाहनेवाला । [मुद्दई, वादी ।

चर्क वि—इच्छा रखनेवाला, याचक; घनी;
चर्क अन्य—लिपु, उद्देश्यसे ।

चर्कचर्क सं—घनका उपार्जन, आय ।

चर्क (-अ) सं—आधा । —चर्क सं—आधा
घटा । —चर्क (-अ) सं—आधा चाँट, अष्टमी

का चन्द्रमा, गरदनियाँ । —चर्क सं—मध्यम
मार्ग का मध्य स्थान । —चर्क (-अ) वि—

आधी उमरका, अर्धे, प्रौढ़ । —चर्क (-अ)
सं—आधा गोला, वृत्तका आधा अंश ।

—चर्क (-अ), —चर्क सं—आधी रात, गहरी
रात । —चर्क (-अ) सं—आधा सौ, पचास ।

—चर्क वि—आधा लेटा हुआ recumbent
चर्क (-अ) सं—आधा अंग । —चर्क
(-अ) सं—आधा अंग, आधा शरीर, आधे

शरीरका लकवा । चर्कचर्क सं—पत्नी, भार्या ।
चर्क (-अ) सं—आधेका आधा, चौथाई ।

चर्क—वि, सं—आधा ।

चर्क सं—आधा चन्द्रमा, चन्द्रखण्ड ।

चर्कचर्क (-अ) वि—आधा कहा या
उच्चारण किया हुआ ।

चर्कचर्क सं—ज्योतिषका एक योग ।

चर्क सं—अर्पण, दान, भेंट । चर्कचर्क (-अ)
वि—देने योग्य । चर्कचर्क सं, वि—देने

बाला, दाता । अर्पित (-अ) वि—अर्पित,
दिया हुआ, प्रदत्त ।

अर्साढो न वि—आधुनिक, हाल का, मूर्ख ।

अर्स् द स—दस करोड़ ; शरीरमें गिलटी ।

अर्भ (-अ) स—बवासीर रोग piles

अर्भान (-नो), अर्भानो (क्रिया परि १, १६)—
बर्तानो प्राप्य होना (भित्ति गम्भीर भूतक
अर्भ), लगाना (मोक्ष अर्भ) ।

अई (-अ) वि—योग्य, उपयुक्त (पूछाई,
पछाई) ।

अई९ स—जैन या बौद्ध साधु, बुद्ध ।

अलक स—हृर्गकुल मस्तकके इधर-उधर लटकते
हुए बाल । —नाम स—केशल लटकते हुए
बालोंका लच्छा । —नन्ना स—शर्गना बदरीका-
श्रमके पासवाली नदी जो देवप्रयागमें आकर
गंगामें मिली है ; मन्दाकिनी ।

अलका स—कुवेर-पुरी । —तिनका स—
चन्दनादिके द्वारा मुख-चित्र ।

अलक (-अ), अलक स—आलता अलता ।

अलक्षण (अलक्षण) स—अशुभ लक्षण, बुरा
शकुन । वि—कुलक्षण-युक्त । स्त्री—अलक्षणा ।

अलक्षित (-अ) वि—अदृष्ट ; अज्ञात, अचानक
आ पड़नेवाला । —ठाट, अलक्षित कि वि—
अनजानमें, अदृश्यमें रहकर ।

अलक्षण वि—बदशकुनवाला, अभागा, मनहूस ।

अलक्ष्मी (अलक्ष्मी) स—दुर्भाग्यकी देवी ;
दुर्भाग्य ; एक गाली ।

अलक्ष्य (अलक्ष्य-अ) वि—अदृश्य, अनिणय,
लक्षणके बाहरका । स—लक्षणके बाहरका
पदार्थ (अलक्ष्य लक्षण-गणनके अतिव्याप्ति बाल) ।
अलक्ष्य कि वि—बाड़ाज ओटमें, अदृश्यमें रह
कर ।

अलक्षण स—अलक्ष्य करनेका कार्य, सजावट ।

अलक्ष्मी स—सजानेवाला । अलक्ष्मी स—

अलंकार, आभूषण, गहना, काव्यकी
रोचक वर्णन-शैली ; इस विषयका शास्त्र ।

अलङ्कृत (-अ) वि—अलंकार-युक्त, विभूषित,
सँवारा हुआ, साहित्यिक अलंकारोंसे
युक्त ।

अलङ्घन स—पालन, अनुपवास । अलङ्घनीय
(-अ), अलङ्घ्य (-अ) वि—न लाँघने योग्य,
अवश्य पालनीय ।

अलङ्घ्य (-अ) वि—लज्जाहीन, बेहया । अलङ्घ्य
स—लज्जाहीनता, बेहयाई ।

अलङ्घ्य वि—अभागा, बदनसीब ।

अलङ्घ्य, अलङ्घ्य (अलङ्घ्य) वि—असाव-
धान, लापरवाह ; अनाड़ी ।

अलङ्घ्य (अलङ्घ्य) स—पेड़ोंके नीचका
थाँवला, थाला ।

अलङ्घ्य (-अ) वि—अप्राप्त, न पाया हुआ ।

अलङ्घ्य (-अ) वि—अप्राप्त ; दुर्लभ, अमूल्य ।

अलङ्घ्य वि—ईएँ आलसी, छुस्त ।

अलङ्घ्य स—आलस, आलस्य, छुस्ती ।

अलङ्घ्य स—अलङ्घ्य अङ्ग जलता हुआ कोयला,
अंगारा । —लङ्घ्य (-अ) स—जलती हुई
लकड़ीको जोरसे घुमानेसे बना हुआ अग्नि-
मण्डल ।

अलङ्घ्य स—नाँठे लौकी, कहूँ ।

अलङ्घ्य स—अप्राप्ति ; हानि, नुकसान ।

अलङ्घ्य स—अमर, भौरा ; मदिरा ; बली ।

—अलङ्घ्य स—बली, नावालिगका अभिरक्षक
custodian. —लङ्घ्य स—भौरोंका कुँडा ।

—अलङ्घ्य स—अलङ्घ्य-बुँख तंग गली, गली-कूचा ;
किसी विषयका सूक्ष्म विवरण । —अलङ्घ्य स—

आलक्ष्य । —अलङ्घ्य स—आल मिट्टीका जलाधार,
कुँडा, मटका, घड़ा । —अलङ्घ्य स—

आलक्ष्य बरामदा ; आलक्ष्य चबूतरा ।

अलौ स—अलौ भौरा, मधुमक्खी ; बिच्छू ।

अनीक वि—यूनक भूठा, कल्पित; तुच्छ ।

—ता सं—यूनक भूठापन, मिथ्यात्व ।

अनीक (-अ) वि—निर्लोभी, लालच-रहित ।

अनीक (दृष्टि) स—अलौकिक दृष्टि clairvoyance —नीरात्र, —नीरात्र (-अ) वि—अलौकिक असाधारण । —अनीक सं—अत्यन्त सुन्दर, दिव्य ।

अनीक सं—लोभका अभाव, निर्लोभता ।

अनीक वि—निर्लोभ, लालच-रहित ।

अनीक वि—अशिथिल, कसा हुआ ।

अनीक वि—अरक्तिम, लाली-रहित ।

अनीक वि—लोकातीत, असाधारण ।

अनीक (-अ) वि—थोड़ा, जरासा, कुछ; तुच्छ, छोटा । अनीक अनीक, अनीक अनीक कविता क्रि वि—थोड़ा थोड़ा करके, बहुत अधिक न बढ़ कर ।

—नीक, —नीक (-नीक) सं—थोड़ा समय, क्षणभर । —नीक वि—छोटा चित्तवाला ;

अनुदार, कृपण, कजूस । —नीक वि—अल्पायु, थोड़ी उमरवाला । —नीक (अल्पम-अ) वि—

छोटी बुद्धिका ; अनुभव-रहित, नासमझ । —नीक सं—अदूरदर्शिता, अनुभव-राहित्य ;

नासमझी । —नीक वि—अदूरदर्शी, अनुभव-रहित, नासमझ । —नीक वि—अल्पजीवी,

अल्पायु ; छोटा चित्तवाला ; अनुदार, कृपण, कजूस । —नीक, —नीक (-नीक-अ) वि—

कम उम्रवाला, तर्लु । —नीक सं—वचन, यौवन । —नीक वि—दुर्बल, कमजोर,

थोड़ी शक्तिवाला । —नीक (-नीक) वि—अल्पज्ञ, थोड़ा ज्ञानवाला । —नीक (-नीक-अ) वि—थोड़ा पढ़ा-लिखा ; अल्पशिक्षित ।

—नीक स—अल्पभाषण taciturnity । —नीक वि—कम बोलनेवाला । —नीक, —नीक वि—थोड़ी बुद्धिवाला, अदूरदर्शी, नासमझ,

मूर्ख । —नीक (-अ) वि—थोड़ा सा, जरा

सा । —नीक क्रि वि—थोड़ी मात्रा में ।

—नीक क्रि वि—थोड़े मूल्यमें । —नीक वि—अल्पवश । —नीक (-नीक-) वि—गिनतीमें

थोड़ा, अल्पसंख्यक । —नीक (-नीक-अ) वि—अल्प-वश थोड़ा-बहुत, अल्प ।

अनीक वि—कम-ओ-वेश ।

अनीक वि—नीक तंग, सँकरा ।

अनीक वि—कम उम्रवाला, अल्पजीवी ।

अनीक वि—अल्प में सतुष्ट ; तुच्छ वस्तु चाहने वाला, नीचमना ।

अनीक सं—भोजन में सयम ।

अनीक वि—अल्प-भोजी, कम खानेवाला ।

अनीक (-अ) वि—अल्प किया हुआ, घटाया हुआ ।

अनीक वि—अल्पायु (गाली) ।

अनीक वि—असमर्थ, कमजोर ।

अनीक सं—असमर्थता, कमजोरी ।

अनीक (-अ) वि—असाध्य, करनेके अयोग्य ।

अनीक (-अ) वि—निडर, भय-रहित ; नि.स देह ।

—नीक (-अ) वि—भयके अयोग्य । अनीक (-अ) वि—न डरा हुआ, न घबराया हुआ ।

अनीक (-अ) सं—पीपलका वृक्ष ।

अनीक सं—भोजन, खाद्य, खाना (-नीक) ।

अनीक सं—वज्र, गिरी हुई बिजली (-नीक) ।

अनीक (-अ) वि—शब्द-रहित, मौन, शान्त ।

अनीक वि—गृह-रहित, निराश्रय ।

अनीक वि—शरीर-रहित, निराकार ।

अनीक (-अ) वि—शस्त्र-रहित, वेहथियार ।

अनीक वि—शास्त्र-रहित ।

अनीक (-अ) वि—अस्थिर, बेचैन ; उड़ड ।

अनीक स—बेचैनी, घबराहट ।

अनीक (-अ) वि—शान्त करनेके अयोग्य ।

अनीक (-अ) वि—अनित्य, नाशवान ।

अनीक सं—शासन या प्रवचन का अभाव,

अराजकता । अशाननीय (-अ) वि—वश में रखने के अयोग्य, उद्दंड ।

अशास्त्र (-अ) स—खराब शास्त्र, न मानने योग्य शास्त्र । वि—शास्त्र-विरुद्ध, अविधिक, अनुचित अवैध । अशास्त्रीय (-अ) वि—शास्त्र-विरुद्ध, अविधिक ।

अशिक्षित (अशिक्षित-अ) वि—अपढ़ ।

अशिव (-अ) स—अमंगल । वि—अशुभ, बुरा ।

अशिष्ट (-अ) वि—असभ्य, अभद्र ; उद्दंड ।

अशिष्टाचार, अशिष्टाचार स—अभद्र व्यवहार ; उद्दंडता ।

अनीति स—आशि अस्सी, ८० । —उत्र (-अ) वि—अस्सीवाँ, ८० वाँ । —पत्र वि—अस्सी वर्षका (वृद्ध) ।

अनील वि—असभ्य, अभद्र ; दुराचारी ।

अशुचि वि—अपवित्र, नापाक ; गंदा ।

अशुद्ध वि—अपवित्र ; गलत ।

अशुद्धि स—अपवित्रता ; गलती ।

अशुभ स—अमंगल, अहित ; दुर्भाग्य, पाप वि—बुरा, अमंगल-जनक । —रात्री वि—अमंगल-जनक , अहितकारी । —कृष्ण (-रखने) कि वि—अशुभ समय में ; बुरी साइट में ।

अशेष वि—असीम, नि शेष ; पूर्ण । —अकार वि—सब प्रकार से । —विध (-अ) वि—अनेक प्रकारके ।

अशोक वि—शोक-रहित, सुखी । स—अशोक वृक्ष, एक मौर्य सम्राट, चन्द्रगुप्तका पौत्र । —वही स—चैत्र शुक्ला षष्ठी ।

अशोचनीय (-अ), अशोच्य (-अ) वि—शोक करनेके अयोग्य ।

अशोधन स—शोधनका अभाव, अपवित्रता, गलती, भूल ; ऋणका न चुकाया जाना ।

अशोधनीय (-अ) वि—शोधनेके अयोग्य ।

अशोधित (-अ) वि—न शोधा हुआ ।

अशोधा (-अ) वि—अशोधनीय ।

अशोभन वि—व्यमान भद्दा, कुरूप ।

अशोभित (-अ) वि—न सजाया हुआ, सादा । [या सुखनेके अयोग्य ।

अशोषणीय (-अ), अशोषा (-अ) वि—सोखने अशोष (अशुचि) स—अशुद्धि, अपवित्रता, अशौच (छाताशौच, गृहशौच) । अशोषण (-अ) स—अशौच कालका अन्त ।

अश्व (अश्व-अ) स—अश्व पथर ।

अश्वर (अश्वर) वि—अश्व पथरीला ।

अश्वी स—आश्वि व्राण पथरी रोग ।

अश्वीकृत (-अ) वि—प्रस्तरभूत fossilized.

अक्ष (अक्ष-अ) स—कोण angle (चतुर्भुज) ।

अक्षधन, अक्षध (-अ) वि—श्रद्धाहीन ।

अक्षका स—अभक्ति, अविश्वास, अवज्ञा ।

अक्षक्षेत्र (-अ) वि—श्रद्धाके अयोग्य, घृणार्ह ।

अक्षय (-अ) वि—न थका हुआ, लगातार ।

अक्षयि स—छान्तिका अभाव, अविच्छिन्नता ।

अक्षय (-अ) वि—छननेके अयोग्य, अश्लील ।

अक्षु (अक्षु) स—नेत्रवात्रि, छात्र वल आँसू (आनन्दार्क्ष) । —गद्गद्कृष्णि वि—आँसुओं से गला रुंधते हुए । —पाठ स—आँसू का गिरना । —पूर्व (-अ) वि—आँसुओं से भरा ।

—पूर्व नष्टन, —पूर्व नेत्रे कि वि—आँसुओंसे भरे नेत्रोंसे, आँखें डबडबाते हुए । —वात्रि स—आँसू । —उत्रा वि—अक्षपूर्व । —मोचन स—आँसुओंका गिराना । —मिल वि—आँसुओंसे तर ।

अक्षु (अक्षुत अ) वि—न छना हुआ ।

—पूर्व वि—पहले न छना हुआ ।

अक्षय (-अ) स—अशुभ, अमंगल, हानि ।

अक्षयक्षत्र वि—अमंगलजनक ।

अक्षय्य (-अ) वि—न छनने योग्य ।

अक्षरावली (-अ), अक्षरा (-अ) वि—
प्रशंसा के अयोग्य ।

अक्षर वि—फुहड़, भटा, लज्जाजनक ।

अक्षर स—अग्लेपा नक्षत्र ।

अक्ष (अग्न-अ) स—घोडा, तुरंग, अग्न ।

—गति वि—घोड़े की तरह नौड़नेवाला ।

सं—घोड़े की गति । —गाना स—बुड़सवारी,

अग्नपरिचालन । —छि स—आश्रय छि

कुछ भी नहीं, कल्पित विषय, आकाश-कुछम-

सी असम्भव बात । —उत्तर स—अक्षर खचर ।

—भाव, —भावक, —वचक (-वचक) स—नटन

साईस । —गति क्रि वि—घोड़े की पीठपर ।

—गाना स—बाजादन अस्तबल । —गाने

सं—बुड़सवार, अग्नारोही सैनिक । —अग्न

(-अग्न स—घोड़े की हिनहिनाहट, हेषा ।

अक्षर (अक्षर-अ) स—अग्नवत्, पीपल ।

अक्षर (अ) वि—बुड़चढ़ा, बुड़सवार ।

अक्षरावली वि—बुड़सवार ।

अक्षर स—अग्नवती नक्षत्र ; घोड़ी । —अग्न

स—त्वष्टा की कन्या प्रभा नामकी स्त्री से

उत्पन्न सूर्यके दो यमज पुत्र जो देवताओं के

वैद्य माने जाते हैं ।

अक्षर (-अ) वि—अग्न-सम्बन्धी, घोड़ेका ।

अक्ष (-अ) स वि—आठ आठ, ८ । —८ स—

आठका समूह ; आठ । —१ क्रि वि—आठ

प्रकारसे ; आठों ओर ; आठ बार । वि—

आठगुना । —अष्टादश (-अ) वि—अड़-

तालीसवाँ, ४८वाँ । —अष्टादश वि—

अड़तालीस, ४८ । —अष्टादश वि—अष्टादश-

द्वि । —१४ स—सोना चाँदी ताँबा रांगा

जस्ता सीसा लोहा और पारा ये आठ धातु ।

—नक्षत्र स, वि—अठानवे, ६८ । —नक्षत्र

वि—अठानवेवाँ, ६८वाँ । —अक्षर (-पचाशत्)

वि—अठानवन, ५८ । —अक्षर वि—

अठानवनवाँ, ५८वाँ । —अक्षर स—दिनरात ,

दिनरात का उत्सव या नाम-कीर्तन ।

क्रि वि—आठों पहर, सदा, निरन्तर । —वि

(-अ) वि—आठ प्रकार का ; आठगुना ।

—अक्ष स—दुर्गाकी आठ हाथोंवाली मूर्ति ;

विन्ध्याचलकी देवी । —अ वि—आठवाँ,

८वाँ । —अक्षर स—आठ मंगल-चिह्न जैसे—

सिंह वृष हस्ती जलपूर्ण घट पखा भंडा शंख

और दीया । —अक्ष (-अ) स—आठवाँ

अक्ष, ८वाँ भाग । —अक्ष स—अष्टमी तिथि ।

वि—आठवीं । —अक्ष स—अन्य, कुछ भी

नहीं, पूर्ण असफलता । —अक्ष स, वि—

अड़सठ, ६८ । —अक्ष वि—अड़सठवाँ, ६८

वाँ । —अक्ष स, वि—अठहत्तर, ७८ ।

—अक्ष वि—अठहत्तरवाँ, ७८ वाँ ।

—अक्ष स—योग की आठ सिद्धियाँ जैसे—

अणिमा लघिमा व्याप्ति प्राकाम्य महिमा

ईशित्व वशित्व और कामावशायिता ।

अष्टादश (-अ) वि—आठ भागों में बँटा हुआ,

आठपेजी octavo

अष्टादश (अष्टादश-अ) स—आठ अंग जैसे—दो

हाथ, छाती, कपाल, दो आँखें, गला और

पीठका मध्यभाग—इन पर तिलक-चिह्न धारण

करने की विधि है ; योगके आठ साधन

जैसे—यम, नियम, आसन, प्राणायाम,

प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ।

—अष्टादश, अष्टादश स—भूमिपर

गिरकर दड़वत प्रणाम ।

अष्टादश (-अ) वि—अड़तालीसवाँ, ४८ वाँ ।

—२ वि स—अड़तालीस, ४८ । —अ

(-अ) वि—अष्टादश ।

अष्टादश स, वि—अठारह, १८ । वि—अठारहवाँ,

१८वाँ ।

अष्टादश (-अ) वि—अठारहवाँ, १८वाँ ।

—छि सं, वि—अट्टाईस, २८ । —छिउम

(-अ) वि=अष्टाविंश ।

अष्टौनी, अष्टौनीति सं, वि—अठासी, ८८ ।

अष्टौनीतिउम वि—अठासीवाँ, ८८वाँ ।

अष्टौक्ष (अष्टास्र-अ) वि—आठकोणोंवाला ।

सं—अष्टकोण ।

अष्टे शृंष्टे कि वि—सब ओरसे, सब अंगों में ।

अष्टौतत्र शत (-अ) स, वि—एक सौ

आठ, १०८ । [विस्तृत ; उदार ।

अशकौर्ण (अशंकोने-अ) वि—सँकरा नहीं,

अशकूटि (-अ) वि—अकुचित, न सिकुड़ा

हुआ ; दुविधा-रहित ; उदार ।

अशकोच सं—सकोच का अभाव । अशकोच

क्रि वि—नि सकोच ।

अशथ (अशंथ-अ), अशथात (-अ),

अशथात्र (-अ) वि—अगणित, वेशुमार,

संख्यातीत ।

अशगत (-अ) सं—नामुनासिब, अनुचित ।

अशगति सं—वेसिलसिलापन ।

अशवृत्त (-अ) वि—अनाच्छादित, उघाडा,

खुला, शिथिल बलवाला ।

अशवत्त (-अ) वि—सयम-रहित, उच्छृंखल,

अनियमित, ढीला, शिथिल, बन्धन-रहित ।

अशयम सं—सयम का अभाव, यथेच्छाचार,

उच्छृंखलता । [असंयत, अडबड ।

अशयश्र (-अ) वि—पृथक, अलग, संयोग रहित,

अशयश्रित (-अ) वि—सशय-रहित, निश्चित ।

अशयश्र क्रि वि—नि सदेह, निश्चित रूपसे ।

अशयश्रिष्ठ (-अ) वि—सम्बन्ध-रहित ।

अशयश्रुत (-अ) वि—न शोधा हुआ, अपवित्र,

सस्कार न किया हुआ, न सजाया

हुआ । स—संस्कृत से भिन्न भाषा ।

अशकृत् (अशकृत्) क्रि वि—एकाधिक बार,

अनेक बार, बार बार ।

अशक्त (अशक्त-अ) वि—आसक्ति रहित ।

अशगोत्र (अशगोत्र-अ) वि—भिन्न गोत्र का ।

अशकौर्ण वि=अशकौर्ण । अशकूटि वि=

अशकूटि । अशकोच सं=अशकोच । अशवत्त

वि=अशवत्त । अशयश्रिष्ठ सं=अशयश्रिष्ठ ।

अशयश्रुत (-अ) वि—चरित्रहीन, लम्पट,

दुराचारी । स—दुराचार ।

अशकृत् (अशकृत्) वि—दरिद्र, गरीब । —अ

सं—दरिद्रता, गरीबी ।

अशयश्रुत सं—दुष्ट या खराब आदमी ।

अशत् (अशत्) वि—बुरा, खराब ; अपवित्र,

दुष्ट, वेईमान, सत्ता-रहित, मिथ्या, कल्पित,

—कथा सं—बुरा काम करनेवाला, दुराचारी ;

जुमवार । —गथावनश्र वि—कुमागगामी,

दुरे मार्ग पर चलनेवाला ।

अशतक (अशतक-अ) वि—असावधान, बेखबर,

लापरवाह ।

अशठ सं—व्यभिचारिणी, छिनाल ।

अशठ सं—सत्ता-राहित्य, अविद्यमानता ।

अशठ (अशठ-अ) वि—मिथ्या, झूठा,

कल्पित ।

अशठवत्त, अशठवत्त सं—बुरा बर्ताव, दुराचार ;

अनुचित व्यवहार । अशठवत्त वि—दुरा-

चारी, अनुचित व्यवहार करनेवाला ।

अशयश्रुत (-अ) वि—असमान, भिन्न ।

अशयश्रुत वि—अवैध दान लेनेवाला ; लोभी ;

रिखतखोर ।

अशयश्रुत सं=अशयश्रुत ।

अशयश्रुत सं—अभाव, असत्ता, धनाभाव,

अनुपस्थिति ; मनमुटाव, वैर ।

अशयश्रुत (-अ) वि—सशय-रहित ।

अशयश्रुत (-अ) वि—शत्रुहीन ।

अशयश्रुत (-अ) वि—एक ही पितरों को पिंड न

देनेवाला, सात पीढ़ी से बाहरका ।

अनर्क (-अ) वि—पृथक् वणका ।

अनञ्ज (अशम्य-अ) वि—गँवार, अशिष्ट ।

अनम (-अ) वि—असदृश, विषम ; ऊबड़खाबड़ ।

—अनम (-कख-अ) वि—असमान, नाबराबर ;

अप्रतिद्वन्द्वी । [क्रि वि—परोक्षमें, पीछे ।

अनन्य (-अ) वि—परोक्ष, अगोचर । अनन्य

अनन्य वि—असगत ; अयोग्य ; असदृश,

युक्तिविरुद्ध । स—असामजस्य ।

अनमय (अशमय) स—बुरा समय, दुःखका समय ; अकाल ।

अनमर्श (-अ) वि—अक्षम ; अयोग्य ; दुर्बल ।

अनन्यार्शन (अशम्यार्शन) स—अनुचित साहस,

दुःसाहस । अनन्यार्शनक वि—दुःसाहसी,

असाधारण साहस रखने वाला ।

अनमान वि—असमान, भिन्न प्रकारका ; असम-
तल, ऊबड़खाबड़ ।

अनमनिका दिग्—पूर्वकालिक क्रिया (जैसे—
दर्शन करके, शिष्ट खाकर, गान दर्शन
पीकर) ।

अनमद (-अ) वि—असम्पूर्ण, अपूर्ण ।

अननीकान्धो (अशमीकृतकारी) वि—यदिशु-
काश फलाफल और पूर्वापर विचार न करके
काम करने वाला ।

अनन्य (-अ) स—सम्बन्धका अभाव ।
वि—सम्पर्क-रहित । अनन्य (-अ),
अनन्य (-अ) वि—सम्पर्क-रहित ; नाता-
रहित ।

अनन्य (अशम्य-अ) वि—सम्बन्ध-रहित,
वेमिलसिलेका, अर्थहीन ।

अनन्य वि—असम्भव, नासुमकिन ।

अनन्य (-अ) वि—अनहोना, नहोने वाला,
नियंत्रण होनेकी सम्भावना भी न हो । अनन्य

(-अ) वि—अनन्याशिन, अचानक आ पड़ने

वाला । अनन्य (-अ) वि—अनन्य ।

अनन्य स—अनन्या अपमान, अनादर ।

अनन्य (-अ) वि—असहमत, गैर-राजी, अस्वी-
कृत, अनिच्छुक । अनन्य स—अनन्य असम्मत,
अनिच्छा, अस्वीकृति ।

अनन्य स—अनादर, अपमान ।

अनन्य (अशह-अ) वि—असहिष्णु ; असहनीय ।

—न स—असहिष्णुता, असहनीयता । वि—

असहिष्णु । —नौ (-अ) वि—न सहने योग्य ।

—मान वि—असहिष्णु, क्षमा न करने वाला ।

—वाग (अशहजोग, स—असहयोग, साथ

मिलकर काम न करने का भाव ।

अनन्य वि—नि सहाय, सहायक-रहित, अकेला ।

अनन्य (अशम्य-अ) वि—अनन्य ।

अनन्य (अशकृताते) क्रि वि—परोक्ष में,
पीछे ; अनुपस्थिति में ।

अनन्य (-अ) वि—अशोभन ; न सजाया
हुआ ।

अनन्य वि—छुन्न, चेतना-शून्य, जड़-सा ।

अनन्य—अनन्य अनजान में ।

अनन्य (-अ) स—असमानता, भिन्नता ।

अनन्य स—अनिच्छा ।

अनन्य (-अ) वि—साधन करने के अयोग्य ।

अनन्य वि—असामान्य, विशेष, खास ।

अनन्य वि—बुरा, खराब, बेईमान, दुष्ट ;
व्याकरणके नियम-विरुद्ध ; अशुद्ध, अगलील ।

—ऊ, —इ (-त अ) स—बेईमानी, दुष्टता ।

अनन्य (-अ) वि—न करने योग्य, दुष्कर,
कठिन ; आरोग्य होनेके अयोग्य । —गान,

—गान स—असम्भव कायका सम्पादन ।

अनन्य (अशावधान) वि—अनन्य ।

अनन्य (-अ) स—सामजस्यका अभाव ।

अनन्य वि—असमय का, समयसे पहलेका ।

अनन्य वि—समर-विभाग से भिन्न, नागरिक
civil

अमार्थ (-अ) सं—सामर्थ्य या शक्तिका
अभाव ; दुर्बलता, कमजोरी ; अयोग्यता ।

अमार्थ (-अ) वि=अमार्थता ।

अमार्थ वि—असावधान ; मलका वेग धारण
करनेमें असमर्थ ।

अमार्थगामिक वि—किसी सम्प्रदायके पक्षपात-
रहित, दल-निरपेक्ष ; सार्वजनीन, उदार ।

अमार्थ (-अ) स—असमानता ; भेद ।

अमार्थ वि—अकिञ्चिद्वत्, राखे तुच्छ ; निकम्मा ;
सारहीन ।

अमि (अशि) सं—उत्तवात्रि तलवार, खड्ग ।
—अमि (-अ) स—तलवार और ढाल ।

अमिठ (-अ) वि—कृष्ण काला । सं—काला रंग ।

अमिष (-अ) वि—न सीमा हुआ, वेपका,
कच्चा ; असम्पूर्ण ; अप्रमाणित ; सिद्धि
अप्राप्त । अमिषि स—असफलता, नाकामयाबी ;
असम्पूर्णता ; अप्रमाणित अवस्था ।

अमोघ वि—वेहद, सीमा-रहित, अगन्त ।

अमृ सं—प्राण (शब्दाश्च —गतप्राण, मृत) ।

अमृथ स—सुखका अभाव, दुःख, कष्ट ; रोग,
बीमारी (अमृथ कृत्वा वा शब्दा क्रि—बीमार
होना या पड़ना) । अमृथ-विमृथ सं—रोग ।
अमृथो वि—दुःखी, सुख-रहित ।

अमृविधा (अमृविधा) स—दिक्कत, कठिनाई ;
अडचन, बाधा ।

अमृमात्र वि—अगणित, बेशुमार, बहुत अधिक ।

अमृत्र स—अमृत्र, दैत्य ; दुष्ट आदमी ।

अमृश् (-अमृश्-अ) वि—शोषित बीमार, रुग्ण ;
अस्वस्थ । —अमृ सं—पीड़ा, बीमारी,
अस्वस्थता ।

अमृषण (अमृषण) वि—परदेमें रहने
वाली जिसे सूर्य भी न देख सके ।

अमृ सं—अमृषण, ईर्ष्या, डाह ;
द्वेष ; क्रोध, गुस्सा ; निन्दा । —अमृ,

—अमृषण, —अमृषण (-अ) वि—अमृषण,
डाही ।

अमृश्क (अमृश्क) सं—रक्त, खून, रधिर । —अमृ
सं—रक्तकी धारा ।

अमृगिक वि=अमृगिक ।

अमृशान, अमृशान, अमृशान (अमृशान-अ)
सं—मित्रताका अभाव, शत्रुता, वैर ।

अमृनिष्ठ (-अ) वि—स्खलित या पतित न होने
वाला ; अटल, निरन्तर स्थित ।

अमृ (अस्त-अ) वि—हुआ हुआ, तिरोहित,
अदृश्य ; नष्ट, ध्वस्त । सं—लोप, अदर्शन ;
अवसान । —अमृ (-अ) वि—अस्तगत, डूबा
हुआ । —अमृगनाश्रु वि—अस्त जानेमें
उद्यत । —अमृ सं—अस्तगमन ; ध्वंस ।
—अमृ (-अ) वि—अस्तगत ।

अमृत्र सं—अमृत्र, हथियार ; चीरफाड़ ; रंगका
प्रथम लेप ; अस्तर । [अमृ=अमृगनाश्रु ।

अमृषण सं—अस्तगिरि । —अमृषी, —अमृषी
अमृषि क्रि—आए है, मौजूद है । —अ (अस्तित्व-
अ) स—सत्ता, विद्यमानता, मौजूदगी ।

अमृ (अस्तु) अव्य—ऐसा ही हो, अस्तु ।

अमृथ (-अ) सं—अमृथ, चोरीका न करना ।

अमृषण सं—सूर्यास्तसे सूर्योदय तक समय,
सारी रात ।

अमृषण (-अमृषण) वि=अमृगनाश्रु ।

अमृ (अस्त-अ) स—अमृत्र, अमृत्र, हथियार
(अमृ कृत्वा, चीरफाड़ करना) । —अमृषण स—

अमृषणचिकित्सक, चीरफाड़ करने वाला डाक्टर ।

—अमृषण (-अमृषण) स—अमृषणचिकित्सक
विद्या, युद्धविद्या ; चीरफाड़ करनेकी विद्या ।

—अमृषण (-अमृषण) स—अमृषणचिकित्सक ।

—अमृषण, अमृषण स—अमृषणचिकित्सक arsenal.

अमृषण (-अ) वि—अमृषणचिकित्सक ।

अमृषी वि—अमृषणचिकित्सक ; अमृषणचिकित्सक ।

अश्वीक वि—विपत्नीक; पत्नी-रहित ।

अश्वीकान्न स—शस्त्रोपचार, चीरफाड़ ।

अश्वीक (अस्थान) सं—पुरा स्थान, अयोग्य स्थान; स्थानाभाव ।

अश्वीक वि—चल, मनकूला ।

अश्वीक वि—स्थायी न रहने वाला ।

अश्वि सं—शुद्ध हड्डी ।—अश्वीकान्न, —अश्वीकान्निष्ठ (अ) वि—क्षीण, ठरीमात्र, दुबला-पतला ।

—अश्वीक, —अश्वीकान्न सं—किसी मृतकके अग्निसंस्कारके बाद उसकी बची हुई अस्थिका गंगा आदि पवित्र नदीमें प्रवाह । —नात्र वि—अश्वीकान्न ।

अश्वि सं—स्थिति या जीविका का अभाव ।

अश्वि वि—चंचल, डाँवाँडोल; बेचैन; अस्थायी । —ठा, —द (-त-अ), अश्वीक (अस्थीक-अ) सं—चंचलता अस्थायीपन; अधीरता, धैर्यका अभाव ।

अश्वीक (अज्ञात-अ) वि—न नहाया हुआ ।

अश्वीक (अ) वि—निरुपन्द्र, स्तब्ध; स्थिर ।

अश्वीक (अ) वि—वाग्गता पुँधला; अस्पष्ट, सहजमें न दिखाई या नुनाई पढ़ने वाला ।

अश्वीक (अ), अश्वीक (अ), अश्वीकान्न (अ) वि—छूनेके अयोग्य; अपवित्र, अज्ञात ।

अश्वीक (अ) वि—न छूआ हुआ, पवित्र ।

अश्वीक (अ) वि—स्पृहा या इच्छा रहित, निरुपद्रव; उदासीन । —नोत्र (अ) वि—इच्छा के अयोग्य । [अन्यक्त, अरुपद्रव ।

अश्वीक (अ) वि—अश्वीकान्न न खिला हुआ ;

अश्वीक (अश्वीक-अ) वि—हमारा, अपने सम्बन्धका, अपना ।

अश्वीक (अ) वि—अपने देश का ।

अश्वीक (अश्वीक-अ) वि—प्राणा गदला; अपारुपद्रव; नलिन ।

अश्वीक (अ) वि—पराधीन ।

अश्वि सं—बेचैनी, घबराहट ।

अश्वीक (अ) सं—पराधीनता ।

अश्वीकान्न (अश्वीकान्न-अ) वि—अप्राकृतिक; असाधारण, स्वभावविरुद्ध ।

अश्वीक वि—मालिक-रहित, लावारिस ।

अश्वीकान्न, अश्वीकान्न वि—स्वास्थ्य-हानिकारक ।

अश्वीकान्न सं—इनकार, नामजुरी, अपासन, असम्मति प्रकाश । अश्वीकान्न (अश्वीकान्न-अ) वि—स्वीकारके अयोग्य । अश्वीकान्न (अ)—इनकार किया हुआ, नामजूर । अश्वीकान्न सं—अश्वीकान्न ।

अश्वीकान्न, अश्वीकान्न सं—घमण्ड, शेखी ।

अश्वीकान्न (अश्वीकान्न-अ) वि—स्वार्थी ।

अश्वीकान्न सं—दिन, दिवस ।

अश्वीकान्न सं—अहंकार, गर्व, घमण्ड ।

अश्वीकान्न (अ) क्रि वि—प्रतिदिन; सदा ।

अश्वीकान्न क्रि वि—दिनरात; सदा ।

अश्वीकान्न (अ) अव्य—हाय हाय !

अश्वीकान्न सं—गर्ज साँप ।

अश्वीकान्न (अश्वीकान्न-अ) वि—हिंसा-रहित; बल-प्रयोगमें अनिच्छुक । अश्वीकान्न वि—हिंसा न करने वाला ; हानि न करने वाला । अश्वीकान्न सं—अहिंसा; वैरका अभाव । अश्वीकान्न (अ) वि—हिंसाके अयोग्य । [करने वाला ।

अश्वीकान्न (अहिंसा-अ), अश्वीकान्न वि—हिंसा न करने वाला ; हानि, नुकसान । —अश्वीकान्न वि—हानिकारक, नुकसानदेह । —अश्वीकान्न वि—हानि करने वाला । अश्वीकान्न सं—विरुद्ध आचरण, ऐसा बतावे जिससे किसीको हानि पहुँचे ।

अश्वीकान्न (अहिंसा-अ), अश्वीकान्न वि—हिंसा न करने वाला ; हानि, नुकसान । —अश्वीकान्न वि—हानिकारक, नुकसानदेह । —अश्वीकान्न वि—हानि करने वाला । अश्वीकान्न सं—विरुद्ध आचरण, ऐसा बतावे जिससे किसीको हानि पहुँचे ।

अश्वीकान्न (अहिंसा-अ), अश्वीकान्न वि—हिंसा न करने वाला ; हानि, नुकसान । —अश्वीकान्न वि—हानिकारक, नुकसानदेह । —अश्वीकान्न वि—हानि करने वाला । अश्वीकान्न सं—विरुद्ध आचरण, ऐसा बतावे जिससे किसीको हानि पहुँचे ।

अश्वीकान्न (अहिंसा-अ), अश्वीकान्न वि—हिंसा न करने वाला ; हानि, नुकसान । —अश्वीकान्न वि—हानिकारक, नुकसानदेह । —अश्वीकान्न वि—हानि करने वाला । अश्वीकान्न सं—विरुद्ध आचरण, ऐसा बतावे जिससे किसीको हानि पहुँचे ।

अश्वीकान्न (अहिंसा-अ), अश्वीकान्न वि—हिंसा न करने वाला ; हानि, नुकसान । —अश्वीकान्न वि—हानिकारक, नुकसानदेह । —अश्वीकान्न वि—हानि करने वाला । अश्वीकान्न सं—विरुद्ध आचरण, ऐसा बतावे जिससे किसीको हानि पहुँचे ।

अश्वीकान्न (अहिंसा-अ), अश्वीकान्न वि—हिंसा न करने वाला ; हानि, नुकसान । —अश्वीकान्न वि—हानिकारक, नुकसानदेह । —अश्वीकान्न वि—हानि करने वाला । अश्वीकान्न सं—विरुद्ध आचरण, ऐसा बतावे जिससे किसीको हानि पहुँचे ।

अश्विनकुल स—साँप और नेवलेके समान जन्मसे वैरी । [वि—अफीमची ।

अश्विन स—आश्विन, आश्विन अफीम । —मदी

अश्विन स—शिव, महादेव ।

अश्विन स—अश्विन अजी, हे ।

अश्विन स, अश्विन स क्रि वि—बिना कारण ।

अश्विन स—अश्विन ओह ।

अश्विन स (-अ) क्रि वि—दिनरात ; सदा ।

अश्विन स—अश्विनके जवाबका शब्द, जी ।

आश्विन (ऐटलास) स—नकशोंकी पुस्तक ।

आश्विन (ऐटिन) क्रि वि—इतने दिन ।

आश्विन स—ऐलुमिनियम, एक छपेद हल्की धातु Alluminium.

आश्विन (ऐसिड) स—तेजाब ; अम्ल वस्तु Acid.

आ

आ उप—अल्प सम्यक व्याप्ति सीमा विच्छेद आदि भाव सूचक उपसर्ग जैसे,—आश्विन, आश्विन पका ; आश्विन, भूमि तक ; आश्विन, जल स्थल सवत्र ; आश्विन, न कटा हुआ । अव्य—विस्मय खेद आनन्द आदि भाव सूचक अव्यय, जैसे—आ अरे ! आ कपाल, हा भाग्य ! आ कि आश्विन, आः कैसा आराम !

आश्विन, आश्विन, आश्विन, आश्विन स्त्री—जिदि आ मातामही, नानी ।

आश्विन, आश्विन स्त्री—सधवा, सौभाग्यवती ।

आश्विन स—अश्विन छटपटी, बेचैनी ।

आश्विन स—आश्विन कानून, विधान । —अ

(-नग्न-अ) वि—कानूनदाँ, विधिज्ञ । —अ

क्रि वि—कानूनसे, न्यायसे legally. —अ

क्रि वि—कानूनके अनुसार । —अ

अश्विन (-अ) वि—कानूनी, विधि-सम्मत ।

आश्विनश्वशी (-जायी), आश्विनश्वशी (-शारे) क्रि वि—आश्विनश्व ।

आश्विन क्रि—आश्विन (मैं) आया या आयी ।

आश्विन (-अ), —अश्विन वि—अविवाहित,

क्वारा । —अश्विन स—विवाहके पहले

दुलहे या दुलहिनका अपने पिताके घर

विशेष अन्न ग्रहण रूप संस्कार ।

आश्विन स्त्री=आश्विन ।

आश्विन, आश्विन स—मैं । [आयी ।

आश्विन (-अ) क्रि—आश्विन (वह) आया या

आश्विन (-शा) क्रि—आश्विन आना [(आश्विन

आश्विन शस्त्र—आश्विन हम जाय) । स—

आगमन, आना ।

आश्विन, आश्विन स=आश्विन ।

आश्विन (आउन्स) स—औंस ounce.

आश्विन, आश्विन स—अश्विन दर जाने पर

मुँहसे निकलने वाला अर्थहीन शब्द ।

आश्विन, आश्विन वि—शीघ्र पक जानेवाला

(धान) ।

आश्विन (-नो), आश्विन (क्रि परि १६)—

आँच पर उवाकर गाढ़ा करना, खोलना

(दूध) । [खोलना, रटना, बार बार पड़ना ।

आश्विन (-नो), आश्विन (क्रि परि १६)—

आश्विन स—आवरण, छाया ।

आश्विन स्त्री—औरत, स्त्री, नारी ।

आश्विन (-नो), आश्विन (क्रि परि १६)—

आश्विन फोड़ा आदि फूल कर दद करना, टीसना

(फोड़ा—) ।

आश्विन स—वृक्षादि सम्पत्ति ।

आश्विन स—औलाद, सन्तति ।

आश्विन स—मित्र, साथी ; मुसलमान सन्त,

औलिया ।

आश्विन स—शब्द, आवाज ।

आश्विन वि—अश्विन आवारा ।

प्रांति, प्रांति सं—रुज, वनप्रदाय शक्ति
अंगूठीके आकारकी पुस्ता, कढ़ाही कंडाल
आदि पकड़नेकी अंगूठी; अंगूठी।

प्रांति, प्रांति, प्रांति, प्रांति सं—यक्ष्म
अंगूठी। [कौयला ।

प्रांति, प्रांति सं—प्रांति अंगारा; जलता
प्रांति, प्रांति सं—अंगरेखा, चपेकन।

प्रांति वि—अश-सम्बन्धी; कुंठ, अंशतः।

प्रांति अर्थ—विन्मय वेद क्रोध या हर्ष सूचक
व्यव्य।

प्रांति, प्रांति सं—शेकु लख, गन्ना।

प्रांति सं—यह अंक, हिसाब (—कवा,
हिसाब लगाना); दाग, रेखा (—कणि,
रेखा खींचना)। [हमेशा ।

प्रांति (आंकेदार) कि वि—शामना अकसर,
प्रांति सं—कड़ा अंकुड़ा hook.

प्रांति (नौ), प्रांति (कि परि १६)—
होपोंसे लपेटकर पकड़ना।

प्रांति सं—अक्षर पर अंकुड़ेकी तरह चिह्न
(जैसे, क, फ के सामने और व के पीछे है)।

प्रांति (अ) कि वि—नाले तक (—जोखन)।

प्रांति, प्रांति (आखनि) सं—मसाले या
मसाला दवाय।

प्रांति (अ) सं—अक्षर, मदार।

प्रांति सं—अल्प कम्पन, थरथराहट।

प्रांति (अ) वि—अल्प कम्पित।

प्रांति सं—अनि छान; उत्पत्ति-स्थान, आधार
(अक्षर—समुद्र, अक्षर—चन्द्रमा)।

—व (अ) वि—खनिज, छानसे उत्पन्न।

प्रांति, प्रांति (अ) वि—खनिज, छान-
सम्बन्धी।

प्रांति (अ) कि वि—कान भेद कान तक।

प्रांति कि—अवज, छनना।

प्रांति वि—खींचनेवाला। सं—खुम्मेक।

प्रांति सं—छान खींचाव (अक्षर)।

प्रांति वि—आकषण-सम्बन्धी। सं—खींचने
की वस्तु।

प्रांति (अ) वि—खींचा हुआ, आकृष्ट।

प्रांति (आंक्षि) सं—जगि, जगा लगा,
पेड़ोंसे फल तोड़नेका बांस, अंकुश।

प्रांति कि वि—अकसर, हमेशा।

प्रांति (आकशिक्) वि—एक-एक आ
पड़नेवाला।

प्रांति (कि परि ३)—चित्र खींचना; लकीर
खींचना। वि—खींचा हुआ, अंकित, चित्रित।

—जोख वि—चित्रित, अनेक रंगोंसे रंजित,
लकीरनेवाला।

प्रांति (आकांक्षा) सं—इच्छा, वासना,
अभिलाषा, चाह। प्रांति (अ)

वि—इच्छित, चाहा हुआ। प्रांति

वि—अभिलाषी, चाहनेवाला।

प्रांति वि—निचोटे दिलकुल, निरा (—मूर्ख)।

प्रांति वि—बिना कटा, न कटा हुआ, सादृत।

प्रांति वि—बाहरी चावल परकी पतली लाल
परत ने निकाला हुआ (—गल)।

प्रांति (नौ), प्रांति (कि परि १०)—
अंकित कराना, चित्र खींचना।

प्रांति वि—छेना-बांका टेढ़ा-मेढ़ा, धक्र।

प्रांति सं—आकृति, मूर्ति, चेहरा, गठन;
आ अक्षर, आकारका (१.) चिह्न। —अक्षर
सं—आचरण, बर्ताव demeanour.

प्रांति (अ) वि—रूपान्तरित।

प्रांति सं—अकाल, दुर्मिर्ष; बुरा समय।

प्रांति वि—असमयमें उत्पन्न; न टिकाऊ।

प्रांति सं—आसमान; आतावरण; शून्य;
स्वर्ग। —अक्षर सं—आकाशमें फूल खिलने
की-सी असम्भव बात; कल्पित वस्तु।

—अक्षर सं—आकाशमें चमकते हुए

तारोंकी पंक्ति The milky way. —तावर
सं—रेडियोका धारा-प्रवाहक तार जो प्रायः
छतके ऊपर लगाया जाता है aerial.
—आजान सं—जमीन-आसमान; अनन्त
प्रकार, सब विषय । —आकी सं—अकास-
दीयां । —आनी सं—देवी आणी । —आकि
(वृत्ति) सं—अनिश्चित जीविका । —आन
(-जान्) सं—हवाई जहाज, विमान;
गुब्बारा । —आ (-स्थ -अ) वि—आकाशका;
स्वर्गीय ।

आकिर्णन (आकिर्चन) सं—आशा, वासना,
आग्रह । [(कर्कशकीर्ण)]

आकीर्ण (-अ) वि—झड़ाना बिखरा हुआ

आकुर्णन (आकुर्चन) सं—संकोचने, सिकुड़ने ।

आकुर्णित (-अ) वि—सिकुड़ा हुआ ।

आकुर्णित, आकुर्णित वि—गद्य व्याकुल, बेचैन ।
सं—बचैनी ।

आकुर्ण वि—कातर व्याकुल, बेचैन, कातर
(आकुर्णन) ; भय-भीत । आकुर्णित (-अ)

वि—घबराया हुआ । आकुर्णित-विकुर्णित सं—
अति आग्रह, बहुत उत्सुकता, बेचैनी ।

आकुर्णित सं—इच्छा, अभिलाषा; उत्सुकता,
आशय ।

आकुर्णित सं—आकार, शकल, बनावट; चेहरा ।

आकुर्णित (-अ) वि—खींचा हुआ, आकर्षित,
प्रलोभित; जोता हुआ । आकुर्णित सं—
आकर्षण, खिंचाव ।

आकुर्णित वि—आकर्षित होनेवाला ।

आकुर्णित सं—अकल, बुद्धि, ज्ञान । —आकुर्णित
सं—इष्टवृत्ति हवासका गुम होना, घबराहट ।

—आकुर्णित सं—अकिल-दाढ़ wisdom-tooth

—आकुर्णित सं—मूर्खताका दंड़; अनुभव-
हीनताके कारण हानिकारक दंड़ ।

आक्रम (आक्रम) सं—विक्रम पराक्रम;

आक्रमण; अधिकार; उद्यम । —आ सं—
आक्रमण, चढ़ाई; बलप्रयोग । —आ (-अ)

वि—आक्रमण करनेके योग्य । [महगी] ।

आक्रा वि—महंगा, महार्घ । (—आक्रा दिन,

आक्रा (-अ) वि—जिस पर आक्रमण हुआ
हो (आक्रा) ; क्षिप्त; अभिशूत; आवृत ।

आक्रा वि—आक्रमण करनेवाला ।

आक्रा सं—द्वेष, क्रोध grudge.

आक्रा (-अ) वि—बहुत थका हुआ ।

आक्रा (आक्रा) वि—अक्षर-सम्बन्धी,
अक्षरके अनुसार literal (—आक्रा) ।

आक्रा (आक्रा -अ) वि—फेंका हुआ,
आक्षेप-युक्त ।

आक्रा (आक्रा) सं—खेद, पश्चात्ताप,
पछतावा; खिंचाव, ऐंठन; निन्दा, आक्षेप ।

आक्रा सं—आक्रा ऊख, गंधा । [आक्रम]

आक्रा (आक्रा) सं—अखाड़ा, अड्डा,

आक्रा (आक्रा) सं—ग्रन्थ अभिनय
आदिका अभ्यास या पूर्व प्रयोग rehearsal.

आक्रा सं—इच्छा इन्द्र ।

आक्रा सं—कीर्तनमें जो पद मूल संगीतके
साथ इच्छानुसार जोड़ दिये जाते हैं ।

आक्रा सं—अखरोट ।

आक्रा सं—उनांन, हृन्नी खुल्हा ।

आक्रा सं—आँख, चक्षु, नेत्र ।

आक्रा सं—ईश्वर चूहा, मूस; चोर ।

आक्रा सं—बादना, आवाज, प्यारे बच्चे या
प्यारी पत्नीका किसी विषयके लिए जिदके
साथ निरन्तर प्रार्थना ।

आक्रा सं—आखिर; परिणाम, अन्त ।

आक्रा वि—आखिरी, अन्तिम ।

आक्रा सं—नाम, सज्ञा; उपाधि; कथन । —आ
(-अ) वि—कथित; व्याख्यात; विख्यात ।

—आ सं—काश्मीरी कहानी, गल्प, इतिहास । —आ

जग स—गल्पांश । —शब्द (-अ) सं—पुस्तकका वह प्रथम पत्र जिसपर उसका नाम दास आदि रहता है । —इद वि—कथक कहने वाला ।

—त्रिका स—कहानी कहानी, किस्सा ।

आदेश (-अ) वि—कथनीय कहने योग्य ; नाम देने योग्य ।

आश स—आगा, अगला भाग, सामनेका भाग । वि—सबसे ऊँचा (गाछ—ऊँचा) । —जाना

क्रि—पूजाकी वस्तुओंमेंसे थोड़ासा उठा रखना ।

आशङ्क स—काँश टट्टर, टट्टरका दरवाजा ।

—वाशङ्क स—तरह तरहकी निकम्मी चीजें ; अगड़म-बगड़म, दकबाद ।

आशङ्क स—भूसी, चोकर ।

आशङ्क (-अ) वि—आया हुआ, उपस्थित, हाजिर ; प्राप्त, अधिगत । —कना (-अ) स—

—आनेवाला कल । —आश वि—अभी आनेवाला, आसन्न ।

आशङ्क (आगतुक) स—नवागत व्यक्ति, मेहमान ।

आशङ्क स—तन्त्र, वेद ; आगमन ; प्रवेश ; शास्त्र-प्रमाण । —न स—आगमन, उपस्थिति । —नो स—उमाके पित्रालयमें आनेके सम्यन्वका गाना ।

आशङ्क स—जड़ टट्टी ; इका बचाव ।

आशङ्क (आग्ला) वि—तुला, उधारा ।

आशङ्कान (आग्लानो), आशङ्काना (क्रि परि १६) —चौकसी करना, रखवाली करना, अगोरना ।

आश स—उगा अगला भाग, सिरा ; सामनेका अंश । —आश क्रि वि—शुरूसे आखिर तक ।

—आशङ्क, (-आशङ्क) क्रि वि—सिरसे पैर तक । स—नख-शिख, सारा शरीर ।

आशङ्क स—आश आश घासपात, नोया ।

आशङ्क, आशङ्क क्रि वि—सामने ; पहले, अगाड़ी । —आशङ्क क्रि वि—आगे पीछे ।

आशङ्क (नो), आशङ्काना (क्रि परि १०)—आशङ्क आगे बढ़ना या बढ़ाना ; पहुँचाना ।

आशङ्क वि—अक्षिप । [वाला कल] ।

आशङ्क वि—आगे आनेवाला (-कना, आने आशङ्क स—घर, मकान ; कमरा ; आधार ।

आश स—अग्र, आगा । क्रि वि—आगे, पहले ।

—आश क्रि वि—पहले ; सामने । —आश क्रि वि—आगे पीछे, पहले या बादको ।

आशङ्क स—आग, अग्नि (कना—अभागा, बदलसीध ; आश—, मुँहमें आग लगे, गाली) ।

वि—आग-सा (आश—आश, क्रोधमें आग-बबूला होना) । —आश क्रि—आग लगाना ।

—आशङ्क क्रि—आग लगाना । —आश वि—मुँहजली (गाली) ।

आशङ्क, आशङ्क वि—अग्रसर ; आगे बढ़ा हुआ । [हुआ] ।

आशङ्क (-अ) क्रि वि—पूरी तक (लटका आशङ्क स—लटकाना) ।

आशङ्क क्रि वि—सामने, पहले । —आश वि—पहलेका, पिछला । —आश क्रि वि—आगे पीछे ।

—आश क्रि वि—सबसे पहले, पहले पहल ।

आशङ्काना वि—अस्तव्यस्त, विश्रुतल ।

आशङ्क स=आशङ्क ।

आशङ्क (-अ) वि—अग्नि-सम्यन्वही, आगका ; आग-सा उज्ज्वल । —आश स—ज्वालामुखी

Volcano. आशङ्क (-अ) स—बन्दूक तोप आदि अग्नि उत्पादक अस्त्र ।

आशङ्क (-अ) स—आश आग्रह, जिद, हठ ; उत्सुकता ; आसक्ति ; यत्न । आशङ्क स—अति आग्रह, बहुत जिद । आशङ्क

(-अ) वि—आग्रही, जिदी, उत्सुक ।

आशङ्क, आशङ्क स—व्यवहारके अयोग्य घाट ।

आशङ्क स—आश, आश, आ चोट, धार ।

आशङ्क स—आघात प्रदान ।

आञ्जान स—गन्ध ग्रहण (—कृत्र,—गृह्य) ।
 आञ्जान (—अ) वि—सूँघा हुआ ; तृप्त ।
 आञ्जानक वि—सूँघनेवाला ।
 आञ्जान, आञ्जान, आञ्जाना स—आर देखो ।
 आञ्जान स—अंगारा, कोयला ।
 आञ्जान स=आञ्जान ।
 आञ्जान, आञ्जान स=आञ्जान, आञ्जान ।
 आञ्जान, (—जि) (आञ्जान) =आञ्जान ।
 आञ्जाना (आञ्जाना) स=आञ्जाना ।
 आञ्जिक (आञ्जिक) वि—अंग-सम्बन्धी ; विषय-
 सम्बन्धी ; अंगभंगी द्वारा प्रकट (—अञ्जिक) ।
 आञ्जिक स—अञ्जिक, आञ्जिक आंगन, सहन ।
 आञ्जिक स—आञ्जिक, आञ्जिक अंगूर, दाख ।
 आञ्जिक स—आञ्जिक उंगली । कण्ठ—, स—छोटी
 उंगली । बूढ़ा—, अंगूठा । अनामिका स—
 छोटीके पासवाली उंगली । उर्ध्वनी स—
 अंगूठेके पासवाली उंगली । मध्यामा स—
 बीचकी उंगली । —मटेकाना कि—उंगली
 खींच या मोड़कर शब्द करना । बूढ़ा—मध्यामा
 कि—अंगूठा दिखाना । —शङ्का स—उंगलीका
 सिरा पकनेका रोग whitlow ।
 आञ्ज स—ताप, आंच (नरम आंच ब्राह्म) ;
 अनुमान, अटकल ; आभास, झलक, संकेत
 (कथा—) ।
 आञ्जान (आञ्जान्) स—अचकन ।
 आञ्ज स—दाग ; कुछ गहरी रेखा (कण्ठ—) ;
 नथावात नाखूनकी खरोंच (नख—) ।
 आञ्जान (आञ्जानो), आञ्जाना (कि परि
 १६)—आञ्जान मरुत रेखा खींचना ; नाखूनसे
 खरोंचना , कंधीसे केश संवारना (हू—) ।
 आञ्जिक (आञ्जिक) कि वि—आञ्जिक, इष्ट
 एकाएक, सहसा ; चौककर ।
 आञ्जिक (आञ्जिक) स—खानेके बाद हाथ-
 मुँह प्रक्षालन , आचमन । आञ्जिक (—अ)

सं—हाथ-मुँह धोनेका जल ; जिसके खानेसे
 मुँह धोना पड़ता है ।

आञ्जिक कि वि—आञ्जिक ।

आञ्जिक स—बर्ताव, व्यवहार, चालचलन ;
 अनुष्ठान (उक्त—) । आञ्जिकी (—अ) वि—
 अनुष्ठान करने योग्य ; व्यवहार-योग्य
 (बलाञ्जिकी) । आञ्जिक (—अ) वि—अनुष्ठित ,
 व्यवहृत ; अभ्यस्त । [पेल्ला ।

आञ्ज, आञ्ज (आञ्ज) स—अंचल,
 आञ्ज वि—न जोता हुआ (खेत) ।

आञ्ज कि—आञ्जिक कर्मा अनुमान करना, अन्दाजा
 लगाना, अटकल लगाना (अंज निश्चि) ।
 आञ्जान (—नो), आञ्जाना (कि परि १०)—
 आञ्जिक कर्मा खानेके बाद हाथ-मुँह धोना या
 कुल्ला करना ।

आञ्जिक स—आचार, आचरण, रीति (देशाञ्जिक) ;
 संस्कार (द्वौ—) ; सदाचार ; अचार
 (आचर—) । —निष्ठ (—अ) वि—सदाचारी ।
 आञ्जिक (आञ्जिक—अ) स—अध्यापक, आचार्य,
 गुरु, ज्योतिषी । आञ्जिक स्त्री—शिक्षयित्री ।
 आञ्जिकी स्त्री—आचार्यकी पत्नी ।

आञ्जिक वि—जो चाला न गया हो (—आञ्जिक) ।

आञ्जिक स—जिन, उग्रमार्ग मसा mole

आञ्जिक वि—न जोता हुआ (खेत) ; अक्षत ;
 अव्यवहृत ।

आञ्जिक (—अ) वि—जाना, डाँका, आवृत ; व्यास ;
 अभिभूत ।

आञ्जिक वि—अच्छा ; उत्तम । कि वि—उत्तम
 रूपसे (—कत्र गढ़) । अव्य—द्वय अच्छा !
 हाँ ; शाबाश !

आञ्जिक वि—डाँकनेवाला, आवरक । आञ्जिक
 स—आवरण ; वस्त्र (आञ्जिक—भोजन-
 वस्त्र) ; ढक्कन । आञ्जिकी (—अ) ;
 आञ्जिक (—अ) वि—आवरण करनेके योग्य,

ढाँकने योग्य । आच्छादित (-अ) वि—आवृत,
ढँका हुआ ; ढाया हुआ ।

आच्छिन्न (-अ) वि—छिन्न, कटा हुआ ।

आह (-अ) क्रि—(तुम) हो, (तुमलोग) हो ।

आह्वान (आह्वानो), आह्वाना (क्रि परि
१६) —पटकना ।

आहाउ स—पटकन (—जल्द; —थाउरा) ।

आहि क्रि—(मैं) हूँ ; (हम) हैं ।

आहिन् क्रि—हिन् (वह) था, (वे) थे ।

आहिन् (आहिन्) क्रि—(तु) है, (निरादर
अर्थमें) (तुमलोग) हो ।

आह क्रि—(वह) है, (वे) हैं ।

आह्ने क्रि—(आदरार्थमें) वह या वे हैं ।

आह्वाना वि—न छिला हुआ ।

आज स—आज, वर्तमान दिन (—जान गिन) ।

क्रि वि—अब, इन दिनों (जिनि—बध्नाक-विशु
भूत दि दिज्जेन ?) ; आज, वर्तमान दिनमें
(—दाहेव) । —रात्र वि—आजका । —

रात्र, —रात्रि क्रि वि—आजकल, इन दिनों ।

सं—वर्तमान समय । —रात्र दत्रा क्रि—टाल-
मटोल करना । —रु क्रि वि—आज, वर्तमान
दिनमें । —रु वि—आजका । —रु मठ
(-अ) क्रि वि—केवल आजके लिए ।

आह्वय, आह्वय (आह्वय) वि—अजीव,
अनोखा, अद्भुत ; रहस्यमय ।

आह्वान (आह्वानो), आह्वाना—(क्रि परि
१६)—खाली करना (वर्तन) ।

आह्वनी वि—अजनबी ; विदेशी ; नया ।

आह्वय (आह्वय -अ) क्रि वि—जन्मसे,
जीवनभर ।

आह्वय वि—अजब, अनोखा, अद्भुत । —रु
—अजायब घर museum. [अंजलि ।

आह्वय, आह्वय (आह्वय) स—रुद्र
आह्वय सं—नाना, मातामह ।

आह्वय वि—खाली, शून्य, निःशेष (शामा-
रुद्र) ।

आह्वय सं—अजान, नमाजकी पुकार ।

आह्वय वि—न जाना हुआ, अपरिचित,
अनजान ।

आह्वय क्रि वि—घुटनों तक (लटका हुआ) ।

आह्वय सं=आह्वय । —रात्र वि=आह्वय ।

आह्वय, आह्वय, आह्वय स्त्री—नानी,
मातामही ।

आह्वय सं—जीविका, पेशा (आवश्यकजीव,
कानन-पेशा, वकील । आह्वय सं—बनिया,
सौदागर) । वि—अजीव ।

आह्वय क्रि वि—आह्वय जीवनभर ।

आह्वय (-अ) सं—जीविकाका आश्रय ।

आह्वय वि—तुच्छ, वृथा, व्यर्थका ।

आह्वय (-नो), आह्वय (क्रि परि १६)
—बोना, रोपना ।

आह्वय (आह्वय -अ) वि—आज्ञा-प्राप्त ; हुकुम
दिया हुआ । आह्वय सं—आज्ञा, हुकुम ।

आह्वय सं—आज्ञा, आदेश, हुकुम, अनुमति ।

—माना क्रि—हुकुम मानना । —नञ्चन, रुद्रा
क्रि—हुकुम तोड़ना । —आह्वय क्रि वि—जो

हुकुम, अच्छा जी । —रात्रि वि—आज्ञादाता,
हुकुम देने वाला ; आज्ञाकारी, हुकुम मानने

वाला । —रुद्र क्रि वि—आज्ञानुसार । —

रुद्र (-अ) सं—योगशास्त्रके अनुसार

शरीरके भीतरके (कल्पित) छ. चक्रों में से

एक । —रुद्र वि—आज्ञाके अधीन, वशीभूत ।

—रुद्र क्रि वि—आज्ञानुसार । —रुद्र

सं—आज्ञा-पालन । —रुद्र सं—

आज्ञाधीनता, आज्ञा-पालन । —रुद्र वि—

आज्ञाधीन, वशीभूत । —रुद्र (-जायी)

वि—आज्ञाधीन । क्रि वि—आज्ञानुसार ।

—रुद्र वि—आज्ञाके तुल्य ; आज्ञाधीन ।

—शगात्रे (-शारे) क्रि वि—आज्ञानुसार ।
—भक सं—आज्ञादाता, प्रभु, स्वामी ।
—भज (-अ) सं—आज्ञायुक्त पत्र, हुकुमनामा । —भित (-अ) वि—आदिष्ट, आज्ञा-प्राप्त । —वह (-वह-अ) वि—आज्ञाकारी, वशीभूत (-वृत्त) । —प्रत (-अ) क्रि वि—आज्ञानुसार ।

आवा (आज्य-अ) सं—वी, हवि ।

आवाज, आवाजा वि—भाल-रहित, मिर्च आदिका तीतापन-रहित ।

आवाड़ा वि—न छाँटा हुआ ।

आबनि, आबुनि सं—आँखमेंकी बिलनी ।

आबनेत्र (-अ) सं—हनुमान, अंजनी-नन्दन ।

आबाय सं—गवयवाइ जुहाव, अंजाम, अंत ।

आबिनेत्र (-अ) सं—टिकटिक छिपकली ; बिलनी । [तरहका एक फल ।

आबिर, आबीर सं—झूठ अंजीर, गूलरकी

आबूयन सं—सभा, समिति, अंजुमन ।

आठे वि, सं—आठ, ८ । —इ सं—सौर

मासकी आठवीं तारीख । आठे काँठ छेँ/छे नेशे, आठवे महीने गर्भिणीको लकड़ीकी गाड़ी नाव आदिमें सवार नहीं होना चाहिये ।

आँठे सं—बांधूनि बन्धन, दड़ता, कसाव ; युक्ति (कथात्र—नाई) । वि—कसा हुआ (बांधन—कसा) ।

आँठक सं—बाधा, कैद, अवरोध । वि—अवरुद्ध । —गड़ा, —इग्रा क्रि—रहनेमें बाध्य होना, कैद हो जाना । [बदनसीब ।

आँठकपाल (आट्कपाले) वि—अभागा, आँठका (आट्का) वि—बाधा-प्राप्त ; रहनेमें बाध्य ; कैद ।

आँठकान (आट्कानो), आँठकाना (क्रि परि १६)—रोकना, कैद करना ; रुक जाना, फँस

जाना (फँस कि आँठकाना ? दंतोंमें क्या फँस गया ?) । दम—, दस घटना ।

आँठकूड़ा, (-ड़ा) वि—नि.सन्तान, बेऔलाद । स्त्री—आँठकूड़ी ।

आँठके (आट्के) स—पुरी-क्षेत्रमें जगन्नाथ-जीके भोगका निर्धारण (-बांधा) ।

आँठकोण (आट्कउड़े) सं—सन्तानके जन्मसे आठवें दिनका एक उत्सव जिसमें अड़ोस-पड़ोसके बच्चे आकर नव जात शिशुकी बलायें दूर करनेके लिए दौरी सूप आदि पीतते हैं और उन्हें आठ तरहके चबेने बतासे पैसे आदि दिये जाते हैं । [(आखाण—) ।

आँठथाना (आट्-) वि—अति - उत्फुल्ल आँठघाटे (आट्घाट्) स—आठों ओर, बाधा विपत्तिके सब ओर (—बांधा) [४८ ।

आँठहिश (आट्चल्लिश) सं, वि—अड़तालीस, आँठाना (आट्-) सं—आठ छप्पर जोड़ कर बनाया हुआ घर ।

आँठखिण (आट्-) सं, वि—अड़तीस, ३८ ।

आँठपले (आट्पले) वि—आठकोनिया, आठपहला । [कर सकने वाला ।

आँठगिणे (आट्-) वि—सहनशील, कष्ट सहन

आँठगोत्र (आट्पउरे) वि—आठों पहर पहनने योग्य (वस्त्र) ; हर समय इस्तेमाल करने लायक (—कापड़) । [जंगली ।

आँठविक (आटविक) वि—वन-सम्बन्धी,

आँठजाजा (आट्भाजा) सं—आठ तरहके चबेने ।

आँठवट्टि (आट्पट्टि) सं, वि—अड़सठ, ६८ ।

आँठ सं—आटा, पिसान, चून, गेहूँका चूर्ण ; गोंद, आठ बूटियोंका ताश ।

आँठे (क्रि परि ३)—कसा कसना, कसकर बाँधना, जोड़ना, चिपकाना ; समाना, जगह होना (वस्त्र जख जिनिय आँठे ना),

दमन करना (ताके अंटे उठा-दात्र) वि—
चिपका हुआ, बन्द (डिबेले एकबात्र—) ।
आँठियाँ स—कसाव, कसा हुआ बन्धन ;
हड़ नियम (एत—जान नत्र) ।
आँठिश, आँठि स, वि—अट्टाइस, २८ ।
आँठिश, आँठि स—अट्टाइसवी
तारीख (को) ।
आँठिख (आटात्तर) स, वि—अठहत्तर, ७८ ।
आँठिनखइ स, वि—अठानवे, ९८ ।
आँठिन्न (-अ) स, वि—अठानवन, ९८ ।
आँठिन (-अ) वि=आँठिन । [कसा हुआ ।
आँठिन (-अ), आँठिना वि=गल मजबूत ;
आँठि स, वि=आँठिश ।
आँठि स, वि—यष्टी अठासी, ८८ ।
आँठि स—अट्टाइसवी तारीख (को) ।
वि—गर्भके आठवे महीने पैदा होने वाला
(लड़का) ; दुर्बल, कमजोर । [का गुच्छा ।
आँठि, आँठि स—ङ्गानि ६४ घास आदि
आँठि स—बन्धनकी हड़ता (वङ्ग—कृष्ण
ग्रेना, खुब कसा पर गाँठ ढीली) ।
आँठिनि कि वि=अष्टशृङ्ग ।
आँठि स—गोंद, लेई ; लसदार चीज,
आम्रह ।
आँठि (-अ) स, वि—अट्टारह, १८ । —इ
स—सौर मासकी अट्टारहवीं तारीख (को) ।
आँठिन (-अ), आँठिना वि—छेछे लसलसा,
चिपचिपा, गोंददार (—आँठि) ।
आँठि स—बड़ बीज बड़ा बिया, गुठली ।
आँठि स—आँठिन ओट, परदा ; पार्श्व ; जड़ता,
सुल भाव (कथात्र—, —जडा) ; चौड़ाई,
पनहा (आँठि दखर ठिक आँठि) ; कपड़े आदि
रखनेके लिए वेड़े लटकाया हुआ बाँस ।
वि—बाँदा टेढ़ा (—आँठि, तिरछी नजरसे) ।
कि वि—आँठियाँ तिरछे, वेड़े बल ।

आँठि, आँठि (आँठि) स—गोना, गङ्गा,
शंठ मडी, हाट । [नावसे उतरनेका घाट ।
आँठिआँठि, आँठिआँठि स—नाव-पर चढ़ने-या
आँठिआँठि (आँठि—) स—शहतीर, धरन ।
आँठिआँठि, आँठिआँठि स—कुली सग्रहका
दलाल ; नापनेका छड़, जहाज चलाने वाला
pilot.
आँठिआँठि स=आँठिआँठि । [ताल ।
आँठिआँठि (आँठिखैमूदा) स—संगीतका एक
आँठिगड़ा (आँठिगड़ा) स—अश्वशाला ; घोड़ा
वेचनेवालेका अस्तबल ; कटघरा ।
आँठि, आँठि स—गोना आँठि । —नात्र स—
अदतिया । —नात्रि स—अदतियेका काम ;
अदतियेकी दलाली । —नात्रो वि—
अदतियेका ।
आँठिआँठि स—परला पार, दूसरा तट ।
कि वि—आरपार । [जड़ता हटाना ।
आँठि आँठि कि—सीधा करना ; बात या देहकी
आँठिआँठि कि वि—वेड़े बल, तिरछे ।
आँठिआँठि, आँठिआँठि स—देहकी जड़ता
हटानेके लिए हाथ-पैरोंका विस्तार,
अगड़ाई (—जडा) ।
आँठिआँठि स—आँठि, आँठिआँठि आँठिआँठि ;
अधिकता, बादलकी गरज ।
आँठि, (-अ) वि—सुन्न ; सिकुड़ा हुआ,
ठिठुरा हुआ ।
आँठि स=आँठिआँठि ।
आँठिआँठि कि वि—आँठिआँठि वेड़े बल,
तिरछे । स—शत्रुता, दुश्मनी ; होड़,
प्रतियोगिता ।
आँठि वि—ढाई, २ $\frac{1}{2}$ ।
आँठिआँठि स—संगीतका एक ताल ।
आँठि स—अष्टाश ओट ; परदा ; आवरण ।

आड़ा- कि वि—ओटमें; किसीके पीछे
(—निक्का); छिपकर।

आड़ि सं—मनाछत्र, छटाछटि मनमुटाव; भगड़ा;
डाह; होड़; छिप कर श्रवण। —पाठ
क्रि—छिपकर छनना; छननेके लिए गुप्त
स्थानमें बैठना।

आड़े क्रि वि—चौड़ाईकी ओर, बेड़े बल।
—शठ क्रि वि—मखावे जोरसे, जी-जानसे,
आटे हाथों। —नौसे क्रि वि—चौड़ाई और
लम्बाईमें।

आड़ा सं—अड्डा, मिलनेका स्थान, अखाड़ा
(कुश्ति—, बरमाईशेख—, खेला—, छूरा—)।
—धात्री सं—अड्डेका प्रधान आदमी;
अड्डेमें नियमित जाने वाला। [तौल।

आड़क, आड़ि सं—लगभग दो मन अनाजकी
आठका वि—थोना खुला, उघाड़ा।

आठा (-अ) वि—सम्पन्न, धनी (धनाठ)।

आगव, आगविक वि—अणु सम्बन्धी
(—आकर्षण; —विक्षर्षण, molecular
repulsion)। आगविक बोम—सं—अणुबम
(गोला) Atom bomb।

आणुशैकनिक (-बीक्खनिक) वि—सूक्ष्म-दर्शन
सम्बन्धी microscopic।

आठा सं—ठिग अंडा। —वाक्का सं—छेलभूल
बालबच्चे; शनाथाना पशुपक्षियोंके बच्चे।
आठिल, आठील, आठेल वि—बहुत धनी
(गेका—)।

आठ सं—आंत, अन्त्र; पेट; हृदय, दिल। आठ
वा लेश क्रि—दिलमें चोट पहुँचाना।

आठकान (आँठकानो), आठकाना (क्रि
परि १६) —उपर चक्कानो डरसे चौंक उठना।

आठक (-अ) सं—भय, डर, शका।

आठकित (-अ) वि—डरा हुआ, भयभीत।

आठठ (-अ) वि—विस्तृत, फैला हुआ।

आठठात्री सं—शत्रु, दुश्मन; गृहदाहक,
विपदाता, भूमि दारा और धनका अपहारक,
शस्त्रपाणि—ये छ. आततायी हैं।

आठन सं—द्रोण धूप, सूर्य-किरण। —उठून
सं=आलागन। —व (-अ) सं—छत्र,
छाता। —द्रोशी, —गह (-अ) वि—सूर्यकी
किरण न प्रवेश करने वाला sun-proof।

आठर सं—इत्र, पुष्पसार। —दान, —गानि
सं—इत्रदान।

आठन, आठन सं—अग्नि, आग, उत्ताप,
आँच। —वाक्खि सं—आतशबाजी।

आठरी वि—आग्नेय अग्नि सम्बन्धी, जलता
हुआ, आगसा। —काठ सं—आतशी शीशा
जिस पर सूर्य किरणें पड़कर एक केन्द्रमें एकत्र
होती हैं और वहाँ उत्ताप या अग्नि उत्पन्न
करती हैं burning glass।

आठा सं—शरीफा, सीताफल।

आठाछत्र सं=आथाछत्र। [पाटल।

आठात्र (-अ) वि—कुछ ताँवेका रंग वाला,
आठानि-पाठानि क्रि वि—ऊपर-नीचे, सर्वत्र।

आठिछ (-अ) वि—कुछ तीता या कडुआ।

आठिथेय (-अ) वि—अतिथिका सत्कार करने
वाला, मेहमानदार। —ठा सं—अतिथिका
सत्कार, मेहमानदारी।

आठिथ (-अ) सं—अतिथिका सत्कार,
मेहमानदारी, अतिथिको दिया जाने वाला
खाद्य। [अलौकिक।

आठिभाश्चिक वि—मनुष्यलोकसे अतीत,
आठिभा (-अ) सं—आधिक्य, बहुतायत।

आठू सं—कुत्तेको बुलानेका शब्द।

आठूड़ सं—शुक्राग्रात्र सौरी, जच्चाखाना।

आठूर वि—रोगी, बीमार; आर्त, कातर।

—निवाग, आठूरावाग, आठूरानय सं—

शमशाना अस्पाताल।

पाठना वि—तेल न लगाया हुआ, तैलरहित ।
 पाछि सं—ममता, हमदर्दी (बड़-पाछि) । —
 कष सं—दृष्ट ग्रहण, अपनेमें सम्मिलित
 करण ।
 पाय (आत्त -अ) वि—आत्मा-सम्बन्धी ;
 अपना, निजका । —कश (-अ) सं—
 गृहविवाद, पारिवारिक झगड़ा ; जातिमें वैर ।
 —कृठ (-अ) वि—स्वकृत, अपना किया
 हुआ । —गठ (-अ) वि—स्वगत, आप
 ही आप ; आत्मनिष्ठ । —गशिया सं—घमण्ड,
 शेखी, गर्व । —गशान सं—अपनेको या
 अपने मनके विचारको गुप्त भावसे रक्षण । —
 गानि सं—दृष्टांग पद्धतावा । —गठ सं—
 आत्महत्या, खुदकुशी । —गठो वि—आत्म-
 हत्याकारी, खुदकुशी करने वाला । स्त्री,—
 गठिनी । —ठिछा सं—आत्माके विषयमें
 विचार । —छ सं—पुत्र, वेदा, लड़का,
 औलाद । स्त्री,—छ । —छ (-गँ-अ) वि—
 आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञ ; अपने गुण दोष स्वभाव
 आदिका जानने वाला । —छान सं—आत्माका
 ज्ञान, ब्रह्मज्ञान । —ठइ (-तत्त -अ) सं—
 आत्माका स्वरूप, आत्मज्ञान । —छुण
 (-अ) वि—अपना-सा, निजके समान । —
 छु (-अ) वि—अपने आत्मानन्दमें मग्न या
 वृत्त । —छुछि सं—अपने आत्मानन्दमें वृत्ति
 या सन्तोष । —छाग सं—स्वार्थ-त्याग,
 अपना बलिदान । —चन सं—अपनी
 इन्द्रियोंका संयम । —चन सं—आत्माके
 स्वरूपका बोध ; अपने गुणदोषकी परीक्षा ;
 अन्तर्दर्शन । —चो वि—आत्माका स्वरूप
 देखने वाला । —चव सं—अपना दोष
 (—चव कानन) । —छाह (-अ) सं—अपने
 जात्रमियोंमें झगड़ा ; अपना पीड़न । —निर्छ
 वि—अपने ऊपर भरोसा रखने वाला । —

निष्ठ (-अ) वि—मैं आत्मा या ब्रह्म ही हूँ
 ऐसा दृढ़ निश्चय वाला, ब्रह्मनिष्ठ । —चव
 सं—आप स्वयं और दूसरा ; स्वपक्ष और
 विपक्ष । —चवच सं—स्वार्थी । —चक्रिच
 सं—अपना परिचय । —चैउन सं—अपने
 शरीरका पीड़न । —चगां सं—अपने मनकी
 वृत्ति । —च सं—अपना-सा । —च
 सं—सगा-सम्बन्धी, दृष्टमित्र । —चनि
 सं—अपना बलिदान । —च वि—स्वतन्त्र,
 स्ववश । सं—आत्मसंयम । —चिक्र सं—
 दूसरेके इच्छाधीन होकर अपनी स्वतन्त्रताका
 त्याग । —चिच्छ सं—स्वजनोसे सम्पर्क-लोप ;
 गृहविवाद । —चिछा सं—आत्मज्ञान, अध्यात्म
 विद्या, ब्रह्मविद्या । —चिचो सं—अपना
 नाश ; आत्महत्या, अपने नाम यश कर्तृत्व
 आदिका त्याग । —चिचन (-चिचन),
 —चिचि (-चिचि) सं—अपने अस्तित्व
 स्वातन्त्र्य गुण योग्यता आदिके स्मरण
 का अभाव ; तन्मयता । —चिचि सं—
 आत्मज्ञान ; अपनी बुद्धि । —चिचि (-चिचि)
 सं—आत्मसम्मान । —चिचि वि—घमण्डी,
 स्वार्थी । —चिचि सं—अपने चित्तकी शुद्धि,
 अपने दोषोंका परिहार । —चिचि सं—अधिकारी
 या शत्रुके हाथ अपने आपका समर्पण । —
 चिचि सं—आत्मसंयम । —चिचि वि—अपनेमें
 मिलाया हुआ, गवन किया हुआ । —चिचि सं—
 खुदकुशी, आत्मघात । —चिचि सं—
 आत्मघात करने वाला । —चिचि वि—
 अपना स्वरूप भूल जाने वाला, घबराया
 हुआ, घबरावा ।
 चाचा (आत्ता) सं—आत्मा, जीवात्मा ;
 परमात्मा, ब्रह्म ; मन, चित्त ; स्वयं, खुद ।
 —चो वि—अपने अधीन, स्वतन्त्र । —चिचि

सं—अपना अपराध, अपना दोष । —शूद्र
सं—आत्मा ; प्राण ; मन । —ब्रह्म वि—
आत्मानन्दमें तृप्त । सं—प्राण ; मन ; सुग्गा
मैना आदि का सम्बोधन ।

आशीष (आत्मीय -अ) सं—कुटुम्बी, रिश्तेदार,
स्वजन, जातिभाई । स्त्री—आशीषा । —ता
सं—रिश्तेदारी, रिश्ता ; स्वजन-सा बंताव ।

आश्वासन (-अ) सं—स्वायं-त्याग ; अपना
बलिदान । [की उन्नति ।

आश्वासन वि—अपनी या अपने मन
आश्वासन वि—अपना-सा, अपने तुल्य ।

आश्चर्य वि—अत्यन्त अधिक, अशेष ।

आश्चर्य वि—प्राणान्तकारी ; खतरनाक ।

आशीष सं—सकट, विपत्ति । [पद्यमें] ।

आशिराज क्रि—बाह्य श्रेष्ठ घबराकर (सिफं
आश वि—आधा ; आदि । सं—मूल ।

आश्रय, आश्रय सं—आदत, अभ्यास ; रीति ।
वि—असली, सत्य, सच्चा ; साबुत ।

आश्रय (-अ) वि—गृहीत, लिया हुआ ।

आश्रय सं—शिक्षाचार, अदब (—कायदा) ।

आश्रय, आश्रय क्रि वि—एकदम, बिलकुल,
मूलमें ।

आश्रय सं—आदम, आदि मानव । —उमात्रि सं
—मर्दुमशुमारी ।

आश्रय सं—खातिर, कद्र, इज्जत ; श्रद्धा, भक्ति,
प्रेम-प्रदर्शन । —वीर (-अ) वि—आदर या
ग्रहणके योग्य ।

आश्रय सं—आपन थोड़ा सादृश्य ; चित्रादि
बनानेके पूर्वकी अंकित रेखा sketch ।

आश्रयिनी सं—आदरकी पात्री, प्रिया ।

आश्रय (-अ) सं—दर्पण ; नमूना ; आदर्श । —
शान्ति (-अ) वि—आदर्श-रूप । —शताव वि
—आदर्श-स्वभाव वाला ।

आश्रय सं—सादृश्य, चेहरेका मेल ।

आश्रय सं—आदी, अदरक । आश्रय कौटुम्बी—
आग-फूसका चैर ।

आश्रय सं—कूड़ाखाना, कतवारखाना । आश्रय
वि—कूड़ाखानेका, जंगली (—कूड़ा) ।

आश्रय सं—ग्रहण । —आपन सं—दान-प्रतिग्रह,
लेन-देन ; विवाह-सम्बन्ध-स्थापन, सामाजिक
व्यवहार ।

आश्रय सं—आग सलाम ।

आश्रय सं—वसूल, संग्रह (थोकना—कड़ा) ।

आश्रय सं—विचारालय, अदालत, कचहरी ।

आश्रय वि—न्यायालय-सम्बन्धी, अदालतका ।

आश्रय सं—आदि ; आरम्भ, उत्पत्ति-स्थान ।

वि—प्राचीन, पुराना (—निवास) । —कवि

सं—वाल्मीकि । —शूद्र सं—वंशप्रवर्तक
पुरुष । —ब्रह्म सं—शृंगार रस ।

आश्रय सं—बनावटी स्नेहका प्रदर्शन ।

आश्रय (-अ) सं—देवता, अदितिका पुत्र ।

आश्रय (-अ) सं—सूर्य, तपन ; देवता ।

—ग्रहण सं—सूर्यका मण्डलाकार गति-पथ
या घेरा । [(—आश्रय)] ।

आश्रय वि—प्रथम, पहलेका, पुराना, प्राचीन

आश्रय (-अ) वि—आज्ञा-प्राप्त, नियुक्त ।

आश्रय, आश्रय वि—उच्चाड़ा, नगा (—शाय) ।

आश्रय वि—अधिक आदर प्राप्त, मुँह-लगा,
सिर-चढ़ा ।

आश्रय वि=आश्रय ।

आश्रय (आदेश) वि—अदृष्ट, न देखा हुआ ।

आश्रय (आदेश) वि—आज्ञा किसी चीज
को देखते ही उसे पानेके लिए अत्यन्त उत्सुक
मानो पहले कभी देखा नहीं है ; अति लोभी ।

आश्रय (-अ) वि—ग्रहण-योग्य ।

आश्रय सं—आज्ञा, हुकुम, अनुमति ; अक्षर-
परिवर्तन । —क, आश्रय वि—हुकुम देनेवाला ।

—कर्म क्रि वि—आदेशानुसार ।

धाता वि—समूचा, पूरा ।

धाताव क्रि वि—विलकुल, एकदम ।

धातान सं—जेहेका मेल । [विलकुल ।

धात (आदउ) क्रि वि—शुरुमें, पहले, एकदम,

याव (-अ) वि—आदिका, मौलिक ; प्रधान ;

उत्कृष्ट ; खाने-योग्य । —इउ, —आइ सं—

अशौचान्तमें मृतकका प्रथम श्राद्ध । —उ

(-अ) क्रि वि—शुरुसे आखिर तक । सं—

आदि और अन्त ।

धाता स्त्री—दुर्गा, माया, प्रकृति । —शक्ति

—मूल प्रकृति, ब्रह्मशक्ति, माया, काली ।

धाताशब्द (-अ) क्रि वि=धातु ।

धातु सं—धातु अदरक, आदी ।

धातु वि—आधा, अर्ध (-अर्ध) । —अर्धानि,

—अर्धानि, —अर्धानी, —अर्धान

(आधकपाले) सं—अधकपारी, आधासीसी ।

—दान, —दाना, —दानि सं—अर्धांश ।

वि—अर्ध, आधा । —अर्ध (आधखं चड़ा)

वि—आधा किया हुआ, अधूरा छोड़ा हुआ ;

ढीला ; बुरा । —आधना वि—आधनाले

सिद्धी, सनकी । —आध वि—आधा-पेट

(भोजन) ; अल्प, थोड़ा (खाना) । —

आध वि—आधा भूना या जला हुआ । —

अर्ध, —अर्ध वि—अर्ध, प्रौढ़ । —अर्ध वि

—अर्धमृत, सुमुर्त ।

धातुय (आध-अ-आध-अ) वि— अस्पष्ट,

अपूर्ण (मिल-अर्ध ; —अर्ध) ।

धातु (आध) सं—अधेला ।

धातु, धातु सं—अर्ध ।

धातु वि—आधा, अर्ध । —धातु क्रि वि—

वरावर दो भागोंमें, आधो आध । —अर्ध

वि=आधअर्ध ।

धातु सं—ग्रहण, धरोहर, रेहन ; रक्षण ।

धातु सं—आध ; पात्र, बरतन ; चिड़ियोंके

द्वारा अपने बच्चोंके मुँहमें दिया जाने वाला खाद्य ।

धातु सं—अवेरा, अस्पष्टता, धुँधलापन ।

वि—अधिकारमय (—वात ।)

धातु सं—चोर पकड़नेके लिए पुलिसके

सिपाहीकी अ धेरी लालटेन ।

धातु सं—आफत, दु ख ; घबराहट, व्याकुलता ।

धातु सं—अर्ध, अर्ध आधी ।

धातु सं—अफसर, अधिकारी व्यक्ति ।

धातु (-अ) सं—अधिकता, श्रेष्ठता ; वृद्धि ।

धातु, (-अर्ध) सं—आधवाड़ि अर्ध-

प्रकाशकी अधिकता, मुँह लगाना ।

धातु वि—देवता-सम्बन्धी ; अतिवृष्टि

अनावृष्टि भूकम्प आदि सम्बन्धी ; आकस्मिक ।

धातु (-अ) सं—प्रभुत्व, अधिपति होने

का भाव या अवस्था, शासन ।

धातु सं—धरोहर रखी हुई चीजें या

सम्पत्तिका भोग ।

धातु वि—पचभूत या जीव जन्तु

सम्बन्धी । —अर्ध सं—आध भात, साँप चोर

आदिसे दुःख । [केन्द्रीय focal

धातु वि—केन्द्र-सम्बन्धी, ज्योति-

धातु सं—अर्ध ।

धातु (-अ) वि—धृत, गृहीत ।

धातु वि—अर्ध आधा, अर्ध ।

धातु (-अ) सं—भीतर या ऊपरकी वस्तु ।

वि—धारण-योग्य, रेहन रखने योग्य ।

धातु, आधवाड़ि वि—बिना धोया ।

धातु (आधात-अ) वि—वायुसे फूला हुआ

(पेट), अफरा ; ध्वनित ; दग्ध । सं—शब्द ;

स्फीति, अफराव ।

धातु (आधान) सं—सृजन, स्फीति,

अफराव ; वृद्धि (अर्धधातु, वायुसे उदर-

स्फीति) ।

आध्यात्मिक (आध्यात्मिक) वि—आत्मा या ब्रह्म सम्बन्धी ; मानसिक ; शारीरिक । —उःथ स—शारीरिक रोगादि जनित दुःख ।
 आन वि—अन्य, दूसरा । क्रि वि—अन्यथा, दूसरी ओर । स—साँस ।
 आन (आनो) क्रि—लाओ ।
 आनकोत्रा (आनू-) वि—एकदम कोरा, नया, बिना धोया (—कापड़) ।
 आनठान (आनू-) वि—अश्वि बचैन ; उत्सुक ।
 आनठ (-अ) वि—थोड़ा झुका हुआ, नत ; विनीत ; वशीभूत ; नीचा । —तल स—नतोदर सतह concave surface.
 आनठि स—प्रणाम, सलाम ।
 आनठ (-अ) वि—बद्ध, बँधा हुआ, बन्द ।
 आनन स—मुख, मुह ; चेहरा ; आनयन, लाना । [व्यवधान-राहित्य, समीपता ।
 आनष्ठ (-ज्यं -अ) स—अव्यवधान,
 आनष्ठ (-अ) स—सीमा-शून्यता, अनन्तता ।
 आनन्दोद्भास (-च्छास) स—आनन्दका उल्लास, खुशीका उमग ।
 आनन (आनू-) वि=अग्रगण्य ।
 आनठि (-अ) वि—झुका हुआ, नत, प्रणत ।
 आनठ (-अ) वि—नम्र, विनयी ; प्रणत ।
 आनन स—आनयन, लाना ।
 आना (-क्रि परि ३) —लाना, ले आना । स—आना, चार पैसे ; पौड़शांश, सोलहवाँ भाग (एक —अष्टमशतौ भागिक) । [जाना ।
 आनागाना स—गमनागमन, बार बार आना-
 आना-काना स—घरके आसपासके, गुप्त स्थान । [अनाज ।
 आना स—आक्रमण सबजी, तरकारी ;
 आनाड़ि, (-ड़ी) वि—अनाड़ी, मूर्ख ।
 आनान (-नो), आनाना (क्रि परि १०) —मंगवाना, दूसरेके द्वारा लाना ।

आनाग क्रि वि—ज्योंका त्यों, अविकल ।
 आनाग स—आमिष अनार, दाढ़िम ।
 आनाग स—अननास, एक फल pine-apple.
 आनि, आनी स—एकानि एकत्री ।
 आनीठ (-अ) वि—लाया हुआ ।
 आनीठ वि—कुछ नीला, काला-सा ।
 आश (कृत्य) (-अ) स—मदद, सहायता, दया, अनुग्रह, उपकार । —गठ (-अ) स—बाध्यता, वश्यता ; अधीनता । —शक्ति वि—अनुपातके विचारसे ठीक proportional —शक्ति क्रि वि—यथाक्रम, शुरूसे, सिलसिलेवार । —मानिक वि—अन्दाजसे निश्चित, सम्भाव्य । —नष्टिक वि—प्रासंगिक, साथ वाला, मूल विषयके साथ सम्बद्ध ।
 आनठ वि—लाने वाला, मंगानेवाला ।
 आनठ वि—भीतरी, अन्दरूनी ।
 आनठिक वि—सरल, भोला, निष्कपट, दिली, हार्दिक, भीतरी । —ठा स—सरलता, सहृदयता ।
 आनठिक वि—संसारकी सारी जातियोंके साथ सम्बन्धित international
 आनठिक वि—आँत-सम्बन्धी ; हार्दिक ।
 आना स—अन्दाज, अनुमान । आनाओ वि—आनुमानिक, अन्दाजसे निश्चित । क्रि वि—अन्दाजसे । आनाओ क्रि वि—अन्दाजसे ।
 आनाओ स—विचार, ध्यान, सन्देह, अन्देश ।
 आनाओ स—हलचल, उथल-पुथल करने वाला प्रयत्न । आनाओ (-अ) वि—कम्पित, हिलाया-झुलाया, उथल-पुथल मचाया हुआ ।
 आनाओ (आन्मना) वि=अग्रगण्य ।
 आन सर्व—आप । स—जल, पानी ।
 आनक (आपक -अ) वि—आधा पका, आधा पकाया या सिझाया हुआ ।

आशुभा सं—सोता, नदी ।

आशुभा वि—अशिक्षित, अनपढ़ ; अपठित ।

आशुभा सं—विपत्ति, दोस्तान दुकान, बाजार ।

आशुभा सं—दुकानदार, बनिया ; दुकान परका शुल्क । वि—दुकान-सम्बन्धी ।

आशुभा सं—पतन ; आगमन, दुर्घटना, सलाम, प्रगाम । आशुभा (-अ) वि—पतित, आगत, सवदित ।

आशुभा सं—इतराज, असम्मति ; विपत्ति ; दुःख । —इति वि—आपत्ति-जनक, इतराजके लायक । [स्वीकृत कुछ अधर्म-कार्य ।

आशुभा (-अ) सं—विपत्ति-कालमें धर्मरूपसे आशुभा वि—निजका, अपना, खास, व्यक्तिगत ।

—दाद, आशुभा वि—आपका, भवदीय ।

आशुभा (आपना) सं—स्वयं, खुद (—इति) ।

—आशुभा वि—निज निजसे अपने आप, स्वतः, स्वयं ; खुद । स—मित्र, कुटुम्बी (—आशुभा नष्ट) । —द सर्व—आपको ; निजको । —व सर्व—आपका, निजका (—दाद झुंझि ना) । —इति सर्व—अपने आपसे, स्वतः ।

आशुभा सं—आप । स—स्वयं, खुद । क्रि वि—अपने आप (दाद—दादित) । [दु खी ।

आशुभा (-अ) वि—प्राप्त ; ग्रस्त (कुरुगेश्वर) ;

आशुभा इति वि—तीसरे पहरका ।

आशुभा सं—अफसोस, पछतावा, खेद, दुःख ।

आशुभा (आपश) सं—आपस, निपटारा मीमांसा ।

आशुभा, आशुभा सं—अपामार्ग, चिरचिरा ।

आशुभा वि—अपक, थोड़ा पका ; कच्चा ।

आशुभा (-अ) क्रि वि—तत्काल, उसी समय ।

स—वर्तमान समय ; पतन । वि—ऊपरसे देखनेमें (—कुरुगेश्वर) । —इति क्रि वि—ऊपरसे देखनेमें ।

आशुभा, (-उः) क्रि वि—इतन अब, इस समयके लिए, फिलहाल (—दादित भाव) ।

आशुभा क्रि वि—आशुभा पर तक ; परसे (—ग्रस्त, परसे सिर तक) ।

आशुभा क्रि वि—पामर तक, छोटेसे बड़े तक, उच्चसे नीच तक (—कुरुगेश्वर) ।

आशुभा वि—कुछ पीला, भूरा, खैरा ।

आशुभा, आशुभा सं—अपील appeal ।

आशुभा, आशुभा सं—आफिस, दफ्तर office

आशुभा सं—निशुभा मर्दन, मसलना, निचोड़ना, कुशदान, पीड़न । आशुभा (-अ) वि—निचोड़ा हुआ ; आलि गित ; पीड़ित । [पिया हुआ ।

आशुभा (-अ) वि—कुछ पीला, पीला-सा ; आशुभा (आपेक्षिक) वि—अपेक्षाकृत, सापेक्ष, तुलनाकृत । —इति सं—विशिष्ट

गुणत्व specific gravity —कुरु सं—विशिष्ट

गुणत्व relative density. —उ सं—सापेक्षता, तुलनात्मकता relativity.

आशुभा सं—सेव, एक फल apple

आशुभा सं—आपस ; निपटारा । आशुभा क्रि वि—आपसमें, मित्रभावसे मिलकर ।

आशुभा (-अ) वि—प्राप्त ; अग्रान्त, जिसे कभी

क्रम न हो (—दाद, अपिवाक्य) । सं—कुटुम्बी (—कुरु) । वि—अपना (—अग्रबी,

सुदगर्ज) ।

आशुभा सं—प्राप्ति, योग्यता, मेल ।

आशुभा (-अ) वि—प्राप्य, पाने योग्य ।

आशुभा सं—सन्तोष ; स्वागत, अभ्यर्थना ।

आशुभा (-अ) सं—सन्तोषित, अभ्यर्थित ; स्वागत किया हुआ ।

आशुभा क्रि वि—प्राण न्योछावर कर, जी-जान

से (—कुरु) ।

आशुभा, आशुभा सं—प्लावन, बाढ़ ।

आश्रुत (-अ) वि—प्लावित, सिक्त, तराबोर ;
नहाया हुआ ।

आकगान स—अफगान, काबुली ।

आकगान स=आशगान ।

अकि, आकि स—अकिन अफीस ।

आव (आव्) स—अर्व गिलटी, वतौरी
tumour. —आव (-वाव) स—आववाव,
मालगुजारीसे अधिक शुल्क जो नमींदार
रियायेसे वसूल करते थे । —काव स—शराव
आदि नशीली चीज बनाने वाला, आवकार ।
—कावि स—आवकारी महकमा ; आवकारी
शुल्क । —कावो वि—आवकारी महकमा या
शुल्क सम्बन्धी ।

आवहा (आव्हा), आवहाव स—अंधेरेमें
अल्पष्ट छाया, भूत ।

आवडान (आव् डाल) स=आडान ।

आवड़ा-आवड़ा (आव्ड़ा-आवड़ा) वि—एवड़ा-
थेवड़ा, बकुर ऊँ चानीचा, खुरदरा, असमान ।

आवनाव (आव्दार) स—आवना किसी चीजके
पानेके लिए, बच्चों या स्त्रियोंका अत्यन्त
अनुरोध या जिद । आवनाव, आवनाव वि—
अन्याय अनुरोध या जिद करने वाला (बच्चा
या स्त्री), जिदी ।

आवक (-अ) वि—अटका बंधा रोका या
फँसा हुआ ; रेहन रखा हुआ ।

आवक स—एक प्रकारका पेड़ जिसके भीतर
की लकड़ी बहुत काली होती है, आवनूस ।

आवक वि—ढाँकने वाला । स—ढकन ।

आवक स—आच्छादन, पट, परदा ; ढकन,
ढाल ; घेरा ; दीवार । —आकि स—अज्ञान
की वह शक्ति जिससे वस्तुका यथार्थ स्वरूप
नहीं दिखाई पड़ता, जैसा कि, रस्सी में
साँप, सीपमें चाँदी या मरुस्थलमें जल का
भान होते समय होता है । आवकगी (-अ)

वि—ढाँकने योग्य । आवकित (-अ) वि—
ढँका, आवृत ; गुप्त ।

आवक (आव्) स—आवर, सम्मान,
इज्जत ; सुशीलता ; सतीत्व ; गुप्तता ; परदा ।
आवकना स—कक्षा कूड़ा कतवार ; दुहारन ;
तुच्छ वस्तु ।

आवक (-अ) स—चकर ; भँवर ; कुण्डली
(खनावक, भँवर) । —क वि—घुमाने वाला ।
—क स—घूमनेसे घषण या रगड़ । —न
घुमाव, चक्कर, चक्राकार भ्रमण ; प्रत्यावर्तन ;
हिलाव । —नीव (-अ) वि—घुमाने दुहराने
लौटाने या हिलाने के योग्य । —गान वि—
घूमने वाला ; घमता हुआ । आवकित
(-अ) वि—घूमा या घुमाया हुआ । आवको
वि—घूमकर आया हुआ, लौटा हुआ ;
दुहराया हुआ ।

आवन-आवन स, वि=आवान-आवान ।

आवनि, आवनी स—श्रेणी, पक्ति, पाँति ; समूह
(निशगावनी, थगावनी, बगावनी, बाकावनी) ।

आवग स=आवग । [ऊँवाई ।

आवक (-अ) स—दुर्बलता, कमजोरी,
आवक वि—आवश्यक, जरूरी । स—प्रयोजन,
जरूरत । आवकगी (-अ) वि—दरकार
प्रयोजनीय, जरूरी ।

आवह (आवस्था) स—असुविधा ; मुसीबत ।

आवह (-अ) स—आवहवा । वि—लाने
वाला, ढोने वाला ; पैदा करने वाला
(उगावह, डरावना ; दुःखावह, दुःखदायी) ।

—चिख स—आवहवाका नक्शा weather
chart.

आवशान वि—सनातन, सदासे चलने वाला ।

आवशग स—आवहवा ; वायुमण्डल ।

आवागी वि—इतनागिनी भाग्यहीना, बदनसीब
(औरत) (गाली) ।

आदान सं—जब लेती, छपि; जोती हुई
जमीन; वस्ती। वि—बसा हुआ। आदानी
वि—जोतने योग्य; जोती हुई (जमीन।
आदान कि वि—शून्यता पुन, फिर, दुबारा,
और भी (चद—अच्छेतर अत्र); सन्देहमें
(अ—गान गाइए! यानी गाना गाने को
योग्यता उसमें क्या है?)

आदानकृ (-अ) वि—बालक वृद्ध सभी।—
बन्निष्ठ सं—बालक वृद्ध स्त्री सभी।

आदान (-अ) कि वि—दानादि वचनसे।
आदान सं—दानदान, दाँगे रहनेका मकान,
घर; स्थिति। आदानिक वि, स—वाशिन्दा,
रहनेवाला।

आदान सं—आदान, डुलाहट, निमन्त्रण।

आदाननी स—स्वागत-संगीत, एक मुद्रा या
अंगुलि-विन्यास। वि—आवाहन-सम्बन्धी।

आदिर्भाव (आविर्भाव) सं—आविर्भाव,
उदय, प्रकाश, प्राकट्य, अवतरण। वि—
आदिर्भाव।

आदिन वि—आन गन्धला, मैला, दूषित।

आदिष्ट (-अ) वि—एकाग्र, तन्मय, निविष्ट;
व्याप्त (विश्राद्धि, नग्राद्धि)।

आदीर, आदि सं—राग रगीन हुकनी, अहीर।

आदु सं—पिता, बाप। [गुप्त।

आदुठ (आवृत्त -अ) वि—ढंका, आच्छादित;

आदुठ (-अ) वि—प्रत्यावृत्त, लौटा हुआ;
पठित; अभ्यस्त; आगत। आदुठ सं—
बार बार पढ़न, आवृत्ति; पुस्तकका पुनः
मुद्रित संस्करण (शून्यादुठि)।

आदुठ (आवेग) सं—रत्ना शीघ्रता; प्रबल
मनोयोग, विकलता, ध्वराष्ट (आदुठ)।

आदुठ स, वि—प्रार्थी, दरखास्त देनेवाला;
अभियोग। आदुठ सं—प्रार्थना, निवेदन;
दरखास्त; अभियोग।

आदुठ (-अ) वि—प्रायित, निवेदित,
वाचित।

आदुठ सं—आवेश, अभिनिवेश, मनोयोग,
एकाग्रता, प्रवेश; आसक्ति; संचार
(निष्ठावेश); मृगी रोग, भूत-प्रेतकी
बाधा। —न सं—प्रवेश; भूतावेश; क्रोध;
शिल्पशाला, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल।

आदुठ सं—घेरा, दीवार, चहारदीवारी।
आदुठ स—वेष्टन, घेरने या ढंकनेका कार्य
या पदार्थ, पारिपार्श्विक अवस्था।

आदुठ-आदान वि, सं—अड-बड, अनाप-
गनाप, ऊटपटांग। [जीविका।

आदुठ सं—गहना, भूषण, अलंकार, सजावट;
आल स—शोभा, कान्ति, ज्योति; चमक-
दमक; मलक; छाया; किरण; तुल्यता।

आदुठ सं—प्रवाद, कहावत।

आदुठ सं—भाषण, वातचीत; भूमिका।

—१ सं—भाषण, अभिभाषण; कहावत।

आदुठ सं—प्रतिविम्ब, परछाई, छाया
(आदुठ, आदुठ); इशारा, अस्पष्ट
प्रकाश, आशय, अर्थ, इच्छा।

आदुठ (-अ) स—कुलीनता, उच्च वंश
की मयादा, ऊँचे खानदानका घमंड,
पाण्डित्य, विद्वत्ता।

आदुठानिक वि—शब्दकोशका, शब्दकोश-
सम्बन्धी। [मदद।

आदुठ (-अ) स—अभिमुख होनेका भाव;

आदुठ सं—आप, अपना, अहीर।

आदुठ (-अ) वि—अवस्था, कुद्र दंडा;
सिक्किता हुआ। [चेष्टा।

आदुठ सं—पूर्ण भोग, आनन्दका उपभोग;

आदुठ, आदुठिक, आदुठिक वि—भीतरी,
भीतरका, मध्यवर्ती। [प्रयानुयायी।

आदुठिक वि—अभ्यासशील; व्यवहारिक;

आङ्गुलिक वि—अभ्युदय-जनक, उन्नति-साधक । सं—विवाहके पूर्व वर-चधूके मंगलार्थ अनुष्ठित शास्त्रीय कृत्य ।

आम वि—अणक, कौल कच्चा ; साधारण ; आम । सं—आम फल, आँव, श्लेष्मा ; आमातिसार ।

आम आता सं—अद्रक-सी एक जड़ जिससे कच्चे आमकी सुगन्ध आती है, यह खटाई पकानेके काममें आती है ।

आमड़ा सं—अमड़ा, एक खट्टा फल Hog-plum

आमड़ागाछि सं—आमड़ागाछ खुशामिद ।

अमठा-आमठा (—आमूता) कत्रा कि—हूँ या नहीं साफ साफ न कहना, अस्पष्ट स्वीकार करना, कहनेमें दुबिधा करना ; आनाकानी करना ।

आमदानी सं—आमदनी ।

आमन वि—देशिक हेमन्त ऋतुका ।—धान सं—हेमन्त ऋतुमें पकने वाला धान ।

आमन्त्र सं—निमन्त्रण, न्योता । आमन्त्रित (—अ) वि—निमन्त्रित । [दुलपित्ति ।

आमवाठ सं—खुजली-सा एक चर्मरोग,

आमवाग सं—कच्चा मांस ।

आमवाला सं—आममुल्लार ।

आमर सं—रोग, व्याधि, बीमारी (निवाग्र, उदवाग्र) । आमरिक वि—रोग-सम्बन्धी ।

आमरना (आमयदा) - वि—अमर, अमर्याद बहुतायत, बहुत, अधिक ।

आमरल (—अ) सं—रक्ततिसार । [तक ।

आमरग, आमरगाछ, आमरु कि वि—मृत्यु

आमरा (आमरा) सर्व—हम, हमलोग ।

आमरि, आश गरि अव्य—हर्ष, या विस्मय सूचक शब्द, बहुत अच्छा ! शोभाश !

आमरन सं—एक खट्टा शाक sorrel.

आमर्ग (—अ) सं—स्पर्श ; उपदेश ।

आमर्ष (—अ) सं—क्रोध, गुत्सा । आमर्ष सं—क्रोध ; घर्षण, रगड़, मर्दन ।

आमस सं—राज्याधिकारका समय (नवादी—, गङ्गाछात्र—) ; अधिकार, दखल, अमल (आगल आना—कार्यमें परिणत करना, उप-योगमें लाना) । —मलक सं—दखलका हुकुमनामा । —मात्र सं—शासक ; शुल्क उगाहने वाला कर्मचारी । —मात्री सं—शासन ; शुल्कका उगाहना । —मास सं—अधिकार-पत्र, दखलका हुकुमनामा ।

आमलकि (आमूलकि) सं—आँवला ।

आमला सं—अमला, कर्मचारी ; आँवला । —उल्ल (—अ) सं—नौकरशाही ।

आमगूल सं—शूल-दर्द ।

आमगष (—अ) सं—अमावस ।

आमगि (आमगि) सं—अमचूर, कच्चा आमके छुखाये हुए कतरे ।

आमा सर्व—मुझ (—आमा, —के, —इहेते) । वि—आधा जला ; न जलाया हुआ ।

आमाके, आमाग सर्व—मुझे, मुझको ।

आमातिमात्र सं—अतिसार, पेचिश ।

आमादिगक सर्व—हमे, हमलोगोंको ।

आमादिगत्र, आमाजत्र सर्व—हमारा, हमलोगोंका ।

आमानत सं—अमानत, धरोहर ।

आमानि सं—भिगोये हुए वासी भातका जल ।

आमाग (—अ) सं—कच्चा अन्न, चावल ।

आमाग सं—मुझे, मुझको ।

आमाग सब—मेरा ।

आमागत्र, आमागा सं—आमाशय ; पेटसे आँव गिरनेका रोग ।

आमि सर्व—मैं । [कर्मचारी ।

आमिन, आमोन सं—अमीन, भूमि नापने वाला

आमिर, आमिरी सं—अमीर, शरीफ

याद्वारा जिन स—आयोडीन Iodine

—थाव ना) ; फिर, पुनः (—आजिउ ना) ; या, अथवा (छुमि थाउ— ना थाउ) ; कभी (ठोके कि—अग्नि आजे ?) । वि—दूसरा (—शकटे दाउ) ; गत (—गाने) । आत्र, आत्र वि—अन्यान्य, दूसरे दूसरे । आत्रउ, आत्रा क्रि वि—और भी ।

आत्रक सं—अक, सिकां tincture.

आत्रळ (-अ) वि—लाल ; आसक्त ।

आत्रळिम वि—कुछ लाल, लाल ।

आत्रव सं—अर्ज, विनती, प्रार्थना ।

आत्रवि, आत्रवी, आत्रौ सं—अर्जी, दरखास्त ।

आत्रण (-अ) वि—जंगली, वन्य ।

आत्रठि सं—आरती, दीप-प्रदर्शन ।

आत्रनानी सं—अरदली orderly

आत्रवी वि—अरवी, अरब-सम्बन्धी । सं—अरबी भाषा । आत्रव (-अ) वि—अरब का (आत्रव्यापत्राज) ।

आत्रक (-अ, वि—शुरु या आरम्भ किया हुआ ।

आत्रभगण वि—जिसका आरम्भ हो गया है ।

आत्रमानी वि—अर्मानी Armenian

आत्रळ (-अ) सं—आरम्भ, शुरु, प्रथम प्रयत्न ; सूचना, भूमिका ; क्रिया, कार्य ; त्वरा ।

आत्रणि, आत्रि सं=आग्रना ।

आत्रण, (—इला, —लाला, —जाला) सं—तेजापोका तिलचट्टा cockroach

आत्राधक सं, वि—उपासक, सेवक । आत्राधन,

आत्राधना सं—उपासना, पूजा ; प्रार्थना ।

आत्राधनी (-अ) वि—उपास्य, उपासनाके योग्य । आत्राधित (-अ) वि—उपासित, पूजित ।

आत्राध (-अ) वि=आत्राधनी । आत्राधवान वि—जिसकी आराधना की जा रही है ।

आत्राय सं—आश्रय पेश, विलास ; सुख,

आरोग्य (आश्र—इश्राफ़) ; बाग । —

कदात्रा, —ठाकी सं—आरामकुर्सी ।

आक्रु (-अ) वि—चढ़ा हुआ, सवार ।

आत्र अव्य—अरे ! विस्मय घृणा क्रोध आदि भावसूचक अव्यय (—ए कि ? —गेन वा, —गोश) ।

आत्रा क्रि वि=आत्रउ । [तदुस्ती ।

आत्राण (-अ) सं—आरोग्य, स्वस्थता,

आत्राण सं—स्थापन, अभियोग ; दोषारोप ;

एकके गुण या दोषकी दूसरे पर कल्पना । —१

सं—आश्रय पौधा, आदिका लगाना जमाना

या बैठाना ; स्थापन ; आरोप । आत्राणित

(-अ) वि—स्थापित ; लगाया या रोपा हुआ ।

आत्राव (-अ) सं—चढ़ाव, चढ़ाई, सवारी ;

विकास ; सीढ़ी, निसेनी । —१ सं—चढ़ना,

सवार होना, चढ़ाव । —१ सं—जिड़ि, गड़े

सीढ़ी, निसेनी । आत्राशै सं, वि—सवार ;

यात्री ; चढ़ने वाला । [चुटिया ।

आर्क कला सं—रेफका चिह्न ; (दिल्लीमें)

आर्ख सं—सरलता, निष्कपटता, भोलापन ।

आर्ठि सं—शिल्प-कला (—इल) ; साहित्य

(—कलज) ; साहित्यमें रस-चुष्टि, रसात्मक

रचना । आर्ठि सं—शिल्पी ; साहित्यकार ।

आर्छ (-अ) वि—विश्व दुखी, क्लेशित

(क्लार्छ, —नाम) ; खण, बीमार । —१

क्रि वि—दुःखपूर्ण स्वरसे ।

आर्छव वि—अतु-सम्बन्धी, मासिक धर्मका ।

सं—मासिक धर्म ; अतुसाव ।

आर्छि सं—बीमारी ; दुःख, क्लेश ; मानसिक

कष्ट ।

आर्थिक वि—धन-सम्बन्धी, माली ।

आर्फीली, आर्फीली सं=आर्फीली ।

आर्ष (-अ) वि—भींगा, तर, गीला ; कोमल

(आर्ष) । —३ सं—भींगापन, गीलापन,

नमी, तरी ।

आर्श (आर्ण्य -अ) वि—आय, कुलीन, सभ्य ।

सं—प्रभु ; पति । —शुद्ध (-अ) सं—पति,
स्वामी, शौहर ; गुरुपुत्र ।

आर्णि, आर्णि सं=आर्णि । [अर्णि] ।

आर् (-अ) वि—अपिका कपि-गोत्र (—
अर्णि (-अ) सं—लोह बौद्ध ; देन देन ;
छोड़कर तीर्थकर ।

आन सं—आर्णि में ; इन दक ; कांटा ।

आन (आलो), आर्णि सं—प्रकाश, आलोक
रोशनी, अलं सली-सम्बोधन (—अर्णि) ।

आनश्चन सं=आर्णि ।

आर्णि (आलकात्रा) सं—अलकतरा ।

आर्णि (-अर्णि) (आल्—) सं—अ गर्ता,
चपकान ।

आर्णि (आल्ता, वि—ढीला (—आर्णि, —

दीर्घ) ; खुला, उघाड़ा (अर्णि—आर्णि) ;

पृथक्, अलग (आर्णि—आर्णि) ;

—अर्णि क्रि—शिथिल करना ; बचा रहना ।

—अर्णि वि—बज्रवान, अग्लील-आपी ।

आर्णि (आल्गो) वि—अलग, पृथक् ; न

छूकर (आर्णि—आर्णि) । आर्णि (आर्णि)

आर्णि क्रि—होठ न छू जाय ऐसे पीना
या खाना ।

आर्णि (-लो-) सं=आर्णि ।

आर्णि (-उ) सं—गलेका कौआ *gull*

आर्णि (आल्ता) सं—अर्णि अलता

(—अर्णि) । [रखनेका लकड़ीका ढांचा ।

आर्णि (आल्ता) सं—वस्त्रादि लटकाये

आर्णि (आल्ता) सं—जमीन फल या

पीड़े पर मांगलिक चित्रकारी । [alpaca

आर्णि (आल्-) सं—एक पगमी वस्त्र

आर्णि (आल्-) सं—पिन pin

आर्णि (आल्-) क्रि वि—अवग्य, जरूर ।

आर्णि (आल्-) सं—लम्बा नल वाली

फस्ती ।

आर्णि (आल्-) सं—पानी ठेनेके लिए
पेड़के चारों ओरका मेंड़, आलमाल ।

आर्णि (आल्-) सं—अलमारी ।

आर्णि (-अ), आर्णि सं—अवलम्बन, आश्रय,

सहारा । आर्णि (-अ) वि—अवलम्बित,

आश्रित, रक्षित । आर्णि वि—आश्रय या

सहारा लेने वाला ।

आर्णि (-अ) वि—वध, देवताके सामने

पशुवलि, हत्या, कत्ल ; आर्णि ; युद्ध ।

आर्णि सं—घर, मकान, वासस्थान (आर्णि,

विशान, बर्गान, लोदान) ।

आर्णि (आल्ता) वि—आर्णि आल्ता ।—वि

स—आर्णि आल्तापन, छस्ती, आल्ता-

परायणता ।

आर्णि सं—आर्णि आल्ता, आल्ता, छस्ती ।

—आर्णि सं—आर्णि अंगडाई, अर्णि जम्हाई ।

—अर्णि क्रि वि—आल्ताके कारण, छस्तीसे ।

आर्णि वि—वाला (आर्णि—, सब-अर्णि, विचारपति,

जिलाधीश । आर्णि—, मकानदार, गृहस्वामी,

मालिक । आर्णि—, तरकारी-फरोश ।

आर्णि सं—बला, मुसीबत, आफत । —आर्णि

सं—हर तरहकी आफतें, बलाएँ ।

आर्णि सं—लकड़ीका जलता कोयला ।

आर्णि वि—अलाहिदा, पृथक्, भिन्न ।

आर्णि सं—हाथी बांधनेका छूँटा या रस्सा ।

आर्णि (-नो), आर्णि (क्रि परि १०)—आर्णि

आर्णि थकाना ; नष्ट आर्णि नष्ट कराना ।

आर्णि सं—आर्णि, आलाप ; परिचय

(आर्णि आर्णि—आर्णि) । —आर्णि सं—

मेल-मुलाकात, जान-पहचान । —न सं—

आलाप-करण, बातचीत । आर्णि वि—

परिचित, मुलाकाती ; मिलनसार । [आर्णि] ।

आर्णि वि—दौलतमन्द, धनी (आर्णि आर्णि

आर्णि, आर्णि वि=आर्णि ।

आमि, आनी स—आन मेंड ; सखी, सहेली, श्रेणी, पांति; भौरा ।

आनिगन, आनिगन स—आलिंगन । आनिगिठ, आनिगिठ (-अ) वि—आलिंगन किया हुआ, छातीसे लगाया हुआ ।

आनिग्न स—आना मिट्टीका कुंडा, बड़ा मटका । आनिग (-अ) स—मकानके सामने वाला बाहरी बरामदा या चबूतरा ।

आनिगना, आनिगन स=आनगना ।

आनिगा, आनगे (आलेशे) स—छत परकी किनारे वाली दीवार; दीवारसे बाहर निकला हुआ छतके पास वाला किनारा, कारनीस cornice.

आनी स=आनि ।

आनू स—आलू (गोल—, गोलानू, शाकानू) । —थानू वि—बिखरा हुआ, खुला, न संवारा हुआ (-कष, -वष) । —नी वि—बिना नमक का, लवण-रहित, फीका (खाद्य पदार्थ) । —आनू स—आलूबुखारा । —आनूठ (-अ) वि—आलू मुक्त, खुला (-कष) ।

आनूथा (-अ) स—चित्र, प्रतिरूप, चित्रित मूर्ति, तसवीर । वि—लिखनेके योग्य ।

आनूय वि—विज्ञान, प्रखिण्ड ।

आनूय स—दलदलमें उत्पन्न होने वाला जगमाता प्रकाश will-o-the-wisp, marsh gas.

आनू स—प्रकाश, ज्योति, रोशनी, दीया, लालटेन । आनूय आनूय कि वि—दिन का प्रकाश रहते रहते । —आनूय स—आधी छाया आधा प्रकाश, धूप छाँह ।

आनू अव्य—आनू सखी-सम्बोधन (-गहे) ।

आनूक स—प्रकाश, रोशनी, ज्ञान । उन्नोठा-नूक स—उत्तर-ध्रुवकी प्रकाश-धारा, उत्तरी

मेरु-ज्योति Aurora Borealis, शशाङ्गाक स—सूर्यका प्रकाश । —गृह (-अ) स—

रोशनी-घर, समुद्रमें प्रकाश-स्तम्भ, Light-house. —छिड़ (-अ) स—अकसी तसवीर Photograph —छिड़ स—अकसी तसवीर खींचनेकी कला, Photography. —विज्ञान, —विण स—प्रकाश-विज्ञान optics —छिड़ (-अ) स—रोशनी-घर, Light-house.

आनूकित (-अ) वि—प्रकाशित, रोशन ।

आनूक वि—आलोचना करने वाला ।

आनूकना स—आलोचना, चर्चा; जाँच ।

आनूकनीय (-अ), आनूक (-अ) वि—आलोचनाके योग्य । आनूकित (-अ) वि—समालोचित; परीक्षित, पठित ।

आनूकन स—आतन तन अरवा चावल ।

आनूक वि—मथने वाला, हिलाने वाला ।

आनूकन स—मन्थन, हिलाव, आन्दोलन, मिश्रण (गच्छि—करा, दिमाग लड़ाना) ।

आनूकना वि—बिना नमकका, बिस्वाद, फीका ।

आनूकन स—अलवान, पशमी चादर ।

आनूकित (-अ) वि—कुछ लाल ।

आनू स—अल्लाह, खुदा, ईश्वर ।

आनू स—आशा, वासना, इच्छा; भोजन ।

आनू स=आशेन ।

आनूय स—आशा, प्रतीक्षा, इच्छा; सम्भावना । आनूकित (-अ) वि—इच्छित; सम्भावित ।

आनूक वि—आंशिक, प्रेमी ।

आनूकना (आनूक-) स—अन्य वचनों या स्त्रियों की अनुचित जिद का पूरा करना, मुँह लगाना, सिर चढ़ाना over-indulgence

आनूकनीय (-अ) वि—शंकाके योग्य; भयानक ।

आनूक स—शका, भय, डर; सन्देह । —विण (-अ) वि—शंका-युक्त, डरा हुआ, भयभीत ।

आशनाई सं—शक्ति परित्य, जानपहचान,
आशनाई, प्रम, इशक ।

आशना कि वि—आसपास, इर्दगिर्द ।

आशना, आशना कि वि—आसपास ।

आशना, आशना सं—आश्व मुहर, अशफी ।

आशना सं—आशा, आकांक्षा; भरोसा (—

दवा, —जटवा, —दाश), गदा, आसा,

चोपदारका टंडा । —तिद्रिह (—अ), —डोठ

(—अ) वि—आशासे अधिक । —रुह वि—

आशाके अनुरूप । —विठ (—अ) वि—

आशायुक्त, आशापूर्ण । —श्व सं—आशाकी

राह (—जटवा शका) । —लट (—अ) सं—

आशाका दृटना, हताशा, नैराश्य । —लट

सं—आशा-भरोसा । —लट सं—आसा,

गदा, चोपदारका टंडा ।

आशि, आशी सं, वि—अस्ती, ८० ।

आशीवि सं—नर्ल साँप ।

आशीर्षजन, आशीर्षान सं—आशिष, हुआ ।

आशीर्षान वि, स—आशिष देनेवाला ।

आठ वि—शीघ्र, तुरन्त (—लट,

महादेव) । —श (—अ) स—वाण, तीर;

वायु । वि—तेज दौड़ने वाला । —श

(—अ) सं—आठे शान आद्र-आग्विनमें

पकने वाला धान ।

आश्व कि वि—वचनसे ।

आश्व (आश्वर्य—अ) स—आश्वर्य, अचम्भा,

विस्मय, ताज्जुब (ज—इच्छा, वह

आश्वर्यान्वित हुआ है) । वि—आश्वर्यजनक ।

आश (आश—अ) सं—अश्व-शक्ति, Horse-

power. [उत्साहित ।

आश (आशस्त—अ) वि—ढाढ़स-प्राप्त,

आशान (आशशाशन) सं—तसल्ली, ढाढ़स,

सान्त्वना ।

आशिन (आशिन) सं—आश्विन, कुआर ।

आश्रम (आश्रम) सं—आश्रम; तपोवन । —

श्री स—आश्रम या तपोवनमें अशान्ति ।

आश्रय (आश्रय) सं—आश्रय, आधार,

सहारा; शरण, पनाह, घर, निवासस्थान ।

—श्री (-अ) वि—आश्रय ग्रहण करनेके

योग्य, ग्रहणीय । —श्री (-अ) वि—किसीके

आश्रयसे पुष्ट ।

आश्रित (आश्रित—अ) वि—आश्रित, किसीके

आश्रयमें, रहनेवाला । —दन्त वि—

आश्रितों पर कृपालु । —आशना (-अ) सं—

आश्रितों पर कृपा ।

आश्रिते (-अ) वि—आश्रित, गले लगाया

हुआ । आश्रव स—आश्रित; सयोग ।

आश स=आशिव ।

आश स—असाढ़ ।

आश वि—वर्षा-ऋतुका; लम्बा, खतम न

होने वाला । —श्व स—वृथा-गपशप;

कल्पित कहानी ।

आशे-श्व कि वि—आशे-श्व आशों अगोमें,

सारे शरीरमें; सब ओरसे ।

आशवार (आशवार) स—सवार, अश्वारोही ।

आश्व (-अ) वि—अनुरक्त, मोहित । आश्वि

सं—आसक्ति, अनुरक्ति, लगन, चाह, प्रेम ।

आश्व (आश्व—अ) स—मिलन, सयोग;

भोग (-मित्रा) । [(=आश) ।

आश्व (आश्व) वि—आगामी, आने वाला

आश्वि स—समीपता; मिलन; लाभ ।

आश्व स—आसन, चौकी, चढ़ाई; स्थिति ।

—आश्वि स—पैरके ऊपर पैर रख कर बैठनेका

एक ढंग, पलथी ।

आश्व (-अ) वि—समीपस्थ, निकटका ।

आश्व स—मृत्युका, समय । —आश्वि वि स्त्री

—जिस स्त्री या स्त्री-पशुका अभी प्रसव

होने वाला हो ।

आमव (आशव) सं—शराव, मदिरा, ताड़ी ।
आमविक वि—मदिरा-सम्बन्धी ।

आमवृक्ष (-अ) क्रि वि—समुद्र तक, समुद्र-
सहित ।

आमव्र सं—सभास्थान, मजलिस; नाट्यालय,
रंगमंच । —शत्रु कत्रा क्रि—सभामें जोगीला
भाषण देना । —जमा क्रि—सभा भर जाना,
सभा पर प्रभाव पड़ना । आमव्र नाश क्रि—
रंगमंच पर उतरना ।

आमव वि—मूल, असल, यथार्थ, खरा, सत्य ।
सं—मूलधन, पूँजी । —कथा सं—असली
बात, सत्य घटना, सार तत्त्व । आमवने क्रि
वि—एकदम, विलकुल; असलमें, यथार्थतः ।

आना (आशा) (क्रि परि ३) —आना,
उपस्थित होना; हाजिर होना (वाशित्र—,
हूज—), अभ्यास रहना (नाकाना आने
ना), उपयोगी होना (नेकड़ा जगद्रे काद्रे
आने) । सं—आना, आगमन (वाउत्रा
आगाई गात्र, जाना-आना निरर्थक है) ।

आमान सं—आराम, शान्ति, सुगमता,
बिभ्राम; रिहाई, समाप्ति (शृङ्गि—) ।
वि—सहज, आसान ।

आमागौ सं—अपराधी, मुजरिम; कजदार
आदमी; आसाम देशकी भाषा; आसाम
देशका निवासी । [प्रवाह (नशन—) ।

आमात्र सं—शृङ्गिगात्र वारिश; जलधारा जलका
आमौन वि—बैठा हुआ, उपविष्ट (श्रुतामौन) ।
आशत्र, आशत्रिक वि—असुरका, असुर-सम्बन्धी,
जंगली; निर्दयी ।

आमाशत्र सं—सवार, अशवारोही ।

आमात्रा (आशकारा) सं—आशकारा ।

आमा (आशके) सं—[पिष्टकविशेष एक तरहका
पिष्टक जो पानीमें घोले हुए चावल-चूर्णको
सेक कर पकाया जाता है ।

आञ्च (आस्त -अ) वि—अथवा, गोठे साबूत,
अखण्ड (—गाडे); निरा (—वाका) ।

आञ्चत्र (आस्तर) सं—अस्तर; पलस्तर;
बिछौनेकी चादर ।

आञ्चत्र (आस्तरन) सं—बिछावन, बिछौने
की चादर; कालीन गालीचा आदि ।

आञ्चाना (आस्ताना) सं—अस्ताना, आश्रम ।

आञ्चान (आस्तानल) सं—अस्तबल, तबेला ।

आञ्चिन (आस्तिन) सं—आस्तीन; बाँह;

बाँहका कपडा (—छोटे शेर भागिछे छेछत) ।

आञ्चोर्ग (आस्तीर्न -अ), आञ्चुत (-अ) वि—
विस्तृत, फैला हुआ, बिखेरा हुआ ।

आञ्च (आस्ते) क्रि वि—धीरे धीरे, आहिस्ता ।
—आञ्च क्रि वि—हड़बड़ीके साथ । —आञ्च
क्रि वि—धीरे धीरे, आरामसे, फुरसतमें ।

आश (आस्था) सं—विश्वास, श्रद्धा,
भरोसा, निष्ठा । [प्राप्त ।

आशित (आस्थित-अ) वि—विस्तृत, स्थापित;

आशपद (आशपद) सं—पात्र (अशपद,
अशपद), स्थान, जगह, आधार ।

आशपदा (आशपदा) सं—स्पर्धा, गर्व,
धमराड, दिखाई, ललकार, प्रतिद्वन्द्विता ।

आशालन (आशफालन) सं—दम्भ, धमराड;
ललकार ।

आशफोटे (आशफोट) सं—एक हाथसे दूसरी
बाँह पर चपेट जिससे जोरका शब्द निकले;
आघातका शब्द ।

आशाद (आशशाद) सं—स्वाद, मजा । —न
सं—स्वाद ग्रहण, सुखानुभव । —नौश (-अ)
वि—स्वाद ग्रहण योग्य । आशापिठ (-अ)
वि—स्वाद गृहीत, चाखा हुआ । आशाश
वि—स्वादिष्ट, मीठा ।

आश (आशय-अ) सं—मुह, मुख, चेहरा
(शूक्षाञ्च, पूरघकी ओर मुख रख कर) ।

आश्च (-अ) वि—घायल, आहत, ध्वनित, गुणीकृत (वञाश्च वि—विजलीसे घायल। वाञाश्च वि—हवाका सारा। वञाश्च वि—हृदयमें चोट लगा हुआ)।

आश्च सं—युद्ध, लड़ाई; होम, हवन। —गौड (-अ) वि—हवन करनेके योग्य। सं—होमाग्नि।

आश्च सं—सग्रह, ग्रहण। आश्चौघ (-अ) वि—सग्रह करने योग्य। आश्चौ वि, सं—सग्रह करने वाला।

आश्च अव्य—हाय, अहा, आहा (—दुःख या शोक प्रकट करना)। —गवि अव्य—क्या खूब। कैसा सुन्दर।

आश्चक वि—अहमक, देवकृक (देवकृ—)।

आश्चक सं—वेवकृफी, मूर्खता। [आश्चकजाले]।

आश्च सं—खाद्य, भोजन, खाना (—दिश, आश्च (आहार्य-अ) सं—खाद्य वस्तु खानेकी चीज। वि—खाने योग्य, सग्रहणीय।

आश्च (-अ) वि—स्थापित, संलग्न, आसक्त, अनुरक्त।

आश्चिद सं—आशुष्ट संपरा, मदारी।

आश्चि सं—अहीर, रवाला।

आश्च (-अ) वि—हवनमें प्रवृत्त, उत्सर्गीकृत।

आश्चि सं—आहुति, होम, हवन (वृञाश्चि)।

आश्च (-अ) वि—निमन्त्रित (अनाश्च, अनिमन्त्रित। वञाश्च, शब्द सुनकर आगत)।

आश्च (आहत-अ) वि—संगृहीत, एकत्रित, घृत।

आश्चि (आश्रिक) वि—दैनिक, रोजाना।

—इत्थं सं—नित्यकर्म, सन्ध्या-चन्दन पूजा-पाठ आदि।

आश्चान (आश्चान) सं—बुलाहट, निमन्त्रण; पुकार। आश्चाद वि—बुलाने वाला; ललकारने वाला।

आश्चान (आश्चान) सं—आनन्द, हर्ष (आश्चान आश्चान, अत्यन्त आनन्दके कारण आपसे बाहर); नाई दुलार (छेत्तके लक्ष्य—दिना, सिर न चढाओ)। आश्चानिठ (-अ) वि—आनन्दित, उत्फुल्ल, खुश। आश्चानी वि—आनन्दित। सं—आराम-तलब विलासी मोटी औरत; दुलारी स्त्री। आश्चाने वि—अधिक आदर प्राप्त, दुलारा, सिर-चढ़ा (—कानाई, —आश्चान)।

इ

इ अव्य—ही, सिफ, केवल (लोभाकहे, तुमको ही); निश्चय (आमि वाहेदहे वाहेव); शायद (नईनहे रा)।

इइनागौ वि—यूनानी।

इइएशियाग सं—यूरेशियन, फिरगी Eurasian.

इइराक, इइएक सं—अंग्रेज। इइराकी, इइएकि, इइएकी सं—अंग्रेजी भाषा। वि—अंग्रेजी, अंग्रेज-सम्बन्धी। [सूचक शब्द।

इः अव्य—विलम्ब दुःख अघोरता आदि भाव-

इइ (इइवु) सं—चाद ऊख, गन्ना।

इइवद (-अ) सं—अंग्रेजोंकी चाल-ढालकी नकल करने वाले बगाली।

इइवद सं—इशाश इशारा, संकेत। इइवते कि वि—इशारेसे।

इइव सं—इइव कच्चा कटहल। इइव भाका वि—छोटी अवस्थामें पका, अकालपक्व;

बचपनमें बूढ़ों सा बर्ताव या बात करने वाला।

इइव, इइव सं—इइव, अभिलाषा, आकांक्षा, चाह; पसन्द; रुचि, प्रवृत्ति, आग्रह। वा

—ठाई, बाछ्ठाई, स्वेच्छासे जो कुछ किया या कहा जाय, तुच्छ या निकम्मी चीज या बात, जो मनमें आवे वह। —इउ (-अ)

वि—स्वेच्छासे कृत। —कृत्रे क्रि वि—
स्वेच्छासे, इच्छानुसार। —इच्छा क्रि वि
= ईच्छा इच्छासे। —इच्छा वि—इच्छाके अनुरूप,
जैसा चाहिये वैसा। —इच्छा क्रि वि—
इच्छानुसार। —अ (-अ) स—
वसीयतनामा। —ग्रन्थ, —ग्रन्थ स—
आत्मघात; स्वेच्छासे मृत्यु। —ग्रन्थ (-अ)
वि—इच्छाधीन।

ईच्छू, ईच्छूक वि—इच्छुक, चाहने वाला,
प्रार्थी।

ईश्वर, ईश्वर स—पायजामा, जांघिया।

ईश्वरा स—इजारा, पट्टा।

ईश्वर (-अ) वि—पूज्य, माननीय।

ईश्वर स—इंच inch.

ईश्वर स—अंजन Engine

ईश्वरिशास्त्र स—इंजीनीयर Engineer

ईश्वर स—ईंट, ईंटा। —थाना स—ईंटा बनाने
का स्थान। —थाना स—ईंटके टुकड़े।

ईश्वर वि—निम्न श्रेणीका (—लोक), नीच
(—शक्ति); दूसरा, अन्य (वायव्य, दक्षिण, दाहिनी दिशा)। —ठा, —गना स—
नीचता, इतरपन, कमीनापन। —विशेष स—
तारतम्य, भेद, पार्थक्य।

ईश्वरवि—परस्पर।

ईश्वर क्रि वि—ईश्वर इससे पहले।

ईश्वर (-अ), ईश्वर क्रि वि—इधर उधर,
चारों ओर। स—दुविधा, सशय।

ईश्वर क्रि वि—ऐसे, इस तरह, इसके लिए।

स—इति, समाप्ति (—कथा क्रि—समाप्त
करना)। —कथा स—कहानी, कथा,
इतिहास। —कथन (-अ) स—करने योग्य

काम, कर्तव्य। —शक्ति क्रि वि—ईश्वर
इससे पहले। —ग्रन्थ (-अ) स—इतिहास,
वृत्तान्त। —ग्रन्थ, ईश्वर क्रि वि—इस

समयके भीतर, इतनेमें। —श्राव स—इतिहास,
कहानी।

ईश्वर क्रि वि—ईश्वर।

ईश्वर क्रि वि—इस प्रकारका, ऐसा। [और भी।

ईश्वर क्रि वि—शक्ति आदि, इस प्रकार

ईश्वर क्रि वि—ईश्वर इसमें।

ईश्वर क्रि वि—आजकल, इन दिनों, अब।

ईश्वर क्रि वि—आजकलका, आधुनिक।

ईश्वर स—इन्दारा, कुआँ।

ईश्वर स—चूहा, मूस (—सं—चुहिया)।

ईश्वर सर्व—(सम्मानित) यह व्यक्ति, आप
(—अभिप्राय, आप जमींदार हैं)।

ईश्वर स—ईश्वर।

ईश्वर स—नील कमल।

ईश्वर स—चन्द्रमा, कपूर। —निजानन स—
चन्द्रचदन।

ईश्वर स—ईश्वर।

ईश्वर स—इन्द्रजाल, माया, जादू।

ईश्वर (-अ) स—इन्द्रिय—श्रोत्र त्वक्
चक्षु जिह्वा घ्राण ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं;
वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ ये पाँच
कर्मेन्द्रियाँ हैं, मन बुद्धि चित्त अहंकार ये
चार अन्तरिन्द्रियाँ यानी अन्तःकरणकी
वृत्तियाँ हैं। [आदि—; उसकाहट।

ईश्वर स—ईश्वर, जलानेकी लकड़ी कोयला

ईश्वर स—सीमा, परिमाण, सख्या।

ईश्वर स—याद, स्मरण।

ईश्वर स—यार, दोस्त, रसिक। —कि
(—यार्कि), ईश्वर स—रसिकता, हँसी-
दिल्ली, यारोंके साथ गन्दी बातोंकी चर्चा
(—कथन)।

ईश्वर स—गाकड़, कानकी बाली ear-ring.

ईश्वर अव्य—विस्मृत शब्दके बदले इस शब्दका
प्रयोग करते हैं (कृत्रि, अश्रु, अश्रु, शान्ति)

श्रेयसात्र (ईशन्मात्र-अ) वि—बहुत थोड़ा, थोड़ा सा ।

श्रेयिका सं—छुनि बालोंकी कलम ।

श्रेय सं—इच्छा, अभिलाषा ; चेष्टा, प्रयत्न ।

उ

उई सं—दीमक । —ठिबि सं—दीमकोंका बनाया हुआ टीला या ढूह जिसके भीतर वे घर बना कर रहते हैं, बल्मीक, बाँबी ।

उईम सं—इच्छा-पत्र, वसीयतनामा ।

उः अव्य—वित्पमय क्रोध दुःख या अधीरता सूचक शब्द ।

उकि सं—भाँक, ताक-भाँक, छिप कर देखने की क्रिया । —यात्रा कि—भाँकना । —भूँकि सं—ताक-भाँक ।

उकिन सं—चकील ; पक्ष करने वाला ।

उकून सं—जूं जो केशोंमें पैदा होता है, चीलर ।

उक (-अ) वि—उक्त, कथित (उग्राक) ।

उकि सं—कथन, कथित वाक्य, उक्ति ।

उका (उक्ता) सं—चैल, वृष, साँड़ ।

उथड़ान (उथड़ानो), उथड़ाना (क्रि परि १८) —उखाड़ना ।

उथन, उथनि सं—उथन ओखली ।

उथा सं—व्रति रेती ।

उगवान (उग्रानो), उगवाना (क्रि परि १८) —बमि रत्ना कै करना । उगवानेशा ठिबाना कि—पागुर करना, जुगाली करना ।

उथ (-अ) वि—उग्र, तेज, उत्कट, तीव्र, प्रचंड ।

—कथा वि—खतरनाक काम करने वाला, भयंकर ; निर्दयी । —शक्ति वि—क्रोधी ।

—वीथ (-अ) वि—तीव्र शक्ति युक्त, तेज ।

—कवि (-अ) सं—आधुरी ।

उठा, उठा, उठू वि—ऊँचा ।

उठाठन सं—उत्कठा, वेचैनी, व्याकुलता, घबराहट । वि—व्याकुल ।

उठान (-नो), उठाना (क्रि परि १३ — मारनेके लिए उठाना (नाँठि—) । [ठीक ।

उठिठ वि—उचित, वाजिब, मुनासिब, योग्य,

उठू वि—ऊँचा, उच्च ।

उठाठ सं—शक्ति ठोकर ।

उठ (-अ) वि—ऊँचा, उन्नत ; तेज, बुलन्द (—गुला, —कठ) । —वाज (-अ) सं—ऊँचा शब्द, प्रतिवाद, आवाज । —वान सं—चिल्लाहट, हल्ला ।

उठावठ वि—उठूनिहू खुरदरा ।

उठावठ सं—उच्चारण, वाक्य कथन । उठावठी (-अ), उठावठी (-ज-अ) वि—उच्चारण करने योग्य ।

उठावठ वि—उदारचेता, महाशय ।

उठिठ, उठिठ सं—भींगुर-सा एक फतिंगा ।

उठिठः (उच्चइशारे) क्रि वि—ऊँची आवाजसे ।

उठिठ (-अ) वि—उठिठ बरबाद (छेनेठो—गल्ले, आवारा हो गया है) । [हुआ ; फूला हुआ ।

उठिठ (-अ) वि—उठाला हुआ ; छलकता

उठिठ (-अ) वि—उजाड़, नष्ट, बरबाद ।

उठिठ (-अ) सं—उठिठ जूटा (सभी कच्ची रसोई उच्छिष्ट मानी जाती है, इस अर्थमें कि उसके छूनेसे हाथ धोना पड़ता है) ।

उठिठ वि—अमागना विश्वंखल, आवारा, स्वच्छाचारी ।

उठिठ सं—छोटा करेला । [वाड़ी—कविनाथ] ।

उठिठ सं—समूल ध्वस, नाश, बरबादी (बर-

उठिठ (उच्छिष्ट-अ) वि—उत्फुल्ल, उमंगसे उठलता हुआ ।

उठिठ (उच्छाश) सं—विकास, उल्लास, भावावेग ।

उठिठ (-अ) वि—उठिठ ।

ਏਏ ਸ' = ਏਏਏ ।

उड़ोखाशब्द सं—हवाई जहाज ।

उड़घन सं—वायुमें विचरण, उड़नेकी क्रिया ।

उड़डीन, उड़डीग्रामन वि=उड़ख ।

उड़वान (उतरानो), उड़वानो, उड़वान
(ओतरानो), उड़वानो (क्रि परि १८)—
उतरना ; सफल होना (श्रीकृष्ण कान भउ
उठने गछे) । [हल्ला ।

उड़वान (उतरोल) सं—कानाशन शोरगुल,
उठना वि—उद्विग्न, व्याकुल ।

उड़वान (उतलानो), उड़वानो क्रि=उथलान ।
उड़कटे वि—उग्र ; तीव्र, विकट ।

उड़कठ सं—उद्वेग, शंका, भय, घबराहट ।
उड़कठिठ (-अ) वि—व्याकुल, घबराया हुआ,
भीत । [व्यग्र ।

उड़कण (-अ) वि—कान खड़ा, छननेके लिए
उड़कई (-अ) सं—उन्नति, श्रेष्ठता, बढ़ाई ।

उड़कन सं—उड़िसा ।

उड़कीण (-अ) वि—खोदा हुआ ।

उड़कून सं=उकून ।

उड़कूठे (-अ) वि—उत्तम, उमदा, श्रेष्ठ ।

उड़काठ सं—घूस, रिवत । —वाही वि—
रिवत लेने वाला, घूसखोर । [उठा हुआ ।

उड़काष्ठ (-अ) वि—अतिक्रान्त, बढ़ा हुआ,
उड़कित (उत्तिवस-अ) वि—उछाला हुआ ;
उछाड़ा हुआ । [निक्षेप या फेंकाव ।

उड़कण (उत्खेप) सं—उछाल, ऊपरकी ओर
उड़कण (उत्खेपन) सं—ऊपरको निक्षेप ।

उड़काठ (उत्खात-अ) वि—उछाड़ा हुआ
(जिगमोषी-कवि ना) ।

उड़क (-अ) वि—बहुत गर्म, क्रोधित ।

उड़क-महाग सं—खूब मार या प्रहार ।

उड़कण (-अ) सं—महाजन, कर्ज देनेवाला ।

उड़काठ (-अ) सं—मस्तक, सिर ।

उड़काठ वि—अच्छे अच्छे, उत्तमसे उत्तम ।

उड़क सं—उत्तर, जवाब ; उत्तर दिशा । वि—
परवर्ती, अगला (-काल), अन्तिम (-काँ) ।

—काल सं—प्राचीन अयोध्या प्रदेश ।

—किसा सं—अन्तिम क्रिया, शवदाह आदि ।

—भक्त सं—तकमें सिद्धान्त-पक्ष । —वक्त्र

सं—पद्मा (गंगा) नदीके उत्तर पारका

बगाल । —श्रीमद्भाग सं—वेदान्त-दर्शन,

शारीरक मीमांसा, वेदके अन्तिम भाग

उपनिषदोंकी मीमांसा, महर्षि वेदव्यास-

कृत ब्रह्मसूत्र । —नाथ सं—तान्त्रिक साधना

में प्रधान साधकका सहायक । उड़काधिकारी

सं—वारिस । उड़काण (उत्तराण-अ),

—ग्रन्थ (-अ) वि—उत्तरकी ओर मुँह या सिर

रख कर (—वज्रि नाई ना, उड़काण वज्रि ना

वा नाई ना) । उड़काण क्रि वि—क्रमशः ।

उड़क सं—पार गमन, दूसरे पार उतरना ;
गन्तव्य स्थानमें पहुँचना ।

उड़कौण (-अ) सं=उड़ानि ।

उड़क क्रि वि—उत्तर दिशामें, जवाबमें । वि—
उत्तर दिशासे आनेवाला (—शांखा, —मेष) ।

उड़क वि—उन्नतोदर convex. [के बल ।

उड़कन वि—छिन्न चित्त ; नतोदर concave ; पीठ

उड़क सं—ताप, गर्मी ।

उड़क वि—ऊँचा (—उग्र) ।

उड़कौण (-अ), वि—दूसरे पार गया या पहुँचा
हुआ, कृतकार्य, कामयाब (श्रीकृष्ण—इष्टि) ।

उड़क (-अ) वि—बहुत ऊँचा ।

उड़कन सं—ऊपर उठाना, उठानेकी क्रिया ।

उड़क (-अ) वि—विपक्ष दिक्, सताया हुआ ।

उठान सं—उन्नति, उठना (गाढाथान) ;
विद्रोह, बगावत ।

उठाणक वि—प्रस्ताव करने वाला ।

उथित (-अ) वि—खड़ा, निकला हुआ, उन्नत,
विद्रोहके लिए तैयार ।

उ०श्रुति सं—उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश ; कारण ,
मूल ।

उ०श्रुति सं—कुपथ, बुरा मार्ग, अष्टाचार ।
—शान्ति वि—कुमार्गगामी ; अष्ट, आवारा ।

उ०श्रुति वि—उठने वाला ; पैदा होने वाला ।

उ०श्रुति (-अ) वि—उत्पन्न, उद्भूत, पैदा ।

उ०श्रुति सं—पद्म, कमल ।

उ०श्रुति सं—उखाड़ना । [दगा, अत्याचार ।

उ०श्रुति सं—उपद्रव, आफत, ऊधम, शरारत ;

उ०श्रुति (-अ) वि—पैदा करने योग्य ।

उ०श्रुति सं—निग्रह, अत्याचार, सताना, कष्ट
पहुँचाना ।

उ०श्रुति (-अ) वि—प्रफुल्ल, खुश । [स्थान ।

उ०श्रुति (-अ) सं—भरना, फुहारा, उत्पत्ति-

उ०श्रुति (-अ) सं—गोदी, पहाड़की तराई ।

उ०श्रुति (उत्साह-अ) वि—उत्साह ।

उ०श्रुति वि—उच्छेद करने वाला ।

उ०श्रुति (उत्सारण, सं—अपसारण, हटाना ।

उ०श्रुति (-अ) सं—उत्साह, उमंग, जोश,
हौसला, हिम्मत ।

उ०श्रुति (-अ) वि—उत्सर्ग किया हुआ,
कृष्णार्पित ; त्याग किया हुआ ।

उ०श्रुति (उ०श्रुति), उ०श्रुति, उ०श्रुति
(ओ०श्रुति), उ०श्रुति (क्रि परि १८)
—उबल पड़ना (आधुनिक बाल क०श्रुति १८)
उ०श्रुति १८ १८ १८ ।

उ०श्रुति सं—पानी, जल ; उत्तर दिशा ।

उ०श्रुति (-अ) सं—पानीका घड़ा ।

उ०श्रुति (-अ) वि—ऊँचा, ऊपरको नोकवाला,
धृष्ट, ढीठ ; हठी ।

उ०श्रुति सं—हाइड्रोजन गैस ।

उ०श्रुति सं—समुद्र, सागर ।

उ०श्रुति (-अ) सं—उदयसे अस्त तक समय ;
दिन । वि—दिन भर ।

उ०श्रुति (उ०श्रुति) वि—उगने वाला,
उदित होने वाला ।

उ०श्रुति सं—पेट । —श्रुति वि—पेट । उ०श्रुति
(-शास्त्र) वि—हजम, गवन ।

उ०श्रुति वि—पेट ।

उ०श्रुति (-अ) वि—खाया हुआ, भक्षित ।

उ०श्रुति (उ०श्रुति) सं—उदर स्फीति,
पेटका फूल जाना, अफरा ।

उ०श्रुति (-अ) सं—खाद्य, भोजन, जीविका ।

उ०श्रुति सं—पेटकी बीमारी, अतिसार ।

उ०श्रुति सं—पेटमें पानी भर जानेका रोग,
जलोदर रोग ।

उ०श्रुति (उ०श्रुति), (-श्रुति) वि—उ०श्रुति नंगा,
उघाड़ा ; आवरण-रहित (श्रुति-श्रुति-श्रुति
आच्छादन ?) । [महान ।

उ०श्रुति सं—ऊँचा स्वर वि—उच्च ; उदार ;

उ०श्रुति सं—दृष्टान्त, मिसाल । उ०श्रुति
(-अ) वि—कथित, उक्त, उदाहरण रूपसे
प्रदत्त ।

उ०श्रुति (-अ) वि—उगा हुआ, चढ़ा हुआ ।

उ०श्रुति सं—उत्तर दिशा ।

उ०श्रुति वि—उठने वाला, उन्नत होने वाला ।

उ०श्रुति सं—डूँवर गूलर ।

उ०श्रुति सं—ओखली ।

उ०श्रुति वि—मूर्ख, बेवकूफ ।

उ०श्रुति (-अ) वि—उद्भूत, निकला हुआ,
उठा हुआ । उ०श्रुति सं—उद्भव, उदय ।

उ०श्रुति सं—ऊपरकी ओर गमन ।

उ०श्रुति वि, सं—सामवेद गान करने वाला,
ऊँचे स्वरसे गाने वाला ।

उ०श्रुति सं—ऊँकर डकार ; कं । उ०श्रुति
(-श्रुति) सं—वसन, कै ।

उ०श्रुति वि—आग्रही, सुननेके इच्छुक, व्यग्र ।

उ०श्रुति वि—खोलने वाला । उ०श्रुति सं—

खोलनेकी क्रिया (धातु—) । उद्घाटित (-अ)
वि—खुला ; प्रकट ।

उद्घोष स—ऊँची ध्वनि ; ऊँचे स्वरसे घोषणा ।

उद्घात वि—अति प्रबल ; उद्घात । [अभिप्रेत ।

उद्दिष्ट (-अ) वि—लक्षित ; कथित, उक्त,

उद्दीप्त वि—प्रकाशक, जलानेवाला, उत्तेजक

(शाश्वतदीप्त) । उद्दीप्त, (-ना) स—

प्रकाशन, उत्तेजना ; प्रोत्साहन । उद्दीप्तनाम

वि—अत्यन्त आग्रह युक्त, उत्तेजना-पूर्ण,

उत्साह-पूर्ण । उद्दीप्त (-अ), उद्दीप्त

(-अ) वि—प्रज्वलित, प्रोत्साहित, उत्तेजित ।

उद्देश स—उद्देश्य, लक्ष्य ; पता ; जाँच,

तहकीकात ।

उद्देश्य स—लक्ष्य, अभिप्राय, आशय ।

उद्घात (-अ) वि—ढीठ, गँवार ; घमडी ।

उद्घात स—उल्लेख, उद्धार, मुक्ति ।

उद्घात स—मुक्ति, परित्राण, उन्नति ; प्रतिष्ठा,

उद्धृत वाक्य । उद्घात हि—“ ” यह चिह्न ।

उद्घात (उद्बन्धन) स—फाँसी ।

उद्घात (उद्बन्धन) स—वमन, कै ।

उद्घात (उद्बन्धन) स—बाकी अश्रु वचा

हुआ हिस्सा । [volatile

उद्घात (उद्वायी) वि—उड़ जाने वाला

उद्घात (उद्वाशित-अ) वि—निर्वासित,

देशसे बाहर निकाला हुआ ।

उद्घात (उद्वास्तु) वि—वास्तु छिटा । श्रेष्ठ

पैतृक मकानसे निकाला हुआ

(जमिंदार अर्थात्—स्वामिन) ; अपने निवास-

स्थानसे निकाला हुआ, दूसरे देशके

शरणार्थी Refugee

उद्घात (उद्वाह-अ) स—विवाह, शादी ।

उद्घात (उद्वाहित-अ) वि—विवाहित,

दोया हुआ ।

उद्घात (उद्बिम्ब -अ) वि—घबराया हुआ,

आकुल, बेचैन ; दुःखी । —छिटे क्रि वि—

घबराते हुए, आकुल हो कर ; आग्रहसे ।

उद्घात स—उद्विलाव ।

उद्घात (उद्बुद्ध -अ) वि—प्रबुद्ध, जागरित,

स्मरणमें आया हुआ ।

उद्घात (उद्बुद्ध -अ) वि—वचा हुआ, अवशिष्ट ।

उद्घात (उद्बेग) स—उत्कण्ठा, चिन्ता,

फिक्र, घबराहट । [क्लेशित, उद्विग्न ।

उद्घात (उद्बेजित -अ) वि—दुःखी,

उद्घात, उद्घात (उद्बेलित-अ) वि—बह

निकला हुआ प्लावित ।

उद्घात (उद्बोध) स—स्मरण याद । —क

वि—स्मारक याद दिलाने वाला । —न स—

जागरण ; होशमें लाना ।

उद्घात वि—अनोखा, अनूठा, विलक्षण ।

उद्घात स—उत्पत्ति, जन्म, वृद्धि, मूल ।

उद्घात स—आविष्कारक, ईजाद करने वाला ।

उद्घात (उद्भाशित-अ) वि—प्रकाशित ।

उद्घात (-अ) स—उद्भिद, जमीन फोड़ कर

निकलने वाला, वृक्ष लता आदि ।

उद्घात वि—अनोखा, अद्भुत ।

उद्घात (-अ) वि—पागल, उन्माद ; व्याकुल,

पागलकी तरह घूमनेवाला ।

उद्घात (उद्घात-अ) वि—तैयार, तत्पर प्रस्तुत,

मुस्तैद, उठाया हुआ (—शब्द) ।

उद्घात (उद्घात) स—वाग, वगीचा ।

उद्घात (उद्घात) स—सम्पादन, निर्वाह,

समाप्ति । उद्घात (उद्घातित-अ) वि—

अनुष्ठित, पूर्ण, समाप्त ।

उद्घात (उद्जोग) स—उद्योग, आयोजन,

चेष्टा । उद्घात (उद्जोक्ता) स, वि—

उद्योग या आयोजन करनेवाला । उद्घात

(उद्जोगी) वि—आयोजक ; उद्यमी, उत्साही ।

उद्घात (-अ) वि—उत्तेजित, वदित ; स्पष्ट ।

उद्भूत सं—सचार, उद्य (दूध—इष्टा) ।

उद्भूत वि—अहम्य, गायव ।

उद्भूत (अ), उद्भूत, उद्भूत वि—कम कम (उद्भूत-याभि)

७९ ; उद्भूतवि ३९ ; उद्भूतवि २९ ; उद्भूतवि २९ ;

२९ ; उद्भूतवि ४९ ; उद्भूतवि १९ ; उद्भूतवि ५९ ;

उद्भूतवि ६९ (उद्भूत जाते इति वन) ।

उद्भूत सं—ऊन । [चुल्हा चुल्हाना] ।

उद्भूत, उद्भूत, उद्भूत सं—चुल्हा (—द्वान,

उद्भूत सव—सम्मानित वह व्यक्ति, आप ।

उद्भूत सं, वि—उनीस, १९ ।

उद्भूत सं—सौर मासको उनीस तारीख (को) ।

उद्भूत (अ) वि—उन्नत, ऊचा, श्रेष्ठ, ऊपर

ऊठा हुआ, समृद्ध । —उन्नत (अ) वि—

उन्नत चरित्रवाला । —उन्नत (अ) वि—उन्नत

चित्तवाला, उन्नत ।

उद्भूत सं—ऊपर उठाना, उन्नत करना ।

उद्भूत (अ) वि—निद्राहीन, सजग, चौकन्ना ।

उद्भूत (अ) वि—ऊपर उठाया हुआ

promoted

उद्भूत (उन्मज्ज) सं—दूरी हुई अवस्थासे

ऊपर उठना, उतराना ।

उद्भूत (उन्मत्त-अ) वि—पागल वावला,

सनकी ; वेमुध, मदन्ध ; मतवाला ।

उद्भूत (उन्मत्ता) वि—उन्मत्त जिसका ध्यान

दूसरी ओर लगा हुआ है ; ध्वराया हुआ,

उद्भूत । [वि—पागल ।

उद्भूत (उन्माद) सं—पागलपन, चित्त-विभ्रम ।

उद्भूत (उन्माद-अ) सं—दुर्ग बुरा माग,

भ्रष्टाचार । —गर्भ वि—भ्रष्टाचारी,

वदचलन ।

उद्भूत (उन्मीलन) सं—आँखें खोलना ;

प्रकाश । उद्भूत (अ) वि—खुला,

विकास-प्राप्त । [रिहा ।

उद्भूत (उन्मुक्त-अ) वि—खुला, उधारा ; मुक्त,

उद्भूत (उन्मुक्त-अ) वि—मुहर न किया हुआ
unsealed

उद्भूत (उन्मूलन सं—उच्छेद मूल उत्पादन ;

नाश वरवादी । उद्भूत (अ) वि—

उखाड़ा हुआ । [खुलना, थोड़ा प्रकाश ।

उद्भूत (उन्मेष) सं—विकास, आँखोंका

उद्भूत (अ) सं—निकट, प्रान्त (नभः—) ।

उद्भूत सं—कहानी, गल्प, किस्सा ।

उद्भूत सं—सामान, सामग्री, साधन ;

औजार ; अन्नके अतिरिक्त ढाल तरकारी

आदि । उद्भूत सं—पूजाके सामान फूल

चन्दन आदि । [किनारा ।

उद्भूत सं—तीर, तट ; समुद्र नदी आदिका

उद्भूत सं—आरम्भ, शुरु, तैयारी, आयोजन ।

उद्भूत (अ) वि—स्वीकृत ; पहुँचा हुआ ;

प्राप्त ; सलज ।

उद्भूत (अ) सं—ग्रहकी परिक्रमा

करनेवाला छोटा ग्रह ; कैदी, कैद,

गिरफ्तारी, पीछे चलनेवाला ।

उद्भूत (उपचानो), उद्भूतानो, उद्भूतान

(ओपचानो), उद्भूतानो (क्रि परि १८) =

उद्भूत ।

उद्भूत सं—पूजाकी सामग्री (उद्भूतानो,

उद्भूतानो पूजा), सेवाका सासान ;

इलाज (उद्भूतानो) ।

उद्भूत सं—उपकार करनेकी इच्छा ।

उद्भूत वि—उपकार करनेके इच्छुक ।

उद्भूत सं—जातिका छोटा विभाग ।

उद्भूत (अ) क्रि—जन्मा, उत्पन्न हुआ

(उद्भूत—जन्म) ।

उद्भूत सं—जीविका, वृत्ति, पेशा ।

उद्भूत वि—पेशेवर (इति—), उद्भूत

(अ) सं—जीविका, वृत्ति ।

उद्भूत (उपधानो), उद्भूतानो, उद्भूतान

(ओपडानो), उपडानो (क्रि परि १८)

—उखाड़ना ।

उपलक्षण सं—उपहार, भेंट । [भूमि ।

उपलका सं—तराई ; दो पर्वतोंके बीचकी नीची

उपलक्षण सं—दंशन, डसना, कुतरना ; गरमी की बीमारी, आतशक ।

उपलक्षण सं—भृत प्रेत आदि ।

उपलक्ष (-अ) वि—जहाँ उपद्रव हुआ है, उपद्रव-ग्रस्त (-अक्ष) ।

उपलक्ष सं—प्रायद्वीप Peninsula

उपलक्षण सं—यज्ञोपवीत-संस्कार । उपलक्ष (-अ) वि—पहुँचा हुआ ; उपनयन-संस्कार से संस्कृत ।

उपलक्ष (-अ) सं—चशमा, ऐनक ।

उपलक्ष (-अ) वि—प्रदत्त ; रखा या जमा किया हुआ, कथित, उक्त, प्रयुक्त ।

उपलक्ष सं—जार, अवैध प्रणयी ।

उपलक्ष सं—मीमांसा, सिद्धान्त ।

उपलक्ष सं—रखेली ।

उपलक्ष (-अ) वि—सिद्ध ; सम्पन्न ।

उपलक्ष सं—लघु पाप, छोटा अपराध ।

उपलक्षण सं—सम्पादन, मीमांसा ।

उपलक्ष (-अ) वि, सं—सम्पाद्य, सम्पादन करने योग्य (विषय) ।

उपलक्ष (-वाश) सं—फाका, उपवास ।

उपलक्ष (-विष्ट-अ) वि—बैठा हुआ ।

उपलक्ष (-धीत) सं—यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

उपलक्ष वि—यज्ञसूत्र धारण किया हुआ ।

उपलक्ष (-अ) वि—भक्षित, खाया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ, भोग किया हुआ ।

उपलक्ष सं, वि—खानेवाला, भोग करने वाला consumer.

उपलक्ष वि—तुल्य, समान (देवांग) ।

उपलक्ष सं—तुलना, सादृश्य । उपलक्षण सं—

जिससे तुलना की जाती है (चन्द्रवदन, चन्द्र सा वदन), (दर्शनमें) एक प्रमाण (श्रवण शक्ति मन्त्र एक छन्द) ।

उपलक्ष सं—घाय, दूध पिलानेवाली दाई ।

उपलक्ष सं—तुलना, उपमा, सादृश्यसे होनेवाला ज्ञान । उपलक्ष (-अ) वि—उपमा देने योग्य । सं—उपमाकी वस्तु ।

उपलक्ष (उपजाचक्) वि—प्रार्थी, मांगनेवाला ।

उपलक्ष (उपजुक्त-अ) वि—योग्य, उचित ; समर्थ । [लाभकारिता ।

उपलक्ष (उपजोगिता) सं—योग्यता,

उपलक्ष (उपजोगी) वि—आवश्यक, प्रयोजनीय, लाभदायक, फायदेमंद ; अनुकूल, सुआफिक, योग्य ।

उपलक्ष, उपलक्ष सं—ऊपर । क्रि वि—अतिरिक्त (फेरे अथवा तार-बूटि !) । उपलक्ष क्रि वि—ऊपर, ऊपरकी मजिलमें ('उपलक्ष' का संक्षिप्त रूप है) । [अफसर, ईश्वर ।

उपलक्ष आना, (-उपलक्ष) वि, सं—ऊपरवाला,

उपलक्ष (-अ) वि—कामसे विरत या निवृत्त ; गत ; मृत, विरक्त ।

उपलक्ष सं—ऊपरकी मंजिल ।

उपलक्ष सं—विरति, निवृत्ति, त्याग, समय, वैराग्य, उदासीनता, मृत्यु ।

उपलक्ष क्रि वि—उसके बाद, उसके अतिरिक्त ।

उपलक्ष वि—बल पूर्वक दखल देनेवाला ; स्वेच्छासे दूसरेके काममें हाथ डालनेवाला ।

उपलक्ष सं—ऊपरी सतह । [मृत्यु ।

उपलक्ष, उपलक्ष सं—विराम, विरति, वैराग्य ;

उपलक्ष क्रि वि—ऊपर । वि—अतिरिक्त (-गाना, -गाता), वेतनसे अतिरिक्त (भेंट, घूस) ।

—उपलक्ष क्रि वि—उपलक्ष एकके ऊपर दूसरा, लगातार । —उपलक्ष वि—ऊपरका, उच्च पदस्थ, अफसर । —उपलक्ष सं—अधिक लाभ

या आमदनी । —उग स—ऊपरका हिस्सा ; पीठ ।

उपशब्द स—अनुरोध, प्रार्थना, सिफारिश ।
उपशब्द (-अ) वि—अनुरोध किया हुआ, प्रार्थित ।

उपशब्द (उपशब्द परि) क्रि वि=उपशब्द उपशब्द ।
उपशब्द स—पत्थर, ओला, रत्न ।

उपशब्द (उपलब्ध-अ) स—प्रयोजन, आसरा ; वहाना । उपशब्द (-अ) वि—प्रदर्शित, लक्षित ।

उपशब्द (उपलब्धे) क्रि वि—अवसर पर ।
उपशब्द क्रि वि—उस अवसर पर ।

उपशब्द (उपलब्ध-अ) स—उद्देश्य लक्ष्य ।

उपशब्द (-अ) वि—प्राप्त ; ज्ञात ।

उपशब्द स—ज्ञान, अनुभव, बोध ।

उपशब्द स—शान्ति, कमी, हास ।

उपशब्द (-अ) स—अपशकुन, उत्पात ; रोग-लक्षण ; शब्दके शुरूमें लगनेवाला अव्यय (अ, अन्, अन्, नि) ।

उपशब्द स—समुद्रकी खाड़ी, छोटा समुद्र ।

उपशब्द (-अ) स—पुरुषांग, लि ग ।

उपशब्द, उपशब्द स—प्रस्तावक, प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला ; निवेदक ।

उपशब्द वि—हाजिर, आया हुआ, निकटका सामनेवाला । —बला स—तैयार न हो

कर भी जो व्याख्यान दे सकता है, हाजिर-जवाब । —बुद्धि स—अज्ञान नति विपत्तिके

समय तुरत विचार पूर्वक कर्तव्य करनेकी बुद्धि । —बुद्धि वि—अज्ञान नति विपत्तिके

समय कर्तव्यका निश्चय कर सकनेवाला ।

उपशब्द स—हाजिरी ।

उपशब्द (उपशब्द-अ) स—सम्पत्तिकी आय ।

उपशब्द (उपशब्द-अ) वि—जिसकी

दिल्ली उड़ायी गयी है । उपशब्द स—

ठट्टा, दिल्ली । उपशब्द (-अ) वि—उपहासके योग्य, हंसीका ।

उपशब्द (-अ) वि—सन्निहित, निकटका ; रक्षित सयुक्त, मिश्रित । [दिया हुआ ।

उपशब्द (-अ) वि—उपहार रूपसे प्रदत्त, भेंटमें

उपशब्द (-अ) स—अंगका भाग, अवयव ; छोटा अंश या विभाग ।

उपशब्द (-अ) वि—गृहीत, प्राप्त स्वीकृत ।

उपशब्द स—मूल तत्त्व, मूल कारण (बड़े-गाँव) ; ग्रहण, स्वीकार । [स्वादिष्ट ।

उपशब्द (-अ) वि—ग्रहण-योग्य ; मनोहर ;

उपशब्द स—तकिया ।

उपशब्द स—छूटा जूता, पादुका ।

उपशब्द (-अ) स—उपशब्द निकट, समीप ; किनारा, प्रान्त ।

उपशब्द स—उपाय, तरकीब, युक्ति, साधन, प्रतिकार, उपाजन, आमदनी, आय (कठ टोका—कर ?) । —क्रम वि—जीविका कमानेमें समर्थ ।

उपशब्द स—भेंट, उपहार ।

उपशब्द स—दूसरा उपाय ।

उपशब्द वि, स—कमानेवाला ।

उपशब्द स वि=उपशब्द स ।

उपशब्द वाक्य क्रि—भाप हो कर उड़ जाना ।

उपशब्द, उपशब्द वि—औंधा, पट, उलटा । —इष्ट (-अ) वि—दाता, उदार, सखी ।

उपशब्द शब्द क्रि—घुटने उठा कर केवल पैरों पर बैठना ।

उपशब्द (उपेक्षा) स—उपेक्षा, अनादर, अवहेलना ; अस्वीकार । उपशब्द (-अ) वि—उपेक्षित, अस्वीकृत ।

उपशब्द (उपोश) स—उपवास । उपशब्द वि—उपवासी, भूखा ।

उपशब्द (-अ) वि—जो बोया गया है ।

उत्तरान (उत्तरानो), उत्तरानो (क्रि परि १८)
—शेष बचना ।

उत्तर, उत्तरा (क्रि परि ६)—हवाकी तरह उठ जाना (कर्तव्य उत्तरा गिराए) ।

उत्तर, उत्तरा वि—घुटने उठाकर केवल पैरोंके ऊपर बैठा हुआ (—उत्तर वसा) ।

उत्तर, उत्तरा वि—औंधा, उलटा ।

उत्तर (-अ), उत्तर सर्व—दोनों । उत्तर वि—जल और स्थल दोनोंमें चल सकनेवाला (मेंढक कछुआ आदि) । उत्तर (-अ) क्रि वि—दोनों स्थानोंमें ; दोनों विषयोंमें । उत्तर क्रि वि—दोनों प्रकारसे । उत्तर गुरु स—दोनों तरफ विपत्ति ।

उत्तरा क्रि वि—ऊंचे स्वरसे (कान—) ।

उत्तरा स—उत्तर ।

उत्तरा वि, स—उम्मेदेवार ; कार्यप्रार्थी ।
उत्तरा, (-त्री) स—उम्मेदेवारी ,
खुशामद ।

उत्तरा स—साँप ।

उत्तरा (-अ) स—स्तन, छाती ।

उत्तरा स—कवच, सीनाबंद Breast-plate

उत्तर, उत्तरा स—ऊर, जाँघ ।

उत्तरा स—गाऊना मकड़ी । [जाला ।

उत्तरा, उत्तरा स—पशम, लोम, ऊन ; मकड़ीका
उत्तरा स—चर्दी ।

उत्तरा स—उट्ट ।

उत्तरा वि—उपजाऊ । —शक्ति (-अ) वि—
उपजाऊ दिमागवाला, कल्पना-प्रवण ।

—शक्ति स—उपजाऊ दिमाग । स्त्री—उत्तरा ।

उत्तरा स—पृथ्वी, धरती, भूमि ।

उत्तरा स—ऊन, पशम । [स्त्री—उत्तरा ।

उत्तरा (-अ) वि—ऊन, नंगा, खुला, उघाड़ा ।

उत्तरा-गान्ठा, उत्तरा-गान्ठा वि, स—एक बार
उलटा एक बार सीधा, उलट-पुलट ।

उत्तरा, उत्तरा (उलटो) वि—उलटा, औंधा,
विपरीत (—अथ, —दिक) । —गान्ठा वि—
उत्तरा-गान्ठा उलट-पुलट ; गान्ठा-गान्ठा उलट-पुलट
(गान्ठा कथा-गान्ठा जवई—) ।

उत्तरा (उलटानो), उत्तरा, उत्तरा
(ओलटानो) उत्तरा (क्रि परि १८)—औंधा
करना या होना (गान्ठा-गान्ठा उत्तरा-गान्ठा के ?
उत्तरा-गान्ठा गान्ठा-गान्ठा) ; उलटाना (गान्ठा-गान्ठा—
गान्ठा-गान्ठा) ।

उत्तरा स—उत्तरा शुभ कार्यमें स्त्रियोंके जिह्वा
हिलानेका शब्द ; घर छाने लायक एक घास ।

उत्तरा स—उत्तरा उलट । [घास ।

उत्तरा स—उत्तरा छाने योग्य एक लम्बी
उत्तरा स—मशाल ; तिनगारी, उलका, गिरता
हुआ सितारा ।

उत्तरा-गान्ठा स—गान्ठा लोमड़ी, ककशा नारी ।

उत्तरा स—शरीरमें सूई गड़ाकर रंगसे बनाया
हुआ चित्र, गुदना ।

उत्तरा, उत्तरा क्रि=उत्तरा, उत्तरा ।

उत्तरा स—कूद, फाँद, कूद कर लाँघना ।

उत्तरा (उल्लिखित अ) वि—प्रफुल्ल, प्रसन्न,
खुश । [किया हुआ ।

उत्तरा (-अ) वि—ऊपर कथित, उल्लेख
उत्तरा स—दुम रहित एक बन्दर, बेवकूफ,
भौंदा गाली । [रुक्ष, रुखा ।

उत्तरा-गान्ठा (-अ) वि—न सँचारा हुआ (वाल),
उत्तरा (-अ) स—उत्तरा कूट ।

उत्तरा (उष्ण-अ) वि—गरम, गुनगुना, चरपरा,
तीखा (मिर्चा), क्रोधी, चिड़चिड़ा ।

उत्तरा (उष्ण) स—गमी ; क्रोध ।

उत्तरा (उत्तरानो), उत्तरानो, उत्तरान
(ओत्तरानो), उत्तरानो (क्रि परि १८)—
उत्तराना, बत्ती बढ़ा कर दीयेकी रोशनी
तेज करना ।

उमथूज (उमथूज), उमथूज स—अधीरताका
भाव (—दृष्ट) । [—दृष्ट] ।

उमथूज (उमथूज) वि, स—वसूल; जमा (थाताव
उमथूज (उमथूज) वि—अस्तव्यस्त
(केव) ।

उमथूज सर्व—वह; वस्तु या छोटा जीव) । —दृष्ट
सर्व—उसे । —दृष्ट सर्व—उनलोगोंको ।
—दृष्ट, —दृष्ट सर्व—उन लोगोंका ।

उमथूज सर्व—उमथूज उसका ।

उमथूज सर्व—उमथूज वे (लोग) ।

उमथूज सर्व—(सम्मानित) उनको (एक वचनमें) ।

उमथूज सर्व—(सम्मानित) उनलोगोंको ।

उमथूज सर्व, उमथूज सर्व—उनलोगोंका ।

उमथूज सर्व—(सम्मानित) वे ।

उमथूज अन्य—कष्ट-सूचक शब्द ।

उमथूज अन्य—ना नहीं, अस्वीकार-सूचक शब्द ।

उमथूज (उमथूज-अ) वि—अनुक्त, जिसका उल्लेख
नहीं किया गया है understood

उ

उन (—अ) वि—न्यून, एक कम ।

उनकशक्ति (—अ) वि—उनतालीसवाँ ।

उनकशक्ति स, वि—उनकशक्ति उनतालीस, ३६ ।

उनकशक्ति (—अ) वि—उनतीसवाँ ।

उनकशक्ति स, वि—उनकशक्ति उनतीस, २६ ।

उनकशक्ति स, वि—उनकशक्ति नवासी, ५६ ।

—उन वि—नवासीवाँ ।

उनकशक्ति स, वि—उनचास, ४६ ।

उनकशक्ति स वि—उनचासवाँ ।

उनकशक्ति स, वि—उनकशक्ति उनीस, १६ । —उन

वि—उनीसवाँ । [वि—उनसठवाँ ।

उनकशक्ति स, वि—उनकशक्ति उनसठ, ५६ । —उन

उनकशक्ति स, वि—उनकशक्ति उनहत्तर, ६६ ।

—उन वि—उनहत्तरवाँ । [फोटा ।

उमथूज स—जांव । —उमथूज (—अ) स—जांवमें

उमथूज=उमथूज । उमथूज=उमथूज ।

उमथूज, उमथूज कि वि—ऊपर (—गानी, —दृष्ट,

भाउदर—) । —उन वि—उमथूज ऊपरका,

उमथूज पदका ; पहलेका (—शुद्ध) । —शान

स—जल्दी जाने या अधिक परिश्रम करने

से लम्बी सांस (—शान लोउठे न) ।

उमथूज वि=उमथूज । उमथूज वि—ऊपर ।

उमथूज स—ऊठे लहर, तरंग ; गति, दुख ।

उमथूज (उमथूज-अ) वि=उमथूज ।

ध

धन (—अ) स—धन, सम्पत्ति ; स्वर्ण ।

धन (धन-अ) स—मालू । —धन स—

सप्तर्षिमाण्डल (नक्षत्र) ।

धन (धन-अ) स—धनवेद । धनवि—

धनवेद । स—धनवेदीय ब्राह्मण ।

धन वि—सीधा ; निष्कपट ; सहज ।

धन स—धन, कर्ज ; उधार ; देना । धन

वि—धनी, देनदार, कर्जदार ; एहसानमंद,

कृतज्ञ ।

धन (—अ) स—सत्य । वि—नित्य ।

धन स—साँढ़ । वि—धेष्ट ।

ए

ए सर्व—यह आदमी (ए के ए ?) ; यह

(चीज, काम या जीव) (ए कि ?) । ए—

यह भी । स्त्री—सधवा ।

एई सब—यह, सामनेवाला (—राव, —गच्छि,

—वत्त) ; निष्ठुर व्यक्ति को बुलानेका शब्द

(अहे, छन वा), अभी (—दिष्टि), भय
या आश्चर्य सूचक शब्द (अहे रे ! गलूग,
अहे ये ऐसे गड़बड़ !) ।

एक (ऐक्) वि, सं—एक, १ ; कोई (—दिन
वा), पूरा, भरा (—पेट, —छाना गम) ।
एकक वि—अकेला, सिफ । सं—इकाई ।

एककालीन वि—एक बारका ; एकसाथ, एक-
मुश्त ।

एकथाना, (—थानि) वि—एक (खण्ड)
(केवल वस्तुके लिए ही इन शब्दोंका प्रयोग
होता है जैसे—एकथानि बड़े, एकथाना थाना ;
थानि सुन्दरता या प्रियता प्रकट करता है) ।

एकशान वि—मुँह-भर । स—ग्रास, कवर
(—थाँ, —शानि, ऊँची हँसी, ठहाका) ।

एकशंखे वि—जिद्दी, हठी ।

एकश्वरे वि—अपनी समाजसे बहिष्कृत, जाति-
व्युत् । [monotonous

एकश्वरे वि—लगातार एकरस होनेसे अलचिकर
एकश्वरिण वि, सं—एकतालीस, ४१ ।

एकशाना स—एक ही छप्परका घर ।

एकछेतिश, (—छेते) वि—सिफ एक ही
आदमीके अधीन (—व्यवसा, monopoly)

एकछाया वि—पक्षपाती, तरफदार ; एक
आँखवाला ।

एकछाटे वि—खूब (—शात्र, —शालाशालि) ।

एकछूटे क्रि वि—एक दौड़में ; सिर्फ एक कपड़ा
पहन कर ।

एकजन सं—कोई एक व्यक्ति (—लोक तथा
कत्रिण ६१३, त्रिनि—विद्वान लोक) ।

एकखाई क्रि वि—बार बार ।

एकछाटे वि—एकमत, एकराय, एकसाथ ।

एकश्वरे वि—अविराम ज्वर ; लगातार ज्वर
भोग करने वाला ।

एकटा (ऐक्टा) वि—(तुच्छार्थ में) एक

(—छाँडा, एक लौंडा, —घाँटे, एक लोटा,
—ठाँका) ; कोई (—काज आछे, वा इव
—किछु कर) । [निरन्तर, लगातार ।

एकठाना वि—सीधा । क्रि वि—अविराम,
एकठि (—ठाँ) वि—(प्रियार्थमें) एक (—खन्ना
वाँटे ; —कविता) । [एवजमें काम ।

एकठिन वि—एवजी acting. एकठिनि सं—
एकट्टे वि—थोड़ा, जरासा (—ठिनि ; —थाँ ;
—आपका कर) ।

एकट्टेक, एकट्टेक वि—जरा सा ।

एकतम वि—अनेकोंमें एक ।

एकतम वि—दोमें एक ।

एकतम (ऐक्तरो) वि—एक तरहका, एक
निराले ढग का (—लोक) ।

एकतमका (ऐक्तरफा) वि—एकतरफा ।

एकता (एकता) सं—एका, ऐक्य, मेल ।

एकतान (एकतान) वि—एक-स्वर, एक-छर,
एकाग्र । [एकतुम्बी ।

एकतारा (ऐक्तारा) स—एक तार वाला बाजा,
एकताना (ऐक्ताला) वि—एक-मजिला
(—बाँड़ी) ;—सगीतका एक ताल जिसमें
बारह मात्रायेँ होती हैं । [मिलित ।

एकद (एकद-अ) वि—एक स्थानमें समवेत,
एकद्विश (एकद्विश-अ) सं, वि—एकतीस,
३१ । वि—एकतीसवाँ ।

एकद्विश (एकद्विश) सं, वि—एकतीस, ३१ ।
एकद्विश स—सौर मासकी एकतीसवाँ
सारीख (को) ।

एकद (एकद-अ) सं—अभिन्नता, एकत्व ।

एकदम (ऐक्दम्) क्रि वि—एकदम, बिलकुल
(—लोक, —शात्र ना) । [जमानेमें ।

एकदा (एकदा) क्रि वि—किसी समय, किसी
एकदृष्टि (ऐक्दृष्टि) वि—एक तरफ दृष्टि वाला ।

एकदृष्टे (ऐक्दृष्टे) क्रि वि—इकटक ।

एकलक्ष (एकलक्ष) स — एक अंग, एक स्थान ।

— ई वि—सिर्फ एक ही तरफ देखने वाला, पक्षपाती, तरफदार ।

एकलक्षाल (एकलक्षाल) क्रि वि—लगातार ।

एकलक्ष (एकलक्ष) स, वि—एकावन, ४१ ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—दूसरा विवाह न करने वाला । —उठ (-अ) सं—दूसरा विवाह न करनेका व्रत धारण करने वाला ।

एकलक्ष (एकलक्ष) स — ओढ़नेकी चादर ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—जोड़में का एक (—छूट) । [हटा हुआ ; झुका हुआ ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—एक बगल हटाया या

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—एक वस्त्रमें ।

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—एक वाक्यमें एक स्वरसे, सर्वसम्मतिसे ।

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—एक बारमें ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—एकमत एकराय ।

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—एकाग्र हो कर, एक चित्तसे ।

एकलक्ष (एकलक्ष-अ) क्रि वि—सिर्फ एक ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—एक बार मिट्टीका लेप दिया हुआ (मूर्ति आदि), अथवा, असम्पूर्ण ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—एकत्रित, मिलित ।

एकलक्ष (एकलक्ष) सं—एक रत्तीका परिमाण । वि—थोड़ा, जरा सा । [छोटी (—लक्ष) ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—बहुत छोटा, नन्हा, एकलक्ष (एकलक्ष) स इकार, स्वीकार ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—हठी, जिद्दी, क्रोधी ; एकलक्ष ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—अकेला ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—मिलित, मिश्रित, मिलाजुला ; एकलक्ष, समान ।

एकलक्ष (एकलक्ष) सं—एकलक्ष रोग, एक कोप बढ़ जानेकी बीमारी ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—अत्यन्त (अलक्षानन्द-) ।

एकलक्ष (एकलक्ष) सं, वि—एकलक्ष, ६१ ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—घुटने तक (—अ, —दान) । [(—अलक्षानन्द) ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—एकलक्ष आदेशाय

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—इकहरा ; एकलक्ष पतला (—लक्ष) ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—एकलक्ष अकेला, सिर्फ ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—समान, एकलक्ष मिश्रित, मिलाजुला (—लक्षानन्द-) ।

एकलक्ष (एकलक्ष) वि—अकेला । क्रि वि—

एकलक्षमें (—लक्षानन्द कि लक्षानन्द ?) । स्त्री—एकलक्ष ।

एकलक्ष (एकलक्ष) सं, वि—एकलक्ष, ७१ ।

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—पहलेसे, शुरूसे ; लगातार (—लक्षानन्द इतिहास) ।

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—एक आधारमें ; एक वस्तु या व्यक्तिमें ।

एकलक्ष (एकलक्ष) स वि—एकलक्ष, ६१ ।

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—प्रयार्थमें, सबकुछ ही (—लक्षानन्द) ।

एकलक्ष (एकलक्ष-अ) वि, सं—इकलक्ष, ४१, एक ही साथ बहुतोंकी रसोई । —लक्षानन्द

सं—जिस परिवारमें बहुतसे कुटुम्बियोंकी रसोई एकसाथ होती है ।

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—इस कारण, इस लिए, अतः ।

एकलक्ष (एकलक्ष) स, वि—इकलक्ष, ८१ ।

एकलक्ष—यह क्या है ? यह क्या ?

एकलक्ष (एकलक्ष) क्रि वि—एकलक्ष, लक्ष कुल ।

एकलक्ष (एकलक्ष) सं, वि—इकलक्ष, २१ ।

एकलक्ष (एकलक्ष) स—सौर मासकी इकलक्ष तारीख (को) । [एकलक्ष, यह कौन है ?

एकलक्ष (एकलक्ष) सर्व—इसे, इसको (—लक्षानन्द) ;

एक (एके) क्रि वि—एक तो (—एक तार मिले !), एकको (—जाय यात्र भाय) ।

एक एक (एके एके) क्रि वि—एक एक करके ।
एकवार (एकेवारे) क्रि वि—एकदम, विलकुल (—अकर्मण्य ; —निर्विघ्न गेल), पूर्ण रूपसे (—दान करिनाम) ।

एको (एको) वि—ऊखका (—२७) ।

एका (एका) सं—इका (—गाड़ी) ।

एकवार (एकेवारे) क्रि वि—एकवार एकदम, विलकुल । [वि—अब, इस समय ।

एकण (एकखन) सं—यह क्षण । एकण क्रि
एकूनि (एकखुनि) क्रि वि—एकनई अभी, इसी समय । [अधिकार ।

एकतिवार (एकतियार) सं—इकतियार,
एकन (ऐखन) क्रि वि—अब, इस समय ।

एकनई, एकनि, एकूनि क्रि वि—अभी, इसी समय । एकन७, एकनो (ऐखनो) क्रि वि—

अब भी, इस समय भी, अब तक भी (—ठात्र
छोथे देखि नि ; —आगले देखा इंत), इस
हालतमें भी (एकनो जागिशा ठाँवरे गले एकनो
मोठागा उदर श्वे) । —कात्र वि—इस समय
का (—छेलेश प्राय नास्तिक) । —कात्र गत
(-अ) क्रि वि—इस समयके लिए (—बा७) ;
इस समयके योग्य या उपयोगी (—इहे जामा
दिवाइ छला७) ।

एकान (एखान) सं—यहाँ, यह स्थान, यह
दुनिया । —कात्र वि—यहाँका, इस स्थान
का, इस दुनियाका । एकाने क्रि वि—
यहाँ, इस स्थानमें । एकानेव वि=एकानकात्र ।

एकजामिन (एगजामिन) सं—परीक्षा, इम्तहान ।
एकजिकिउटार (एगजिक्युटार) सं—नावालिग
की सम्पत्तिका प्रबन्धकर्ता ।

एकन (-नो), एकनो, एगानो, एहनो (क्रि
परि १०)—अग्रसर होना, आगे बढ़ना (एक भा

—इहे भा शिखनो) । एगिले देवडा (एगिले
दैवा) क्रि—आगे बढ़ा देना, उन्नतिमें
सहायता देना ; कुछ दूर साथ जाना ; साथ
साथ जा कर पहुँचा देना ।

एगात्र (-अ) सं, वि—इग्यारह, ११ । —हे
सं—सौर मासकी इग्यारहवीं तारीख (को) ।

एहल (एगुते) क्रि वि—पहले, आगे बढ़नेमें ।

एहना सर्व—ये सब (तुच्छार्थ में) ।

एंछ सं=हँछ ।

एंछ न७क्रा क्रि=चाँच । [कारण ।

एखण (एजन्य-अ) क्रि वि—इस लिए, इस
एकमानि (एज्मालि) वि—इज्माली, अनेकों
के भोग-योग्य (—गम्पडि) ।

एखाइ सं—इजहार ; गवाही ।

एखके सं—एजंट, प्रतिनिधि agent

एखको (एजेन्सी) सं—एजंटका काम या
दफ्तर ।

एखिन (एखिन) सं—अंजन Engine

एठो, एठि सर्व—यह विषय वस्तु या व्यक्ति
(तुच्छार्थमें एठो और प्रियार्थमें एठि) ।

एठेन, एठेन (-अ) वि=बाठान ।

एंठो सं=डेछिष्टे ।

एठान (-नो), एठानो (क्रि परि १०)—
बचा जाना, दूर रहना ।

एठिठाना छूटा सं—स्त्रियोंका एड़ी ऊँचा
किया हुआ जूता ।

एंठे वि—मर्दाना (—बाछूर) ; साँड़की
आवाज-सा (—गला) ; बच्चोंका अजीब रोग ।

एठो वि—एक ओर झुका हुआ ; चौड़ाईकी
ओर ।

एठ (ऐत-अ) वि—इतना (—कागड़, —कल,
—लाक, —छाई ना) । एठो वि—इतना

(परिमाण) (—इध, —छिनि) । एठेक वि—
इतना-सा (अल्पार्थमें) (—उठन ।

एतन्मर्थे किं वि—इस लिए, इसके उद्देश्यसे ।

एतद्ग (-अ) वि—इस प्रकारका ऐसा ।

एतद्ग वि—इतना, यह सब ।

एतद्ग सर्व—इतना, यह सब ।

एतद्ग सर्व—इतना, यह शब्द या वाक्य ।

एतद्ग स—इतना, इतना, खतर ।

एतद्ग स—यह दिशा ; यह पक्ष । एतद्ग कि

वि—इधर, इस ओर ।

एतद्ग सर्व—इतना, इन लोगोंका या को ।

एतद्ग (ऐति) स—इतने दिन ।

एतद्ग वि—एतद्ग बहुत अधिक । [वस्त्र ।

एतद्ग स—आवाक्य वस्त्रादयः सामनेका

एतद्ग स—अप्रैल April [किया हुआ ।

एतद्ग-एतद्ग वि—इससे उधर तक छिद्र

एतद्ग अन्य—६ और (साधारणतया दो गण्डोंके

बीचमें ८ और दो वाक्यों या वाक्यांशोंके

बीचमें एतद्ग इस्तमाल होता है) ।

एतद्ग (एतद्ग) (एतद्ग खेद) वि—खुरदरा,

ऊँचानीचा ।

एतद्ग (एतद्ग) किं वि—अवकी वार ; अव ।

एतद्ग स—लेख, इवारत, मुहावरा ।

एतद्ग (एतद्ग) (पद्यमें) किं वि—अव, इस समय ।

एतद्ग वि—एतद्ग ऐसा ।

एतद्ग (ऐतद्ग) वि—ऐसा, इस प्रकारका ।

एतद्ग, एतद्ग (एतद्ग) किं वि—ठीक इसी

प्रकार । एतद्ग (-अ) वि—ऐसा, इसी

प्रकारका ।

एतद्ग (एतद्ग) किं वि—अव तक ।

एतद्ग स—सधवा, सौभाग्यवती । एतद्ग वि

स—सधवाका लक्षण या चिह्न । एतद्ग

स—सधवा ।

एतद्ग (-अ) स—एतद्ग रेड़ी ।

एतद्ग सर्व—इतना ये लोग ।

एतद्ग स—आज्ञा अराष्ट्र ।

एतद्ग सर्व—इतना, इतने ही (में) (-न) ।

एतद्ग वि—एतद्ग ऐसा । एतद्ग किं वि—ऐसे ।

एतद्ग स—इतना, इतना इसको ।

एतद्ग स—हवाई जहाज ।

एतद्ग स—इलाका, जंगल, अधिकार ; सीमा,

सम्बन्ध, लाग ।

एतद्ग, एतद्ग, एतद्ग स—इलाही (छोट—

बड़—) । —ताना स—चीनीका इलाही

ताना ।

एतद्ग (-नो), एतद्ग (किं परि १०) —आवृ-

त्तित कदा स्त्रियोंका केश खोल कर बिखेर

देना ; लेटना या अधिक क्लान्तिसे गरीर

ढीला पड़ जाना (एतद्ग) । वि—

आवृत्ति, एतद्ग (केश) खुला, बिखेरा हुआ,

फैला हुआ ।

एतद्ग, एतद्ग (एतद्ग) वि—इलाही, महान,

विशाल (—काष्ठस्थान, बड़ी सभा या बड़े

ज्योनार आदिका प्रबन्ध देख कर ऐसा

कहा जाता है) ।

एतद्ग स—आवृत्ति ।

एतद्ग स—इलम, विद्या ज्ञान । कि—आज्ञा

(में) आया (या आयी) या (हम) आये

(या आयी) ।

एतद्ग वि—एतद्ग, आवृत्ति (केश) खुला,

मुक्त (—बूझ, —दोष) ; असम्बद्ध (—कथा) ;

अनियत, विश्रुतल (—शब्द) । कि—

आज्ञा (वह) आया (या आयी) या (वे)

आये (या आयी) । —आज्ञा किं वि—जहाँ

तहाँ (—आज्ञा वाणी) । —एतद्ग वि—

असम्बद्ध, विश्रुतल ; खुला ।

एतद्ग (एतद्ग) कि—आज्ञा आया ।

एतद्ग एतद्ग (एतद्ग ओतद्ग) किं वि—

इस पार या उस पार, मरुगा या मारुगा ।

स—सफलता या विफलता ; अन्तिम निर्णय ।

एजिप्टिन सं = एजिप्टिन ।

एजिड सं = एजिड ।

एजिड सं = इज्जतहार, विज्ञापन ।

एजिडु कि वि—इस हेतु, इस कारण ।

एजिन (-अ) वि—इन, एकरा ऐसा ।

ऐ

ऐ (अइ) सर्व—वह, सामनेवाला (—तथ) ।

वि—पहले कथित, उपरोक्त, पूर्व-लिखित ।

ऐकतान (अइकतान्) सं—एकतानमें बजने-वाले बाजोंकी ध्वनि ।

ऐकवाक्य (आइकवाक्य-अ) सं—एकवाक्यता, ऐकमत्य, एकराय ।

ऐकनता (अइकमत्य-अ) सं—मतकी एकता ।

ऐकाग्र (अइकाग्र-अ) सं—एकाग्रता ।

ऐकाग्रिक (अइकान्तिक) वि—अत्यन्त, दृढ़ ।

ऐकाग्रिक (अइ-) वि—प्रतिदिनका, रोजाना ।

ऐक्य (अइक्य-अ) सं—एका, एकता, मेल ।

ऐच्छिक (अइ-) वि—स्वेच्छासे गृहीत, वैकल्पिक optional

ऐहन (अइहन) वि—वैसा, उस प्रकारका ।

ऐतिह्य (अइतिह्य-अ) सं—किस्बन्धो प्रवाद, कहावत । [जादूगर सम्बन्धी ।

ऐल्लामिक (अइ-) सं—जादूगर । वि—

ऐरावत (अइरावत्) स—इन्द्रका हाथी ।

ऐश (अइश -अ) वि—ईश्वरीय, ईश्वरका । स्त्री—ऐश्वी ।

ऐश्वरिक (अइश्वरिक) वि—ईश्वर-सम्बन्धी ।

ऐश्वर्य (अइश्वर्य-अ) स—विभव, सम्पत्ति, दौलत, योग-साधनासे प्राप्त (कल्पित आठ अलौकिक शक्तियाँ—अणिमा, लघिमा, व्याप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व, कामाव-

सायिता) । —वान, —शानो, —मज्ज (-अ), ऐश्वर्याश्रित (-अ) वि—दौलतमन्द । ऐशिक (अइहिक) वि—इस लोकका, इस दुनियाका ।

७

७ सर्व—वह (आदमी) । अव्य —एक और (वाम ७ शाय) ; भी (वाम ७ शशेव, इस अर्थमें शब्दके साथ मिला कर ७ लिखा जाता है) ; स्मरण या विस्मय सूचक अव्यय (७ । एवात्र मने गण्डे ; ७ कि आश्चर्य !) ।

७याड़, ७वाड़ स—गिलाफ, तकियेकी खोली ।

७ई सर्व—वह, सामनेवाला । अव्य—खेद या भय सूचक शब्द (—वा ! —व्र !) ।

७ः अव्य—ओह, उफ । [स—ओं—ध्वनि ।

७ सं—ओंकार, प्रणव । ७कात्र, ७कात्र, ७कात्र

७कानतनामा सं—वकालतनामा ।

७कानति सं—वकालत । ७कानतौ, वि—वकालत-सम्बन्धी ।

७क सव—उसे, उसको ।

७क सर्व—उनको (आदरार्थक एकवचन) ।

७कूठ (ओक्त) स—वक्त, समय (गौठ—नगाड़) ।

७कडान, ७कडाना क्रि=उत्थान ।

७कान स—वह स्थान । —कात्र वि—वहाँका, उस स्थानका (—नव नदन ७ ?) । ७काने क्रि वि—७काने उस जगह, वहाँ (जे दिन तात्र—गिवाहिनाम) ।

७गत्रा (ओग्रा) स—एकसाथ सिभाया हुआ चावल और दाल (रोगीका पथ्य) ।

७गत्रान, ७गत्राना क्रि=उगत्रान ।

७ग्रा अव्य—प्रिय जन या नीचे दर्जेके व्यक्तिके लिए सम्बोधन ।

७गान, ७गाना क्रि=उगान ।

७श, ७श वि—तुच्छ ; गन्दा, घृणा-योग्य ।

७३ स—उत्र शक्ति, बल, प्रकाश ।
 ७३न स—तौल, वजन, गुणत्व ; परिमाण ।
 ७३र स—उत्र, वहाना, आपत्ति ।
 ७३शत स=दशशत ।
 ७३दान, ७३दानो क्रि=उठेदान ।
 ७३ा क्रि=उठा । ७३ान क्रि=उठान ।
 ७३ना (ओड़ना) स—ओड़ना ।
 ७३ा क्रि=उड़ा । ७३ान, ७३ानो क्रि=उड़ान ।
 ७३िवा स=उड़िवा ।
 ७३, ७३ स—घात (—गात, घातमें बैठना) ।
 ७३थोत (-अ) वि—व्याप्त ।
 ७३दान, ७३दानो क्रि=उठदान ।
 ७३नान, ७३नानो क्रि=उठनान ।
 ७३न स—मात, अन्न ।
 ७३निक स—वह दिशा, उधरका पक्ष (—जोउ
 पक्ष) । ७३निक क्रि वि—उधर ।
 ७३नर, ७३नर=उठानर, उठानिधर ।
 ७३नान, ७३नानो क्रि=उठनान ।
 ७३र स=उठर । —रना वि—ऊपरवाला,
 ईश्वर । ७३र क्रि वि=उठर ।
 ७३ स=उ । [अमीर ।
 ७३रा, ७३राह (ओम्राह) स—उमराह,
 ७३ा अव्य माताका सम्बोधन ; आश्चर्य सूचक
 शब्द (—दिवागो बरें गेन !) [उबकाई ।
 ७३र (वाक) स—कै करनेका शब्द ; ओकाई,
 ७३रि वि—वाकिर, अभिज्ञ, जानकार ।
 ७३रि वि—वाजिब, उचित मुनासिब ।
 ७३र स—शन ओहार, गिलाफ (बलिधर) ।
 ७३रा स—वादा, मियाद (कर्षणाधर) ।
 ७३रि (वारिष) स—वारिस । —मान स—
 —वारिस लोग ।
 ७३रि स—वारंट, पकड़नेका हुकुमनामा ।
 -७३रा, -७३ा स—वाला (बाड़ी७३रा,
 गान७३रा ! श्री—रनी—बाड़ी७३रा) ।

७३रि (वारिष) स—वसूल, अदा, जमा
 (शत घाट १०००—निमान) । [वारिष ना) ।
 ७३रा स—वास्ता, अपेक्षा (दागद—
 ७३रि क्रि वि—वास्त, लिख, निमित्त ।
 ७३ सर्व—उसका ।
 ७३ सर्व—उनका (आदरार्थक एकवचन) ।
 ७३र अव्य—उर्फ बनास ।
 ७३र अव्य—(तुच्छार्थमें सम्बोधन) अरे, अरे ।
 ७३ स—सूरन ।
 ७३रि स—गाँदगोभी, शलगम turnip
 ७३रि पागटे स=उठे पागटे ।
 ७३रि, ७३रि क्रि=उठे ।
 ७३रि स—हालंडका निवासी ।
 ७३ा स—चीनीका लड्डू । वि—वाला । क्रि—
 उतरना । —उठा स—दलना हैजा ; उतरना-
 चढ़ना । —वि वि स—हैजेकी देवी ।
 ७३ा अव्य—लीका सम्बोधन (—रुटे) ।
 ७३रि, (-रौ) स—घान केला आदि उठिद जो
 एक बार फल होने पर नर जाते हैं ।
 ७३र स—औषधि, दवा ।
 ७३र (-अ) स—रुंटे होंठ । ७३र (-अ)
 वि—होंठ तक आया हुआ (—आप) ।
 ७३रान, ७३रानो स=उठदान । [चौड़ाई ।
 ७३र (ओशार) स—अर, अश्विन अर्ज-
 ७३र स—वसीयत, अन्तिम इच्छा । —नामा
 स—इच्छापत्र । [दर्जी ।
 ७३र स—उस्ताद, प्रधान कारीगर, प्रधान
 ७३र स—उस्ताद, शिक्षक । वि—निपुण, दक्ष ।
 ७३रि, (-रौ) स—उस्तादी, करामात ।
 ७३र क्रि वि—उस पार । [अजी, अवे ।
 ७३र अव्य—(समान या नीचे दर्जेका सम्बोधन)
 ७३र अव्य—अहो, हाय !

उ

उच्छिन्न (अउचित्य-अ) सं—उपयुक्तता ।
 उच्छिन्न (अउजल्य-अ) सं—उज्ज्वलता, चमक ।
 उच्छिन्न (अउशुक्ल-अ) सं—उत्तुक्ता, आग्रह,
 कौतूहल ।
 उच्छिन्न (अउदरिक वि—पेट ; पेट-सम्बन्धी ।
 उच्छिन्न (अउदाज्य-अ) सं—उदारता ।
 उच्छिन्न (अउदाशिन्य अ) सं—उदासीनता,
 उपेक्षा, लापरवाही ।
 उच्छिन्न (अउद्धत्य-अ) सं—धृष्टता, ठिठाई ।
 उच्छिन्न (अउपनिवेशिक) वि—उपनिवेश-
 सम्बन्धी । सं—उपनिवेश-वासी ।
 उच्छिन्न (अउपन्यासिक) सं—उपन्यास-
 कार । वि—उपन्यास-सम्बन्धी ।
 उच्छिन्न (अउपाधिक) वि—उपाधि सम्बन्धी ;
 केवल नाम मात्रका ; कल्पित ; अनावश्यक ।
 उच्छिन्न (अउरश) वि—वैशेष्य अपने वीर्यसे
 उत्पन्न (—भूत) ।
 उच्छिन्न (-स-) (अउर्ध्वदृष्टिक) वि—
 मृत्युके बाद अनुष्ठित (—क्रिया, शवदाह श्राद्ध
 आदि) ।
 उच्छिन्न (अउषध) सं—औषधि, दवा । उच्छिन्न
 सं—दवाखाना । उच्छिन्न (-श-) सं—
 जड़ी-बूटी, दवा । उच्छिन्न (-अ) वि—
 औषधि-सम्बन्धी ।

क

क वि—कक्ष, कक्ष कितना, कितने (क दिन ?
 क ठेका ?) ।
 -क, -का प्र—निपेधार्थक शब्दमें जोर देनेके
 लिए प्रत्यय (नाश्क, लो नाका) ।
 कक्षे कि वि—कहाँ (—जिन ?) दिन पूरि

एल— ?) । —माह सं—एक काँटेदार काली
 मछली ।

कक्षे वि—कक्षि ।
 कक्षेना, कक्षेने सं—कक्षिना दक्षिणा, क्रि—
 (तुमने) कहा (कन कथा— ?) ।

कक्षेव सं—कैसर सम्राट ।
 कक्ष, कक्ष वि—कुछ, कई एक । [कक्ष ।
 कक्ष क्रि—कक्ष । कक्षान, कक्षानो क्रि—
 कक्ष सं—कक्ष । कक्षान सं—कक्षान ।

कक्ष सं—कांग्रेस, जातीय महासभा ।
 कक्ष सं—काँसा, कसकूट ; मधुराका राजा
 कस । —का सं—ठेरा । —विक सं—
 कसकूटका वर्तन बेचने वाला, कसेरा ।

कक्ष (-नो), कक्षानो (क्रि परि १०)—बच्चों
 का रोना ; कराहना (कैंडे कक्षि अक्षि
 कक्षे लूझा) ।

कक्ष (कक्ष-अ) सं—कमरा, कोठरी, काँख,
 बगल, ग्रह-नक्षत्रका भ्रमणमार्ग, कक्षौटा,
 लांग ; सूखी घास ; कमर । —भू सं—
 बगल ।

कक्षानो (कक्षानो) क्रि वि—कक्षने कभी ।
 कक्ष (कक्ष-अ) सं—ग्रह-नक्षत्रका भ्रमण-मार्ग ;
 पेटी, घेरा, परिधि ; दीवार ; स्पर्धा,
 प्रतियोगिता । —उ सं—दूसरा कमरा, खास
 कमरा ।

कक्ष सं—वर्णाना वर्णमाला, प्राथमिक ज्ञान
 (कृषि छिन्नविद्यार्थ कक्ष खान ना) ।

कक्ष क्रि वि—कक्ष, किस समय ; बहुत पहले
 (लो—लोभाय बनेछि) । कक्षने क्रि वि—
 कदापि, कभी । कक्ष (कक्षानो), कक्षानो,
 कक्षानो क्रि वि—कभी, किसी हालतमें ।
 कक्षान कक्षानो, कक्षानो कक्षानो क्रि वि—कभी
 कभी ।

कक्ष सं—कौकड़ ककड़ ।

कक्षान स—जरी, टांचा, शरीरकी हड्डियाँ ।
 —ताड़ वि—बहुत दुबला-पतला; ठरी
 मात्र ।
 कक्षक स—काटनेका शब्द (—कटका काणे);
 चवानेका शब्द, बड़बड़ाहट ।
 कक्षक स—भगड़ा, वाद-विवाद; चरचराहट ।
 कक्षक स = कक्षक ।
 कक्षान (कचलानो, कक्षान (क्रि परि १६)
 —नल नल कर घोना, जलमे रगड़ना ।
 कक्षि वि—पुच्छन कक्षा, नया (—गाटा);
 छोटा (—गिर) ।
 कक्ष स—अर्द्ध, अरवी । कक्ष, —गाटा स—
 कुछ भी नहीं (अवज्ञार्थमें) (छूमि बाँट—या
 —गाटा) ।
 कक्षि, कक्षी स—कचौड़ी । —गाटा स—
 जलके ऊपर तैरनेवाला एक नीले फूलका
 पौधा, जलकुम्भी ।
 कक्ष स—काश्मि कक्षुआ ।
 कक्ष स—गाँव; जुजली; चर्मरोग-जनक विष ।
 कक्ष स—अंजन, काजल; स्याही ।
 कक्षि (कक्षि) स—बाँसकी वहनी ।
 कक्ष (कक्षुक) स—साँपका छोड़ा हुआ सूखा
 चमड़ा, के चुली; कवच, चोली ।
 कक्ष स—कड़ी चीजके काटनेका शब्द (—कट
 काणे या कान्वालो); (छोटा होने पर कक्ष,
 बड़ा होने पर कक्ष और बार बार होने पर
 कक्षक या कक्षक) ।
 कक्ष स—सेना, राजधानी; पहिया; शिविर ।
 कक्ष स—वर्द्ध, दीस (दान—कक्ष) ।
 कक्षक स—तेज वर्द्ध, दृग्ग्राहक (निष्ठ) ।
 कक्षक स—कठोरता या क्रोधका लक्षण प्रकट
 करने वाला भाव (—कक्ष गच्छा या
 ठाकाना) ।
 कक्ष वि—भूरा; गोरा (अवज्ञार्थमें) ।

कक्ष (कक्ष-अ) स—तिरछी चितवन;
 व्यापण आक्षप ।
 कक्ष स—कड़ाई कड़ाही ।
 कक्षि (—कक्षि) स—दोमड कमर ।
 कक्ष वि—कक्षुआ; कठोर, कड़ा ।
 कक्ष स—कटु वचन, गाली, अप्रिय बात ।
 कक्ष, कक्ष स—बादलकी गरज, हड़डी
 चवानेका शब्द । कक्ष, कक्ष वि—
 सूखा; चवानेसे कड़कड़ आवाज करने
 वाला (—कक्षि) ।
 कक्ष (कक्ष) स = कक्ष ।
 कक्ष वि—कड़ा, हड़ (—कक्ष, —कक्ष);
 तीव्र, तीखा (—कक्ष, —कक्ष, —कक्ष);
 प्रवल, उग्र (—कक्ष, —कक्ष) । स—
 लगातार रगड़ते उत्पन्न हाथ या पैरके चमड़े
 में कड़ाई; घटा; कड़ाही; कौड़ी; जरा-सा
 (कक्ष—कक्ष नई); लोहे या पीतलकी
 दड़ी अगूनी जो कण्डाल या दरवाजेमें
 लगायी जाती है (कक्ष—कक्ष कक्ष) ।
 कक्ष स—कड़ाही, उर्दकी ढाल ।
 कक्षक स—मटर-सीमी ।
 कक्षक स—कठोर नियम; शासन ।
 कक्षक स—कौड़ी गण्डा आदि गिननेकी
 फिहरिस्त । [कौड़ी ।
 कक्षक स—बहुत छोटा अंश; दमड़ी
 कक्ष स—कक्ष ।
 कक्ष कक्ष क्रि वि—अन्तिम कौड़ी तक
 (कक्ष कक्ष आदि—कक्ष नव) ।
 कक्ष स—करार, स्वीकार ।
 कक्षि स—कौड़ी; धन (कक्ष—); छतकी
 धरन (—कक्ष) ।
 कक्ष वि—छोटा (—कक्ष); बचपनका
 (—कक्ष, बचपनकी विधवा) ।
 कक्ष, कक्ष स—कक्ष कक्ष ।

कविका सं—कण, किनका, रवा, बहुत छोटा टुकड़ा।

कवीनिका सं—आँखकी पुतलीके चारों ओरका रंजित घेरा Iris [रोमांचयुक्त, पुलकित।

कणकण (-अ) वि—काँटेदार, कँटीला,

कठिकात्री सं—एक कँटीली भाड़ी, भटकटैया।

कंठ (-अ) सं—गला (—शत्रु, —शत्रु),

स्वर (अ—)। —थाग सं—मृत्युके पूर्व

गले तक आयी हुई साँस। —गठ, कंठगठ

(—अ) वि—गले तक आया हुआ (—थाग)।

—ह (अ) वि—कण्ठस्थ, याद (गव

, कविता—)। [हडिडियाँ।

कंठ सं—कठास्थि, गलेके दोनों ओरकी दो

कठि स—कठी, गलेकी छोटी माला, तुलसी

की माला। —दण्ड सं—वैष्णवोंका कठी

बदल कर विवाह।

कण्डू, कण्डू स—छूनकानि, थोम-पाँचड़ा खुजली।

कण्डूशन सं—खुजलाना; खुजलाहट।

कण्डूल सं—कैथ।

कठ (-अ) वि—कितना (—टोका, —दिन);

बहुत (—कदम गांधिनाम); किस दामका

(आम—कदम न?)। —कि वि—अनेक

प्रकार (—बनेछि मने नाहे)। —कण क्रि

वि—कितने समयसे या तक (—बसे आछ

या छिले?)। —ना वि—कितना ही, खूब

(ज—कँटाछे!)।

कठक वि—थोड़ा, कुछ अंश (अत्र—कण्ठछे);

कई एक (छेलनेपर मध्ये—भान आत्र—गम्)।

—ठा वि—थानिकठा कुछ, थोड़ा।

कठठा (कतोटा) वि—कितना (परिमाण),

कितनी (दूर)।

कठटि (कतोटि) वि—कितने (संख्यामें)।

कठट्ट (कतोदुक्) वि—कठठा।

कठग सं—कल्ल, हत्या।

कठिगत्र वि—कुछ, कई एक।

कथकता स—प्राचीन कथाका संगीत आदिके साथ व्याख्यान; कथक या पौराणिकका काम।

कथक्कि वि—कुछ, थोड़ा, अंशतः, किसी तरह।

कथनौत्र (-अ) वि—कहने योग्य, कहा जाने वाला।

कथा स—बात; गल्प, कहानी; कथा;

विवरण, व्योरा (तात्र चत्रिद्वय—आत्र बनिठ

ना); वचन (—जगुत्र); प्रवाद, लोकोक्ति

(कथात्र बने)। —काठाकाठि सं—वाद-

प्रतिवाद, तर्क, झगड़ा। —छानाछानि सं—

बात फैलाना। —थाड़ा क्रि—बात उठाना।

—थाना क्रि—बात छनना, कहा मानना।

कथात्र कथात्र क्रि वि—बात-बातमें, बातकी

बातमें। कथात्र थाका क्रि—बातमें रहना,

आलोचनामें शामिल होना। कथात्र—

सं—मामूली बात। —छत्र, सं—कथा-

काठाकाठि झगड़ा; मनमुटाव; दूसरा प्रसंग।

—वाछा सं—बातचीत।

कथात्रकथन स—बातचीत।

कथा वि—मौखिक, जबानी (—भाषा, बोल-

चालकी भाषा), कहने योग्य।

कदम (-अ) स—खराब अन्न।

कदभास स—खुरी आदत, लत।

कदम सं—कदम फूल कदम फूल, पैर, घोडेकी

कदरा चाल। [लड्डू।

कदगा (कदमा) स—चीनीका बना पोला

कदम (-अ) स—कदम फूल।

कदमर्थ (-अ) स—विकृत अर्थ, खराब माने।

कदमर्था (कदमर्थ-अ) वि—गन्दा, नीच, भद्दा।

कदमी स—कला केला।

कदाकात्र स—बिली बदसूरत। [हालतमें भी।

कदाठ क्रि वि—कथनसे कब भी, किसी

कनाकात्र स—दुराचरण, दुरा आचरण । कनाकात्री

वि दुराचारी, दुरा आचरण करने वाला ।

कनाकि क्रि वि—किसी समय, कभी ।

कनापि क्रि वि = कनाठ ।

कठ स—नाड़े कट्ठू ।

कध्व (कहुष्ण-अ) वि—गुणगुणा ।

कदिन क्रि वि—कत दिन कितने दिन ।

कद्द्र क्रि वि—कत दूर कितनी दूर ।

कनक स—सोना; चम्पक, चम्पा । —कात्र

सं—जोशगा सुहागा Borax.

कनकपूर स—एक प्रकारका धान ।

कनकन (कन्कन्) स—उर्द, टीस (नाउ—
कर) । वि—बहुत आढा (ठांछा छन—
कर) । कनकनानि स—उर्द, टीस; बहुत आढ ।

कनकने वि—बहुत आढा ।

कनाः, कनाठ स—खेमेका परदा, कनात ।

कनौनिका सं = कनौनिका ।

कइहे सं—बाइर मध्य-शक्ति कोहनी ।

कने स्त्री—विवाहत्र गाड़ी विवाहके लिए
मनोनीत कन्या (वद—) । —वडे स्त्री—नयी
बहू, छोटी बहू ।

कश स—दाँवा कथरी ।

कमर स—कजरा, गुफा ।

कनूद सं—गेद, बाल Ball

कककाणे वि = ककस ।

कवा सं = कवना । कव— सं—गृहस्थीका
काम ।

कवा स—मेखे लड़की । —कवा सं—
विवाहमें कन्या पक्षके प्रधान व्यक्ति । —कात्र
सं—कन्याका विवाह रूप खर्चिले कामका
बोझ । —बाळि, (-औ) सं—विवाहमें
कन्या पक्षके निमन्त्रित लोग, धराती ।

कप सं—मुँहमें डालनेका शब्द (—कात्र थैले
स्थले) । (बड़ा होने पर कपाः, छोटा होने

पर दूध और बार बार होने पर कप, कप,
या कपाकप) ।

कपजान (कपचानो), कपजाना (क्रि परि १६)
—सिचायी हुई बात बोलते रहना; चिड़िया
की बोली बोलना ।

कपठे वि—कपटी, फरेवी । —ठा सं—कपट,
फरेब, छल । कपठेकात्री वि—कपटी, फरेवी ।

कपनि (कप्नि) सं—नाउठे लगोट, कौपीन ।

कपकद स—कौडी (—हीन, गरीब) ।

कपाठे, कवाठे स—किवाड़, आवरण (ननेत्र
—) । कपाठे देखा क्रि—किवाड़ बन्द
करना । [कवड्डी ।

कपाठि, कवाठि, कवाडि स—शङ्खु (केना

कपाठि सं—विन दृढ़ संयोग (नाउ—नागा) ।

कपाल सं—ननाठे ललाट, माथा; भाग्य
(—मल) । कपाले—भाग्य वाला (गोड़ा
—) । —कपे क्रि वि—भाग्यसे ।

कपि सं—शान्त बन्दर; कापी, नकल;
गोभी । कून—स—फूल गोभी । दाँवा—
स—करमकल्ला, बन्द गोभी ।

कपिकल स—भारी बोझ उठानेका यन्त्र,
चरखी, घेसनी Pulley

कपिथ (-अ) सं—इन्द्रेण कैथ ।

कपिज वि—भूरा, खैरा ।

कपौठ स—गाइरा कबूतर । [मनगढ़न्त बातें ।

कपौज सं—गांज गाल । —ककना सं—
कक स—कफ, बलगम; कमीज आदिका
हाथ, कफ ।

काक स—गोभी; एक बीज (यह चायकी
तरह हस्तेमाल होता है), काफी ।

कवडा (कव्जा) स—कव्जा ।

कवडि (कव्जि) सं—गविदक कलाई ।

कवस (-अ) सं—कककाणे सिर-कटा, भूत आदि;
वे-सिरका शरीर ।

कवत्र सं—गोत्र कत्र, समाधि ।

कवत्री सं—शोभा जूड़ा ।

कवल सं—क्षाम ग्रास, कौर ; कुल्ला ; कवजा, दखल । कवलित (-अ) वि—क्षुध घृत, प्राप्त (काल—, मृत) ।

कवलान (कवलानो), कवलानो (क्रि परि १६)

—स्वीकार करना, कबूल करना ; वादा करना ।

कवाटे सं=कपाटे । कवाटि सं=कपाटि ।

क'वात्र क्रि वि—कत्र वात्र कितनी बार, कई बार ।

कवाला सं—विजयेश्वर मलिन कवाला, बयनामा ।

कवि (कवि) सं—कवि, शायर (—७क, रवीन्द्रनाथ ठाकुर) ; गाने वाला (कवि

गान, कवि नड़ाइ, इसमें अशिक्षित लोग

तुरंत कविता रच-रच कर एक दूसरेका उत्तर

देते हैं) । —७ग्राना सं—इस प्रकार कवि-

गान गाने वाला ।

कवित्राज (कविराज) सं—कवियोंमें श्रेष्ठ,

वैद्य, आयुर्वेदीय चिकित्सक । कवित्राजि सं—

वैद्यक, वैद्यका पेशा, चिकित्सा, इलाज ।

कवित्राजी वि—वैद्यक चिकित्सा सम्बन्धी ।

कवून सं—कबूल, स्वीकार (जाय—कत्रा) ।

वि—स्पष्ट (—जवाब) ; स्वीकृत । कवूनठि,

कवूनिय सं—स्वीकार-पत्र, कबूलियत ।

कवे (कत्रे) क्रि वि—किस दिन ?

कवोरु (कवोरुण-अ) वि—गुणगुना ।

कखी = कवखी । कवखी, कखि, कखी = कवखी ।

कडू क्रि वि—कथन० कमी ।

कम वि—अल्प, कम, थोड़ा, अप्रचुर । —छूरी

सं—कमजोरी । —गोख (-अ) वि—

कममजबूत । —रुख वि—भाग्यहीन, कमबक्त ।

—वेष वि—कमो वेश, थोड़ा बहुत ; करीब

करीब । —मजबूत वि—कममजबूत ।

कमठि (कमृति) सं—अल्पता, कमी ; त्रुटि ।

कमला स्त्री—लक्ष्मी । —गति सं—विष्णु ।

कमला (कमूला), —लवू, (-लवू) सं—
नारंगी, सतरा ।

कमा सं—(,) लघु विराम चिह्न ।

कमा (क्रि परि १)—कम होना, घटना ।

कमान (कमानो), कमानो (क्रि परि १०)

—कम करना, घटाना ।

कमिष्टि, (-जि) सं—कमेटी, समिति ।

कमिशन सं—कमिशन, दस्तूरी, दलाली, जाँच-

कमेटी । कमिशनार सं—कमिशनर ।

कम्प (-अ) सं—कंप्यूनि थरथराहट, कम्पन

(—मिथ्र खर एल) । कम्प (कम्प्) सं—

कप, खेमा, डेरा ।

कम्पानि सं=कम्पानि ।

कम्पाज सं—कंपोज, छापनेके लिए अक्षर

सजानेका काम । कम्पाजिटर सं—

कंपोजिटर, छापेका अक्षर सजाने वाला ।

कम्पाजिटरि सं—कंपोजिटरका काम

या पेशा ।

कम्पोजर सं—गुल्लन्द ।

कत्र वि—क, कत्र कितना (—जन, —टि,

—दिन) ; कुछ (—दिन थक) ।

कत्रना सं—कोयला (पाथर—, काँठ—) ।

कत्रान सं—आदतमें तौलने वाला । कत्रानि

सं—तौलने वालेका काम या मजूरी ।

कत्रक वि—कई एक ।

कत्रकवेल सं—कत्रकवेल कैद । [कैदी ।

कत्रक सं—कत्रक, कैद । कत्रकौ सं—

कत्रकट (कत्रकच्) सं—समुद्रका जल सुखा

कर बनाया हुआ नमक ।

कत्रकवलिठ (-अ) वि—हाथसे पकड़ा हुआ,

धृत ; दखलमें किया हुआ ।

कत्रकत्र (कत्रकत्र) सं—जलन (जाय—कत्र) ।

कत्रकत्र वि—बाहु सा ; दानादार,

किरकिरा ।

कन्नका सं—गिना बारिशके साथ गिरने वाला पत्थर ।

कन्नक सं—कर मालगुजारी या शुल्क ग्रहण ; पाणि-ग्रहण, विवाह, हस्त धारण ।

कन्नका सं—कड़ा (वैष्णव साहित्यमें) पद्यमें लिखित इतिहास, मालगुजारीका हिसाब ।

कन्नकाळ क्रि वि—हाथ जोड़ कर, चिनयसे ।

कन्नक, कन्नक सं—करोँदा, एक खटा छोटा फल ।

कन्नक सं—करनेकी क्रिया ; सम्पादन, समाप्ति ; गठन, साधन, उपाय ; कारण ।

कन्नवीर (-अ) वि—करने योग्य । —यत्र सं—विवाह सम्बन्ध करने योग्य कुल ।

कन्नत (-अ) क्रि—कन्निका करके (छिदा—) ।

कन्नतन सं—शास्त्र तेलो हथेली ।

कन्नतल सं—भौंभ, करताल । [का शब्द ।

कन्नतानि, (-नौ) सं—ताली, दोनों हथेलियों

कन्नत वि—कर या मालगुजारी देने वाला (—राज्य, पहलेकी देशी रियासत) ।

कन्नना (कर्ना) सं—कर्ना कार्य, कृत्य (यत्र—) ।

कन्ननीडन सं—कर्मर्दन ; पाणि-ग्रहण ।

कन्नवी, (-वीर) सं—कनेर, करवीर ।

कन्नमण (कर्मूचा) सं—करोँदा, एक खटा छोटा फल ।

कन्नना, कन्नना सं—करेला ।

कन्ना (क्रि परि १)—करना (काञ्च—, बाञ्चाव—, बाञ्चान—) ; लगाना (जोत्र— वृद्धि—) ; लेना (काँध—, मने—, शास्त्र—, शास्त्र—) ।

वि—किया हुआ (उडन—खिनिय, —काञ्च) ।

कन्नात सं—आरा । कन्नातौ सं—आराकश ।

कन्नान (-नौ), कन्नाना (क्रि परि १०)—कराना ।

कन्नावत (-अ) वि—हाथमें आया हुआ ; प्राप्त ।

कन्नाव क्रि वि—वादेसे, वशर्ते कि ।

कन्नाव वि—भीषण, विकट, डरावना ।

कन्नितकशी (करित्-) वि—कार्यक्रम कार्यदक्ष, निपुण, अनुभवी ।

कन्निका, क'ल क्रि—करके ; से, द्वारा (शस्त्र—, नौका—) ; उपायसे (दि—) ; क्रमशः (एकछि छि—) ; हेतु (तात्त क'ल, उस कारण) ।

कन्नो स—हाथी, गज, मातंग । स्त्री—कन्निका

कन्नवच्छि (-अ) वि—दयालु, मिह्रवान ।

कन्नार्ज (-अ) वि—दयासे पिबला हुआ, धृपालु ।

कर्क, कर्क सं—क्षिप्ति काग, डाट ।

कर्कट सं—काकड़ा केकड़ा ।

कर्क (अ) सं—करण, कर्ज, उधार ।

कर्णाद्य सं—दूसरेका कान (एकथा वेद कर्णाद्यत्र ना वाद्य) ; कानका भीतरी भाग ।

कर्णिक सं—करनी, जिस औजारसे दीवारें गारा आदि लगाते हैं ।

कर्कन सं—छेदन छेदन, काटना ।

कर्कनौ स—काँचि कैची, कतरनी ।

कर्कवी, कर्कविका सं—काँचि हँसुआ ।

कर्कविक कन्ना क्रि—दूसरेके काममें अपनेक कर्ता जाहिर करना, दस्तदाजी करना ।

कर्कविक सं—गौरांग महाप्रभुके अनुयायी एव वैष्णव पन्थ ।

कर्कित (-अ) वि—कटा ।

कर्क विभ—द्वारा (आगा—अपक्ष) ।

कर्कशक (-पक्ष-अ) स अधिकारीवग अफसर लोग ।

कर्को स्त्री—मालकिन, गृहिणी, अध्यक्षा रचयित्री (व्यष्ट—) ।

कर्कस सं—काना कीचड़ । कर्कसारु (-अ) वि—कानागांधी कीचड़ लगा हुआ ।

कर्कांग स—कपास ।

कर्क सं—कपूर, काफूर ।

कर्म (-अ) सं—कार्य, काम ; पाप या पुण्य
कर्म (-कर्म, कर्मवत्र (जग), नौकरी ; पेशा
(कि—कर्म श्र ?) । —कात्र सं—कागात्र
लुहार । —कात्री वि—कार्य करने वाला । —क
(-अ) वि—कर्मसे उत्पन्न । —कर्म सं—
सुख-दुःख । —क (-अ) वि—काममें चतुर,
काम कर सकने वाला, समर्थ । —का (-अ)
वि—करने योग्य, काम-लायक ; उपयोगी,
चतुर, निपुण । —का वि—काममें बाधा
ढालने वाला, काम बिगाड़ने वाला ।
—विपाक सं—कर्मफल, अपनी
करनीका फल सुख या दुःख ।

कर्माई (-अ) वि—कामके योग्य ।

कर्षिष्ठ (-अ) वि=कर्षिष्ठ । [खेतिहर ।

कर्षक सं—जोतनेवाला, कृषक, किसान,

कर्षण सं—घाव कृषि, खेती ।

कर्षणीय (-अ) वि—जोतने योग्य, खेती करने
लायक ; आकर्षण करने या खींचने योग्य ।

कर्षित (-अ) वि—जोता हुआ ; आकृष्ट ।

कर्म सं—मीठी आवाज (-कर्म, -कर्मि,
-कर्म) ; यन्त्र (कर्मवत्र—) ; चतुराई (कर्म-
कर्मण) । —कर्म क्रि—गुप्त रूपसे सिखाना
या उसकाना ।

कर्मकर्म, कर्मकर्मि (कर्मकर्मि) सं—जल-प्रवाह
का शब्द ; कोलाहल, शोर ।

कर्मका (कर्मका) सं—लता-पत्तीका चित्र,
वेलवृटे (-का, धोती या साड़ीका
वृटेदार किनारा) ।

कर्मक (कर्मक) सं—झिगड़ चिलम ; कर्म,
कूँड़ि कौंपल (कर्मवत्र—) । —काकर्म क्रि—
समाज या सभामें सम्मानित होना ।

कर्मक (-अ) सं—दाग, धब्बा, कालिख,
लांछन, बदनामी ; ऐव, दोष, मुरचा, जंग ;
जो नीली काई पीतल आदिके धरतनमें झमली

आदि खट्टी चीज रखनेसे जमती है । कर्मकी
वि—काशी बदनाम, कलंकी । स्त्री—
कर्मकर्मिनी ।

कर्मक (-अ) सं—पत्नी, स्त्री, दारा ।

कर्मक सं—कलफ, माँड़ी ; कलप, खिजाब ।

कर्मक सं—श्लिषावक हाथीका बच्चा ।

कर्मक (कलक), कर्मक, कर्मक (-कर्म, -कर्मि,
-कर्म) सं—गगरा, घड़ा ।

कर्म स—कैला (काका—, काका—) ; कला ; कुद
भी नहीं (कर्मि भाव—) । —कर्मकर्मि—
अगूठा दिखाना या बताना, धोखा देना,
छकाना । —काक सं—कैलेकी भाड़ी ।

—कर्म सं—विवाहमें वरको खड़ा करनेके
लिए चार कैलेके पेड़ोंके बीचका स्थान ।

कर्मक सं—कर्मक उर्दकी दाल ; कलई ।

कर्मककर्मि सं—कर्मककर्मि मदरसीमी ।

कर्मककर्मि सं=कर्मककर्मि ।

कर्मक सं—जल दाल ; उर्दकी दाल ।

कर्म, कर्म सं—कर्मिका, कूँड़ि मुकुल, कली,
बिना खिला फूल ; तिलक, गानेका पद ;
चूना, मकानकी सफेदी । —कर्म सं—सीप
घोंघा आदि जलाकर बनाया हुआ चूना ।

कर्मिका सं—कर्मि, कूँड़ि कली, मुकुल ; झिगड़,
कर्मक चिलम ।

कर्मि (-अ) सं—उड़िसा देश ।

कर्मि, कर्मि सं—कर्मि दिल ; कलेजा ।

कर्म सं—कर्मकात्र कोल्हूमें तेल पेड़ने वाला ।
स्त्री—कर्मिनी ।

कर्म सं—पाप, मल, दोष । कर्मकर्मि (-अ)
वि—दूषित, कलकित, पापी ।

कर्मकर्म सं—कालेक्टर ; वसूल करने वाला
(विम—) ।

कर्मक सं—कालेज, उच्च शिक्षालय ।

कर्मक सं—शरीर, देह, तन, वदन ।

कनेत्रा स'—हैजा, कालरा ।

कक्ष स' = कक्षका ।

कक्ष (-अ) स'—सकल्प, प्रतिज्ञा (पृष्ठ—); सहस्र (गृह—); युग; नियम-पालन, व्रत (-वात्र) । —उक्त स'—स्वर्गीय वृक्ष, प्रार्थना करते ही जिससे अभीष्ट वस्तु मिलती है; अत्यन्त दाता ।

कक्ष (कल्मष) स'—कक्ष पाप ।

कक्ष (-अ) स'—आशुभाय काल आने वाला कल; गुरुकाल-पिछला दिन, बीता कल ।

—काव वि—अगले या पिछले दिनका ।

कक्षा स'—कल्याण, कुशल, मंगल । कक्षागीश

(-अ) वि—कल्याणयुक्त (स्नेहपात्र) ।

स्त्री—कक्षागीश । (चिट्ठी-पत्रीमें कनिष्ठ पुरुषको कक्षागवत्सु या कक्षागीश्वत्सु और स्त्रीको कक्षागवत्साया या कक्षागीशाया लिखा जाता है) ।

कक्षान स'—शब्द करने वाली जल-तरंग; कलरव, शोरगुल; आनन्द, उल्लास, किलोल ।

कक्षागिनी स्त्री—नदी ।

कक्ष स'—होठके दोनों बगलका स्थान ।

कक्ष, कक्ष, कक्ष (कक्षा) स'—कोड़ा, चाबुक ।

कक्षाघात स'—चाबुककी मार ।

कक्षा (क्रि परि १), कक्षान (-नो), कक्षागिनी (क्रि परि १०)—चाबुक मारना, कोड़ा जमाना । [कजूसी ।

कक्षाकशि स'—छेनाछेनि खींचातानी; दृढ़ता,

कक्षि स'—रेखा, लकीर (-छेना, लकीर खींचना) ।

कक्षक, कक्षक स'—प्रक्रमण रीढ़, पृष्ठवंश ।

कक्ष स'—कक्षाग्र रस कसेला रस ।

कक्ष वि—कक्षाग्र-रस-विनिष्ठ कसेला ।

कक्ष (क्रि परि १)—छाँछे कसना, कस कर धाँधना, जड़ना (-छे), कसौटीमें जाँचना (-छेना); कल्प, आँचमें भूतना

(भाज-), हिसाब लगाना (अक्ष-);

भाव ठहराना, मोल-भाव करना (द्व-) ।

वि—कसा हुआ, मजबूतीसे बँधा हुआ;

कंजूस (-छेना छेना), सूखा, नीरस (-छात, जिसका पखाना-पेशाब कष्टसे और कम होता है) ।

कक्षाकशि स'—भाव घटानेके लिए जिद (द्व-), विरोध (यन-) ।

कक्षाछे वि—कसेला ।

कक्षाग्र स'—कसेला रस या स्वाद; गुलाबी रंग ।

कक्षाग्रित (-अ) वि—आग्रित, नान लाल (छाव—छेना); वृक्षित रंगा हुआ ।

कक्षि स'—रेखा, लकीर (-छेना, लकीर खींचना); धोतीका जो हिस्सा कमरमें कसा रहता है, कच्चे आमकी गुठली ।

कक्षित (-अ) वि—कसौटीमें कसा हुआ (-काशन) ।

कक्षि, क'व क्रि—कमर कस कर (क'व छेना छेना); अच्छी तरह, खूब (क'व छेना छेना) ।

कक्ष (-अ) स—कक्ष, दुःख, दर्द, कठिनाई ।

—कक्ष, —कक्षक वि—कष्ट देने वाला; कठिन ।

—कक्षा (-अ) वि—कठिनातासे किया जा सकने वाला । कक्ष-कक्ष क्रि वि—बहुत कष्टसे ।

कक्षि स'—कसौटी (-कक्षाग्र) ।

कक्ष स'—मुँहका कोना; रस । कक्षग्र दाँत स'—चबाने वाले दाँत ।

कक्षा क्रि वि—कसा ।

कक्षि स' = कक्षि ।

[—आछे] ।

कक्षग्र (कक्षुर) स'—दोप, चूटि; कमी (-कक्षे)

कक्षाग्रा स'—साड़ीका चौड़ा लाल किनारा ।

कक्षाग्रा वि—चौड़ा लाल किनारा वाली (-छाछि) ।

[समय भी ।

कक्षिकाल (-कक्षिन्—) क्रि वि—किसी

कक्षि (-अ) वि—कहनेके योग्य (-नक्ष) ।

कश (क्रि परि २)—कशना, बला कहना, बोलना । वि—कथिष्ठ कहा हुआ ।

कशन (-नो), कशनो (क्रि परि १८)—
कशना, बलाना कहलाना ।

कशिये, कशिये वि—जो अच्छी तरह बातें कर सकता है, बात करनेमें निपुण, छवक्ता ।

काशे स—लेई, गोंद, मांड ।

काशेविठि स—इमलीका बिया ।

काउके सर्व—किसीको । काउकेशे सर्व—
किसीको भी ।

काउेर स—एक चर्मरोग, एकजिमा ।

काउराख स—कवायद ; चाँदमारी ।

काउरानी स—कौवाली ।

काश, काश (कांश्य, कांश अ) स—कांश
कसकूट, कांसा । काशकात्र स—कांशात्री
कसेरा ।

काक, काक स—कौआ ; कर्क काग, डाट ।

काकड़ा (काँकड़ा) स—केंकड़ा । —विष्ट
स—बिच्छू ।

काकुर स—ककड़, पत्थरका टुकड़ा ।

काकुरान (काँक्-) स—खेकसा, एक तरकारी
जिस पर बहुतसे नरम काँटे रहते हैं ।

काकुरान (काँकलाश) स—कुकुरान गिरगिट,
छिपकली ।

काकनि स—मीठी या सरीली आवाज ।

काका स—शूड़ा चचा, पिताका छोटा भाई ।

काकौ स्त्री—शूड़ी, शूड़ीमा, काकौमा चाची, पिता
के छोटे भाईकी स्त्री ।

का का स—काँव काँव, काँवकी आवाज ।

काकाडुश स—काकातूआ ।

काकाण स—कागत्र कमर ।

काकूशे, काकूशे स—छिन्नो कधी ।

काकूड स—खकसा ।

काकूडि स—वीनती, प्राथना ।

काक सर्व—कैसे, किसको । काक सर्व—
किन्हे, किनको आदरार्थक एकवचन ।

काकोपत्र स—गात्र साँप, सर्प ।

कांथ स—काँख, बगल ; कमर ।

कांश स—काक कौआ ।

कागख स—कागज । खवावर— स—अखबार,
समाचार-पत्र । —काग स—कागज दवान्त्रिके

लिए पत्थर शीशे आदिका टुकड़ा । —गख

स—कागजात । कांशवी वि—कागज

बनानेवाला, पतला । कांशवी (लवू स—छोटा

नींबू जिसका छिलका कागजकी तरह पतला

है । कांशवी शूला स—रूपयेका नोट ।

काकास स—कंगारू, आस्ट्रेलियाका एक
जानवर Kangaroo.

काकान, काकानी, काकान, काकानी, काकान,

काकान काकान स, वि—छिथात्री भीखमंगा,

कंगाल ; लालची, लोभी (यन्त्र काकान) ।

काक, काक स—कांच, शीशा । काकभाका स—

तिलचट्टा ।

काकना (काँक्कला) स—तरकारी रूपसे

इस्तेमाल होनेवाला कच्चा केला ; कुछ भी नहीं

(छुमि थाव—) । आनाथ काकनाथ, आग-

फूसका वैर ।

काक स—नये वस्त्रका टुकड़ा जो माता या पिता

की मृत्युके बाद अशौच-कालमें जनेऊकी

तरह गलेमें पहना जाता है ।

काक (क्रि परि ३)—धोना, कचारना

(काकण—) ।

काक वि—कच्चा ; बिना पकाया (-माज,

-माछ) ; मिट्टीका (-चर, -गांथनि) ; जो सूखा

न हो (-काठ, -बोग, -भाठा) ; अनाड़ी

(-लाक, -शठ, जेथीपड़ा—) ; पहलेका,

बादको बदल जानेवाला (-थाठा, -कथा) ;

जल्दी उड़ जानेवाला (-का) ; जो नींद और

भी देर तक हो सकती थी (—घृण जाडाना) ।
 —उन्न स—प्रामाणिक तौलसे कम तौल ।
 —रून स—काला केश । —अग्र स—जो
 धन थोड़ी मिहनतसे रोज आता है । —गिठा
 वि—कच्ची हालतमें भी मीठा (—आम) ।
 —बाला स—कच्ची सड़क, पगडंडी । —ज्वर
 स—८० तोलेसे कम तौलका सेर ।

काष्ठान (—नो), काष्ठाना (क्रि परि १०)—
 क्षात्राने धुलवाना ।

कांठान (—नो), कांठाना (क्रि परि १०)—किसी
 समारोहका आयोजन बिगाड़ कर पहली
 हालतमें करना ।

कांठि स—कच्ची, कतरनी ।

कांठि ज्वर स=कांठज्वर । [तोलेका सेर] ।

कांठे वि—कम वजनका । —ज्वर, सं—६०

कांठगात्र वि—लज्जित, क्षमिन्दा, संकुचित
 (नञ्जात्र वा उद्ध—) ।

कांठनि, कांठनि स—अंगिया, चोली ।

कांठा स—छटाँककी चौथाई, सवा तोले ।

कांठा-वांठा स—छेनेशूल बालबच्चे ।

काष्ठ स—निकट, पास (—तात्र—थेके) ।

काष्ठ स—कच्छ, काँष्ठ ।

काशकाष्ठि क्रि वि—पास-पास (—वाड़ी);
 प्रायः, लगभग (गङ्गात्र—, शङ्खाज्वर—) ।

काशान (—नो), काशाना (क्रि परि १०)—पास
 आना, नजदीक पहुँचना ।

काशत्रि, (—त्री) स—कचहरी ।

काष्ठि स—रस्सा ।

काष्ठिम स—कड़ुआ ।

काष्ठे क्रि वि—पास, निकट, नजदीक (—अग, —
 बनिठ ना); सहित, साथ (—आमात्र—छात्राकि
 ज्ञापे ना), विचारसे (—तात्र—भूख-मिथ मव
 ममान); तुलनामें (—अत्र—उ किछु नैव) ।
 —काष्ठे क्रि वि—साथ-साथ (—थेका) ।

—गिठ क्रि वि—निकट, आसपास (—अग
 शान भूखिशाष्टि, —आथाठ नाई) ।

काष्ठ स—काम; कारीगरी (—अग्रनात्र शृङ्ग—) ।

—रुष्ट स—काम-काज, जीविका, नौकरी ।

काष्ठे आग या नाग क्रि—व्यवहारमें लगाना,
 प्रयोगमें आना । काष्ठे काष्ठे क्रि वि—अतः,
 इस कारणसे ।

काष्ठल स—रुज्जन अंजन । —जठा स—
 काजल धनानेका लोहे आदिका पात्र ।

कांष्ठि स=आमानि ।

कांठि स—बनावट, गठन (भूध्वर—जान) ।

कांठेकूठे स—काट-छाँट, छील-छाल ।

कांठेथोठे वि—(गोंगात्र जिदी, हठी); रस-ज्ञान
 रहित, रुखा ।

कांठेगड़ा स—कटघरा ।

कांठेठाकरा स=कांठेठाकरा ।

कांठेठि (काट्ति) स—खपत, विक्री ।

कांठेरा स=कांठेरा । [टुकड़ा ।

कांठेलेठे स—कटलेट, भूना हुआ मांसका

कांठे (क्रि परि २)—काटना; खण्डन करना

(—कथा—, गठ—); व्यतीत होना (अग्र—);

खोदना (भूध्वर—, कूड़ा—); खींचना

(—नाग—, रुज्जन—, चोछ—); हट जाना

(—अग्र—, जेना—, विभ—); विक जाना

(—मान—, वड़े केमन कांठेष्ट?); रचना,

लगाना (—जिनक—, नकशा—); काटना

(—शृङ्ग—, छत्रा—); कट जाना (—जान—,

अग्र—) । —कांठि स—भूखभूनि मारकाट;

आपसमें खण्डन या भगड़ा (—कथा—);

—कांठि, कांठेकूठे (काट् कुट्) स—लेखमें थोड़ा

बहुत संशोधनार्थ काट-छाँट ।

कांठे स—कठेर काँटा, कटिया, छोटी कील;

घड़ीका काँटा; मछलीका काँटा; लटकती

हुई घड़ी सराजू; जड़ा बाँधनेका काँटा;

अंग्रेजोंके खानेका कांटा ; रोआ खड़ा होना
(गाँव—मेश) ।

काठिन (नो), काठिनो (क्रि परि १०)—

कटवाना ; व्यतीत करना (मग्न—, काल—) ;

बेचना (बाल—) ।

काठिनि, (-नी) सं—ना हुआ ।

काठिन सं=काठिन ।

काठि सं—कटिया, छोटी कील ।

काठि सं=काठि ।

काठ सं—काष्ठ लकड़ी, काठ, ईंधन । —थाना

सं—दाना भूननेके लिए बिना बालूकी

कड़ाही । —गड़ा सं—कटघरा । —ठाकुरा

सं—एक लम्बी चौंच वाली चिड़िया जो पेड़

के तनेमें गड्ढा खोद कर घोंसला बनाती है,

कठफोड़वा । —त्रिपुड़ा, (—फे) सं—बड़ी

चींटी । —विज्ञान, (—वैज्ञानि) सं—

गिलहरी, चिहुर ।

काठरा (काठरा) सं—लकड़ीका घर ; बाजार

में दूकानोंकी कतार ; कटघरा ।

काठा सं—बगालके बीघेका २०वाँ हिस्सा

(३२० वर्ग हाथ) ; धान आदि नापनेका एक

पात्र ।

काठिय, (-या) सं—ठांठे ढाँचा ।

काठिन सं—कटहल ।

काठि, काठि सं—बाँस लकड़ी आदिका महीन

छोटा टुकड़ा, सलाई (मशाले—, बाँठा—,

ठावि—) ।

काठिना (-अ) सं—कड़ाई, कड़ापन, बेरहमी ।

काठुनिश, काठुन स—लकड़हारा ।

काड़ा (क्रि परि ३)—छीनना, भटकना ।

काड़ाकाड़ा सं—आपसमें छीनना-भटकना ।

काड़ान (-नो), काड़ानो (क्रि परि १०)—

छिनवाना ।

काड़ा (क्रि परि ३)—छाँटा, जाना चावल

से कूड़ा और भीतरी पतला चोकर निकालना ।

वि—इस प्रकार साफ किया हुआ (डिक्क

गल—यात्रा काँड़ा) ।

काँड़ान (-नो), काँड़ानो (क्रि परि १०)—

चावलसे कूड़ा और भीतरी पतला चोकर

निकलवाना ।

काण सं—कण, कान । काण थाणे वि—ऊँचा

चुननेवाला ।

काणा वि—काना, एकाक्ष ।

काण (-अ) सं—घटना, भारी बारदात (कि—

कत्रे एमेल ?), पेड़का तना ; अध्याय ।

—काथाना सं—भारी कांड ; हल्लागुल्ला ।

—जान सं—मामूली ज्ञान, साधारण बुद्धि

(तोगात्र कोन—नाई) ।

काठात्री सं—कर्णधार मल्लाह, पतवरिया ।

(डवेर—, ईश्वर) ।

काठ वि—टेढ़ा (चाँटो—इत्रे भएछे) ; जमीन

में पतित (एक छे) । सं—पास, करवट

(जान काठे लाओ) ।

काठर वि—कातर, भयभीत, बीमार ।

काठरान (कातरानो), काठरानो (क्रि परि

१६)—कराहना ।

[आवाज ।

काठरानि सं—कराहनेका शब्द, आह, आहकी

काठना (कात्ता) सं—रेहू जातिकी एक

बड़ी मछली (इसका सिर बहुत मोटा होता

है) ।

काठा स—नारियलके छिलकेकी रस्सी ।

काठात्र सं—श्रेणी, कतार (काठात्रे काठात्रे

मैछ छमियाछे) ।

[की केंची ।

काठात्रि, काठुत्रि सं—घातुका पत्तर काटने

काठूकूठू, कूठूकूठू सं—गुदगुदी ।

काथा सं—कथड़ी ।

काँद काँद (-दो), काँदो काँदो क्रि वि—रोनी सूरत

में, आँखें डबडबाते हुए (—इशेरा बजिन) ।

कान्धनी स्त्री—मेघ-श्रेणी, बादल ।

कान, कर्कस सं—शंक कीचड़ । —कान शोका
सं—एक, चिड़िया, चाहा ।

काना (क्रि परि ३)—रोना । कानन, काननि
सं—रुलाई । —काणि सं—रुलाई और
दुख-प्रकाश । कान्धन वि—खूब रोनेवाला

(—छले—मने) ; रूखनेवाला (—गान) ।

कानान (-नो), कानाना (क्रि परि १०)—
रूखना । [नात्रिकलेत्र—] ।

काणि सं—फलोंका गुच्छा (कनात्र—,
कांश सं—बाड़, क घा ।

कान सं—कान ; तम्बूरा आदिमें तार कसने
का मुट्ठा । —कात्ता (कान् पात्ता) वि—
जो बिना विचारे दूसरोंकी शिकायत
पर विश्वास करता है । काने काने क्रि वि—
कानोंमें, गुपचुप (—बना) ।

कानका सं—मछलीका कान ।

काना वि—अंधा ; एक आँखका अंधा ;
फटा (—कड़ि, फटी कौड़ी) ।

काना सं—किनारा (कनौत्र—, शूक्रेत्र—) ।
कानात्र कानात्र क्रि वि—लवालत्र, किनारे तक
(भरा) ।

कानाई सं—कन्हैया, कृष्ण । [कानाफूसी ।
कानाकानि, कानाबू (—वा) सं—गुप्त चर्चा,
कानाठ सं—ओलती ।

कानाठ सं—खेमेका पदां, कनात ।

कानाभाहि सं—आँख-मिचौनी ।

कानि सं—नरुड़, चिथड़ा ।

काइ सं—कानाई ।

काश्न सं—काश्न कानून, राजनियम । —का
सं—कानूनगो ।

कानेलात्र सं—कनस्तर, टीनका चौकोर बड़ा
घरतन ।

काशात्र सं—जंगल, दुर्गम पथ ।

काछि सं—सुन्दरता, शोभा ; रोशनी ; इच्छा ।
काछि सं—फौलाद, शुद्ध लोहा । [कानाकाणि ।
काना सं—कनन, कानन रुलाई । —काणि सं=
काश्कूख (-अ) सं—कनौज । वि—कनौजिया ।
काश सं—प्याला, कटोरी, बहाना, स्वांग,
कपट ।

काशठि (-अ) सं—कपट, धोखा ।

काशड़ सं—कपड़ा, धोती, साड़ी, वस्त्र
(—भत्रा) । —काशड़ सं—वस्त्र, पोशाक ।

काशन, काशूनि सं—थरथराहट, कँपकपी ।

काशा (क्रि परि ३)—काँपना ।

काशान (-नो), काशाना (क्रि परि १०)—
काँपना, हिलाना ।

काशानिक सं—अचोरी ; मनुष्यकी खोपड़ीमें
खानेवाला तान्त्रिक साधु ।

काशात्र (कापाश) सं—कपास, रुई ।

काशूण वि—घजाज, कपड़ा बेचनेवाला । —का
सं—ठैला, बाँका ।

काशूख वि—डरपोक ।

काश्चन सं—कप्तान, जहाजका अध्यक्ष ;
सेनापति ; खेलका नेता, जिसके धनसे थार
लोग मौज उड़ाते हैं ।

काश्त्री (काफ्री), काश्की सं—हवसी ।

काश्त्र सं—काफिर । [निवासी ।

कावनिश्चाना (काबूलिवाला) सं—काबुलका
कादाव सं—कदाव, भुना हुआ मांस ।

कावावठिनि सं—कवावचीनी ।

कावात्र सं—समाप्ति, खातमा (नाम—, ताजत्र
विष्टि वा शकाश—) ।

काव वि—कव, कवौड़ काव, वशमें (—कत्रा, —
शुत्रा) ; दुबला (कत्र—) ।

काबूनी वि—काबुलका (—कट्टर, —घोड़ा,
—काना) । सं—काबुलका निवासी ;

काबुली भाषा । —काना सं—कावनिश्चाना ।

कावा (-अ) सं—कविता ; साहित्य ; कविता का ग्रन्थ ।

कागड सं—कशन दशन, कुत्ते आदिका काटना, डसना (शेयानेव—, ईश्वरेव—, गाणेव—, गशाव—); दर्द (पेटेव—) । कागड़ा-कागड़ि (कामडा-कामुडि) स—आपसमें काटना (कूकुरेव—कच्छ) । कागड़ानि स—दर्द (पेटे—) ।

कागड़ान (कामुडानो), कागड़ानो (क्रि परि १६)—काटना, दशन करना, डसना, दर्द करना (पेटे—) ।

कागड़ा (कामूरा) सं—घब, कूठेवि कमरा, कोठरी ।

कागड़ावा, (-वाडा) (कमूरांगा,—राडा) सं—कमरख ।

कागना सं—कैवल रोग Jaundice

कागड़े सं—गरहाजिरी, काम पर न आना (अक्ति—, डूल—), विराम (कथाव—नेहे), रोजगार (—क'वै थाहे) ।

कागान स—तोप ।

कागान (-नो), कागानो (क्रि परि १०)—कौर कवा हजामत करना (नागिठेव—, निखेव दाड़ि—), कमाना ।

कागाव स—कर्षकाव लुहार ।

कागिख स—जागा कमीज ।

कागा (-अ) वि—कामनाके योग्य, प्रार्थनीय ; सहावना । —कर्ष (-अ) स—किसी कामना से अनुष्ठित धार्मिक कार्य । —गवण स—इच्छामृत्यु ।

काग स—शरीर, देह । —कृष्ण क्रि वि—शरीर को कष्ट दे कर, बहुत कष्ट से । —गनावाका क्रि वि—शरीर-मन-वाणी से, सब प्रकारके प्रयत्नों से ।

कागना स—कौशल कौशल, चतुराई (नाठि

थेलाव—), कायदा (आदव—); कावू (कायदाव पांडवा) ।

काग स—शरीर, देह ।

कागिख वि—शरीरका, देह-सम्बन्धी ।

कागवज, कागवह (-अ) स—कायस्थ ।

कागवग, कागवगी वि—कायम, स्थिर, सज्जवत ।

कागवगी पाठो स—हाथी पाठो कायमी पट्टा ।

—काव प्रत्य—बनानेवाला (वर्णकाव, कृष्णकाव);

क्रिया (नमश्काव, वडिक्काव), ध्वनि (खर खर काव, धिक्काव); अक्षर या उसका चिह्न (आ-काव=†) । [नकाशी, कारचोवी ।

कागवूवि (कारखुवि) स—कौशल, चतुराई,

कावण स—कारण, हेतु (इशव —कि?);

उद्देश्य, मतलब (कि कावण कृमि

गिशाखिले?), क्यों कि (जे वाहेव ना—जे

अवश्व); (घटका) उपादान कारण (मिट्टी)

निमित्त कारण (कुम्हार) और साधारण

कारण (आकाश, प्रकाश, सूत, दड आदि),

तान्त्रिक साधनमें मदिरा । —गवोव स—

वेदान्तमें सूक्ष्म शरीरसे भी सूक्ष्म अज्ञान,

इसे आनन्दमय कोष भी कहते हैं । कावगी-

वूत वि—कारण-रूप । [चतुराई ।

कावगानि (कारदानि) स—कामका कौशल,

कावगवगाड, कावगवगाव स—कमचारी,

कारिन्दा ; नौकर ।

काववाइड (कारवाइड) स—एक रासायनिक

मसाला जिसमें पानो डालनेसे ऐसिटिलिन

गैस पैदा होती है ।

काववाव (कारवाव) स—कारोवार, व्यापार,

पेशा ; लेनदेन । काववावो स—व्यापारी,

व्यवसायी ।

काववाग स—ससाधि-क्षेत्र, कब्रिस्तान ।

काववव वि—व्यापारी, सौदागर ।

काववृत्ति वि—करानेवाला ।

काव्यशास्त्र वि—धोखेवाज, चालवाज ।

काव्यशास्त्रि (कार् शास्त्रि) सं—चालाफी, धोखा ।

काव्य सं—कैदखाना, जेलखाना (—कद, —दाग, —शास्त्र) ।

काव्यिक, काव्यिग्न सं—कारीगर, शिल्पी, मिस्त्री । काव्यिग्न सं—कारीगरी ।

काव्यिकृति सं—निपुणता, शिल्पचातुर्य । [कृत ।

काव्यि (—अ) वि—सम्पादित, दूसरेके द्वारा काव्य सं—शिल्पी, कारीगर ; शिल्प । —कृष (—अ), —काशी (—अ) सं—शिल्पकर्म, उमदा दस्तकारी ।

काव्यिक वि—दयालु, मिहरवान ।

काव्यि (—अ) सं—दया, मिहरवानी ।

काव्य सं—काव्य, मोटे कागजका टुकड़ा, (केशन—), पोस्टकार्ड ।

काव्य, (—अ) सं—कारतूस ।

काव्यि (काव्यि) सं—काव्यि, छज्जा, दिवाल्से बाहर निकला हुआ छतका अंश ।

काव्यि (—अ) सं—कृपणता, कजूसी ।

काव्यि (—अ) सं—कृपणता, कजूसी ।

काव्यि सं—गालीचा । [धनुषधारी ।

काव्य सं—धनुष, चाप । काव्यी वि—

काव्य (काव्य-अ) सं—काज, काम, फल, उत्पन्न वस्तु (काव्य शास्त्र, काव्य शास्त्र) । —कृष

वि—कार्यका साधक (वस्तु या उपकरण), फलजनक । —कृष सं—काम-काज ।

—निर्वाहक वि—काम चलानेवाला (—कृषि) । काव्य सं—दूसरा काम ।

काव्य सं—कार्य-सिद्धि, सफलता, कामयाबी । [पतलापन ।

काव्य (—अ) सं—कृशता, क्षीणता, दुबला-कान सं—काल, समय ; यमराज, मृत्यु

(काव्य-शब्द) ; नाशका हेतु (ये वाक्याई काव्य-शब्द) ; (आनेवाला या धीता हुआ)

कल । —कृष क्रि वि—थोड़े समयके बाद ।

—कृष, कृष (काल-कृष) सं—समय-यापन । —काव्य सं—मृत्यु ; —देवाधी

(काल-देवाधी) सं—चैत-वैशाखकी संध्या की आँधी-पानी । —काव्य सं = काल-कृष ।

कान (—अ), काना वि—काला, स्याहा ।

कानक सं—तीव्र विष, तेज जहर ।

कानक (कालके) क्रि वि = दान । कानक वि = कन्याकाव्य ।

कानक (कालक), (—कृष), कानक (कालके) सं—काला दाग ।

कानक (कालक), कानक (कालक) सं—चोटसे शरीरके किसी स्थानमें खून जमनेसे काला दाग । [मछली ।

कानक (कालक) सं—रेहू जातिकी एक काना वि—बहरा ; कानक कलकित (—कृष) ;

काला (—काव्य, काना-काना), कृष्ण (—कान) । कान-सं—कृष्णका एक नाम ।

काना सं—कालाजार, एकरोग ।

काना सं—समय-यापन ।

काना सं—यमराज ।

काना सं—दूसरे समय ।

काना सं—कालापानी, द्वीपान्तर ।

काना सं—कालापानी, द्वीपान्तर ।

काना सं—कालापानी, द्वीपान्तर ।

काना सं—कालापानी, द्वीपान्तर ।

काना सं—कालापानी, द्वीपान्तर ।

काना सं—कालापानी, द्वीपान्तर ।

काना सं—कालापानी, द्वीपान्तर ।

कानिसे थाँगा कि—ठंडा हो जाना, ठिठुर जाना ।
कानो स—स्याही (काल—, नाल—),
शिवपत्नी, काली देवी ।

काले भले कि वि—कदाचित्, कभी कभी ।
कालो वि—काला (—रूपे जगत् आलो) ।
कालोशात स, वि—कलावत् गाने-बजानेमें
उस्ताद, ध्रुपद गानेमें दक्ष । कालोशाति
स—ध्रुपद गानेमें दक्षता । कालोशाती वि—
ध्रुपद-सम्बन्धी ।

काश, काग (काश) स—खाँसी ।
काशा, काग (काशा) (कि परि ३)—
खाँसना ।

कानि, कानि स—खाँसी ।
कानि, कानि स—बनारस, वाराणसी ।
कानि (काश्मीरी) वि—काश्मीरका ।
काशवि—ऐगविक गेहूँ । [बनावटी हसी ।
काँ (-अ) स—लकड़ो । —शानि स—
काग स=काश । [घडियाल ।

काँगर (काँशर) स—काँसेका एक बाजा,
काँगा (काँशा) स=काँश ।
काग (काशा) कि=काशा ।

काशर स—बड़ा तालाव ।
काँगि स—काँसेकी छोटी थाली जिसका किनारा
मामूली थालीसे कुछ ऊँचा है ।

कानि, कानो स=कानि ।
काशनि स—कच्चे आमके साथ सरसों पीस कर
बनाया हुआ अचार ।

काँल स—फसल काटनेका हँसुआ ।
काश स—१७ अग १२८० कौडियोंको गिनती ।
काशके सर्व—किसको । काँशके सर्व—किनको
(आदरार्थक एकवचन) । काँशके सर्व—
किस किसका, किन लोगोंका । काँशके
सर्व—(आदरार्थक) किन लोगोंका । काशर
सर्व—किसका ।

काशर स—कहार । स्त्री—काशरणी । [का भी ।
काशर, काशा, काश, काशा सर्व—किसी
काशनी स—कहानी, गल्प, आख्यायिका ।

काशनि वि—दुबला, क्षीण, बीमार ।
कि अव्य—क्या (कि आनिवाह ? मे आनिवे
कि ?), या (तुमि आनिवे, कि आनि
वाह ?) । जोर देनेके लिए कौ (कौ कवि ?) ।
किंकर स=किंकर ।

किंकरुवाविष्ट (-अ) वि—इतल्ल पशोपेशमें
पड़ा हुआ, क्या करूँ क्या न करूँ कुछ
निश्चय न कर सकनेकी अवस्था, दुविधा ।
किंकरुवा, (-खि) स—जनश्रुति, जनप्रवाद,
अफवाह ।

किता अव्य—किश्वा अथवा, या ।
किंकर स गद्य-रहित एक लाल फूलका वृक्ष ।
किंकर स—नौकर । स्त्री—किंकरि ।
किंकिट, किंकिट (किचमिच, किचिच-मिचिच
स—मूस चिडिया बन्दर आदिकी किच-
किचाहट ।

किछू वि—कुछ, थोड़ा (—ठिनि, —आग) ;
कोई वस्तु या विषय (आमि किछूते नाई),
सशय-निवृत्ति (मे—थानाछे ना) । किछूछे
कि वि किसी प्रकारसे (ताँके—ब्राह्मी ब्रा
गेन ना) ।

किंकर (-अ) अव्य—किस लिए, क्यों ।
किंकि वि—कुछ थोड़ा । किंकिदिक—थोड़ा
ज्यादा, कुछ अधिक । किंकिन (-अ)—
कुछ कम । किंकिना (किंकिन्मात्र-अ)—
थोड़ा-सा ।

किंके (-अ) स—तलछट, भाग, मुरचा ।
किंकिवि स—दाँत रगड़नेका शब्द ।
किता स—टुकड़ा, खंड, अदद, किता (एक
—नाट) । किता-श्रुत (-अ) वि—सजाया
हुआ, सँवारा हुआ ।

दिना, देना (क्रि परि ५)—खरीदना। वि—
खरीदा हुआ।

दिना, दि ना अव्य—संदेहमें, या नहीं
(गठ—) ; प्रश्नमें (दूँढ़ याद— ?) ;
हेतुमें (अनाइ ददेइ—उई नञ्जा शष्) ।

दि निदिह (-अ) अव्य—दिहृत् ।

दिह अव्य—क्रि तु परतु, लेकिन, जो हो;
और भी।—द्वत्र क्रि—हिचक्रिचाना, आगा-
पीछा करना।

दिशटे, दिशटे (क्रिपेटे) वि—दृश कजूस।

दिवा अव्य—कैसा (ठिल्लगी या प्रशसामें)
(-देवा, नदिमदे—अशृणु ३१ ।) । दि द,
दौ द—कुछ भी नहीं (दुदि—बान !) ।

दिनते क्रि वि—कैसे। [वेटगा, वेडौल, अद्भुत।

दिनाकाइ वि—किस प्रकारका, किस ढंगका,
दिशन्ही सं=दिशन्ही।

दिश अव्य=दिशः।

दिदुइदिनाकाइ वि—वेदव, वदसुरत।

दिशः सं—कीमत, दाम, मूल्य।

दिश वि—कुछ, थोड़ा (—शदिमा१)।

दिशतः (-अ) स—कुछ अश, थोड़ा
हिस्सा। दिशन्नि सं—कुछ दिन। दिशद्द
स—कुछ दूर. थोड़ी दूर।

दिशानः स—मृत्युके बाद अन्तिम विचार
का दिन, कयामत।

दिशदिश स=दशदश।

दिश, दिश सं—दिश, शश क्रिया, सौगंध।

दिशौ सं—किर्च, छुरा ; तलवार।

दिशौ स—मुकुट, ताज ; गिरोभूषण।

दिश वि—कैसा, किस प्रकारका। दिशे,

दि अदाइ क्रि वि—किस तरह, कैसे।

दिन सं—मुक्ता।

दिनदिन (किल्किल) स—बहुतसे जीवों
का एक स्थान में चलना फिरना।

दिन्दिन (कल्किल), स—साँप केचुण आदि
की तरह गरोर-सचालन।

दिनान (-नौ), दिनाम्, दिनन (-नौ),
दिन्ना (क्रि परि ११)—दिन देना मुक्ते
मारना।

दिहा स=देहा।

दिशदिश, दिशदिश स—किशमिश

दिश, दिदिन (किशिम) स—किस्म, प्रकार।

दिशः (किशुम्त, स—किस्मत भाग्य।

दिशदिन सं=दिशदिन।

दिने सर्व—किससे (—दि इश दता बाइ ना) ;

किस विषयमें (ज—दर ?) ; किसमें
(अ आदणे—आइ ?) । दिनेद सर्व—
किसका।

दिह स—किन्ती, नाव।

दिहदिन, (-नौ) स—किस्तबन्दी।

दौ सर्व=दि।

दौटे सं—(शोदा कीड़ा, कीट । दौटेग—,
दौटेगू—सं—अति नीच, अति तुच्छ अवज्ञा
या घृणाका शब्द ; ।—दृष्टे -अ) कीड़ा
खाया हुआ।—शद (-अ) स—कीड़ा-
मकोड़ा। दौटेगू स—अति सूक्ष्म कीट,
जीवाणु।

दौश (-अ) वि—कैसा, किस प्रकारका।

दौहनौश (-अ) वि—कहने योग्य ; गाने योग्य।

दौहनौश, दौहने स—कीर्तन गाने वाला।

दौहिल (-अ) वि—प्रशसित, स्तुत ; कथित।

दौन स—दिन वद्धमुष्टि, मुक्ता।

दौनद स—कील, मेख, अर्गल।

दौनादौनि सं—मुक्तेबाजी।

दू वि—बुरा, अशुभ (जोगात्र मने देवन—
आले देन ?—अजात्र, —दाई) ।

दूशेनाशेन, दूशेनौन सं—द्विताइन।

दूदड़, दूदड़ (कुँकड़ो) सं—सर्गा, सर्गी।

कूंकड़ि शूंकड़ि (कुंकड़ि शु कड़ि, वि—खण्डन
संकुचित, कुण्डली-सा। [स—पिला।

कूकुर स—कुत्ता। स्त्री—कूकुरी। —धाना

कूकुरे स—मुर्गा, मुर्गी।

कूकुर स—कुत्ता, कुतिया। [अश।

कूकि (कुक्कि) स—उदर, पेट, गर्भ, भीतरी

कूकुर स—जाफरान। [होता है)।

कूठ स—गुंजा (१ रति वजनके लिए इस्तेमाल

कूठ स—स्तन, छाती, यात्रा —काष्ठशब्द)।

कूठकान, कूठकानो क्रि = कूठकान।

कूठकि (कूचकि) स—कमर और जांघकी
सधि, ऊत्सन्धि, काष्ठ।

कूठकूठ (कुचकुच) स—काला रंग और
चिकनाहट (कालो—, —कूठा, कूठकूठ कालो)।

कूठक (-अ) स—गुट साजिश पडयंत्र।

कूठको स, वि—साजिश करने वाला।

कूठनी (कुचनी) स—रडो, वेश्या।

कूठा, कूठा, कूठि स—वारीक टुकड़ा (काष्ठ
कूठा वा कूठा, काष्ठि कूठ कूठि कूठा)।

कूठान (-नो), कूठानो (क्रि परि १३)—वारीक
टुकड़ा टुकड़ा करके काटना।

कूठि स—वालोक भाङू, वृक्ष।

कूठिना, कूठि (वृ-) स—एक विषैला बीज,
कुचला Nux Vomica

कूठे वि—नटखट, दुष्ट, ईर्षालु।

कूठ स—साँपकी तरहको एक मछली।

कूठा, कूठा स = कूठा।

कूठ स—मंगल ग्रह।

कूठ स—कूबड़। कूठ (-जो), कूठा, कूठो

वि—कुवडा। स्त्री—कूठो।

कूठो (-जो) वि—नीच, अधम; कुटिल।

कूठोसि स—नीचता, कुटिलता।

कूठा, कूठा, कूठो स—सुराही।

कूठाटिका स—कूठा। कुहासा, कुहरा।

कूकुर स—सिकुड़न। कूकुर (-अ) वि—
सिकुड़ा हुआ।

कूकुरा स—चामो, ताली, सूची।

कूठ स = कूठे।

कूठेकूठ (कुटकुट) स—खुजलाहटका अनुभव
(उन थथे गना—कूठे, कूठे गना—

कूठे)। कूठेकूठानि, कूठेकूठेनि स—

खुजलाहट। कूठेकूठे (कुटकुटे) वि—

खुजलाहट पंदा करने वाला।

कूठना, कूठनो (कुटनो) स—काटने लायक
तरकारी, कटी हुई तरकारी (आलू परवल
आदि)।

कूठनी (कुटनी) स—व्यभिचारकी दूती।

कूठो, कूठो, कूठि स = कूठि (थडकूठो)।

कूठो (क्रि परि ६) चूर करना, धुक्नी बनाना,
काटना, खोदना।

कूठिकूठि स—टुकड़ा टुकड़ा, टुकड़ा (काष्ठि
—कूठा), लोटपोट (शानिना—शुद्ध)।

कूठि स = कूठे।

कूठि वि—कपटी, कुटिल, धोखेबाज।

कूठि स—कुटो, भोपड़ी।

कूठेश (-अ), कूठेश स—विवाह सम्बन्धसे

सम्बन्धित कुटुम्बी (सगोत्र नहीं)। कूठेशी

स—गृहस्थ। स्त्री—कूठेशनी। कूठेशि स—

रिग्ता, विवाह सम्बन्ध या उसकी लेनदेन।

कूठ स—कूठ कोढ़। कूठे—कोढ़ी।

कूठा, (-त्रो) (कुठरी) स—कोठरी, ताखा।

कूठि स—कोठी, महल, बड़े व्यापारीका
कार्यालय। कूठाशाल स—कोठीवाला।

कूड़कूड़, कूड़कूड़ स = कूड़कूड़। कूड़कूड़े
वि = कूड़कूड़े।

कूड़ा, कूड़ा स—धानके भीतरी चोकरकी
कणिका।

कूड़ाजानि, (कूड़ा-) स—मछली पकड़ने

का छोटा जाल, वैष्णवोंकी जपमालाका थैला ।

कूडान (नो), कूडाना (क्रि परि १३)—
बटोरना । वि—बटोरा हुआ ।

कूडानो, कूडूनी सं—गरीब औरत जो पड़ी हुई लकड़ी सूखी पत्ती आदि बटोरती है (घूँटेकूड़नि) ।

कूडान, कूडालि, कूडून सं—कुलहाड़ी ।

कूड़ि सं, वि—बीस, २० ।

कूड़ि सं—कनिका कली, मुकुल ।

कूणा वि—लजीला, शरमीला, डरपोक, घर छोड़ कर न जाने वाला ।

कूठे (-अ) वि—कृपण, कजूस (यात्र—) ।

कूठे स—सकोच, लजा, दुविधा । कूठित (-अ) वि—लजित ।

कूठना स—गिड़ुली (—गावाना) ।

कूठ सं—नावके माल पर महसूल ।

कूठकूठ, काठकूठ सं—गुदगुदी ।

कूडाणि क्रि वि—काथाउ कहो भी ।

कूडना (कुतशा) सं—निन्दा, शिकायत ।

कूडनित (कुवशित) वि—भद्दा, बदसूरत, अश्लील ।

कूँद स—खराद ।

कूँदर स—सामर्थ्य, बहादुरी, सृष्टि ।

कूँदा, कूँदा, कूँदा, कूँदा (क्रि परि ६)—कूटना (नागाकूँदा, नाछेकूँदा) ।

कूँदा, कूँदा (क्रि परि ६)—खराटना, खोदना ।
वि—खोदा हुआ । [(बन्कूकर—)]

कूँदा, कूँदा स—लकड़ीका कुन्दा ; लट्ठा

कूँदान स—कोना फावड़ा ।

कूँदनी सं—भगडालू औरत ।

कूँदल स—भगडालू आदमी ।

कूँनि स—नाखूनका कोना भीतर बैठ जानेसे जलन, भीतर बैठा हुआ नाखूनका कोना ।

कूनिका, कूनक (कुन्के) सं—धान आदि अनाज नापनेके लिए घेत आदिका बना पात्र ।

कूना वि—कोनेमें रहने वाला, जो घरसे निकलना नहीं चाहता ।

कूहन स—केश, सिरके वाल ।

कूहन सं—कूँथनेकी चेष्टा या वेग ।

कूणा, कूणा स—कुप्पा ।

कूणि सं—देवरी, तेलका छोटा बरतन ।

कूणित (-अ) वि—क्रोधित, आग-बवूला ।

कूणाकाठ वि—हृगना भूमि पर पटकाया हुआ, पराजित ।

कूवनय सं—पद्म कमल ।

कूख (-अ) वि—झुंझ कुवड़ा ।

कूगड़ा, कूगड़ा (कुम्ढो) स—कौंहड़ा ।

कूमात्र, कूमात्र सं—कुम्हार ।

कूमित्र, कूमोत्र स—मगर, घडियाल ।

कूमूद सं—जलमें पैदा होने वाला कमल जाति का एक फूल ।

कूमेर स—दक्षिणी ध्रुव । —आलि, —अञ्जल सं—दक्षिणी ध्रुवका प्रकाश Aurora Australis

कूख (-अ) सं—कनक गगरा । —कात्र सं—कूमात्र । —गना सं—हरिद्वार प्रयाग उज्जैन और नासिकमें हर बारहवें वर्ष होने वाला साधुओंका मेला ।

कूडोत्र सं—कूमित्र ।

कूशा, कूशा, कूशा स—कुर्जा ।

कूशाभा, (-गा) स—कुहरा, कुहासा ।

कूश्र (-अ) स—शत्रु हरिण, मृग ।

कूश्रि, कूश्रि स—गरी खुरचनेके लिए दाँतवाला हँसआ, खुरचनी ।

कूश्रु (-अ) स—कोप-वृद्धि-रोग ।

कूर्हि सं—बहुत छोटा कुर्ता ।

कूर्दन स—मक्कन कूद, फाँद ।

कूर्निश सं—कोर्निश, सलाम । [कुरबानी ।
 कूर्सीन सं—बलिदान, कुरबान । कूर्सीनि सं—
 कूर्सि सं—कुर्सी, चेयर chair
 कूल स—कुल, वंश (—ठाग, कृद्व—); समूह,
 दल (गङ्ग—) । —कृष्ण, —नाग्री, —बत्ती,
 —बधू, —वाना स्त्री—उच्च कुलकी स्त्री ।
 —कृष्ण कि—कुलीनके घरमें कन्याका विवाह
 करना । —कृष्ण स—कुलके योग्य विवाहादि
 कार्य । —कि, —गङ्गी सं—वंशावली, पीढ़ी ।
 —नील सं—वंश और चरित्र ।
 कूल सं—वन्द्यो वेर ।
 कूलकृष्ण, (-कृष्ण) सं—कुल्ला ।
 कूलकूल सं=कनकन ।
 कूलकि, कूलकृष्ण सं—ताखा ।
 कूलकृष्ण सं—कुल त्यागने वाली स्त्री ।
 कूलपि (कुलपि) सं—मलाई वरफ,
 कुलफी ।
 कूना, कूना सं—सूप ।
 कूनाश्व सं—कुलमें कलंक लगाने वाला ।
 कूनान (-नो, कूनाना, कूलन (-नो), कूलना
 (कि परि १३)—यथेष्ट होना, अभावकी पूर्ति
 होना (ठोका—), स्थान होना (ए घञ
 २६ वन कूनायेव) ।
 कूनाश्व स—नौड़ घोसला ।
 कूनास सं=कूनाश्व ।
 कूनिश, कूनीश सं—वज्र ।
 कूनीन वि—राजा बल्लाल सेन द्वारा गौरव
 प्रदत्त कुलमे उत्पन्न, आचारादि नौ-गुण-
 युक्त, श्रेष्ठ (—जाकृष्ण) ।
 कूनीश सं—ताला ।
 कूनीश कि वि—घाटे कुल, केवल, मात्र ।
 कूनिश, कूनिश स—अर्धसे जल उठानेकी छोटी
 चम्मच ।
 कूनीश (कुनीश) सं—पेठा ।

कूनीश कूनीश (कुनीश—) वि—थोड़ा गम,
 गुनगुना ।
 कूनीश (कुनीश), कूनीश सं—सूद, व्याज ।
 —कूनीश वि, सं—अपत्य अधिक सूद लेने
 वाला, महाजन ।
 कूनीश कूनीश वि=कूनीश कूनीश । [सं—पहलवान ।
 कूनीश सं—अपत्य कुनीश, दगल । कूनीशीश
 कूनीश सं—जड़ि जादूगरी, माया । कूनीश
 सं—जादूगर । स्त्री—कूनीशनी ।
 कूनीश सं—गर्भ गढ़ा, छेद (कर्णकूनीश) ।
 कूनीश सं—कोयलका शब्द ; स्वर । (पद्य में
 —कूनीश) । कूनीश (-अ) सं—ध्वनित ।
 कूनीश सं—कोयलका शब्द ।
 कूनीशिका सं=कूनीश ।
 कूनीश सं—चिड़ियोंका शब्द ।
 कूनीश सं—पर्वत-चूड़ा, पहाड़की चोटी, ढेर,
 राशि (अन्नकूनीश), पहेली, समस्या
 (वागकूनीश) । —कूनीश वि—समस्या-पूर्ण,
 अस्पष्ट, गूढ़ । —कूनीश (-अ) सं—समस्या-
 पूर्ण वाद-विवाद । —कूनीश सं—कुटिल
 राजनीति ।
 कूनीश सं—कूनीश कुनीश, छेद, छराख (कूनीश) ।
 —कूनीश स—कूनीश का मेंढक, जिसे बाहरका
 ज्ञान नहीं है ।
 कूनीश सं—दबडी ।
 कूनीशिका वि=कूनीशिका ।
 कूनीशिका सं—कूनीश का जल ।
 कूनीश सं—कुदान, छलांग, नाच ।
 कूनीश (-अ) सं—कूनीश कूनीश ।
 कूनीश सं—तीर, तट, किनारा । —किनारा स—
 किनारा, सीमांसा । कूनीश कि वि—
 लबालब । —कूनीश वि—लबालब—तीरके
 उपरसे बहता हुआ ।
 कूनीश (कूनीश) स = कूनीश ।

कृच्छ्र—(-अ) स—दुःख, कष्ट, तपस्या ।
 वि—कष्टसाध्य, कठिन, मुष्किल ।
 कृत् (-अ) वि—किया हुआ, प्राप्त (-विण,
 कृतार्थ) । —कथा वि—काम करनेमें समर्थ,
 दक्ष, निपुण, अनुभवी । —कार्य (-अ)
 वि—कामयाव, सफल । —कृता (-अ) वि—
 कृतार्थ । —नात्र वि—विवाहित । —निश्चय
 वि—सफलताके विषयमें मशय रहित ;
 जिसने कर्तव्य-निश्चय कर लिया है । —विष्णु
 (-अ) वि—विद्वान् सुशिक्षित ।
 कृशाक्षनि वि—मिले हुए दो हाथ । कृशाक्षनि-
 भूटे क्रि वि—हाथ-जोड़े ।
 कृशाक्ष (-अ) स—यमराज ।
 कृशार्थ वि—सफल, कृतार्थ ।
 कृतिष्ठ (-अ) स—योग्यता, कावलियत ।
 कृती वि = कृतकर्ता ।
 कृत्तन स—कर्तन, काटनेकी क्रिया, कतरनी ।
 कृत्ताकृताक (-क्व-अ) स—कृपादृष्टि ।
 कृत्ति स—कौटे केचुए जातिका कीड़ा, कृमि ।
 कृत्त (-अ) वि—व्राणा क्षीण, शीर्ण, दुबला-
 पतला ।
 कृत्तास स—अग्नि, आग ।
 कृत्तिष्ठ (-अ) वि—दुबला-पतला, रुग्ण ।
 कृत्तान स—ईसाई ।
 कृत्तास स—किसान, खेतिहर ।
 कृत्ति स—संस्कृति culture
 कृत्त (कृष्ण-अ) वि—कृष्ण, काला, श्यामल ।
 स—श्रीकृष्ण ; काला रंग, काक, लोहा ।
 —कात्र वि—काला शरीर वाला, काला ।
 —कनि स—एक छफट फूल । —कृष्ण स—
 एक लाल फूल, पनसियाना । —कृष्ण (-अ)
 स—लोहेका मुरचा, जग । —कृष्ण स—
 मगरेला, काला जीरा । —कृष्ण स—
 मृत्यु । —कृष्ण (-अ) स—काला नाग ।

—मात्र स—काला मृग । कृष्णाञ्जन स—काला
 मृग-झाला । कृष्ण (-अ) वि—काला-सा,
 कुल काला । कृष्ण जीव स—ईश्वरका सृष्ट
 प्राणी ; वेचारा ।
 कृ मर्व-जोन (आदमी) । स—कर्मकी
 विभक्ति (ब्रह्म, रामको) ।
 कृंटे स—कुत्तेके रोनेकी आवाज ।
 कृंटे सर्व-दश कोटि (आदमी) ।
 कृंटेष्टि, कृंटेष्टे स—एक काला जहरीला साँप ।
 कृंष्ट (कंठडा स—केवड़ा, केवड़ेके फूलसे
 सुगन्धित जल ।
 कृका स—शूद्रव्र ढाक मोरकी बोली ।
 कृंष्टे क्रि वि—फिरसे, शुरूसे । —कृंष्ट स—
 फिरसे प्रारंभ ।
 कृंष्ट स—केचुआ ।
 कृंष्ट स—किस्सा, कहानी, निन्दा, कुत्सा ।
 कृंष्टे वि—काहेवर कामके योग्य ; कुशल,
 निपुण ।
 कृंटे कृंटे (कंट कंट) स—खरी-खोटी
 (—कट्टे बना) ।
 कृंष्टेनि, कृंष्टेनि स—पानी गरम करनेका नल
 वाला पात्र, केटली ।
 कृंष्टे, (-कृं) वि—लकड़ीका बना । स—
 एक कछुआ ।
 कृंष्टे स—डॉण मिट्टीका वस्तु, बाँसका
 नल जिसमें तेल आदि रखा जाता है ।
 कृंष्टे, कृंष्टे स = कृंष्टे ।
 कृंष्टे स—गताका, निशान भंडा ।
 कृंष्टे स—कित्ता, कायदा, श्रु खला ; गुच्छा ।
 कृंष्टे स—बड़ि, बड़े, श्रुत्त कित्ताव ।
 कृंष्टे स—गताका, निशान भंडा, एक ग्रह ।
 कृंष्टे स = बालवान ।
 कृंष्टे स = कृंष्टे कुर्सी ।
 कृंष्टे, कृंष्टे वि—ब्राह्म मोटा, स्थूल ।

कैन (कैनो) क्रि वि—कि डेह, कि डेह, कि
कारण क्यों, किस लिए, पुकारने पर यह
प्रश्न है। कैन ना—क्यों कि।

कैना क्रि = किना।

कैनलारा स'—कनस्तर, टीनको बरतन।

कैलीडूठ (-अ) वि—केन्द्रमें एकत्रित।

कैलीय (-अ) वि—केन्द्रका central

कैली, कैली-सं—अनेक पैरों वाला एक
कीड़ा।

कैवटे, कैवटे स'—कैवर्ध धीवर, कैवट।

कैवन वि—उधू कैवल, सिर्फ, शुद्ध। क्रि वि—
सदा, निरंतर (—कौनछे)।

कैवा सव—कै कौन?

कैमन (कैमन) वि—कि प्रकार किस प्रकार
का, कैसा। स'—घबडाहट (गन—कत्रे)।

—कैमन, —कैन (-जैनो) क्रि वि—सदेह-
जनक, अच्छा नहीं (—कैकछे)। —उत्र (-अ)
वि—अनोखा। [(—कौना)]।

कैमिकाल वि—रासायनिक, बनावटी, नकली

कैरा स'—कैतकौ कैवड़ा। —वाठ अन्य
—वाश्वा! क्या बात! शाबाश। —र स'—

इज्जत, खातिर; परवा care (काकै—
कत्रि ना); यत्न, भय, मार्फत, पता (अभूकैर
कैशारे गज निशिउ)। —वि स'—क्यारी
(कूनगाछे—)।

कैरे स'—मारवाड़ी, काइयाँ।

कैरानी (करानी) स'—कर्मचारी, मुहार्रिर
छक, मुन्शी। —गिबि स'—मुहार्रिरका
काम, नौकरी, कुर्की। [करामात।

कैराय, (-शति) स'—वाशश्रि बहादुरी,
कैराय स'—भाड़ा, किराया। [किरासन।

कैरायिन, (कैरा-) स'—मिट्टीका तेल,

कैरानि स'—निपुणता, दक्षता, योग्यता।

कैराय स'—झाग।

कैनि, कैनी स'—रति, प्रमोद, विहार।

कैनि वि—काला काला। —कौना स'—कृष्ण।

कैनेकवार, (-कौवि) स'—कलंक, लज्जाजनक
कारण। [जय करना, दखल करना।

कैना स'—शर्श किला। —कौने जेवरा क्रि-

कैना स'—कून केश, बाल। —कौटे स'—कूकून

चीलर, जुआँ। —विशाम, —कौना, —कौना

स'—कून बांध, कून बांधाना केश संवारना।

कैनाव (कैनाव) स'—कृष्ण, विष्णु।

कैनाव स'—कैसर, पराग, पुष्परज, जाफरान।

कैनाव स'—गिश सिंह। [खीचाखींची।

कैनाकैनि स'—कूनाकूनि परस्पर, बालोंकी

कैनाव स'—कौरे। [—मर जाना।

कैने (-अ) स'—कृष्ण, कन्हैया। —कौना क्रि

कैना स'—गामला, गकदगा मुकदमा; विषय।

कैना सव—कैने कोई।

कै क्रि वि, स'—कैने।

कैकैनी स'—भरतकी माता। [जुआ।

कैकैना स'—कौकैना, हल कपट, घोखा,

कैकैना वि—कैना-सम्बन्धी।

कैकैना स'—जवाबदिहि कैफियत, जवाबदेही,
जमा खर्चका बाकी, रोकड़-बाकी।

कैकैना (-अ) स'—एक जाति, धीवर, कैवट।

कैकैना वि—कैना-सम्बन्धी, कैनाका।

कैना स'—कम्पनीका सक्षिप्त रूप, क०।

कौ, कौका, कौक स'—कौक ऐसा शब्द।

कौक, कौक स'—कोख, गर्भाशय।

कौक वि—कूकित घुंघराले (बाल)।

कौकान (-नो), कौकाना (क्रि परि २१)

—कूकित कूना वा इश घुंघराले बनाना या
होना, सिकुड़ना, सिकोड़ना। वि—सिकुड़ा
हुआ, घुंघराले।

कौक स'—थोड़ा जला हुआ कोयला coke.

कौकन स'—लाल पत्र।

कौंकान (-नो), कौंकानो (क्रि परि २१)

—कराहना । कौंकानि सं—कराह, आह ।

कौंकिन सं—कोयल । स्त्री—काकिना ।

कौंकिन सं—कोकीन ।

कौंठ, कौंठ सं—कोचबिहार राज्यका आदि निवासी; मछली मारनेका भाला-सा एक अस्त्र जिसके मुंहमें बहुतसे सिकचे रहते हैं ।

कौंठका वि—कृच्छि सिकुड़ा हुआ ।

कौंठकान (-नो), कौंठकानो (क्रि परि २१)—

कौंठकानो सिकोड़ना ; सिकुड़ना ।

कौंठड़ स—पहने हुए कपड़ेमें कुछ लेनेके लिए बनाया हुआ आधार या भोला, पसारा हुआ पछा ; गोदी ।

कौंठमान, कौंठमान सं—कोचवान ।

कौंठ सं—पहनी हुई धोतीका सामनेवाला बटोरा और लटकाया हुआ अंश ।

कौंठान (-नो), कौंठानो (क्रि परि २१)—

निकन डालना, चुनन डालना । वि—चुनन डाला हुआ । [जिसमें लक्ष्मी-पूजा होती है ।

कौंठाग्र सं—आश्विन शुक्ला पूर्णिमाकी रात्रि

कौंठे सं—अधिकार ; जिद, प्रतिज्ञा, किला ;

कोट (पहनावा) । [दूत । स्त्री—कूटनी ।

कौंठेना (कोटना) सं—कुटना, व्यभिचारका

कौंठे सं—थैल पेटके तनेमें गढ़ा ; आँख

का गढ़ा ; छोटा कमरा ।

कौंठे (क्रि परि ६)—कूठे काटना (उग्रकात्रि

—, नाह—) ; छेँटा कूटना (शून्—) ।

वि—कटा हुआ (—उग्रकात्रि, —नाह) ।

कौंठेन (-नो), कौंठेनो (क्रि परि १३)—

शूर्ण घनवाना, कटवाना, खुदवाना (भिज—) ।

कौंठेन सं—कोतवाल ; पूर्णिमा और

अमावस्याके चारकी रात ।

कौंठि, (-ठी) सं—सौ लाख, करोड़ ; धनुष

का प्रान्त ।—गठि सं—करोड़पति ।

कौंठा सं—थाड़ा घर पक्का मकान ; थैलिका महल, इमारत ; दूठि कोठी ; ध्रेणी ; मकान (नाँठ—, मिट्टीका मकान) ।

कौंड़ सं—बाँस वेंत आदिका अंकुर ।

कौंण सं—कोना ; मकानका भीतरी अंश ।

कौंण सं—कोना, कोण ।—इनि क्रि वि—इस कोनेसे उस कोने तक, तिरछे ।

कौंठ, कौंथ सं—कूटन कूथनेकी चेष्टा ।

कौंठान (-नो), कौंठानो, कौंथान (-नो),

कौंथानो (क्रि परि १४)—कौंठ जेठ

कूथना ; काठगान कराहना ।

कौंथानि, कौंथानि सं—कुन्थन, आह ।

कौंठावान सं—कौंठान कोतवाल । [काम ।

कौंठावानि स—कोतवाली ; कोतवाल्का

कौंका (कोत्का) सं—मोटा डंढा ।

कौंथा, कौंथाव क्रि वि—कान शान कहाँ ।

कौंथाव वि—कहाँका । कौंथावे, (कोत्थके)

क्रि वि—कहाँसे ।

कौंठ (कोठण्ड) सं—क्षर धनुष ।

कौंठ सं=कौंठन । कौंठनिश, कौंठन वि

—भगड़ाहू ।

कौंठान (कोठलानो), कौंठानो (क्रि परि

१६)—फावड़ेसे मिट्टी खोदना ।

कौंठान स—फावड़ा ।

कौं, कौं (कोन्) सर्व—क कौन ; कि

क्या । वि—कौं कोई, किसी (—दिन

जेथवे जे ठल गेछे) । क्रि वि—कहाँ (जूनि

—यागत्र वजले) । कौंठ, कौं (कोनो)

वि—कोई, कोई भी, एक भी, किसी भी ।

कौंना स—कोना ।—इनि, (—कौनि)

क्रि वि—एक कोनेसे दूसरे कोने तक, तिरछे ।

कौंनाठ सं—कोना । क्रि वि—कोनेकी ओर ।

कौंनल स—भगड़ा, रार, कलह ।

कौंण स—बाग, ज़ाव गुस्ता । कौंण

वि—त्रागी क्रोधित, गुस्सावर, खफा।

स्त्री—कोपना। [कोपे काणे]।

कोप सं—तीखे भारी शस्त्रकी चोट (एक कोपान (-नो), कोपानो (क्रि परि १४)—चोट दे कर काटना (गाछ—, कोपान दिखे गाछी—)।

कोपित (-अ), कोपावित (-अ), कोपाविष्ट (-अ) वि—क्रोधित, खफा, गुस्सावर, उत्तेजित।

कोष्ठा सं—कोप्ता, भूना हुआ मांस।

कोमल सं—राजा, कठि कमर। —पाठ सं—करधनी। —वक् सं—कमरबंद, पेटी।

कोमल वि—नरम मृदु, कोमल, मुलायम; रहमदिल (—शुद्ध); ललित, सुकुमार, मधुर। —ठा, —इ सं—मुलायमियत, नमी।

कोम्पानी सं—कम्पनी। —त्र कागज सं—अंग्रेजी अमलके सरकारी प्रणका स्वीकारपत्र। [केशमेव—]।

कोशा सं—कोश कोया (कांठाजेल—, कोशक सं—भूख, कुंड़ि कली, कोंपल।

कोशठा, कोठा सं—कुर्ता।

कोशबानि, (-नो) सं—कुरबानी।

कोशा वि—आनकोशा नया (—कागड़)।

कोशा (क्रि परि ६)—कूझनि दिशा ठाठा खुरचनी से करोना। वि—खुरच कर बनायी हुई वस्तु, खुरचन (नात्रकेल—)।

कोशान सं—कुरान।

कोश सं—कोशठा।

कोश सं—कोरमा।

कोल सं—कोल, अक गोदी (कोले करा वा नोत्रा); कोल, एक जगली जाति। —कोश क्रि—छातीसे लगाना, आलिंगन करना।

कोलन सं—कोलन, : पेसा चिह्न।

कोनाकूनि सं—आलिंगन, कोली।

कोना बा सं—बड़ा मेंढक।

कोनाशन सं—शोरगुल, गुलजापाड़ा।

कोश सं—कोश कोष; कोस, दो मील।

कोशन, (-ज-) सं—प्राचीन अयोध्या राज्य।

कोश सं—ठाठा खजाना (राज—); संचित धन; आवरण (बीड़—, अणु—); शाश्वत, अधिधान कोष, लुगत (शुद्ध—), कोश कोया (कांठाजेल—); रेशमका कोया। —का सं—शब्दकोष बनानेवाला, रेशम-कीट —वृद्धि सं—फोता बढ़नेका रोग।

कोशा, कोशा सं—अर्घा।

कोशाधक (-कव -अ) सं—शाकाक्षी खजांची।

कोशो, कोशो सं=कूनि।

कोश सं—पाठ पढुआ।

कोश (-अ) सं—घर कमरा; मनाश उदर। —वृद्ध सं—कब्जियत। —वृद्धि सं—दस्त का साफ होना।

कोश सं—जन्मपत्री।

कोशिश सं—कोहनूर हीरा।

कोठ (कउच) सं—कोच, गद्देदार बेच या कुर्सी।

कोठा, कोठा (कउठो) सं—डिबिया।

कोठुक (कउठुक) सं—आमोद, मज्जा, ठूठा, दिल्ली, कौतूहल। कोठुकाव वि—कोठुकावनक आश्चर्यकारक, मजेका। कोठुको वि—आश्चर्य कौतुकिया।

कोठुशन सं—कोठुका कुतूहल, जाननेका आग्रह (—पत्रक, कोठुश्लोकपत्र)।

कोजिली, कोजिली सं—व्याघ्रिष्ठो वैरिस्टर, बड़े वकील।

कोशीन सं—कपनि, म्याडोटे लगौटी।

कोमा सं—बचपन, कारपन।

कोमुदी (कउमुदी) सं—कोमुदी चांदनी।

कोन (कउल) सं—तान्त्रिक; कुलीन।

कोनिक वि—कुलका (खाणत्र)।

कोनिना (-अ) स—कुलीनता, कुलकी मर्यादा।

कोशत्र स—कुशलता, नियुगता, कर्म छल
(कोशत्र ठोका आनात्र)।

कोशत्र (-अ), (-अ), कोशिक वि—रेशमी।

काक स—कलेशसूचकशब्द।

काक स—पहियेके चलनेका शब्द, कच्चा
फलादि काटनेका शब्द। काकत्र काकत्र स—
कचकच शब्द, कच्चा फलादि चवानेका शब्द।

काक काक स—कचकच, झकझक, खरी-खोटी
बातें (काक केके कथा)।

काक स—लात मारनेका शब्द।

काकविन, काकविन स—किरमिच, तिरपाल,
विलायती टाट।

ककन स—काना कानन रोना, रुदन।

कक स—क्रम, सिलसिला, परम्परा (एकादि-
क्रम); अनुसार (उपदेशक्रम); अतिक्रमण
(कानक्रम), धीरे-धीरे (क्रमगत)।

—1 स—गमन, अतिक्रमण। —निन वि—
गनु, गड़ाने ढालवाँ। —विकास स—
अभिव्यक्ति क्रमशः विकास। ककगत कि वि—
अविवक्षा लगातार। ककगत स—सिलसिला।

ककगत कि वि—सिलसिलेवार, क्रमशः।

कक कक कि वि—क्रमशः, धीरे धीरे।

ककक (-अ) वि—क्रमश उच्च।

कक स—अति खरीद। कक वि, स—
खरीदार।

कक स—अतिक्रमण, अतिचरण, (गिनती
में) कौड़ीका तीसरा भाग, सक्रान्ति।

ककक स—क्रिकेट, गेंद-चललेका खेल।

कक स = कक।

कक स—कर्म, कार्य कार्य, क्रिया; असर,
प्रभाव (उपक्रम)। —कक स—शास्त्रीय
या सामाजिक अनुष्ठान, पूजा श्राद्ध विवाह

आदि। —कक (-अ) वि—कार्य करनेमें
आसक्त या तल्लीन। [दिखानेवाला।

कक वि, स—खेलने वाला, खिलाडी, खेल
कक स—कक, (थना) खेल। कक स—
(थना) खिलौना। ककत्र (-अ) वि—
खेलने-योग्य।

कक स—(थना) खेल, तमाशा। —कक
स—खेल-तमाशा। —कक कि वि—खेलके
तौरपर, खेलते-खेलते।

कक (-अ) वि—खरीदा हुआ। —कक स—
देना गोताग खरीदा हुआ गुलाम।

कक स—कक ईसाई।

कक (कक -अ) वि—क्रोधित, खफा, उत्तेजित।
कक वि—निर्दयी, हिंसक कठोर; भयंकर,
खतरनाक, अशुभ। —कक वि—निष्पूरताका
काम करने वाला, हत्यारा।

कक (-अ) वि—खरीदने योग्य।

कक स—अतिगता खरीदार। [है।

कक (-अ) वि—खरीदने योग्य, जिसे खरीदना
कक स—कक।

कक स—कक, अक गोदी। —कक स—
ककपत्र, जो काराग अला द्याप कर पुस्तक
पत्रिका आदिके भीतर दिया जाता है।

कक स—कक, राग गुस्सा। कक
वि—गुस्सैल। ककगत स—गोताग
क्रोधित स्त्रीके लिए एकान्त कोठरी। ककवि
(-अ) वि—क्रोधित, गुस्सावर, खफा।
कक वि—रागी गुस्सैल, चिढ़चिढ़ा।

कक, कक स—कक करोड़। —कक स—
ककगत करोड़पति।

कक स—कक कोस, दो मील।

कक (-अ) वि—थका हुआ, क्लान्त। कक
स—थकावट।

कक स—कक, समिति club

क्राज (क्लाश) सं—क्लास, दर्जा, श्रेणी class
क्रिन्न (अ) वि—गदा, मैला ; भींगा ।

क्रिष्टे (-अ) वि—क्लेशित, दुःखी ।

क्रौव वि—नपुंसक, कायर । —निज (-अ)
सं—नपुंसक लिंग । [गीलापन ।

क्रूफ सं—उबल गइना गीली मैल, तलछट,
कूफि (कचित्) क्रि वि—काथाउ, कूडाफि कहीं ;
कथनउ कभी, कदाचित् ।

क्राथ (काथ) सं—काथ, उवाल कर निकाला
हुआ काढ़ा या निर्यास ।

क्रूडा (खवा) क्रि = खड्डा ।

क्रूण (खन) सं—क्षण, ४ मिनट समय (किछू
—, वल्—), मुहूर्त (उड—) ; थोड़ा समय
(—कान, —शायी) । —क्रूण वि—जो शुभ
मुहूर्तमें जन्मा है, भाग्यवान् । —धडा सं—
विश्व विजली । —उकूव वि—थोड़े समयके
बाद नष्ट होने वाला, अनित्य ।

क्रूणक (खनेक) सं—एक क्षण थोड़ा समय ।

क्रूठ (खत -अ) सं—घा घाव । वि—घाव
लगा हुआ, घायल । —क्रूठ (-अ) वि—
आघातोंसे शरीरके अनेक स्थानोंमें घाव
लगा हुआ ।

क्रूठि (खति) सं—शनि, अनिष्ट हानि, नुकसान ।
—क्रूठि वि—हानिजनक । —क्रूठ (-अ) वि—
नुकसान उठाया हुआ । —क्रूठ सं—क्षतिपूर्ति ।
—क्रूठि सं—हानि-लाभ, नृण-नुकसान ।

क्रूठ्य (खन्तव्य) वि—क्षमाके योग्य, क्षम्य ।

क्रूणक सं—बौद्ध भिक्षु, जैन साधु ।

क्रूणो सं = क्रूण ।

क्रूण (खपा) सं—रात्रि, रात ।

क्रूण (खम) वि—समर्थ (काश—, अर्थ—) ।

क्रूणीय (खमनीय -अ) वि—क्षमा-योग्य ।

क्रूणता (खमता) सं—शक्ति, सामर्थ्य,
योग्यता, प्रभाव (—अ, —गान्, —गानी) ।

क्रूमा (खमा) सं—क्षमा, माफी । (पद्यमें
क्रूमिन्, क्षमा की) । —अ सं—क्षमा-प्रार्थना ।

क्रूमी (खमि) वि—सहनशील, समर्थ ।

क्रूमा (खम्य -अ) वि = क्रूमीय ।

क्रूय (खय) सं—क्षय, हानि, घाटा, नाश ;
तपेदिक, क्षयी ।

क्रूयि (खयिष्णु) वि—नाशवान् ।

क्रूय (खर) वि—क्षर, नाशवान् ।

क्रूय (खरन) सं—रस रस कर चूना, क्षरण,
स्रवण ।

क्रूय (खरा) (क्रि परि १३)—क्षरित होना, चूना ।

क्रूय, क्रूय (खात्र -अ) वि—क्षत्रिय-सम्बन्धी ।

क्रूय (खान्त -अ) वि—निवृत्त, विरत ।

—क्रूय क्रि—रुक जाना, निवृत्त होना ।

क्रूयि (खान्ति) सं—क्षमा, सहनशीलता ।

क्रूयन (खालन) सं—प्रक्षालन, धोना ;
मोचन, रहित करना (मोच—) ।

क्रूय (खिदे) सं = क्रूय । [हुआ ; पागल ।

क्रूय (खिस -अ) वि—फेका हुआ, छितराया

क्रूय (खिप्र -अ) वि—क्रूय शीघ्र, जल्दी ।

—क्रूयि वि—छटेछटे फुर्तीला । —क्रूयि
सं—फुर्ती, तेजी ।

क्रूय (खीन) वि—क्रूय, शीघ्र, द्रोण दुबला-
पतला, महीन (—कटि, —मथा), क्षयप्राप्त ।

—क्रूयि वि—अध्यास थोड़े दिन जीने वाला ।

क्रूयमान (खीयमान) वि—क्षयशील ।

क्रूय (खीर) सं—दूध दूध, गाढ़ा दूध, खोआ ।

—क्रूय सं—भीतर खोआ दिया हुआ चिपटा
बड़ा रसगुल्ला ।

क्रूय (खुन्न -अ) वि—क्षोभित, आशा-भंग होने
या किसीके बुरे बर्तावसे दुःखित (मन—,
—मना) ।

क्रूय (खुत) सं—क्रूय भूख (—अभ्यास) ।

क्रूय (खुद -अ) वि—छोटा छोटा, नाटा ; नीच,

कमीना, छोट्टे दिलका (—छेडा, —गना) ।

कूदाशत्रु वि—हीन चित्तवाला ।

कूधा (खुधा) स—भूख; इच्छा, लालसा ।

—भाष्य (-अ) स—भूखकी अल्पता ।

कूधार्ड (-अ), कूधित (-अ) वि—क्षुधातुर, भूखा ।

कून्निवृत्ति (खुन्निवृत्ति) स—भूखकी पूर्ति ।

कूव (खुर) स—छुरा, खुर । —वात्र वि—छुरा सा तीखा । [की भूमि ।

कूव (खेत) स—थेत, कूव खेत, जोतने-घोने

कूव (खेत्र-अ) स—थेत खेत; भूमि;

स्थान (कूव—, जौर्ष—, यूव—); हालत (ए कूव); रेखाओंसे घिरा हुआ स्थान (छट्टाका—; गडग—) । [छत्री ।

कूव (खेत्री) स—क्षेत्रपति, खेतिहर, क्षत्रिय,

कूव (खेप) स—निक्षेप, त्याग (वाग—),

फेकना (पह—); बार, दफा, खेप (एक—); यापन, व्यतीत करना (कान—) ।

कूव (—नौ) (खेपनी) स—नौकावर नाँड़ ढाँड़, नाव खेनेका बल्ला । कूव (—नौ) स—मछाह । [खफा ।

कूव (खैपा) वि—पागल, सनकी; क्रोधित, कूव (खैपानो) क्रि=थेपान ।

कूव (खेसा) वि, स—फेकनेवाला ।

कूव (खोदन) स—नकाशी करनेका काम ।

कूव (—अ) वि—नकाशी किया हुआ ।

कूव (खोदा) (क्रि परि ६)=थूना ।

कूव (खोभ) स—गनछाप खेद, रज;

आलोड़न हलचल, आन्दोलन ।

कूव (खडम) स—एक रेशमी वस्त्र ।

कूव (खडर) स—हजामत ।

कूव (खडरी) स—हजामत ।

थ

थ स—आकाश (—गान, —गोठ; —छर) ।

थ स—थे लावा ।

थ स—थान खली, तेलहनकी सीढी ।

थ स, थ स (खवा) (क्रि परि ७)—क्षयित होना, घिसना ।

थ स, थ स स—खांसनेका शब्द ।

थ स स—पक्षी, चिड़िया । —पडि, —गडि,

थ स स—गरुड ।

थ स स—आकाश-मण्डल ।

थ स स—चुभने या कट जानेका शब्द । थ स,

थ स स—बार बार 'खच' ऐसा शब्द । थ स

स—जोरसे 'खच' शब्द । थ स—हलका

'खच' शब्द । [शोरगुल ।

थ स स—थ स लगातार कड़ी आवाज;

थ स वि, स=थेव । [(ब्रह्म—), जडाऊ ।

थ स (-अ) वि—खोद कर जड़ा हुआ

थ स स—खचर; घूर्त (गाली) ।

थ स स—वाक्काश खोन्चा ।

थ स (-अ) वि—थोड़ा लगाड़ा ।

थ स, (नौ) स—खंजरी, डफलीकी तरहका एक छोटा बाजा ।

थ स स—खट शब्द । थ स, थ स स—भारी

'खट' शब्द । थ स स—हलका 'खट' शब्द ।

थ स, थ स-थ स, थ स-थ स स—बार

बार खट-खट शब्द । थ स-थ स स—खटखट

शब्द ।

थ स स—गन्ध सदेह, खटका ।

थ स स—खुशकीका लक्षण प्रकाश (उथिर—कडा) । थ स वि—खुश (—मेख) ।

थ स स—खटखट शब्द (छूटा गडर—कट

छना) । थ स (खट-अ मट-अ), थ स वि—

दुर्बोध, कठिन ।

शब्दांश, शब्दांश स—खेधवार, बिल्लीकी तरहका एक जंगली जानवर जिसके शरीरसे तेज बंदबू निकलती है।

शब्द (खट्टा) स—खटिया, पलंग । [भूमि ।

शब्द, शब्द स—खड्ड, पहाड़की गहरी नीची

शब्द स—सूखी घास, फूस, पुआल । शब्द वि—

फूससे छाया हुआ, फूसका बना (—बन) ।

शब्दशब्द, शब्दशब्द स—सूखी पत्तियोंका शब्द ।

शब्दशब्द स—फिलमिली ।

शब्द स—खड़ाऊँ ।

शब्द स—खड़िया ।—शब्द स—खड़िया मिट्टी ।

शब्दिका, शब्दिक स—दाँत खोदनी, खरका ।

शब्द स—शब्द खड्ड, तलवार । —शब्द वि—

मारनेके लिए उतारू । [तोड़ने लायक ।

शब्दनीय (—अ) वि—खण्डन करने योग्य ;

शब्दान (—नो), शब्दाना (क्रि परि १६)—खंडन

करना ; व्यतीत करना (विभक्त—) ।

शब्दित (—अ) वि—खंड किया हुआ, कटा ।

शब्द, शब्द स—छिछि खत, चिट्ठी ; स्वीकारपत्र

(नाम—) ; दस्तावेज । (नाक— स—जमीन

में नाक रगड़ कर दोष स्वीकार और आगे

वैसा अपराध न करनेकी प्रतिज्ञा) ।

शब्दान (—नो), शब्दाना (क्रि परि १०)—

हिसाब करना ; खतियाना ।

शब्दज्ञान, शब्दज्ञ स—खाता, खतियौनी ।

शब्द स—खड्ड ।

शब्द स—शब्द कथा ।

शब्द स—शब्द खहर ।

शब्द स—खरीदार, गाहक, क्र सा ।

शब्दांश स—जुगनू ।

शब्द वि—खोदनेवाला ।

शब्दशब्द स—धातु-खंडोंके टकरानेका शब्द ।

शब्दशब्द वि—कड़ा, कर्कश (—गना,—

जाँघाच) ।

शब्द स—खोदाई, खोदनेका काम । शब्द (—अ) वि—खोदा हुआ । शब्दनीय (—अ) वि—खोदने योग्य ।

शब्द स—एक ज्योतिषी स्त्री (शब्दात्र वचन, भाष और भङ्गुरीका वाक्य) ।

शब्द स—आकर खान, खानि । शब्द वि—खानमें उत्पन्न होने वाला ।

शब्द (—अ) वि—शब्द खोदा हुआ ।

शब्द (—अ), शब्दा, शब्दा स—मिट्टी खोदने का एक औजार, सावर ।

शब्द स—शब्द रसोईके समय तरकारी उलटने की सीधी कलछी, ख ती ।

शब्द (—अ) स—शब्दा, गर्ह खदक, फसल ।

शब्द वि शीघ्र, जल्दी । क्रि वि—शब्द

एकाएक, अचानक (—करे) ।

शब्द स—धोखा, धूर्तका जाल ; शब्दात्र

खपड़ा, शब्दात्र जाण खपरैल ।

शब्द स—गराब खबर, समाचार, गफान खोज,

पता, उद्भावधान देखरेख (—देखरा,—नेखरा,

—ग्राथा,—ग्राथरा) । —शब्द वि—होशियार ।

—शब्द स—सावधानी, खबरदारी, देखरेख ।

शब्दात्रशब्द स—समाचार आदान-प्रदान ।

शब्दात्र कागज स—समाचार-पत्र, अखबार ।

शब्द स—शब्द, ग्रांथ खमीर ।

शब्दात्र वि—खेरा । स—एक मछली ।

शब्दात्र स—दान-खेरात । शब्दात्रो वि—

खराती, दान-सम्बन्धी ।

शब्द स—शब्द खेर, कथा ; कुशल,

खैर । —शब्द वि—खुशामदी ।

शब्द वि—शब्द, ठीक, उद्य तेज, तीखा, तीव्र,

कड़ा । स—गदहा, खच्चर ।

शब्दशब्द क्रि वि—ठाड़ाठाड़ि जल्दी जल्दी, खट

खट आवाज करते हुए (—करे जा) ।

शब्दशब्द वि—चतुर, फुर्तीला, तेज ।

शब्दकोश स—शब्द खरहा ।

शब्द, शब्द स—शब्द खर्च (—भड़ा, खर्च लगाना, लागत लगाना) । —शब्द (—अ) स—तरह तरहके खर्च । शब्दाल (—अ) स—अत्यन्त अधिक खर्च । शब्द, शब्द वि—अधिक खर्च करने वाला, फिजुलखर्च ।

शब्दवि—शब्दकोश तीखा (अस्त्र) ।

शब्दबूझ, (—बूझ, —ज) स—खरबूजा ।

शब्दकोश वि—शब्दकोश । [स—तीव्र स्रोत ।

शब्दकोश (खरस्रोत) वि—तेज बहाव वाला ।

शब्द स—खरहा, तेज धूप, वर्षाका अभाव । वि—ज्यादा भूना हुआ ।

शब्दान (—नो), शब्दानो (क्रि परि १०)—ज्यादा भूना, भूना कर जला डालना ।

शब्द स—खर खरीद । —शब्द, शब्द वि, स—खरीदार, खरीदनेवाला । शब्द वि—खरीद खरीदा हुआ ।

शब्द स = शब्द ।

शब्द स—शब्द, शब्द खपड़ा, मिट्टीके बर्तन का टूटा टुकड़ा ; भिक्षापात्र ; खोपड़ी ।

शब्द (—अ) वि—शब्द, शब्द नाटा, छोटा । स—सहस्र करोड़की सख्या । —शब्द वि—नाटा) । [(—शब्द) ।

शब्द वि—खल, दुष्ट, धूर्त, कपटी । स—खरल शब्द शब्द स—हँसीका शब्द, ठहाका ।

शब्द स = शब्द ।

शब्द, शब्द स—मुसलमानोंके धर्मगुरु राजा, खलीफा, उस्ताद, दर्जी ।

शब्द स—एक छोटी मछली ।

शब्द (खर्च) स—खसकनेका शब्द । —शब्द स—कपड़ा पुआल आदि रगड़नेका शब्द, खस । —शब्द स—खसखस शब्दका होना । —शब्द वि—खसा, ऊँचानीचा, खुरदरा ।

शब्द (खर्च) स—मसौदा, मसविदा ।

शब्द (खर्च) स—पति, खसम ।

शब्द (खर्चा) (क्रि परि १)—खर्चा खर्च अलग होना, टूटना, घसना (नष्ट—, टूट—) ; निजलना (मृत्त शब्द—), ढीला होना (दानखर्च दाख—) ।

शब्द (—नो), शब्दानो (क्रि परि १०)—खर्च खर्च अलग करना ।

शब्द स—शब्द खान, एक उपाधि ।

शब्द स = शब्द । क्रि—(में) खाता हूँ ; (हम) खाते हैं ।

शब्द स—लालच, लोभ, लालसा ।

शब्द शब्द स—शब्दकोश भोजन-खर्च ।

शब्द-शब्द स—खानेकी लालसा प्रकाश (—शब्द) ।

शब्द वि—बहुत अधिक खा सकने वाला ।

शब्द (खावा) (क्रि परि ८)—खाना ; पीना, (चन—, शब्द—, जाना—) ; सेवन करना (शब्द—, शब्द—, शब्द—) । स—भोजन, खाना (—शब्द शब्द) । वि—खाया हुआ (शब्द—, शब्द—) ।

शब्द (—नो), शब्दानो (क्रि परि १६)—खिलाना, भोजन कराना । [भाव ।

शब्द, शब्द (खर्चा), शब्द स—शब्द शब्द स—अभाव, चाह ; लोभ ।

शब्द, शब्द स—गला साफ करनेका शब्द (शब्द-शब्द) ।

शब्द, शब्द (स्त्री) वि—खानेवाली (गाली) (शब्द—) ।

शब्द स—शून्यता, खालीपन, सन्नाटा ।

शब्द, शब्द स—एक लम्बा तृण, इसके ढंढलकी कलम बनायी जाती है, सरपत ।

शब्द स—शब्द पिंजड़ा ; अस्तिपजर, शरीर (—शब्द, प्राणोंका शरीर-त्याग) ।

शौच सं—नशा कौक दरार ; तह, शिकन ।

शाखना सं=शाखाना ।

शाखा सं—बह-लत्र-यूक मयदात्र मिष्टान्न विशेष खाजा ; कटकऽ चवाने पर जिसमें कचर-कचर आवाज होती है (—कांठान), मूख (—गोंयात्र) ।

शाखाक्षी सं—खजानची ।

शाखाना सं—बाखश, कर मालगुजारी ।—थाना सं—दनागात्र खजाना ।

शाखा थं। सं—नवाधी चाल दिखाने वाला ।

शाटे सं—परीक्ष तखता ; तखतोसे बनी बड़ी चौकी ; शाटिवा चारपाई ।

शाटे (खाटो) वि—नाटा, छोटा (काने—, ऊंचा छुनने वाला) ।

शाटे (क्रि परि ३)—पत्रिश्रम कर खटना, मिहनत करना , काममें लगना, योग्य होना (अ कथा शाटेवे ना) ; व्यापारमें लगना (टोका शाटेछे) । वि—जिसके लिए मेहतरको खटना पड़ता है (—पात्रथाना, उठौआ पैखाना) ।

शाटेन (-नो), शाटेनो (क्रि परि १०)—काममें लगाना (जन—, मिष्टी—), जबरदस्ती काम कराना ; व्यापारमें लगाना (टोका—), टोडान लटकाना (मशात्रि—, पद—) ।

शाटिवा सं—चारपाई ।

शाटिवा वि—मिहनती, परिश्रमी ।

शाटे, शाटे वि—बिछक, आग्न खालिस ; शुद्ध, असली (—गाना, —छन) ; सारवान (—कथा) ।

शाट्रेनि सं—गहन९ मिहनत, परिश्रम ।

शाट्रेनि सं—खटोली, डोली ।

शाटो, शाटे (-टो) वि—छाटे छोटा ; बेंटे नाटा ; नीचा (—गला) ; हीन ।

शाठो वि—टक खट्टा ।

शौफ सं—जमाया हुआ गुड़, खाँड़ ।

शाड़ा वि—दशग्नान खड़ा ; डंठलके आकारका फल (गझिना—) ।

शाड़ाइ सं—ऊंचाई, चढ़ाई ।

शौड़ा सं—थड़ग बलिका बकरा आदि काटने की एक चौड़ी और भारी तलवार ।

शाड सं—चाँदीका कगन ।

शाड (-अ) वि—थनित खोदा हुआ । शाड (खाव्) सं—खड्ड, गढ़ा, खोदा हुआ स्थान, पोखरा, खाई ।

शाडक सं—क्षी देनदार, कर्जदार ।

शाडा सं—हिसाब लिखनेकी किताब ।

शाडिवा सं—गमान मान, आदर, खातिर (ठाकत्रिवा शाडिवा) ।—इमा सं—निश्चयता ।

वि—निश्चित, बेफिक्र । —नामात्र वि—बपरवाह, जो किसीकी खातिर नहीं करता ।

शाडून सं—ग्रुनमान भिक्षात्र नामाञ्च मुसलमान स्त्रियोंकी एक उपाधि ।

शाद सं—गान सोने-चाँदीमें मिलावट, सगीत में नीचा स्वर, गढ़ा ।

शौदा, थैदा (खँदा), शौदा वि—जिसकी नाक बँठी हुई हो, नकबँठा । स्त्री—शौदी, थैदी (खँदी) ।

शौदा (-अ) वि—खाने-योग्य । सं—खाद्य वस्तु ; भोजन, खाना । —शौदक मशक सं—स्वाभाविक शत्रुता । —थाग सं—खाद्य वस्तुओंकी पुष्टई चीज vitamin

थान सं—सख्या (इहे—थाना) ; स्थान (कान थाने, अथाने, उथाने, जथाने) ।

थाना सं—डोवा पोखरा ; गढ़ा, बावचीका पकाया हुआ खाना ; स्थान (बाना—, डाखान—), सख्या (पाठ—मशात्रि), निर्देश करने वाला प्रत्यय (शठ—मयना) । -प्यारके अर्थमें थानि (ग्रुथथानि मयन) ।

थानिक, थानक सं—कुछ क्षण । वि—थोड़ा

(—तन); ल्याभग (नईन शानक.
न'शानक)।

शंभु स—काय म्यान, खाना (छानावापद—,
छानावा—). मेल (रुश—शंभु ना)। —शंभु
क्रि—मेल होना, पटरी बटना। —शंभु वि—
अप्रासंगिक, उटपटांग।

शंभु भा वि—झूठ खफा, क्रोधित।

शंभु स—खरड़ा, मिट्टीके वर्तनका टूटा
टुकड़ा, ठीकरी। शंभुदेन स—खपरल,
खपड़ा। [(—शंभु, ।

शंभु वि—छानावा गाढ़ी बुनावटका
शंभु स—हथेली भर; पंजा (—शंभु,
—शंभु); कुत्ते आदिका काटना। शंभु
स—खानेका अधिक परिमाण, बड़ा कौर
(—शंभु)।

शंभुन (खावलानो), शंभुनाना (क्रि परि १६)
—शंभुन (कुत्ते आदिका) काटना या
पंजा मारना।

शंभु स—खाद्य, खाना, भोजन; जलपान
की मिठाई आदि। वि—खानेका, पीनेका
(—छन)। [(छन—शंभु)।

शंभु स—अतिम सांस, सांस लेनेकी चेष्टा
शंभु स—लिफाफा, खाम; खम्मा।

शंभु, शंभु क्रि वि—झंझ एकाएक;
अकस्मात् विना कारण।

शंभुशंभु स—मौज, मनकी उमग।

शंभुशंभु वि—मनमौजी।

शंभुन (खाम्बानो), शंभुनाना (क्रि परि १६)
—पंजा मारना, नाखूनसे छीलना।

शंभु स—पजेकी मार, नाखूनोंकी पकड़।
(लघु अर्थमें शिष्टि)। [खत्ता।

शंभु स—अनाज भाड़ने या रखनेका स्थान,
शंभु स—सड़ा गुड़ या मसाला मिला हुआ
तम्बाखू, खमीरा।

शंभु स—छट, थग खम्मा।

शंभु स—खम्बाज राग।

शंभु वि—नक्त, रक्त खराब, बुरा (—रुश,
—लोद); अशुभ अस्वस्थ (शंभु—);
अशुभ मनहूस (—नक्त)।

शंभु स—हानि, बुरा बर्ताव।

शंभु स—रातिन खारिज; परिवर्तन (नक्त
—रुश)।

शंभु स—शंभुशंभु नाला; खोदी हुई नहर
या नदी; खाल, चमड़ा।

शंभु स—रुश रीहार्ड, छुटकारा; प्रसव।
—रुश क्रि—प्रसव कराना; मुक्त करना,
छुड़ाना। —रुश क्रि—प्रसव होना, मुक्त
होना। —शंभु क्रि—जेलसे छुटकारा पाना।

शंभु स—खलासी, जहाजका नौकर।

शंभु वि—खाली; छूट सिर्फ (—रुश छन
शंभु?)। क्रि वि—हर समय (—रुश)।

शंभु स—मछली रखनेका पि जड़ा।

शंभु वि—खास, मुख्य; अपना (—रुश)।
—रुश स—जो जमीन मालिकके दखल
में है।

शंभु वि—अच्छा, उमदा, खासा।

शंभु, (—गौ) स—बधिया, खस्सी, बकरा।

शंभु, शंभु वि—विकृत, बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट
(तिन नक्त शंभु—)।

शंभु स—गनाखद मनमुटाव।

शंभु, शंभु (क्रि परि ५)—छाना खीचना। स—
अगकी अकड़ (शंभु भा—)।

शंभु, शंभु स—छाना विकृत मुख-भंगी,
अगकी अकड़।

शंभु (—नो), शंभुनाना, शंभुनाना (क्रि परि
११)—मुह बिगाड़ना (रुश—, शंभु—);
अग अकड़ना।

शिष्टि स—खिचड़ी, पचमेल वस्तुएं।

थिठेथिठे सं—अप्रसन्नता, चिढ़। थिठेथिठे वि—चिढ़चिढ़ा।

थिठेथिठे सं—हर समय डाँट या फटकर। थिठेथिठे वि—जो हर समय झगड़ता या फटकारता है। थिठेथिठे सं—झगड़ा और फटकार।

थिड़कि सं—पिछला दरवाजा; जंगला।

थिद, थिदे सं—क्षुधा, भूख।

थिदमान वि—दु खित, खेदयुक्त, आर्त।

थिमठान, थिमठानो क्रि=थामठान।

थिमठि सं—ठिगठि चुटकी।

थिमठान सं—खयानत, हानि।

थिन सं—अंगन, हड़का अगला, सिटकिनी (नवकाश—नवकाश वा नागाँव), अंगकी अकड़ (—धरा, —नागाँव)।

थिनथिन सं—हसीका शब्द, ठहाका।

थिनाउ स—खिलभत, राजाकी दी हुई इज्जत की पोशाक।

थिमान सं—मेहराब।

थिनि सं—खीली, पानका बीड़ा।

थिखि सं—अश्लील शब्द, गदी गाली (ग्रंथ—कत्रा ना)।

थूकथूक सं—खाँसीका हलका शब्द।

थूकी सं—छोटी लड़की (प्यारमें थूक)।

थूकश, थूकशो वि—फुटकर, खुदरा, तरह-तरह का (—थूक, —बिखी, —काश)। सं—रेजगारी। [तलाश करना।

थूजा, थूजा (क्रि परि ६)—खोजना, ढूँढ़ना,

थूकि सं—खोचना। —थोच सं—खोचना ढाँकनेका रुमाल।

थूरे सं—खट शब्द।

थूरे सं—कपड़ेका कोना, धागेका सिरा।

थूँठा, थूँठा (क्रि परि ६)—नोचना, खरिकासे कोंचना (नाउ—)। सं—मेख, खूँटी।

थूँठिनाठी सं—किसी विषयका बारीक विवरण, तुच्छ विषय।

थूँठिना, थूँठिना क्रि वि—छानबीन कर।

थूँठुठ (—तो), थूँठुठो वि—चचेरा, पिताके छोटे भाई सम्बन्धी (—जड़े, —दान); ससुरके छोटे भाई सम्बन्धी। (—नवरा, —भाभी)। [थूँठुठो।

थूँठुठ सं—ससुरका छोटा भाई। स्त्री—

थूँठा, थूँठा सं—थूँठुठ, काका पिताका छोटा भाई। स्त्री—थूँठी।

थूँठा, थूँठा (क्रि परि ६)—थनन करा खोदना; जमीन पर ठोकना, प्रशंसासे तंदुरुस्त या भाग्यवान् व्यक्तिको हानि पहुँचाना।

थूँठान (—नो), थूँठानो क्रि=थूँठान।

थूँठी वि, सं—लगड़ी।

थूँठ सं—त्रुटि, ऐब, दोष, खोट (—धरा)।

थूँठथूँठ सं—किसी विषयकी मामूली त्रुटिके लिए असन्तोष प्रकाश। थूँठथूँठ वि—जो हर समय ऐब निकालता या नाराजगी जाहिर करता है।

थूँ सं—खुदी, चावलके कण।

थूँ, थूँ (क्रि परि ६)—खोदना; नकाशी करना, काट कर गढ़ना।

थूँ वि—बहुत छोटा, नन्हा।

थूँ सं—बख़ खून, हत्या, कत्ल।—थूँथूँ सं—एक लाल रंग, खून-खराबा।—छड़ा क्रि—गुस्सेसे खून गरम होना, खून सवार होना।

थूँथो आमाशु स—खून करने वाला अपराधी।

थूँथो, थूँथो वि—हत्यारा। थूँथूँथूँ, थूँथूँथूँ सं—मारकाट, खून-खराबा।

थूँथूँथूँ सं—झगड़ा, तकरार।

थूँथूँ सं=थूँथूँ।

थूँथूँ सं—छोटा कमरा, छोटा खाना।

थूँथूँ क्रि वि—खूँ (—बड़, —डाँव); जरूर

(—पात्रदि); ज्यादा, अच्छी तरह (—कर
था) ।

शुद्धसूत्र वि—खुदसूरत ।

शुद्ध, सूत्र सं—खुर; छुरा, उस्तरा ।

शुद्धशुद्ध स = शुद्धशुद्ध ।

शुद्धा, शुद्धा सं—पात्रा पाया (थाष्ट्र—) ।

शुद्धि सं—कटोरी, छोटा कसोरा ।

थुना, थोना (क्रि परि ६)—खोलना, उघाड़ना ।

वि—थुला । थुनिना वांछना क्रि—खुल जाना ।

थुनिना जेष्ठ क्रि—खोल देना ।

थुनिस—खोपड़ी, सिरकी ऊपर वाली हड्डी
(याथात्र—) ।

थुनताठ (—अ) सं=थुन ।

थुनकि स—भ्रामाग सुखी खाल, रुसी ।

थुनि सं—इच्छा, मर्जी (या—ठाई);
सन्तोष—। थुनी वि—सन्तुष्ट, खुश ।

थूँह (—अ) सं—ईसा मसीह ।—पूर्वाक्ष (—अ)

सं—ईसा मसीहके जन्मके पहलेका साल ।

थूँहान वि, सं—ईसाई । थूँहान (—अ) सं—
ईस्वी सन ।

थेहे, थाई सं—घागेका सिरा, डोरा; वातका
प्रसंग (गल्ले—शत्राने) ।

थेडेवि सं—हजामत ।

थेरा (खैरा) स—थात्रा भादु ।

थेकनिशान, (—पशान) सं—लोमड़ी,
सियार । स्त्री—थेकनिशानी ।

थेकान (खैकानो), थेकानो (क्रि परि १०)
—मुह बिगाड़ कर चिल्लाना या क्रोध प्रकट
करना । थेकानि सं—मुह बिगाड़ कर क्रोध
प्रकाश । [मिजाज (—रूख) ।

थेकि वि—भौंकनेवाला, चिड़चिड़ा, तुनुक-
थेको प्रत्य—खानेवाला (गाली) (जाथ—,
गठ—) ; खाया हुआ (पोका—) ।

थेडरा, थेदरा (खैगरा) स—भाड़ ।

थेष्ट, थष्ट वि—आकाशमें उड़ने वाला ।
सं—चिड़िया ।

थेष्टात्र (—अ) सं—खिचड़ी । [डाँटफटकार ।

थेठा, थेठुनि सं=थिठा । थेठाथेठि सं—बकावकि

थेठानेठि (खैचामेचि) स—ठेठानेठि, गोलमान
चिल्ल-पों, शोरगुल ।

थेष्ट सं—खजूर ।—त्रय स—खजूरके पेड़
का तना छीलने पर निकलने वाला रस ।

थेष्ट वि—खजूरके रससे बना (—ठड़) ।

थेठ सं—खेत, जमीन ।—थोना सं—खेती
की जमीन ।

थेठाव सं—खिताव, उपाधि ।

थेठि सं—क्षति, हानि ।

थेठो सं—छत्री, क्षत्रिय ।

थेठम सं—खिदमत, सेवा ।

थेना (खैदा), थाना स—जगली हाथी पकड़ने
का घेरा; वैसे घेरेमें हाथीका पकड़ना ।

थेना (खैदा) वि=थाना ।

थेनान (खैदानो), थेनानो, थानानो (क्रि परि
१०)—ठाडाइरा जेष्ठ भगा देना ।

थेनोखि स—विलाप, अपना दुःख प्रकट
करने वाली बात ।

थेप स—वात्र दफा, वार ।

थेपना (खैपला) स—मछली पकड़नेका
गोल जाल जो जलमें फेका जाता है ।

थेपा (खैपा), थापा वि, स—पागल; (प्यार
में) पगला; नासमझ । स्त्री—थेपी ।

थेपासि स—पागलासि पागलपन, सनक ।

थेपा (खैपा), थापा (क्रि परि १)—क्रोधित
होना; उत्त जित होना ।

थेपान (खैपानो), थेपानो (क्रि परि १०)—
क्रोधित करना; नाराज करना; चिढ़ाना ।

थेपठा (खैमूठा), थापठा स—संगीतका एक
ताल, एक प्रकारका नाच (—छानो) ;

थेरा स—पार करने की नाव, खेवा ।

थेरा न स—ख्यानत, हानि ।

थेरा स—कल्पना, ख्याल ; सपना ; शौक ; होश ; स्मरण (—ब्रथि०) ; प्रवृत्ति, रुचि (बढ—) ; एक प्रकारका संगीत ।

थेरा ली वि—खयाली, मनमौजी । [कपड़ा ।

थेरा स—एक प्रकारका लाल मोटा

थेरा स—खेल, जादू ; कौशल ।

थेरा स—खेल, क्रीड़ा, खेलना ।

थेरा डि वि, स—खिलाड़ी ।

थेरा (खेलना), थारा स—खिलौना ।

थेरा (खैला), थारा स—कौड़ा खेल । छेरा —सं—लड़कोंका खेल ; मामूली काम ।

थेरा स—जीवनका खेल । आधनर गरिष्ठ

—सं—आगके साथ खेल, खतरनाक काममें हस्तक्षेप । —थूना स—आमोद-प्रमोद, खेलकूद ; बच्चोंका खेल ।

थेरा (खैला), थारा (क्रि परि १)—खेलना ।

थेरा स = थिनात ।

थेरा न (खैलानो), थेरानो (क्रि परि १०)—खेलाना, खेलमें लमाना ; जादू या खेल दिखाना । [(कथा—)]

थेरा प स—अनुशासन खिलाप, वचन-भंग थेरा डि, थेरा डि वि, स—खेलने वाला ; खेल का साथी ।

थेरा वि—तुच्छ, मामूली (—खिनिय) ; अपमान-वेद्वजत (—करा) ।

थेरा राड स—निपुण खिलाड़ी, अच्छा खेलने वाला ; धोखेबाज, धूर्त ।

थेरा र (खेशारत्) स—क्षतिपूर्ति । थेरा राडि स—क्षतिपूर्तिमें दिया हुआ धन आदि ।

थेरा रि (खेशारि) स—केसारीकी दाल ।

थेरा स—थई लावा ।

थेरा स—थईन ।

थेरा स—छोटा लड़का, लल्ला । प्यारमें —थोरन । स्त्री—थूकी ।

थेरा स—लड़कोंको डरानेके लिए एक कल्पित राक्षसका नाम, हौआ ।

थेरा स—नोक, कांटा, आघात, चोट, काँटे, का घाव ।

थेरा स—नुकीली वस्तुकी चोट ।

थेरा न (-नो), थेरानो (क्रि परि १४)—कौंचना ; उसकाना ; तग करना ।

थेरा स—खोज, जाँच, खबर ।

थेरा क्रि—थूना खोजना, हूँदना ।

थेरा स—हिंजड़ा रनिवासका नपुंसक नौकर, ख्वाजा, एक मुसलमानी उपाधि

थेरा स—गड़ना उलाहना ; थूँटा मेख, खूँटी ।

थेरा स—खोटा आदमी ; हिन्दुस्थानी उजड़ु आदमी ।

थेरा डि, थेरा स—कोटि गडढा (गाछ—) ।

थेरा वि—लगढा, अंगहीन ।

थेरा क्रि—थूँडा । [लगढाना ; खुदवाना ।

थेरा न (-नो), थेरानो (क्रि परि १४)—थेरा स—खुद, स्वयं ।

थेरा राडि स—थेराइकेर काज नकाशी ।

थेरा स—खुदा, ईश्वर । —वन् स—खुदावन्द, मालिक ।

थेरा क्रि—थूना ।

थेरा इ स—खोदाई । [खुदवाना ।

थेरा न (-नो), थेरानो (क्रि परि १४)—

थेरा वि—जो नाकसे बोलता है ।

थेरा स—थनिक ।

थेरा, थेरा स—थुपति ।

थेरा, थेरा स—कब्रों जूड़ा ।

थेरा न स—खूषानी, एक पहाड़ी फल ।

थेरा वि—नष्ट, चुराया हुआ, खोया हुआ ।

सं—खोया ; ईंटेका टुकड़ा ।

शैलीशब्द सं—सूअर भेद आदि रखनेका बाढा,
पिंजरापोल ।

शैलीशब्द (-नो), शैलीशब्द (क्रि परि १४)—
खोना, हिराना, स्वयं नष्ट करना (नाश—,
वर्द्ध—) । [शिकायत ।

शैलीशब्द सं—नाशना लांछन, दुर्गति दुर्दशा,
शैली प्रत्य—खानेवाला (शांति—, नशा—) ।

शैलीशब्द सं—खुराक-पोशाक, अन्न-वस्त्र ।
शैली सं—कठोरा कसोरा । [शैलीशब्द खुराकी ।

शैलीशब्द सं—खुराक, भोजन । शैलीशब्द सं—
शैली सं—छात्र गिलाफ (वानिपत्र—) ;
शैली डोल सा मिट्टीका एक बाजा ; शैली
खली । [गोभायमान ।

शैलीशब्द (खोलता) वि—खिला हुआ,
शैलीशब्द सं—चमक, प्रभा ; खुलापन ।

शैलीशब्द सं—सांपकी छोड़ी हुई त्वचा केंचुली ;
आवरण ।

शैलीशब्द वि—साफ, मुक्त, स्पष्ट (—द्वारा
बला) ; खाली (धरा—द्वारा) ।

शैली सं—शैलीशब्द खपड़ा ; शैली श्लिष्टका
(नद्वारा—, वानिपत्र—) ; आवरण (काष्ठिपत्र—) ;
भूजनेका वर्तन (उष्ट—, काष्ठ—) ;
शैली स्वत (शैली—, शान्ति—) । वि—खुला
(—द्वारा) ; निष्कपट (—यन) । —शैली
क्रि वि—स्पष्ट रूपसे, खोल कर ।

शैलीशब्द क्रि=शुना ।

शैलीशब्द सं—मिट्टीके वर्तनका टूटा टुकड़ा ।
शैली वि—खुश, छलकर ।—शैलीशब्द सं—
शैली सं—दिल बहलानेका गल्प । —नविश
वि—खुशखत । —शैलीशब्द वि—खुशदिल,
प्रसन्न-चित्त ।

शैलीशब्द सं—शैलीशब्द, शैलीशब्द खुशामद,
चापलूसी । शैलीशब्द (-शुद्धि) सं—
चापलूसीकी बात, लल्लोचणो, चिकनी-

चुपड़ी बात । शैलीशब्द वि—शैलीशब्द
खुशामदी ।

शैली सं—शैलीशब्द खुजली ।

शैली सं—शैली, शैली श्लिष्टका ।

शैलीशब्द (खोशा-) सं=शैलीशब्द ।

शैली (खेंक) सं—सियार कुत्ते आदिका शब्द ।

शैली (खेंक) सं—खाना, भोज, ज्योनार ।

शैली (-अ) वि—प्रसिद्ध, नामवर, कथित ।

शैली सं—प्रचार, घोषणा ।

शैली (-अ) सं—शैली ईसा । शैली सं—

शैली, शैलीशब्द ईसाई । शैली, (-नो)

सं—ईसाइयत ; ईसाई । शैली सं—ईस्वी

सन । शैलीशब्द सं—ईसाके जन्मसे पहलेका

सन । शैली (-अ) वि—ईसा सम्बन्धी,

ईसाका, ईस्वी ।

ग

-ग (समासके अंतमें) प्रत्य—जानेवाला
(निग्न । स्त्री—निग्न) ।

गगन सं—आकाश । —गगन, —गगन वि—
आकाशमें उड़नेवाला । —गगन वि—आकाश
को बूनेवाला । —गगन सं—आकाशकी पीठ,
आकाशका तला ।

गगन सं—गगा, जाह्नवी । —गगन सं—मृत्युके
समय मुखमें गगानल दान । —गगन सं—
गगाका दूसरा पार ; गगातीर । —गगन,
—गगन सं—गगाजलमें या गगातीरमें
मृत्यु । —गगन सं—एक प्रकारका टिड्डा ।
—गगन सं—गगाकी मिट्टी । —गगन
सं—मृत्युके पहले गगातीरके लिए यात्रा ।

गगनश्री, गगनश्री सं—गगाका उत्पत्ति-
स्थान, गंगोत्री । [उपाधि ।

गगनश्री सं—गगनश्री गगनश्रीकी एक

श्रृंखला सं—क्षतिपूर्ति, लापरवाहीके लिए हानि या दंड ।

श्रृंखला (-अ) वि—रक्षित, धरोहर रखा हुआ ।

श्रृंखला (-नो), श्रृंखलाना (क्रि परि १०)—श्रृंखलाना ग्रहण कराना, किसीके ऊपर लादना या सिर मढ़ना ।

श्रृंखला सं—असंतोष प्रकट करनेका शब्द, स्थानकी कमीके कारण धक्का-धक्का ।

श्रृंखला सं—खाजा, एक मिठाई ।

श्रृंखला (-नो), श्रृंखलाना (क्रि परि १०)—अंकुरित होना, उगना, बढ़ना ।

श्रृंखला सं—बड़ गेहूँक बड़ी कील, कीला ।

श्रृंखला सं—गजराज । —श्रृंखला स्त्री—हाथी की तरह धीरे चालसे चलने वाली स्त्री ।

श्रृंखला (-अ) सं—शठ व्यापारकी मडी ।

श्रृंखला सं—जाहना, थेंपे उलाहना, तिरस्कार ।

श्रृंखला सं—शंका गाँजा । —शंका सं—गजेड़ी । [(—शब्द वगैरे आछे) ।

श्रृंखला, श्रृंखला वि—थाड़ा खड़ा, निश्चल स्थिर श्रृंखला सं—जूतेकी आहट; द्रुत चलनेका शब्द । [हुआ ।

श्रृंखला (-अ) वि—गठित, गढ़ा हुआ, बनाया

श्रृंखला सं—अतिथि खाई, दर्ज किला, गढ़ । —थाड़े सं—खाई ।

श्रृंखला सं—दहवत प्रणाम; औसत (गढ़े दश वन) । —श्रृंखला सं—औसतन हिसाब ।

श्रृंखला सं—गढ़गढ़ाहट (श्रृंखला—कना), बादल की गरज ।

श्रृंखला सं—फरशी ।

श्रृंखला सं—गठन, बनावट, निर्माण । —श्रृंखला सं—बनावट और बनानेका ढंग । —श्रृंखला सं—बनाने वाला ।

श्रृंखला (क्रि परि १)—गढ़ना, बनाना, सिखाना । सं—गठन (जड़ —) । वि—गठित, गढ़ा

हुआ, कल्पित, बनावटो । —श्रृंखला सं—जमीन पर लोटना, लोटपोट (धूना—फेड़ना) ।

—श्रृंखला वि—ठोंक-पीट कर गढ़ा या बनाया हुआ; सिखाया हुआ (गवाह) ।

श्रृंखला (-नो), श्रृंखलाना (क्रि परि १०)—

लुढ़कना, धूमते हुए चलना; ढाल पर खसकना, वर्तनसे जल उँढ़ेलना; बहना

(श्रृंखला फल श्रृंखला), लैट कर विश्राम लेना (एकट्ठे श्रृंखला नि); लोटना, अग्रसर होना

(निन्दार्थ में—श्रृंखला अनेक दूर श्रृंखला) । (श्रृंखला—क्रि—जेवर बनाना या बनवाना) ।

श्रृंखला वि—जगू, कमनश्च डालू ।

श्रृंखला सं—शब्द-शब्द भाव, दीर्घश्रृंखला डालमटोल, हिला-हवाला ।

श्रृंखला, श्रृंखला सं—लड़ा भेड़ । श्रृंखला सं—

—लेढ़ार गाल भेड़ोंका झुंड । श्रृंखला—

श्रृंखला सं—भेड़िया-घसान, अधेकी तरह अनुकरण ।

श्रृंखला वि, सं—गिननेवाला, ज्योतिषकी गणनासे फल बताने वाला ।

श्रृंखला सं—ज्योतिषी ।

श्रृंखला (-अ) सं—प्रजातन्त्र-शासन-प्रणाली ।

श्रृंखला (-अ) वि—गण्य, गिनने योग्य ।

श्रृंखला सं—प्रजाओंकी सम्मिलित शक्ति ।

श्रृंखला (क्रि परि १) = गना ।

श्रृंखला श्रृंखला वि—गिना हुआ, कथित ।

श्रृंखला (-नो) क्रि = गनान ।

श्रृंखला स्त्री—लवण रडी (-नय, -शृंखला) ।

श्रृंखला (-अ) वि—गिना हुआ । श्रृंखला (गनित्)—गणित-शास्त्र ।

श्रृंखला (-अ) वि—गिनने योग्य ।

श्रृंखला (गण्य -अ) सं—गाल, कपोल । —श्रृंखला

वि—उल्लभनदार, जटिल, झगड़ाहू । —

श्रृंखला सं—श्रृंखलागल, श्रृंखलाग श्रृंखला ;

गड़गड़ी। —आम स—बड़ा गाँव। —देश
स—गाल, कपोल। —गला स—गला फूलने
का रोग, घेवा। —दूध (-अ) वि—निद्रा
को निरा वेवकूफ। —दूध स=गणदेश।

गं० स—चारका समूह, गडा (गोना—
प्राप्य रूपया)। —दिश स—गडेका पहाडा।
—गं० वि—अनेक, बहुत।

गं० स—गोंडा।

गं० स—घेर-लकीर, घेरा, सीमा।

गं० स—गाँठ, गिरह; तकिया।

गं० स—चुल्लू; चुल्लूभर जल। [कचरकूट।

गं० स—क्रि वि—गले तक (भोजन);

गं० (-अ) वि—गिनने योग्य, प्रतिष्ठित।

गं० स—सगीतका छुर, गति।

गं० (-अ) वि—बीता हुआ, अतीत, भूत
(—कना, —अवध, —खोबन); समाप्त,
मृत (तिनि—इच्छेन); प्राप्त (कवतन—);
मध्यस्थ (वरा—, शत्रोद—)। —गं० वि—
जिसकी थकावट मिट गयी है। —कतन वि—
बेहोश। —झोद, —झोवन, —आष वि—मृत।
—निद्र (-अ) वि—निद्राहीन, जिसकी नींद
दूट गयी है। —गं० (-अ) वि—जिसका दर्द
या दुःख मिट गया है। —खोवन वि—जिसकी
जवानों बीत गयी है। —गं० (-अ) वि—
निष्काम, कामना-रहित।

गं० स—शरीर, गात्र (-आगेना)। —
शेका वि—शरीरकी शक्ति रहते हुए भी जो
काम करना नहीं चाहता। स्त्री—शकी
(गाली)।

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—
—चार-चार जन्ममृत्यु, आवागमन। [गं० स।
गं० स (-नो), गं० स (क्रि परि १०)=
गं० स गं० स वि—प्रचलित प्रथाके अनुसार चलने
वाला, लकीरका फकीर।

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गति, चाल; उपाय (-कवा),
आश्रय, शरण (अगति—); गं० स
गं० स—हालत, दशा, लक्षण
(—आन नत्र); गं० स (आन ७ गं० स,
अगति—); प्रयोजन (कार्य-गं० स)। —
विज्ञान (-विग्यान) स—यान्त्रिक गति
विद्या Dynamics —विधि स—चालक, गमन।

गं० (-अ) स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—दूसरा उपाय। [भारीपन।

गं० स—विष, अधिक भोजनके कारण पेटका

गं० स—आठ गोंद।

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० (-अ) स—गद्य, साहित्य।

गं० स—आगेके तेजीसे जलनेका भाव।

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—गं० स—

गं० (क्रि परि १)—गिनना, अनुमान करना।

वि—गिना हुआ। —गं० स, (गं० स—)

वि—जो गिन कर रखे हुए हैं, गिना हुआ।

गं० स (-नो), गं० स (क्रि परि १०)—

गिनाना; ज्योतिषीके द्वारा शुभाशुभ
निर्धारण कराना।

गं० स (-अ) वि—जानेके योग्य।

गं० (गन्ध-अ) स—गन्ध, महक, ब

(—गाँव, —छाड़ा, —भौंका), चन्दन ; सम्बन्ध (नाग—) । —गोकुल स—थोड़ा, थोड़ा सेधवार । —वह (-अ, स—वायु, हवा । वि—गन्ध ले जाने वाला, सुगन्धित । —बनिक स—गंधी, सुगन्धित तेल इत्र आदि बेचने वाला, एक जाति । —बिब्रजा स—गधाबिरोजा, चीड़ नामक वृक्ष का गोंद । —ब्राह्म स—एक सुफेद और सुगन्धित फूल ।

गन्धर्व (गन्धर्व-अ) स—गन्धर्व, संगीत-प्रिय एक कल्पित देवता ; गाने-बजाने वाली एक जाति । —विद्या स—संगीत, गाने-बजाने की विद्या । —विवाह (-अ) स—माता-पिता की सम्मति न लेकर या प्रेम में फस कर माला बदल कर विवाह ।

गन्धौ स—छात्रगोका खटमल । वि—गन्धयुक्त । —गोक स—गंधिया कीड़ा, एक बदबूदार उड़ने वाला कीड़ा ।

गन्धालिख (-अ) स—घ्राणेन्द्रिय, नाक ।

गन्ध, गन्ध, गन्ध, गन्ध स—ग्रास निगलने का शब्द ।

गन्ध (गन्ध-अ) स—गल्प, किस्सा, कहानी, गपशप । गन्ध वि—गपशप करने वाला, बकवादी, गपोडिया ।

गन्धल, गन्धल वि—मुख, बेवकूफ ।

गन्ध स—गवय, नील गाय ।

गन्ध वि—मुख, भोंदू, बेवकूफ । —काष्ठ (-अ), —कल (-अ), —गन्ध, हवा—वि—भोंदू, मुख ।

गन्धक (गन्धक-अ) स—छोटा जंगल, झरोखा ।

गन्धौ स—गाड़ी गाय, गौ ।

गन्धवर्षा स—खोज, किसी वस्तु या विषय का अच्छी तरह अनुशीलन करके उसके सम्बन्ध में नयी बातों या तथ्यों का पता लगाना ।

गन्ध (-अ) वि—गाय से उत्पन्न (दूध घी आदि) ।

गन्धर्वक स—गवर्नमेट, सरकार ।

गन्धर्व स—गवर्नर, राज्यपाल । [जटिल, गूढ़ ।

गन्धर्व वि—गभीर, गहरा, घना, गाढ़ा,

गन्ध स—गोधूम गेहूँ ।

गन्धक स—स्वर का कम्पन ।

गन्धग स—गभीर शब्द ।

गन्ध स—गमन, गति, चाल । गन्धना—स—

बाताबात आवागमन, आनाजाना । गन्धनीष

(-अ), गन्ध (-अ, वि—जाने योग्य, गंतव्य ।

गन्ध स—गन्ध ।

गन्धर्व वि—गभीर, धीर, स्थिर, गूढ़ ।

गन्ध (-अ) वि—प्राप्य, ज्ञेय, जानने योग्य ।

गन्धना स—जेवर । —गन्ध स—जेवरात ।

गन्धगन्ध स—गन्धगन्धि ।

गन्धर्वी वि—छिपा हुआ, गुप्त, गायब ।

गन्धर्व अन्य—वर्गरेह, इत्यादि ।

गन्धना स—गोधाना । स्त्री—गन्धनानी ।

गन्ध स—गया । गन्धनी स—गयावाला पंढा ।

गन्धर्व, गन्धर्व स—चलगम ।

गन्ध-उप—अभाव-सूचक उपसर्ग, गैर । —गन्ध

स—अग्निल अनमेल, हिसाब का न मिलना ।

—गन्धौ वि—अग्निल गैरराजी । —शब्द वि—

गैरहाजिर । —शब्दौ स—गैरहाजिरी ।

गन्धगन्ध स—क्रोध प्रकाशक शब्द ।

गन्ध स—गरज, मतलब, जरूरत । स—

प्रयत्न, ध्यान (—करा) ।

गन्धान (नो), गन्धानो क्रि—गन्धान ।

गन्ध स—एक रेशमी कपड़ा ।

गन्ध स—गन्ध ।

[गन्धनी ।

गन्ध स—गन्ध । गन्धौ वि—घमडी । स्त्री—

गन्ध स—एक गुजराती नाच ।

गन्ध वि—उत्तम गन्ध (—कल, —काष्ठ, —

गन्धक) । स—गर्मी का मौसम (—कल) ;

गर्मी, रोग (गन्ध—, गन्ध—) ; गन्धक

महंगी (दाङ्गा—) । —गन्ना स—इलायची
लवंग दारचीनी आदि गर्म मसाला ।

शब्दगोश्व (-नो), शब्दगोश्व (क्रि परि १६)—

शब्दगोश्व गरमाना , घमंड करना , नाराज
होना । [आतशक ।

शब्दगोश्व स—उल्लूख गर्मी , गर्मी की बीमारी,
शब्दगोश्व स—ऊँचा शब्द ।

शब्दगोश्व, शब्दगोश्व वि—शब्द देखो ।।

शब्दगोश्व स—विष, जहर , विपैला घाव ।

शब्दगोश्व स—गिरु छड़ (जानाना—) ।

शब्दगोश्व स = धान । [सा (—गन) ।

शब्दगोश्व, शब्दगोश्व वि—गरीब । शब्दगोश्व वि—गरीब-

शब्दगोश्व स—महिमा, गुल्ल, घमंड ।

शब्दगोश्व वि—महान विशाल, पूजनीय, गौरव-
युक्त । स्त्री—शब्दगोश्व ।

शब्द, शब्द स—गाय, गौ , मुख ।

शब्दगोश्व (-नो), शब्दगोश्व (क्रि परि १६)—

शब्दगोश्व गरजना ।

शब्द, शब्द स—शब्दगोश्व गड्ढा , छिद्र, छेद ।

शब्दगोश्व स—गड्ढा , मुख ।

शब्दगोश्व स—शब्दगोश्व गर्द , धूल ।

शब्दगोश्व शब्दगोश्व, स—बाह्य गरदन गला ; सिर ।

शब्दगोश्व नि, शब्दगोश्व स—गरदनियाँ ।

शब्दगोश्व (-अ) स—घमंड, शेखी । शब्दगोश्व वि—
घमंडी, गर्वीला ।

शब्दगोश्व (-अ) स—गड्ढा-गड्ढा हमल (—

इलायची, शब्दगोश्व) ; गर्मानय ; भ्रूण । —

शब्दगोश्व स—जरायु , फूल का बीज-कोष । —

शब्दगोश्व स—भीतर का कमरा ; सौरी । —

शब्दगोश्व (-अ) वि—गर्भ से पतित । —

शब्दगोश्व वि—गर्भ से उत्पन्न । —

शब्दगोश्व स—यह-गड्ढा इलायची हमल से

होना । —

शब्दगोश्व स्त्री—माता, जननी । —

शब्दगोश्व स—गर्भ में रहना । शब्दगोश्व स = शब्दगोश्व ।

शब्दगोश्व (-अ) स—नाटक के अंक का एक

भाग या दृश्य । शब्दगोश्व स्त्री—(शब्दगोश्व)
गर्भवती । [(गर्भ—) ।

शब्दगोश्व (-अ) वि—युक्त पूर्ण , गर्भित

शब्दगोश्व, शब्दगोश्व स—निद्रा । शब्दगोश्व वि—गर्हित,

निद्रित । शब्दगोश्व (-अ) वि—निद्रित, घृणित ।

शब्दगोश्व स = शब्दगोश्व । —

शब्दगोश्व (-अ) स—गला फूलने

की बीमारी, घेघा । —

शब्दगोश्व स—गले का भार

जिसके पालने-पोसने का भार अनिच्छा से

लिया जाता है ।

शब्दगोश्व वि— (फलादि) ज्यादा पके जानेसे

नरम, पिलपिला ; फटने लायक । स—

निगलने या गलगलाने का शब्द ; तेज धारसे

निकलना (दड्ड—दविश्व दहिद्व इहेडेह) ।

शब्दगोश्व (गलगलानो), शब्दगोश्व (क्रि परि

१६)—गलगला कर निकलना, गलगलाना ,

जलदी जलदी बोलना । [(शब्दगोश्व) ।

शब्दगोश्व वि—जो पिघल रहा है, गलता हुआ

शब्दगोश्व स—भूल, गलती , धातु का गलना,

गलन ; वरतन के छेद में से तरल वस्तु का

निकलना ।

शब्दगोश्व स—गलती, भूल, दोष ।

शब्दगोश्व (गलदस्) वि—आँसू बहता हुआ या

बहाते हुए (—गलदस्, नेत्रों से आँसू

बहाते हुए) ।

शब्दगोश्व स—बड़ी भीगा-मछली ।

शब्दगोश्व (-अ) स—गले में जलन गले में घाव ।

शब्दगोश्व (अ) वि—पसीने से तराबोर ।

शब्दगोश्व स—जब इलायची पिघलना ।

शब्दगोश्व शब्दगोश्व वि—शब्दगोश्व गले में कपड़ा डाला

हुआ (प्राथना या विनय प्रकाशार्थ) ।

शब्दगोश्व (-अ) स—शब्दगोश्व गरदनियाँ ।

शब्दगोश्व स—गरदन, गला, कंठ । —

शब्दगोश्व स—एक दूसरे के गले पर बाँह डालने की स्थिति ,

घनिष्ठ मित्रता । —

करना ; गला दबामा । —झाड़ा क्रि—स्वर ऊँचा करना (—छेड़ें गाँव) । —धरा, —वशा, —डाँडा क्रि—गला बैठना या विकृत होना । —वाका सं—गरदनियाँ । —वह सं—गुलुबद । —वाखि सं—चिल्लाहट, अधिक व्याख्यान । गनाश्च गलाश्च क्रि वि—आकृष्ट मुँहासुँह, गले तक । वि—बहुत घनिष्ठ (—भाव) । गनाश्च दड़ि सं—उद्बुधन फाँसी ; धिक्कार का शब्द ।

गना (क्रि परि १)—गलना, पिघलना, तरल होना, नरम होना, सड़ जाना ; घुसना (बाग़ाश्च बाथा गले ना) ; मोहित होना (आनन्द—) । वि—गला हुआ, तरल, नरम । गनाश्चःकवण (-घकरण) सं—उद्बुध भक्षण, गान पान, गलेके नीचे उतारना ।

गनान (-नो), गनाना (क्रि परि १०)—गलाना ; घुसाना, मोहित करना ।

गलि सं—गली । गलि—क्रि वि—गली-गली, हर गली में । —घुँखि सं—सकरी गली या उसके मोड़ पर का संकरा स्थान ।

गलिश्च वि—गलीज, गंदा, सड़ा ।

गलिउ (-अ) वि—तरल, गला हुआ, कीचड़ सा ; गल कर निकला हुआ ।

गवूहे सं—नाव का नुकीला सिरा ।

गन्न (-अ) सं—कहानी, कथा, बातचीत ।

गन्न वि—गप्पी ।

गनगन सं—क्रोध का भाव प्रकाश ।

गं गां छ. सं—गरिष्ठ साधारण गुणनीयक Greatest Common Measure, G C M (जैसे ६४, ४८, ३२ और २४ में) ।

गंठ (-अ) सं—अमण, गश्त ।

गंठानी सं—कूल्हा छिनाल, रंडी ।

गशन वि—दुर्गम, गभीर, गूढ़ । सं—दुर्गम स्थान ; गूढ़ विषय ।

गशना सं—गशना जेवर (—गंति, —गज) । गशनात्र नौका सं—व्यापारी माल या यात्री ढोने वाली नाव ।

गश्च (गवहूर) सं—गर्त, गड्ढा, गफा ।

गा सं—गाँव शरीर का ऊपरी हिस्सा (—गवग, —धाया), किसी वस्तु की पीठ, शरीर, इच्छा (बाबाश्च—नाई) । —कशन करा क्रि—देह मिचलाना । —गाड़ा देवशा क्रि—उठने के लिए उद्यत होना । —ठाका देवशा क्रि—छिपना ।

—जगशा, —करा क्रि—कोशिश करना, ध्याम देना । —गाड़ा क्रि—शरीर चलाना । —गातिश्च

नगशा क्रि—बिना इतराज सह लेना । —वशि

वशि करा क्रि—देह मिचलाना । —गाव गाव

करा क्रि—थकावट या हारत मालूम होना ।

गावश्च पड़िश्च क्रि वि—दस्तंदाजी से । गावश्च कूं

मिश्च क्रि वि—वेपरवाहीसे, बिना जिम्मेवारी

के । गावश्च बाथा क्रि—धाव करा अपने ऊपर

लेना, ग्रहण करना । —छूवि, —छावि सं—

जवरदस्ती । —गश वि—शरीर में सहन होने

वाला, अभ्यस्त । गावश्च श्वूह सं—गाव-

श्रिश्च विवाहके दिन दुलहे या दुलहिन को

हरदी से नहलाने का संस्कार ।

गां सं—गाँव, ग्राम (गाड़ा—) ।

गांहे सं—गाँव गाय, गौ ।

गांहे, गांजी सं—ब्राह्मणों का श्रेणी-विभाग ।

गांहे सं—गाँठ, गिरह, ग्रन्थि, जोड़, गठरी,

गहूर । —काठा सं—गिरहकट ।

गांहेस सं—गवैया, गायक, अच्छा गानेवाला ।

गांउना सं—संगीत, मजलिसी गाना ।

गांउना वि = गवा । [करना (छग—) ।

गांउना (क्रि परि ४)—गान करा गाना, प्रचार

गांउनान (-नो), गांउनाना (क्रि परि १२)—

दूसरे से गान कराना ।

गां स—बड़ी नदी । —छि स—बड़ी नदी

या समुद्र की एक चिड़िया । —शनिद
सं—नदी के तीर में रहने वाली एक छोटी
चिड़िया ।

शोशना, शोशना सं—दुखी गगरा ।

शोश, शोश, शोश सं—बैल का शब्द ।

शोश, शोश सं—शोश ।

शोश सं—पेड़, लता (नाडे—) । —शोश
सं—पेड़-पौधे, जड़ी-बूटी । —शोश सं—
पेड़-पौधे ।

शोश, शोश सं—शोश, ठो दुकड़ा (५६—४३) ।

प्यार में शोश (५६—४३, शोश—४३) ।

शोश, शोशना, शोशना सं—शोश भाग,
फेन ; खमीर । शोशना सं—शोश सड़ना ।

शोशना सं—शिव मनसा आदि का उत्सव ।

शोश सं—शोश । —शोश वि—गजेड़ी ।

शोश (क्रि परि ३)—सड़ना, खमीर बनना ।

शोशना (-नो), शोशना (क्रि परि १०)—
सड़ाना, खमीर पंदा करना ।

शोश सं—लड़ाका, वीर ; गजो ।

शोश सं—शोश ।

शोश, शोश सं—शोश गाँठ, गिरह (शोश—
शोश) ; कस कर बंधी गडरी । —शोश सं—
गिरहकट । —शोश सं—गठजोड़ा, विवाह में
दुलहे और दुलहिन के कपड़ों में गाँठ जो
आठवें या दसवें दिन खोली जाती है ।

शोश सं—शोश गडरी । [मुका ।

शोश सं—बंधी मुट्ठी की उगली की गाँठ,
शोश, शोश वि—शोश वेवकूफ, दूसरे की
रायसे चलने वाला ।

शोश (क्रि परि ३)—शोश गाड़ना (शोश—),
रहना, बसना (शोश—) ; घुटने मोड़ कर
बैठना (शोश—), निचोड़ना (शोश—) ।

शोश (-नो) सं—शोश गाड़ी । —शोश क्रि—
गाड़ी हाँकना, गाड़ी में सवार होना । —शोशना

सं—मकान के सामने गाड़ी ठहराने का
वरामना, बरसाती Portico [जलपात्र ।

शोश सं—शोश पीतल का ऊँचा बघना सा
गाड़ना सं—गाड़ीवान ।

शोश (-अ) वि—गाड़ा, घना, गहरा ।

शोशना सं—हिसाब-नवीस, लेखाध्यक्ष
Accountant

शोशना वि—गणितज्ञ ।

शोश (गान्धिव) सं—अर्जुन का धनुष ।
—शोश सं—गाँधीवधारी अर्जुन ।

शोश शोश कि वि—गलेत्क (भोजन) ।

शोश सं—दुधारी कुल्हाड़ी ।

शोशना सं—छोटा जमींदार ।

शोश सं—शोश अंग, शरीर, किसी वस्तु की
पीठ । —शोश सं—शोश शरीर की जलन ।

—शोशनी सं—शोश अंगौछा । —शोश सं
=शोश शूना । शोशना सं—शोश शरीर
को उठाना, खड़ा होना ।

शोश सं, वि—गायक, गवैया । स्त्री—
शोशना ।

शोशना सं—गूँथना ; चुनना । [चुनाई ।

शोशना सं—ईंठों या पत्थरों के चुनने का काम,
शोश (क्रि परि १०)—गूँथना ; चुनना ;
नत्थी करना, दृढ़ता से बैठाना (भन—) ।

वि—गूँथा हुआ ; चुना हुआ ।

शोश सं—तलछट ; भाग ।

शोश (क्रि परि १०)—शोश उब्रा दवा कर
भरना । सं—स्तूप, ढर । [स्थिति ।

शोशना सं—भीड़, पास पास सटी हुई

शोश, शोश सं—शोश फूल ।

शोश, शोश सं—शोश, शूना, भीड़ ।

शोश सं—गडहा, मूर्ख । —शोश सं—गडहपन,
मूर्खता । —शोश सं—माल ढोने वाली
भारी नाव । स्त्री—शोश ।

गौशान, गौशान स—एक बदबूदार लता,
इसकी पत्ती दवा के काम आती है।

गान स—गान, संगीत (—गाना, —गाइया)।

गाभ स—गायत्रा गवन, गायब।

गाक्लि वि—लापरवाह, बेसूध, गाफिल।

गाक्लिठि, गाक्लि स—गफलत।

गाव स—एक कड़ुवा और गोददार फल,
धातुपात्र में खटाई के संयोग से उत्पन्न
कसैलापन।

गावा (क्रि परि १०)—धातुपात्र में खटाई के
संयोग से कसैलापन उत्पन्न होना।

गाडिन वि—गर्भिणी (पशु)।

गा-डाव्रो स—शरीर का भारीपन, अकड़,
तनाव; गर्भवती।

गाजै स—गाय गौ।

गागश (गाम्छा) स—अंगौछा।

गागश कि वि—सारे शरीर में।

गागला (गाम्ला) स—कटोरा सा एक बड़ा
घरतन, गमला।

गागोड़ा स—गान्त्रभग, अंगों का मरोड़ना।

गागोर्क (-अ) स—गभोरता, धीरता।

गायन, गावैन स—गवैया; पुराण-गायक।

गावैव वि, स—गाभ गायब। गावैवी वि—गुप्त
(—थून)।

गाव्र स—कश्म जेलखाना।

गाइंश (-अ) वि—गृहस्थ या गृहस्थाश्रम
सम्बन्धी, पारिवारिक। स—गृहस्थाश्रम।

गाल स—गाल, गाली। —गल्ल स—भूठी
कहानी, गप्प। —गाछा स—जो दाढ़ी
केवल गालों पर रखी जाती है। —वाञ स
गाल बजाकर उत्पन्न बम् बम् शब्द (शिव-
पूजामें),। —गन्ध (-अ)—गाली-गलौज।

गानन स—गलाने की क्रिया, छानना।

गाना स—लाक्षा, लाह, लाख।

गाना (क्रि परि ३)—रस निचोड़ना (फेन—);
फोड़ना (फोड़ा, —फोथ—), छानना।

गानागानि स—गाली गलौज।

गानान (-नो), गानाना (क्रि परि १०)—
गलाना, पिघलाना, छनवाना।

गानि, (-नी) स—कट्टेवाका गालो (—फोड़ा,
—गाछा)। गानागान, —गानाख स—
गाली-गलौज।

गानिठा, गानाठ (गाल्चे) स—गलीचा,

गानौ स—गाली, कटुवचन।

गा-गश वि—अभ्यस्त आदी।

गाइर स—ग्राहक, खरीदार, गायक, गवैया।

गाइन, गाइ स—अवगाइन जल में डूबकर स्नान।

गिजगिज स= गजगज।

गिंठ स—गिरह, ग्रन्थि गांठ।

गिनि स—गिन्नी, अशरफी। —गाना स—
गिन्नी की तरह ताँवा मिला हुआ सोना
जिसमें सोना २२ भाग और ताँबा २ भाग है।

गिनी खी घर की मालकिन, गृहिणी। —गना
स—गृहिणी का काम, गृहिणी सा बर्ताव।
—वाग्री स—बृद्धा, अनुभवी गृहिणी।

गिद्रे, गे स—कथात्र गाँवा बातचीत में भूले
हुए शब्द के स्थान में यह शब्द इस्तेमाल
होता है (ठात्रगत्र—), आज्ञा-सूचक शब्द
(कत्र—, थाठ—)।

गिद्रेगिदि स—गिरगिट, छिपकली।

गिद्रे, गेवो स—गिंठ गिरह; एक गजका
सोलहवाँ भाग।

गिद्रे स—पहाड़। —वश्च (-वत-अ) स—
घाटी दर्रा। —गाठि स—गेरु। —वाञ स—
पर्वत-राज, हिमालय। —वाग्री स—हिमालय
राज की पत्नी और दुर्गा की माता मेनका।
—गद्रे स= गिद्रेवश्च।

गिद्रे स—गिरजा, ईसाई उपासना-मन्दिर।

शिनटि सं—दूसरी धातु पर सोने या चाँदी का पतला लेप, गिल्ट (—दवा ग्रहण) ।

शिनन सं = शिनाथः रुद्रण ।

शिन', शिने सं—एक फल का चिपटा और चिकना बिया ।

शिना, शिना (क्रि परि ५)—निगलना ।

शिनान (—नो), शिनाना, शिनना, शिनाना (क्रि परि ११)—शिशुना खिलाना, निगलवाना ।

शिनित (—अ) वि—उद्धित खाया हुआ, निगला हुआ । —उर्वण सं—द्वान्धन, आवर दाँठे जुगाली, पागुर ।

शिनशित, शिशिशि सं—जमावड़ा या भीड़ का लक्षण प्रकाश (जाक—द्वष्ट) ।

शित सं—स गीत, गाना । शित (—अ) वि—गाया हुआ ; वर्णित । —वाञ (—अ) स—गाना-बजाना ।

श सं—दिङ्गा गुह, मल ।

शदा, शदा स—उपारी ।

शई सं—एक उपाधि ।

शग, शन, (—शू) सं—गुग्गुल ।

शगि (गुगुलि)—गाम्दू घोंघा ।

शष्ट सं—शोष्टा, शोष्टा, श्वक गुच्छा ।

शष्ट्वि वि—कठकशला बहुत से (अवज्ञार्थ में) (—गण शृङ्ग) ।

शशान (—नो), शशाना, शोशाना (क्रि परि १३)—सजाकर रखना, इकट्ठा करना । वि—सजाया हुआ ।

शहि स—वेणी बढ़ाने के लिए वालों की गुच्छी ।

शड्ड सं—कानाफूसी ।

शडव सं—इनदद अफवाह ।

शड्व क्रि वि—मात्रक मार्फत । [गुजरातो ।

शड्वारि सं—गुजरात । शड्वारि वि, सं—

शड्वान स—श्रीदिक-निर्वाह गुजारा, निर्वाह ।

शड्वान (—नो), शड्वाना (क्रि परि १८)—शड्वान दवा निर्वाह करना ।

शड्वी (गुजरी) स—एक तरह का पाजेब ।

शंङ (क्रि परि ६) = शंङ ।

शंङि स—शंङात्र दाँठे जूड़ा बाँधने का काँटा ; छोटा खूँटा ।

शशन सं—शनशन शब्द भनभनाहट, भनकार ; फुसफुसाहट । शडित (—अ) वि—भनभनया हुआ । शड्व सं—भनकार । शड्वित (—अ) वि—शडित ।

शश, शश, शडिका सं—द्वंष्ट गुंजा, घुघची ।

शटैनि, (—न) सं—गुटली ; टेला ; बहुत कड़ा गोल मल ।

शटैन (—नो), शटैना, शोशैना (क्रि परि १३)—लेपटना, समेटना ; बंद करना, उठा देना (दाश्वार—) ।

शटै, (—श) , शटै सं—शटै, दट्टे गोली, छोटा कच्चा फल (दाश्वार—) ; रेशम का कोआ, कीटों के कोप में रहने की अवस्था, शीतला रोगकी फुड़िया ; रेशम-कीट । —शोदा सं—रेशम-कीट । [कर (—ज्ना) ।

शटैशटै, शटैशटै क्रि वि—धीरे धीरे पैर रख शड स—गुड़ । शोशैनि—स—टिकिया या बरफी के आकार में जमाया हुआ गुड़ ।

शड्ड सं = शड्ड ।

शड्डि स—फरशी ।

शंङ, शंङ सं—चूण, चूरन, बुकनी, कण ।

शडान (—नो), शडाना, शडाना (क्रि परि १३)—शड रवा चूण बनाना, बुकनी बनाना । वि—बुकनी किया हुआ ।

शडि मात्रा क्रि—हाथ-पैर समेटकर छीपे रहना ।

शंङि सं—तना ; बुकनी, चूर्ण ; बूँदी-बाँदा ।

शडू सं—गुड़ में साना हुआ तमाखू ।

शडूँ सं = शडू ।

छुडू स—बदूक आदि से गोली छूटने का शब्द, धमाका ।

छुण स—गुण, हुनर ; असर, विशेषता, शक्ति, उपकार, फायदा (भिक्षात्र—), (दर्शन में) प्रकृति का धर्म—सत्त्व, रज, तम ; वस्तु का धर्म—रूप, रस, परिमाण, इच्छा आदि, (अलंकार-शास्त्रमें) प्रसाद, माधुर्य, ओजः आदि । (गणित में) गुणा, जरब ; बार (दश—बड़), धनुष की डोरी, रस्सी (नोन्नात्र—गेना), जादू, वशीकरण (—करा) ; दोष (व्यंग्यार्थ में) (ठात्र नव—जाश्त्र शत्रु भएछे) ।

—धाम स—गुणावली । —धाश वि—गुण-ग्राहक, गुणियों का आदर करने वाला । —धत्र स—गुण-युक्त, (व्यंग्यार्थ में) कुकर्म । —धाम, —निधि वि—अनेक गुणों से युक्त । —धन स—निपुणता । —बडा स—गुण-युक्तता । —वाचक, —वाधक वि—गुण-सूचक । —वाप स—गुणानुवाद, प्रशंसा । —देवश (-अ) स—गुणों की विपमता । —मनि स—अनेक गुणों के होने के कारण नर-रत्न । —टाना क्रि—रस्सी से नाव खींचना । —करा क्रि—गुणा करना, जादू करना, मोहित करना । छुण घाटे स—गुण में घाटा या कसर (व्यंग्य में) । छुण नमझात्र स—दोष देख कर अलग होने के लिए व्यंग्य में ऐसा कहा जाता है । छुणिते खाना क्रि—गिनती जानना, भविष्य कह सकना ।

छुणन स—गुणा करना, गिनना । छुणनीत्र (-अ) वि—जिस संख्या का गुणा किया जाता है । छुणनीत्रक स—जिस संख्या के द्वारा दूसरी संख्या का भाग करने पर शेष कुछ नहीं बचता ।

छुणश स—बड़ी मोटी सूई, सूजा । [गुणयुक्त । छुणाकर, छुणावात्र, वि—गुणों का आधार, छुणाएव स—गुण-दोष ।

छुणाठौठ (-अ) वि—सत्त्व, रज, तम प्रकृति के इन तीन गुणों से परे ।

छुणाछत्र स—दूसरा गुण । [योग्य ।

छुणाचिठ (चित्त-अ) वि—गुणयुक्त, गुणवान, छुणाछत्रण वि=छुणाकरात्र । [अम ।

छुणाभास स—गुण-सादृश्य, गुणके अस्तित्व में छुणाकरात्र, (-अकार), छुणाकरूठ, (-अकार -अ) वि—अनेक गुणों से युक्त ।

छुणिठ (-अ, वि—जिसका गुणा किया गया है । छुणिठक स—जिस संख्या का दूसरी संख्या के द्वारा भाग करने पर शेष कुछ नहीं बचता ।

छुणांकरष (-अ) स—गुणों की श्रेष्ठता ।

छुणाणैठ (-अ) वि—गुणयुक्त ।

छुणन स—घाघटे घूँघट ; आवरण ।

छुण स—गुंढा, बदमाश ।

छुणागि स—गुंढापन, बदमाशी ।

छुण (-अ) वि=छुणनीत्र । [नोक से धक्का ।

छुंठा, छुंठा स—सींग लाठी कोहनी आदि की

छुंठान (-नो), छुंठाना, छुंठाना (क्रि परि १२)

—छुंठा देखा वा मात्रा सींग आदि से धक्का देना ।

छुणाम, छुणय स—गोदाम । [स—सूजा ।

छुण स—छटे टाट ; छटेत्र थनित्र, बोरा । —छूँट

छुनछन स=छुन ।

छुनठि स=गनठि ।

छुना स—पाप, गुनाह । —गात्र, छुनागात्र,

छुनागात्रि स—दोष के कारण हरजाना या दंड ।

छुणीषछ (-अ) स=छुणीषछ ।

छुछ (-अ, वि—झिपा हुआ, गायब । स—एक

उपाधि । —कथा स—गुप्त बात । —छत्र

सं—खुफिया, जासूस ।

छुछि स—गुप्त रखने का भाव (मक्ष—),

कौणा नाठि मक्ष मूलाग्रिठ उत्रात्रि गुसी ।

सुश्रु (गुल्फ-अ) वि-गोपतौ सुश्रु। स-

शृङ्ग (-अ) वि—गुप्त, छिपा हुआ ; अस्पष्ट ,

गूढ ; घना । —शृङ्ग स—भेदिया, जासूस ।

शृङ्गिनी स्त्री—गीघ ।

शृङ्गू वि—लोभी, लालची ।

शृङ्ग (-अ) स—गीघ ।

शृङ्ग (-अ) स—घर, मकान, कमरा । —शृङ्ग

स—गृहपति, घर का मालिक । स्त्री—शृङ्गिनी ।

—शृङ्ग (-अ) स—घर का काम । —घन स—

घर के लोग, कुटुम्बी । —जात (-अ) वि—

घर का बना । —गृह (-अ) स—घर का आग

से जलना । —देवता स—घर में स्थापित

देवता की मूर्ति, कुल-देवता । —धर्म (-अ)

स—गृहस्थ का धर्म । —श्रवण स—नये बने

मकान में प्रथम प्रवेश । —विच्छेद स—एक

परिवार के लोगों का अलग हो जाना ।

—विवाद स—चक्रावृत्ति शृङ्ग पारिवारिक

भगड़ा । —जन्त्री (कवी) स्त्री—घर की लक्ष्मी,

दुलहिन । —शाली स—गृहस्थ के काम-

काज, गृहस्थी ।

शृङ्ग स—गन्तारी विवाहित, गृहस्थ । शृङ्गिनी

स्त्री = शृङ्गिनी । शृङ्गिणीना स = शृङ्गिणीना ।

शृङ्गीत (-अ) वि—ग्रहण या धारण किया

हुआ, प्राप्त, स्वीकृत ।

शृङ्ग अव्यय = शृङ्ग । [गोडाना ।

गोडान (गौडानो), गोडाना (क्रि परि १०) =

गोष्ट वि—जो पेड़ों पर घूमता है (—हृष्ट,

—हृष्ट) । [से उत्पन्न शरीर में गिल्टी ।

शृङ्ग, शृङ्गा (गौंज) स—अंकुर, कल्ला ; रोग

शृङ्गला (गौंजला) स—शृङ्गला ।

शृङ्ग स—लम्बी जालीदार थैली जिसमें रुपये-

पैसे रख कर कमर में बांधते हैं, हिमयानी ।

शृङ्गल वि—शृङ्गलाथोर गौंजड़ी ।

शृङ्गि स—बनियाइन, गंजी ।

शृङ्ग स—फटेक फाटक, द्वार ।

शृङ्गा (गौंटा) वि—नाटा और मोटा ।

शृङ्गा वि—गठीला, गाँठदार, गाँठ का । —बात

स—गठिया । [चोरी । वि—देखे नाटा ।

शृङ्गा (गड़ा) स—वाद्ययंत्र, गाय गवन ;

शृङ्गा स—घोंघी ।

शृङ्ग, शृङ्गक, शृङ्गस स—गेंद ।

शृङ्गा (गौंदा) स—गौंदा ।

शृङ्ग (-अ) वि—गाने योग्य, जो गाया जाता है ।

शृङ्गा वि—पाड़ाशृङ्ग देहाती, गवार ।

शृङ्गि स—गेरु मिट्टी ।

शृङ्गस वि—गेरुआ । स—गेरुआ वस्त्र । [बाधा ।

शृङ्गा स—शृङ्गा गिरह, गाँठ, दुष्ट ग्रह, विपत्ति,

शृङ्ग (-अ) स—घेरा, कब्जा ।

शृङ्गा, शृङ्गाना क्रि = शृङ्गा, शृङ्गान ।

शृङ्गा स—थान, उग्राङ्ग गिलाफ ।

शृङ्गा स—गिलास ।

शृङ्ग (अ) स—गृह । शृङ्गिनी स्त्री—गृहिणी ।

शृङ्ग (गह्वी) वि = शृङ्ग ।

शृङ्गिक (गह्विक) स—गेरु मिट्टी । वि—गेरुआ ।

शृङ्ग स—शृङ्ग गौ, गाय, बैल । —शृङ्गा स—

मृत गाय-भैंसों के फेंकने का स्थान । —शृङ्ग

वि—गाय के समान मूर्ख । —देव स—गायका

इलाज करनेवाला वैद, अनाड़ी बट, ठगवैद्य ।

शृङ्ग अव्यय—प्यार का सम्बोधन (शृङ्गा,

कोथा शृङ्गा) ।

शृङ्ग स—खिद जिद ।

शृङ्ग शृङ्ग स—कराहने की आवाज ।

शृङ्गा स—गौ की तरह मुंह से खाद्य ग्रहण

बड़ा आस या कौर । [अतिथि, मेहमान ।

शृङ्गा (-अ) स—गौकुशी करने वाला ;

शृङ्गा वि—बाबा गूंगा ।

शृङ्गान (-नो), शृङ्गाना (क्रि परि १४)—

काष्ठाना कराहना । शृङ्गानि स—कराह ।

शृङ्गा वि—प्रत्यक्ष । स—गोचर भूमि ।

गोशब्द स—गौ चराना, चरागाह ।

गोश स—गुच्छ, गोश गुच्छ, श्र खला, सुप्रबन्ध
(काष्ठ—); एडी के ऊपरवाला अश,
तरह (दाका गोच्छ) । —गोश स—सुप्रबन्ध ।
गोश स—गुच्छा (जवि—, फूले—,
थड़े—) ।

गोशान (-नो), गोशानो (क्रि परि १४)—
गोशानो सजाना ; चीजाँ को अपने अपने
स्थान में रखना ।

गोशान (-लो), गोशानो वि—सुप्रबन्धक,
किफायती, सुव्यवस्थित (—लाक) ।

गोश स—शोण खूँटा ।

गोश (क्रि परि ६)—गोशानो घुसाना, नीचा
करना (बाड़—) । —गोश स—घपला देकर
हिसाव का मेल ।

गोश स—कामरपाणे करघनी ।

गोश वि—आठ सावूत, अख ड (—कवक) ।

गोशान (-नो), गोशानो क्रि = गुठान ।

गोश स—गोश, गोशब्द—भूमि गोचर भूमि,
चरागाह ।

गोश स—जड, मूल, नींव ; आदि, कारण
(—थेके, बत नष्ट—) । —गोश क्रि वि
—शुरु से, तले से । [कष्टरपन ।

गोश वि—कष्टर (—हिलू) । गोशमि स—
गोश मेवू स—एक बहुत खड़ा नींव ।

गोशानि स—एक एडी ।

गोश स—गजरा, मोटी माला ।

गोश (-अ) स—गोश, जाति, श्रेणी, वंश ।
—अ स—वंशज ।

गोश स—झीपत फीलपाँव ।

गोश वि—आठ मोटा, स्थूल, फीलपाँव वाला ।
—सं—धाड़ी दलपति, बदरों का नायक
(पाले—) ।

गोशान स—गाय का दुहना ।

गोश, गोशिव स—गोशान गोह ।

गोश स—गम गेहूँ । [का मुहूर्त ।

गोशविनश (-अ) स—विवाह के लिए सन्ध्या
गोना (क्रि परि ६)—गोना दत्ता, गोना गिनना ;
ज्योतिष की गणना से निर्णय करना । वि—
गिना हुआ । —गोश वि = गोशगोश ।

गोश स—गोशान गवाला, अहीर ; स्त्री—
गोश, गोशिका, गोशिनो ।

गोश स—गोश, छिपाव । वि—छिपा
हुआ, गुप्त । गोशवा, गोश, गोशानो
(-अ) वि—छिपाने के योग्य ।

गोशान स—गोशान गौ का पालन-पोषण
करनेवाला, अहीर, कृष्ण, बालकों के
संवोधन करने का प्यार का नाम ।

गोशिका, गोशिनो, गोशो स्त्री—गवालिन ।

गोशिव (-अ) स—एकठात्रा एकतारा ।

गोश स—मन्दिर या नगर का फाटक ।

गोशवा, गोश (-अ) वि—गोशान देखो ।

गोश (-अ) स—गुच्छ मूँछ ।

गोश (गोशवा) वि—आठ मोटा, भद्दा ।

गोश स—गोशर ।

गोशवा (गोशवाट) स—देहरी, दहलीज ।

गोशवा स—भेड़िया, ते दुआ, बड़ा शेर ।

गोशवाट ठाँका स—गौ की शीतला से लिये
हुए धीज की टीका । [सीधा-सादा ।

गोशवाट, (-वो) वि—निश्रीश जानमाश्रव भोला,
गोश स—गोशर ।

गोशवा स—गुमास्ता, तहसीलदार, मुहरिर ।

गोश (-अ) वि—निरा मूर्ख, भोंदू ।

गोशान स—बैलगाड़ी ।

गोशान वि—ढीठ, गवार, उजड़, गुंडा । —गोश
सं—गिठाई, उजड़पन ; खतरनाक काम में
साहस ।

गोशान, गोशान स—गोशाला ।

गोशब्दांश, गोशब्दा स—गवाला, अहीर। स्त्री—
गोशब्दिनी, गोशब्दानी । [जासूसी ।

गोशब्दा स—गुसचर, जासूस । —गिरि स—
गोशब्द स—कवठ, गमाधि कवठ । —शान स—
कविस्तान ।

गोशब्दा वि—गोशब्द, कवठ गोरा । स—फिरंगी,
अग्रज सिपाही ; गौरांग नामक एक प्रसिद्ध
कृष्ण-भक्त जो अवतार माने जाते हैं । —गोशब्द
स—गौरांग देव, चैतन्य महाप्रभु ।

गोशब्दा स—गोरोचन ।

गोशब्दा वि—गोल । स—शोर, भ्रष्ट । —गोल
स—शोरगुल । —गोल वि—पेचदार,
भ्रष्टवाला ।

गोशब्दा स—गोला, गोलक, गोल पिंड । —गोशब्दा
स—भूलभुलैयाँ, गोरख-धंधा ; जटिल
समस्या । [मोटाताजा (—गोशब्दा) ।

गोशब्दा वि—करीब-करीब गोल ; गोल
गोशब्दा स—गोशब्दा शानिक बखार का
मालिक, अद्वितीय । गोशब्दा वि स—
बखार या खलिहान का अधिकार ।

गोशब्दा स—गोलन्दाज ।

गोशब्दा स—एक प्रकार की लम्बी और चौड़ी
घास जिससे छप्पर छाया जाता है ।

गोशब्दा वि स—काली मिर्च ।

गोशब्दा, गोशब्दा, गोशब्दा स—शोरगुल,
गड़बड़ी, फिसाद, भ्रष्ट । गोशब्दा वि—
भ्रष्ट (मामला) ।

गोशब्दा स—गोल पिंड, गोला, खलिहान,
बखार (—घर, —बाड़) । —गोशब्दा वि—
खलिहान में रखा हुआ ।

गोशब्दा (क्रि परि ६) —घोलना । सं—घोली
हुई वस्तु (—) ।

गोशब्दा स—गुलाब । गोशब्दा वि—गुलाबी ।

गोशब्दा स—गुलाम । गोशब्दा वि स—गुलामी ।

गोशब्दा (—अ) स—पृथ्वी या किसी गोल
वस्तु का आधा अंश ।

गोशब्दा वि—करीब करीब गोल ।

गोशब्दा (—आ) स—वैकुण्ठ, कौड़ियों का एक
खेल जो बहुत से चित्रों और खानों वाले एक
बड़े कागज पर खेला जाता है । —गोशब्दा स—
वैकुण्ठास, मृत्यु ।

गोशब्दा स—गोशब्दा शानिक लड्डूसा गोल छेने
की एक मिठाई (—), रसगुल्ला, शून्य,
कुछ नहीं । गोशब्दा स—गोशब्दा क्रि—नष्ट
होना, बरबाद होना ; आवारा हो जाना ।

गोशब्दा (—अ) स—गोशब्दा चरागाह, मिलने का
स्थान, सभा, समिति । गोशब्दा स—कुटुम्ब,
वश, कुल, दल, सभा ।

गोशब्दा स—गौ के खुर के दबाव से जमीन पर
जो दाग होता है, बहुत छोटा आधार
(गोशब्दा गोल) । [खाना ।

गोशब्दा स—गान गुस्ल । —गाना स—गुस्ल-
गोशब्दा स—गुस्सा, क्रोध । —घर स—
गोशब्दा शान ।

गोशब्दा, गोशब्दा स—गोशब्दा गुसाई, प्रभु ;
वैष्णवों की एक उपाधि ।

गोशब्दा स—गोशब्दा गोह ।

गोशब्दा (—अ) स—गोशब्दा, मांस । [डिठाई ।

गोशब्दा स—गोशब्दा, देशादिवि गुस्ताखी,
गोशब्दा स—गोशब्दा ।

गोशब्दा स—गोशब्दा ।

गोशब्दा (गड) स—बगाल का प्राचीन नाम ;
उत्तरी बगाल । गोशब्दा (—अ) वि—गौड देश
का ।

गोशब्दा (गडन) स—गौण, विलंब, देर ।

गोशब्दा वि—गोशब्दा, कवठ गोरा । सं—गौरांग
देव, चैतन्य महाप्रभु, बगाल के कृष्णोपासक
गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक,

यह अवतार माने जाते हैं। —छल सं =
गोत्राणि । —जलिका स —कीर्तन के पहले
गौरांग देव की वदना ; भूमिका ।

गौरव सं —गौरव, शिवा गौरव, वडप्पन ।
गौरवविधित (-अ), गौरवित (-अ) वि —
गौरवयुक्त ।

गौरव (-अ) वि —जिसका रंग गोरा है ।
स —गौरांग देव । स्त्री —गौरांगी ।

गौरवी स्त्री —गोरे रंग की स्त्री ; पार्वती, आठ
वष की कुमारी कन्या (-नान) । —गठ (-अ)
सं —शिवलिंग के नीचे की पीठ । —भद्र
स —हिमालय की सबसे ऊँची चोटी ।

गंगा सं = गंगा ।

गैस सं = गैस gas.

गंधन, गंधन सं —गंधा गूँथना ; चुनाई ;
रचना । गंधित (-अ), गंधित (-अ) वि —
गूँथा हुआ, जड़ा हुआ ; रचित ।

गंध (ग्रन्थ अ) स —पुस्तक, किताब, ग्रन्थ,
'शास्त्र' । —काग, —कड़ी स —पुस्तक का
लेखक । स्त्री —गंधिका । —गंध सं —किसी
पुस्तक के मुद्रण का स्वतंत्र अधिकार Copyright

गंधांगार सं —पुस्तकालय । गंधांगारिक सं —
पुस्तकालयाध्यक्ष । [समूह ।

गंधानि सं —एक ही लेखक के लिखित ग्रंथों का
गंधि सं —गंधित, गंधित गाँठ, जोड़ । गंधित वि —
गाँठदार । —गंधन सं = गंधित ।

गंधन सं —भक्षण । गंधन वि —निगलने वाला ।
गंध (-अ) वि —ग्रस्त, पकड़ा हुआ, आक्रांत,
अभिभूत (विभन —) ।

गंधा (-अ) सं —ग्रहण रहते हुए सूर्य या
चन्द्र का अस्त गमन । [चन्द्र का उदय ।

गंधान्न सं —ग्रहण-युक्त अवस्था में सूर्य या
चंद्र (-अ) स —ग्रह ; ग्रहण (दाव —) ; बोध

(अर्थ —, दाव —) । —गंधा, सं —ग्रह का
अधिष्ठात्री देवता । —दाव, —देवता सं —
ग्रह का प्रतिकूल प्रभाव । —विध (-अ)
सं —दैवज्ञ ग्राहण, महापात्र । —दाव सं —
ग्रह-दोष की शांति के लिए यज्ञ ।

गंध सं —ग्रहण, स्वीकार ; बधन, स्वागत ;
सूर्य या चन्द्र का ग्रहण । गंधी (-अ) वि —
ग्रहण करने के योग्य । गंधी सं —ग्रहण
करनेवाला ।

गंधी, (-वि) सं —सग्रहणी ।

गंधांगी (-अ) सं —दैवज्ञ महापात्र ।

गंध सं —गंध, गंधी, गंधांगी गाँव ; समूह
(गंध —, दाव —) । गंधिक सं —गाँव का
मालिक, ग्राम-रक्षक । गंधी वि —गाँव का ।
गंधी वि —देहाती, गाँव का । गंध (-अ)
वि —गंधा देहाती ।

गंधांगार सं —फोनोग्राफ बाजा ।

गंध सं —कौर ; पकड़ ; भक्षण ; ग्रहण का
लगना । गंधांगार सं —गंधांगार-भोजन-
वस्त्र ।

गंध (-अ) सं —ग्रहण, लेना ; बोध, मगर ।

गंध सं —गंधी लेनेवाला खरीदार,
समाचार पत्र का ग्राहक । स्त्री —गंधिका ।

गंधित (-अ) वि —जो ग्रहण कराया गया है ।

गंधी वि —ग्राहक (गंध —, दाव —), आकर्षक
(दाव —) । सं —मल रोकने वाली दवा ।

गंध (ग्राह्य अ) वि —ग्रहण के योग्य,
स्वीकार करने लायक, विचार-योग्य ।

गंध (ग्रीष्म-अ) स —गर्म की ऋतु, गर्मी ।

गंधांगार सं —गर्म की छुट्टी ।

गंधांगार, (गंध —) सं —गिरफ्तार । गंधांगी
वि —गिरफ्तार सम्बन्धी (—गंधांगार) ।

गंध सं —कृान्ति, थकावट, खेद ; निन्दा ।

गंध सं —गंधांगार गिलास ।

घ

घटे स—मिट्टी का घट, घड़ा ; आधार (गर्ल-
घटे), (व्यंग में) दिमाग ' घटे बुद्धि (नई) ।
घटेक स—घटक विवाह का सम्बन्ध करने
वाला । —ठा, घटेकालि (घट्कालि) स—
घटक का काम । स्त्री -घटेकौ ।

घटेघटे स—घट घट शब्द । [घटती ।
घटेठि (घट्ति), घटेठि स—कृति कमी,
घटेन स—सघटन, होना ; सयोग । घटेनौघ
(-अ) वि—घटने योग्य, होने लायक ।

घटेना स—व्यापार वारदात । —कृत्रि वि—
दैवकृत्रि दैवयोग से । —कृत्रि स—घटनाओं का
सिलसिला । —धीन वि—दैवधीन दैव के
अधीन । —वनी, (-ने) स—घटनाये ।

घटे। स—कंकणक समारोह, आडम्बर,
प्रबन्ध, घटा (घन—) । [होना ।

घटे। (क्रि परि १)—होना संघटित होना, पूरा
घटे।न (-नो), घटे।ना (क्रि परि १०) सघटित
करना ।

घटे। स—लोटा, लुटिया । [छोटा लोटा ।

घटे। स—घटे घटा (घन—), घटे। घड़ी,
घटे।ठ (-अ) वि—सघटित, सम्पादित, सम्बन्धी
(अश्व—), बनाया हुआ, युक्त (शब्द—) ।

घटे। स—लोटा । —शब्द स—समय जानने का
एक प्राचीन यंत्र ; अत्रघटे रहट ।

घटे (-अ) स—घटे घाट ।

घटेन स—घाटेन घाटने का काम, हाथ से
बार-बार हिलाना, रगड़ना, पीसना । घटे।
(-अ, वि—घाटा हुआ । [शब्द, घरी ।

घटे। स—कफ के कारण गले में घड़घड़ाहट का
घड़ा स—कमजौ मिट्टी धातु आदि का घड़ा ।

घटे। स—घड़ी ।

घटे। स—मगर, ग्राह ।

घटे (-अ) स—भूनी हुई तरकारी जिस में
रसा न हो ।

घटे। स—घटा, मन्दिरनुमा धातु का एक
बाजा, दिनरात का चौबीसवाँ भाग । —कृत्रि
—घटे स—वर्मरोग का देवता । घटे।,
घटे। स—छोटा घटा ।

घन (-अ) वि—गाढा घना, गहरा, मोटा ।
स—मेघ ; समान तीन सख्या का गुणनफल ।
—घन क्रि वि बार बार, थोड़ी जगह में पाग
पास । —घटे। स—अष्टाष्टत्र घटा ।
—घात्र वि—घटा से आच्छन्न । —घ (-अ),
स—गाढा घनापन, लवाई चौड़ाई और
मोटाई तीनों का भाव । —कृत्रि स—लवाई
चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल । —गुल
स—घनमूल, गणित में किसी घन राशि का
मूल अक जैसे २७ का ३ ।

घनान (-नो), घनाना (क्रि परि १०)—निकट,
होना, पास आना, गाढ़ा करना ।

घनाककार स—गहरा अ धेरा ।

घनिष्ठ (-अ) वि—निकट का, अन्तरंग, दिली,
हार्दिक (—रक्ष) ।

घनीकृत (-अ) वि—गाढ़ा किया हुआ ।

घनीभूत (-अ) वि—जो गाढ़ा हुआ है ।

घन स—सकान गृह, कोठरी, गृहस्थी ;
परिवार (श्राव—काश्र) , वश खानदान (डाल
घन (छल) ; छेद (वातावर—) । —कृत्रि
क्रि—पत्नी हो कर रहना । —घात्रा क्रि—नया
घर बनाना । —वाश क्रि—भोपड़ी बनाना ।
—घात्रा क्रि—घर फोड़ना, परिवार में फूट
डालना । —कृत्रि, —कृत्रि स = शृशालि ।
—वाश स—सहर के घर में रहने वाला
दामाद । —घात्रा वि—जिससे घर पूर्ण या
शोभित होता है । —घात्र स—घरदुआर ।
—घात्रा स—लका जलाने वाला हनुमान ।

वि—जिसका घर जल गया है घरके जलनेसे
भुलसा हुआ (—गई मिंछले मेष रथल
उवाइ)। —वाँवा वि—शृङ्गाविल पालतू।
—वृथा वि—शृङ्गाविल घर की ओर मुंह किया
हुआ। —नफाने स—घरका भेदिया। —नफा
सं—नये घर में प्रवेश।

वर्तनी स्त्री—शृङ्गी पत्नी।

वर्ताउ वि=वर्ताइ।

वर्ताना वि—वर्त का, खानदानी।

वर्ताओ, (-वि) स—घर छानेवाला।

वर्ताइ वि—घरेलू, पारिवारिक।

वर्त स—पहिये के चलने का शब्द।

वर्म (-अ) स—वर्म पसीना। वर्मलु (-अ)
वि—पसीने से तरावोर।

वर्म स—वर्म रगड़; मांजना। वर्मलु (-अ)
वि—घिसा हुआ।

वर्मा (क्रि परि १)—रगड़ना, घिसना। वि—
घिसा हुआ (—वर्मा)। स—जिस चीज
से सिर के बाल आदि साफ किये जाते हैं
(गो—)।

वर्मा स—वर्त घाव; चोट; घका, हानि।

वर्मा (घाव) स—लहंगा।

वर्मा वि—बुल्लेखी अनुभव (निन्दार्थ में)
(—वर्मा)।

वर्मा स—घाट, नदी पार होने का स्थान;
घाटी, दर्रा, अपराध (—वर्मा, —वर्मा);
सितार आदि का घाट।

वर्मा (क्रि परि ३)—वाल्माइन रुझा, नांजांजा
रुझ हाथ से बार बार हिलाना। —वर्मा स
हाथ से बार बार हिलाना; चर्चा (के रुथा
निद्र—)।

वर्मा स—रुझा, बान्झा घटा।

वर्मान (-नो), वर्मानो (क्रि परि १०)
—नांजांजा हिलाना; चिढ़ाना, विक करना।

वाँवा, वाँवा स—वर्मा चौकी, पहरे का स्थान,
दर्रा —वागमाना)।

वाँवा, वाँवा स—घाटिया।

वाँवा स—वर्मा, वीवा कधा। —वाँवा क्रि—
सिर हिलाना। वाँवा कधा क्रि—सिर पर लेना,
जिम्मेवारी लेना।

वाँवा स—वर्मा, वाँवा चोट, मार, हत्या; घात,
मौका। वाँवा, वाँवा स—वर्माकात्री, व्हाव
हत्यारा। वाँवा स—हत्या। वाँवा वि—
हत्यारा। वी—वाँवा।

वाँवा स—कोलू। [घात।

वाँवा (घाट), वृषा स—वृषाकर प्रतीक्षा,
वाँवा (-नो), वाँवा (क्रि परि १६)
—वर्मा वृषा, इतवृषा इवृषा घबराना।

वाँवा स—पसीना। [निकलना।

वाँवा (क्रि परि ३)—वर्मा इवृषा पसीना
वाँवा स—वर्माहारी, पसीने के कारण शरीर
में छोटी छोटी फुसियां।

वाँवा (-नो), वाँवा (क्रि परि १०)—
पसीना पैदा करना; वाँवा चलाना
(वाँवा—)।

वाँवा वि—वर्मा घायल।

वाँवा स—घास, तृणा।

वाँवा, वी स—वृषा वी। [सटा हुआ।

वाँवा वि—वर्मा तंग, वर्मा पास-पास
विनविन स—विन, घृणाके कारण थोड़ी वेचनी।

वाँवा, वृषा (क्रि परि ५)—वर्मा, व्हाव (वर्मा
वाँवा—)। वि—वाँवा हुआ, वेष्टित। स—
—वाँवा हुआ स्थान।

वाँवा स—दिमाग, मगज।

वाँवा वृषा स—कुकरखांसी Hooping cough.

वाँवा (वृषा) स—वृषा। [आदमी।

वाँवा स—वर्मा जाति की एक चिड़िया; वृषा
वृषा, वृषा स—वृषा।

बूछा, बूछा (क्रि परि ६)—नष्ट होना, गायब होना (शब्धि—, शब्ध—) ।

बूछान (—नो), बूछानो, बूछनो, बूछानो (क्रि परि १३)—नाश करना, खतम करना (शब्ध —) ; गन्दगी साफ करना । [शब्धि— ।

बूछि स—संकरा स्थान, तंग जगह ।
बूछे वि—घोर गहरी (—शब्धकार) ।

बूछि स—छुटिका गोटी । [बनता है ।

बूछि स—कंकड़, जिसके जलाने से चूना बूछे से —गोहरी, उपला, कड़ा ।

बूछि स—गुह्नी ।

बूछि स—घुन । वि—अनुभवी । बूछाकर स—
इशारा (बूछाकर छेद पाठ) ।

बूछि स—घंटी ; छोटा बटन ।

बूछि (घुनछि) स—कमर का डोरा ।

बूछि (घुपछि) स—चापछि ।

बूछि (घुपछि) स—अंधेरा सकरा स्थान ।

बूछि स—नींद, निद्रा ।—पाड़ाना क्रि—छलाना ।

—छ (घुमन्त अ) वि—निद्रित, सोया हुआ । बूछे घोर स—ऊँचाई ।

बूछान (—नो), बूछानो, बूछनो (क्रि परि १३)
—सोना, निद्रित होना ।

बूछि स—बूछन, पाक चक्र, सिर-घूमना । —बूछि
स—धार-धार चक्र काटने का भाव प्रकाश ।

—शब्ध स—जिस रास्ते से बहुत घूमकर जाना होता है । —पाक स—चक्र (—शब्ध) ।

बूछि स—चक्र, परिक्रमा, घूमना । [चलना ।

बूछा, बूछा (क्रि परि ६)—बूछान घूमना,

बूछाबूछि, बूछाबूछि स—शेठेशेठि, बार-बार आना-गोना बार-बार आना-जाना ।

बूछान (नो), बूछानो, बूछनो, बूछानो (क्रि परि १३)—बूछित कड़ा, पाक पेशा घुमाना, लौटाना । [सिर-घूमना ।

बूछानि, बूछनि बूछनि स—घूमने का भाव,

बूछानि स—दिवाल में छेद भरखा ।

बूछान (—नो, बूछानो, बूछनो, बूछानो
(क्रि परि १३)—हिलाकर गदला करना ।

बूछि स—छेदछेद घूस, रिखत । —थोत्र स—
घूस खानेवाला । [परन्तु रोजाना (—शब्ध) ।

बूछिबूछि वि—जापा दवा हुआ, अल्पष्ट, थोड़ा बूछा, बूछा, बूछि, बूछि स—बूछाघात घूँसा,

मुट्ठी । बूछाबूछि, (बूछा—) स—घूँसेबाजी ।

बूछि स=बूछि । [वि—चक्र काटता हुआ ।

बूछि स—आवर्तन, घोरा चक्र । बूछित (—अ)

बूछान, बूछानान वि—जो घूम रहा है ।

बूछावर्त (—अ) स—बूछित भंवर ।

बूछि स—जलजमि भवद, चक्र ।

बूछा स—घेन्ना घृणा, नफरत । —ई (—अ) वि—

घृणा के योग्य । —आद स—घृणा का पात्र ।

बूछित (—अ) वि—घृणित । स—घृणित

व्यक्ति । बूछी वि—घृणा करनेवाला । बूछि

(—अ) वि—घृणा के योग्य ।

बूछ (—अ स=धि । —कूमात्री स—घीकुवार ।

बूछाछ (—अ) वि—धि-माथा धी से चुपड़ा हुआ । [हुआ ।

बूछ (—अ) वि—बूछित घिसा हुआ, माँजा

बूछेबूछे स—कुत्ते के भौंकने का शब्द ।

बूछा, बूछा (घेन्ना) स—भक्त, बला, विपत्ति,
अधिक अनुरोध, जिद ।

बूछान (घेन्ना), बूछानो, बूछान, बूछानो
(क्रि परि १०) बहुत अधिक अनुरोध करना,

जिद करना ।

बूछि स—शेठ कछ अरवी, कुछ नहीं ।

बूछि स—बूछाकर्ण एक जगली फूल ।

बूछा स—घृणा, नफरत ।

बूछा वि—घाववाला, क्षतयुक्त ।

बूछि स—परिधि, घेरा, मडल ।

बूछा क्रि वि, स=धि ।

पेद्रा स—घिराव घेरा घेपन ।

पेद्राटोण स—कुर्सी आदि का आवरण ।

पेद्र स—स्पर्श, सम्बन्ध रगड़ ।

पेद्रा (घै पा) (क्रि परि १)—सट जाना, पास रहना, नटना । वि—पास का, सम्बन्धयुक्त ।
—पेद्रि स—दूब दाहादाहि बहुत पास पास या देह छूकर रहने का भाव ।

पेद्र स—cinder कोयला ।

पेद्रेड स—घसियारा, घास बेचनेवाला ।

पेद्रा वि—घासघार, घास-सा, तुच्छ । जानवर ।

पेद्रा स—कुते की जाति का एक जगली

पेद्रा, पेद्रान क्रि=दूध, दूधान ।

पेद्रा स—बूँडि कोना, मोड़ । [हिलोना ।

पेद्रा स—विल्ट में आन्दोलन ; साजिश ;

पेद्रा स—घोड़ा । स्त्री—घाटेकी ।

पेद्रा स=घेन । [छोटा घोंटना ।

पेद्रा (घोंटना) स—घोंटने का ढडा,

पेद्रा (क्रि परि ६)—हिलोना, घोंटना ।

पेद्रा वि—घोड़े का, अग्न सम्बन्धी । —

गाड़ि स—घोड़े की गाड़ी । —लेड़ (डटड़)

स—घुड़नौड़ । —लेना वि—ऊँची एड़ीवाला

(-जूता) । —नउराव स—घुड़सवार ।

पेद्रा स=पेद्रा । पेद्राव डिम स—घोड़े

का अडा, कुत्र भी नहीं, मिथ्या वस्तु ।

पेद्रा स—सुअरका शब्द ।

पेद्रा (घोम्टा) स—यदुष्टेन घूँघट ।

पेद्रा वि—घोर, डरावना ; घना ; गाढ़ा । स

—अ घेरा, असर (घुमर—) । —गाठ

स—जटिलता, पेच ।

पेद्रा, पेद्रान क्रि=दूध, दूधान ।

पेद्रा (-अ), पेद्राणा वि—अ घेरा, गाढ़ा ;

जटिल ; पेचदार ।

पेद्रा स—ठक मट्टा छाल । —थोरा क्रि

—दिक्त में पड़ कर परेशान होना ।

पेद्रा वि—गंदला । पेद्राटे वि—थोड़ा गंदला ।

पेद्रान (-नो), पेद्राणा क्रि =दूधाना ।

पेद्रा स—ध्वनि, घोषणा, अहीर ; कायरथों की एक उपाधि । —द वि, स—प्रचारक, घोषणा करनेवाला डिठोरा पीटनेवाला ।
—पद (-अ स—घोषणा-पत्र, गजट ।

पेद्रा (क्रि परि १) घोषणा करना ।

पेद्रान (-नो), पेद्राणा (क्रि परि १४)

पेद्राट दूधाना घोषित कराना ।

पेद्रा स—ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

—प (-अ) प्रत्य—मारनेवाला (दोगड़, शऊत्र) ।

पेद्रा (घैन-) स—नाकौ शूरे कात्रा वा अहन

वारवार नकलुर बिनती या प्रार्थना । पेद्रा

पेद्रा स—एकठाना विरुद्धिद्वर दशा लगातार

दिक करनेवाली यात । —पेद्रापेद्रा स

—घे घे पे पे, चे चे मे मे ।

पेद्रा स—पेद्रा गन्ध ग्रहण, गंध ; नाक,

प्राणोन्द्रिय । पेद्रा (-अ) वि—जिसका

प्राण लिया गया है । पेद्रा (-अ), पेद्रा

(-अ , वि—प्राण लेने के योग्य । पेद्रा

वि, स—प्राण लेनेवाला ।

८

छे स—पिप्पली जाति की एक लता, इसकी शाखा और जड़ दवा के काम आती है ।

छे वि—चौड़ा, विस्तृत, फैला हुआ ।

छे स—चौकोर आँगन के चारों ओर के घर (—बिजान बाड़ी) ; चोक बाजार ; जमींदारी का एक अंश ।

छे स—जीम से पानी पीने का शब्द (लघु अर्थ में—छूक छूक) ; चमक का भाव

प्रकाश (कृपा ब्रोजे—कत्र) । (लघु अर्थ में—चिकचिक) । चक्रचक्र, चिकचिक, चूकचूक वि—चमकदार, उज्ज्वल ।

चक्रवन्ति स—जमीन की सीमा निर्णय, जमीन का हिस्सा । चक्रवन्तौ वि=चक्रवर्त्तमान ।

चक्रवक् स—भलमल, उज्ज्वलता प्रकाश (लघु अर्थ में चिकचिक) । चक्रवक् वि—उज्ज्वल, चमकदार ।

चक्रवक् स—चकमक ।

चक्रवर्त्तन (-अ) वि—चौकर आंगन के चारों ओर घर युक्त (—वाड़ि) ।

चक्रवा (चक्रवा) स—जमींदारी का एक अंश, कुछ ग्रामों का समूह, परगना, छाल, चमड़ा । —तात्र स—परगने का मालिक, एक उपाधि ।

चक्राचक्रौ स—चक्रवा-चक्रई । [चौकन्ता ।

चक्रिठ (-अ) वि—चक्रिठ चक्रित, चौंका हुआ, चक्रिठे क्रि वि—क्षणभर में, एकाएक ।

चक्रोत्र स—चकोर । स्त्री—चक्रोत्री ।

चक्र स—छाका पहिया, चक्र; घुमावदार स्थान या पथ, भ्रमण (एक—बढ़ाना), साँप का फन या उसके ऊपर का चक्र-चिह्न ।

चक्र स—पहिया, चक्र, भ्रमण, साजिश, गोल अस्त्र (शूरांग—), बड़ा राज्य । —ध्र स—विष्णु, कृष्ण । —नाडि स—पहिये के बीच का अंश या धुरा । —गात्रि स—चक्रधर । —वर्षौ स—चक्रवर्त्ती; सार्वभौम ।

—वाक स—चक्रवा । स्त्री—चक्रवाकी । —वाक स—निष्ठ, मनुष्य, दिगन्त क्षितिज । —वृद्धि स—सूद दर सूद । —वाग स—पहियेदार गाड़ी । चक्रवर्त्तन स—साइकिल ।

चक्रावृत्ति (-अ) स—बढ़वृत्ति साजिश ।

चक्रावृत्ति (-अ) स—पहिये की तरह आवर्तन या घूर्णन, चक्र ।

चक्रौ स—चक्र धारण करनेवाला, विष्णु । वि—साजिश करनेवाला ; खल, कुटिल ।

चक्र (चक्र-अ) स—चक्षु, आँख (केवल विभक्तियुक्त प्रयोग है जैसे चक्र) ।

चक्षु (चक्षु स—छात्र आँख, नेत्र ; दृष्टि, नजर । —गोचर वि—दृष्टिगोचर । —दान स—दर्शनशक्ति प्रदान ; अज्ञानी को ज्ञान दान । —गच्छा स—दूसरे के सामने कुछ करने या बोलने में सकोच, मुरौवत । —

शूच वि—जिसको देखने से क्रोध आता है । —शिव स—भौचक्रापन, हक्काबक्का हो जाने की हालत । चक्रवर्त्तन (चक्रवर्त्तमान) वि—चक्षुयुक्त, आँखवाला । चक्रवर्त्तन (चक्रवर्त्तमान) स—आँख खोलना ।

चक्रवि वि—चक्रि चक्रल, जो चल रहा है ; चटपटिया, व्याकुल । चक्रवा स्त्री—विश्रुत विजली ; लक्ष्मी ।

चक्र स—गात्रि ठाँठे चिड़िया को चौंच । —गुठे स—दोनों चौंचों का मध्यभाग ।

छटे क्रि वि—छटे छट (—कत्र अत्र) । —गुठे क्रि वि—छटपट । —गुठे वि—चटपटिया, चतुर । [बनाने का कारखाना ।

छटे स—टाट । —कन स—टाट बोरा आदि छटे स—छड़ाई गात्रि गौरैया, उड़, बाढ़धर आडम्बर, चमकीलापन, तडक-भड़क ।

छटेका (चट्का स—निद्रा का आवेश, ऊँघ ; देखबरी ।

छटेकान (चट्कानो), छटेकानो (क्रि परि १६)

—हाथ की उगलियों से नरम वस्तु मसलना, गूँधना ।

छटेछटे स—लसलसापन (लघु अर्थ में—छिछिटे) । छटेछटे, छिछिटे वि—लसलसा, गोंददार ।

छटे (क्रि परि १)—खफा होना, नष्ट होना ;

(३८—, ६६—) । वि—खफा, क्रोधित ।
 सं—वाँस की चिपटी तीली । —छो सं—
 बागबाग भगड़ा कलह, मनमुटाव ।
 छोन (-नो) छोना (क्रि परि १०)—
 बागबाग खफा करना चिढ़ाना ।
 छो सं—चट्टी, स्लिपर, चट्टी, पडाव । वि—
 मतला (—रहे, —छूट) ।
 छो सं—ठावाला खुशामद ।
 छो वि—चंचल, लघु ; छन्द ।
 छो सं—चटगाँव का पुराना नाम ।
 छोभावा सं—छोछे, जातिवाँ ब्राह्मणों की
 एक उपाधि ।
 छो सं—गंध, शंख, शंख चपेट, थप्पड़
 गाल—बाबा क्रि—गाल पर थप्पड़ मारना ;
 मारना ।
 छो सं—चैत्र सक्रान्ति का उत्सव । —गाइ
 सं—जमीन में गाढा हुआ बहुत ऊँचा बल्ला
 जिसके ऊपर दो लकड़ी या बाँस तिछें लगा
 कर और उनके सिरो से लटकती हुई रस्मियों
 में चार आठमियों को चढ़क के उत्सव के
 समय घुमाया जाता है ।
 छो सं, छो सं—पड़पड़ शब्द (—रुद्र कापड़
 छेड़, —रुद्र गाँइ छेड़ाने, —रुद्र काँट काँट,
 गाँ छेड़—रुद्र) (लघु अर्थ में—छिछि) ।
 छो सं, छो सं—तेल में सूनी हुई कई प्रकार
 की मिली हुई तरकारी जिसमें रसा न हो ।
 छो सं—वाटाई चढाई ; मूल्य में वृद्धि ।
 वि—बढ़नेवाला ।
 छो सं (-नू-) सं—यात्री, सवारी ।
 छो सं—पड़पड़ शब्द (—रुद्र इष्टि गड़,
 —रुद्र २३ दोहाँ दा रुद्रा रना) ।
 छो सं—छर रेती, नदीके बीच में उभड़ा हुआ
 रेतीला टापू, कद्वार ।
 छो (क्रि परि १)—चढ़ना, बढ़ जाना (क्षम—,

३८—), चढाई करना । वि—ऊँचा, ज्यादा
 (—नू) ; तेज (—जान, —गढ़, —दोहाँ) ।
 छो सं—चढाई, ऊँचाई । छो सं, छो सं—
 छंद गौरैया ।
 छो सं, छो सं सं—तनजावन
 वनभोजन, जंगल की रमोई picnic
 छो सं—चढाई, आक्रमण (गड़—) ।
 छो सं—एकाएक फटने का शब्द ।
 छो (-नो), छो (क्रि परि १०)—उठाना,
 लादना. स्थापित करना (शंख—, शिखर
 नाथर दिग्गज—, नाडिगाना छेड़न—) ;
 बढ़ाना, ऊँचा करना (रुद्र—, गनाद रुद्र—) ;
 थप्पड़ मारना । [छो सं, छो सं]
 छो सं—छाई गौरैया । छो सं, छो सं =
 छो सं—छाँटा, दूँ चना ।
 छो (-अ) वि—खफा, क्रोधित, प्रचण्ड ।
 छो सं—छाँटा एक नीच जाति, चांडाल,
 निंद्य । स्त्री—छाँटी ।
 छो सं, छो सं—दुर्गा, क्रोधित स्त्री ; छो—
 दुर्गा सप्तगती (—१८) । छो सं, छो सं—छाँटा
 नाना दुर्गा काली आदि की पूजा का दालान ।
 छो सं—चढ़, मदक । —छाँटा सं, वि—
 चढ़वाज ।
 छो सं, वि, सं—छाँटा चार, ४ —छाँटा, छाँटा सं =
 छाँटा चार बाँड़ी । —छाँटा सं—चौहद्दी ।
 —छाँटा सं, वि, सं—चौमन, ५४ । —छाँटा सं
 वि—चौमनवाँ ५४ वाँ । —छाँटा सं—
 चौसठ, ६४ । —छाँटा सं वि—चौसठवाँ, ६४—
 वाँ । —छाँटा सं, वि, सं—चौहत्तर ७४ । —
 छाँटा सं वि—चौहत्तरवाँ, ७४ वाँ ।
 छो सं वि—चालाक, चतुर, धूर्त ।
 छो सं, वि, सं—छाँटा चौरासी, ८४ । —छाँटा सं
 वि—चौरासीवाँ ८४ वाँ ।
 छो सं (चतुरख-अ) वि, सं—छाँटा चतुर्भुज ।

छट्चरंश (-अ) सं—चार भाग । छट्चरंशित
(-अ) वि—चार अंशों में बंटा हुआ,
चौपेजी quarto.

छट्चरंश स—छट्चरी, इन घोखा, छल ।

छट्चरंशम सं—चार आश्रम जैसे—ब्रह्मचर्य,
गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास ।

छट्चरंश वि—चौगुना ।

छट्चरंश (-अ) सं—चौथाई ।

छट्चरी सं—चौथ, पिता या माता की
मृत्यु के बाद चौथे दिन विवाहिता कन्या के
द्वारा किया जाने वाला श्राद्ध ।

छट्चरिक् स—छट्चरिक् चारों दिशायें । छट्चरिक्
क्रि वि—चारों ओर ।

छट्चरिक् स—चार आदमियों के द्वारा ढोयी
जाने वाली पालकी । [में ।

छट्चरिक् क्रि वि—चार प्रकार से, चार भागों
छट्चरिक् वि, स—छट्चरिक् चौरानवे, ६४ ।
—उग्र वि—चौरानवेवाँ, ६४ वाँ ।

छट्चरिक् (-अ) स—मनुष्य जीवन के चार लक्ष्य
जैसे—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ।

छट्चरिक् (अ) सं—हिन्दुओं के चार वर्ण
जैसे—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

छट्चरिक् (-अ) वि—चौवीसवाँ, २४ वाँ ।

छट्चरिक् वि, स—छट्चरिक् चौवीस, २४ । —
उग्र वि—छट्चरिक् ।

छट्चरिक् (अ) वि—चार प्रकार का ।

छट्चरिक् सं—वर्षा के चार मास ।

छट्चरिक् स—ससार के चार युग जैसे—सत्य,
त्रेता, द्वापर और कलि ।

छट्चरिक् (-अ), —उग्र वि—चौआलीसवाँ,
४४वाँ । छट्चरिक् वि, स—छट्चरिक्
चौआलीस, ४४ ।

छट्चरिक् (-अ) सं—चौकोर भूमि ; चार खम्भों
का मण्डप, चार का समूह ।

छट्चरिक् सं—चार चीजों का समूह ।

छट्चरिक् सं—चौराहा ।

छट्चरिक्, (-आदि) वि, स—चौपाया ।

छट्चरिक् सं—छोटा सस्कृत की पाठशाला ।

छट्चरिक् (-अ) सं—छात्र आश चार वगल ।

छट्चरिक् वि—छोटा चौराहा ।

छट्चरिक् (-अ), —उग्र वि—चौतीसवाँ,
२४ वाँ । छट्चरिक् वि, स—छोटी चौराहा,
२४ ।

छट्चरिक् सं—छोटा चतुर्तरा ।

छट्चरिक् (-अ), —उग्र वि—चालीसवाँ, ४०वाँ ।

छट्चरिक् वि, स—छोटी चालीस, ४० ।

छट्चरिक् (चन्चन्) सं—तीव्रता प्रकाशक शब्द
(ब्रौह्म—कवच) । छट्चरिक् वि—तेज, तीव्र
(—ब्रौह्म) ।

छट्चरिक् (चन्मन्) सं—वेचैनी, उत्साह,
फुर्ती । छट्चरिक् वि—फुर्तीला ।

छट्चरिक् स—चदन (—चदा, ब्रह्म—, श्वेत—) ।
—गोला, —गिड़ि स—जिस सिल पर चदन
घिसा जाता है । [रेखाये हैं ।

छट्चरिक् सं—सुग्गा जिसके गले में लाल

छट्चरिक् सं—विशु, शशधर, शशाङ्क चाँद,
चंद्रमा, आनन्द देने वाला, श्रेष्ठ (कृष्ण—,
कूल—), एक उपाधि । —गुलि सं—
नारियल चीनी और खोवा मिला कर बनायी
हुई एक मिठाई । —छट्चरिक् (-अ) वि—

चंद्रमा—सा, चंद्रमा के समान प्रभायुक्त ।
—छट्चरिक् स—एक विषैला साँप । —शब्द सं—
—कमर में पहनने का एक जेवर, पेटी ।

छट्चरिक् सं—छायाश, गुरु, ग्रेनाय चदवा ।

छट्चरिक् स—छाया चाँद की तरह सुन्दर मुख ।
स्त्री—छाया, (-ननी) ।

छट्चरिक् सं—छाया चाँदनी ।

छट्चरिक् (-अ) सं—चन्द्रमा का अस्तगमन ।

छल्लान्न स—चन्द्रमा का उदय ।

छन स—भूने हुए मांस का टुकड़ा, एक प्रकार का समोसा ।

छनछन, छनछन स—कीचड़ में चलने का शब्द ।

छनछन वि—तरायोर (शिख—शङ्ख) ।

छन वि—चंचल, हल्के मिजाज का, क्षणिक ।

छन स्त्री—लक्ष्मी, विजली ।

छन स=छ । छनछन स—थप्पड ।

छन्न स—चप्पल, स्लिपर ।

छन्न, छन्न स=छान ।

छन्न वि, स—चौबीस, २४ ।

छन्न स—चौबीस तारीख (को) ।

छन्न स—विश्व आश्चर्य, अचंभा ; आतंक, होश (—जडा, होश आना) ।

छन्नान (—नो), छन्नानो (क्रि परि १६) — चौकना, चमकना, चौंकाना ।

छन्नानि स—चौक ।

छन्नित (—अ) वि—चौंका हुआ ।

छन्न स—छेने की एक मिठाई ।

छन्नकात्र स—विश्व आश्चर्य । वि—बहुत सुन्दर । —र, (—शरी) वि—आश्चर्यजनक, विस्मित करनेवाला । स्त्री—छन्नकात्रिणी ।

छन्नकात्रिण स—विस्मयजनक शक्ति ।

छन्न स—तिव्वत को एक गाय जिसकी दुम से चंवर बनता है, सुरागाय । स्त्री—छन्न ।

छन्न स—गणक चम्पक ; शता कलहूल ।

छन् स—बड़ी सेना ।

छन्न स—गण चम्पा ।

छन्न स—गणान्न, गिण्टान चम्पत (—देवता, चम्पत होना, भाग जाना) ।

छन् स=छन्न ।

छन्न स—निष्ठ समूह ।

छन्न स—स ग्रह, नोच । छन्नोत्र (—अ), छन्न (—अ) वि—स ग्रह करने या (फूल) नोचने

योग्य । छन्न (—अ), छि (—अ) वि—पाक सगृहीत ।

छन्न स—रश्मि, शीतल जासूस, दूत, रेती, रेतीला टापू । वि—चलने वाला, जंगम ।

छन्न (चरका) स—चरखा ।

छन्न स—एक आतशवाजी, नाटोटे पन्ता ।

छन्न स—अ, आ पर पाँव (—रुम, —रु, —रु, —रु); ग्लोक या कविता का चौथाई अंग, भूमण, आचरण । छन्न स—गणोदक चरणामृत ।

छन्न काल स—अन्तिम समय, मृत्यु का समय ।

छन्न शब्द (—अ) स—वसीयतनामा ।

छन्न स—चरस ।

छन्न (क्रि परि १)—विछन्न रुद्र घूमना, टहलना, चरना (शब्द छन्नछिन्न) ।

छन्न वि—सचल और अचल, सचेतन और अचेतन । स—सारा ब्रह्माण्ड ।

छन्नान (—नो), छन्नानो (क्रि परि १०)—चराना ।

छन्न स—आचरण, वर्ताव, चरित्र, जीवनी । (—अ) वि—आचरित, अनुष्ठित, सम्पादित ।

छन्नशान स—जीवन-चरित, जीवनी ।

छन्नार्थ (—अ) वि—कृतार्थ, सफल, सन्तुष्ट ।

छन्न (—अ) स—स्वभाव, आचरण चालचलन, नीति, गल्प नाटक आदि का पात्र । —दास स—लपटता । —दान वि—चरित्रवान । —गैर वि—हीन चरित्र वाला, व्यभिचारी ।

छन्न वि—चलनेवाला । [हुआ भात ।

छन्न स—हवन के लिए दूध के साथ पकाया छन्न स=छन्न ।

छन्न स—आलोचना, अभ्यास, शिक्षा (नशीत—, दिग्—, शब्द—); चर्चा, चिन्ता । छन्न (—अ) वि—चर्चा किया हुआ (—शब्द, —विद्या), पोता हुआ (छन्न—) ।

छन्न स—छिन्न चवाना । छन्न (—अ) वि—

चक्राया हुआ। चर्वित-चर्वण सं—कादर काटे, ब्राम्हण, त्रिनिष्ठ चर्वण पागुर, जुवाली; पिष्ट-पेषण; आलोचित विषय की बारबार आलोचना। चर्व (-अ), चर्वी (-अ) वि—चवाने के योग्य।

चर्वि सं—रमा, द्रव्य चरवी।

चर्व (-अ) स—इक, क्षण चमड़ा खाल; ढाल। —कास स—गुठी मोची, चमार। —छाटिका सं—चमेड की पेटी। —ब्राह्म सं—दाद खुजली आदि।

चर्वा (चर्व्य—अ वि—आचरण करने के योग्य।

चर्वा सं—आचार, अनुष्ठान, नियम-पालन।

चल वि—चलनेवाला; चंचल। स—गति, रिवाज। —छि (-अ) वि—चंचलचित्त।

चलान (-नो), चलाना (क्रि परि १६)—छलकना।

चलकित्त (-अ) स—सिनेमा का चलनेवाला चित्र।

चलच्छि, चलच्छि सं—चलने की शक्ति, गति-शक्ति।

चलं वि—चलति चलता हुआ; चंचल।

चलति (चलति) वि—चलता हुआ (—गाडि), प्रचलित (—डावा, —दशा), जिस डुल के साथ विवाह किया जा सकता है (—चद)।

चलन सं—गमन गति, रिवाज। —कई वि—काम-चलाक न बहुत अच्छा न बहुत बुरा, मामूली, साधारण।

चल (-अ) वि—चलनेवाला, गतिशील।

चला (क्रि परि १)—चलना, रवाना होना, आगे बढ़ना, दहलना, जारी रहना (गमाडे—, बाजाद—); योग्य होना (अ कागडे चलने ना); निर्वाह होना (मनाद—, काड—, दि—); पहुँचना (दृष्टि—)। वि—जिसमें

चलना पड़ता है (—गड)। —करा सं—चलना-फिरना।

चलाक सं—बाताश्रोत आनाजाना वि सचल और अचल (—गण्डि)।

चलान (-नो), चलाना (क्रि परि १०)—शोचाना, ठगाना चलाना।

चलित (-अ) वि—प्रचलित चलता, जारी। —डावा सं—चलती भाषा, बोल-चाल की भाषा।

चलित् वि—चलित्।

चलित वि, स—चालीस, ४०।

चलित सं—चलित्।

चलित् वि—चलित्चालीन वेगर्म, देहया।

चला सं—चग्मा, ऐनक।

चल स—शराब पीने का पात्र।

चला (क्रि परि १)—डाव करा हल चलाना, जोतना। वि—जोता हुआ (—छेद)।

चलान (-नो), चलाना (क्रि परि ६)—जुतवाना।

चलित (-अ) वि—चला जोता हुआ।

चल सं—चाय। —करा स—चाय पैदा करने वाला।

चलै, चलि सं—चाई, सरदार।

चलै दि क्रि वि—चाहे, भी, या।

चलै अन्य = छेद।

चलैनि स = चलनि।

चलै, चल सं—चल चाल।

चल (क्रि परि ४)—चाहना, मांगना प्रार्थना करना; ताकना, नजर डालना (दिद—); आँख खोलना।

चल स—चक्र, पहिया, छत्ता।

चलित् स—चाकचक्य चमचमाहट, उल्लुचलता, चमक।

चलित (चाकृति) स—चक्र-सी गोल वस्तु।

चल स—चल, भद्रिवाच, दक्षिणी नौकर।

—वाकर सं—नौकर चाकर । छात्राणी स्त्री
—नौकरानी ।

छात्रान्न सं—वेतन के बदले दी हुई जमीन ।
छात्रि सं—नौकरी । छात्रे वि—नौकरी
करनेवाला (—वाव्) ।

छात्रा (चाकला) सं—एक जमींदारी के अन्दर
कई परगनों को समष्टि ; गोल टुकड़ा ,
छिलका ।

छाका सं—पहिया ; टुकड़ा (गाछर—),
थका (—दहे) , गोल (—भू) ।

छादि सं—आटा पीमने की चक्की , रोटी पूरी
वेलने का गोल पीठा या सिल (—दजन) ।

छादू सं—चाकू छुरि ।

छादू (चाकखुश) वि—श्रुत, ज्ञाते ज्ञेय
आँखों देखा (—श्रुत, —क्षमा) ।

छा-थड़ि सं—खरिया मिट्टी ।

छाथा, छाका (क्रि परि ३)—ब्राह्मण नक्षत्र
चखना ।

छागान (—नो) , छागाणा (क्रि परि १०)—
जगाना, उठाना, उत्तेजित करना ।

छाङ्ग, छाड्ड, (—झ) सं—रङ्ग देना, गंध, डाल
ढेला, भेली ।

छाश वि—चगा, स्वस्थ ।

छाशदि, छाशदि, (—) सं—बौध्म श्रद्धि
भक्त्या, दौरी, डलिया । [लाह ।

छास सं—ब्रह्मा एक प्रकार की मोटी चटाई ;
छात्र वि—श्रद्धित सिकुड़ा हुआ । सं—
होली के पूर्व रात्रि में आग लेकर खेलना ।
छास सं—रुड़ा, काका चचा, पिता के छोटे
भाई । स्त्री—छासी ।

छास (क्रि परि ३)—छाना छीलना
(बौध्म—) । वि—छिला हुआ (—छाना) ,
माजा-हुआ (—गना) ।

छासि सं—उवाले हुए दूध का गाढ़ा अंश

जो वरतन से खुरच कर निकाला जाता है,
खरचन ।

छास्या (—अ) सं—चंचलता, हलचल, बेचैनी,
फुर्ती । —र वि हलचल मचाने वाला,
उत्तेजना पैदा करने वाला ।

छाटे सं—चटनी, चाट, घोंटे गाय आदि की
लात, दुलत्ती ।

छाटनि सं—चटनी ।

छाटे (क्रि परि ३)—छेदन दवा चाटना । —
छाटे सं—भक्ष्यरूपे छाटे आपस में एक
दूसरे को चाटना, बार बार चाटना ।

छाटेश, छाटेश (चेटाई) सं—ब्रह्म चेटाई ।

छाटान (—नो) , छाटाणा (क्रि परि १०) —
चटवाना ।

छाटान (—अ) , छाटाणा वि—छेड़ा चौड़ा ।

छाटि, छाटि सं—छद्म धम्पट (नाशक—नाश) ।

छाटिन दवा सं—एक प्रकार का उमड़ा केला ।

छाट्टे सं—छाशाणां खुशामद । —दाड, —
बाँस वि—छाशाणां खुशामदी, चापल्य ।

छाट्टे सं—छाश्र तवा । [दि ?]

छाछि सं, वि—चार ; थोड़ा सा (—छाड
छाड, छाड़ा सं—उठाने या तोड़ने के लिए
ठंडा आदि लगा कर दवाव ; टेक, उत्साह,
चेष्टा (ज्ञाश्रद्धा—नाशे) ।

छाझल सं—छाझल । [छाझनी ।

छाऊ सं—पपीहा, चातक । स्त्री—छाऊकी,

छाऊन सं—छाऊ, ब्राह्मण चतूरा ।

छाडूर्वा (—अ) सं—ब्राह्मण आदि चार वर्ण ।
या उनके गुण । वि—चार वर्ण सम्बन्धी ।

छाडूर्वा (—अ) सं—श्रावण से कार्तिक तक
चार मास का व्रत ।

छाडनि सं—छाडना चाँदनी ; छाडत चंदवा ;
कोठा, अठारी ।

छाड सं—चदा ; एक मछली ।

छाना, छानि स—सिर के ऊपर वाला अंश ।

छानि स—छोपा, छपा चाँदी ।

छानोश स—छलाउश, भागिशाना चंदवा ।

छान स—छान स्नान, गुल्ल ।

छानकान (-नो), छानकाना (क्रि परि १६)
—जड़ता हटाना, चगा करना, चमकाना,
थोड़ा भूनना ।

छाना स—छाना, बूँटे चना । —छत्र स—
चनाचूर, चवेना ।

छान स—छात्र बोझ, दबाव ; छात्र, छात्र
ढेला ; जमी हुई वस्तु (—नहे) । —छाड़ि
स—कानों तक फैली हुई दाढ़ी ।

छान स—छ धनुष ; वृत्त की परिधि का कोई
भाग ।

छानकान स—चपकन ।

छानछि स—घुटने उठाकर चूतड़ पर बैठने का
भाव ।

छानछ स—छड़, थावड़ा चपेट थप्पड़ ।

छानछान (-नो), छानछाना (क्रि परि १६)—
बारबार थप्पड़ मारना, थपकी देना ।

छानछान स—चपरास । छानछानौ स—छानछान,
छानछानौ चपरासी ।

छानछा (-अ) स—चपलता, चचलता ।

छाना (क्रि परि ३)—छान देखा दवाना,
चापना ; छिपाना, ढाँकना, सवार होना
(बाड़ा—, बाड़े—) । वि—आवृत (दागा—),
अनुच्च ; रुंधा हुआ, किसी भारी वस्तु के
नीचे गिरा हुआ (छाटेव—) ; गाड़ा हुआ
(गाड़ि—), जो मन की बात खोल कर नहीं
बतलाता (—जाक), दवा हुआ (शुशुकात्र
यकृत्पण दिछू—) । —छानि स—भारी
दबाव । —छानि स—छिपाव, गोपन ।

छाना स—छानक ।

छानछि स—चपाती ।

छानान (-नो), छानाना (क्रि परि १०)—
लादना, चढ़ाना, दोष सढ़ना ।

छानकान (-नो), छानकाना (क्रि परि १६)—
चाबूक से मारना, कोड़ा मारना । [ताली ।

छानि स—चाभी, ताली कुजी । —काछि स—

छानक स—कशा चाबूक, कोड़ा ।

छान स—छत्र चमड़ा ।

छानछ, छानछ (चामचे) स—चम्मच ।

छानछिका (चाम्-) (—छिक) स—एक छोटी
जाति का चमगादड़ जो झकानों में घोंसला
बनाकर रहता है ।

छानछा स—चमड़ा ।

छानस स—चवर ।

छानस (चाम्सा) वि—छानस चमड़े की तरह का ।

छानछि स—चमड़े की पट्टी, चमोटा ।

छानस स—छूँटी सोची, चमार । स्त्री—छानसनी ।

छानसि स—चमेली ।

छान वि, स—छान चार, ४ । —छाना वि—

चौकोना । —छान वि—चौगुना । —छोका,

(छोका) वि—गमछड़क चौकोर । —छा, —छे

वि—चार (लघु अर्थ में—छाछि) ।

छान स—मछलियों को आकृष्ट करने का मसाला,

मछलियों के घूमने-फिरने की जगह ;

जासूस ।

छानक वि—चरानेवाला । (छे—) ।

छानस स—छाछे स्तुति गान करने वाली एक

जाति ; पशु चराने का काम, चरागाह ;

चालन, पदक्षेप ।

छाना स—छाछे गाछ छोटा पौधा, मछलियों का

बच्चा, उपाय, प्रतिकार (—नहे) । वि—

नवकाठ नूतन उत्पन्न —गाछ ।

छानान (-नो), छानाना (क्रि परि १०)—छानाना

फैलाना, बाँटना ।

छानि स, वि—छान चार, ४ ।

छात्रिष्ठ (-अ) वि—हुंकाया हुआ, खेदेका हुआ,
संचालित, चुआया हुआ ; वितरित ।

छात्रिष्ठिद वि—वरित्र सम्प्रन्धी ।

-छात्री वि, प्रत्य चलनेवाला, जानेवाला (यद्ग
—) ; करनेवाला, चलानेवाला (५३—) ।

छात्र वि—सुन्दर सुहावना । —नख (-अ)

वि—सुन्दर नेत्रोवाला । स्त्री—छात्रनेत्र ।

—द्वेन वि नत्र स्वभाव वाला । स्त्री—

छात्रनेत्र । —शठ (-अ) सं—मनोहर

मुसकान ।

छात्रात्री वि—सुडौल अगों वाली ।

छात्र सं—छात्र चावल ; छप्पर, आचरण,
चलने का ढंग, चाल गति, छल, अपनी
बड़ाई जताने का ढंग । —छन्न सं—
चालवलन रीति नीति । —छून, (-छूना)
स—छप्पर और चुल्हा, रहने और खाने
का उपाय । —बाइछ (-अ) स—घर में
चावल का अभाव ।

छात्रा (चालता) स=छात्रिष्ठ ।

छात्रन, छात्रना स—चलाने की क्रिया, प्रयोग,
चर्चा (बुद्धि—, गति—, , प्रबन्ध (बाइ
—) । छात्रिष्ठ (-अ) वि—चलाया हुआ ।

छात्रात्री (-अ) वि—चलाने के योग्य ।

छात्रनि, छात्रनी, छात्रनी स—चलनी । [क्षीणता ।

छात्रण सं—चालीस साल उमर में दृष्टि-

छात्रा, छात्रावद स—फूस या खपड़ैल का घर ।

छात्रा (क्रि परि १०)—चालना, चलनी से
छानना, चलाना, हिलाना, चौसर आदि खेल
में चाल देना, प्रयोग करना । वि—छांका
चाला या छाना हुआ (—आछे) । —

छात्रि सं—नाडानाड़ि बारबार हिलाना-
हुलाना ।

छात्रा वि—धूर्त, चतुर । छात्राकि स—
चालाकी, धूर्तता, चतुराई ।

छात्रा सं—चलान । छात्रात्री वि—चलान-
नक्षत्रन्धी (५३५) ।

छात्रा (—नो), छात्रात्री (क्रि परि १०) —
चलाना, गति देना ; प्रयाग करना ; निर्वाह
करना (५३ छात्रा—) ।

छात्रिष्ठ (-अ) वि—चालित, चलाया हुआ ।

छात्रिष्ठ, छात्रिष्ठ, छात्रिष्ठ सं—गुरु खट्टा फल ।

छात्रू वि—चालू, प्रचलित ।

छात्रूनि स—चलनी ।

छात्र स—दृष्टि खेती, जोतने का काम, जोताई,
छल चलाना । —छात्र स—खेती से निर्वाह ;
खेती बारी ।

छात्रा सं—किसान ; गवार । —छात्र वि—
अशिक्षित, गंवार । —छात्रा, (-छात्रा) सं—
किसान और उसी श्रेणी के लोग । छात्रा सं—
किसान, खेतिहर ।

छात्रन, छात्रन सं—प्रार्थना ; ताकना । छात्रनि,
छात्रेनि सं—दृष्टि नजर ।

छात्रा (क्रि परि ४) = छात्र ।

छात्रात्रा स—चौथाई चहात्म ।

छात्रि स—मांग ।

छात्रि स—भींगा मछली (बात्रा—, छात्रा—,
छात्रा—) ।

छि, छिछि स—कराहने का क्षीण स्वर ;
चिड़ियों के चिगने की चहचहाहट ।

छिछि स—हिनहिनाहट ।

छि स—चिक, गले का हार ।

छिछि स—छटछट देखो ।

छिछि वि—छिछि, छटछट उज्ज्वल, चमकीला ;
चिकना, सुंदर ।

छिछि स—चिकन, बेल-बूटे का कप । छिछिछि,
छिछिछि सं—चमक, चिकनाई ।

छिछि सं—छूछ छट्टन्दर, ईश्वर मूस, चूहा ।

छिछिछि सं—झोझा ।

चिकित्सिक स—उपपद देखो ।

चिकित्सा स—इलाज । चिकित्सानी (-अ),

चिकित्सा (-अ) वि—इलाज करनेके योग्य :

जिसकी चिकित्सा करना आवश्यक है ।

चिकित्साशून्य वि—जिस रोग या रोगी का

इलाज हो रहा है । चिकित्सित (-अ) वि—

जिस रोग या रोगीका इलाज हुआ है ।

चिकीर्षा स—करनेकी इच्छा । चिकीर्षू वि—

करनेके इच्छुक ।

चिकुष स—कूटल, केशनाम केश ।

चिकण वि=चिकण ।

चिकित्साक स—भंडाफोड़ ।

चिकित्सा, चिकित्से स—ककड़ी ।

चिह्निकी स्त्री—चित्तशक्ति, चेतनता ।

चित्र स—चीज, वस्तु । वि—धूर्त ।

चिटेचिटे स=चिटेचिटे । [राय गुड़ ।

चिटो, चिटो वि—चिटो लसलसा । —छड़ स—

चिं स—रक्त फिहरिस्त ; चिट्टा, चिट्टी ।

चिं स—चिट्टी, खत ।

चिड़ स—झाड़, विनाश दार ।

चिड़कूटे (चिड़कूट) स—पुरजा, रक्षा ।

चिड़चिड़ स—छड़छड़ देखो ।

चिड़विड़ स—बाला जलन ।

चिंड़ा, चिड़ा, चिंड़े स—चिंटीक चिठड़ा ।

चिड़िक स—टीस ।

चिड़ितन स—ताशमें चिड़ी ।

चिंकात्र स=चिंकात्र ।

चिठ (-अ) वि=चिठित । स—चिठ चित ।

चिठ, चिठ वि—पीठके बल पड़ा हुआ, चित,

उतान । —चिठो वि—चारों खाने चित ।

चिठल स—एक चौड़ी बड़ी मछली ।

चिठा, चिठ स—चिता, एक भाड़ी ; तेंदुआ ।

चिठान (-नो), चिठानो, चिठनो (क्रि परि ११)

—चित होना ; छाती फुलाना ।

चिठि स—चैतन्य, चेतनता ; ज्ञान ।

चिठ (-अ) स—जन अंतःकरण । —चाश्

सं—मनकी जलन । —अगाध सं—मन

की प्रसन्नता । —विलम्ब सं—बुद्धिका भ्रम ।

—वृष्टि सं—मनकी वृत्ति । —वृक्षन वि

—मनको आनन्द देने वाला । —उक्ति सं

—मनकी पवित्रता । चिठाकर्षक वि—मन

को आकर्षित करने वाला ।

चिठ (-अ) स—छवि, आलोक्य तसवीर । —

कव, (—काव) स—चित्रकार । —गठे स

—वस्त्रके ऊपर खींचा हुआ चित्र । —

कलक सं—तख्ता आदिके ऊपर बना हुआ

चित्र । —विचित्र वि—रंग-विरंगा । —अथनो

सं—छुनि बालोंकी कलम ।

चित्रण स—चित्र खींचनेका काम । [अचल, स्थिर ।

चित्राश्रित (-अ) वि—चित्रमें खींचा हुआ,

चित्रित (अ) वि—अश्रित चित्रित ।

चित्राकाश स—हृदय प्रदेशमें आकाशवत्

सूक्ष्म चैतन्य । [प्रतिबिम्ब, जीवात्मा ।

चित्राभास स—अन्तःकरणमें ब्रह्मकी छाया या

चित्रण स—चेतन रूप आत्मा ।

चिनिचिनि स—थोड़ी थोड़ी जलन, चुनचुनाहट ।

चिना स—चीनी, चीनदेशका निवासी । वि

—परिचित, जाना-पहचाना हुआ ।

चिना (क्रि परि ५)—जानना, पहचानना ।

चिनान (-नो), चिनानो (क्रि परि १०)=

चिनान । [साथ जमाया हुआ (दही) ।

चिनि स—चीनी । —गाठा वि—चीनीके

चिखक वि—चितन करने वाला ।

चिह्न स—ध्यान, मनन, विचार, स्मरण ।

चिह्नोत्र (-अ), चिह्न (-अ) वि—चितनके

योग्य । चिह्ना स—चिता, ध्यान, विचार ;

शंका, फिक्र । चिह्नाकूल, चिह्निष्ठ (-अ) वि—

चिंतासे व्याकुल । चिह्नाश्रित (-अ) वि—

चिन्तायुक्त, उद्दिष्ट, फिक्क-मद । चिन्ता (-अ)
वि-चिन्तामें लबलीन । चिन्तान वि-
जिसकी चिन्ता को जा रही है ।
चिन्तन क्रि-विचार कर, सोच कर (चिन्तन —) ।
चिन्तन (चिन्तन) वि-चिन्तनापूर्ण, ज्ञानमय ।
सं—उद्ग्वर, परमात्मा । [१७] = चिन्तन ।
चिन्तन (-नो), चिन्तन, चिन्तन (क्रि परि
चिन्तन सं = चिन्तन) ।
चिन्तन (-नो), चिन्तन, चिन्तन (क्रि परि ११)
—चिन्तन । वि-चिन्तना हुआ । चिन्तन,
चिन्तन स—चिन्तन, चिन्तनका काम ।
चिन्तन सं—चिन्तन छोड़ी, छोड़ दी ।
चिन्तन, चिन्तन सं—चिन्तन ।
चिन्तन (-नो), चिन्तन, चिन्तन (क्रि परि
१७) —चिन्तन का जो चुटकी भरना या काटना ।
चिन्तन सं—चुटकी ।
चिन्तन, चिन्तन वि-चिन्तन, चिन्तनकी तरह
कड़ा ; कड़ा, दुबला-पतला ।
चिन्तन सं—चिन्तनी chimney
चिन्तन, चिन्तन वि=चिन्तन ।
चिन्तन (-अ) वि-नित्य, अनन्त (—मान, —
शरीर, —ग्न, —जोदन) ; बहुत दिनों तक
रहने वाला । —शरीर वि-बहुत दिनों
का, चिरकालिक । —शरीर वि, सं—
जीवन-भर अविवाहित । —जोदन क्रि वि
—जीवन-भर । —जोदना सं—अमरत्व ।
—शरीर, —शरीर स—जो वर्ष कभी नहीं
गलती । —शरीर-शरीर, —शरीर-शरीर स—
ऊँचे पहाड़की सीमा जहाँ वर्ष कभी नहीं
गलती । —शरीर वि-जीवन भरका दुखी ।
—निदा स—मृत्यु । —शरीर वि-चिरकालिक,
बहुत प्राचीन । —शरीर सं—जन्म-भरके
लिए विच्छेद । —शरीर स—बराबरके
लिए विच्छेद, मृत्यु । —शरीर (-अ) वि—

चिन्तन, चिन्तन सदाका रोगी । —शरीर वि-नित्य,
सदा रहने वाला । —शरीर स—
बगलके जमींदारोंके साथ जमीनके
सम्बन्धमें अंग्रेज सरकारका स्थायी
बदोबस्त (ई० १७६३) ।
चिन्तन सं—चिन्तन छोड़ा, छोड़ दिया, चिरकुट ।
चिन्तन, चिन्तन, चिन्तन सं—चिन्तयता ।
चिन्तन (क्रि परि ५) = चिन्तन ।
चिन्तन (-अ) वि—सदासे प्रचलित ।
चिन्तन (-अ) वि—सदासे आचरित ।
चिन्तन (-अ) वि—बहुत दिनोंका अभ्यास
किया हुआ ।
चिन्तन स—चिन्तन कधी ।
चिन्तन सं—चील । [गमला ।
चिन्तन सं—चिलमची, हाथ-मुंह घोनेका
जिन्त, चिन्तन सं—छतके ऊपरकी कोठरी,
अटारी ।
चिन्तन, चिन्तन सं—चोड़की हिनहिनाहट ।
चिन्तन (-अ) स—दशा लकीर, दाग, चिह्न, छाप,
लक्षण, स्मारक, संकेत, इशारा । चिन्तन
(-अ) वि—चिह्न किया हुआ ।
चिन्तन, चिन्तन स—चिल्लाहट ।
चिन्तन सं—चीनदेश । चिन्तन स—चीन
देशका रेशमी वस्त्र ।
चिन्तन, चिन्तन स—चीनदेशका निवासी । वि—
चीन देशका (-चिन्तन) । —चिन्तन सं—एक
तरहकी सफेद मिट्टी, चीनी मिट्टी । —चिन्तन
स—चिनिया वादाम, मूंगफली ।
चिन्तन स—चिन्तन, लता ; कपड़ा ; पेड़की छाल ।
—चिन्तन वि—चिन्तन पहना हुआ ।
चिन्तन सं—अनुकरण शब्द (अन्तर्गत इन
—चिन्तन, चिन्तन (चिन्तन—चिन्तन) ।
चिन्तन सं—चूक, भूल ; भुटि ।
चिन्तन स—चिन्तन देखो ।

हूकनि सं—जगानि चुगली । —थोत्र वि,
सं—चुगलखोर ।

हूका, हूका वि—ढेक, बग्न खट्टा । सं—खटाई ।

हूका, ढाका (क्रि परि ६) —खतम होना,
चुक जाना ।

हूकान (-नो), हूकानो, हूकनो, ढाकानो (क्रि
परि १३) —मिटानो चुकाना ; खतम
करना, तय करना ।

हूकि सं—गर्ज, कड़ा शर्त, चुकौती ।

हूकि, (-डि) सं—चूंगी, महसूल ।

हूक सं—ढेपुनी, स्तनकी धुंड़ी ।

हूकेकि सं—पैरकी उंगलीमें पहननेकी
अंगूठी, चुटकी ; शिखा, चुटैया ।

हूकेन (-नो), हूकेनो, हूकेनो (क्रि परि १३)
—पूरी ताकत लगाना ।

हूकि सं—चूडी । —नात्र वि—तंग और सिकुड़ा
हुआ, शिकनदार (—बालिन, —पावजागा) ।

हूका सं—हूका ।

हूक सं—चूना । —काय सं—घरमें सफेदी
करने या चूना पोतनेका काम ।

हूके सं—चुनन, शिकन ।

हूका (क्रि परि ६) —चुनना ।

हूका, हूका वि—छोटे छोटी (मक्कली) ।

हूनि, (-नो) सं—लाल मणि, चुनी ।

हूत्रि सं—रगीन कपड़ा, चुनरी ।

हू वि—नौबत चुप । —जाण क्रि वि—निःशब्द
चुपचाप । हू, ढाण-क्रि—चुप रह या रहो ।

हूाटि करे क्रि वि—नौबत चुपचाप ।

हूाडि, हूाडि सं—छोटे शूडि, धागा खांची,
टोकरी, डलिया ।

हूाग, ढाणग वि—छोटा, बग्न भीतरसे रस
या हवा निकल जानेसे सिकुड़ा हुआ
(—बग्न, —गाल, —आम) ।

हूागान (-नो), हूागानो, हूागानो, ढाणगानो

(क्रि परि १८) —भीतरसे हवा या रस
निकल जानेके कारण सिकुड़ना ; सोखना ।

हूाि सं—चुप्पी, मौन ; छिप कर श्रवण ।

—हूाि क्रि वि—बहुत धीरे या धीमे स्वर
से, फुसफुसा कर ; दूसरा कोई जान न सके
इस ढंग से (—गानानो) । हूाि हूाि क्रि
वि—चुपचाप ।

हूवान (-नो), हूवानो, हूवनो, ढावानो (क्रि
परि १३) —ढुवाना, बोरना । हूवानि, हूवन

(-अ), ढावानि, हूवनि सं—जबरदस्ती किसी
को जलमें ढुवानेका काम ।

हूगकि सं—सुनहली या रुपहली छोटी छोटी
टिकिया ; लुटिया ।

हूगकुडि सं—चुंबनके ऐसा शब्द ।

हूगनि सं—वह कोष जिसके अंदर नारियल
लगता है ।

हूग, हूग, हूग सं—चुंबन, चुम्मा ।

हूग सं—पात्रमें होंठ लगा कर तरल वस्तु
का पान, घूंट ।

हूग वि—चुम्बन करने वाला । सं—सक्षिप्त
सार, सारांश, चुम्बक पत्थर या धातु जो
लोहेको अपनी ओर खींचता है ।

हूग वि—छूनेवाला (गगन—) ।

हूग सं—धूनेका निर्यास या सार ।

हूगल वि, सं—चौहत्तर, ७४ ।

हूगान (-नो), हूगानो, हूगनो, ढागानो (क्रि
परि १३) —टपकना, टपकाना, चुआना
(गद—) । वि—टपकाया हुआ, चुआया
हुआ ।

हूगान (-अ) वि, सं—चौबन, ५४ ।

हूगानि वि, सं—चौआलीस, ४४ ।

हूग, हूग सं—हूग, शूडा चुकनी ; चूर । वि—
नशेमें बहमस्त ।

हूग सं—हूक्रे ।

ह्रानस्वरे वि, सं—चौरानवे, ६४।

ह्रानि वि, सं—चौरासी, ८४।

ह्रि सं—चोरी, छिपाव। —जाना वि सं—
चोरी-चटमारी आदि कुकर्म।

ह्रष्टे, ह्रष्टे सं—चूरट, सिगार।

ह्र स—ह्रस्व वाल। —थाला कि—केश
खोलना, जूड़ा खोलना। —शाय कि—वाल
रखाना या बढ़ने देना। —कवा वि—
बहुत चूम, घारीक (—उग)। ह्रानि, (ह्राना—)
सं—आपसमें वालोंकी
खींचातानी। [कश्चोण खुजली।

ह्रनकना (चुल-), (-कनि, -कूनि) सं—
ह्रनकान (चुलकानो), ह्रनकाने, ह्रनकाने
(क्रि परि १८)—खुजलाना।

ह्रनकू (चुलबुल) सं—वेचैनी, चचलता।
ह्रनकू वि—चचल, अस्थिर। ह्रनकूनि,
(-कूनि, -कूनि) सं—चंचलता।

ह्रान, ह्राना सं—ह्रानो, ऐनान चुल्हा ; भरसाई ;
चिता। [सलाई।

ह्रि सं—चूसनी। —दाठि स—चूसनेकी
ह्रि, ह्रि सं—पहाड़की चोटी, मंदिरका
चूड़ा, ताज, शिखा ; श्रेष्ठ वस्तु। ह्रि
(-अ) सं—चरम सीमा। वि—अत्यन्त।

ह्रि (-अ) सं—आम आम (फल)।

ह्रि सं, वि—ह्रि।

ह्रि (-अ) सं—छंछा चूर्ण, बुकनी ; चूना। वि—
नष्ट (दर्श-)। —ह्रि सं—वाल्लोंका
गुच्छ। ह्रि सं—चूर्ण करना, बुकनी
बनाना। ह्रि (-अ) वि—चूर्णित।

ह्रि (-अ) वि—चूर्ण बना हुआ।

ह्रि (-अ), ह्रि (-अ) वि—चूस कर खाने
योग्य। ह्रि (-अ) वि—चूसा हुआ।

ह्रि (क्रि परि ६)=कना।

ह्रि सं—ह्रि चौकोर खाना या चित्र (—

कापाड, —काँडा) ; बक्के नाम रुपया देनेका
आज्ञापत्र, चिक।

कनादी (चैगारी), कनादि सं=कनादि।

कनान (चैचानो), कनाना (क्रि परि १०,—
गीरदार कवा चिलाना।

कनानि, कनानि, (-नि) सं—कनान
गठगान चिलाहट और गोरगुल।

कनाई (चैटाई) सं=कनाई।

कना, कना स्त्री—चैटी, दासी।

कना सं—गठ पादर टेली हथेली, तलवा।

कन वि—जिसमें चेतना हो। सं—चेतना
(नकन)। कन वि—चेतना देनेवाला,
उद्घोषक, चेतानेवाला।

कना (क्रि परि १)—चेतना, होशमें आना,
सावधान होना।

कनान (-नो), कनाना (क्रि परि १०)—
चेताना, जगाना ; सावधान करना।

कन सं—मिदल साँकल chain

कना (क्रि परि ५)—पहचानना, दोष-गुण
समझना, परिचय करना, जानना वि—
परिचित (—लाद)।

कनान (-नो), कनाना (क्रि परि १०)—
चिन्हाना, परिचित कराना, परिचय देना।

कना (चैपटा), कना वि—चपटा
(—नाद, —मन्द)।

कना (-नो), कना (क्रि परि १६)—
—दबाकर चपटा बनाना।

कन (-अ) वि—जान देखो।

कना सं—कना, कना कुर्सी।

कना, कना अव्य—अपेक्षा, बनिस्वत (तात्र—
छोटे)।

कना (क्रि परि ५)—काड़ा चीरना। वि—
चीरा हुआ।

कनाग सं—चिराग, दिवरी।

छत्रान (-नो), छत्रानो (क्रि परि १०) —
काङ्गानो चिराना, फड़वाना ।

छत्रा (चैला) स — शिवा, मागवेदन चैला ; एक
छोटी मछली, चैला ।

छत्रान (चैलानो), छत्रानो (क्रि परि १०)
— छत्रा करा कुल्हाड़ीसे चैला बनाना ।

छत्रो स — भूषण रेशमी कपड़ा ।

छत्रे स — चेष्टा, कोशिश । छत्रे वि — चेष्टा
करनेवाला । छत्रेशान वि — नष्ट चेष्टाशील ।
छत्रे स — चेष्टा, कोशिश, उद्योग । छत्रेष्ठ
(-अ), छत्रेणीन वि — चेष्टायुक्त । छत्रेष्ठ
(-अ) वि — जिस विषयके लिए चेष्टा की
गयी है । छत्रेष्ठ (-अ) वि — चेष्टाके
योग्य ।

छत्रा स — चेहरा, रूप ।

छे (चड़) स — अद्रककी तरहकी एक जड़ ।

छे (चड़) स = छे ।

छेठन (चड़तन) स — ठिक शिक्षा, चुट या ।

छेठन (चड़तन-अ) स — छेठना चैतन्य, ज्ञान,
होश, स्थितिका परिज्ञान (विषय पढ़ने
— शब्द) ; गौरांग महाप्रभु ।

छेठानो (चड़ताली) वि — चैत महीनेका ।

छेठ (चड़तन-अ) स — बौद्ध मठ, जिस मंदिर
में चिता-भस्म अस्थि आदि रखे जाते हैं ।

छेठ (चड़तन-अ) स — चैतका महीना ।

छेन (-अ), छेनक (चड़निक) वि — चीन देश
का, चीना । स — चीनदेशका निवासो ।

छे स — तीव्र गतिका भाव (— रुद्र
मोड़ानो) । [५०] ; छू आँख ।

छेक स — जिसके छि चौराईका चिह्न (०, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९) ।

छेकल स — शत्रु को चोकर ।

छेकला (चोक्ला) स — थोड़ा छिड़का ।

छेका क्रि = छेका । वि = छाथा ।

छेक, छेक स — छेक चक्षु, नेत्र, आँख ।

छेक क्रि — आँख आना । — छेक, — छेक
क्रि आँखसे इशारा करना । — छेका क्रि
— आँख खुलना, स्थिति समझना । —
छेकानो क्रि — आँखें गरम करना । — छेका,
(-आ) वि आँख-फूटी (गाली) ।

छेका वि — धातान नुकीला, तेज, तीखा, खरा ।
छेकान (-अ), छेकानो वि — चोखा, नुकीला,
चालाक । [तरफदार, पक्षपाती] ।

छेका प्रत्य — नजरवाला, दृष्टियुक्त (एक —,
छेका, छेका, छेक स — नन चोंगा (लघु अर्थ
में छेक, छेक) ।

छेक स — बाँस या लकड़ीका काँटा या
तौली-सा टुकड़ा (बाँस — भाव छेकबाँस) ।

छेक स — था, कोंक चोट, वार ; जोर, ताकत,
वेग, प्रवाह (शक्ति —) ; क्रोध प्रकाश ;
दफा (एक —) । — छेक स — घमकी,
कठोर शब्द ।

छेकान (-नो), छेकानो (क्रि परि १४)
— छेकानो चोट मारना, फावड़ेसे खोदना ।

छेक स — चोट या छेक ।

छेक स — चैतका महीना ।

छेक वि — बाँस, छेक रही, ओछा ।

छेक स — गाना गौका पेशाब ।

छेक स — कोंक भारी तीखे शस्त्रका चार
(थोड़ा —) । वि — चुप (— वर) । छेक-
नार स — चोवदार ।

छेकना, छेकनानो = छेकना, छेकनानो ।

छेक स — कड़ा जवाब, झगड़ा ; मुँह ।

छेकान (-नो), छेकानो क्रि = छेकान ।

छेक, छेक स — चौबे । [टपकना]

छेक (क्रि परि २०) — क्रूरित इशारा चूना,

छेक वि — थोड़ा जला (— उबकात्रि) ।

छेक स — बदहजमीके कारण खट्टी डकार ।

छेका वि — गंवार ; नीच ।

कोशान (-नो) कोशानो क्रि-कृशान ।

कोशान सं—जयडा ।

कोश सं—चोर, चोटा । —कूश सं—गुप्त कमरा । कोश, कोशाइ वि—चुराया हुआ (—दात्रवात्र, कोशाइ मान) ।

कोश वि—गुप्त, छिपा । —ग्राह्य वि—छिट-फूट । —राशि सं—जिस रेतीमें नाव पशु आदि गड़ जाते हैं ।

कोशाइ वि—चोरीका (माल) ; चुराया हुआ ।

कोशाइ सं—चुआनेका काम, चुआई ।

कोशण सं—चूसनेकी क्रिया । कोशक वि—चूसनेवाला, सोखनेवाला ।

कोश (क्रि परि ६) —चूसना ।

कोश (-अ) वि—चूसने योग्य । सं—चूसकर खानेकी वस्तु ।

कोश (-अ) वि—समान, बराबर ; धिकना ।

को (चठ) वि—चार चार (कोछि, कोपाश) ।

—काठ, (-ठे) सं—चौखट, डेहरी । —शूण वि—चार खानों वाला । —छा, —छा, —छा वि—चौगुना । —छड़ि सं—चौघोड़ी । —छा वि—चार छप्परो वाला । —छि वि—फटा, टुकड़े टुकड़े । —छा वि—चौमंजिला ।

—माथा, —माथा सं—चौमुहानी, चौराहा ।

—शक्ति सं—चौहद्दी ।

कोर (चठक) सं=क ।

कोर, (-अ) वि—चौकस, अनुभवी ।

कोरा, कोरा वि—छात्रकोना चौकोर । सं—

ताशका चौका ।

कोरि (चठकि) सं—छात्रकोना चौकी, कुर्सी ;

पहारा, थाना । —नात्र सं—पहारे-वाला,

चौकीदार । —नात्रि सं—चौकीदारी ।

कोठा, (-ठा) (चठो) स—चौथी तारीख ।

कोठाना (चठताला) वि—चौमंजिला । सं—

चौथी मंजिल ।

कोठिण वि, सं—चौतीस, २४ ।

कोर (-अ) वि, सं—चौदह, १४ । —छोप

स—जो चौदह दीपक दिवालीके पूर्व रात्रि

को जलाये जाते हैं ।

कोर, कोर सं—चौदहवीं तारीख ।

कोर सं—चौधरी, एक उपाधि ।

कोराका सं—होज, चहवन्ना, टांका ।

कोर वि—चुंबक सम्बन्धी । [—चोरी ।

कोर (-अ) स—चोर । कोर (चठज-अ) सं

कोर वि—छात्रकोना चौकोना, चौरस ।

कोराणि (चठराशि) वि, सं—चौरानी, ८४ ।

कोराठा सं—चौमुहानी ।

कोर (चठज-अ) स—चोरी, ठकतो ।

कोराणस सं—चोरीका जुर्म ।

कोरा सं—लौंडा । कोरावि, (-अ) सं—

लौंडा-सा ओझापन ।

कोरा वि=कृपण ।

कोर (-अ) वि—पतित, गिरा हुआ (छठ—) ;

निकाला हुआ (दम—, छाड़ि—) । [चूक ।

कोरि सं—पतन, गिराव ; हटाव, झुटि, ऐब,

छ

छ वि, सं—छत्र छः, ६ (छठका) । [छप्पर ।

छइ सं—नाव, बैल-गाड़ी आदिके ऊपरका

छइ सं—छठवीं तारीख ।

छर सं—चौकोर खानों वाला वस्त्र-खंड जिस

पर शतरंज आदि खेला जाता है, विसात ।

—छा वि—लकरीसे चौकोर खानोंमें

विभक्त ।

छर सं—खराब घोड़ेकी गाड़ी । [तरकारी ।

छर सं—ताशका छर ; पकायी हुई एक

छटकान (-नो), छटकानो (क्रि परि १६) —

छिटकना, अलग होना ।

छटके स—वेचैनी अथवा उतावलीका भाव,
छटपटी। छटके स—वेचैनी, उतावली।
छटकेनि स—वेचैनी, अस्थिरता, तडफड़ा-
हट। छटके वि—वेचैनी, उतावला, अस्थिर,
चंचल।

छट्टा, छट्टा स—छट्टा।

छटा स—किरण, दीप्ति, छटा। [पांच तोले।

छटाक स—छटाक, सेरका सोलहवाँ अंश,

छ स—देहला सारंगी आदि बजानेका तार
वाला छड़; छड़।

छड़ा स—छोटा छोट्टा; गुच्छा; माला; ग्रामीण
कविता। —छाटा क्रि—बात-बातमें कविता
कहना।

छड़ा (क्रि परि १) —चमड़ा छिलना।

छड़ान (-नो), छड़ाना (क्रि परि १०) —
छोटाना छिटकाना, बिखेरना।

छड़ाछड़ि स—अनेक वस्तुओंका अस्तव्यस्त
फलाव; बहुतायत; अपव्यय, फिजल-खर्ची।

छड़ि स—जड़ गाढे पतली लाठी, छड़ी।

छड़ (छत्र अ) स—छाता, लेखकी पंक्ति,
सतर (इ—लेख); अन्नसत्र, छेत्र।

छड़क, छड़ाक स—वेष्टे हाथ, कुकुरमुत्ता,
घरतीका फूल Fungus

छड़ल (अ) स—दलका टूटना, तितर-
बितर होना। वि—दलभ्रष्ट। [हुआ।

छड़ाकार वि—छातेकी तरहका; छिटकाया

छड़ि (छत्रि श) वि, स—छत्तीस, ३६।

छड़ौ स—छत्रधारी, छत्री।

छ स—पेड़की पत्ती; आवरण (नेत्रछन्द,
पलक)।

छ (छद्-अ) स—छल, कपट; छिपाव। —

रेशी वि—छद्मी, स्वांगी, बनावटी वेश
धारण करने वाला।

छनछन स—पेशाब निकलनेका शब्द, फुर्ती;

वेचैनी। छनछन वि—फुर्तीला, अधोर,
वेचैनी।

छन (-अ) स—अभिप्राय, छद्, कविता।

—पाठ, (-गठन) स—छद्भंग। छनछ-
गठन, (-श्रमगण) स—दूसरेके इच्छानुसार

चलना।

छनाग (-अ) स—क्षुद्र अंश, बिन्दुमात्र।

छन (-अ) वि—आवृत्त; गुप्त। —छाड़ वि

—आश्रयरहित। —गठि वि—गठिछन जिसकी

बुद्धि नष्ट हो गयी है। [शब्द।

छन स—पानी पर किसी चीजके गिरनेका

छवि स—दीप्ति, शोभा (भूखंखि); चित्र,
तसवीर। [सिहरना (उद्योगी—कत्र)।

छनछन स—भूत आदिके भयसे शरीरका

छवि, स=छ।

छनछन वि—प्राविष्ट प्रकाशित, व्याप्त।

छनछन स—दिशुधला वेव दोबस्त, गड़बड़ी।

छनछ स=छट्टा।

छन स—सर्दी, जुकाम; कै।

छन स—छनना छल, घोखा, धतता; प्रसंग

(कथाछल), बहाना, उज्र; दोष। —छाओ

वि, स—छिपावशी हर बातमें दोष निकालने

वाला। —छाओ क्रि वि—छलसे।

छनछन स—छहरोंका शब्द; आँखोंमें आँसू

आनेका भाव (छाथ—कत्रछ)। वि—

अश्रुपूर्ण (—छाथ)। [छलकना।

छनछन (-नो), छनछनो (क्रि परि १०) —

छनन, छनना स—छल, घोखा। छनछ (-अ)

वि—प्रतारित, ठगा हुआ। [—छल, घोखा।

छना (क्रि परि १)—छनना कत्रा छलना। स

छना स—छलकनेका शब्द।

छ, छो स—छाना गारक, वाफा बचा। —

छोरा वि—जिसे अनेक सतानें पालनी

पड़ती हैं।

शरि स—राख भस्म, खाक, तुच्छ . विषय
(—गान, —उद, दूद—, —गानके डाडा
दूना, भक्क दूद—) ।

शरि स—शरि ओलती, ओरी । —उना स
—ओरीके नीचेकी भूमि । [छावनी ।

शरि स—छाना चंदवा, सेनानिवास,
शरि (क्रि परि ४)—छाना, व्यापना,
फैलना । वि—छाया हुआ । स—आच्छादन ।
शरि (-नो), शरि (क्रि परि १२)—
छाना ।

शरि, शरि स—छान लड़का, बच्चा ।
शरि (छांकना), शरि स—छाननेका
पात्र, चलती ।

शरि (क्रि परि ३)—छानना, चालना । वि
—चाला हुआ, छाना हुआ, खालिस ।
छाने के क्रि—कई आदमी मिलकर घेरना या
परेखान करना । [शरि ।

शरि, शरि स—छान बकरा । स्त्री—शरि,
शरि स—साँचा, साँचेसे बनायी हुई चीज
(नौद्व—) ; ओलती । [सुगंधित पान ।

शरि वि—खालिस, शुद्ध । —गान स—एक
शरि स—पानीका छोट्टा (इष्टि—) ।

शरि स—कतरन, कतरनेका टंग (इष्टि—) ।

शरि (क्रि परि ३)—छांटना, कतरना ; चोकर
निकालना (गान—) । वि—छांट हुआ
(—हान) ; चोकर निकाला हुआ (—गान) ।

शरि स—छांटने या चोकर निकालनेका
काम ।

शरि स—छान मुक्ति, रिहाई । —गान स—
जानेका आज्ञापत्र ।

शरि (क्रि परि ३)—छोड़ना ; बटलना (रागद
—), रवाना होना, खुल जाना । अव्य—
सिवाय (—, इष्टि—) । वि—रहित (मन्त्री
—), स—रिहाई, मुक्ति (—गान) । शरि-

शरि स—विच्छेद । शरि स—रिहाई,
मुक्ति, छुटकारा ।

शरि (-नो), शरि (क्रि परि १०)—
छानना या छुड़ाना मुक्त करना, भगाना ;
छिलका उतारना । वि—मुक्त ; छिलका
उतारा हुआ ।

शरि स—छान ।

शरि (छात्ता) स—काई ।

शरि, शरि स—छाना ; छान कुकुमुत्ता ।
शरि, शरि स—मटम ले र गका एक छोटा
पक्षी ।

शरि स—छान छाती ; छाता । [खानेवाला ।

शरि स—छान सत्त । —गान वि, स—सत्त

शरि (-अ) स—छान छात्र, विद्यार्थी,
-शिष्य । स्त्री—शरि । शरि स—
छानालय ।

शरि स—छान ।

शरि वि—छाननेवाला । शरि स—आवरण,
आच्छादन । शरि (-अ) वि—आवृत,
ढंका हुआ ।

शरि स—छान बनावट, आकार, ढंग ।

शरि स—दूध दुहते समय गायके पर
बांधनेकी रस्सी ।

शरि (छादना—), (शरि—) स—जिस
चंदके नीचे विवाह होता है ।

शरि (क्रि परि ३)—घेरना । स—निमन्त्रित
व्यक्ति जो खाद्य बांध कर ले जाता है ।

शरि (छात्ता) स—छान छेददार कलत्रुल ।

शरि स—छान, शरि वच्चा (शरि—,
शरि—), छेना, फटे दूधका खोवा । —गान
क्रि—दूध फाड़ कर छेना निकालना । —गान
स—छानवाका कच्चे-बच्चे । [खानना

शरि (क्रि परि ३)—छेनाईवा नाथ गूंधना,
शरि (-नो) स—मोतियावि द, फूली ;

इशारा (शब्—); सानी ; मुकदमेका फिर से विचार होनेके लिए दरखास्त ।

छांभ सं—भूषण छाप, चिह्न, बाग ।

छांभ (क्रि परि ३)—भूषण करना छापना । वि—मुद्रित छपा हुआ, छिपा हुआ । छांभाइ सं—छपाई । [पूणता ।

छांभाछांभ वि—लबालब । सं—छिपाव ;

छांभान (-नो), छांभानो (क्रि परि १०)—भूषित कराना छपाना ; सीमा पार करना, पात्र तबालब भरकर गिरना (भूकुर—, गेनाम—) ।

छांभसं—थोलात्र जान छप्पर ।

छांभ वि=छेवना ।

छांभान सं=छांभान ।

छांभान वि, सं—छब्बीस, २६ ।

छांभान सं—छब्बीसवीं तारीख ।

छांभ सं—छाया, परछाईं ; सादृश्य, आभास ; दीप्ति (वक्रछांभ) । —छांभ सं—छायादार वृक्ष । —वांछि सं—छाया चित्र का प्रदर्शन —मृग सं=छांभान ।

छांभ वि—तुच्छ, अधम, नगण्य, खराब । सं—खटमल । —छांभ वि—बरवाद । सं—नाश (छांभ थोत्र वांछा) । —छांभ सं—मृग खटमल ।

छांभ सं—एक, थोड़ा, बरुन छाल (छांभ—), चमड़ा (इतिगत्र—) ।

छांभ (छाल्टि) सं—सन तीसी आदि के छालके सूत से बना हुआ कपड़ा ।

छांभाना सं—चंदवे के नीचे का स्थान जहाँ बिवाह के पूर्व दुलहे को दुलहिन से प्रथम साक्षात्कार कराने के लिए खड़ा कराया जाता है ।

छांभ सं—रखा बोरा ।

[छांभ] ।

छि अव्य—छि । (अधिक घृणा में छां, छां

छिंका (छिंका) (-क) सं—लोहे का सिकचा जिससे हुंके का नल साफ किया जाता है ।

छिंकाश्न वि—ये एकट्टेतेई कौन जो थोड़े में ही रोता है । स्त्री—छिंकाश्नी ।

छिंकाछांभ सं—जो चोर छोटी-मोटी चीजें चुराता है । [सनक (-थल) ।

छिं सं—छिं, छिं, छींटा, वृद्ध ; छींट, छिंकेन (-नो), छिंकेनो, छिंकेनो (क्रि परि १७)—निश्चित इच्छा, ठिकराईया भड़ा छींटना, छितराना, बिखरना ; छिड़कना (बन—) ।

छिंकेनि सं—सिटकिनी, चटकनी ।

छिं, छिं सं—छींटा, छींट, बिंदु, तिलक ; छरी । —छिं सं—इह एक छिं, वृद्धी—ब्रंदा, थोड़ा-परिमाण ।

छिं (-नो), छिंनो छिंनो (क्रि परि ११)—छिंनो छिड़कना ।

छिं वेड सं—टटर ।

छिं सं—एक पैसे की चौथाई ।

छिं (-अ) सं—छेना, फूटो, ब्रज छेद ; दोष । छिंभान, छिंभान सं—दूसरे के दोष का ढूँढ़ना ।

छिं, छिं वि—नीर्ण, वोगा क्षीण, कृश । —छांभ सं—मृग छांभ घासमें रहने वाली एक प्रकार की जोंक ; (व्यंग में) जो पीछा नहीं छोड़ता, पिछलगा ।

छिंन (-नो), छिंनो, छिंनो (क्रि परि ११)—छिंनो नग्रा छिंन लेना ।

छिंन, छेना वि, सं—छिंनल । छिंनो पना, छेनापना सं—छिंनलपन, छिंनल ।

छिंनिनि सं—खपड़े आदिका टुकड़ा फेंक कर पानी पर चलाने का खेल ।

छिं (-अ) वि—छिं फटा, टूटा, कड़ा हुआ,

खंडित । —वैषम्य (—है घ-अ) वि—जिसका सशय मिट गया है । —डिग्न (-अ) वि—तितर-वितर, नष्ट-भूट, टूटा-फूटा, बरबाद ।

हिम सं—पतला वाँस जिसके सिरे पर मछली फसाने के लिए सूत और वंसी लगी हो ; सँकरी और लम्बी चाल की नाव ।
—हिम वि—नश ७ पाठना दुबला और लट्ठा (—गड़न) । [११]—छिपाना ।

छिपान (-नो), छिपाना, छिपाना (क्रि परि छिपि सं—दाढ़ काग, डाट ।

छिपड़ा छिपड़े सं—भिणो सीठी (आकर—) ।

छिम सं—गिम सेम, फली ।

छिखर वि, सं—छिहचर, ७६ ।

छिखनकरे वि, सं—छानकरे, ६६ ।

छिखमि-वि, सं—छिआसी, ८६ ।

छिचि सं—श्री श्री, शोभा, रूप ; चावलके चूण गूँघ कर और उसमें रंग मिलाकर बनाया हुआ मंदिरनुमा पदार्थ जो विवाह आदिके समय रखा जाता है ।

छिजका, छिजके सं—झाज, श्याम छिलका ।

छिजा, (-ज) सं—दूधकर २७ धनुष की दोरी ; धोती चादर आदिके दोनों ओर के झालर के सूत ।

छिजि सं—ज्याकर दलिका चिलम ।

छूकरी सं—छूँड़ी छोकरी ।

छूँच सं—रूच, रूचि सूँ ।

छूँछ, (-छ) सं—छूँछनरी, शकृषिक छूँछंदर ।

छूँछल (-अ), छूँछला, छूँछला वि—रूँचुथ नुकीला । [सनक ।

छूँछिवाहे सं—छिवाहे पाक-साफ रहने की छूँछनरी सं=छूँछ ।

छूँछे सं—छूँछे छूँछ, कतरन, पहनावा ; दौड़ (—मेश, —मोवा) ।

छूँछे, (-छे) वि—छिटक कर आया हुआ ।

छूँछे, (-छे) (क्रि परि ३)—छोड़ाना दौड़ना ; दूटना (नश—) ।

छूँछे सं—दौड़-धूप, दूधर-दूधर दौड़ ।

छूँछे न (-नो), छूँछेला, छूँछेला, छूँछेला (क्रि परि १३)—दौड़ाना, दूड़ाना ।

छूँछे सं—छूँछेटी, अवकाश ।

छूँछे (क्रि-परि ६)=छूँछे ।

छूँछे सं=छूँछेटी ।

छूँछे सं—नूत अस्पृश्य के ससर्ग से खाने या पीने की वस्तु में उत्पन्न दोष या अपवित्रता ।
—नार्ग (-अ) सं—स्पर्श दोष बचाना ही परम धर्म है ऐसा आचरण ।

छूँछे, (-छे) सं—दूधिया बहाना ; दोष, त्रुटि (—दूध, —शक्ति दूध) ।

छूँछे, (-छे) सं—दूध ।

छूँछे सं—दूरी, चाकू ।

छूँछे (क्रि परि ६) क्रि=छूँछे ।

छूँछे सं—एक प्रकारका चर्मरोग ; चमड़े पर की चित्ती ।

छूँछे (छूँछे) सं—तपे लोहे आदि से किसी अगका दाह ।

छूँछे (छूँछे) (क्रि परि १)—थोड़े घी या तेल में भूना, सेंकना ।

छूँछे (छूँछे) सं—तेल में भूना थोड़े जल में सिमायी हुई तरकारी ।

छूँछे (छूँछे) वि—छलिया, दुष्ट (छाद—) ।

छूँछे सं—छूँछे छलिया ; मछलीके काँटे तेल साग आदि की मिली हुई सूखी तरकारी ।

छूँछे वि सं—छियालीस, ४६ ।

छूँछे (छूँछे) (क्रि परि १)—बँठाना कुचलना, फूटना, पसिना ; सींचना, पानी फेंकना (शूँछ—, नोका—) ।

छूँछे (क्रि परि ५)—फाड़ना ; अलग करना ; उखाड़ना । वि—फाड़ा हुआ, फटा (कापड़),

तोड़ा हुआ, फटा हुआ (—द्वय)। —छि डि
सं—बारबार फाड़ना।
छेला वि—काटनेवाला।
छेन सं—छेदन, कर्तन (भूउच्छेद); विराम
(कार्श्व—नाई); टुकड़ा, विराम चिह्न।
छेनक वि—छेन। छेनन सं—छेदन,
घोरफाड़। छेननीय (अ), छेन (—अ)
वि—काटने योग्य। छेदित (—अ) वि—
कटा हुआ, खंडित।
छेना (छेदा) सं—छिड़, छूटो छेद, सूरख।
छेना वि—सारहीन (—कथा)।
छेनि सं—लोश काटिवा वगैरानी छेनी रूखानी।
छेना (छेब्ला) वि—छावला। छेनामि
सं=छावनामि।
छेन सं—लड़का, बेटा, पुत्र; आदमी
(नटो—, मेद—)। —छेना सं—बच्चों
सा खेल। —छेना सं—बच्चों का खुरानेवाला,
बच्चों को डरानेवाला होता। —छेना, —छेना
सं—कच्चेबच्चे। —छेना सं—बचपन।
—छेना सं—कम उमरका बच्चा, शिशु।
—छेना, छेनामि, छेनामो सं—बच्चों-सा
बर्ताव; हलकापन।
छेना वि, सं—छाछट, ईई।
छे (छह) सं=छे।
छे। सं—भपड़ा (छिल—मेद निद्रे बावे),
मुख से आक्रमण (गाथे—गाथे)।
छे। सं—खाने के लिए उतावलापन।
छेना सं—छोकरा, लौंदा, लड़का।
छेना सं=छेचक।
छेना (—नो), छेना (क्रि परि १४)—
भाड़ा फिरनेके बाद जलसे शौच करना,
जल छूना।
छे। (—अ), छे। वि—छोटा (प्यार में—
छे।); नाटा; नीच, निंदित, कृपण;

नीचेवाला (—आनामद,—बावू)। —छे।
(—अ), —छे। वि—छोटा, सक्षिप्त।
छे।, सं—छायाये हुए केले के ढंठलों की
बनायी हुई रस्सी।
छे।, छे।ना क्रि=छूटो।
छे।छूटि सं=छूटोछूटि। [से छोटे-आई।
छे। ना, (—नाना) सं—बड़े भाइयों में सब
छे। दि, (—दिदि) सं—बड़ी बहिनों में सब
से छोटी बहिन।
छे।, छे। (क्रि परि ६)—निष्कण करा
फे कना; नागा दागना (बनूक—)।
छे। सं—छोकरा, छोकरा, लौंदा।
छे। सं—नाग दाग, धब्बा।
छे।ना, छे।ना (क्रि परि १४)—बर् करा
रंगना। वि—रंगा हुआ।
छे। (छेब्ला) सं—छिलकेका रेशा
(नात्रिकेल—); सीढ़ी।
छे। सं—मुख से आक्रमण (गाथे—)।
छे।ना (छेब्लानो), छे।ना (क्रि परि
२१)—छे। नाग दाग मुख से आक्रमण करना।
छे। (क्रि परि २०) छूना। वि—छूना
हुआ। —छे। सं—बारबार स्पर्श, आपस
में स्पर्श।
छे। सं—अपवित्र वस्तु का स्पर्श। छे।ना
वि—सक्रामक, छुतहा।
छे।ना (—नो), छे।ना (क्रि परि १४)—
छे।ना, छुलाना।
छे।ना सं—छुहारा।
छे। सं—छुरा, कटार।
छे। सं—बूट चना (छे।ना नाग)।
छे। (क्रि परि ६)—छे। छीलना;
छिलका उतारना।
छे। अन्य=छि।
छे। सं—तपी हुई वस्तुके जल में डालने से

या गरम तेल आदि में तरकारी आदि डालनेसे जो शब्द होता है।

छावना, (छ—, छ—,) वि—अग्नयः, वयं-वलाव वकवादी, वातूनी, हल्का आदमी छावनादि, (—वा) स—वकवाद, वातचीत में हल्कापन।

ज

ज वि, प्रत्य—जाउ उत्पन्न (जनक, जगज)।
जड़े स—जई।

जः स—जड़ लोहे का मुत्ता। [यनैला।

जला, जलन, (—ली) वि—बूना जगली
जक स—यक्ष; कृपण व्यक्ति।

जकन स—बाघाउ जलम। वि—याकट घायल।

जकरी स—बायल आदमी। वि—जलम-सम्बन्धी।

जगज स—जगज जगमगाहट।

जगज्जन जगजन स—ससार के मनुष्य।

जगज्जननी स्त्री—ससार भर की माता, जगज्जगरी।

जगज्जगरी वि—ससार को जीतनेवाला।

जगज्जगरी (—अ) स—डका, नगाड़ा।

जगज्ज स—संसार (जगज्जगरी)। जगज्ज

वि—बहुतभारी, जगज्जगरी स—संसारका पिता या प्रभु, पुरी की विष्णु-मूर्ति।

जगज्जगरी स—जगज्जगरी पुरीधाम। जगज्जगरी

(जगन्मयी) स्त्री—ससारको व्याप्त करने वाली, दुर्गा, परमेश्वरी। जगज्जगरी (जग-

न्माता) स्त्री—ससार को उत्पन्न करनेवाली, परमेश्वरी। जगज्जगरी (जगन्मोहन) वि—

ससारको मोहनेवाला। स्त्री—जगज्जगरी।

जगज्ज स—घरती, पृथ्वी, दुनियाँ। जगज्जगरी

क्रि वि—पृथ्वी पर, दुनियाँ में।

जगज्ज (जगद्व्यन्तु), जगज्ज स—विश्वमित्र; ईश्वर, विष्णु।

जगज्जगरी (जगद्व्यापी) स—ससारके निवासी।

जगज्जगरी (जगद्विख्यात-अ) वि—विश्व विख्यात, ससार भर में प्रसिद्ध।

जगज्जगरी (जगद्व्यापी) वि—ससार भरमें फैला हुआ।

जगज्ज स—जगज्ज।

जगज्जगरी स—अनेक प्रकारकी तरकारियाँ मिलाकर पकायी हुई खिचड़ी, विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिलावट।

जगज्ज स—नितम्ब, चूतड़। [घृणित, नीच।

जगज्ज (—अ) वि—जगज्ज, जगज्ज खराब, गंदा,

जगज्ज स—जग, लड़ाई; लोहे का मुत्ता।

जगज्ज वि—जगी, सेना सम्बन्धी। स—वीर।

जगज्ज वि—गतिशील, चलनेवाला।

जगज्ज स—जगल, वन, यागज्ज घासपात।

जगज्ज वि—यनैला।

जगज्ज स—जाँव, ऊँह, पैरका ऊपरवाला अंश।

जगज्ज स—जज, विचारक।

जगज्जगरी स—जजका काम या पद। [भू भट।

जगज्जगरी स—यावना कूड़ा-करकट, दशादे

जगज्ज स—जग, गंठ फसाव, उलझन, गाँठ।

जगज्ज स—जग भीड़, आदमियों का जमाव।

जगज्ज स—जग, बरगद आदि पेड़ की शाखा

में से उतरी हुई जड़; केशर (जगज्जगरी)।

—जगज्ज स—जग का गुच्छा; शिव की जग।

—जगज्ज स—जगधारी, शिव। जगज्ज, जगज्ज

(—अ) वि—जगवाला।

जगज्ज वि—जटिल, गूढ़, जगवाला।

जगज्ज स—राधा की सास।

जगज्ज वि—जगवाला। [मातृचिह्न, लहसन।

जगज्ज स—जगज्ज शरीर में जन्म से चिह्न,

जगज्ज स—उदर, पेट; पाकाशय, गर्भ, जरायु।

जड़ वि—अच्छेन जिसमें चेतनता नहीं है, जड़ ;
अचल (-वृत्ति), मूर्ख । सं—वस्तुका मूल
उपादान । —वाक्य स—जड़ वस्तुके सिवाय
संसार में दूसरा कुछ नहीं है और चैतन्य
जड़का ही धर्म है ऐसा मत । —उक्त सं—
पुराणोक्त एक ऋषि । वि—निकम्मा, आलसी,
सुस्त ।

जड़ (-अ), जड़ वि—गमावगित, गौणोत्पन्न
बटोरा हुआ, एकत्रित । —मड़ (-अ) वि—
आपड़े सकुचित, सिकुड़ा हुआ ; ठिठुरा हुआ ।

जड़ता सं—जड़त्व, अस्पष्टता (कथा—) ।

जड़जड़ सं—परस्पर आलिंगन ।

जड़ान (-नो), जड़ाना (क्रि परि १०)—
लपेटना, फसाना, बटना ; अस्पष्ट होना ।
वि—लपेटा हुआ, अस्पष्ट । जड़ित (-अ)
वि—लपेटा हुआ, फसा हुआ ; जटित,
जड़ा हुआ । जड़ाना वि—लपेटा हुआ,
पेचिदा ; गिचपिच ।

जड़ना स—जड़त्व, अस्पष्टता ।

जड़ौठ (-अ) वि—जड़त्वप्राप्त, फसा हुआ ;
भयसे सुन्न ।

जड़ून सं=जड़ून ।

जड़ौठा वि—गिचपिच थठित जड़ाऊ ।

जड़ सं—गाना, गाँवा लाह, लाख ।

जन स—आदमी को सख्या प्रकाशक शब्द
(एक—ठाकर), आदमी, मनुष्य, जनता ;
नौकर ; मजदूर (—थाणेना) ; —गद
सं—राज्य, बस्ती, आबादी, देश । —थवा
सं—जनशक्ति, किरानेवाला कहावत । —थाणी,
गानव सं—कोई मनुष्य या प्राणी । —गद
सं—उज्ज्वल अफवाह । —थठ वि—ससार
में प्रसिद्ध या प्रचारित । —थठ सं=जन
थवा । —गदूय वि=जनाकीर्ण । —माधव
सं—आम जनता ।

जनक सं—पिता । वि—उत्पादक (आत्म—),
राजर्षि जनक । स्त्री—जनिका । जनकता
सं—उत्पादकता, पितृत्व ।

जनता सं—लोकत्रय भिन्न आदमियों का जमाव,
जनता ।

जनन सं—जन्मदान, उत्पादन, जन्म ।

जननालोच सं—सन्तानके जन्मके कारण
अशौच ; जननोत्र (-अ) वि—जनने योग्य ।
जनशता सं—जन्मदेनेवाला, पिता । स्त्री—
जनशिली ।

जनम सं—जन्म, उत्पत्ति ।

जना सं=जन । —जना सं—हरेक आदमी ।

जनाकीर्ण वि—जनमूलक मनुष्यों से पूर्ण ।

जनाश्रिक सं—दूसरे के सामने किसी व्यक्तिके
साथ छिप कर बातचीत ।

जनास सं—जुन्हरी ।

जनि, (-नी) सं—उत्पत्ति पैदाइश, जननी ।

जनिका वि—जनशिली जननी, पैदा करनेवाली ।

जनिठ (-अ) सं—जात उत्पन्न ।

जनिता सं—जनक उत्पन्न करनेवाला ।

जनौन वि—जन-सम्बन्धी (विश्व-सार्व—) ।

जने जने क्रि बि—एक एक करके, हर एक के
व्यक्तिगत रूपसे ;

जन्म (जन्म -अ) स—जन्म, पैदाइश,
जीवन-काल । —जाठ (-अ) वि—जन्म से
प्राप्त । —जन्म—जन्मलाभ, —दिन स—
जन्म की तिथि । —गद, —गदिका स—
कोठी जन्मपत्री । —गोप क्रि बि—
जनमभरके लिए ।

जन्मा वि—जात, उत्पन्न (कथ—) ।

जन्मान (-नो), जन्माना (क्रि परि १६)—पदा
करना या होना ।

जन्माश्रय सं—दूसरा जन्म, परलोक । —वाक्य
सं—मृत्युके बाद पुन जन्म होता है ऐसा

मत । उन्नायद्वी वि—पिछले जन्म वा जन्मों का ।

उन्नाय वि—जन्म से अघा ।

उन्नायद्वी वि—जन्मसे मृत्यु पर्यन्त । क्रि वि—निरन्तर ।

उन्नाय वि—याज्ञ जन्मसे ।

उन्नाय (-अ) क्रि—पैदा हुआ ।

उन्नाय (-अ) वि—जात, उत्पन्न । (जन्मिन्) औरस (दायद्वी—) ।

उन्नाय (-अ) वि—जनने या उत्पन्न करने योग्य ; हेतु, कारण से, सबब से (उन्नाय, इस लिए ; उन्नाय, उन्नाय, उस कारण), निमित्त, लिए ।

उन्नाय (क्रि परि १)—उन्नाय दया जपना ।

उन्नाय (-नो), उन्नाय (क्रि परि १०)—अपने मत में लाने के लिए बारबार मन्त्रणा देना ; याद कराना । उन्नाय (-अ) वि—जिसका जप किया गया है ।

उन्नाय स—गीलेपनका भाव प्रकाश (नृजिह्व वि—कृच्छ्र) । उन्नाय वि—बहुत अधिक चुपड़ा हुआ । [(-भावात्) ।

उन्नाय (-अ) वि—बेढौल और भारी

उन्नाय वि—उन्नाय भड़कीला ; उन्नाय जबर ; बढ़ा ; भारी । —नृजिह्व वि—नृजिह्व जबरदस्त ।

—नृजिह्व स—नृजिह्व, गौडन जुलम, जबरदस्ती ।

उन्नाय स—जपा, एक लाल फूल ।

उन्नाय स—जबह, पशुका यध ।

उन्नाय स—जवान ; भाषा ; जीम । —नृजिह्व

स—गवाही, वयान तहरीरी । उन्नाय वि—

उन्नाय जवान, मुख से (नृजिह्व—नृजिह्व) ।

उन्नाय स—जवाब, कैफियत ; इस्तीफा ।

—नृजिह्व स—नृजिह्व जवाबदेही ; नृजिह्व

जिम्मेवरी । उन्नाय वि—जवाबी ।

उन्नाय वि—यादें जड़ की तरह ।

उन्नाय (-अ) वि—उन्नाय, नृजिह्व उन्नाय हुआ, हारा हुआ, जग्त ।

उन्नाय वि—भड़कीला ; समारोह ; चमक, दीप्ति, उन्नाय (नो), उन्नाय (क्रि परि १६)—चमकना, चमकाना ।

उन्नाय वि—उन्नाय चमकीला, आदम्बरी ।

उन्नाय वि—जुड़वां, एक साथ उत्पन्न युगल सन्तान ।

उन्नाय स—भीड़ और आदम्बर का भाव प्रकाश, मक्के का पवित्र कुआं ।

उन्नाय स—नृजिह्व पूंजी, मूलधन ; आय ; जमा ; संचय, संग्रह, मालगुजारी । —नृजिह्व स—जमीन और मालगुजारी का हिसाब रखने-वाला । —नृजिह्व स—जमीन और मालगुजारी का हिसाब ;

उन्नाय (क्रि परि १)—संचित होना, एकत्र होना ; जमना । वि—संचित ; गाढ़ा ;

उन्नाय वि—ठोस ; गाढ़ा ; जमा हुआ ।

उन्नाय (-नो), उन्नाय (क्रि परि १०)—संचय या संग्रह करना, ढेर लगाना, जमाना ; सभा के लोगों को प्रसन्न करना । वि—संचित, जमा हुआ, गाढ़ा ।

उन्नाय स—जमाना जमानत ।

उन्नाय स—जमात ।

उन्नाय स—जीमन, भूमि ; खेत ; कपड़े की बुनावट । —उन्नाय स—अपनी और पट्टेपर ली हुई जमीन, संपत्ति । —उन्नाय स—जोतने की जमीन, खेत । —नृजिह्व स—जमींदार । —नृजिह्व स—जमींदार का काम, जमींदारी, संपत्ति —नृजिह्व स जमींदाराना (—नृजिह्व) ।

उन्नाय, उन्नाय स—नृजिह्व एक खट्टा नौवू ।

उन्नाय, उन्नाय स—नृजिह्व सियार, गीदड़ ।

उन्नाय स—नृजिह्व नृजिह्व जय, जीत, विजय ;

जीत कर लाभ । —ठाक सँ—बड़ ठाक बहुत बड़ा ढोल । —क्षनि सँ—जयसूचक आनन्द-ध्वनि या आशीर्वाद । —गठाका सँ—विजय का झंडा । —झी सँ—विजय-लक्ष्मी । —छुछ सँ—विजयका स्मारक स्तम्भ । —झी वि—विजयी ।

झड़ो सँ—जावित्री, जायफल की छाल ।

झड़ो सँ—गठाका झंडा ; दुर्गा, श्रीकृष्णकी जन्म तिथि ; एक पौधा ।

झरगान सँ—एक दस्त की दवा ।

झरा सँ—डाढ़, गिरि भंग ; दुर्गा की एक सखी ।

झरोख अव्य—झर झुंके जय हो ।

झरझर वि = झरझर ।

झरझर वि—बहुत बृद्ध, जराग्रस्त ।

झरम, झरमा वि—झरमा, रुकी सँ—जरदा, पान के साथ खानेका एक मसला ।

झरा (क्रि परि १)—जीर्ण होना (गोलक—, झने—) ।

झरि सँ—जरी ।

झरिभ सँ—जमीन की पैमाइस ।

झरिमाना सँ—जुर्मना, अर्थदंड ।

झर सँ—जोरु, पत्नी, औरत ।

झरर वि—जरुर ; अवश्य । झररर, सँ—जरुरत, आवश्यक । झररी वि—जरकारी जरूरी ।

झरर, झररित (-अ) वि—झरझर बहुत क्लिष्ट (गोलक—, गोलक—) ;

झन सँ—जल, पानी ; जगथावा जलपान, जलखावा (—थोड़ा, —बाग), बारीश (—झला) । वि—जलकी तरह तरल (गोलक—झडा) ; ठंडा । —झर सँ—नदी आदि में नाव चलने या मछली पकड़ने का कर या महसूल । —कटे (-अ)—जलाशय आदिमें जल न रहनेका कट । —कलि सँ—जलमें खेल-कूद । —थारा सँ—जलपान,

जलखावा । —छर सँ, वि—जलमें चलने-वाला । —झ वि—झलाछरनीश । —कोकि सँ—स्नान आदिके लिए छोटी चौकी । —झ सँ—प्याऊ, पौसला । —झवि सँ—जो चित्र जल में भीगो कर दूसरे कागज पर उतारा जाता है । —झर सँ—जलमें रहने वाले प्राणी । —झन सँ—हाइड्रोजन गैस । —झरर, —झरर, —झरर वि—जीवित, जिंदा, स्पष्ट, प्रत्यक्ष (—गिरथ कथा) । —झर सँ—कोष-वृद्धिका रोग ; पेट में जल भर जानेका रोग । —झानी, —झानी सँ—जल निकलने की नाली, पनाला । —झा सँ—मन्त्रशक्ति युक्त जल । —झ सँ—नाव आदि से जानेका पथ, जलमार्ग । —झान सँ—झड़-झड़कि झड़कि चबेना आदिका जलपान । —झानि सँ—छात्रवृत्ति, जलपानके पैसे । —झाण सँ—पहाड़से गिरती हुई जलधारा । —झा सँ—बावशझा आवहवा । —झर सँ—झरर, झररझि जलका बुलबुला । —झाझ क्रि—जलके भीतरसे चलना ; स्नाव होना । —झरि सँ—जलका भेंवर । —झर (-अ) वि—जलमें डूबा हुआ । —झरन सँ—जलगाहन जलमें डूब कर स्नान । —झाग सँ—जलपान । —झाठ सँ—झाठाना । —झा सँ—झलझल । —झर सँ—झलझल सँ—जल से सींचाई । —झरा क्रि—पोखरे आदिमें-रोज जलका व्यवहार करना ; जल निकलना । —झरा सँ—विवाह आदिमें पड़ोसियों के घरों से या नदी तालाव आदिसे जलका संग्रह । —झर (-अ) सँ—समुद्र या बड़ी नदी में चक्रदार आंधी से उठाया हुआ जलका स्वभा । —झरर क्रि—बारिश होना । —झरी सँ—दरियाई घोड़ा । —झर सँ—झरझर । झल झला क्रि—

कुपात्र को देना, जलमें फेंकना । जल
 बाधना कि -वृथा नष्ट होना ।
 उन्नत सं—उप मेघ वादल ।
 उन्नति कि वि—जलश्री ।
 उन्नतांशे सं—जैतून, एक खट्टा फल ।
 उन्नता सं—आनन्द-सम्मिलन, जलसा ।
 उन्नतां वि—जलमें निक्षेप ।
 उन्नतिवि वि—भौंगा, गोला, ओटा ।
 उन्ना वि—जलमय । सं—रिन भील, दलदल ।
 उन्नाच्छनीय (-अ) वि—जिस जातिका जल
 ब्राह्मण आदि पी सकते हैं ।
 उन्नाक्षति सं—शवदाहके बाद प्रेतात्माके लिए
 दिया हुआ हथेली भर जल, तिलांजली ;
 त्याग, वृथा व्यय ।
 उन्नाउड सं—जलातक रोग, जल से डरने की
 बीमारी, पागलपन जो पागल कुत्ते के काटने
 से होता है ।
 उन्नावर्त सं—पूर्वि भँवर ।
 उन्नत. (-व) सं—उन्ना चिकनाहट, उज्ज्वलता ।
 उन्नो (जोलो) वि—उन्न जलयुक्त (—उध,—
 शंकर) ।
 उन्नाच्छा (जलोच्छाश) सं—जलान्न ज्वार ।
 उन्नोका (जलउका) सं—जल ।
 उन्न (-अ), उन्नन, उन्नना सं—स्थायार्थ
 वातचोत, वकवाद, जल्पना ।
 उन्न सं—जहर, विष ; मणि, जवाहरात ।
 —उठ (-अ)—राजपुत स्त्रियों का अश्विकुंड
 में या जहर खा कर प्राणत्याग का व्रत ।
 उन्नो, उन्नो सं—जौहरी ।
 उा सं—बाठा पती के भाई की स्त्री । छोटो—
 स्त्री—देवरानी । उध—स्त्री—जेठानी ।
 उाश्विग्न सं—उाश्विग्न ।
 उाउ सं—उध लप्सी ; खुदी का गीला भात ।
 उा सं—उधवा, उध जाँव ।

उाद सं—उध, उनात्र घमंट, दोखी ; समारोह,
 आवृम्बर (उन्न) ।
 उाद सं—जाकड़ ।
 उाका (कि परि ३)—शानदार होना ।
 उाकान (-नो), उाकाणा (कि परि १०)
 —शानदार बनाना ; चमकाना ।
 उाश्व (-अ) वि—जागता हुआ ।
 उाश्व सं—उाश्व जागना, जगा रहनेकी
 अवस्था उाश्व सं—जगा रहना, निद्रमग ;
 बेहोशी या अपनी भूली हुई अवस्था
 से जागना (पाठित—) उाश्वित (-अ)
 वि—जो जगा है, निद्रा-रहित । उाश्व
 वि—जागता हुआ, सजग ; सावधान,
 होशियार ।
 उाश (कि परि ३)—जागना, सो कर उठना,
 जागते रहना (बाउ—), विद्यमान रहना
 (गने—, उाश्व—) ।
 उागान (-नो), उागाना (कि परि १०)—
 जगाना ; होशियार करना ; याद दिलाना ।
 उाश्व सं—जागीर । —रात्र सं—जागीरदार ।
 उाश्व, उाश्व (-अ) वि—जागनेवाला,
 जागता हुआ, देवीशक्ति-युक्त (उाश्व-
 देवता) । उाश्व सं—जाग्रत अवस्था ।
 उाश्व, वि—जगल सम्बन्धी, वनैला ।
 उाश्व, उाश्व सं—बाध बांध ; पुल ।
 उाश्व सं—जांधिया ।
 उाश्व सं—जाजिम, विद्वाने की बड़ी चांदर ।
 उाश्वान वि—जगतीशान अति उज्ज्वल ;
 प्रत्यक्ष, स्पष्ट ,
 उाउ (१) सं—जाट ।
 उाउ (-अ), (-उ) वि—उाउ ।
 उाउ वि—जठर-सम्बन्धी, पेटका ।
 उाउ सं—शीत, जाड़ा ।
 उाउ (-अ) सं—उाउ चस्ती, मूर्खता ।

काठ (-अ) वि—उत्पन्न (नर—, वन—) ।
 स—शिशु, समूह (अर्थ—) ।
 काठ (जात्) स—जाति, वर्ण, श्रेणी, प्रकार ।
 वि—जन्मका (-वांछ्य); रक्षित (शाना—, श्वाभ—) । काठक स—जो जन्मा है ; जातकर्म, जन्मपत्री, गौतम बुद्ध का पूर्व-जन्म-वृत्तान्त-युक्त ग्रन्थ । —काष्ठ वि—क्रोधित, खफा । —शब्द स—काष्ठ जन्मपत्री ।
 कांठा स—चक्री, भाथी, धौंकनो । [है, माता ।
 काठागठा स—जिस स्त्री के सत्तान पैदा हुई
 काठागोठ स—जननागोठ ।
 काठि स—जाति, वर्ण, वर्ग, विभाग ; जन्म ; उत्पत्ति, वंश । —गठ (-अ) वि—जातिका ।
 —काठ (-अ) वि—जाति से अलग किया हुआ । —ग्रन्थ (-र) स—जिसके पूर्व जन्मकी घटनाओंका स्मरण है ।
 काठि, (-ठौ) स—काठिली फूल चमेली,, मालती ; जावित्री ।
 कांठि स—सरौता, छपारी काटनेका एक औजार । —कन स—मूस फंसानेका एक ; दाँनेदार औजार । [सदृश (शब्द—) ।
 काठोय (-अ) वि—जाति सम्बन्धी, जातिका, काठाय (-अ) स—जाति का अंश । काठाय क्रि वि—जातिके विषयमें (—अर्थ) ।
 काठायमान स—अपनी जाति का गर्व या घमंड । [शानदार ।
 कांठायल स—जनागठि सेनापति । वि—
 जाना स—पुत्र, बेटा (शाश—, शाश्वत—) ।
 स्त्री—जानी ।
 काश स—रूख जादू, टोना, इन्द्रजाल ।
 —कन स—जादूगर । —ग्रन्थ स—अजायब घर ; —गवि स—शिशुको प्यारका सम्बोधन ।
 जानठ (-अ) क्रि वि—जानठ; जाठगात्र जानते हुए ।

जानगम वि—बस्तीका, देहाती ; नगर-निवासी ।
 जाना (क्रि परि ३)—जानना ; मालूम होना, समझना । वि—जाना हुआ, परिचित ।
 —जानि स—लोगोंमें प्रचार । जानान स—समाचार प्रदान, अपना अस्तित्व प्रकाश ।
 —उना स—परिचय, जान पहचान, अनुभव ।
 जानान (-नो), जानाना (क्रि परि १०)—
 काठ कबाना जताना, अवगत कराना, खबर देना, सावधान करना निवेदन करना (अर्थ—) ।
 जानाना स—जनाना ; पर्दानशीन ।
 जानाना, जानना स—काठावन जंगल ।
 —काश स—शेरे घुटना । [पहला महीना ।
 काशवात्रि, (-वा-) स—जन्मवरी, अंग्रेजी
 जानावात्र स—जानवर, पशु ।
 काखवि वि—जीव-सम्बन्धी, प्राणीका ।
 कागक वि—जप करनेवाला ।
 कागठान (-नो), कागठाना (क्रि परि १५)—
 जड़ाईका धरा हाथों से लपेटना, आलिंगन करना । कागठो-कागठि स—जड़ाजड़ि परस्पर आलिंगन ।
 काकवान स—कूकुर कैसर, जाफरान ।
 काकवि स—छिजयूख बड़ा छेददार टटर, भँभरी, लकड़ी या धातुको जाली ।
 काव, कावना (काव्ना) स—सानी ।
 कावड़ा (काव्ड़ा) वि—कावड़ा ।
 कावस स—कावश्चन, चर्वित-चर्वण पाशुर, जुगाली (-काठो) ।
 कावना, कावना (काव्दा) स—रोजाना हिसाब की बही ।
 कास स—जामुन ।
 कासड़ा स—रूड़ा घट्टा । [कटोरा ।
 कासवाटि (जाम्वाटि) स—फूलका बड़ा
 कासकल (जाम्कल) स—एक मफेद फल ।

जमा सं—जिदान कुर्ता, कमीज, कोट ।

जानाई सं—दामाद । —जौ सं—जैष्ठ शुक्र
पट्टी (इसदिन दामाद को विलाया और
वस्त्रादि दिया जाता है) ।

जामिन सं—जामिनदार ; जामिन ; जमानत ।
—जा सं—जमानतदार ।

जामिन सं—एक खट्टा नींव ।

जा सं—कद, जानिक, फिहरिस्त । वि—जाय,
वाजिव, उचित ।

जादग स—स्थान, जगह, जमीन, क्षेत्र,
अवस्था ; बदल ।

जादगिर (जाय गिर) सं = जागिर ।

जादक (जाय फल) सं—जावित्री ।

जादगान वि—जो पैदा हो रहा है ।

जाद स्त्री—पत्नी, स्त्री ।

जा सं—उपपत्ति, घड़ा jar.

जाद वि—हजम करानेवाला ।

जाद वि—दोगला ।

जाद सं—परिपाक, हाजमा, पाचन ।

जाद (क्रि परि ३)—जीर्ण होना ।

जाद सं—प्रयोग (डिक्—दवा) ।

जादवि सं—प्रताप, शैली ।

जाद सं—एक कड़ी लकड़ी ।

जाल सं—जाल, फडा, घोखा, समूह, जगला ;
जालसाजी ; वनावट (नाटे—, टाका—,
नमिन—) । वि—जाली, वनावटी (—नाटे,
—नमिन) ; नकली, कपटी (—नमाजी) ।
—दना क्रि—जाल फेंकना । —गोणेना
क्रि—जाल समेटना । —गाठा क्रि—जाल
विछाना ।

जानना (जालना, सं = जानना ।

जाना सं—मटका ।

जाना, जानाना क्रि—जाना, जानाना ।

जानि सं—छोटा जाल ; जाल की तरह छेददार

चरु जाली, केंकरी, मछि रन छोटा कचा
पाल । [मकड़ी ;

जामिन सं—जाल, वीर मरुआ, घोखेपाज ;
जामिना वि—जालिया । जामिना सं—
जालसाजी । [(जादव—) ।

जाद वि, सं—ज दूर्त, घोखेपाज, सुखिया
जाद वि—अदिक, ज्यादा ।

जादगान सं—बादशाह का सम्बोधन,
जहांपनाह । [चालियाज ।

जादगान वि—दुश्मन दूर्त, घोखेपाज,

जाद सं—जहाज । जादगे वि—जहाज-
सम्बन्धी, जो जहाज से आता है (—गान) ।

जादग सं—नदर जहन्नुम ।

जाद वि—प्रकाशित, प्रकट जाहिर ।

जि, जो अन्य—जी, महाशय ।

जि सं—एक प्रकार का पेड़ ।

जि सं—जोर, दवाव । [जीतनेके इच्छुक ।

जि सं—जीतने को इच्छा । जि वि—

जि सं—हत्या करने की इच्छा । जि सं
वि—हत्या करनेकी इच्छुक ।

जि सं—मुसलमान बादशाहके द्वारा
अमुसलमान रिपायो से लिया हुआ कर ।

जि सं—जीवित रहनेको इच्छा ।

जि सं—जीवित रहने के इच्छुक ।

जि सं—जिज्ञासा, प्रश्न, जानने की
इच्छा । —जा सं—पूछताछ और बातचीत ।

जि सं (अ) वि—जो या जिसे पूछा
गया है । जि सं वि—जानने के इच्छुक,
खोजी । जि सं (अ) वि—जिज्ञासा के
योग्य, जिज्ञासा के विषय ।

जि सं—जिज्ञासा जजीर ।

जि वि—विजयी (इज—) ।

जि सं (अ) वि—जीता हुआ, वशीभूत
(—जाद) । (जीव) सं—जय (शत्रु—) ।

खिता, खेता (क्रि परि ५)—जीतना ।

खिन, खे स—(गं) जिद्द । खिदो, खेदो वि—
एकछंय जिदो, हठी ।

खिन स—जीन, काठी, जिन ।

खिना (क्रि परि ५)—जीतना ।

खिनिव, (-न) स—जिंस, वस्तु, चीज ।

खिनिगि स—जिंदगी, जावन ।

खिर, खि स—खिस्ता जवान, जीभ । —काठे

क्रि—लज्जाके कारण दाँतों से जीभ काटना

या दवाना । —केश, —केशाना क्रि—

जीभ से छुलाना, जूठा करना । खाना—

क्रि जीभ साफ करना । स—जिससे नाम

किया जाता है ।

खिशा, खिशा स—केशाक हिफाजत, जिम्मा ।

खिशान (-नो), खिशानो (क्रि परि ११)—

जियाना, जिलाना, बचाना, बचाये रखना

(माह—) । वि—जियाया हुआ ।

खिरा खिर स=खीरक ।

खिवान, खिवन स—विश्राम, अवकाश ।

खिवान (-नो), खिवानो, खिवनो (क्रि परि

११)—विश्राम लेना, सुस्ताना ।

खिला स=खिला ।

खिलागि, खिनिगि स—जलेबी ।

खिल (जिल्द) स—जिल्द ।

खिश स=खेश ।

खिशोरी स—हरण करने या चुराने की
इच्छा ।

खिस्ता स=खिस्त ।

खी,—खि, खीडे अव्य—सम्मान-सूचक उपाधि
(शूद्रखी, शायीखी, मदनगोशिनखीडे) ।

खीर वि—खीरख जिंदा । खीरख स—
जीवितकाल ।

खीरन स—प्राण, जिन्दगी, जीवन-तुल्य
(खानकी—, बाबा—) । —बीया स—जीवन

बीमा । —गङ्गनी स्त्री—पत्नी, स्त्री ।

खीरनाख स—मृत्यु । [धारण की शक्ति ।

खीरनी स—जीवन-चरित । —खलि स—प्राण

खीरनाभाख स=खीरिका ।

खीरख, खिरख, खीरख, खीरख (जैन्त-अ)

वि—जीवित, जिंदा ।

खीरगुल वि, 'स'—आत्मज्ञान-प्राप्त करने से

जीवित रहते ही सांसारिक दुःख-दुःखसे मुक्त ।

खीरगुल स—वैसी अवस्था ।

खीरगुल (जीवन्मृत -अ) वि—खीरख मरा

जीवित रहने पर भी मृतके समान ।

खीरान स—कीटाणु ।

खीराना (जीवात्ता) स—अन्तर्करण में

ब्रह्मका प्रतिबिम्ब जो शरीर में कर्ताभोक्ता

ज्ञाता है ।

खीरानख वि—प्राणघातक, मारहालनेवाला ।

खीरिका स—जीविका, रोजी, वृत्ति (-निर्वाह) ।

खीरित (-अ) वि—खीर, खीरख जीता हुआ ।

सं—जीवन, जिन्दगी ।

खीरितेज स—पति, स्वामी, पति का सम्बोधन ।

खीरौ वि—जीनेवाला (मोर्द—) ; जीविका

करनेवाला (गच्छ—) । [इन्द्र ।

खीरूट—ग्रेव बादल ; पर्वत । —वाहन स—

खीरख वि=खीरख ।

खीरान क्रि=खिशान ।

खीरक खीर स—खीर खीर ।

खीर (-अ) वि—बहुत दिनों का, जर्जर ;

दुबला-पतला, पचाया हुआ । —खर स—

पुराना खुलार । खीरौखार स—संस्कार,

मरम्मत ।

खूँहे स—शुधिका जूही ।

खूँखा स—निंदा, घृणा । खूँखित (-अ)

वि—निन्दित, घृणित ।

खूँ स—हौआ ।

जूजूजू स—जापानी कुत्ती का एक पेच या दाव । [भगदना , प्रयास करना ।

जूजू (क्रि परि ६)—युद्ध करना, लड़ना,

जूजू, जूजू (क्रि परि ६)—जुटना, मिलना ।

जूजोन (-नो), जूजोना, जूजोना, जूजोना (क्रि परि १३)—जुटना, स ग्रह करना ।

जूजान (-नो), जूजानो, जूजानो (क्रि परि १३)

—ठंडा होना या करना (इध—, पाउ—),

शान्ति मिलना, वृत्त होना (जाध—,

शङ्क—) वि—ठंडा किया हुआ (—जउ) ।

जूजि स—दो घोड़ों की एक गाड़ी, जोड़ी ;

समान दूसरा व्यक्ति या वस्तु (—दना

जउ) ; 'यात्रा' गान में खड़े गाने वालों

की जोड़ी । —ताव वि—सहयोगी, मददगार ।

जूउ, जूउ वि—योग्य । स—सुविधा, मौका ।

जूठा, जूठा स—पाइरा जूता । —जूठि स—

आपसमें जुतियाना । —ताव क्रि—जूता

मारना ।

जूठान (-नो), जूठानो, जूठाना (क्रि परि

१३)—जूता मारना, जुतियाना ।

जून स—अंग्रेजी जून महीना ।

जूवजान (नो), जूवजानो, जूवजानो, जूवजानो

(क्रि परि १८)—अधिक भिगोना, लिपना-

पोतना । [जुमा मसजिद ।

जूमा स—जुमा, शुक्रवार । —मजिद स—

जूश, जूश स—दूध जुआ । —जोड़, जोल्लोव

वि, स—धोखेवाज, ठग । —जूशि स—

धोखा, ठगी । जूशाड़ी, जूशाड़ी स—जुआड़ी ।

जूशान (-नो), जूशानो (क्रि परि १३)—

जोशाना जुटना, मिलना ।

जूशिस—जूरी, विचारक के मददगार Jury.

जूशरि (-पि) स—कानों के पास लटकते

हुए बालोंका गुच्छा ; कानों के पास से गाल

के कुछ दूर तक रखी हुई दाढ़ी ।

जूमादे स—अंग्रेजी जुलाई माहीना ।

जूम स—जुलूम, अत्याचार ।

जूमे स—जूमे गुच्छा, समूह (जूमे—) ।

जूम स—जुमै जैभाई । जूम स—जैभाई

लेनेवाला ।

जूमे वि—जैमी बघारनेवाला ।

जूमे—, जूमे—वि—जूमे बड़ा (—जूमे) ;

—जूमे, —जूमे वि—पिता या सख्त के बड़े

भाई की सतान (—जूमे, —जूमे, —जूमे) ।

जूमे, जूमे (जैमे) स—जूमे बड़ा पिताके

बड़े भाई, ताऊ । वि—जूमे बड़ा, जूमे,

जूमे वचन में बूढ़ों सी बात करनेवाला,

बकवादी । जूमे, जूमे स—बड़ी चाची,

ताई । जूमे, (—जूमे), जूमे (—जूमे)

(जैमि) स—जूमे बड़ा, जूमे बकवाद,

बच्चों के मुख से बूढ़ों सी बात ।

जूमे (-अ) वि—जूमे जीतने योग्य ।

जूमे वि—विजयी, जीतनेवाला । क्रि—जूमे

जय करना, जीतना ।

जूमे स = जूमे । जूमे जूमे स—आपस में जूमे ।

जूमेना स = जूमेना ।

जूमेना स—जनरल, सेनापति General.

जूमे स—जूमे, खरीता ।

जूमे स = जूमे ।

जूमे (-अ) वि—जीतने योग्य ।

जूमेना वि—जूमे न्याया ।

जूमे स—पिछला हिस्सा (जूमेना—जूमेना) ।

—जूमेना क्रि—पिछले हिसाब का अक दूसरे

पन्ने पर ले जाना ।

जूमेना वि—नाना नाना नेस्तनबद ।

जूमे स—जिरह, गवाह को प्रश्न ।

जूमे स—जूमेना, जूमे जेलखाना ;

कारादंड, सजा । —जूमेना क्रि—जेल काटना ।

जूमे, जूमे स—जिला ।

जने स—मछुआ । स्त्री—जनेनी ।

जने स=खनू । [माननेवाला ।

जेश स—जिहाद । डेन स—जैनी, जनमत

जैव (जइव-अ) वि—जीव-सम्बन्धी ।

जे स—मौका, छविधा, उपाय (काकर
खाना वड़ि लोकावात्र—नहे) । —पाठ
क्रि—मौका मिलना ।

जेक स—जोंक । [तौलना ।

जेथ (क्रि परि ६)—ढकनकरा जोखना,

जेकोव स=छूटाछात्र । जेकूवि स=
छूटाछूवि ।

जेहना स—चांदनी, चन्द्र-किरण ।

जेठे स—गुट, दल ; गिरह, गांठ ।

जेठो, जेठोनो क्रि=छूटे, छूटो ।

जेठ स—मिनन मेल ; जोड़ ; जोड़ी, घोती
और चादर (जेठि—) । —शठ वि,—
रुक्कर, कूठाखनि हाथजोडे ।

जेठा स—शूल जोड़ा, समान दूसरा व्यक्ति
या वस्तु ; मेल, पूर्ण (घर—, बाकाश—,
—ठाड़ा स—किसी प्रकार से जोड़ना या
टांका लगाना ।

जेठा (क्रि परि ६)—जोड़ना ; सांटना ।

जेठान (-नो), जेठांनो (क्रि परि १४)—
जोड़वाना ।

जेठांगन स—पलथी ।

जेठ स—ठावेर खमि जोतने का खेत, हल या
गाड़ी में बैल आदि बांधने की रस्सी । —पात्र
स—ब्राह्मण रियाया ।

जेठा (क्रि परि ६)—गाड़ी में जोतना ।

जेठाकि स—थलोत जुगनु । [लिपा-पुता ।

जेठाड़ा, जेठाड़ा वि—अधिक भींगा हुआ ;

जेठासा स—चोगा ।

जेठान स, वि—बोशान अजवायन, जवान,
युवक, हट्टाकट्टा, मोटा-साजा ।

जेठान स—ज्वार, समुद्र-जलका नदी में से
ऊपर की और प्रवाह । —छाटे 'स'—ज्वार
भाटा, वृद्धि-हास, उन्नति—अवनति ।

जेठान स—जूआ ।

जेठ स—जोर, बल, शक्ति, तेजी ; जबरदस्ती ।

वि—ऊँचा (—गना) ; तेज । —छूवू

सं—जुलम, अत्याचार । जेठान (-अ),

जेठानो वि—जोरदार ।

जेठा स—ठाँठी जुलाहा ।

जेठाण स—जुलाब दस्तावर दवा ।

जेठि जेठा स—नारी, स्त्री ।

जेठ (जठज) स—पति, शौहर । जेठा
स्त्री—पत्नी, स्त्री ।

जेठि स—जौहर । जेठि स—जहूरी
जौहरी । [(विशेषछ) ।

—छ प्रत्य ज्ञाता, जाननेवाला, विश
छात (-अ) वि—विहित अवगत, जाना हुआ ।
छातर (-अ) वि—जानने योग्य । —जात्रे
क्रि वि—जानते हुए । छाठा स—जानने-
वाला ।

छाति स—जगोख एक वंश या गोत्र का
मनुष्य । छाति (-अ) स—ज्ञाति का
सम्बन्ध ।

छान स—ज्ञान, जानकारी, चेतनता, होश
(बोशीर—श्र नाहे), समझ (ठूना—करा),
अभिज्ञता, अनुभव । —काठ (-अ) स—
वेद का ज्ञान-विषयक अन्तिम अंश,
उपनिषद् । —कूठ (-अ) वि—ज्ञान से या
जान कर किया हुआ (—अश्राध) । —गग
(-अ) वि—बोधगग जो जाना जा सके ।
—कू स—ब्रह्मदृष्टि ज्ञाननेत्र । छानतः
क्रि वि=छातनात्रे । छानद वि—ज्ञान देने
वाला । छानद वि—ज्ञान देने वाली ।
—पाशी स—जो जान कर पाप करता है ।

—वान वि—ज्ञानो, जानकार, अनुभवो,
(स्त्री—जानवडी) । —वश वि, सं—ज्ञान
स्वरूप, ब्रह्म । —वाग सं—गीता में कथित
ज्ञान-रूप साधन-पद्धति । ज्ञानाधन स—
तत्त्वज्ञान रूप अंजन जिससे सत्यका प्रकाश
होता है । ज्ञानाक्ष (-अ) वि, स—मुख,
जाहिल ।

छात्रन सं—जताने या बताने का कार्य;
समाचार प्रदान । छात्रक वि—जतानेवाला,
प्रकाशक, सूचक । छात्रनीश (-अ) वि—जताने
के योग्य । छात्रद्विष्ट वि=छात्रद । छात्रिष्ठ
(-अ) वि—जिते या जो जताया गया है ।

छत्र (-अ) वि—जानने योग्य । सं—ज्ञानका
विषय ।

छा सं—क्षेत्र छिन्न धनुष की डोरी, जो
रेखा वृत्तांशके दोनों प्रान्तों को जोड़ती है ।
—निर्वाह सं—ऊँकार धनुष की डोरी खींच
कर छोड़ देने से जो शब्द होता है ।

छात्रोपस सं—धनुष में डोरी चढ़ाना ।

छात्र स = छेष्ट ।

छात्र वि=छींख ।

छात्रिष्ठि स—रेखागणित । छात्रिष्ठि वि—
रेखागणित-सम्बन्धी । [वड़ा, बहुत वृद्ध ।

छात्रा, छात्रान् वि—श्रेष्ठ, उत्तम, उमर में
छेष्ट (-अ) वि—यशस्व उमर में वड़ा । स—
बड़े भाई, श्रेष्ठ व्यक्ति । —छात्र सं=छेष्ट ।

छात्राधिकार स—वपौती सम्पत्ति में बड़े पुत्र
का उत्तराधिकार । छात्राक्षर सं—गृहस्थ
आश्रम ।

छेष्ट (जड़ुठ-अ) सं—जैठ का महीना

छेष्टिक (-अ) स—सूर्य चन्द्र ग्रहनक्षत्र घ-
म-केतु आदि ।

छेष्टा (ज्योत्स्ना) स—कोभूती चाँदनी ।

छत्र स—ज्वर, बुखार । छत्र (-अ) वि—

बुखार नाश करनेवाला । दशदिग्ध सं—
बुखार के माथ मगहणी । दशदिग्ध वि—ज्वर
नाशक । छत्रिष्ठ (-अ) वि—ज्वरग्रस्त ।

छत्रवि—धमकदार, स्पष्ट ।

छत्र स—जलन ; प्रकाश ; अग्नि ; लपट ।

छत्र (-अ) वि—जो जल रहा है, जलना
हुआ । छत्रिष्ठ (-अ) वि—जलने योग्य,
सहज में जलने वाला ।

छत्रा (क्रि परि १)—जलना, दग्ध होना,
प्रकाशित करना, जलन मालूम होना
(कथा—) । वि—जला हुआ (—छत्र) ।

छत्रान (-नो), छत्रानो, छत्रानो (क्रि परि १०)
—आग जलाना, जलाना ; परेशान करना ।

छत्रिष्ठ (-अ) वि—जला हुआ, अग्निमय ।

छत्रुनि सं—जलन ।

छत्र स—छात्रनद योंछ आग की आँच (छत्र-
छत्र) ; लपट ।

छत्रा सं—जलन, दाह ; लपट, असन्तोष का
विषय (कि—) ।

छत्रा, छत्रा (-क्रि परि ३)—जलाना, आग
सुलगाना (छत्रान—) ।

छत्रातन पि—परेशान, दिक्, हैरान ।

छत्रान (-नो), छत्रानो कि=छत्रानो ।

छत्रानि सं—जलावन, ई धन ।

छत्राने वि=छत्राने । [हुआ ।

छत्रिष्ठ (-अ) वि—जो जलाया गया है, जला

अ

अक्षर, अक्षर सं—अक्षर भंकार, गु जन ;
लपट । अक्षर, अक्षर (-अ) वि—
भंकारयुक्त ।

अक्षर, (-अक्ष) स=अक्षर । अक्षर,
(-अक्ष) वि=अक्षर ।

अक्षरात्रि सं—अपराध ; वेवकूफी ; हैरानी ।

बकि सं—भूभट, दायित्व, जिम्मेवारी
(—नष्ट, —प्राप्त) ।

बगड़ा सं—कड़ा भगड़ा, कलह । —बाँटि सं—
लड़ाई-भगड़े । बगड़ाटे वि—भगड़ालु ।

बकाव सं=बकाव ।

बकना सं—भनभनाहट ।

बका सं—बटिका, बाटा । आँधी तूफान ।

बकावर्द्ध (-अ) सं—चक्रदार आँधी, बव डर ।

बकाटे सं—भूभट, बखेड़ा, विपत्ति ।

बटे वि—छटे, ब । भट, तुरंत । —भटे कि वि—
भटपट, जल्दी जल्दी । सं—पर हिलानेका
शब्द । [से आकर्षण ।

बटिका, बटकानि सं—भटका, एकाएक जोर

बटिका सं=बड़ ।

बाँटि कि वि—शीघ्र, तुरत ।

बाड़ सं—आँधी, तूफान । बाड़ा (भोड़ो) वि—
आँधी-सा ; आँधी का मारा या गिराया
हुआ (—आग) ।

बाड़ति-पड़ति सं—हिलाने-डुलाने से या गोदाम
में रखा रहनेसे जो अंश नष्ट होता है
(भाज्य-वाक्य) । [लकड़ी ।

बनकाँ, बकाँटे सं—चोखटके ऊपरवाली
बनबन सं—भनकार ; टीस । बनबनानि सं—
भनकनाहट, खडखड़ाहट ।

बनकाव सं—भनकाहट ।

बना सं—एकाएक भनकाहट का शब्द ।

बप वि—भट, तुरत । सं—ढाड़-खेने का शब्द ।

बपा सं—पानीमें कूदने या भारी चीजकं
गिरने का शब्द ।

बपप सं—बारिशका भमाभस शब्द, घुंघरूके
बजनेका शब्द । बपपप सं—बारिश का
भमाभस शब्द ।

बपप (-अ) सं=बपप ।

बपपप सं—जल आदि गिरनेका शब्द ।

बपपप वि—तकटक साफ, दाना अलग अलग
(—लात), स्पष्ट (—नेथी) ; हल्का ;
स्वस्थ (शरीर—इच्छा) , बरबाद (अवकाल—
इच्छा) ।

बपना सं—निबत्र सोता, भरना ।

बप्रा (कि परि १, —टपकना, धार में गिरना ।

बप्रा (—नो), बप्रा (कि परि १०)—
टपकाना, गिराना । बप्राठ (-अ) वि—
टपका हुआ, गिरा हुआ ।

बप्रा सं—जल आदि गिरनेका शब्द, फूलका
बना एक बाजा, बप्रा वि—साफ-सुथरा,
सुराखदार, जीण ।

बप्रा सं—लपट, तेज रोशनी, उद्गार (एक—
ब्रह्म) ।

बप्रा (भल्लकानो), बप्रा (कि परि
१६)—भल्लकना, तेज रोशनी छोड़ना
(विश्रुत—) । बप्रा (—तेज रोशनी,
प्रकाश । 'बप्राठ (-अ) वि—प्रकाशित,
रोशन ।

बप्रा सं—भूलने या डोलने का भाव ।
बप्रा वि—ढीला और लटकनेवाला ।

बप्रा सं—भल्लमल, उज्ज्वलता-प्रकाश ;
भूलने या डोलनेका भाव । बप्रा वि—
चमकदार ; ढीला और लटकनेवाला ।

बप्रा (भल्लसानो), बप्रा (कि परि
१६)—चौधियाना, चकाचौध करना ;
झुलसाना । वि—तिलमिलाया हुआ, झुलसा
हुआ । बप्रा (—चकाचौध, तिलमि-
लाहट ।

बाँ सं—बाँ, छट भट, शीघ्रता का भाव
प्रकाश । —कट—तुरत । बाँ, बाँ सं—
जल्दी जल्दी, कड़ी धूप का भाव (बाँ—
ब्रह्म) ।

बाँ सं—भाऊ का वृक्ष ।

श्रीक सं—चिह्नियों मल्लियों या फतिंगो का
भूँड (श्रीक सं—)। [भाषी सा।

श्रीक (भाषी) वि—भूरा (—)।

श्रीक (क्रि परि ३)—भूरा हिलना। स—
भावा, टोकरा (—)।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—
नाशानो हिलाना। श्रीकानि, श्रीकानि सं—
हिलाव।

श्रीक सं—श्रीक आंच, तेज, गर्मी, तेजी,
उग्रता (श्रीक—, श्रीक—, श्रीक—)।
श्रीकान (-अ), श्रीकानो वि—श्रीक दूख
तेज, उग्र, भांसीला।

श्रीक, श्रीक सं—श्रीक, भूक, धुँधल।
श्रीक, श्रीक (भाषी) वि—श्रीक
भांसीरदार, अनेक छेदों वाला।

श्रीक, (-त्रि) सं—भूरा, पौधों में जल देनेके
लिए अनेक छेदों वाली टोटीदार वरतन।

श्रीक सं—भाड़ू से भाड़ना, बहार।

श्रीक सं—भाड़ू, श्रीक, गन्ना नो भाड़ू,
बुहारी।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—
साफ करना, बहारना, भाड़ू मारना।

श्रीक सं—श्रीक भाड़ी, भाड़, छतसे लटकता
हुआ अनेक शाखाओवाला शीशेका
दीपाधार, मन्त्रों से भाड़-फूंक।

श्रीक सं—भाड़न, भाड़नेका कपड़ा, भाड़ना,
भाड़फूंक।

श्रीक (क्रि परि ३)—भाड़ना, गर्द छुड़ाना;
खाली करना, निकाल देना, फेंकना,
भाड़फूंक करना। वि—साफ किया हुआ
(—)। लगातार (—)। स—
हिलाव, सचालन (—)।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—
भाड़ू से साफ करना, भाड़फूंक करना, निकल-

वाना। श्रीक सं—श्रीक का भाड़नेका
काम, सफाई। [मेहतर।

श्रीक सं—श्रीक। —श्रीक सं—भाड़ूदार,

श्रीक सं—पताका, निशान, भूडा।

श्रीक वि—श्रीक घनुर, चालाक।

श्रीक सं—श्रीक कुटान, टाला (श्रीक—)।

टटर जिससे टुकान बंद करते हैं (—)।
(श्रीक)।

श्रीक, श्रीक (भाषी) सं—श्रीक घका;

श्रीक (श्रीक—, श्रीक—, श्रीक—)।

श्रीक सं—सिर का एक जेवर।

श्रीकान सं—संगीत का एकताल, भूताल।

श्रीक (भाषी) वि—श्रीक धुँधला
(श्रीक—)।

श्रीक (क्रि परि ३)—श्रीक भांपना, डाँकना।

श्रीकान सं—शीतला या मनसा देवी की पूजाका
उत्सव। [श्रीक—)।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—

श्रीक सं—भांपी, मूँज आदि की पिटारी।

श्रीक (भाषी) सं—श्रीक डपट, डाँट
(श्रीक—)।

श्रीक सं—भांवाँ, बहुत जली हुई ईंट।

श्रीक सं—भूमेला, भूभट।

श्रीक सं—धारा, शिवलिंग तुलसी वृक्ष आदिके
ऊपर जल टपकाने के लिए नीचे छेदवाला
जलपात्र। [जलपात्र।

श्रीक सं—श्रीक, गाड़ू बघना सा पीतल का

श्रीक वि—श्रीक तीता, चरपरा, कडुवा। सं—

मिर्चे का स्वाद; मिर्चे आदि मसाला,

भालदार तरकारी, क्रोध; जलन, कड़न

(—श्रीक,—श्रीकानो); धातुका पात्र जोड़ने

का टाँका।

श्रीक सं—भालर (श्रीक—, श्रीक—)।

श्रीक (क्रि परि ३)—धातुके वरतनमें टाँका

लगाना; कीचड़ निकाल कर साफ करना (भूकूँव—) ।

शालान (-नो), शालानो (क्रि परि १०)—
पान दिश खोड़ानो धातुका बरतन टाँका लगा
कर जोड़ना; पट्टाका कन्नानो कीचड़
निकाल कर साफ कराना । शालाई कन्न
क्रि—भालना ।

शालाशाला वि—शोरगुल से परेशान (कान—) ।
शि स'—नौकरानी, सेविका; कन्या । शिश्रात्री,
शिडेड़ी स'—कन्या, बेटी ।

शिक स'—चुल्हे की चोटी या नोक ।

शिकमिक स'—ठिकमिक ।

शिक, शिडे स'—तुरई, तोरी, नेनुवे की तरह
एक तरकारी परन्तु इसका छिलका कुछ सफेद
कड़ा तथा उस पर कुछ ऊँची रेखाएँ हैं ।

शिशि स'—शिष्टी ।

शिनशिन स'—किसी अग भा सुन्न हो जानेका
भाव, कपन (शाउ गा—कन्न) । शिनशिन
स'—भुनभूनी, सनसनाहट ।

शिशिक स'—छल्लि सीप, सीप के समान धातु
की छोटी कटोरी जिस से बच्चों को दुध
पिलाया जाता है । [(गा—कन्न) ।

शिश स'—ऊँघ, थकान । शिशिकि वि—सुन्न
शिमान (-नो), शिशानो शिमनो (क्रि परि ११)
—ऊँघना ।

शिश्रात्री स'—शिक कन्या, पुत्री, बेटी ।

शिशिशिव स'—धीरे धीरे बहने का भाव
(शिशिशिव शाउशा) ।

शिम स'—शिम भील । [स' = थड़थड़ि ।

शिममिम स'—शिकमिक । शिममिम (—मिमि)

शिमिक स'—भलक, हल्का प्रकाश ।

शिमिशिमि वि—चमकदार और लहरिया ।

शिमो, शिमि स'—शिशि शाला भोगुर,
पतला चमड़ा ।

शूँका, शूँका (क्रि परि ६)—नत इडा नन्न
होना, झुकना; तरफदार होना, आकृष्ट
होना । [झुकाना ।

शूँकान (-नो), शूँकानो (क्रि परि १०)—
शूँकि स'—डाव, दाविष दायित्व, जिम्मेवरी ।
शूँठा, शूँठा वि—शूँठा, उछिष्ट जूठा; मिथ्या,
भूठा, नकली, बनावटी ।

शूँठापटि, (शूँठा—) स'—झापटा-झापटि ।

शूँठि, शूँठि स'—सिरपर बंधे हुए बालों का
चूड़ा; कलगी, शिखा ।

शूँड़ि स'—टोकरी, दौरी । शूँड़ि शूँड़ि वि—
शानि शानि बहुत अधिक ।

शूना, शूना वि—भाका उ शल कड़ा और सूखा
(—नात्रिकेन) ; अनुभवी, चतुर ।

शूश स'—शश ।

शूशका, शूशका (भूमको) स'—भूमका,
कान का एक गहना; भूमके के आकार का
एक फूल ।

शूश-शूश, शूश-शूश स'—शश-शश ।

शूशशूश स'—बच्चों का एक खिलौना जिसको
हिलाने से शब्द होता है ।

शूशशूश स'—शशशश ।

शूश्रि, स'—बरगद आदि पेड़ों की शाखा से
लटकने वाली जड़ । —जाजा स'—तेल या घी
में भूने हुए वेसन के सूतके से लच्छे ।

शूल स'—कुर्ते आदि की लम्बाई; मकड़ीके
जाले के साथ मिली हुई धुँए की स्याही ।

शूलन स'—हिलना, झूलना; श्रीकृष्ण का झुला
झूलनेका उत्सव (—बाजा) ।

शूला, शूला (क्रि परि ६)—लटकना, झूलना ।

वि—लटकता हुआ ।

शूलान (-नो), शूलानो, शूलनो, शूलानो
(क्रि परि १३)—लटकाना । वि—लटका
हुआ ।

श्रीक स—चिड़ियों मछलियों या फत्तिंगो का झूंड (श्रीक श्रीक) । [भाटी सा ।

श्रीकड़ा (भाँकड़ा) वि—भयरा (—हूँ), श्रीका (क्रि परि ३)—गड़ा हिलना । स—भावा, टोकरा (—गुंठे) ।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—नाड़ानो हिलाना । श्रीकानि, श्रीकानि स—हिलाव ।

श्रीक स—श्रीक आँच, तेज, गर्मी, तेजी, उग्रता (दशाव—, वडाव—, खेवधव—) । श्रीकान (-अ), श्रीकानो वि—श्रीक गुरू तेज, उग्र, भाँसीला ।

श्रीकव, श्रीक स—दकव ; भडभर, घुँघरु । श्रीकव, श्रीकवा (भाँजरा) वि—श्रीकवा भाँभरीदार, अनेक छेदों वाला ।

श्रीकवा, (-वि) स—भकरा, पौधों में जल देनेके लिए अनेक छेदों वाली टोटीदार वरतन ।

श्रीक स—भाडू से भाड़ना, बहार ।

श्रीक स—श्रीक, श्रीक, गडाडनो भाडू, बहारी ।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—साफ करना, बहारना, भाडू मारना ।

श्रीक स—श्रीक भाड़ी, भाड़, छतसे लटकता हुआ अनेक शाखाओंवाला शीशेका दीपाधार ; मन्त्रों से भाड़-फूंक ।

श्रीक स—भाड़न, भाड़नेका कपड़ा, भाड़ना, भाड़फूंक ।

श्रीक (क्रि परि ३)—भाड़ना, गर्द छुड़ाना ; खाली करना, निकाल देना, फेकना, भाड़फूंक करना । वि—साफ किया हुआ (—गन), लगातार (—शुक्ल) । स—हिलाव, सचालन (ग—) ।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—भाडू से साफ करना, भाड़फूंक करना, निकल-

वाना । श्रीक स—श्रीक दाड भाड़नेका काम, सफाई । [मेहतर ।

श्रीक स—श्रीक । —श्रीक स—भाड़दार, श्रीक स—पताका, निशान, झंडा ।

श्रीक वि—श्रीक चतुर, चालाक ।

श्रीक स—श्रीक कुदान, उछाल (झन—झन); टट्टर जिससे दूकान बंद करते हैं (—झन,—झन) ।

श्रीक, श्रीक (भाप्टा) स—श्रीक घका, श्रीक (श्रीक—, श्रीक—, झन—) ।

श्रीक स—सिर का एक जेवर ।

श्रीकान स—स गीत का एकताल, भपताल । श्रीक (भाप्टा) वि—श्रीक धुँधला (श्रीक—) ।

श्रीक (क्रि परि ३)—छाँदा भाँपना, छाँकना ।

श्रीकान स—शीतला या मनसा देवी की पूजाका उत्सव । [श्रीक झन कूटना ।

श्रीकान (-नो), श्रीकानो (क्रि परि १०)—

श्रीक स—भाँपी, मूँज आदि की पिटारी ।

श्रीक (भाप्टा) स—श्रीक डपट, डाँट (श्रीक—) ।

श्रीक स—भाँवाँ, बहुत जली हुई ईंट ।

श्रीक स—भमेला, भभट ।

श्रीक स—धारा, शिवलि ग तुलसी वृक्ष आदिके ऊपर जल टपकाने के लिए नीचे छेदवाला जलपात्र । [जलपात्र ।

श्रीक स—श्रीक, गाड़ू बघना सा पीतल का शान वि—श्रीक तीता, चरपरा, कडुवा । स—

मिचें का स्वाद ; मिचें आदि मसाला, भालदार तरकारी, क्रोध, जलन, कूड़न (—श्रीक,—झन) ; धातुका पात्र जोड़ने का टाँका ।

श्रीक स—भालर (श्रीक—, श्रीक—) ।

श्रीक (क्रि परि ३)—धातुके वरतनमें टाँका

लगाना ; कीचड़ निकाल कर साफ करना
(भूकूत्र—) ।

शानान (-नो), शानानो (क्रि परि १०)—

गान पिश ढाड़ाना धातुका बरतन टाँका लगा
कर जोड़ना ; गढ़ाकात्र करानो कीचड़
निकाल कर साफ कराना । शानाई करा
क्रि—भालना ।

शानागाना वि—शोरगुल से परेशान (कान—) ।

शि स—नौकरानी, सेविका ; कन्या । शिश्रात्री,
शिछेड़ी स—कन्या, बेटी ।

शिक स—चुल्हे की चोटी या नोक ।

शिकमिक स—चिकमिक ।

शिका, शिछ स—तुरई, तोरी, नेनुवे की तरह
एक तरकारी परन्तु इसका छिलका कुछ सफेद
कड़ा तथा उस पर कुछ ऊँची रेखाएँ हैं ।

शिकि स—शिकी ।

शिनशिन स—किसी अंग भा सुन्न हो जानेका
भाव, कंपन (शाठ गा—करा) । शिनशिन
स—भुनभूनी, सनसनाहट ।

शिशक स—छल सीप ; सीप के समान धातु
की छोटी कटोरी जिस से बच्चों को दुध
पिलाया जाता है । [(गा—करा) ।

शिम स—ऊँघ, थकान । शिमशिम वि—सुन्न
शिमन (-नो), शिमनो शिमनो (क्रि परि ११)
—ऊँघना ।

शिश्रात्री स—शिकन्या, पुत्री, बेटी ।

शिश्रिश्रि स—घीरे घीरे बहने का भाव
(शिश्रिश्रि शाठशा) ।

शिन स—विज भील । [स—थड़थड़ि ।

शिनमिल स—चिकमिक । शिनमिल (—मिलि)
शिनिक स—भलक, हल्का प्रकाश ।

शिमिशिमि वि—चमकदार और लहरिया ।

शिमौ, शिमि स—शिकि शिकि गोका भींगुर,
पतला चमड़ा ।

शूँका, शूँका (क्रि परि ६)—नल हड्डा नन्न
होना, झुकना ; तरफदार होना, आकृष्ट
होना । [झुकाना ।

शूँकान (-नो), शूँकानो (क्रि परि १०)—
शूँकि स—डाव, दाशिश दायित्व, जिम्मेवरी ।

शूँटि, शूँटो वि—शूँटो, उच्छिष्ट जूठा ; मिथ्या,
भूठा, नकली, बनावटी ।

शूँटागटि, (शूँटो—) स—कागटो—कागटि ।

शूँटि, शूँटि स—सिरपर बंधे हुए वालों का
चूड़ा ; कलगी, शिखा ।

शूँड़ि स—टोकरी, दौरी । शूँड़ि शूँड़ि वि—
ब्राशि ब्राशि बहुत अधिक ।

शूना, शूनो वि—गाका उ शू कड़ा और सूखा
(—नात्रिकन) ; अनुभवी, चतुर ।

शूँश स—शश ।

शूँशका, शूँशको (भूमको) स—भूमका,
कान का एक गहना, भूमके के आकार का
एक फूल ।

शूँश-शूँश, शूँश-शूँश स—शश-शश ।

शूँशशुमि स—बच्चों का एक खिलौना जिसको
हिलाने से शब्द होता है ।

शूँशशुमि स—शशशश ।

शूँशि स—बरगद आदि पेड़ों की शाखा से
लटकने वाली जड़ ।—डाडा स—तेल या घी
में भूने हुए वेसन के सूतके से लच्छे ।

शूँस स—कुर्ते आदि की लम्बाई ; मकड़ीके
जाले के साथ मिली हुई धुँए की स्याही ।

शूँलन स—हिलना, झूलना, श्रीकृष्ण का झुला
झूलनेका उत्सव (—यात्रा) ।

शूँला, शूँला (क्रि परि ६)—लटकना, झूलना ।
वि—लटकता हुआ ।

शूँलान (-नो), शूँलानो, शूँलानो, शूँलानो
(क्रि परि १२)—लटकाना । वि—लटका
हुआ ।

शुनि सं—शुनि भोला ।

शुनिशुनि, (शुनि—) सं—बाखार जिद ।

शुनि सं—आग्रह, झुकाव, जिद ; शौक, खिंचाव ; पक्षपात ; असर (जमाव—), झुके रहनेका भाव । [क्रि = झुं कान ।

शुनि कि = झुं का । शुकान (-नो), शुकाना शुकान सं = झुं टि ।

शुनि सं—झोटा (तुच्छार्थ में) ।

शुनि सं—टोकरा । [छांट डालना ।

शुनि (क्रि परि ६)—फालतू डालियों को शुकान सं—झाड़ी ।

शुकान सं—तरकारी आठिका रसा (नाछेद—) । शुकाना वि—लटकता या लटका हुआ ; तरल (—छट्) । सं—भोला, धैला ।

शुकाना कि = झुं कान ।

शुकाना सं—जानन हलकोरा, झकोरा, आन्दोलन, झुलने की क्रिया, पे ग oscillation

ट

टैटैटैटै, (—टैटै) वि—कानाव शानाव अर्थ, झांझाझा लबालब । [घण्टे का शब्द ।

टै सं—बहुत खफा होने का भाव (द्रव्य—) ; टैटैटै, टैटैटै सं—धनुष की ठोरी खींचकर छोड़ देने से उत्पन्न होनेवाला शब्द, टंकार ।

टै वि—झट खट्टा । सं—झट्ट खट्टाई ।

टै (क्रि परि १)—खट्टा हो जाना ।

टै सं—टक्का शब्द (लघु अर्थ में टैक्, टैक् । बारबार टैक्टैक्, टैक्टैक्, टैक्टैक्, टैक्टैक्) ।

टैटैटै वि—चमकदार (गान—) । सं—लाल रंग (प्यार में टैटैटै) । टैटैटै, टैटैटै वि—बहुत लाल ।

टै (टोको) वि—खट्टा ।

टैटै सं—टक्कर ; टैटै टोकर, घका ; होव, मुकाविला (बाधा—, टैटै, —टैटै) ।

टैटै सं—जल के उबलने का शब्द ; धोड़े की टाप ।

टैटै सं—एक सफेद फूल ।

टै, टै, टै सं—नाट मचान, मंच ।

टै, टै सं—जैका लप्या ; मुद्रा, सिक्का ।

टैटै सं = टैटैटै ।

टैटै सं = टैटैटै ।

टै (टग) सं = टैटै ।

टैटै सं = टैटैटै । [टान ।

टै सं—लगभग २७ मन की अंग्रेजी तौल,

टै सं—होश, ध्यान, स्मरण (-नडा, ध्यान आकृष्ट होना) ।

टैटै सं—टीमने का भाव (टैटै—टैटै) ।

टैटैटै सं—टीस । टैटैटै वि—तेज, तीव्र ।

टैटै सं—टानिक, बल कारक औषध Tonic.

टैटै (टक्कानो), टैटैटै (क्रि परि १६)—डिडाना लावना ।

टै सं—गिरने का शब्द (लघु अर्थ में— टै, टै । बारबार—टैटै, टैटै, टैटै) (—टैटै टैटै टैटै । टै, टैटै या टैटै टैटै टैटै) ।

टै सं—टप्पा गाना, प्रेम-गीति ।

टै सं—जल रखने का गमला Tub

टैटै सं—जलके हिलाने का शब्द ।

टैटै सं—टमटम गाड़ी (—टैटै) ।

टैटै सं—जल के हिलने का भाव ।

टै, टै सं—नहन हिलाव ; पतन ; सरक ।

टैटै सं—टगमगाहट ।

टै (क्रि परि १)—नडा हिलना, हटना, टलना ।

टै (-नो), टैटै (क्रि परि १०)—नडाना हिलाना ; हटाना ; रद्द करना ।

टंकान (-नो), टंकानो (क्रि परि १६)—
डाडा टूटना, नष्ट होना ।

टंकटंक स—टपकने का शब्द, भीतर रस रहने
का भाव प्रकाश (पके—कच्चे) । टंकटंक
वि—पका, रसभरा ।

टंश स—भाषणादौ धीरे धीरे गमन, चहल
कदमी । —दाव स—चौकीदार ।

टंशान (-नो), टंशानो (क्रि परि १०)—
टहलना ; टहलाना ।

—टा प्रत्य—सख्या जतानेका प्रत्यय (दशटा आश,
बात्रोटा देखे) । निर्देशक प्रत्यय (जे
लोकटा, जे काण्डटा, जे काजटा) । परिमाण-
वाचक प्रत्यय (एतटा, कतटा, थानिकटा
(तुल्यार्थमें— —टा, —टे । प्यार में और
लघु अर्थमें— —टि) । [—बाइटाव] ।

टोइ स—झांपे का अक्षर, हफ (—काउठावि,
टोउनक स—टौनहाल Townhall.

टोक स—गंज (-गड़ा) । [ज्वाभ—] ।

—टोक वि—लगभग, करीब-करीब (पोश—
टोकवा (टाकरा) स—जानू ताल, मुँहके
भीतर की उपरी छत ।

टोंकशाल स—टंकशाल टकसाल ।

टोका स—टंका रुपया ; धन (—उशाला लोक,
—करा, —जमानो) । —डाणानो क्रि—
रुपया जुडाना । —उड़ान (-नो) क्रि—
फिजूल खर्च करना, रुपया उड़ान ।
—कड़ि स—रुपये-पैसे, धन, दौलत ।
—उशाला स, वि—रुपयावाला, धनवान ।

टोंका (क्रि परि ३)—प्रतीक्षा में रहना ;
टांकना ।

टोक, टोको स—टुकुआ, तकला ।

टोका स—तांगा, एक घोड़े की एक खुली
गाड़ी ।

टोशान (-नो), टोशानो, टोशानो (क्रि परि

१०)—खुलाना, ढोका, लटकाना (गणावि—,
इदि-) । वि—लटकाया हुआ (-गठन) ।

टोकि, टोडि स—भरत टांगी, कुल्हाड़ी ।

टोटे स—ताँवे की थाली ।

टोटेका वि—टटका, ताजा, नया ।

टोटीन (-नो), टोटीनो (क्रि परि १०)—टनटन
करा, आठरान टोसना (फाड़ा—, 'कोथ—,
डाह होना) । टोटीनि स—टीस ; डाह ।

टोटि स—टट्टी, भाँप (धोकाव—) ।

टोट्टे-टोट्टे स—टट्टू, एक छोटा घोड़ा ।

टोन स—आकर्षण खिंचाव, खींच ; माँग,
पीने की वस्तु का जोर से आकर्षण
(हंकार—) ; साँस का कट, दमा । (शउ—
वि—कृपण, कंजूस ; घनाभावग्रस्त) ।

टोना स—ताना (टोना ग'ढ़न—बार बार
आना जाना), किसी वस्तु को खींचने के
लिए रस्सी ।

टोना (क्रि परि ३)—आकर्षण करा खींचना ;
फैलाना ; खर्च कम करना (टोने ज्वा) ;
तरफदार होना, पीना (गद—, गीका—) ।
वि—चालित (गकठ—) ; लगातार (—ठिन
घटा) ; सीधा (—पथ) । —टोनि स—
खींचातानी ; धनका अभाव, तंगी । —इश
स—बाथन-जाला इश मक्खन निकाला
हुआ दूध । —गोथा—खिंचनेवाला पंखा ।
—इठड़ा स—वसीद ।

टोशुर टोशुर स—कोठे कोठे बूँद बूँद
(बृष्टि गड़े—) ।

टोशोश, (-टोश) क्रि वि—किसी प्रकार, जरा भी
होने से न चलेगा ऐसे (गोठ टोकाव—जनव) ।

टोव स—बोकाभाव टेंटापन, एक ओर हिलने
का भाव ; धका (—गामनानो) ; स्तूप,
ढेर (—जागानो) । —गोटीन स—टालमटोल,
अस्थिरता ।

ढेनि सँ—खपड़े की चौड़ी पटिया ।

—ढि प्रत्य—ढे देखो ।

ढिक सँ—डाक, मफा निशानी । ढिक, ढिकढेक
सँ—ढिक ढिक ऐसा शब्द ।

ढिकढिक सँ—झिपकली, गिरगिट ; (व्यंग में)
जासूस ।

ढिकनि सँ—ढिकली ; छोटी ढिकिया ।

ढिका सँ—तिलक, टीका । ढिका, ढिक सँ—
चेचक आदि रोग प्रतिपेधक टीका । —छा
क्रि—टीका पक जाना । ढिका, ढिक सँ—
तम्बाकू छलगाने की ढिकिया ।

ढिका, ढेका (क्रि धरि ५)—ढिकना, कुछ दिनों
तक काम देना ; ठहरना, रहना ; बचना ।

ढिकान (-नो), ढिकानो, ढेकानो (क्रि परि
११)—ढिकाना, कुछ दिनों तक कायम
रखना ; बचना ।

ढिकावा सँ—नकारा, एक बाजा ।

ढिकान, (-अ), ढिकानो, ढिकनो वि—नुकीला
(—नाक) ।

ढिकि सँ—ढेकन चुटैया, शिखा ।

ढिकिठे सँ—ढिकट (ढेकन—, थिक्कन—,
नोठिक्कन—) । डाक—सँ—डाक का ढिकट
(—ढाँठ, —नागानो, —नावा) ।

ढिकेकावि (टिट्कारी) सँ—ताना, व्यंग
(—ढेकन) ।

ढिकेड, ढिकेड सँ—टिट्कारी, एक छोटी चिड़िया ।

ढिन सँ—टीन ; ढिनन वाड, ढेकनखावा
कनस्तर, टीन का पात्र ; घर छाने का कलई
किया हुआ लहरिया टीन ।

ढिश सँ—ढाँठे तिलक, टीका, अंगूठे की
निशानी ; चुटकी (षड—नश) । —गहि,—
गहे सँ—अंगूठ की निशानी । [शब्द ।

ढिश ढिश सँ—दूद, टीस, हल्की बारिश का
ढिवा, ढेवा (क्रि परि ५)—उगली या हाथसे

दवाना ; इशारा करना (ढाँठ—, डाक
ढिश निशानि) । वि—दया हुआ । ढिवाढिश,
ढेवाढेवि सँ—आपस में दाव या इशारा
बाजी ।

ढिवाण (-नो), ढिवाणो, ढिवाणो ढेवाणो (क्रि
परि ११)—दवाना (षा—) ।

ढिशिढिशि क्रि वि—आहतन हो ऐसे धीरे धीरे
कदम रख कर ; हाँठ दवा कर (—ढाना) ;
हल्के शब्द के साथ (—ढि षडिढि) ।

ढिशुनि, ढेभन सँ—ढेवावा दाव उंगली या
हाथका दवाव । ढिशुनि सँ—१२ गड्डे
इशारा ।

ढिशुनी सँ—ढेवा टिप्पणी ; बातके प्रसंग में
संक्षेप से मन्तव्य-प्रकाश (—ढाँठ) ।

ढिशिमि सँ—ढिठिठिठि टिमटिमाहट । ढिशिमि
वि—टिमटिमाने वाला । [छगना, तोता ।

ढिवा, ढिवा, ढेवा सँ—ढाँठ, उद भकी सुआ,
ढिवा सँ—टीला, छोटा पहाड ।

ढेन स—दल, गेद खेलने वालों का एक
पक्ष ।

—ढे—ढे प्रत्य—ढे देखो ।

ढेकनोद वि—दहन दहन थोड़ाबहुत, जरा जरा ।

ढेकनोदिकि सँ—छोटी मोटी वस्तु या विषय ।

ढेक ढेक वि, सँ—ढेक ढेक देखो ।

ढेकवा, ढेकवा सँ—ढुकड़ा, खड ।

ढेकवि सँ—दौरी, टोकरी ।

ढेका, ढेका (क्रि परि ६)—लिख लेना, टांक
लेना ; दोष का उल्लेख करना ; यात्रा के
समय पुछताछ करना, टोकना ।

ढेक, ढेकन वि—अल्प परिमाण सूचक (ढक—,
इध—) । [डन—) ।

ढेकि, ढेकि सँ—मचान के ऊपर छोटा घर
ढेके (क्रि परि ६)—ढुटना । वि—ढूटा हुआ ।

ढुंढि स—गला, टोंटी, नरेटी ।

ट्रेनट्रेनि सं—एक छोटी चिड़िया ।

ट्रेन सं—ट्रेन देखो ।

ट्रेनि सं—टोपी, टोप ।

ट्रेन सं—बैठने की छोटी और ऊँची चौकी stool

ट्रेनि सं—जौ, पाड़ा टोली, मुहल्ला ।

ट्रेना वि—ट्रेन मशहूर संस्कृत पाठशाला
'सम्बन्धी' (-पठित) ।

ट्रेन् ट्रेन् सं, ट्रेन् ट्रेन् वि—ट्रेनट्रेन देखो ।

—ट्रे प्रत्य—ट्रे देखो (ट्रेनट्रे, एडे ट्रे) ।

ट्रेन, ट्रेन सं—एक छोटी मछली ।

ट्रेक, ट्रेक सं—ट्रेड (ट्रेक ग्रांवा) ।

—चड़ि—ट्रेड में रखने की घड़ी ।

ट्रेकशे (ट्रेकशे) वि—टिकाऊ, मजबूत ।

ट्रेका, ट्रेकाना क्रि—टिका, टिकाना देखो ।

ट्रेका वि—गजा । सं—ढेकुआ, तकला ।

ट्रेका सं—ट्रेकर, अतिवागिनी टकर, होड़ ;
ताश का इका ।

ट्रेक सं=ट्रेक ।

ट्रेका, ट्रेका सं—मछली मारने का भाँला सा
एक अस्त्र जिसके मुँह में बहुत से सिकचे
रहते हैं ।

ट्रेका (ट्रेका), ट्रेका वि—बाँका, ट्रेका टड़ा,
तिरछा, ऐंचाताना ।

ट्रेफि, ट्रेफि, ट्रेफि सं—बाँका मिथि तिरछी
माँग (-काँ) ।

ट्रेना, ट्रेना सं—कानि चिथड़ा, लत्ता ।

ट्रेना, ट्रेनाट्रेनि, ट्रेनाना क्रि—टिना, टिगान
देखो ।

ट्रेनात्रि, ट्रेनात्रि सं—मकोय, एक छोटा फल ।

ट्रेनि सं—मेज table

ट्रेना वि—ट्रेना फूला हुआ, मोटा ।

ट्रेन सं—अनुभव, बोव (—पाँव, ताड़ जाना) ।

ट्रेना वि=ट्रेना ।

ट्रेना, ट्रेना वि—ऐंचाताना ।

ट्रेनिवाक सं—ट्रेनिवाक, तार । ट्रेनिवाक सं—
ट्रेनिवाक, तार का समाचार ।

ट्रेनिफोन सं—ट्रेनिफोन, तार से बातचीत ।

ट्रेका सं—ताड़ की पत्तियों का बना छाता जो
किसान टोपी की तरह पहनते हैं ।

ट्रेका क्रि=ट्रेका । [नुसखा ।

ट्रेका सं—ट्रेका दवा, लुटकुला, गुणकार

ट्रे ट्रे सं—निरर्थक भ्रमण ।

ट्रेन सं—मछली पकड़ने के लिए वंशी में
लगा हुआ खाद्य, चारा ; लुभाने की वस्तु ।

ट्रेन सं—दुलहे की ऊँची नुकीली टोपी,
मौर ।

ट्रेनाक सं—बड़ा पका वेर ।

ट्रेन सं—ठूणाठी संस्कृत पाठशाला, ट्रेन
जब बरतन आदि में चोट से दबाव
(—वाँक चोट) ।

ट्रेना सं—जौ, पाड़ा टोला, मुहल्ला ।

ट्रेना सं=ट्रेना ।

ट्रेना (ट्रे) सं—बहुत छोटे बच्चों के रोने का
शब्द ।

ट्रेना सं=ट्रेक । ट्रेनाक सं=ट्रेनाक ।

ट्रेना सं—ट्रेक टैक्स, चूगी, महमूल ।

ट्रेना वि—फिरिगी फिर गी, गोरा ।

ट्रेना, ट्रेना सं—शहरके भीतर लैन पर चलने
वाली बिजली की गाड़ी, ट्रम ।

ट्रेन सं—ट्रेनगाड़ी रेलगाड़ी ।

ठ

ठ सं—घंटा आदिके बजने का शब्द, ठन्
(लघु अर्थ में-ठ) ।

ठक, ठक्ठक् सं—ठोंकने का शब्द (लघु अर्थ
में—ठक, ठक्ठक्) । ठक ठक सं—कांपने
का भाव प्रकाश (-कट्र काँपछे) ।

ठक सँ—थडाबद, ठग टग, लुटेरा ।

ठका (क्रि परि १)—ठग जाना, ना कामयाब होना । ठकाने वि—हरा देने वाला (जामाई—
धन) ।

ठकान (-नो), ठकानो (क्रि परि १०)—ठगना, धोखा देना, हरा देना, ठकाना । ठकाने वि—हरा देने वाला, आसानी से उत्तर देनेके अयोग्य (बरबाद—धन) ।

ठकानि, (-ना) सँ—धोखा, धाई; चुगली ।

ठकस सँ—ठाँठे ठोकर ।

ठग सँ—ठग टग, लुटेरा ।

ठन, ठनठन सँ—धातु-पात्र पर आवात पड़ने का शब्द (लघु अर्थमें—ठन, ठन ठन) ।

ठनक सँ—ठसक, नखरा ।

ठाई सँ—ठाँव; भोजन के लिए आसन (-कड़ा, -इष्टा) । क्रि वि—स्थान में (नव—) । ठाँई ठाँई क्रि वि—अलग अलग (जाई जाई—) ।

ठाँवर सँ, ठाँवरानो क्रि=ठाँवर, ठाँवरानो ।

ठाँवर सँ—देवता, देवता की मूर्ति (-गढ़ा); पूज्य व्यक्ति (भिठा—, धर—); ब्राह्मण; रसोदया । स्त्री—ठाँवरानी, ठाँवरन । —जामाई सँ—ननवाई ननदोई । —दि सँ—ननद । —नाना, (-ना) सँ—पितामह, दादा । —नामान सँ—दुर्गा आदि मूर्ति की पूजाका दालान । —प्राः सँ—देवर । —वाड़ि सँ—देवालय, मंदिर । —ना, ठाँवर सँ—पितामही, दादी ।

ठाँवरानि सँ—प्रभुत्व; दिल्ली ।

ठाँठे सँ—ठमक, जवल्थो हनाकना ठसक, नखरा; बाहरी-चाल; शान (-बखार बाधा); ठाँचा (अतिवाद—) ।

ठाँठे सँ—दिल्ली, दह्रा ।

ठाँड़ वि—थाड़ा, नशाबान खड़ा ।

ठाँडा वि—ठंटा, शीतल, शीत । सँ—ठंड ।

ठाँननि, ठाननि सँ=ठाँनना ।

ठाँन सँ—गठन घनावट, रूप (बकिद—, झ—) ।

ठाँय क्रि वि—स्थिर होकर, कुछ न करके (-रान याछ); लगातार (-ठिन दिन) ।

ठाँय सँ—इष्टिष्ट इशारा (ठाँय ठाँय);

ठाँडा (क्रि परि ३)—इशारा करना (जाय—) ।

ठाँग सँ—घन घना, गफ (-गुनन); गफ दवाव; ठानाठाँनि पास पास होने का भाव; थप्पड़ मारने का शब्द (-कद छड़ नावन) ।

ठाँगा (क्रि परि ३)—गाँदा ठूसना, भरना; दबाना (ठंले दबा); गूँ घना (बबना—) । ठानाठाँनि सँ—गाँदागाँनि पास पास होनेका भाव, थोड़े स्थान में अनेक वस्तुओं का जमाव ।

ठाँवर, ठाँवर सँ—निरीक्षण, ताक, निगाह, ध्यान (-कद देखा) ।

ठाँवरान (-नो), ठाँवरानो (क्रि परि १०)—ठाँवरानो निरीक्षण करना, ध्यान से देखना, समझना (वाका ठाँवरदेछ) ।

ठिक वि—गऊ, बखार उचित, ठीक, शुद्ध; दुस्त; योग्य; तैयार । सँ—सत्यता, दुस्तती, गणित में जोड़ (बदे—ददगा, ठिके जून) । —ठाँक वि—बिलकुल ठीक; सुसजित ।

ठिकरा, ठिकरा सँ—छाँटे जि ठीकरी ।

ठिकरान (-नो), ठिकरानो, ठिकरानो (क्रि परि १०)—ठोकर खा कर गिर पड़ना; छिटकना; चकाचौंध होना (जाय—) ।

ठिका, ठिके वि—ठीका, थोड़े समयके लिए नियुक्त (-गदर, -गाड़ि) । —नाय सँ—ठीकेदार । —नायि सँ—ठीकेदारी । —नायो वि—ठीकेदार-सम्बन्धी ।

ठिकाना सँ—पता; निश्चयता ।

ठिकूषि सँ—जन्मपत्री ।

ठूँ स—ठूँ देखो ।

ठूँत्रि स—एक प्रकारका गाना, डुमरी ।

ठूँक स—ठोंकने का हल्का शब्द ।

ठूँकवान (ठूँकरानो), ठूँकवानो, ठूँकवानो,
ठाँकवानो (क्रि परि १८)—ठाँकत्र जेष्ठ
चौच में मारना या चूगना ।

ठूँका, ठाँका (क्रि परि ६)—ठोंकना ; सिर
धुनना ; मारना । ठूँकनि स—ठोंक, प्रहार,
मार ।

ठूँकान (-नो), ठूँकानो, ठूँकानो, ठाँकानो
(क्रि परि १२)—ठोंकने का काम दूसरे से
कराना ।

ठूँजि, ठूँजि स—कागज या पत्तों का बना हुआ
छोटा-गहरा पात्र, दोना ।

ठूँजो, ठूँजो वि—इच्छीन, झूलो लुला ।

ठूँन स—ठूँन देखो ।

ठूँनका (ठूँनका), ठूँनका वि—उद्ध्व भुरभुरा,
हलके आघात से दूटनेवाला । सं—जच्चाके
स्तनका एक रोग ।

ठूँबकि स—ठुमक ।

ठूँजि स—घोड़ों या बैलों की आँखों पर डालने
का पदार्थ, अँधेरी ; म्यान ।

ठूँगा, ठाँगा (क्रि परि ६)—ठाँगा ।

ठूँक, ठूँकना (ठूँकना) स—ठूँक टोक ।

ठूँका (ठूँका), ठाँका स—अँडस, कठिनाई,
संकट, तबला या ढोल बजानेकी वह क्रिया
जिस में केवल ताल दिया जाय, ठूँका ।

ठूँका (ठूँका), ठाँका (क्रि परि १)—स्पर्श
होना, छू जाना, लगाना (गांधी गा—) ।

अँडस में पड़ना (ठूँक लथा) । वि—छूआ
हुआ । सं—स्पर्श । ठूँकाठकि स—
आपस में स्पर्श ।

ठूँकान (ठूँकानो), ठूँकाना (क्रि परि १०)—
छूलाना, लगाना ; रोकना, सम्हालना ।

ठाँकात्र (ठूँकार), ठाँकात्र स—जगाक शेखी,
घमंड । ठूँकात्र, (ठाँ-) वि—घमंडी,
शेखीबाज ।

ठाँका (ठूँगा), ठाँका स—गाँठि डंडा, सोंटा ।

ठाँकान (ठूँगानो), ठाँकाना, ठाँकाना (क्रि
परि १०)—डंडे से मारना, पीटना, ठोंकना ।

ठाँकानि, ठाँकानि स—ठोंक, मार ।

ठाँका (ठूँला), ठाँका (क्रि परि १)—सामने
की ओर जोर लगाना या धक्का देना ;
ढकेलना ; उपेक्षा करना, आज्ञा न मानना,
अवज्ञा करना । स—धक्का ; सकट ; ठेला ।

ठाँका ठाँजि स—धक्कम-धक्का ।

ठाँक स—झान टोक, सहारा ; टेकनेकी वस्तु,
ताना, निंदा ।

ठाँका (ठूँशा) (क्रि परि १)—ठाँक जेष्ठ टोकना,
उठंगना, बैठ कर पीछे सहारा लेना ।

ठाँकाठाँजि स—बड़ी भीड़, धक्कम-धक्का ।

ठाँकान (-नो), ठाँकाना (क्रि परि १०)—टेकना,
किसीके सहारे खड़ा करना ।

ठाँकान स—झान सहारा, टक (-जेष्ठ) ।

ठाँकन स—प्रहार, मार, ठोंक ।

ठाँकत्र स—चौच या अरुवादि का आघात
(—जेष्ठ, —गाँडा, —थाँडा) ; अनधिकार
मन्तव्य-प्रकाश ; अल्प चर्चा (गव विद्या
—गाँडा) । [= ठूँकवान ।

ठाँकवान (-नो), ठाँकवाना (क्रि परि १८)

ठाँका स—धक्का ।

ठाँका, ठाँकान (-नो), ठाँकाना (क्रि परि
१०)—ठूँकान । [मारपीट ।

ठाँकाठकि स—आपस में धक्का, टक्कर ;

ठाँका, ठाँका स—कागज या पत्तों का बना
हुआ गहरा पात्र, दोना ।

ठाँठ स—ठूँठ होठ । —काँठि वि—मुंहफट,
स्पष्ट-वक्ता । —कूँकाना क्रि—होठ फुलाना ।

ढांगना स—डंगली से गाल पर आघात
(—गात्र)।

ढांगना क्रि—ढूँगा ठूँसना, भरना।

ढांग स—गाँव, टांग।

ढाका स=ठंका। ढाकात्र स—ठंकात्र।

ढाया स=ठंया। ढांगना स=ठंना।

ड

डग, डगा स—सिरा, अग्रभाग, नोक।

डगडग वि=टंकटंक (—वा)।

डगगग वि—विजोत्र तल्लीन (डाव—)।

डडा स—डंका, दिंदोरा।

डडन स—दर्जन, डजन, १२ अडद।

डन स—डंड, एक व्यायाम।

डवडव स—आंसू का भाव (काथ—रुद्र)।

डवडव वि—सजल, आंसू-भरा, डवडवाता
हुआ (—काथ)।

डवन वि—विशुण डवल, दुगुना। —डागात्र स—
—छापे का एक चिह्न जो पादटीका के लिए
इस्तेमाल होता है।

डवर स—डूंगडूंग डुग्गी, डमरु।

डडा, डडान (—नो), डडानो (क्रि परि १०)—भय
खाना, डरना।

डपा (क्रि परि १)—मर्दन कर, मना, ठेपा मलना
दवाना; ठागा गूधना। डपन स—मर्दन,
दवाव।

डपान (—नो), डपानो (क्रि परि १०)—ठेपान
मर्दन कराना, मलवाना, दवचना।

डड्र वि—गडोत्र गहरा। स—गड गडा।

डाइनी, डाइन, डान स—डाकिनी डायन,
डोनही।

डाइन स—डान दाल।

डाडकि स=डकिडाडा।

डाक स—डाक; शब्द, पुकार, यश; नीलाम
की धोली। —शब्दत्रा स—डाक ले
जानेवाला नौकर, डाकिया। —वाला स—
डाक बंगला। —गाइटे वि—प्रसिद्ध, नामवर।
डाका (क्रि परि ३)—आवाज करना (शब्द डाला,
नाद—); पुकारना; बुलाना (गाड़ि—, नाम
शब्द—, शब्दशब्द—); नीलाम की धोली
धोना; गरजना (दाव—, दान—)।

डाकाडाकि स—घारवार पुकार या बुलाहट।

डाकाड, डाकाइड स—दडा डाकू, लुटेरा
(डाकाउत्र दन, वाड़िड—पडा)। डाकाडि स—
—दशवृद्धि डकैती। डाकाडी वि—डाका-
सम्बन्धी (—मागना)।

डाकान (—नो), डाकानो (क्रि परि १०)—डाकिना
मानाने बुलवाना, बुला भोजना।

डाकिनो स=डाइनी।

डाकात्र स—डाक्टर doctor.

डागत्र वि—बड़ बड़ा (—काथ, गेद्रे—शब्द)।

डादग, डाडग स—बड़ग अ कुदा।

डादा, डाडा स—इन स्थल (डने कुनित्र डादात्र
बाघ, दोनों ओर विपत्ति)।

डांठा स—पतली डाली या उसके समान वस्तु
(डूमडाद—, गजनत्र—)।

डांठि स—मूँठ, दस्ता।

डांठो वि—कड़ा, कच्चा (—कन)।

डांठा स—दध, गोटो नांठि डंडा, सोंटा।

डान वि—दाहिना। स—दाहिनी दिशा;
डायन। —गिटे वि—बसगाशनी, गोंगात्र
खतरनाक काम में साहस करनेवाला
(—छेल)।

डाना स—गाथा पर, पख।

डाव स—कच्चा नारियल।

डावत्र स—बड़ा कटोरा (गानेत्र—)।

डामाडोन स—गुगुगान शोरगुल।

डांगमन सँ—होरा-सी नकाशी (—कांठे वाना) ।
डांग सँ—दाल, डाली, दहनी । —गामा सँ—
डालियाँ ।

डांगकूडा सँ—एक शिकारी कुत्ता । [सालन ।
डांगना (डालना) सँ—मसालेदार तरकारी,
डाला सँ—थाली-सी डलिया, दक्कन
(वाक्कन—) । डालि सँ—छोटी डलिया ; भेंट,
उपहार (—गांठाणा) ; आधार (कपेन—) ।

डालिग सँ—दाढ़ि दालिम, दाढ़िम, अनार ।

डांग सँ—बडा मच्छर ।

डांग वि—आधपाका अधपका (—फल) ।

डाहा वि—भूरा पूरा, निरा ; ज्यों का त्यों,
एकदम (—गिथा) । [दिशा ।

डाहिन, डान वि—दाहिना । सँ—दाहिनी

डाहक सँ—जलमें चलने वाली एक चिड़िया ।

डिजी, डिजि सँ—अदालतका हुकम, डिगरी ।
—दात्र सँ—जिसको डिगरी मिली है ।

डिगडिगे वि—छिपछिपे दुबला-पतला, शीर्ण ।

डिगवाजि (डिगवाजि) सँ—सिरके बल उलट
जानेका खेल, कलावाजी (—थांउवा) ।

डिजा, डिडा स—मोटे पेड़का तना खोद कर
बनायी हुई नाव । डिजि, डिडि सँ—छोटी
नाव । [१०)—लांघना, डांकना ।

डिजान (—नो), डिजानो, डिजनो (क्रि परि

डिवा, (—व) सँ—कोठा डिबिया ; डिबरी ।

डिम सँ—डिभ, आधा अडा (—गाड़ा ; डिमे
ता देउवा, अंटे सेना) ; पैरकी पिंडली ।

डिभ (—अ) सँ—डिम अडा ।

डिम स—वेकावि रकाबी ।

डिमगिन सँ—खारिज, डिसमिस, बरखास्त ।

डिमेश्वर सँ—दिसबर मास ।

डूकरान (डूकरानो), डूकराने, डूकरानो
(क्रि परि १८)—कौआइना कौआ फुफकारके
साथ रोना ।

डूगडूग (डूगडूग) सँ—डूगगीका शब्द ;
कबड्डी ।

डूगडूगि (डूगडूगि) सँ—डूमरु ।

डूगि सँ—डूगगी, तबलेका बायाँ ।

डूब सँ—डूब । —गात्रा क्रि—गोता लगाना ;
छिप जाना ।

डूबल (—अ) वि—निमज्जित, डूबा हुआ ।

डूवा, डोवा (क्रि परि ६)—डूबना ।

डूवान (—नो), डूवानो, डूबनो, डोवानो (क्रि
परि १३)—डूवाना, झावित करना ; बरवाद
करना ।

डूवात्री, डूवत्री सँ—डूबकी लगा कर नीचेसे
चीज निकालनेवाला, गोताखोर ।

डूबि सँ—डूबकी, डूबना (नोका—नाव का
डूबना) । [(नोका—, शृंग—) ।

डूबडूब वि—बग़थाव डूबना ही चाहता है ऐसा
डूगा, डूगो सँ—खंड, टुकड़ा ।

डूब्र सँ—गूलर ।

डूबि सँ—महीन रस्सी, डोरी ; सूत ।

डूबे वि—डोवाकाठा धारीदार (—शाड़ी) ।

डूनि सँ—डोली ।

डेक सँ—देगची । डेकठि सँ—छोटी देगची ।

डेकरा (डैकरा), डाकरा वि—दुष्ट, पाजी,
अशिष्ट । [दर्द होता है ।

डेझू सँ—एक बुखार जिससे शरीरमें बहुत

डेझ, डेझा वि—देड़ देड़ ।

डेझूठि सँ—डिण्ठी, नायब ।

डेङ्गो वि—ढोठ, बकवादी (—छोकरा) ।

डेगि सँ—दरखास्ती कागज ।

डेग, (—वो) स—काला चिऊँटा ।

डेरा सँ—वागा डेरा, अड्डा । —डांठा स—
डेरा और असबाब (—गाड़ा, —ठाणा) ।

डेला (डैला), डाला स—दवा टुकड़ा, डला,
ढेला, डेली ।

डेनि शान्देवा स—दैनिक यात्री ; जो रेलगाड़ी
बड़े शहरके आसपासके गांवोंसे दैनिक
यात्रियोंको ढोती है ।

डोकरा (डोक़रा , वि—इच्छा) बदनसीब ।

डोकरा (डोक़रा) वि—अपराधी फिजूलखर्च ।

डोडा, डोडा स—छिड़ा छोटी सँकरी नाव,
नावसे जल सँचनेका पात्र ।

डोवा स—छोटे भूखण्ड पोखरी, गढ़ी ।

डोवा, डोवाना क्रि=छुद ।

डोव स—डोरा, घागा ।

डोवा स—दरवाज़ा घागी (-काँठे) ।

डोन स—डोल, कुण्डसे जल खींचने या
अनाज रखनेका बरतन । [बनावट ।

डोङ (डंडल), डोङ स—गड़न डोल, रूप,
डाक़रा वि=डोकरा ।

डोङाद स—छापेका + यह चिह्न जो पादटीकाके
लिए इस्तेमाल होता है ।

डोवडार स—आँखें फाड़नेका भाव ।

डोव स—बड़िछि—यह चिह्न ।

डोन स—नद्रन्मा नाली, मोरी ।

उ

उ स—घटेका शब्द ; दब, ढंग, कपट ;
बनावट ; चाल ; नखरा ।

उङ्, उङ्ङ स—खाली घड़ा पत्थर आदि
हिलाने या जल उँडेलने या निगलनेका शब्द
(प्यारमें—डूङ्, डूङ्ङ, डूङ्ङ, डूङ्ङ । अचानक—
उङ्गा) ।

उङा स=उङ ।

उङ स=उ ।

उङउ स—खाली घड़े आदि में आघातका
शब्द । उङउ.वि—खाली ।

उङ स—गड़न बनावट, कीर्तन ; पोली नरम

वस्तुमें आघातका शब्द (उङउङ दवा)
(तुच्छार्थमें—उङउङ) ।

उङ स—उङू डाङगा टाल, उतार ; पहाड़से
अधिक जलका पतन ।

उङउ स—जलके हिलनेका शब्द ; लावण्य
रस आदिका लक्षण प्रकाश । उङउ वि—
तरल, उलकनेवाला, टीला ; लावण्ययुक्त
(-भूय) । [तरफदार होना ।

उङा (क्रि परि १)—इच्छा भङ्ग खड़ेसे गिरना ;

उङान (-नो), उङाना (क्रि परि १०)—इच्छा
खड़ेसे गिराना ; देवदेवादि दवा व्याभिचार
आदि कुकर्म करना । उङान, उङानि स—
देवदेवादि व्याभिचार आदि कलकका काम ।
उङान वि—व्याभिचार आदि कुकर्म करने-
वाला । स्त्री—उङानी ।

उङ स—छड़ा बड़ा डोल ।—उङा क्रि—सर्वत्र
प्रचारित करना ।

उङना (डाक़ना), उङनि, उङन स—टक़न ।

उङा (क्रि परि ३)—टांकना, छिपाना (गा—
अपनेको छिपाना) । उङ उङ उङ उङ स—
गुप्त बात जाहिर करनेकी तीव्र इच्छा ।

उङाई वि—ढाका शहर या जिलेका घना ;
ढाका सस्यन्वी ।

उङी स—बड़ा डोल बजानेवाला ।

उङा (क्रि परि ३)—उँडेलना । उङा, उङाउ
वि—फैला हुआ । उङानि स—बारबार
उँडेलना या ढालना ।

उङाई स—साँचेमें ढालनेका काम । वि—
साँचेमें ढाला हुआ (-रङाई) ।—शाना
स—टलाईका कारखाना । [(-शाला) ।

उङू, उङ वि—गड़ाने, खनन ढाल ढालना
छिटि वि—झूठ डीठ, बेहया ; छका हुआ ।

छिटि स—कलककी बातका प्रचारित होना ।

छिटिदाव (-दाव) स—कलकका सर्वत्र प्रचार ।

टिप स—प्रणाममें जमीनमें सिर लगानेका शब्द (-कर अर्थात्) । टिपटिप स—घड़कनेका शब्द (बूक—कड़ा) ।

टिपि, टिपि स—छूँ, डूँ, टीला (डूँ—, माटि—) । [मन्द ।

टिपा, टिपा, टिपे वि—मन्थर, धीमा, मृदु, टिप स—ढेला, चक्का (-छाँड़ा) ।

टिपा, टिपे, टिप वि—मिथिल, आलगा ढीला ; सुस्त, आलसी । टिपावि, टिपेवि स—मिथिलता ढीलापन, सुस्ती ; लापरवाही ।

टू, टू स—माथा वा शिर दिशा श्रुंता सिर या सींगसे धक्का (-थावा, -लेशवा) ।

टूका, टूका (कि परि ६)—टुकना, घुसना ।

टूकान (-नो), टूकानो, टूकनो, टूकानो (कि परि १३)—घुसाना । वि—घुसा हुआ ।

टूँड़ा, टूँड़ा (कि परि ६)—थोड़ा खोजना, टूँटना । [बेलाव—] ।

टूँ स—कड़िकात्रि कुछ भी नहीं (काखेव टूँ, टूँनि स—ऊँघ, झपकी । टूँटूँ, टूँटूँ वि—ऊँघ या नशेका लक्षणयुक्त (-चाँधि) ।

टूला, टूला (कि परि ६)—ऊँघसे सिर हिलना ।

टूलान (-नो), टूलानो, टूलनो, टूलानो (कि परि १३)—डुलाना, हिलाना (ठामर—) ।

टूलौ स—ढोल बजानेवाला ।

टूँडे स—उरझ, उरि लहर । —थलान वि—लहरिया, लहरदार ।

टूँकि स—ढेंकी ; (व्यगमें) गुण-रहित (वृद्धि-) । -शाल, (-शाला) स—ढेंकीका घर ।

टूँकर, टूँकर स—डकार, हिक्का । [(-लोक)] ।

टूँका (डंगा), टूँका, टूँका वि—ऊँचा, लम्बा टूँटूँ, टूँड़ा स—ढिँढोरा । —पेटा कि—ढिँढोरा पीटकर घोषणा करना ।

टूँजे, टूँजे वि—ढीठ, वेह्या ।

टूँज (डेंडश), (टूँज—) स—भिंडी, रामतरोई । [फूला हुआ ।

टूँगा (डेंपशा), (टूँगा—) वि—मोटा, टूँज वि—बहुत-सा, अनेक ।

टूँगा (डैरा), टूँगा स—x यह चिह्न, लिखित वस्तु काटनेकी तिरछी रेखा । —गहि स—अल्प-पढ़े-लिखे आदमीके लकीर खींचकर दस्तखत ।

टूँगा (डैला) स—छिन ढेला, चक्का ।

टूँक, टूँक स—घूँट ।

टूँका, टूँकानो कि=टूँका, टूँकान ।

टूँड़ा स—विष-रहित एक प्रकारका साँप ।

टूँड़ा कि=टूँड़ा । [डुलवाई ।

टूँगा (कि परि २०)—ढोना । टूँगाई स—

टूँगान (-नो), टूँगानो (कि परि १४)—डुलाना, ढोनेका काम कराना ।

टूँग, टूँग स—ढोल । वि—ढोलकी तरह फूला हुआ । टूँग-भाइर स—ढोल बजाकर घोषणा ।

टूँगा, टूँगानो कि=टूँगा, टूँगान ।

टूँगाई स=टूँगाई । [पोला ।

टूँगा, टूँगा (डोशका) वि—मोटा और

टूँगा टूँगा, टूँगा, टूँगा, टूँगा, टूँगा, टूँगा, टूँगा, टूँगा=टूँगा आदि ।

त

त अव्य—त तो, तब । [कड़ाही, तवा ।

तई स—तई, थालीके आकारकी छिछली

तक कि वि—परीक्ष तक ।

तकतक स—स्वच्छताका लक्षण प्रकाश (गच्छे—करछे) । तकतक वि—स्वच्छ, साफ ।

तकगा स—तमगा, चपरास ।

उत्पत्तिक स'—तकलीफ, कष्ट ।

उत्त (-अ) स'—तहत, सिंहासन । —उत्तेज
स'—तहत ताकस । [जोदि बड़ी चौकी ।

उत्ता स'—तहता, पहला । —प्राप्त स'—रफ

उत्त (-अ) स'—प्राप्त मट्टा, छात्र ।

उत्तक (तत्त्वक) स'—छूटा घड़ई ; एक साँप ।

उत्तक स'—बड़का काम ।

उत्तन क्रि वि—तब उस समय ; उस हालतमें,
तो ; उसके बाद । उत्तनये, उत्तन क्रि वि—
तभी, उसी समय, तुरत ।

उत्तव स'—उत्तव ।

उत्तव, उत्तव वि—तहस-नहस, अस्त-व्यस्त ।

उत्तव स'—उत्तव ।

उत्तनित (-अ) वि—उससे उत्पादित ।

उत्तन (-अ) क्रि वि—उस कारण, उसके लिए ।

उत्तन (-अ) वि—उससे उत्पन्न । [घोखा ।

उत्तक वि—उत्तक घोखेवाज । उत्तक स'—

उत्त स'—उत्त नदीका किनारा ; स्थान
(कटि—) । —उत्त (-अ) वि—तीरमें स्थित ;

उदासीन, पक्षपात-रहित ; घबड़ाया हुआ,
व्याकुल, शक्ति ।

उत्तनौ स'—नदी, दरिया ।

उत्तक स'—बच्चोंका एक रोग जिसमें हाथ-
पंर पेठते हैं, चिहुकवाई ।

उत्तान (-नो), उत्ताना (क्रि परि १६)—

वाकान उद्धटना, उत्साह क्रोध आदिके कारण
वेचैन होना ।

उत्तक स'—वेचैनी छटपटी जल्दवाजी आदिका
लक्षण प्रकाश । उत्तक वि—चंचल,
जल्दवाज ।

उत्तक स'—उद्धलनेका वेग प्रकाश ।

उत्तक स'—निषि लंवा तालाब ।

उत्तक क्रि वि—तुरत, भट, तत्काल ।

उत्त स'—विश्व विजली ।

उत्त (तंहुल) स'—उत्त चावल ।

उत्त स'—वह (—दात, वह समय) ; उस
(—दात, उस समय ; उत्त + यदधि=उत्तदधि,
उत्त समयसे) । —दात, उत्तदात,
उत्तानोन वि—उत्त समयका । —उत्त स'—वह

समय । —उत्त क्रि वि—तभी, उसी समय,
तुरत, भट । —उत्त वि—वेष्टित, कुर्तीला ।

—उत्त क्रि वि—उत्तके बाद । —उत्त
वि—उत्त सम्बन्धका । —उत्त (-अ),

—उत्त (-अ) वि—उत्तके समान ।

उत्त (-अ) वि—उत्तना (—उत्ताने ना,—
दात दगिश्वा शादिव ?) ; वैसा (—उत्तान
नर) । —उत्त क्रि वि—तब तक ।

उत्तानि वि—उत्तसे अधिक । [वैसा ।

उत्त तत्तुल्य (-अ) वि—उत्तके समान,

उत्त (तत्त-अ) स'—किसी वस्तुका यथार्थ

ज्ञान, तत्त्व, विज्ञान ; स्वरूप ; समाचार,
खबर (—उत्त) ; भेंट (भेंट—
शीतकालमें दामादको भेजे जानेवाले जहावर

आदि । —उत्त, —उत्ताना —दामादको
भेंट भेजना) । —उत्त क्रि वि—यथार्थ

रूपसे । —उत्त स'—भेंट भेजना और
खबर लेना । —उत्त स'—तत्त्वज्ञानी ।

—उत्त स'—दर्शनशास्त्र । —उत्त स'—

तत्त्वज्ञानी ।

उत्तदान स'—परिचालन, देखरेख ।

उत्तदान स'—देखरेख करनेवाला ।

उत्तदान स'—तत्त्व निर्णय करनेवाला ।

उत्तदान स'—तत्त्वका निर्णय ।

उत्त (-अ) क्रि वि—उत्ताने, उत्तान वहां ।

उत्त (-अ) वि—उत्तान वहां का ।

उत्त, उत्तान क्रि वि—तथापि, तोभी ।

उत्त स'—वह स्थान (उत्तान वहांका) । वि—

वैसा (यथा यथा—यथा) । —उत्त (-अ)

वि—उस नामसे प्रचलित या कथित परंतु उसकी योग्यताके विषयमें सदेह है।
 —गुण (-अ) सं—बृहस्पति गौतम बुद्ध।
 —उ, —भि क्रि वि—उद्व, तांश श्शेलेउ तिस पर भी, तथापि। —विध (-अ) वि—उस प्रकारका। —उत्त (-अ) वि—उस अवस्था में परिणत। तथाय क्रि वि—अथाने वहाँ।
 तथाश्च अव्य—तांशे श्शेक वसा ही हो।
 त्थेव, त्थेवच (-अ) वि—वसा ही, कुछ भी नहीं। [रहस्य।
 तथा (-अ) सं—असली हालत, सचाई, तत्त्व, ज्ञ सर्व—तांश वह। तदनश्च क्रि वि—तांशत्र पत्र उसके बाद। तद्वशाच्च वि—तदनु रूप, उसी तरह का। तद्वशाच्च क्रि वि—तदनुसार।
 तद्वच (-अ) सं—तहकीकात, जाँच, खोज।
 तद्वच (-अ) वि—उससे भिन्न, दूसरा।
 तद्वधि क्रि वि—उस समयसे, उस समय तक। तद्वच (-अ) वि—उस अवस्थामें परिणत, उस ढंग से स्थित। तद्वच सं—उसका अभाव। तद्वचि (-अ) वि—उससे अभिन्न। तद्वच (-अ), तद्वच क्रि वि—तद्वच, उस उद्देश्य से। तद्वच सं—उसके साथ मनकी एकता। तद्वच (-अ) वि—तांशत्र उसका। तद्वचि क्रि वि—उसके ऊपर।
 तद्वचि क्रि वि—उस प्रसंगमें। तद्वच वि—उसके साथ एक (-चिह्न)। तद्वच (-अ) वि—उसमें लवलीन, एकाग्र (-चिह्न)। तद्वच क्रि वि—उसी क्षण, तुरत। तद्वच (तद्वच) वि—उसके समान। तद्वच (तद्वच -अ) वि—उस प्रकारका। तद्वच सं—उसका भाव या धर्म। तद्वच (-अ) क्रि वि—उसके सिवाय। वि—उससे भिन्न। तद्वच वि—समान, उस प्रकारका।
 तद्वच सं—पैरवी (मकदमात्र—कत्र), उपाय।

तद्वचोः क्रि वि—उत्थन तव, उस समय। तद्वचो नौछन वि—उत्थनान, उत्थनका उस समयका।
 तद्वचि क्रि वि—उत्थन श्शेले उस समयसे।
 तद्वच सं—अश्चकान जाँच, तहकीकात; निरीक्षण, देखरेख।
 तद्वच (तन्वा) सं—तदन तनखाह।
 तद्वच सं—कृशता सूक्ष्मता।
 तद्वच —शरीर देह। वि—कृश दुबला, थोड़ा।
 तद्वच सं—तद्वच पुत्र, वेटा।
 तद्वच सं—श्व सूत, डोरी; ताँत रेशा। —वाच सं—कपड बुननेवाला, जुलाहा।
 तद्वच (-अ) सं—शास्त्र, तंत्रशास्त्र; राज्य-शासन-पद्धति (गाथात्रय, अत्रा-)। वि—अधीन (पत्र, श-)। —वाच सं—पूजा आदि कार्यमें जो पुस्तक देख कर मंत्र पढ़ाता है।
 तद्वच सं—वीणा आदि बाजेका तार।
 तद्वच सं—बड़ा जुल्हा, भाड़।
 तद्वच सं—निष्ठावश ऊँचाई। तद्वच वि—तद्वचि ऊधनेवाला।
 तद्वच (-अ) वि—शूद्धाशूद्ध, भातिभाति, सूक्ष्म, ज्ञानवीनका (-कविता शैली)।
 तद्वचि, तद्वचि (-अ) क्रि वि—तद्वच।
 तद्वच (तन्मनश्च-अ), तद्वच (तन्मना) वि—जिसका मन उसके ऊपर लगा है, तल्लीन।
 तद्वच (तन्मय) वि—लवलीन।
 तद्वच (तन्मात्र-अ) वि—तांश मात्र केवलमात्र, वही सिर्फ, उतना ही। तद्वच सं—(सांख्यदर्शनमें) शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पंचभूतके य सूक्ष्म रूप।
 तद्वचो, तद्वचो (तन्नी) वि—कृशशी दुबली-पतली (स्त्री)।
 तद्वच सं—तपस्या; योग, व्रत। तद्वच, (-कृषी, -कृषी) सं—तपकी साधना। तद्वचो

(तपशी) स—तपस्या करनेवाला, योगी, व्रती। स्त्री—तपश्विनी।

उपन स—सूर्य। [मछली।

उपन, उपनि (तपशी) स—एक छोटी

उष्ट्र (-अ) वि—गरम, तपा हुआ, शोकार्त।

—काश्न स—आगसे शोधा हुआ सोना।

उपनि स—तफसील, विवरण; फिहरिस्त।

उपान, उपान स—दूरका स्थान, अंतर; भेद।

वि—दूरका, फासले परका, अलग।

उव (-अ) सर्व—तुम्हारा, तेरा, आपका।

उव स—तबक, पतला चरक (जानाव-)।

उवि स—तवीअत, मिजाज।

उवु कि वि—उशाभि तोमी।

उव कि वि—उशा उहेऐ ऐसा होनेपर तोमी; उस हालतमें, उस कारण; उसके बाद, परंतु। [हुआ दस्तावेज।

उपश्रु स—उत रुपया कर्ज लेते समय लिखा

उपश्रिनी (तमग्निनी) वि—अंधेरी (-शक्ति)।

उपश्रि (-अ) स—अ धकार, अंधेरा।

उपश्रि (-अ , उपश्रि (-अ), उपश्रि,

उपश्रि वि—अंधकार या अज्ञानका नाशक।

स—सूर्य, अग्नि।

उश्रि स—तंबीह, घमकी।

उश्रि स—तानश्रु तम्बूरा।

उश्रिना स—तहखाना।

उश्रि स्त्री—नाचनेवाली।

उश्रि वि—उश्रि।

-उश्रि (-अ) वि—तरह, प्रकारका (कर्म-)।

उश्रि स—श्रु विलम्ब, देर (-गृहे न)।

उश्रि स—श्रु तरकारी, भाजी।

उश्रि (-अ) स—तरंग, लहर। —उश्रि स—

उश्रि लहर उठना। उश्रि (-अ)

वि—लहरवाला, लहरदार। उश्रि स—नदी।

उश्रि (-अ) वि—लहरवाला।

उश्रि स—तरजुमा, अनुवाद। [का गाना।

उश्रि (तर्ज) स—दो दिलोंमें प्रतियोगिता

उश्रि स—नदीके उस पार गमन। उश्रि,

(-वि) स—नाव, नौका।

उश्रि (-अ) वि—गुनाधिक कमोवेश।

उश्रि स—जलप्रवाहका वेग प्रकाश।

उश्रि स—तरतीव, सिलसिला।

उश्रि स—तरफ, ओर, पक्ष (शानाव उश्रि);

जमींदारीका हिस्सा (दड़—, छोटे—)।

—श्रि स—पक्षका आदमी; पक्षपाती;

एक उपाधि। —श्रि स—तरफदारी,

पक्षपात। उश्रि वि—पक्ष सम्बन्धी (एक—)।

उश्रि (-वा) स—तलवार, कृपाण।

उश्रि वि—हर प्रकारका।

उश्रि (-वृ) स—तरवृज।

उश्रि वि—उश्रि जलकी तरह, तरल; चंचल

(-शक्ति)। उश्रि (-अ) वि—दशजित,

दशौच जो तरल हुआ है। उश्रि (-अ)

वि—जिते तरल किया गया है।

उश्रि कि वि—तरसों। [जाना।

उश्रि (कि परि १)—श्रि श्रि पार होना या

उश्रि (-नो), उश्रि (कि परि १०)—पार

करना, उबारना।

उश्रि स—तराई, पहाड़के नीचेका मैदान।

उश्रि स—नृत्न लट्ठ।

उश्रि स—दोड़िया तराजू।

उश्रि स—श्रि श्रि, शंका। [हुआ।

उश्रि (-अ) वि—पार किया हुआ; उबारा

उश्रि स—श्रि श्रि शिष्टाचार, शिक्षा।

उश्रि, उश्रि स—उश्रि नाव, नौका।

उश्रि स—श्रि पेड़, वृक्ष।

उश्रि वि—नया, युवा, जवान। स्त्री—उश्रि।

—उश्रि स—नया बुहार। उश्रि स—

तरुणता; यौवन।

तत्र कि वि—अन्य निमित्त, लिए, वास्ते ।

तर्क (-अ) सं—बहस, दलील, हेतु, सदेह ।

—ज्ञान सं—तरह तरहकी बहसे । —विर्ता

सं—वाद-विवाद । —विष्ठा, —शास्त्र सं—

न्यायशास्त्र । तर्कित सं—वाद-विवाद

भगड़ा । तर्कित कि वि—सावधानीसे,

खोजमें (-थाका) । तर्कित (-अ) वि—तर्क

या विचार किया हुआ, अनुमित । तर्क

वि—तार्किक बहुत बहस करनेवाला ।

तर्जान (-नो), तर्जाना (क्रि परि १६)—

तर्जना, डांटना ।

तल सं— तला, पेदा, पीठ, मंजिल (विडल) ।

तलतल कि वि—बूकाइया छिपकर, भीतर

ही भीतर ।

तलतल सं—कोमलता या लचीलेपनका लक्षण

प्रकाश (-करा); (प्यारमें—तूलतूल) ।

तलतल वि—नरम (-भाका आग, (प्यारमें

—तूलतूल वि—गुलगुला) ।

तलपेट सं—नाभिके नीचेका स्थान ।

तलस सं—तलब, मांग, पुकार, वेतन ।

तलवार सं—तलवार ।

तला सं—तल मजिल (तिन—, उभर—),

तला, नीचेका स्थान (गाछ—; कल—),

स्थान (कान्नी—) ।

तलाउ सं—थूकर तालाब ।

तलान (-नो), तलाना (क्रि परि १०)—जल

में नीचे गिरना या उतरना, भीतर प्रवेश

करना ; अच्छी तरह समझना (कथांता तलिये

देख) ।

तलानि सं—तलछट । [(भस्त्र—) ।

तलि सं—उभरते किनारा, निकटका स्थान

तलावार सं—तलवार ।

तल्ल सं—बिस्तरे और कपड़ेकी गठरी ।

—तल्ल सं—बिस्तरे गठरी और दूसरे

असबाब । —तात्र सं—गाढवाइक गठरी ले

जाने वाला नौकर ।

तल्ला सं—अक्षय प्रांत, स्थान (१ तल्लाटे) ।

तल्ला सं—तलाश, खोज, तहकीकात

(थाना—) ।

तलवि सं—मुसलमानोंकी जपमाला ।

तलवि सं—हवि तसवीर ।

तलस सं—पुक प्रकारका रेशम ।

तलसक, तलसक सं—गावन, चोरी (तलविन—) ।

तलस सं—तसला, छिल्ली कड़ाही ।

तलस सं—चोर । तलसतल सं—चोरी ।

तलविन, तलविन सं—गखूत टोका रोकड़, मौजूद

रुपया । —तात्र सं—खजांची, रोकड़िया ।

—तात्र सं—खजांचीका काम या पद ।

तलजिन, तलजिन सं—तहसील, वसूली, वसूल

की हुई मालगुजारी ।

ता सर्व—ताश वह । सं—कागजका ताव,

ताप, गर्मी (डिग्रे—देउरा, अडेसेना);

पाक ; गोठड़ मरोड (गोठड़े—देउरा) ।

अव्य—तो (—आगि कि कत्रिब) । ताश'ले,

ताश'ले कि वि—ताश इशेले ऐसा होने पर ।

ताशे सर्व—ताश'इ वही (वा छाउ—पावे) ।

कि वि—उस कारण । ताश'ते—कि वि—

ताश'ते उस कारण । ताश'ते कि वि—

उसी कारण तो, विस्मय सूचक शब्द (—कि

करा यात्र !) ।

ताशे सं—ताश'इ ।

ताश'स सं—तवा, ठिकरा ।

ताक सं—भौचक्कापन (—जागा), ताखा ।

ताक, ताग सं—लक्का, ठिक निशाना (वनूके—

करा); अनुमान । ताक ताक कि वि—खोज

में, प्रतीक्षामे (—थाका) ।

ताकत, ताकत सं—ताकत, शक्ति ।

ताका (क्रि परि ३)—प्रतीक्षामें रहना ।

अक्षर (-नो), अक्षराना (क्रि परि १०)—

अक्षर ताकना, देखना, नजर डालना ।

अक्षरि स—तकावी, किसानको दिया हुआ ऋण ।

अक्षरि स—गोल तकिया, मसनद ।

अक्षर स—यन्त्र बाँहका एक जेवर, तावीज ।

अक्षर स—चूना सरखी कीचड़ आदि जल के साथ मिलाने का ढुङ ।

अक्षर, अक्षरि स—तकाजा, ताकीड़ ।

अक्षर, अक्षरि (-अ) स—छूछ खान अवज्ञा ।

अक्षर स—ताज, मुकुट, ऊँची टोपी ।

अक्षर वि—गोटेका ताजा, टटका, नया ; तेज, फुर्तीला (-था) ।

अक्षर स—तअज्जुव, आश्चर्य ।

अक्षर स—चार आदमियोंसे ढोयी जानेवाली एक खुली पालकी ।

अक्षर, अक्षरि स—शानन ताड़ना, डाँट-डपट, प्रहार । अक्षर वि—ताड़ना करने वाला ।

अक्षर स—दुर्दका असर (फोड़ावर अक्षरि स) ।

अक्षर (क्रि परि ३)—पीछा करना, धावा करना । स—धमकी, डाँट, डपट ।

अक्षर स—इश शीघ्रता ; प्रयोजन (काष्ठ-), जल्दी करनेके लिए दबाव । अक्षराक्षरि स—इश शीघ्रता (कान-नहे) । क्रि वि—जल्द, झटपट, तुरत । अक्षराक्षर, (-अक्षर) स—जल्दी करनेके लिए दबाव या पीछन ।

अक्षर स—आश, बाधित गुच्छा, बडल (कागज- , नोट-) ।

अक्षर (-नो), अक्षराना (क्रि परि १०)—भगाना, निकाल देना । अक्षरि (-अ) वि—ताड़न किया हुआ, दडित ; निकाला हुआ ।

अक्षरि स—ताड़ी ।

अक्षरि वि—अक्षर गश्तीय विजली सम्बन्धी । स—दिश विजली । —दाँडी, —कशाद स—तारका समाचार ।

अक्षर (-अ) स—पिता ; पिता के समान पूज्य व्यक्ति (बुद्ध- , लो-) ; पुत्र के समान व्यक्तिके लिए स्नेह-सूचक सम्बोधन, घेडा । [आश्चर्य-] ।

अक्षर (तात्) स—यथा ताप, गर्मी (दोष- ,

अक्षर स—करवा, कपड़ा धुनेका यंत्र, ताँत ।

अक्षरि स—जुलाहा । खो—अक्षरि ।

अक्षर (क्रि परि ३)—गरम होना ।

अक्षर (-नो), अक्षराना (क्रि परि १०)—गरम करना, गर्माना । वि—गरम किया हुआ ।

अक्षर सब—अक्षर उसमें ।

अक्षरि वि—अक्षरि । [आशय ।

अक्षरि (तात्पर्य) स—अक्षर तात्पर्य, अक्षर, अर्थ स—उछल-उछल कर नाचनेका ढंग, तार्येई ।

अक्षर (तादात्त-अ) स—उसके साथ एकत्र भाव, तादात्म्य, तदात्मकता ।

अक्षर (-अ) वि—अक्षर वरुन उसके समान ।

अक्षर स—संगीतके स्वरका विस्तार, आलाप । —शूरा स—तानपूरा ।

अक्षर-ना-ना स—गानेवाला संगीत साधने का स्वर ; ताना-रीरी ; कार्यके आरम्भमें विलम्ब या हीला-हवाला ।

अक्षर वि—सूतका बना, सूत सम्बन्धी ।

अक्षर (क्रि परि ३)—अक्षर गरम होना ; तापना । [गरम करना ।

अक्षर (-नो), अक्षराना (क्रि परि १०)—

अक्षर वि—अक्षर, अक्षर गश्ती के सभी, उतना । क्रि वि—तबतक ।

ताविज सं—भांशि तावीज, जतर ।

तावू, ताशू सं—शिविद, गौवान तवू, खेमा
(—थाटोना) ।

तावे क्रि वि—आखाधीन अधीन, तावेमें ।
—दाय वि, सं—तावेदार, आज्ञाकारी
नौकर । —दावि सं—अधीनता ; नौकरी ।

तागली सं—ताशूली तमोली । [तागली ।

ताग वि—तमोगुण-युक्त, अंधेरा । स्त्री—

ताग सं—ताग ताँवा । तागाटे वि—ताँवा
सा रंग वाला ।

तागाक सं—तम्बाकू (—गाछा, —थांवा, —
टोना) । —थाव वि—बहुत अधिक तम्बाकू
पीनेवाला ।

तागादि सं—तमादी ।

तागाय वि—गमल सारा, पूरा, विलकुल ।

तागायि सं—समाप्ति (गा—) ।

तागाश सं—तमाशा, दिलगी, खेल ।

तागिन सं—गान तामील ।

ताशू सं=तावू ।

ताशूल सं—तावूल, पान । —ताश सं—
पान खानेसे हाँठों पर जो रंग होता है ।

ताशूली, ताशूलीक सं=तागली ।

ताव (-अ) सं—ताग ताँवा । —कू सं—
पूजामें व्यवहार किया जानेवाला ताँवेका
गोल पात्र । —गू (-अ), —कूक सं—ताँवे
की चद्दर । —गागन सं—ताँवेके पत्तर पर
खुदा हुआ राजाकी आज्ञा । —कू सं=
तागाक । —गिष्ठ (-अ) सं—तमलकका
प्राचीन नाम । तागाठ (-अ) वि—ताँवा
सा रंगवाला ।

ताश सर्व—ताशाठ आदात उसके ऊपर (एक
शब्द—माथाधरा) ; उसे, उसमें । [परिमाण ।

तागनाम सं—जमीनकी सीमाका विवरण,

ताव (तार) सं—धातुका तार, तारका

समाचार, तारण, उद्धार, स्वाद । वि—
ऊँचा, तीव्र (—शत्र) । [उनका, वे ।

ताव, तावा ; ताँव, ताँवा सर्व—उसका, वे ;
तावक वि—तारण करनेवाला, उद्धार-कर्ता ।
स—तारका, नक्षत्र, आँखकी पुतली ।
—कूनाग सं—ओंश्रीरामराम—यह मंत्र ।

तावका सं—तारा, नक्षत्र, आँखकी पुतली,
छापेका छ यह चिह्न, सिनेमाकी श्रेष्ठ
अभिनेत्री ।

तावठग (-अ) सं—कमीवेशी ।

तावना सं—तरलता, चंचलता ।

तावा सं—नक्षत्र, आँखकी पुतली ; छापेका छ
यह चिह्न, दुर्गाका एक नाम । —नाथ,
—गति सं—चद्र ।

ताविथ सं—तारीख ।

ताविथ सं—तारीफ, प्रशंसा ।

तावगा (-अ) सं—तरुणता, नयापन ।

तागिन सं—तारपीनका तेल ।

ताग सं—ताल, छद्द, ताड़ (—गाताव गाथा) ,
गोल पिंड (—गाकाना) , ढेर, राशि, वृद्धि
(तिनक—कू) । ताजे ताजे क्रि वि—ताल
के अनुसार (—गा केनिगा) । —काना वि—
जिसको तालका ज्ञान नहीं है, असावधानी
के कारण जो खयाल नहीं करता, लापरवाह ।
—ठाका क्रि—ताल ठोंकना । —वृष्ठ (-अ)
सं—पत्ती समेत ताड़की टहनरी, ताड़की
पत्तीका पखा । —गांग सं—कच्चे ताड़फलके
बीयेका गुद्दा । [होनेवाला ।

तागवा (-अ) वि—तालू से उच्चारित
ताग सं—कूलूग ताला, तोप आदिके छूटने
के ऊँचे शब्दसे उत्पन्न सामयिक बहरापन
(कान—गागा) ।

तागाक सं—तलाक, पत्नीत्याग । [का शब्द ।

तानि सं—गति, जोड़ दाँका ; ताली, हथेलियों

तामिका सं—तामिहिस्त, सूची ।

तानि सं—तालीन, उपदेश ।

तानू सं—जोकरा ताल ।

तानूँ, तानूँ सं—भाई या बहनके समुह ।

तानूँ सं—ताललुका, भूसम्पत्ति । —तानूँ सं—
ताललुकेदार । —तानि सं—ताललुकेदारी ।

ताग (ताश) सं—ताश (—खेना, —जो) ।

तागान (—नो), तागाना (क्रि परि १०)—
गड्डीके भीतरसे ताश खींच कर ऊपर रखना,
ताश फेंटना ।

ताश, ता सर्व—वह, उस (ता देखते उससे ।
ताशके, ताशके, ताशके, ताशके सर्व—
उसको, उसका, उनको, उनका ।

ताशाते, ताते सर्व—उसमें, उससे । क्रि
वि—उसलिए, तो, उसके बाद ।

ताते क्रि वि—उपर उसपर, उसलिए ।

तिरु (—अ, वि—तिरु कड़ुआ (नीम) ।

तिरुवि सं—छटपटी, चंचलता प्रकाश ।

तिरुवि वि—चंचल ।

तिरु (—अ), तिरु, तिरु वि=तिरु ।

तिरु (क्रि परि ५)—तिरु भोगना ।

तिरुन (—नो), तिरुना (क्रि परि ११)—
तिरुना भोगना ।

तिरुस सं—तीतर ।

तिरु सं—तिथि, मिति, प्रतिपदा आदि ।

तिरु वि, सं—तीन, ३ । तिरुते वि—तीन ।

तिरु सर्व—वे, वह (आदरार्थक एकवचन) ।

तिरुते सं—तिरुते इमली ।

तिरुते (—अ) वि, सं—तिरुते, ५३ ।

तिरु सं—हले मछली, तिमि गिल whale

तिरु (—अ) वि—निगल स्थिर ।

तिरु सं—अ प्रकार, अंधेरा ।

तिरु सं—रूपा प्यास ।

तिरु (—अ) वि वृत्त ।

तिरु, (—अ) वि, सं—तिरुसी ८३ ।

तिरु सं—ताशको तिरो ।

तिरु, (—अ) वि—तिरु-शरीर चिह्निका,
गुरुसैल (—अ) ।

तिरु, वि, सं—तिरु तीर्थ, ३० ।

तिरु वि—रुटेटा, तिरु ; जिसका शरीर
भूमिके समानांतरमें है । तिरु, तिरु सं—
पशु आदि प्राणी ।

तिरु सं—तिल, बहुत थोड़ा परिमाण
(—ताड़, तिरु, तिरु तिरु द्रव्य, तिरु
तिरु) ; शरीरमें काला दाग । —रुक्म
सं—श्राद्धके पहले सुवर्णसहित तिलका दान ।
—जि सं—तिलकी पट्टी, एक मिठाई ।

तिरु सं—तिरु तिलक, टीका (—शरीर,
—रुक्म, —जि) । —जि सं—सारे शरीर
में तिलक लगाना ।

तिरु सं—तेली ।

तिरु वि—तिल-मात्र, थोड़ा ।

तिरुन (—नो), तिरुना, तिरुना (क्रि परि १७)
—ताड़ रहना, बसना, ठहरना, सहना ।

तिरु सं—तीसी, अलसी ।

तिरु वि, सं=तिरु ।

तीरु (तीरु-अ) वि—नुकीला (—दाग),

सूत्र (—वृत्ति), उग्र, तीव्र (—शरीर, —विद्वत्)

तीरु (—अ) वि—शरीर, रुद्र तेज (—तीव्र
तीव्र, उग्र ।

तीरु सं—रुद्र, उग्र तीर, तट । तीरु (—अ)
वि—तीरमें स्थित, तटपरका ; मृत्युके समय
गंगा-तीरमें लाया हुआ ।

तीरु सं—दाग, शरीर दाग, तीर । तीरुना
सं—तीर दाग, तीर चलानेवाला ।

तीरु (—अ) वि—उत्तीर दूसरे पार गया हुआ,
उत्तीर्ण ।

तीरु सं—तीर्थ, पवित्र स्थान (—रुद्र—तीर्थ)

दर्शन करना) ; गुरु (गौरी) ; एक सरकारी शास्त्रीय उपाधि (दावा—, वेनाल—) ।

—काक स—तीर्थ के कौएकी तरह लालची ।

कू स—कुत्ते बिल्ली आदिको बुलानेका शब्द ।

कूँ सव—तू । —तोकात्रि स—तू तेरा आदि अपमान-जनक शब्द ।

कूक स—जादू टोना, वशीकरण-मंत्र । —ठाक स—जादू-टोना, तत्र-सत्र ।

कूथड़, ठोथड़ वि—चतुर, दक्ष ।

कूथ (-अ) वि—ऊँचा, उत्तम । —छा स—मैसूरकी एक नदी ।

कूछ (-अ) वि—तुच्छ, हीन, नोच । —ठाछ्छा (-अ), (—ठाछ्छिन्ना) स—अवज्ञा, अनादर, अपमान ।

कूड़ि स—अंगूठे और मध्यमा उगलीके द्वारा शब्द चुटकी । —दशत्रि क्रि—सगीतमें ताल देने जम्हाई लेनेके दोषका खंडन करने लापरवाही दिखाने आदि के लिए चुटकी बजाना ।

कूड़िश, कूड़े (क्रि परि ६)—धमका कर (कूड़े देना) ; जोरसे पूर्ण शक्तिसे ।

कूठ (-अ) स—मुख, चोंच ।

कूँत स—शहतूत ।

कूँठिश, कूँठ स—तृतिया ।

कून् स—कूँड़ि मोटा पेट, तोंद ।

कूफा स—तूफान, आंधी ।

कूवड़ान (-नो), कूवड़ाना, कूवड़ाना, कूवड़ाना (क्रि परि १८)—कोम थाँला, कोमना भीतर से हवा या रस निकल जानेसे सिकुड़ना, पिचकना । वि—सिकुड़ा या पिचका हुआ (—घटि, —गान) ।

कूवड़ि स—तुबड़ी, एक आतश बाजी (मिट्टी के घटमें से आगकी चिनगारियाँ छूटती हैं) ; मदारीकी बशी, तूँबी ।

कूगि सर्व—तुम (अकेले) । [-बगड़ा]

कूगल वि—घोबठर भयानक, घोर (-गूह, कूश, कूशि, कूशो स—जाड़े लौकी ; नाँडेश्वर थान तूबी ।

कूवग, कूवग (-अ), कूवग स—घोडा ।

कूवथून स—लोभग्र बरसा drill.

कूवक, कूवक (-अ) स—तुकिस्तान ।

कूवक गवशात्र स—घोड़-सवार ।

कूवग स—र गका ताश दे कर बाजी लेना ।

कूक, कूकी स—तुर्क, तुर्की ।

कून वि—कून्य समान, एकसा । —काना स—भारी भगड़ा ।

कूनट स—रुईसे बना कागज, अपने शरीरके वजनके समान सोना चाँदी अन्न आदिका दान ।

कूनकून वि—कूनकून ।

कूनना स—उपमा, मिलान ; सादृश्य । कूननौत्र (-अ) वि—तुलनाके योग्य । [स=कूनट ।

कून स—नौड़िगाना तराजू, तुलना । —नान

कून, कून, कून स—रुई (-धाना, -पेड़ा) ।

कूनान (-नो), कूनाना, कूनाना, कूनाना (क्रि परि १३)—उठवाना, उखड़वाना ।

कूनि, (-नो, -निका), कूनि स—वालौकी कलम । [हुआ

कूनिठ (-अ) वि—तुलना की हुई ; तौला

कूना (-अ) वि—समान, एकसा, बराबर ।

—कून वि—समान मूल्यका, बराबर वाला ।

कूव स—धानका चोकर ।

कूनि (-अ) (क्रि परि ६)—तुष्ट किया ।

कूनि स—हिम, पाला ।

कून, कूनोत्र स—तीर रखनेका चोंगा, तूण ।

कूवो, कूव (-अ) स—तुरही ।

कूर्व (-अ) क्रि वि—शीघ्र, जल्दी ।

कून स—कूना रुई ।

तुनि, तुनिका, तुनी सं = तुनि । [मौनभाव ।
 तुकी सं = मौन, चुप्पी । तुकीश्वर सं =
 तुण (-अ) सं = घास, तृण । —दान सं =
 तृणके समान तुच्छ बोध (—करा) ।
 तुवा, तुका सं = गिणाना प्याम, भोग करनेकी
 इच्छा (विवद्व —) । तुषित (-अ) वि =
 प्यासा । तुषार्ह, तुषात' (-अ) वि = प्याम
 से कृ शित, प्यासा ।
 तु वि = तीनका सक्षिप्त रूप, ति- (तुकोना,
 तुमाथा, तुमित्रा, तुलागा) । स — अधिकरण
 की विभक्ति (नौतु, शत्रुतु, ईशतु) ।
 तुंहे क्रि वि = तुंहे ; तुंहे इत उस कारण ।
 तुंश वि, सं = तेईस, २३ । तुंश सं =
 सौर मासकी तेईसवीं तारीख ।
 तुंजान (तेवड़ानो), तुंजानो (क्रि परि ३)
 — बौकिया बांझा टेढ़ा हो जाना ।
 तुंज सं = शक्ति, पराक्रम, प्रभाव, असर ;
 प्रकाश । तुंजद्व वि = शक्तिवर्धक, उत्तेजक,
 प्रकाश देनेवाला ।
 तुंजपत्त, तुंजपाता, तुंजपात सं = तेजपत्ता ।
 तुंजवत्त सं = तीसरी बार विवाह करनेवाला ।
 तुंजवत्त सं = तिजारत, व्यापार । तुंजवत्त
 सं = महाजनी, सुद पर रुपये लगानेका
 व्यापार । तुंजवत्त वि सूदी (— काबवाव) ।
 तुंजान (-अ), तुंजालो वि तुंजद्व ।
 तुंजनि स = तेजी-मठी भावका उतार-
 चढ़ाव ।
 तुंजिन (-अ) (क्रि परि १) — त्यागा ।
 तुंजो, तुंजशो वि = तेजस्वी, प्रतापी ।
 तुंजोशान वि = शक्तिमान, बली ।
 तुंजोशान वि = प्रकाश-युक्त ।
 तुंजु, तुंजु (तैवड़), (— छा), तुंज, तुंज
 वि = बौका टेढ़ा (— जशनि — तिछी नजर) ।
 तुंजि सं = फेड़ि ।

तुंज क्रि वि = ताड़ा दबिशा पीड़ा करके ।
 तुंज वि = लिखित तिम जिला ।
 तुंजानि वि, सं = तै तालीस, ४३ ।
 तुंज सं = हमली । तुंज वि = गोजर,
 कनखजूरा ।
 तुंज वि = लिख ।
 तुंज वि, सं = तै तीस, ३३ ।
 तुंज सं = जनहीन विशाल मैदान ।
 तुंज सं = तिपाई ।
 तुंज (तै -) क्रि वि = तुंज अकार उसी प्रकार ।
 वि = धेंसा । तुंज वि = ठीक उसी प्रकार
 का । क्रि वि = उसी समय । तुंज वि =
 तुंज अकार उसी प्रकारका ।
 तुंज सं = तिमहानी ।
 तुंजाना सं = तीन नदियोंका सगम ।
 तुंज स = त्याग ।
 तुंज वि = तुंज । [कढ़ी बात ।
 तुंजवि स = तेरी ऐसी-तैसी, एक गाली,
 तुंज वि = ठीक, मारनेमे उतारू ।
 तुंज सं = तेल, छमड (— इंज) । — कूटे,
 — छिटे वि = तेलसे मैला । तुंज वि = तेलहा,
 चिकना । [का एक फल ।
 तुंजा, (— कूजे) सं = परवलके आकार
 तुंजाका सं = आबलाना तिलचटा ।
 तुंजो स = तेली, तेल बेचनेवाली एक जाति ।
 स्त्री — तुंजनी ।
 तुंज स = तेलगू भाषा ।
 तुंज सं = शठ पापुत्र तुंजो हथेली, तलवा ।
 तुंज वि, सं = तिरसठ, ६३ ।
 तुंज स = तुंज प्यास ।
 तुंज स = तीसरी तारीख ।
 तुंज वि सं = तिहत्तर, ७३ ।
 तुंज स = तिहाई, तीसरा हिस्सा ।
 तुंज वि = तेहरा, तीन लड़ोंवाला ।

तैयार, तैयारि, तैयारी स—उद्योग निर्माण, गठन, बनावट। तैयारी, तैयार, तैयारी वि—बनाया हुआ (—खाया), तैयार (यावर वस्त्र—), पका (—आन)।

तैल स—तेल। —काय स—कनू कोल्हू से तेल पेरनेवाला। —किट्टे (-अ) स—थोला खली। —पाशिका स—तेनापोका। —यक्ष (-अ) स—धानि कोल्हू। —मरु स—शरीरमें तेल लेपन। तैलिक स—तेली। वि—तेल सम्बन्धी।

तै अव्य—तो, तब, उस हालतमें।

तैकशात्रि स—तुकमलगा, तिल-सा एक छोटा बीया (मिगो कर पुल्लिङ्ग देते हैं)।

तैके, तैकेर सर्व—तुम्हें, तुम लोगोंका।

तैथोड़ वि=तुथड़।

तैड़ स—तेज धार (जलधर—)। [साधन।

तैड़झोड़ स—तैयारी, असबाब, सामान,

तैड़ा स—रुपयोंकी थैली (टाकार—), गड्डी (नोट—); फूलोंका गुच्छा।

तैतना (तोतला) वि—तुतला।

तैतनान (-नो), तैतनानो (क्रि परि १०)

—तुतलाना। तैतनामि स—तुतलाहट।

तैका वि—तोहफा, उमदा।

तैवड़ा वि—टोल थाँवरा सिकुड़ा हुआ, पिचका हुआ। [=तुवड़ान।

तैवड़ान (-नो), तैवड़ानो (क्रि परि १०)

तैवा स—किसी अनुचित काय या पापके न करने या अनुताप करनेके लिए मुसलमानों की उक्ति, तोबा।

तैमरा, तैमारे सब—तुमलोग, तुम्हें।

तैय (-अ) स—जल। —द, —धर स—बादल, मेघ। —धि, —निधि स—समुद्र।

तैयाका स—परवाह, डर।

तैयास स—सेवा, खुशामद

तैयाने स—तौलिया।

तैयद (-अ) स—गट्टेरा संदूक, पेटी।

तैयस स—मिश्रण, कटक फाटक।

तैयन स—उड़न करा तौलना, उठाना।

तैयित (-अ) वि—तौला हुआ, उठाय़ा हुआ।

तैयपाड़ स—हलचल उलट-पलट आंदोलन।

तैयाना (क्रि परि ६)—उठाना; उन्नत

करना, संग्रह करना (ढाँढ—); उद्धृत

करना, हवाला देना (शाख छैते झोफ—),

जगाना, उखाड़ना, निकाल देना, खींचना

(फोफोया—); कै करना (मिथर दूध—)।

काने—, ध्यानसे छनना, छनकर काम

करना। गा—, बैठे से उठना। शाध—,

बदला लेना। शहे—, जम्हाई लेना। वि—

उठाय़ा हुआ (—खन, —खून); जिसे उठाय़ा

जा सकता है (—उठाना)। स—बाजारका

मालिक बेचने वालोंसे चीजोंका जो अश

या पैसा वसूल करता है।

तैयान (-नो), तैयानो क्रि=तुनान।

तैयपाड़ा स—तैयपाड़ हलचल, बार बार

चिंतन, मन मन—करा)।

तैयानो स—चपटी हड्डी।

तैयक स—गद्दा।

तैयवीर (-अ) वि—तुष्ट करने योग्य।

तैयामोद स—तैयामोद खुशामद।

तैयामोद वि—खुशामदी, चापलूस।

तैयि स—मालगुजारीकी फिहरिस्त।

तैय (तउल) स—उड़न वजन, तौल, तराजू।

तैयिक स—तौलनेवाला।

तैयाना (क्रि परि १), तैयान (-नो),

तैयानो, तैयानो (क्रि परि १५)—उड़न

करा तौलना।

तुलु (-अ) वि—छोड़ा हुआ, वर्जित,
फेका हुआ, पेशान, तंग, दिक।

तुलु (-अ) वि—त्यागने योग्य। —थुल
स—घरसे निकाला हुआ तथा सपत्तिसे
वंचित पुत्र।

तुलु वि—बेहया, दुष्ट।

तुलु (-अ) वि—स त्रस्त, भयभीत।

तुलु वि—तिन तीन। —तुलु सं—पिता माता
और ससुरका कुल। —तुलु स—स्वर्ग
पृथ्वी और पाताल। —तुलु वि—तुलुना
तिमंजिला। —तुलु सं—आध्यात्मिक
आधिदैविक और आधिभौतिक दुःख। —तुलु
सं—स्वर्ग। —तुलु स—तीन पत्तियों वाला,
बेलपत्ती। —तुलु सं—तीन पद युक्त कविता ;
तिपाई। —तुलु (-अ), —तुलुक सं—
त्रिपुंड। —तुलु सं—वगालके पूर्व एक
राज्य। —तुलु (-अ) स—धर्म अर्थ
काम ये तीन पुरुषार्थ। —वार्षिक वि—तीन
सालसे नियुक्त या घटित। —तुलु
वि—त्रिभग (—तुलु)। —तुलु स—
तीन प्रान्त, निकटता, समीपता (दिगौगाव
ना वादुवा)।

तुलु, तुलु वि, स—तीस, ३०।

तुलु स—विहारका तिरहुत जिला।

तुलु सं—एक दिनमें तीन तिथियोंका
मेल।

तुलु (-अ) सर्व—तुम्हारा।

तुलु सं—शीघ्रता, जल्दी।

थ

थ वि—किरकडवादिष्ट, इतलथ हक्कावक्का,
भौचक्का (—थलु)।

थई, थई सं—उन तला (अथई बन); ठाई

आश्रय (—थलु)। थईथई सं—बाढ़का
लक्षण प्रकाश (थलु—थलु)।

थकथक स—गाढ़ा होनेका लक्षण प्रकाश
(काता—कडछे)। थकथक वि—थका बंधा
हुआ (—थे)।

थका (क्रि परि १)—थकना (थक थलु)।

थकनउ (-अ) वि—हक्कावक्का, भौचक्का
(—थलु)।

थन सं—नरम भारी वस्तुके गिरनेका शब्द
(—थलु वना। लुथु अर्थमें—थन।

जोरसे थना। बार बार—थनथन, थनथन)

थनक स—रुक रुक कर चलना।

थनकान (-नो), थनकानो (क्रि परि १६)—
एकाएक रुकना। थनकानि स—एकाएक
रुक जाना।

थनथन सं—स्थिरता, स्तब्धताका लक्षण
प्रकाश (थनथन—कडछे, आकाश—कडछे)।

थनथन वि—स्थिर, निश्चल (—थन, ।

थन सं—स्तर तह (थन थन थन)।

थनथन वि—कपित। सं—कपन, थरथरी।
थनथननि सं—काथुनि थरथरी, थरथराहट,
कंपकपी।

थनथन क्रि वि—थरथर कंपकपे साथ।

थनथन वि—थलथल, मोटाईके कारण झूलता
या हिलता हुआ (—कड)। थनथन वि—
स्थूल और कोमल (—थन)।

थनथन, थनि सं—भोली, थैली। थन सं—
बड़ थनि, बड़ा थला, बोरा।

थनथन स—गिलेपन और ढीलेपनका लक्षण
प्रकाश (—कड)। थनथन वि—लचीला।

थई सं—थई।

थक सं—छत्र तह।

थका (क्रि परि ३)—थन रहना, ठहरना,
ठिकना, रुकना, अभ्यास रहना (आनि

ब्राह्म व्यासों कविता थी।)। थाकिना थाकिना,
थेके थेके कि वि—गावे गावे बीच-बीच
में, रह-रह कर।

थान स—कपडेका थान, सफेद किनारेकी
घोती। वि—गांठो, बाण साबुत (—शेठे)।
थाना स—थाना, पुलिसकी चौकी, छावनी;
पड़ाव। [तमाचा।

थाण्डा, थावड़ा, थावर स—छड़, छापड़ थप्पड़,
थावड़ान (-नो), थावड़ानो (क्रि परि १६)
—छड़ बाँध थाप्पड़ मारना। [वग।

थावड़ि स—जमीन पर चूतड़का दबाव (—थेके
थावा स—पंजा, हथेली (—बाँध)। वि—
हथेली भर (थावा थावा जात)।

थाग स—छुछ खाँभा, थुँटि बह्ला।
थाग (क्रि परि ३)—रुकना, थमना, ठहरना,
स्थिर होना, चुप रहना। [रोकना।

थागान (-नो), थागानो (क्रि परि १०)—
थार्म शिष्टा स—तापमान यंत्र Thermometer

थाल, थाल स—थाली।

थागा (क्रि परि ३)—छटेकानो गूधना,
मसलना (मरना—), ठूसना।

थिकथिक स—थूकथूक।

थितान (-नो), थितानो, थितानो (क्रि परि
११)—थिराना, तलछट जमना।

थिशेटा स—नाट्यशाला, अभिनय, नाटक।
थू, थू स—थू, थूकनेका शब्द। अव्य—छि।
थूकथूक, थिकथिक स—अनेक कीड़ोंका एक
स्थानमें समावेश (गोका—करछे)।

थूथूथू, थूथूथू स—बुढ़ापेका लक्षण प्रकाश
(—करा)। थूथूथू, थूथूथू वि—जराग्रस्त
(—बूढ़े)।

थुँडि स—भूल या अनुचित वाक्य/अथवा कार्य
के वापस लेनेका शब्द, तोवा।

थूँकार स—थूकना या उसका शब्द।

थूँतनि, थूँतनि, थूँति स—छिबूक ठोड़ी, ठुड़ी।

थूँ (—थू) स—निष्ठीवन थूक (—रुका)।

थूथूथू स—थपथप।

थूँति स—छि गुच्छी।

थूँड़ा (-ड़ा) वि—श्विर बहुत बुढ़ा, चलने
में असमर्थ। छी—थूँड़ी।

थूँड़ान (नो), थूँड़ानो, थूँड़ानो (क्रि परि
१८)—औँधे गिरना (मूथ थूँड़े पड़ा)।

थेहे, थेहे स—ताथे।

थेके कि वि—थेके से (कोथा—, मेहे—);

थेके अपेक्षा (तोथा थेके बालो)। थेके

थेके कि वि—थाकिना थाकिना।

थेंत (-अ), थेंतो वि—पिष्ट, कुष्ठित पीसा
हुआ, कूटा हुआ (मौले—करा, मूथ—करा)।

थेंतनान (थेंतलानो), थेंतलानो (क्रि
परि १६)—कोठा, छेँठा कूटना, पीसना,
मसलना; सताना, रौंदना।

थेवड़ा (थेवड़ा), थावड़ा वि—छेपटा चिपटा
(—नाक)।

थेवड़ान (थेवड़ानो), थेवड़ानो (क्रि परि
१६)—छेपटा करा दबा कर चिपटा बनाना।
वि—चिपटा।

थेल (-अ), थेलो वि—डावा बड़ा (हुका)।

थोँगा कि=थोँगा।

थोक स—गोटे कुल (—दश टोका), थोक,
इकट्ठी वस्तु; समूह, गड्डी (थोके थोके)।

थोका स—छू, थोल गुच्छा।

थोड़ा स—कैलेके पेड़के भीतरका डंडा
(इसकी तरकारी बनायी जाती है)।

थोड़ा वि—थोड़ा, अल्प, कुछ। थोड़ाये वि—
थोड़ेही, कुछभी नहीं (—केशर करि)।

थोड़ा (क्रि परि ६)—टुकड़े टुकड़े करके काटना।

थोतना स—बड़ी ठुड़ी।

पौता वि—बड़ बड़ा (—बूढ़ (पौता)।

पौता, पौता, पौता, पौता स—एक गुच्छा,
फुटना, भट्ठा।

पौता (क्रि परि २०)—दाया रखना।

पौता स—पौता गुच्छा (दाया—,
छाया—)।

पौता वि=पौता।

द

द प्र—देनेवाला (दाता, दान)। स्त्री—
-ता (दाता)।

द स=द।

द स—दहि दही (—पाता)।

द स, द स स—डाँगा, बड़ गंगा बड़ा मच्छड़।

द स स—कानड़ दाँतसे काटना, डसना
(पहले—दहि)।

द स (—नो), द स (क्रि परि १६)—
द स कराँ दाँतसे काटना, डसना।

द स स—बड़ा दाँत। द स (—अ), द स वि,
सं—बड़े बड़े दाँतो वाला।

द स (दक—अ) वि—पूरे निपुण।

द स स—दक्षिण दिशा। वि—डान दहिना
(—शहर का पात्र, भोजन)।

द स स स—विन्ध्याचल पर्वत-मालासे दक्षिण
का देश, दक्षिणात्य।

द स द (—अ) वि—जिसका पैर दहिनी
ओर है (—अ); दहिनी ओर घूमनेवाला।
सं—दक्षिणात्य।

द स द, द स द (—अ) वि—दक्षिणकी
ओर मुँह किया हुआ। [(—शहर)]

द स, द स वि—दक्षिण दिशासे आनेवाली
द स स—दक्षिण दखल (दखल—करा);
दान (दाया—पाता)। द स द वि, सं—

अधिकार वाला, मालिक। द स वि—दखल
सम्बन्धी (—द); दखलके अंदर।

द स स—दक्षिण। द स वि—दक्षिण
का (—दाया)।

द स स—जलने या घावका लक्षण प्रकाश
(दाया—दखल)। द स वि—ताजा (—दा)।

द स (—अ) वि—पौता जला हुआ; दुखित
(—दखल), भाग्यहीन (—दपान)।

द स (क्रि परि १)—सताना, जलाना, दुख
देना।

द स (—नो), द स (क्रि परि १६)
—सताना, दुख देना या पाना।

द स स—दखल, भीड़।

द स वि—दही उग्र, प्रचंड, कर्कश
(—दखल, —दा)।

द स (—अ) वि—दूक मजबूत (दायाद छेद
दहि—, गुरु गुरु चेला शक्ति)।

द स वि=दसका।

द स स—दाहि रस्ता (दहि—)।

द स स—घड़ाम, तोपके बूटनेका शब्द।

द स स—दहि, दस रस्ती।

द स (—अ) स—दड़, डडा, सजा (दाया—,
अ—); हरजाना, जुमाना, राजनीतिमे
दमन (दाया, दान, डेह, दस); ६० पल या
२४ मिनटका समय (दस, —थोड़ी देर)।

द स (अ), द स (—अ), द स (—अ)
वि—दड़ पानेके योग्य। —दहि स—
फौजदारी कानून। —द स स—दंडान।—
द स स—कल्लकी सजा (दस—करा)।

द स द वि—दाया खड़ा।

द स (—अ) वि—दिया हुआ अर्पित। सं—
कायस्थोकी एक उपाधि। स्त्री—दस
(दाया—)। —दाया, दसदाया (—दाया)
वि—दान दे कर जो छीन लेता है।

पक्ष (- क्ष) सं—दात दाद ।

पक्षि सं—पक्षे पक्षी । —पक्ष्य सं—विवाह आदि के दिन भोरमें किया जाने वाला एक उत्सव (इसमें छोटे बच्चोंके साथ दुलहा या दुलहिन या बटु दहो च्यूड़ा आदि खाते हैं) ।

पक्ष (- अ) सं—पक्ष, पक्षन दांत । —काष्ठ सं—पक्षत दंतौन । —पक्षन स—दांत माँजना, सजन, दंतौन । —पक्ष स—पक्ष-कनकनानि दांतका दर्द । —पक्ष स—दांत बैठाना, कठिन विषयका बोध (—कषा) । पक्षी सं—दांत वाला ; हाथी । पक्ष्य वि—पक्षालो दांतवाला । पक्ष्यापक्ष, पक्ष्यापक्ष सं—पक्ष पक्षी दांतका निकलना ।

पक्ष स—आगके जलनेका शब्द (—कषत्रे बल्ले पक्ष) । पक्षपक्ष सं—अग्निकी शिखा या उज्ज्वलता प्रकाश (आधन—कषा) ; दद, टीस (पक्ष—कषा) ।

पक्षव स—दफ्तर, आफिस, कागजोंका बंडल, कचहरीके कागजात । —पक्षना सं—दफ्तर, कागजात रखनेका कमरा । पक्षव स—दफ्तरी, जिल्दसाज, दफ्तरमें कागज स्याही कलम आदि रखने वाला ।

पक्ष सं—पक्ष, पक्ष दफा (पक्ष्य पक्ष्य), हालत (—कषा, —पक्ष) । —पक्ष स—जमादार । —पक्षि सं—जमादारका पद या काम । पक्ष क्रि वि—पक्षमें, पुन । पक्ष पक्ष क्रि वि—बार बार, किस्तसे ।

पक्ष (- अ) सं—दमन, इन्द्रिय-सयम ।

पक्ष (दम्) सं—साँस, दम (—पक्ष, —नक्ष, —काष्ठ), घड़ीकी कमानीमें पेच (—पक्ष); घोखा (पक्षपक्ष, घोखेबाज), नगेमें दम, भाफ या थोड़ी आँच (पक्ष पक्ष ३७३), भाफमें सिक्कायी हुई तरकारी आदि (पक्ष), धम शब्द । पक्षपक्ष स—धमाधम ।

पक्ष स—दमन करनेवाला ; वेग, धक्का ।

पक्षक स—जल निकालनेका कल, दमकल ।

पक्षक वि—भोकेदार (—शक्ष) ।

पक्ष (क्रि परि १)—उदास होना, दिल टूटना, उत्साह-भंग होना ।

पक्षान (- नो), पक्षानो (क्रि परि १०)—दमन करना, दिल तोड़ना । पक्षि (- अ) वि—दमन किया हुआ, संयत, वशीभूत ।

पक्ष स—दही जमानेके लिए दूधमें दिया जानेवाला दहीका हिस्सा या खटाई ।

पक्ष (- अ) स—धमंड, शेखी, अहंकार । पक्षी वि—धमंडी, शेखीबाज ; पाखंडी ।

पक्षि (- अ) स—पति, शौहर । स्त्री—पक्षि ।

पक्ष स—दर, भाव, मूल्य (—कषा, —कषा) । —पक्ष स—दर-भाव ।

पक्षकष (- कष, पक्ष-) वि—पक्ष परंतु भीतर में कषा । [जरूरी ।

पक्षकष स—प्रयोजन, जरूरत । पक्षकषी वि—

पक्षकष (- अ) स—आवेदन पक्ष दरखास्त ।

पक्षकष स—दरगाह, मकबरा ।

पक्षकष स—दरवाजा, द्वार ।

पक्षकषी स—दर्जी ।

पक्षकष स—पक्ष दद ; प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, हमदर्दी । पक्षकषी वि—पक्षकष पक्षी हमदर्दी ।

पक्षकष स—अधिक प्रवाह (—कषि ३७३ पक्ष) ।

पक्षकषान स—कमरा-सा घिरा हुआ धरामदा ।

पक्षकषिगषि (- अ) वि—पक्षके रूपमें प्रवाहित (—अक्ष) ।

पक्षकष स—चटाई ।

पक्षकष वि—उदार, दानशील (—शक्ष) ।

पक्षि स—पक्षपक्षि दरी ।

पक्षि (- अ) वि—पक्षि गरीब । पक्षिपक्ष स—गरीबी ।

पक्ष अन्य—पक्ष सबसे, कारण ।

दशोन्नति, (दादा-) स—दस्त्रान। दादाशानि
स—दशवानका काम।

दश (-अ) स—घमड, गर्व। —शत्रु, —शत्रा
वि—घम ड तोड़ने वाला। दशित (-अ, वि—
गर्वित घम डी। दशो वि—अहंकारी।

ददि, दशों स—शत्रु कलहल।

दर्शन स—दृष्टि दर्शन; ज्ञान (दृष्टी—), तत्त्व
ज्ञान (-शास्त्र), आँख। दर्शनो स—अपानो
भेटके लिए दिया जाने वाला धन। दशित
(-अ) वि—दृष्ट; दिखाया हुआ।

दर्श (क्रि परि १)—देखा जाना, होना, घटना
(उभयार्थ)। [ज्ञानो दिखाना।

दर्शन (-नो), दर्शानो (क्रि परि १६)—

दन स—गरोह, दल (डाकापत्र—;

—गोकानो); समूह (दूध—); पत्ती

(विद—); पंखड़ी (झूलन—, नख—),

सिधार। —दश स—अपने पक्षके लोग।

दलानि स—समाजमें दो दलोका विरोध

जिसमें दूसरे दलवालोंके यहाँ भोजन भी

नहीं करते।

दलन स—मदन, शेषन मसलना, मदन,

शासन। वि—शासन करनेवाला। स्त्री—

दलनी (दल—)।

दला (क्रि परि १)—मसलना, कुचलना।

दलान (-नो), दलानो (क्रि परि १०)—

कुचलवाना, मसलवाना। दलित (-अ) वि—

मदित कुचला हुआ (शन—, —कनिनी);

मसला हुआ, सताया हुआ, दलित।

दलिन स—दस्तावेज।

दला स—गुहसे रस निकल जाने पर जो चीनी

तैयार होती है; खाँड़।

दश वि, स—दस, १०। स—जनता, पच

(दशत्र कथा)। —इ (दश अइ) स—सौर

मासकी दसवीं तारीख। दशक वि—दसवाँ।

सं—दस सख्या, दहाई। —दश सं—

दशविध संस्कार। —दशविध (-अ) वि—

दशविध संस्कारोंमें अभिज्ञ पुरोहित,

दशविध संस्कार-युक्त। —दश सं—दस

या अधिक आदमियोंका पड़्यंत्र (—दश

उन्नतिन दृष्ट)। दशवि क्रि वि—दस

भागोंमें, दस प्रकारसे, दसों दिशाओंमें

—दश सं—कौड़ियोंका एक सेल।

—दशदश स्त्री—दश मुजाओं वाली देवी

दुर्गा, कर्कशा नारी। —दशविध स्त्री—

देवीके दस रूप (दानो, उग्र, वाष्प,

द्वानय, देवरी, हिमनखा, ध्मावली, वगना,

नाउरी ७ दशना)। —दश स—दशमलव

नश स—दश दांत, दंशन।

दश स—हालत, दगा, जन्म समयके ग्रहादि

की स्थितिके कारण असर; भक्तिभावके

आवेशसे बेहोशी, समाधि।

दशवि वि—दशदश लवा और मोटा

(शूद्र—)। [खुला सूत।

दशि स—दशदश द्वि। कपड़ेके किनारेवाला

दंष्ट (-अ) वि—दसा हुआ (दर्श—); दांत

से कटा हुआ (कंठ—)।

दशदश (दस्तखत) स—शतत्र गहि, गारु

हस्ताक्षर, दस्तखत।

दश (दस्ता) स—जस्ता धातु।

दशाना स—शतगोत्रा दस्ताना।

दशाने स—दलिन।

दश स—अथ दस्तूर, नियम, रवाज, रीति

(—मठ)। दशत्र स—दस्तूरी, दलाली।

दशि वि—ऊधमी, उदुड (—दल)।

दश स—डाकाठ डाकू। दश स—डकती।

दश, द स—अथाह जल, सकट, भँवर।

दश स—दाह, जलन, अग्नि। दशनी (अ)

वि—दहनेके योग्य।

दशरथ स—जलाना मेल-मिलाप ।

दशना स—ताशका दहला ।

दश (क्रि परि १)—पोंड़ा जलना, जलाना ।

दशमान (दभ्यमान) वि—जलता हुआ ।

दा स—दाख, काठावि कटारी, हँसना, काटनेका एक औजार । [वृत्त] ।

दा स—‘दाता’ का संक्षिप्त रूप (छोड़ना, दाई स्त्री—दाई धाय, नौकरानी ।

दाइन स=दान ।

दाउदाउ स—आगके जलनेका शब्द ।

दाउरा स—दाशक चबूतरा, दावि, पाउना दावा, लेना ।

दाउराई, दावाई स—दवा, औषध ।

दाँठ, दाँ स—दाँव, मौका ।

दाखिल स—पेश, दाखिल । वि—दाखिल किया हुआ, तुल्य, समान (बाबा—) । दाखिला स—मालगुजारी आदि की रसीद । दाखिलो वि—दाखिल किया हुआ ।

दाग स—दाग, चिह्न, कलंक (काना—, छत्रिछत्र—, —ठोना, —धरा, —पड़ा, —इग्रा) ; लकीर, रेखा (—कवा, —काणे, —देउग्रा) । दागी वि—दागी, दागदार, कलंकित (—बागागी, —ठात्र) । [दाग ।

दागड़ा स—भार या रगड़के कारण शरीरमें

दागा स—लिखना अभ्यास करनेके लिए आदर्श या नमूना (—बूना) ; कुश, दख, तकलीफ ; निंदा, बदनामी (—देउग्रा), धोखा । —दाख वि—धोखेबाज, दगाबाज । —दाखि स—दगाबाजी, विश्वासघात ।

दागा स—बड़ी मछलीकी पीठका टुकड़ा ।

दागा (क्रि परि ३)—दाग देना, तपे लोहे आदिसे चिह्न लगाना, दागना (काना—) ।

दागान (-नो), दागाना (क्रि परि १०)—दूसरे से दाग दिलाना, दगावाना ।

दाजा स—दंगा, मारपीट ।

दाड़ स—दाँड, नाव खेनेका बल्ला (—ठोना) ।

वि—दाड़ागान, थाड़ा खड़ा (—कराना) ।

दाड़काक—स—बड़ा कौआ ।

दाड़ा स—नाखून, डंक (काँड़ार—) ।

दाड़ा स—यकृतक रीढ़ ((भिन्न—)) ।

दाड़ान (-नो), दाड़ाना (क्रि परि -१०)—थाड़ा इग्रा खड़ा होना, थाया, स्कना, ठहरना (दाड़ाँठ आगि आगि) ; स्थिर होकर रहना (ठेठाने—) ; सुप्रतिष्ठित होना (काववा—, निजैर पायैर उपर—) ।

दाड़ि स—आँख, दाढ़ी, चिबूक, धूतनि ठोढ़ी ।

दाड़ि स—दाड़िगाँवा, ठूनामण, तराजू ; पूर्णकदका चिह्न, पाई ।

दाड़ि, दाड़ि स—डानिग अनार ।

दाड़ी स—डाँड़ खेने वाला ।

दाँत स—दाँत, दाँत (—ठाँ, —थिठाना, —ठोना, —देथाना, —बनाना) । —दाँति स—दाँते दाँत नागा, दाँतोंमें दाँत सट जाना ।

दातन स—दातान । [(—उवधानय)] ।

दाउवा (-अ) वि—देने योग्य, खेराती

दाउा वि, स—देनेवाला, उदार, दानशील ।

स्त्री—दाउी । दाउस स—दानशीलता ।

दाँतान (-अ), दाँताना वि—बड़े दाँतोंवाला ।

दाख स=दा ।

दादथानि स—एक महीन चावल ।

दादन स—पेशगी दाम, बयाना ।

दादा स—बड़े भाई, दादा, नाना ; नाती पोता आदिके लिए प्यारका सम्बोधन (अधिक प्यारमें—दाइ) । —ठाकुर स—दूसरी जातिके द्वारा ब्राह्मणका सम्बोधन ।

—दाशस स—दादा, नाना । —थुवस स—पति या पत्नीके दादा या नाना ।

दाशर स—बाड़ मेंढक ।

मान सँ—दान, अपण, उत्सर्ग । —बौत्र, —
भाँठ (-अ) वि—बड़ा दानी । —गञ्ज सँ—
दानके लिए सजा कर रखे हुए सामान ।
—मागव सँ—आदमैं बहुत अधिक वस्तुओंका
दान ।

माना, माना सँ—दानव, दैत्य । [योग्य ।
नानीय (-अ) सँ—दानका पात्र । वि—दानके
नाप, नापठे सँ—गव, घमंड, झटका (दफ़्तर
नापठे) । [पैर पटकना ।

नापानाभि सँ—पैर पटक-पटक कर चलना, हाथ-
नापान (-नो), नापाना (क्रि परि १०)

—नापानाभि कदम पर पटक-पटक कर चलना ।

नाब सँ—जग दयाव, बोझ, दमन ।

नाबड़ि सँ—धमक धमकी, डाँट ।

नाबा सँ—शतरंजका खेल । —बाण सँ—
शतरंज खेलनेका मोहरा, गोटी ।

नाबा (क्रि परि ३), नावान (-नो), नावाना
(क्रि परि १०)—जग दायना, दवाना, वश
में रखना (नाबिखे बांधा) । नाबा सँ—दवा
कर धाम रखना (दगन—कदम) ।

नाबाहे सँ=नाबहाहे । [वि—दावादार ।

नाबि सँ—दावा, नालिश; अधिकार । —नाब

नाब सँ—दाम, मूल्य, कीमत; गुच्छा
(धलक—); माला; सवार ।

नामड़ा सँ—वधिया, पण्ड ।

नामाश सँ—दमामा, नगाड़ा । [कठिन है ।

नामान वि—जिसका दमन करना बहुत

नामनी सँ—विश्व ब्रिजली ।

नामो वि—कीमती ।

नाम्पण (-अ) वि—दम्पति सम्बन्धी ।

नाम्पि वि—मर्ण घमण्डी ।

नाम सँ—उत्तराधिकारसे मिलने वाली सम्पत्ति;
संकट, विपत्ति (दड़ नाख जफ़्फ़ि); अवश्य
करने योग्य नैमित्तिक क्रम (कण—,

भिड़—); लाचारी (नाख जड़ा, नाख ठेका,
पेटेवर नाख) ।

नाशद वि—देनेवाला । स्त्री—नाशिका ।

नाशदा सँ—फौजदारी बढ़ी अदालत
(—माजदर) ।

नाशान सँ—वाग्मि हिस्सेदार, समोत्र; पुत्र ।

नाशो वि—देनेवाला, जिम्मेवार । स्त्री—नाशिनो ।

नाशि (-अ) सँ—जिम्मेवारी ।

नाखेव स—रुखू दायर ।

नाब सँ—पत्नी, स्त्री ।

नाबिनि स = नाबिनि ।

नाब सँ—तोड़ना, फोड़ना ।

नाबा सँ—नाब पत्नी, स्त्री ।

नाब सँ—काठ, लकड़ी; दारु । —निनि,
(नाब—) सँ—दालचीनी । —बक (-अ)

सँ—पुरीमें जगन्नाथजीकी लकड़ीकी मूर्ति ।

नाब वि—अत्यन्त, तीव्र, उग्र, भयकर,
कठोर ।

नाबागा सँ—दरोगा ।

नाबागान सँ—दरवान ।

नाबा (-अ) सँ—कड़ापन, दृढ़ता ।

नाब स—जग दाल । [बरामदा ।

नावान सँ—जग बाड़ि पका मकान, इमारत;

नावान सँ—दलाल । नाबानि सँ—दलाली ।

नाब सँ—जकर, ठूठ नौकर, गुलाम;

कायस्थोंकी एक उपाधि । वि—अधीन

(अवशत्र—) । स्त्री—नाबी । नामथ सँ—

जन्म भर दास रहनेका प्रतिज्ञापत्र ।

नामनाभाव स—दास-सी मनोवृत्ति ।

नाख (-अ) सँ—मनवाग, छेद दस्त ।

नाख (-अ) सँ—दासका भाव, दासकी तरह
ईश्वरकी उपासना । —बुद्धि सँ—नौकरी ।

नाश (-अ) सँ—दाह, जलन; शव जलाने
की क्रिया, ताप, गर्मी (बखर—) । नाशन

सं—जलाना, सताना। दाशिका वि—
जलानेवाली। दाशै वि—जलानेवाला।
दाश (दाभय -अ) वि—जलनेके योग्य।
दि सं—‘दिदि’ का सक्षिसरूप (छोड दि, बड़ दि)।
दि सं—दिशा, ओर (दाशत्र दिक्) ; पास
(दां—) । —छक् सं—छक्वाल क्षितिज।
दिक् वि—दिक्, तग। —दात्रि सं—परेशानी
हैरानी।
दिक्, दिक्किन क्रि—दिक् देखूँ (वज—) ।
दिगक्, दिक्, दिगत्र, दिक् —बहुवचनकी
विभक्तिके चिह्न। [क्षितिज।
दिगच्छ (-अ) सं—दिशाका छोर या प्रांत,
दिग्दर्शन सं—दिशा प्रदर्शन ; किसी विषयके
बारेमें मामूली चर्चा। —वक् सं—दिशा
निरूपण-यत्र।
दिक् (-अ) वि—मिश्रित, युक्त (विष—) ।
दिग्, वज्र सं—दिक्छक्। [दिग्, वज्र।
दिग्, वज्र सं—दिग्वस्त्र ; महादेव। स्त्री—
दिग्, विदिक् सं—दिक् ७ विदिक् दिशा और उलटी
दिशा। वि—भला-बुरा (—छानशू) ।
दिघन वि—दीघ, लंबा।
दिघि सं—लंबा बढ़ा तालव।
दिग्, वज्र सं—दिक्छक् क्षितिज।
दिठि सं—दृष्टि, नजर।
दिदि स्त्री—बड़ी बहन, जीजी, दादी नानी
पोती नातिन बहन आदिका सम्बोधन। दिदिदा
स्त्री—भाताशै नानी।
दिद्, वज्र सं—देखनेकी इच्छा। दिद्, वज्र,
दिद्, वज्र वि—देखनेके इच्छुक।
दिन सं—दिन, दिनरातका समय।—दिन
क्रि वि—रोज-रोज।—गाठ सं—कावशागन
समय गंवाना।—गान सं—दिनेत्र देना
दिनका समय।—गच्छ सं—दिनके हिसाब
से काम करने वाला मजदूर।

दिनेश्वर सं—डेनमार्क देश निवासी।
दिवा सं—दिन।—निशि क्रि वि—दिनरात।
—वक् सं—दिनमें निद्रा या स्वप्न ; मिथ्या
कल्पना, ख्याली पुलाव।
दिवा (-अ) वि—स्वर्गीय, अलौकिक। सं—
सौगंध (—गाना, सौगंध खाना) ।
दिवि वि—छंदर (—छशात्र) । सं—सौगंध,
कसम (या काशीव—) ।
दिश, दिश विभ—द्वारा, से।
दिशाशनाई, दिशाशनाई सं—दियासलाई।
दिन सं—गन दिल। —थाश वि—खुशदिल,
दिलको खुश करने वाला। —दश्रि वि—
जिसका दिल समुद्रके समान उदार है।
दिशा सं—दिक् दिशा (दिगशात्र, दिग्भ्रांत) ।
दिछा, दिछ सं—२४ ठा दस्ता, २४ या २५
ताव कागजको गड्ढी ; मूठ (शयानदिछा) ।
दीक् (दिक्खा) सं—दीक्षा, मन्त्रोपदेश।
दीघन वि—दिघन लंबा।
दीघि सं—दिघि लंबा बढ़ा तालव।
दीन वि—गरीब, द खित, विनीत। स्त्री—दीना।
—दीन वि—बहुत गरीब। दीनता सं—
गरीबी, अभाव (वृद्धि—) ।
दीन सं—धर्म, मत (—शनिशत्र गानिक) ।
दीनात्र सं—अशरफी, स्वर्णमुद्रा।
दीश सं—दीप दीपक, दीया। —शनाका
सं—दियासलाई।
दीशक् वि—प्रकाश करनेवाला, उत्तजक।
दीशन सं—प्रकाशन, उत्तेजन।
दीशाघिठा सं—दिग्वालित्र वादि दीपावली,
दीपावलीकी रात्रि। [दीवाली।
दीशावली, दीशानी, (-लि) सं—दिग्वालि
दीशिका वि—प्रकाशित करनेवाली। स—टीका,
चाँदनी, दीपक। [प्रकाशित, उत्तजित।
दीशित (-अ) वि—वाला हुआ, जलाया हुआ,

श्रीलु (-अ) वि—उज्ज्वल, चमकीला, प्रज्वलित ।
श्रीलु सं—प्रकाश, रोगनी ।

श्रीभाषान वि—उज्ज्वल, शोभायमान ।

श्रीद्वान वि—दिया जानेवाला ।

श्रीर्ष (-अ) वि—लबा, बडा, व्यापक (—दास,
—वयस) । —श्रीर्षी वि—बहुत दिनोत्तर
जीनेवाला, चिरजीवी । —श्रीर्षी वि—दूरदर्शी,
भविष्य देखनेवाला । —श्रीर्ष वि—लंबो नाक
वाला । —श्रीर्ष वि—लंबे पैरोंवाला ।
—श्रीर्षा वि—जिसके शरीरमें बड़े बड़े बाल
हैं । सं—भालू ।

श्रीर्षिका सं=द्विषि ।

श्रीर्ष वि—विशेष फटा, टूटा ।

श्रीरानि, श्रीरानि सं—दुश्मनी ।

श्रीरे, श्री वि, सं—दो, २ ; दोनों (श्रीरे, श्रीरे,
श्रीरे रान, श्रीरान, श्रीराना, श्रीराना) ।

श्रीरे, श्रीरे अव्य—विकार, घत, छि ।

श्रीरे (दुःख-अ) सं—दुःख, कष्ट । श्रीरे वि—
दुःखी, क्लेशित ।

श्रीरे सं—रेशमी वस्त्र, सहन कपड़ा ।

श्रीरे सं—शुद्ध दूध । —श्रीरे वि—जिसका
पालन दूध पिलाकर किया जाता है
(—श्रीरे) । —श्रीरेनिष्ठ (-अ) वि—दूधके फेन
की तरह सफेद (—श्रीरे) । —श्रीरे वि—
श्रीराना दूध देनेवाली, दुधार (—श्रीरे) ।

श्रीराना सं=श्रीराना । श्रीराना सं=श्रीराना ।

श्रीरे सं—बादलकी गड़गड़ाहट, दिलकी
धड़कन । [धड़ाम ।

श्रीरे सं—तोप आदिसे गोली छूटनेका शब्द ;
श्रीरे अव्य—दूध, दूध, दूध घत, भाग ।

श्रीरे सं—दूध । —श्रीरे क्रि—दूध फटना ।
—श्रीरे क्रि—बच्चोंका दूध कै करना ।
—श्रीरे क्रि—दूध दुहना । —श्रीरे क्रि—दूध
उबालना । —श्रीरे, (श्रीरे शीरे)

सं—बच्चोंके दांत जिनके गिर जानेके बाद
नया दांत निकलने दे ।

श्रीरे, (श्रीरे) वि—दोनों ओर का, दुधारा ।

श्रीरे (-अ), श्रीरे ; श्रीरे वि=श्रीरे ।

श्रीरे वि—दोनों वाला । सं—दुनाली
बढ़क ।

श्रीरे, श्रीरे वि—द्विष्ट दुग्धना, डबल ।

श्रीरे सं—छोटा डोंगी, इन लकन वगैरे जल
सींचनेका एक पात्र ।

श्रीरे सं—श्रीरे पैरकी आहट (बारबार—श्रीरे) ।

श्रीरे, श्रीरे सं—द्विष्ट दुग्ध (—दूध, दात—) ।

श्रीरे सं—श्रीरे शब्द दो पातियाँ (—श्रीरे) ।

श्रीरे सं—दूध दूध ।

श्रीरे वि, सं—दोभाषिया ।

श्रीरे, श्रीरे वि—टेढ़ा, सरोड़ा हुआ ।

श्रीरे (-नो), श्रीरेराना (क्रि परि १८)—
टेढ़ा करना, सरोड़ना, तह करना ।

श्रीरे सं—श्रीरे गोली छूटनेका शब्द ; मुक्का
मारनेका शब्द (बार बार—श्रीरे, श्रीरे) ।

श्रीरे, श्रीरे वि—द्विष्ट, द्विष्ट दुग्धामें
पडा हुआ ।

श्रीरे वि—दोसुंहा ।

श्रीरे, श्रीरे वि—जिस मूर्तिमें दो बार
मिट्टीका लेप दिया गया है ।

श्रीरे सं—भेडकी एक जाति जिसके पीछेकी
ओर सांसका लोंदा लटकता है, दुग्धाह ।

श्रीरे, श्रीरे वि—दुर्भाग्यवाली (—श्रीरे) ।

श्रीरे, श्रीरे सं—द्विष्ट दरवाजा ।

श्रीरे उप—दोप निदा निषेध दुःख जाति सूचक
उपसर्ग । श्रीरेराना सं—द्विष्टसे दूसरे

पार गमन । श्रीरेराना (—द्विष्ट, द्विष्ट)
वि—श्रीरे, श्रीरे द्विष्टसे पार होने योग्य ।

श्रीरेराना वि=श्रीरेराना । श्रीरेराना (-अ) वि—
दुर्भाग्य, बदनसीब । सं—दुरा नसीब ।

श्रृङ्खल (-गम) वि—दुलभ, दुर्गम, गूढ़ ।
 श्रृङ्खल (-अ) वि—जिसका छूटना कठिन है (—कठिन) । श्रृङ्खला (-अ) वि—दुर्गम, दुर्बोध, जिसमें उतरना या प्रवेश करना कठिन है । श्रृङ्खल (-अ) वि—बुरी दशावाला, दरिद्र । श्रृङ्खल स—दुर्गति, बुरी दशा, खराब हालत । श्रृङ्खल स—बुरा मतलब । श्रृङ्खला स—बुरी अभिलाषा । श्रृङ्खला (-कठिन) वि—बुरी अभिलाषा करनेवाला । श्रृङ्खला (-अ) वि—जिसको आरोग्य करना कठिन है । श्रृङ्खला वि—जिस पर चढ़ना कठिन है । श्रृङ्खल स—बुरा मतलब । वि—बुरा मतलबवाला । श्रृङ्खल (-अ) वि—कठिन, गूढ़ । [(कवितामें—श्रृङ्खल)]

श्रृङ्खल स—श्रृङ्खल गडगड़ाहट, धड़कन
 श्रृङ्खल वि—श्रृङ्खल, अशास्त्र नटखट, ऊँचमी, जिसका शासन करना कठिन है (—कठिन) ; श्रृङ्खला (-व्याधि) । —गम स—श्रृङ्खल, दोषाश्रय नटखटी, ऊँचमी ।

श्रृङ्खल स—श्रृङ्खल श्रृङ्खल दूरबीन ।
 श्रृङ्खल वि—ठिक दुस्त, सयत (कठिन—कठिन) ।

श्रृङ्खल स—दो बूटीवाला तारा ।
 श्रृङ्खल (-अ) स—पाप ।

श्रृङ्खल (-अ) स—कठिन, गूढ़ किला ।

श्रृङ्खल (-अ) वि जिसकी बुरी गति हुई हो ।

श्रृङ्खल (-अ) स—बदलू । वि—बदलूदार ।

श्रृङ्खल वि—दुर्गन्धयुक्त ।

श्रृङ्खल स्त्री—दशभुजा देवी । श्रृङ्खल स—आश्विन मासमें दुर्गापूजाका उत्सव ।

श्रृङ्खल वि—जिसका होना कठिन है । श्रृङ्खल स—अशुभ घटना, चारदात, आकस्मिक विपत्ति । [—कठिन] ।

श्रृङ्खल वि—जिसे जीतना बहुत कठिन है (—कठिन,

श्रृङ्खल (-अ) वि—जो जल्दी समझमें न आ सके ।

श्रृङ्खल, श्रृङ्खली, श्रृङ्खला (-अ) वि—श्रृङ्खल जिसका दमन करना बहुत कठिन है ।

श्रृङ्खल स—श्रृङ्खल बुरी दशा ।

श्रृङ्खल (-अ) वि—श्रृङ्खली ।

श्रृङ्खल (-अ) वि—जिसको हराना या दमन करना कठिन है ।

श्रृङ्खल स—वदनामी, निन्दा ।

श्रृङ्खल वि—जिसको रोकना कठिन है ।

श्रृङ्खल (-अ) स—अशुभ लक्षण, बटशकुन ।

श्रृङ्खल स—जिस साल अनिष्ट होता है ।

श्रृङ्खल (-अ) वि—जिसको ढोना या सहना कठिन है ।

श्रृङ्खल वि—श्रृङ्खल ।

श्रृङ्खल (-अ) वि—असहनीय ।

श्रृङ्खल स—श्रृङ्खल, बुरा मतलब, बेवकूफी ।
 वि—दुष्ट, बेवकूफ ।

श्रृङ्खल स—अमंगलकी आशंका, व्याकुलता ।

श्रृङ्खल (-अ) वि—शराब, आलास महंगा ।

श्रृङ्खल स—आँधी पानीका समय, अशुभ काल ।

श्रृङ्खल स—करनफूल ।

श्रृङ्खल स—दुलकी चाल ।

श्रृङ्खल स—मुहम्मदके दामाद अलीका घोड़ा ।

श्रृङ्खल, श्रृङ्खली (क्रि परि ६)—श्रृङ्खल थाकरा भूलना । [—भूलाना, ठुलाना ।

श्रृङ्खल (-नो), श्रृङ्खली, श्रृङ्खली (क्रि परि १२)

श्रृङ्खल—दुलारा लड़का । श्रृङ्खली स्त्री—दुलारी लड़की । [कहार ।

श्रृङ्खल स—पालकी डोली आदि ढोनेवाला

श्रृङ्खल स—शत्रु, दुश्मन । श्रृङ्खल स—दुश्मनी, शत्रुता ।

श्रृङ्खल (-अ) वि—जिसका इलाज करना कठिन है ।

शुद्ध (अ) वि—जिसका छेदन करना या काटना कठिन है। [करना।

शुद्ध, गोदा (क्रि परि ६)—दोष देना, निटा शुद्ध (अ) वि—पापी। शुद्ध, शुद्धि स—कुर्म, पाप।

शुद्ध (अ) वि—दोषयुक्त (—अ), उरा, खराब (—राखि, —रखि); अशुद्ध (—अ), ऊबसी (—राखि, —रखि), नटखट लड़का। शुद्ध स्त्री—छिनाल। शुद्धि, शुद्धि स—नटखटी, ऊबसी।

शुद्ध (अ) वि—जिसका हजम करना कठिन है।

शुद्धि स—दुरी इच्छा।

शुद्ध (अ) वि—दुरी गति प्राप्त; गरीब।

शुद्ध स्त्री—ऊबसी कन्या।

शुद्ध स—दोनों।

दूर स—दूरत्व, फासला। वि—बहुत फासले परका, निकाला हुआ। अन्य—घत। —दूर, दूर अन्व—दूर हो, भाग। —दूर स—दूरवीन। दूर (अ) वि—दूरका। दूरवीन स—बहिष्कार, अपसारण। दूरवीन (अ) वि—बहिष्कृत, निकाला हुआ। दूरवीन स—दूर होना, भाग जाना। दूरवीन (अ) वि—जो दूर हो गया है।

दूर स—दूर।

दूर स—दोपारोप, ऐब लगाना। दूर वि—ऐब लगानेवाला। दूरवीन, दूर (अ) वि—निदनीय, दोष लगाने योग्य। दूर (अ) वि—जिसमें दोष हो (—दूर, —दूर)।

दूर स—चक्षु, आँख, दृष्टि, नजर, ज्ञान। —भात स—नजर डालना ताकना (किछुतेई —रखे ना)।

दूर (अ) वि—दूर, कड़ा, मजबूत, अटल (—दूर, —निश्चय, —अतिशय)। दूरवीन स—

दूर करना; सुप्रतिष्ठित करना। दूरवीन (अ) वि—दूर किया हुआ। दूरवीन स—दूर होना। दूरवीन (अ) वि—दूर बना हुआ, सुप्रतिष्ठित।

दूर (अ) वि—घम डी दीठ।

दूर (अ) वि—दूर। स—देवने योग्य विषय; नाटकका दूर। —दूर स—नाटक। —भात स—नाटकका पद।

दूर (अ) वि—देखा हुआ, प्रत्यक्ष, परीक्षित। स—दृष्टि (—दूर—दूर)। —दूर, —पूर्व वि—पहले देखा हुआ।

दूर स—दृष्टि, नजर, दर्शन, ज्ञान, लालच भरी दृष्टि, दुरी निगाह (—दूर)। —भात स—ताकना (—दूर)। [अ, तू दे।

दूर स—कायस्थोंकी एक उपाधि। क्रि—दूर देते स—दीपक, मशाल।

दूर स—ड्योढ़ी, फाटक।

दूर स—देवालय, मंदिर।

दूर, दूर वि, स—दिवालिया।

दूर (देवा) (क्रि परि १८)—देना, भेजना, सौंपना, डालना, लगाना (दूर—, देना—, देना—, गाँव—, गाँव—, भरती करना (दूर—), प्रविष्ट कराना (दूर—); दूर (शत—) वि—दिया हुआ। [—दिलाना।

दूर (देवानो), दूर (क्रि परि १६)

दूर (देवान) स—दीवान, मंत्री; राजसभा। दूरानि स—दीवानका पद।

दूरानो वि—दीवानी (—आफाना, —भरती)।

दूर (दंवाल), दूर स—दीवाल, भीत।

दूरानि (देवालि) स—दीवानो।

दूर (देवर) स—देवर। [लिए सबोधन।

दूर (देखो) क्रि—देखो; ध्यान खींचनेके

पेशता (देखता) कि वि—देखते समय, सामने, समान कालमें (आशाकर—) ।

पेशन (देखन) स—दर्शन । —शक्ति स— जिसके देखनेसे आनंद होता है, सहेलीका एक नाम ।

पेशा (देखा) (कि परि १) देखना, नजर डालना, ताकना, अनुभव रहना (देख देखि); देखरेख करना (काइकर—); सेवा या इलाज करना (कोशिके—, डाक्टर देखि), प्रतीक्षा करना (देखि कि श्रु) । स—दर्शन, भेट (—करा, —पाउश) । वि—देखा हुआ । —पेशि स—देखा-देखी, भेंट । कि—दूसरोंको करते देख कर । —तना, —ताना स—देख-रेख, निगरानी । —गाइस स—भेट करके बातचीत । देखते देखते, देखते देखते—कि वि—आँखोंके सामने, देखते देखते, क्षणभर में । [—दिखाना ।

पेशान (देखानो), पेशानो (कि परि १०) देड़ वि—डेड़, पूरा और उसका आधा ।

पेशा वि—डेड़-गुना, ड्योढ़ा ।

पेशो वि=पेशान ।

पेशात्र वि—प्रचुर, बहुत ।

पेशा स—कज्र करण, देना, कर्जा । —तात्र, पेशात्र वि—करणो, कर्जदार । —पाउना स—लेन-देन ।

पेश स—देवता, ईश्वर, एक पूज्य उपाधि (श्रु—, श्रु—), ब्राह्मणोंको एक उपाधि (देवगर्ग) । —कून स—पेश मंदिर । —थात स—भील, प्राकृतिक जलाशय । —पार स—देवदारका वृक्ष । —श्रुत वि—देवताको भी दुलभ, दुष्प्राप्य । —नाशत्र —नाशत्रौ स—देवनागरी लिपि । —गर्ग स—ब्राह्मणोंको साधारण उपाधि । —श्रु (—अ) स—कृष्णार्पित सपत्ति । पेशा (—अ)

स=पेश । पेशात्रि स—असुर । पेशानत्र, पेशात्रतन स—मंदिर । पेशी स्त्री—देवी, देवता, महिलाओंकी एक उपाधि (भाइ—) । पेशात्र स=पेश ।

पेशन स—पुजारी ब्राह्मण ।

पेशाक स—घमंड, शेखी ।

पेश (—अ) वि—देनेके योग्य ।

पेशाना स—शिशुका सोतेमें हंसना-रोना ।

पेशको, पेशको स—दीवट ।

पेशाक स—दराज, मेजका खाना ।

पेशि स—देर, देरी, विलंब ।

पेश स—देश, स्थान, अपना ग्राम (पेशा बाहेव) । —विपेश स—अनेक देश, स्वदेश और परदेश । पेशाश्रवाक स—अपने देश के स्वार्थको अपना स्वार्थ समझना । पेशिक वि—देशका, स्थानीय ।

पेश (—अ) कि—पाउ दो । स—शरीर ।

पेशनी, (—जि) स—दरवाजेके बाहरका चबूतरा, दहलीज ।

पेशि कि—पाउ दो ।

पेशी स—शरीर-धारी, प्राणी, आत्मा ।

पेशात्र कि वि—श्रु अकस्मात् ।

पेशा (—अ) स—लबाई ।

पेशिक वि—देश-सम्बन्धी, देशीय ।

पेशा वि—दो, २ । —यानि स—श्रुयानि दुअन्नो । —यागना वि—दोगला, दो प्रकार की वस्तुओंके मेलसे उत्पन्न । —कूर वि—दो बार, दूसरी बार । —ताना स—दोनों ओरका खिचाव । —तना वि—दोमजिला । —पाठि स—गुलमेहदी । —कना वि—दो फलों वाला (—श्रुति); जो साल में दो बार फल देता है (—आमगाइ) । —वात्र, (—वत्रा) स—दानादार चीनी । —तायी, श्रुयी वि, स—दुसापिया । —गना वि=

छमना । — राधा वि—जिस कपड़ेके दोनों ओर
एकसी नकाशी हो । — गान स—दुगाला ।
— शक्ति स—दोहरे सूतसे बिना रुपड़ा । — शत्रु
वि दोहरा, बहुत दुबला भी नहीं मोटा भी
नहीं ऐसा (— शत्रु, — शत्रु) ।

लोकांन स—दुकान । लोकानो स—दुकानदार ।
लोला स—तम्बाकूकी सूजी पत्ती ।

लोलाणा स—दो छप्पर वाला घर ।

लोलाछटे, लोलाछाटे स—दुपट्टा, ओढ़ना ।

लोलावत्रे वि—दूसरी बार विवाह करनेवाला ।

लोलावि—भूलता हुआ । लोलाविमान वि—
दोलायमान, बहुत हिलता हुआ । [छमझान ।

लोलाङन (-नो), लोलाङानो (क्रि परि १८) =

लोला स—हुआ, आशीर्वाद । क्रि दुहना ।

लोलाउ स—गशाक्षर दावात ।

लोलाव्रन स—एक गानेवाली छोटी चिड़िया ।

लोला स—श्राव द्वार, दरवाजा । — लोला स—
देहलीके पासका स्थान ।

लोला स—भूलना (— लोला) ; होली,
हिंडोला, भूला । लोलाक वि—भूलनेवाला ।

लोलांन स—भूलना । लोलांनो स—हिंडोला ।

लोला स—हिंडोला, डोली, खटिया ।

लोला (क्रि परि ६) = झना ।

लोलांन (-नो), लोलांनो (क्रि परि १३) =
झान । लोलांनो (-अ) वि—जो फुलाया
जाता है ।

लोला स—अपराध, कसूर, कलक, त्रुटि ; रोग
(गशाक्षर—, लोलाक्षर—) । — लोला वि— दोष

ग्रहण करने या देखने वाला । लोला (-अ)

वि—दोष-गुणका विचार कर सकनेवाला,
विद्वान् । लोलाक्ष स—त्रिदोष, वायु, पित्त,

कफ ; राग, द्वेष, मोह । लोलाक्ष स—

दोषगुण । लोलाक्ष (-अ) वि—दोषजनक ।

लोलाक्ष स—दोषका आरोप ।

लोला (क्रि परि ६) = झना ।

लोला (दोहरा) स—दूसरा आठमी, साथी,

अनुचर (बनेद्व—), सहाय ।

लोला (दोहरा) वि—दूसरा । स—दूसरी
तारोख (सौर मासकी) ।

लोला (दोहरा) स—दो दोहों ।

लोला (दोस्त-अ) स—रश्, निर दोस्त, मित्र ।

लोला स—दोस्ती, मित्रता ।

लोला स—गर्भवतीकी साथ ; गर्भवती । —

लोला स—गर्भका लक्षण । — लोला स्त्री =

गर्भवती ।

लोला स—इस लोला दूध दुहनेकी क्रिया ।

लोला स—दुहनेवाला ।

लोला (क्रि परि ६) — लोला दुहना ।

लोला स—निगा दुहाई, कसम, सौगन्ध ;

छूटा, खिन्ना बहाना, न्याय विचार या दया के

लिए प्रार्थना (— लोला) । — लोला क्रि—

सहायताके लिए पुकारना ।

लोला (-नो), लोलांनो, लोलांनो (क्रि परि
१०) — दूसरेसे दुहाना ।

लोला, लोला स—सगीतमें स्थायी या
रामधुन आदि दुहराने वाला ।

लोला, लोला स—दोनोंका । लोला
सर्व—दोनों । [(— लोला)

लोला वि—दो सूत वाला ; दोहरा, स्थूल

लोला (दड) स—दौड़ (— लोला)

— क्रांति) ; सीमा (बृद्धि—) । — लोला

स—दौड़-धूप, दौड़ और कूद । — लोला क्रि—

भागनेके लिए दौड़ना ।

लोला (दड) (क्रि परि १), लोला

(दड) , लोलांनो, लोलांनो (क्रि परि १५)

— दौड़ना । लोलांनो स—छूटाछूटि

दौड़धूप । [— दौड़ना ।

लोला (दड) , लोलांनो (क्रि परि १५)

दोता (दउत्त -अ) सं—दूतका काम ।

दोवारिक (दउवारिक) सं—द्वारपाल दरवान ।

दोराथा (दउराथ-अ) सं—ऊधन, उत्पात, ज्यादती, दुर्जनता ।

दोर्बला (-अ) सं—दुर्बलता, कमजोरी ।

दोमल सं—दौलत, धन (धन—) ; अनुग्रह, कृपा (तोमर दोमले) । —थाना सं—धनी का महल ।

दोहिज (दउहिज -अ) सं—लड़कीका लड़का, नाती । दोहिजौ स्त्री—नातिन ।

श, शलाक सं—स्वर्ग, आकाश । शति सं—प्रकाश, ज्योति ; सौन्दर्य ।

शूत (-अ) सं—शकलौड़ा, शशांथना शतरंज, जुआ । —कात्र सं—जुआड़ी । [प्रकाश ।

शोतक वि—प्रकाशक, सूचक । शोतना सं—

जब (-अ) वि—तरल, पानीकी तरह पतला, गला हुआ । जवोरन सं—गलाना, तरल करना ।

जवोरुत (-अ) वि—तरल किया हुआ । जवोताव सं—तरल होना ; तरलता ।

जवोत (-अ) वि—तरल बना हुआ, पिघला हुआ ।

जव सं—गलन, तरल होना । —विन् सं—तरल होने योग्य गर्मीकी सीमा melting point. [उस प्रदेशके आदिवासी ।

जविड़ सं—दक्षिण भारतका द्रविड़ प्रदेश, जवोरन, जवोरुत, जवोत—जब देखो ।

जय (-अ) सं—जिनय, भगार्थ वस्तु चीज । —गुण सं—वस्तुका गुण ।

जहेवा (-अ) वि—देखनेके योग्य, दर्शनीय ।

जाका (द्राक्खा) सं—खाडू अ गूर । [रेखा ।

जाधिया सं—देव्या लंबाई, द्राधिमा, देशान्तर

जाविड़ सं—दक्षिण भारतका एक प्रदेश, द्राविड़-निवासी । वि—द्राविड़ देशका ।

ऊत (-अ) वि—शीघ्र, तेज (—वेग) ।

ऊग (-अ) सं—बृक्ष पेड़ ।

जोश सं—भक्ता दुश्मनी (बाज—) ।

जोशौ सं—शत्रु, दुश्मन (देश—) । जोशिता सं—शत्रुता ।

जुध (दन्द-अ) सं—कनक भगड़ा, विरोध, लड़ाई ; जोड़ा, युगल ; परस्पर विरोधी दो विषय जैसे—राग-रस, सुख-दुःख, शीत-उष्ण । —युद्ध सं—दो आदमियोंकी लड़ाई, कुस्ती । जुधौ वि—भगड़ालू, विरोधी ।

जुध (द्वय) वि—दो दो ; युगल (नेत्र—) ।

जात्र (द्वार) सं—इश्वर, दरवा दरवाजा । —वान सं—दरवाशन दरवान । —जेश सं—दरवाजेका रास्ता, दरवाजा । जात्र (-अ) वि—प्रार्थी-रूपसे द्वारपर उपस्थित । जात्री सं—द्वारपाल दरवान ।

जि (द्वि) वि—दो दो । जिध (-अ) सं—दुगुना या दोका होना । जिधिस (-अ)

वि—दो जीभवाला । सं—साँप । जितन वि—दोतना दोमजिला । जिदन सं—दाल । जिदक

वि—दोनों नेत्रोंसे देखने वाला । जिधा सं—सन्देह, दुविधा । क्रि वि—दो भागोंमें, दो प्रकारोंसे ।

जिध सं—हाथी । जिध, जिधाम वि—दो पैरों वाला । जिधावौ वि सं=जोधावौ । जिधु वि—दो हाथों वाला ।

जिध सं—हाथी । जिधागमन सं—गौना । जिधु (-अ) वि—दो द्वार कथित या लिखित ।

जिध सं—दो द्वार कथन या उल्लेख, असम्भति-ज्ञापन । जिधक सं—जय भौरा । [कालापानी, देश-निकाला ।

जोष सं—टापू । जोषाखर सं—निर्वागन जोषी सं—छिटावाच तेंदुआ ।

जोध (दद्व-अ) सं—विरोध, अनमेल (गत—) ; दुविधा, सदेह ।

जोधविधा (दद्वविध्य-अ) सं—दो होनेका भाव ।

द्वैतार्थ (दृश्यार्थ) वि—दो रथियोंका (-युद्ध) ।

शत्रु स—दो अणुओंका मेल ।

शत्रु (-अ) स—दो प्रकारके अर्थ । वि—दो अर्थोंवाला (वाक्य) ।

शत्रु (-अ) स—दो दिन । शत्रु वि—दो दिनों तक रहने वाला, हर तीसरे दिन होनेवाला ।

ध

धक्क स—आगके जलनेका शब्द, भभक ; (लघु अर्थमें—दिक्रिदिक्रि) ; दिलकी धड़कन (लघु अर्थमें—धुक्धुक्) । [व्यवहार ।

धक्क स—धक्का, असर ; क्लान्ति, अधिक धड़ स—शरीरका मध्य भाग, सिर-रहित शरीर ; देह (धड़ धातु नाहे) ।

धड़क स—दिलकी धड़कन, वचनी प्रकाश ।

धड़कानि स—धड़कन, छटपटी, घबराहट ।

धड़ स—कृष्णकमल कमलमें पहननेका कपड़ा ।—धड़ स—कृष्णका वेश ; (व्यंग में) पोशाक, पाजामा टोपी आदि ।

धड़स स—गिरनेका शब्द ।

धड़स स—जोरसे गिरनेका शब्द ।

धड़िवा वि—कनिवाड़ धूत ।

धन स—धन, सम्पत्ति, दौलत, रुपया-पैसा ; माल, मूल्यवान वाञ्छनीय वस्तु (शत्रु—), शिशुके लिए प्यारका सम्बोधन (शत्रु—); (गणित में) योगका चिह्न (+), (शनाथक positive) ।—ध (-अ) वि—धनदाता ।—धा स्त्री—लक्ष्मी ।—धा स—पैसेका गुलाम ; कजूस, धनके लिए धनीका दासत्व करने वाला । शनाथ (-अ) वि, स—बड़बोरा धनी, दौलतमन्द । शनाथक (-अ) स—आशावाक सजानेका अर्थ (सजानेसे उच्च पद)

treasurer. शनाथन स—रोजगार, धनका कमाना ।

धनिश, धन स—धनिया ।

धनी स्त्री—युवनी, नारी । वि—धनी ।

धनु, धनु स—धनुष । धनु स—धनुष की डोरी, रोड़ा धनु स—धनुष और तीर । धनुशत्रु, (-शत्रु) स—छात्र-निर्दोष धनुषकी डोरी खींचकर छोड़ देनेसे जो शब्द होता है, एक रोग जिसमें शरीरके अंग ऐंठ जाते हैं चिहुकवाई ।

धन स=धनिश ।

धमा स=धमना । [धम ।

धम स—गिरनेका शब्द । लघु अर्थमें—

धमधम, धक्क स—सफेदी या शुद्धताका लक्षण प्रकाश । धमधम, धक्क वि—सफेद, शुद्ध ।

धम स—पति, शौहर (दिव्य, पतिविहीन) ।

धम वि—गाढ़ा सफेद, शुद्ध । स—सफेद कोढ़ । [धम ।

धमक स—दावड़ धमक, डाँठ, प्रभाव, असर धमकान (-नो), धमकाना (क्रि परि १६)—धमकाना, डाँटना ।

धमकानि स—धमक, डपट ।

धमनी, (-नि) स—नाडी, धमनी ।

धम वि—पकड़ने वाला (धमक, पर्वत) ।

धम स—धारण, पकड़ ।

धमगा स—धमा धरना ।

धमनी स्त्री—पृथ्वी, धरती ।—धम स—पर्वत, पहाड़, वासुकि नाग ।

धमन स—गङ्गा रीति, ढग (काष्ठ—); चेहरा, लक्षण । [सत्याग्रह ।

धमना, धमा स—धरना (-धमना) ;

धम स्त्री—पृथ्वी, धरती ।—धम स—धरती, पृथ्वीकी सतह ।—धम स—ससार ।—धम वि—धरती पर लेटा गिरा या गिराया हुआ ।

धरा (क्रि परि १)—पकड़ना (धरि गाह ना छूँइ
 गानौ, साँप भी मरे लाठी भी न दूटे) ;
 धारण करना (कृ०—, वेश—, थाग—),
 रखना, पेश करना, पसंद होना (गन—);
 अवलंबन या ग्रहण करना (लाखा बाखी—,
 मंगथ—), आरंभ करना (गान—, गद—);
 कल्पना करना (धर यदि खर ह्य), गिनना
 (तात्र कथा धरा ना, ताके धरे दश जन),
 फल होना (धरध धरेछे); दद करना, विकृत
 होना (गाथा—, गदिते गना—, उल्लेख—);
 पैदा होना, प्रकट होना (गाछे रुग—, कल
 द—), समाना (धरे छिनिष धरे ना, गूथे
 शशि धरे ना), रुकना (रुठि—, गेठे—),
 जलना (उल्लेख—); रसोई करनेमें नीचे
 जल जाना (डाढ—, डाल—)। वि—
 पकड़ने वाला (छेले—, धागा—, हाँमें हाँ
 मिलानेवाला, गाह—छान); रसोई करनेमें
 जला हुआ। स'—आत्मसमर्पण (गुनिजे—
 देउडा)। —पाकड़ा स'—पकड़-धकड़, धर-
 पकड़, गिरफ्तारी। —काटे स'—बाँधाबाँधि
 परहेज, कठोर नियम। —छेँरा स'—पकड़ा
 जाना, छुआ जाना, पास आना (—देख
 ना)। —धरि स'—कई एकके द्वारा धारण
 (—रुँद निद्रे आना)। —बाँधा वि—
 निर्धारित। धरिशा, धरे क्रि—गापिशा,
 शबर समय तक (छेँ दिन—);
 सावधानीसे और धीरे धीरे (धरे धरे
 लेख)।

धरान (-नो) धरानो (क्रि परि १०)—
 पकड़ाना, पकड़वाना; आदत डालना
 (गद—), समाना, जलाना (उल्लेख—)।

धरिछे वि—पकड़नेवाला।

धरि स' = धरना।

धरि (-अ) वि—विचारने योग्य, गणना या

धारणा करने योग्य (धरिवात्र गक्षा नय,
 नगण्य, तुच्छ)।

धरि (-अ) स'—पुण्य कार्य; मजहब, पंथ,
 उपासनाकी पद्धति, गुण, स्वभाव, शक्ति
 (जलत्र—, काल—, योवनत्र—), यमराज।
 —घटे स'—सत्याग्रह, हरताल। धरिठः
 क्रि वि—धर्मके अनुसार। —छाँशे वि—
 नास्तिक। —धरि वि—पाखंडी। —नाश स'—
 धर्मका नाश सत विगाड़ना। —गिठा, —बाग
 स'—दत्तक पुत्रका पिता, धार्मिक सम्बन्ध
 जोड़कर स्वीकृत पिता। —शगाग स'—
 धर्मको साक्षी मान कर जो किया या कहा
 जाता है। —धाग वि—धर्ममें अत्यंत
 अनुरागी। —बुद्धि स'—धार्मिक बुद्धि। —उग्र
 स'—धर्महानिका भय। —लौकिक वि—धर्म-
 हानिके भयसे भीत। —गाँगा स'—धर्मको
 साक्षी रखकर प्रतिज्ञा ग्रहण। धरिधरि
 स'—न्यायालय; विचारक, हाकिम।
 धरिधरि स'—विचारकका अधिकार या
 कार्य। धरिधरि स'—विचारक। धरिधरि
 स'—दूसरा धर्म। धरिधरि वि—कट्टर, अपने
 धर्ममें अंधेकी तरह विश्वास और दूसरे
 धर्ममें द्वेष-भाव रखनेवाला। धरिधरि
 स'—धर्मका अवतार (विचारक, मालिक
 आदिके लिए सम्बोधन)। धरिधरि (-अ)
 क्रि वि—धर्मके निमित्त। धरिधरि (-अ)
 वि—धर्मसंगत, धर्मयुक्त।

धरिधरि स'—अत्याचार, ज्यादती, बलात्कार,
 सतीत्वनाश। धरिधरि वि, स'—धर्षण करनेवाला।
 धरिधरि (-अ) वि—धर्षण करनेके योग्य।
 धरिधरि (-अ) वि—अपमानित, पराजित।
 धरिधरि स्त्री—जिस स्त्री पर अत्याचार
 या बलात्कार किया गया है, निर्धातित,
 व्यभिचारिणी।

धना वि—नाना, कदवा सफेद, गोरा ।

धन मं—गाछि वन इत्यादि शान्ति घँसन
(—तावा) ; घँसनेका शब्द ।

धना (क्रि परि १) —शनिवा प्रज्ञा घँसना,
खसकना (नदी प्रज्ञा—, देवप्रज्ञा—) ।

धनादलि स—जानाठानि खींचानानी, ठेनाठेनि
धनसधना, कई आदमी मिलकर उठाने या
हटानेको चेष्टा ; गुत्थम-गुत्था ।

-धा प्रत्य—‘प्रकार’ अर्थका प्रत्यय (क्षि,
दो प्रकार ; रक्षा, अनेक प्रकार) ।

धा वि—चट, शीघ्र (—हट बाँट) ।

धाई स्त्री—दाँदी दाई, धाय ।

धाई स—धपड मारने आदिका शब्द ।

धाइ (क्रि परि ८) —धावा करना, दौड़ाना ।
सं—धावा (प्रिष्ठन—कड़ा) ।

धाहा सं—धका, टकर, चोट ।

धाइ, धाड़ सं—धांगड, मेहतर ।

धाड़ स—ढग, प्रकार, किस्म ।

धाड़ी वि, सं—जिते बच्चा हुआ है (बाळा व
धाड़ी) ; उमरदार (बूछा—), सरदार,
मुखिया ।

धाठ स—धातु ; स्वभाव, मिजाज ; शुक्र ।

धाठ (—अ) वि—अपनी स्वाभाविक
अवस्थामें स्थित, स्वस्थ, चगा । धाठ वि—
धातु सम्बन्धी, धातुका ।

धाठ स—सोना चाँदी आदि धातु, (आयुर्वेदमें)
वायु पित्त कफ रक्त मांस अस्थि आदि,
शुक्र, स्वभाव, (व्याकरणमें) क्रियावाचक
शब्दका मूल जैसे खा उठ कर आदि । —गठ

(—अ) वि—स्वभावमें परिणत । —घटित

(—अ) वि—धातुके सयोगसे तैयार
(—उदध) । —गोर्लथा (—अ) सं—शुक्र या

धातुकी कमजोरी । —धावक सं—छहागा
borax

धाडी स्त्री—धाई ।

धाहा सं—दृष्टिभ्रम, चकाचौंध ; ससल्या,
उलझन, पहेली । धावक—, मुलमुलैया ।

धान सं—धान । —दोड़ा, —डाना क्रि—धान
कूट कर चावल निकालना । —डाना क्रि—धान
बोना । —दावा क्रि—धानके पौधे रोपना ।
धानी वि—धानसा, कच्चे धानके रगवाला ।

धाइ सं—धनुषधारी, तीरन्दाज ।

धाहा, (—हा) सं—धधा, कामकाजकी चिन्ता
या चेष्टा ।

धाड़ (—अ) स—धान । धाइधौ सं—
(व्यगमें) धानकी शराब ।

धाण स—निंझि प्रशेठा सीढ़ीका डंडा ।

धाहा सं—धोखा, भाँसा । —दाह वि—
धोखेवाज । —दाहि स—धोखेवाजी ।

धावक वि सं—दौड़नेवाला, हरकारा ; धोत्री ।

धावन स—दौड़, धावा ; प्रक्षालन (पट—) ।

धावनान वि—जो दौड़ रहा है । धावित (—अ)

वि—जो दौड़ा है । [आधार (७१—)]

धाव सं—आवास, घर ; तीर्थस्थान (दाहि—) ;

धावनान (—नो), धावनाना (क्रि परि १६)—
मसलना, मलना ।

धाहा सं—वेतकी डलिया । —धाहा सं—धाहन
झिपाव । —धाहा वि—धाहाभूत चापलूस ।
क्रि—हाँ में हाँ मिलाना, चापलूसी करना ।

धाव स—उधार, ऋण, मंगनी ; सम्बन्ध
(लेशाप्रज्ञा—धाव ना), किनारा (नदी—) ;
तेजी, तीखापन ; धार (बूझ—) ।

धावक वि, सं—धारण करनेवाला, जिससे
दस्त स्कता या मल कड़ा होता है (—उदध) ।

धाव सं—धारण, ग्रहण ; रक्षण, वहन ।

धाव सं—बोध, निर्धारण, धारणा, स्मृति,
एकाग्रता, अनुमान । धावगौ (—अ) वि—
धारण करनेके योग्य ।

धाराविज्ञान वि-धारण करनेवाला । स्त्री—
धारविज्ञानी ।

धारा स'—प्रवाह धार (धारि—, अक्ष—),
वारिशा, भरना, परम्परा, तरतीव (काखर—),
ढंग (केगन—); कानूनकी धारा (१०१—
मते, १०७ धाराके अनुसार; १४४—धारि
हयेछे) ।

धारा (क्रि परि ३)—झण्णी रहना (तार काछे
पाँच टाका धारि) । [किताब ।

धारापात स'—धाराका गिरना, पहाडके
धारवाहिक, धारावाहौ वि—लगातार, क्रमिक,
सिलसिलेवार ।

धाराज (-अ), धाराजो वि—शान्ति, धरधार
पैना, तीखा, धारदार । [अठाका—] ।

-धारो प्रत्य—धारण करनेवाला (अल—,
धारो (-अ) वि—थोड़ा गरम, गुनगुना ।

धार्य (-र्ज-अ) वि—धारण करनेके योग्य,
निश्चित, निर्धारित (विवाह दिन—करा) ।

धार्यामि, धार्यामि (-यो) स'—धृष्टता, ढिठाई,
निर्दित व्यवहार ।

धिक अव्य—छि छि, धिक्कार ।

धिकिधिकि क्रि वि—धक्धक् देखो ।

धिशौ वि—ऊधमी, लड़की), दलका सरदार ।

धिनधिन स'—माचनेका ढग, बाजेका बोल ।

धिरा वि—जिहा धीमा ।

शौ स'—बुद्धि ज्ञान । —गान वि—बुद्धिमान ।

शौव स'—खेल मछुआ, धीमर ।

शौ वि—मृदु, धीमा (-गति), स्थिर,
धीर । —जावे क्रि वि—धीरे, शान्त भावसे ।

धुकधुक क्रि वि—धक्धक् देखो । [लाकेट ।

धुकधुकि स—कठहारमें लटकता हुआ लोलक,
धुकधुक स'—आशका-जनित्र श्रमपान घडकन ।

धुंनुनि स'—हाँफा, हृत्स्पन्दन । [छेददार वर्तन ।

धुंनि, धुंनि स'—चावल आदि धोनेका

धुं अव्य—धुं, धुं, धुं धत । [(—गाण) ।

धुं, धुं (-अ) वि—कपित, विदूरित
धुंति स—सर्दानी धोती ।

धुंवा, (-वा) स—धतरा ।

धुं स'—आगके धधकनेका शब्द, धधक,
सनाटा विस्तार उत्ताप आदिका लक्षण
प्रकाश (भाँटे—कत्र, बूकेर भितर—कत्र) ।

धुंनु स'—एक तुर्ई, नेनुआ ।

धुंनि, धुंनि स'—धूपदानी ।

धुंन, (धू-) स'—कम्पन, धुननेकी क्रिया ।

धुं, धुं स'—धूप, धूना ।

धुंनारी, धुंनारी, धुंनारी स'—धुनियाँ ।

धुंनि स'—धूनी, नदी (अर—) ।

धुंनु, धुंनु स'—नेनुआ ।

धुं स'—धग गिरनेका शब्द, धूप (शाश) ।

धुं स—धूम, समारोह । —धड़ाका स—
धूमधड़का, भीड़भाड़ । [धूमनी ।

धुंन, (-जा) वि—मोटा, स्थूल । स्त्री—

धुं, धुं स'—कीर्तन आदिमें जो मूल दोहा
पीछेवाले बार बार गाते हैं, स्थायी, टंक ।

धुं, धुं स'—धूम, धुआँ ।

धुं, धुं स'—जोशाल जूआ, धुरा ।

धुंन, धुंन वि, स—कार्य करनेमें
निपुण, दक्ष ।

धुंन स—कीर्तनके बाद भावके आवेशमें
आकर धूलमें लोटना-पोटना ।

धुं, धुं, धुं स'—धूल गद, मिट्टी । धुं-
जा स—गोनेके बदले विवाहके आठ दिनों

के अंदर दुलहिनका दुलहेके साथ पति-गृह
में आगमन । —जग, क्रि—धूल भोंकना,
घोखा देना, धिक्कारना । —पाठा जग क्रि—
अपमानित करना ।

धुं स'—धूप, धूना ।

धुं स'—धुंन धुआँ । —गान स'—ठागाक

धृञ्ते इत्यादि शब्दों तन्वाकृ आदिका धुआं पीता । —नाश्च स—तन्वाकृ आदिका धुआं पीनेवाला । धृञ् वि—धुङ्के रगका । धृञ्ठ (-अ) वि—धुआंसा रगवाला । धृञ्ठात् वि—जिससे धुआं निकल रहा है । धृञ्ठिठ (-अ) वि—धुङ्से ठका और धुआं-वाला । [रगवाला ।

धृञ् (-अ) सं—धूम, धुआं । वि—धुआंसा धृञ् (-अ) वि—धूर्त, चालाक, धोखेवाज । धृञ्, (नो) सं=धूना । —गृञ् सं—उड़ता हुआ धूलका बादल । —नाश्च वि—धूलमें मिला या मिलाया हुआ । धृञ्ठिठ (-अ) वि—धूलमें लोटता हुआ ।

धृञ् वि—खाकी । धृञ्ठिठ (-अ) वि—खाकी रगमें रंगा हुआ । धृञ्ठिठा स—खाकी रग । इठ (-अ, वि—धृत, पकड़ा हुआ ; गृहीत । इठे (-अ) वि—टीठ, बेहया । इठेठा सं—ठिठाई, बेहयापन ।

इव (-अ) वि=दर्शोद् । धृञ्ते-इसे स—उड़ल-उड़ल कर नाचनेका ढंग । धृञ्ठान (घटानो), धृञ्ठाना (क्रि परि १०) —काममें अनाड़ीपन दिखाना ; नाकामयाव होना ; पतला वस्तु होना ।

धृञ्ठे वि—धाड़ी उमरदार, पट्टा, जवान (बूझा ब्रह्म—द्राग) । स—ऊठविलाव ।

धृञ् अव्य—धृञ् घत, छी ।

धृञ्ठे वि—जिसमें धान पैदा होता है (—इमि) ; धानसे बना (—नद) । [योग्य ।

धृञ् (-अ) वि—ग्रहण करने या जाननेके धृञ्ठान स—ज्ञान ध्यान ।

धृञ्ठे स—धैर्य, धीरता ।

धृञ्ठे (घट्ठ-अ) स—धैर्य, सहिष्णुता ।

धृञ्ठे, धृञ्ठे, धृञ्ठे स—कथड़ी, मोटा कपड़ा ; घेला ।

धृञ्ठे स—स देह, धोखा, मिथ्यायी हुई शाल पीसकर और उसे बरफोनुमा काटकर तेल या घोंमें नूनकर पकायी हुई तरकारी ।

धृञ्ठे (क्रि परि ६)—धृञ्ठे हाँफना ।

धृञ्ठे (क्रि परि ६)—धुनना ।

धृञ्ठे स—धुलाई (—धृञ्ठे, —धृञ्ठे, धृञ्ठे) ।

—धृञ्ठे (-अ), —धृञ्ठे (-अ) वि—अच्छी तरह धुलवाया हुआ ।

धृञ्ठे, धृञ्ठे स—धृञ्ठे धोवो । स्त्री—धृञ्ठे, धृञ्ठे ।

धृञ्ठे (क्रि परि २०)—धोना, कचारना ।

धृञ्ठे (-अ) वि—धोया हुआ । धृञ्ठे स—जिस जलसे धोया गया है ।

धृञ्ठे (नो), धृञ्ठे (क्रि परि १४)—धुलवाना । वि—धोया हुआ (दापड़—क्रि १) ।

धृञ्ठे स=धृञ्ठे ।

धृञ्ठे स—धुलाई ।

धृञ्ठे स—धुस्ता, एक मोटा पशमी वस्त्र ।

धृञ्ठे (घट्ठ-अ) वि—धोया हुआ । धृञ्ठे स—प्रक्षालन, धोना ; हठयोगकी एक क्रिया ।

धृञ्ठे स—गहरी चिन्ता, ध्यान, रूप चिन्ता ।

—धृञ्ठे (-अ) वि—ध्यानसे जानने योग्य ।

—धृञ्ठे (-अ) वि—ध्यानमें लवलीन । धृञ्ठे

(-अ) वि—ध्यान करता हुआ । धृञ्ठे वि—ध्यान करनेवाला । धृञ्ठे (-अ) स—ध्यानका विषय ।

धृञ्ठे (धृञ्ठे-अ) सं—ध्वस, नाश, बव, क्षय (अन्त—) । धृञ्ठे वि—ध्वस करनेवाला ।

धृञ्ठे (नो) वि—ध्वस-योग्य । धृञ्ठे

सं—नाश होनेका रास्ता । धृञ्ठे

धृञ्ठे स—ध्वंस होनेके बाद जो पड़ा रहता है ; खडहर ।

धृञ्ठे (-अ), धृञ्ठे स—गता, निशान ध्वजा,

भंडा । क्षब्धो वि, सं—जो भंडा लिये हो,
पाखंडी (धर्षक्षब्धी) ।

क्षनि सं—आवाज, शब्द । क्षनिठ (-अ)
वि—शब्दित, बजाया हुआ ।

क्षल (-अ) वि—नष्ट, पतित ।

क्षल (-अ) सं—अंधकार, अंधेरा ।

न

न वि, सं—नव नव, ६ (नौगक); नातेमें
चौथा (—नेपि, —काका) । —बड़े स्त्री—
बड़ी मझली और तीसरी बहूके बाद चौथी
बहू ।

नहेछ, नहेछ सं = नलिछ ।

नहेले = नशिले । नउव = नख ।

नहे सं—नववीं तारीख ।

न सं—नंबरका सक्षिप्त रूप ।

नक सं—नकल, अनुकरण, प्रतिलिपि । वि—
नकली, बनावटी, जाली । —विम सं—
नकल नवीस ।

नका सं—नकाशीदार गहना, रेखाचित्र
(बाँझि—); मजाकका लेख या नाटक ।

नकां सं—नकाशी ।

नकित, नकीव सं—नकीव, राजसभामें आगन्तुक
की सूचना देने वाला नौकर ।

नकुल सं—नेलेन, बखि नेवला । [भाँड़ ।

नकुले वि, सं—नकल या मजाक करनेवाला,

नकु (नक्त अ) स—रात ।

नकु (नक्त-अ) स—कुछीर मगर, घड़ियाल ।

नकु (नक्त-अ) सं—नक्षत्र, तारा, भाग्य ।

—गठि, —वग सं—दूटते हुए सितारेका

वेग । —गाठ सं—सितारेका गिरना,

उल्कापात, नामी आदमीकी एका एक

मृत्यु या अवनति ।

नथ, (नथत्र) सं—नाखून । —नथ सं—

किसी विषयमें प्रत्यक्ष और सूक्ष्म ज्ञान ।

—कूनी, —गू सं—नाखूनका कोना बैठ

कर उगली पक जानेका रोग । नथावाठ सं—

नाखूनसे आघात । नथी वि—नाखून वाला ।

नगण्य (-अ) वि—तुच्छ, मामूली ।

नगण वि—नकद । नगण वि—काम समाप्त
करते ही जो मजदूरी लेता है (-नखूत्र) ।

नग (-अ) वि—ऐलन, नोटों नंगा, उघाड़ा ।

स्त्री—नग्निका ।

नगर (नंगर), (नंग-), नोउर सं—लगर ।

नछे अच्य—नछूवा, नशिले नहीं तो, न हो तो ।

नछात्र वि—नीच, पाजी, लंपट ।

नख सं—टप्टि, नजर, खयाल; रखवाली

(—बाथा); लक्ष्य (डैटू—), लालच-

भरी नजर (—नेउवा, डाँहेनेत्र—); उदारता या

कंजूसीकी मात्रा (बड़—, छोट—); पसद

(नेक—, खू—); भेंट, उपहार । —कनी

वि—जिसे नजरके अदर रखा गया है; जो

पहरेके बाहर नहीं जा सकता, नजरबंद ।

नखवाना सं—नजराना, भेंट, उपहार ।

नखि, नखी सं—नजीर, दृष्टांत, मिसाल ।

नछेछे, (—थछि) सं—परेशान करनेवाले छोट-

मोटे काम । नछेछे वि—परेशान करनेवाला,

भभटिया (काम) ।

नफफ, नफनफन सं—स्पंदन, कंपन, हिलना,

उलट-फेर (कथात्र— शब्द ना) ।

नफनफ, (—बड़) सं—लगा रहकर हिलना या

भूलना । नफनफ, नफवफे वि—लगा रहकर

हिलता या भूलता हुआ ।

नछा सं—बाह्य भुजा ।

नछा (क्रि परि १)—हिलना, कांपना, उलट-

फेर होना (कथा—, झूझ—) । वि—हिलता

हुआ (—काठ) ।

नङीन]

नङान (-नो), नङाना (क्रि परि १०)—नाञ
जटा हिलाना, सरकाना, हटाना ; उलट-
फेर करना ।

नङि स—नाछि लाठी, छड़ी, सहारा (६ छः—) ।

नङ (-अ) वि—रुं अवतत, झुका या झुकाया
हुआ (—नङ्क) । —जात्र वि—घुटने टेक
कर बैठा हुआ । नङि स—प्रणाम, विनती,
प्रार्थना ।

नङून वि—नूतन नया, नूतन ।

नङूदा अव्य—नङ्क, नङ्किल नहीं तो । [गहना ।

नङ स—नय, वालीकी तरह नाकका एक

नङि स—नत्थी ।

नङ स—नदीका पुलिग-वाची नाम (निङ्—
दक्षगुङ्क—) । नङी स—नदी, दरिया ।

नङीमाङ्क वि—जो भूमि या देश नदियोंके
रहनेसे उपजाऊ है । नङीमूथ स—नदीका
मुहाना ।

नङवि—छडौल, मोटा-त्ताजा, सुडर, कोमल
(—काछि, —जङ्क) ।

ननङ, ननङी, ननङिनी, ननङा स्त्री ननङ ।

ननि स—नवनीट, नाथन मक्खन ।

ननङि स—ननङी ।

ननङि (-अ) वि—आनन्दित, खुश ।

नङ्क स—जङ्क नौकर ।

नव (-अ) वि—नया, नवीन । —दूनाव

सं—अभी पैदा हुआ बालक । —जौवन

स—नयी जिदगी । —व्र स—नया

बुखार । —उङ्क स—कुछ भी नहीं । —व्र

(-अ) स—नया साल, सालका आरम्भ ।

—विधान सं—ब्राह्म समाजकी एक शाखा ।

नद (-अ) वि, सं—नद नौ, ६ । —शत्रु सं—

शरीरके नव छिद्र (दो आखे, दो कान,

नाकके दो छेद, मुख, पायु और उपस्थ) ।

—नङ्क स—कले अरवी आदिके पत्तोसे

बनायी हुई देवीकी मूर्ति । —व्र सं—

अलंकार-शास्त्रमें कथित नव रस (शृंगार,

हास्य, करुण अद्भुत, रौद्र वीर, भयानक,

वीरमत्स और गान्धर्व) । —श्री, —जङ्क

स कायस्थोंकी नां श्रेणियां ।

नवनी, नवनीट (अ) स—ननि मक्खन ।

नवङ (-अ) स—नया प्राण काटनेके बाद

करने योग्य अनुष्ठान जिसमें चावलके चूर्ण

दूध गुड़ नारियल अदिक साथ मिलाकर

देवताको चढ़ाने और खाये जाते हैं ।

नवङा स्त्री—नयी व्याही स्त्री, नयी तुलहिन ।

नवङे वि, सं—नव्ये, ६० । [हालका ।

नव (-अ) वि—नया, तरुण, आधुनिक

नवङ स—अंगरेजी नव वर मास ।

नवङ स—उपन्यास ।

नवङावड स—आकाश-मंडल ।

नव स—प्रणाम (नवङ-नवः) ।

नव स—नङि प्रणाम, झुकना ।

नवनी (-अ), नव (-अ) वि—झुकाये जा

योग्य, लचीला । नवनीड स—लचीलापन

नवङ स—एक निम्न श्रेणीका वृद्ध ।

नवङा स—प्रणाम, नमस्ते । नवङी

सं—नमस्कार करनेवाला । नवङाव (-अ)

वि—नमस्कारके योग्य । नवङ (-अ) वि—

जिते नमस्कार किया गया है । नवङाव

स—विवाहमें मान्य कुटुंबियोंको दिये

जानेवाले कपड़े । [पूजनीय । स्त्री—नवङा ।

नवङा (-अ) वि—प्रणम्य, नमस्कारके योग्य,

नवङ (-अ) वि—नव झुका या झुकाया हुआ ।

नवङा स—नमूना, बानगी ; आदर्श ।

नवङ स—नवर, सख्या, अंक । नवङी वि—

नवरवाला ; प्रसिद्ध, अधिक मूल्यवान

(—नङि) ।

नव (-अ) वि—विनीत (—जङ्क, —जङ्क)

नत, झुका हुआ। नयन स—चिनय ;
कोमलता, लचीलापन।

नय वि, स—नव, नौ, ६, नहीं (इच्छा—कथा)।
—इय वि—विश्रुखल, अस्तव्यस्त, बिखेरा
हुआ।

नय स—नीति, कानून। नयक वि—कानूनदां।
नय क्रि—नष्ट नहीं है। अव्य—नहीं तो, या
(इय नञ—मिथा)।

नयन स—नेत्र आँख (—काय, —जन) ;
ले जाना।—नाय स—कटाक्ष।—नयक स—
नैस्तुक कपडा।

नयना, नयनि स—नेत्र, नयन।

नयानखूनि, (नयन-) स—नयनमा पनाला,
नाली, मोरी।

नय स—नय आदमी, नर।—कथान स—
मझात्र थूनि खोपड़ी।—नय स—पशुके
समान मनुष्य।—नयक स—संसार।
—नयन स—नाशित नाई, नाऊ। [मोरी।

नयनमा, नयनमा, नयनमा स—पनाला, नाली,
नयन वि—कोमल, नरम, शांत, दयालु,
शिथिल, कम; खराब।—नयन वि—नरम
और कडा। [नरमाना, कोमल होना।

नयनान (-नो), नयनाना (क्रि परि १६)—
नयन वि—नीच, पापी। [नहरनी।

नयन स—नाखून काटनेका एक औजार,
नयन स—नाच, नृत्य।

नयनमा स—नयनमा।

नयित (-अ) वि—ध्वनित, बजाया हुआ।

नय स—नय नल, घातुका पोला गोल खंड।

—नाय स—नलके ऐसा पोला डठलवाला
एक लंबा तृण, नरकट।—नाय क्रि—गुप्त
वस्तुकी खोजके लिए मंत्रसे नल चलाना।

नय स—लड़ी (तिन—, तिलड़ी)। नय,

नय वि—नलवाला (इनना, इननी वनूक)।

नयित, नयित स—हुक्के आदिका खडा लकड़ी-
वाला नल जिस पर विलप बैठाया जाती है।

नयौ, नयि, नयिका स—छोटा नल।

नयन स—खजूरका नया गुड।

नष्ट (-अ) वि—नाशप्राप्त, नष्ट; विकृत, खराब,
बरबाद, दुष्ट।—नष्ट स—भाद्र कृष्णा और
शुक्ला चतुर्थीका चंद्र, जिसके देखनेसे दोष
लगता है।—नष्ट वि—विकृत बुद्धि वाला,
जिसकी बुद्धि बिगड़ गयी है। नष्टा स्त्री—भ्रष्टा,
व्यभिचारिणी। नष्टावि स—नष्टावि जयम,
पाजीपन।

नयित, नयौव (नसीव) स—नसीव, भाग्य।

नयव, नयव (लशकर) स—सिपाही, खलासी।

नय (-अ) स—छुँघनी, (व्यगमें) बहुत
अल्प परिमाण, जरासा। [नौबतखाना।

नयव स—नयव नौबत।—थाना स—
नयन स—ताशका नहला।

नयिले, नयिले अव्य—ना इहेले न होनेपर,
नहीं तो।

नय, नय क्रि—नहीं (नय नय, नयि नय)।

ना, ना स—नाका नाच नौका।

ना अव्य—नहीं, मत (कवि ना, थैला ना)। स—
अनुरोध-सूचक शब्द (नयि ना, ना ना) ;
अधिकता-सूचक शब्द (कठ ना इच्छा) ; सदेह-
युक्त प्रश्न-वाचक शब्द (थावे ना ? न
खाओगे या खायगा) ? अव्य—या, अथवा
(नय ना मिथा)।

नाई स—नाशकारा, अथवा वज्रोंकी जिदमें
उनकी इच्छाकी पूति; प्रोत्साहन, सिर
चढ़ाना (इच्छा—नयि नाथ थैला ना)।

नाई स—नाई नाभि, चक्रमध्य, निहाई।

नाई, नि—क्रियाका अभाव-वाचक भूतकालिक
शब्द, नहीं हुआ है (अथनय इय नाई, काव
नय इय नि, नहीं हुआ है)। नाई, नई स—

अभाव-वाचक शब्द (केवल वत्तमानमें—
शाङ्गि—, बाङ्गि—, ज अशान—) ।

नाईशोखन सँ—नाइशोखन गैस ।

नाई सँ—नाई लौकी ।

नाइरा (क्रि परि ४)—नहाना, स्नान करना ।

नाइशान (-नो), नाइशाना (क्रि परि १२)—
नहलाना, स्नान कराना ।

नाइ सँ—नाइका नाक । —नाई, वि—छिन्नान
नकटा, बेहया । —थर, नाइथर सँ—थर
देखो । —शरि सँ—नकफूल । —नाइ क्रि—
नाकसे कफ निकाल फेंकना, छिनकना ।

—डाक, क्रि—सोतेमें नाकसे शब्द निकलना,
खराटे भरना । —दिशाना क्रि—नाक छेदना ।

—निउशाना क्रि—घृणासे नाक चढ़ाना
या सिकोड़ना ।

नाइ वि—नर रह, रहित ।

नाकानि-जावानि सँ—जलमें डूबनेसे नाक और
मुखमें जलका प्रवेश ; (व्यगमें) नेस्तनवूद ।

नाकाडा, (-डा), नाकाडा सँ—नगाड़ा ।

नाकान वि—श्वदान, ब्रह्म नेस्तनवूद ।

नाकि अव्य—नाइ कि क्या (छुनि—कवि ?
गागन—? ताई—?), सदेहमें (ज—नाक;
गोछ ?) ।

नाथान, नाथु वि—असतुष्ट, नाथुश ।

नागकेशर स—नागकेशर ।

नागवि—नागर-सम्बन्धी, नागरिक । सँ—
छैला, प्रमी । —जाना सँ—घूमनेवाला
भूला या हिडोला ।

नागवा (नागवा) सँ—एक देशी जूता ।

नागवानि सँ—बनिकठा रसियापन, लपटता ।

नागवि (नागवि) सँ—मिट्टीका घड़ा
(रट्टा—) ।

नागाइ क्रि वि—बखिदाय, अकृष्ण लगातार ।

नागाइ, (-न) क्रि वि—शरीर तक (देखाइ—) ।

नागाइ सँ—श्रीछ पहुँच (एठ छेँह दे—
नाई ना) ।

नागेश्वर सँ—नागेश्वर ।

नाठ सँ—नाच, नृत्य (-लगाओ) । नाठ,
नाठनि, नाठुनि सँ—नर्तन, नाच । नाठनी,
नाठनी वि—नाचनेवाली । नाठिये वि—
नाचनेमें निपुण, नाचनेवाला ।

नाठ (क्रि परि ३)—नाचना । [नचाना ।

नाठान (-नो), नाठाना (क्रि परि १०)—

नाठान वि—निष्ठाना लाचार ।

नाछाड वि—न छोड़नेवाला, पिछला ।
—बाना वि, सँ—फटकारने या दुतकारने
पर भी जो पीछा नहीं छोड़ता, जिद्दी ।

नाछि सँ—शासक (नवाद—) ।

नाछि सँ—अदालतका एक उच्च कर्मचारी,
नाजिर । [नाकोदस ।

नाइशान वि—श्वदान, नादान नेस्तनवूद,

नाठे सँ—नाच, अभिनय । —बनिव सँ—
मदिरके सामनेवाला स्थायी मंडप जहाँ नाच-
तमाशे होते हैं ।

नाठाई सँ—नाठाई परेता ।

नाडा (क्रि परि ३)—हिलाना, घोंटना । स—
हिलावट । —गड़ा स—हिलावट, स्थान
बदलना (गोशीदे—करा) । —नाडि सँ—
बार बार स्थान बदलना ।

नाडान (-नो), नाडाना, नाडाना (क्रि परि
१०)—हिलाना, स्थान बदलना ।

नाड़ी, नाडि स—नाड़ी, नाड़ीका स्पंदन
(—छान, —छेपा) । —नक्षत्र सँ—जन्मका
समय और नक्षत्र, पूरा विवरण । —डूँडि
सँ—अत्र, आँतें । [खानेवाले श्रीकृष्ण ।

नाडू सँ—नाडू लड्डू । —गोथान सँ—लड्डू,

नाउखानाई (नाउ-) स—पोतित या नातितका
पति । नाउवटे स्त्री—नाती या पोतेकी पत्नी ।

नाति सं—पोता, नाती । नातिनौ, नातिनी
स्त्री—पोतिन, नातिन ।

नाति वि—न-यति अनधिक, ज्यादा नहीं
(—नौर्ध) । —श्रीलोक (—अ) वि—गुण-
गुना, अल्प गरम । [सौभाग्यवती ।

नाथ सं—प्रभु, पति ।—बडी स्त्री—गधवा
नाद सं—शब्द, नाद, गर्जना । नादिठ (—अ)
वि—शब्दित, ध्वनियुक्त । नादी वि—शब्द
करनेवाला ।

नाद, नाद सं—लीद (घोड़ा—) । नादि,
नादि स—छोटे पशुकी लीद (छात्र—,
ईश्वर—) । [तोंदवाला) ।

नादा स—जाना मटका । नादा-पेटे वि—
नाश-शून्य वि—मोटा-मोटा, गोल-गोल स्थूल
और कोमल (—कशात्र) ।

नाना, नानान वि—विभिन्न, अनेक (नानाप्रकार,
नानाविध, नानाशत ; नानान काज) ।

नानी सं—नाटक आदिके आरंभमें मंगलाचरण ।
—ग्रन्थ स—विवाह आदि सस्कारके पहले
पितरोंका श्राद्ध ।

नापक्ष वि—अपक्ष नापसद ।

नापिठ सं—क्षेत्रकार नाई, नाऊ, हज्जाम ।
स्त्री—नापितानी, नापितानी ।

नाका सं—नफा, लाभ ।

नावा (क्रि परि ३)—नागा उतरना ।

नावान (नो), नावाना (क्रि परि १०)—
नावाना उतरवाना, उतारना ।

नावालक वि, सं—अष्टाष्टवश्र नाबालिग ।

नाविक सं—मल्लाह, जहाज चलाने वाला ।

नादी वि—देरमें या अंतमें होनेवाला (—वर्ष,
—काल) ।

नाथ (—अ) वि—नाव जहाज आदिके चलने
योग्य ; नाव आदिके द्वारा पार होने योग्य ।

नाति सं—नाई नाभि, चक्रमध्य ।

नाथ सं—आथा, जख्खा नाम, यश (—उक,
शनाथ, शनैग), केवल वातमें (नाथ बड़नाक) ;
नाममात्र । नाथः क्रि वि—नाथ नामसे ।
—ज्ञात वि—नामवर, प्रसिद्ध । [नामंदूरी ।

नाथशूर वि—नामंजूर । नाथशूरि स—
नाथता सं—पहाड़ा ।

नाथा (क्रि परि ३)—नावा उतरना ; घटना
(ज्ञात—; पत्र—), नीच या हीन होना ।

नाथान (नो), नाथाना (क्रि परि १०)—
नावाना उतरवाना उतारना । पेटे—
क्रि—पतला दस्त होना ।

नाथा प्रत्य—नामवाला (थाठ—) । सं—
अधिकार-पत्र (डकानठ—) ।

नागावनी, (—वलि) सं—नामोंकी फिहरिस्त,
देवताके नामकी छापवाली चादर ।

नाथी वि—नाथज्ञात ।

नाथेव सं—जमींदारका गुमास्ता या
तहसीलदार, नायब (—शूनगो) । नाथेवि
सं—तहसीलदारका पद । नाथेवी वि—
तहसीलदाराना (—ठान) ।

नाथश, नाथश, नाथशि सं—कगनालेव नारंगी ।

नाथा (पद्यमें) (क्रि परि ३)—ना थाथा न
सकना ।

नाथिकेल, नाथिकेल, (—कल, —काल) सं—
नारियल । नाथिकेली—, नाथिकेल वि—
नारियलकी शक्कल (—कूज), नारियल-
सम्बन्धी । [धूक ।

नाल सं—नल, लताका डंठल ; नाल, लार,

नालायक वि—नालायक, अयोग्य ।

नालिक, नालीक स—एक पुरानी बंदूक ।

नालिता, नालाठ स—पाठनाक पट्टाकी पत्ती ।

नाली, नालि स—नासूर (—वा), sinus

नाथ सं—नाथ, धवस (अर्थ—, थाग—,
गव—) । नाथन सं—वध, हत्या । नाथिठ

(-अ) वि—जिसका नाश किया गया है।
नाश वि नाशवान; नाशक। स्त्री—
नाशनी।

नाशपाति स—नाशपाती।

नाश (क्रि परि ३)—नाश करना।

नाश स—नाश हुआ।

नाश स—नाक (-रु), नाक के भीतर फोड़ा।

नाश (नास्ता) स—नास्ता, जलपान।

नाशनाश वि—नाशनाश नेस्तनष्ट।

नाशि अव्य—नाश नहीं है।

नाशिक वि—वेद ईश्वर या शास्त्रीय धर्ममें
विश्वास न करने वाला; नास्तिक।
नाशिकता, नाशिका (-अ) स—
नास्तिकका भाव।

नाशक क्रि वि—यनर्द्ध, उद्धृष्ट नाशक।

नाश क्रि वि—नाश; बलिक, नहीं तो; किदा
अथवा; यगता लाचारी हालतमें।

नाशन (-नो), नाशाना, नाशाना (क्रि परि
१२)—नाश करना नहलाना। [नहीं है।

नाशि क्रि—नाश, नष्ट अभाव-वाचक शब्द
नि अव्य—नाश क्रियाका भूतकालिक अभाव-
वाचक शब्द, नहीं हुआ है (नाशे नि,
इति नि)।

निशाननिश स—न्यूमोनिया, सन्निपात।

निशान (-नो), निशाना, निशाना (क्रि परि
१७)—निशान।

निः उप—अभाव निश्चय अधिकता आदि सूचक
उपसर्ग। —नाश वि—निश। —नाश वि—शब्द-
रहित। —नाश वि—जिसका शेष बचा नहीं है,
समूचा। —नाश स—मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण।
—नाश स—साँस, दम (-गोना, -दम);
साँस लेनेका समय (एक निःश्वस)। —नाश
स—साँसका छोड़ना। —नाश (-अ)
वि—साँसके रूपमें निकला हुआ। —नाश

(-अ) वि—नश्वर शरीर। —नाश
वि—नाशक सतानरहित, लावण्य।
—नाश (-अ) वि—सम्बन्ध-रहित। —नाश
वि—नाशक-शून्य यात्रामें रुपया-पैसा रहित;
खाली-हाथ। —नाश वि—सहायक-रहित।
—नाश वि—दमन सुन्न। —नाश वि—सा-
रहित। —नाश वि—निकालने वाला।
—नाश स—निवासन, निकाल देना।
—नाश (-अ) वि—निकाला हुआ। —
वि—दृष्टि, मुफलिस। —नाश, —नाश स—
तरल वस्तुका प्रवाह।

निश वि—समीप, पास (नाश वि निशके ना
निशके, नाश वि—नाशके, निशके)। निशके,
(-र) स—नाशके पासमें स्थिति। निशके
वि—निशकेमें स्थित पासवाला।

निश स—समूह (नाश स—)।

निश, (-न) स—नाशक कसौटी। [निश।

निश स—मुसलमानोंका विधवा-विवाह,

निशान (-नो), निशाना, निशाना (क्रि परि
११)—लीपना, पोतना। वि—लीपा या
पोता हुआ।

निश स—नाश निवासस्थान, घर।

निश, निश स—निकास (नाश—नाश),
समाप्ति (नाश—) ; नाश (नाश निश)।

निश, निश स—नाश घर, मकान।

निश स—छोटी तराजू जिसमें सोना चाँदी
आदि तौला जाता है।

निश (निश) स—भकार, ध्वनि।

निश स—फेंकनेका भाव, त्याग, अर्पण।

निश (-अ) वि—फेंका हुआ, अपित।

निश वि—फेंकनेवाला।

निश वि—बिना-खच।

निश (-अ) वि—दश हजार करोड़।

निशठ (-अ) वि—खोदा हुआ ; गाड़ा हुआ।

निश्चिन् वि—समस्त, सम्पूर्ण । स—सारी दुनिया ।

निश्चिन् वि—निर्दोष, त्रुटि-रहित ।

निश्चिन् स—साँकल, वेदी ।

निश्चिन् स—निर्गमन । [अथ समझना कठिन है ।

निश्चिन् (-अ) वि—अत्यन्त गुप्त, गुह्य, जिसका

निश्चिन् (-अ) स—रोक, दमन, दड, कष्ट ।

निश्चिन् वि—दमन करनेवाला ।

निश्चिन् स—शब्दकोश ।

निद्रा (क्रि परि ३) = निद्रा (पद्यमें— निद्राङ्गि) ।

निद्रा स—समूह (वृक्ष—) ।

निद्रा वि—नीचा । स—निद्रा लीची ।

निद्रा स—शार्ङ्ग लहगा, ओढ़नी ।

निद्रा (अ) वि—छेद-रहित ।

निद्रा वि—निखालिस, विशुद्ध ।

निद्रा स—नाश, लावारण, दला, वरण ।

निद्रा (-अ) वि—आपना, निजका, स—स्वयं खुद (निद्रा व्रथेहि) । —अ (-अ)

स—अपना धन । वि—निजका (-अ) ।

निद्रा वि—शब्द-रहित, सन्नाटा छाया हुआ ।

निद्रा वि—शृङ्गान छडौल, गोल ।

निद्रा वि—निर्दयी, निटुर, बेरहम ।

निद्रा स—काम करनेमें देर या दिलाई ।

निद्रा वि—काम करनेमें देर करने वाला, ढीला ।

निद्रा, निद्रा स—अथ-एक-एक छेद-उपादन खेतमेंसे घास पात उखाड़ना । निद्रा, निद्रा स—खुरपी ।

निद्रा (-नो), निद्रा, निद्रा (क्रि परि ११)—खुरपीसे घास पात खोद कर फेंकना ।

निद्रा (-अ) स—पाश चूतड़, नितम्ब ।

निद्रा स्त्री—छडौल नितम्ब वाली स्त्री ।

निद्रा स—निद्रा चैतन्यदेवके एक भक्त ।

निद्रा (-अ) क्रि वि—अत्यन्त, निहायत ।

निद्रा (पद्यमें) क्रि वि—रोज, नित्य ।

निद्रा (-अ) वि—नित्य, चिरस्थायी । क्रि वि—सदा, रोज । —अ स—नित्यकी पूजा या सेवा ।

निद्रा वि—निश्चल, गति-रहित ।

निद्रा (पद्यमें) स—नींद, निद्रा ।

निद्रा वि—निर्दयी, बेरहम । [स्मारक वस्तु ।

निद्रा स—चित्र ; उदाहरण ; प्रमाण, निद्रा स—ग्रीष्मकाल, गर्मी ।

निद्रा स—मूल कारण, निदान । वि—अतिम (-कान) । क्रि वि—एकान्त, अन्ततो गत्वा (-गत्) ।

निद्रा वि—कठोर, दसह (-अथ, -वृद्ध) । निद्रा, (-अ) स—एकाम्र चित्तसे ध्यान ।

निद्रा (-अ) वि—आज्ञाप्राप्त, निर्दिष्ट ।

निद्रा वि—अन्तिम । क्रि वि—निदान, अन्ततो गत्वा ।

निद्रा स—आदेश, आज्ञा, निर्देश ।

निद्रा वि, स—आज्ञा देनेवाला ।

निद्रा स—बूरा नींद (-आना, -आना ; -आना, -आना, सोना) । —अ स—बूरा आना नींद आना । —अ (-अ) वि—निद्रित, सोया हुआ । —अ वि—नींद लानेवाला ।

—अ वि—नींद लगा हुआ, निद्रालु ।

—अ (-अ) वि—निद्रित, सोया हुआ ।

—अ स—बूरा, निद्राका आवेश, नींद लगाना । —अ स—बूरा आना नींदका दूटना । —अ (-अ) वि—नींदमे डूबा हुआ । —अ वि—नींदके कारण सुस्त ।

—अ वि—निद्रासा, जिसे नींद लगी है । निद्रा वि—बूरा सोया हुआ । निद्रा (अ)

वि—नींदसे जगा हुआ ।

निधन स—मरण, मृत्यु, नाश ।

निधान स—आधार भंडार ; स्थापन ।

निधि स—आधार (छा—, धन—), धन, धरोहर । निदेश (-अ) वि धरोहर रूपसे रखने योग्य ।

निगान स—शब्द, गजना । निगादिठ (-अ) वि—शब्दित, ध्वनियुक्त ।

निन्दा, निन्द स—निंदा, शिकायत, बदनामी, कलक, दोषारोप । निन्द वि—निंदा करनेवाला । निन्दन, निन्दावा स—निंदा करनेका काम । निन्दनीव (-अ), निन्दाई (-अ), निन्दा (-अ) वि—निंदाके योग्य । निन्दित (-अ) वि—निंदा के घृणित । निन्दू वि—निंदा करनेवाला, शिकायती ।

निपटे वि—अत्यंत, पूर्ण । क्रि वि—एकदम ।

निपटन स—नीचे पतन । निपठित (-अ) वि—नीचे पतित, गिरा हुआ ।

निपाठ स—विनाश, मरण (भक्ष—, भूमि— बाँध) ।

निपाठन स—नीचे निक्षेप, हत्या, (व्याकरणमें) नियमका व्यतिक्रम । निपाठित (-अ) वि—नीचे गिराया हुआ ।

निषीड़न स—उपशोषन पीड़न, दुःख प्रदान ; मर्दन, मसलना । निषीड़क वि—पीड़न करनेवाला । निषीड़ित (-अ) वि—जिसका पीड़न किया गया है । [मुख ।

निव स—कलमसे लगाये जानेवाला धातुका निवृद्ध (-अ) वि—बंघा हुआ ; जड़ा हुआ, रचित, स्थिर (—दृष्टि) ।

निवर्निव (निवनिव-अ) वि—निर्वाणोन्मुख, बुतनेवाला ।

निवर्नो क्रि=निवान । निवृद्ध (-अ) वि—निर्वाण-वाइ बुतनेवाला, बुता हुआ ।

निर्वह (-अ) स—श्रवण निवध, लेख,

प्रस्ताव, नियम, बंधन । निर्वहण क्रि वि—के हेतु, के कारण (वृद्ध—) ।

निर्वर्द्ध वि—रोकनेवाला । निर्वर्द्धन स—निवृत्ति, रोक, लोट आना । निर्वर्द्धित (-अ) वि—रोका हुआ, लोट आया हुआ ।

निवर्तन स—घर, रहनेका स्थान ।

निवृह (-अ) स—गुरु ससृह । [घटना ।

निवा, नवा (क्रि परि ५)—बुतना, बुझना,

निवाउ वि—वायु-रहित, वायु न रहनेसे स्थिर ।

निवान (-नो), निवानो, निवर्नो, निवानो (क्रि परि ११)—बुताना, बुझाना ; घटाना । वि—बुता हुआ ।

निवावण—निषेध, रोक । निवावणीव (-अ),

निवाव (-ज-अ) वि—रोकनेके योग्य ।

निवावक वि, स—रोकनेवाला । निवावित (-अ) वि—रोका हुआ, निषिद्ध ।

निवाग स—वसति रहनेका स्थान, घर, गाँव, देश (आगनाव—दोषाव ?) । निवागी वि, स—राजिना रहनेवाला । स्त्री—निवागिनी ।

निविड़ वि—घन घना, गाढ़ा (—दृक्काव,—वन) ।

निविष्ट (-अ, वि—एकाग्र, दत्तचित्त, प्रविष्ट ।

निवीत स—उद्वेग ओढ़ना, गलेका जनेऊ ।

निवृद्ध (-अ) वि—नाश, विवृत रका हुआ ।

निवृद्धि स—रोक, विराम, वैराग्य ।

निवेदन स—आपन जताना ; प्रार्थना ;

समपण (वाद्य—) । निवेदित (-अ) वि—

अर्पित, निवेदित । निवेदनीव (-अ),

निवेष्ट (-अ) वि—निवेदन या अर्पण करनेके योग्य ।

निवेश स—स्थापन, प्रवेश, ढेरा डालना ।

निवेशित (-अ) वि—स्थापित, प्रविष्ट ।

निवेशन स—प्रवेश । निवेशक वि, स—स्थापन या प्रवेश करनेवाला ।

निबोनिबो वि=निवनिव ।

निष्ठ वि—सदृश, तुल्य सा (दृक्छेन—शया, दूधके फेन-सा बिछौना) ।

निष्ठ वि—ठाँठ-शृंग जिसमें शिकन न हो, ठेड़ान शृंग मिलावट-रहित, खरा, शुद्ध ।

निष्ठ (-अ) वि—एकांत, निर्जन । सं—गुप्त स्थान (निष्ठित वज्रि) ।

निष्ठ सं—निष्ठ नीम । [गृध्याश्च बहुत घायल ।

निष्ठ- उप—आधा (—ब्राह्मी) । —शून वि—

निष्ठ सं—नवग, दून नमक । —शत्राग वि—

अकृच्छ, कृच्छ नमकहराम । —शत्रागि सं—

नमकहरामी । —शानान वि—कृच्छ नमक-

हलाल । —शानानि सं—नमकहलाली ।

निष्ठि सं—घोमें तला हुआ, मैदेका नमकीन

खाद्य, नमकीन समोसा ।

निष्ठ (-अ) वि—डूबा हुआ, लवलीन ।

निष्ठजन सं—डूबाना, डूबकर स्नान । निष्ठजित

(-अ) वि—डूबा हुआ ।

निष्ठ सं—न्योता (—थांश, —वक्ता) ।

निष्ठित (-अ) वि—जिसे न्योता दिया गया है ।

निष्ठै सं—चैतन्य-देवका मातृ-वृत्त नाम ।

निष्ठ (-अ) स—कारण हेतु, निमित्त, बनाने-

वाला (—कारण जैसे, घटका कुम्हार),

शुभाशुभ लक्षण (निर्निष्ठ) ।

निष्ठ, निष्ठ सं—पलकका गिरना, पलकके

गिरनेमें जितना समय लगता है, क्षण ।

निष्ठान सं—दावा मूँदना । निष्ठानित (-अ)

वि—मूँदा हुआ ।

निष्ठ (-अ) वि—नीच, नीचा (—भूमि,

—शायी), नीचेवाला (—निष्ठ, —ठाँठ) ।

सं—निष्ठ स्थान । —श (-अ) वि—नीचे

जाने वाला । स्त्री—निष्ठग ।

निष्ठ (-अ) स = निष्ठ ।

निष्ठ (नियत -अ) क्रि वि—सदा । वि—

नित्य ; स्थिर ; संयत, रोका हुआ ।

निष्ठि सं—विश्व विधान भाग्य, किस्मत ।

निष्ठ वि, सं—नियामक, परिचालक, शासक ।

स्त्री—निष्ठि । निष्ठित (-अ) वि—निष्ठित

नियमसे बंधा हुआ, परिचालित,

सयत ।

निष्ठ सं—नियम, पाव दो, विधि, धारा,

कानून, क्रम, संयत आचार (अनिष्ठ),

सयम व्रत आदि (—उद्य) । —अश्मात्रे,

निष्ठमात्रे कि वि—नियमानुसार । निष्ठमन

सं—अवस्थापन नियम बद्ध करनेका कार्य ।

निष्ठमपूर्व क्रि वि—नियमसे । निष्ठमावली

सं—नियम-समूह । निष्ठित (-अ) वि—

नियम-बद्ध, नियंत्रित (—वाशाय) । निष्ठमौ

वि—नियम पालनेवाला, सयमी । निष्ठम

(-अ) वि—सयत करने या नियमके अंदर

लानेके योग्य । निष्ठमक सं, वि—नियम

करनेवाला, व्यवस्थापक, परिचालक ।

निष्ठ (निष्ठित अ) वि—आपृष्ठ लगा हुआ

(पाठ—) ; वाशन बहाल, मुकररी

(छाकत्रित—) ।

निष्ठि सं—नियुक्ति, बहाली, मुकररी ।

निष्ठ (निष्ठित) वि, सं—दस लाख ।

निष्ठ सं—कार्यका भार अर्पण, बहाली

(छाकत्रित—कथा, —पृष्ठ) ; तैनाती (शूद्र—) ;

निर्देश, प्रयोग, निवेश । निष्ठ (निष्ठित)

वि, सं—नियोग करनेवाला । निष्ठौ सं—

एक उपाधि ।

निष्ठजन सं—नियुक्त करण, काममें लगाना ।

निष्ठक वि, सं—नियुक्त करनेवाला ।

निष्ठजित वि, सं—काममें लगानेवाला ।

निष्ठित (-अ) वि—जिसे काममें लगाया

गया है । निष्ठि (-अ) वि—काममें लगाने

के योग्य ।

निष्ठ, निष्ठ- उप—अभाव निश्चय अत्यंत

वहिष्कार आदि भाव सूचक उपसर्ग	निवृत्त सं—नरक। [कारण।
(निर्द्वय, निवृत्तिज्ञान, निःशङ्क निःशान्ति)।	निवृत्त वि—अर्थ-रहित। किं वि—वृथा, बिना
निवृत्तवृत्त (अ) स—विपुल रेखांतर।	निवृत्त वि—आलस्य-रहित, उद्यमी।
निवृत्त वि—अनपढ़, अशिक्षित।	निवृत्त सं—अनपढ़ उपवास।
निवृत्ति (-अ) (पद्यमें) क्रि—निरीक्षण करके	निवृत्त वि=नौवृत्त।
उसने देखा।	निवृत्त सं—खंडन, रहित करण, निवारण।
निवृत्ति सं, वि—जो अग्निहोत्रका अनुष्ठान नहीं	निवृत्त (-अ) वि—निवृत्त; खंडित।
करता; अग्नि रहित। [स्वेच्छाचारी।	निवृत्त (-अ) वि—अस्त्ररहित, वेहथियार।
निवृत्त वि—नियमका बंधन न माननेवाला,	निवृत्तवृत्त सं—शुद्धके सामान बटाना,
निवृत्त वि—निर्मल। सं—परमात्मा, दुर्गा	अस्त्रहीन करना।
आदिकी मिट्टीकी मूर्तिका पूजाके बाद जलमें	निवृत्त सं—निर्णय; खंडन।
गिराना।	निवृत्तवृत्त (-कव-अ) वि—लालसा-रहित,
निवृत्त (-अ) वि—बाधित लगा हुआ, तल्लीन,	निस्पृह। निवृत्तवृत्त सं—इच्छाका अभाव।
आसक्त। निवृत्ति सं—अत्यन्त आसक्ति।	निवृत्त वि—व्याकुल; शान्त, निश्चित।
निवृत्ति सं वि—अत्यन्त, बहुत।	निवृत्त सं वि=निवृत्त। [आनंदका अभाव।
निवृत्त क्रि वि—अविच्छिन्न, लगातार।	निवृत्त (-अ) वि—आनंद-रहित। सं—
निवृत्त वि—अन्न-रहित, दरिद्र।	निवृत्त सं वि, स—निवृत्त, ६६।
निवृत्त (-अ) वि—निःशान्ति वेगलगाद।	निवृत्त सं वि—विपत्ति-रहित, सुरक्षित। निवृत्त
निवृत्त सं वि—निर्दोष, बेकसूर। स्त्री—	सं—विपत्तिका अभाव। [निवृत्त सं।
निवृत्त सं, निवृत्त सं। [वेपरवाह; स्वतंत्र।	निवृत्त सं वि—आभूषण-रहित। स्त्री—
निवृत्त (-अ) वि—अशक्त, बेतरफदार;	निवृत्त सं वि—शुद्ध नीरोग, चंगा, स्वस्थ।
निवृत्त सं वि=नौवृत्त।	निवृत्त सं वि—मछली मांस आदि आमिष रहित
निवृत्त सं वि—जिसे फुरसत नहीं है, जिसमें	(भोजन) (निवृत्त सं, शाक-भोजी)।
अवकाश नहीं है। सं—अवकाशका अभाव।	निवृत्त सं (-अ) वि—बिना सहारे रहनेवाला,
निवृत्त सं (-अ) वि—सिलसिलेवार। किं वि—	निराश्रय। [स्थान।
निवृत्त लगातार।	निवृत्त सं वि—निर्जन, सुनसान। सं—एकान्त
निवृत्त (-अ) वि—निर्दोष, निंदाके अयोग्य।	निवृत्त सं वि—जिसे भरोसा नहीं है।
निवृत्त सं वि—सीमा-रहित, अनंत। किं वि—	निवृत्त सं=निवृत्त।
निरंतर।	निवृत्त सं—दूर, भाव।
निवृत्त सं वि—निराकार। [आश्रय रहित।	निवृत्त सं वि, सं=निवृत्त।
निवृत्त सं (-अ), (-नश्व) वि—अवलंबन या	निवृत्त सं वि—जिसमें ईश्वरको नहीं माना जाता
निवृत्त सं वि—निःशेष जिसमें कुछ बाकी बचा	(-वाद) ; नास्तिक।
न हो। [(-उपवास)।	निवृत्त सं वि—शान्त, मोला। [रूपसे कथन।
निवृत्त सं वि—जिसमें जल भी न पिया जाता है	निवृत्त सं—शब्दके अर्थका निर्देश, निश्चय

निरुद्ध वि—लाजवाब, जो उत्तर न दे या प्रतिवाद न करे ।

निरुत्साह वि—उत्साह-रहित ।

निरुत्सुक वि—आग्रह-रहित ।

निरुद्ध वि—लापता ।

निरुद्ध वि—उद्यम-रहित, छुस्त ।

निरुद्धि (-अ) वि—न घबराया हुआ ।

निरुद्ध वि—अनुपम, तुलना-रहित । स्त्री—

निरुद्धा ।

निरुद्धा वि—उपायरहित, प्रतिकार करनेमें असमर्थ, सहायहीन । सं—उपायका अभाव ।

निरुद्ध सं—निर्णय, निश्चय । निरुद्ध वि, सं—निर्णय करनेवाला । निरुद्धि (-अ) वि—निश्चित, निर्धारित ।

निरुद्ध वि—ठोस, कठिन ; (व्यंगमें) वेवकूफ ।

निरुद्ध वि—निरुद्ध खराब ।

निरुद्ध, निर्गमन सं—बाहर निकलना, निकास ।

निरुद्ध (-अ) वि—निकला हुआ ।

निरुद्ध सं—आघात, चोट, वज्रपात । वि—प्रचंड, अव्यर्थ ।

निरुद्ध (-अ) वि—घृणा-रहित, निर्लज्ज, बेहया ।

निरुद्ध वि—एकान्त, छुनसान । सं—एकान्त स्थान ; निर्जनता ।

निरुद्ध वि—जरा-शून्य, बुढ़ापा-रहित ।

निरुद्ध वि—जल-रहित (—शुक्ल) । निरुद्धा वि—निवृत्त (निरुद्धा एकाग्र) ; (व्यंगमें) खरी (निरुद्धा मिथ्या) । [वशीभूत ।

निरुद्ध (-अ) वि—हराया हुआ, पराजित, निर्बल ।

निरुद्ध वि—कमजोर, दुर्बल ; अचेत ।

निरुद्ध सं—ऊँस भरना, सोता । निरुद्धि स्त्री—नदी ।

निरुद्ध सं—निश्चय ; फैसला, सिद्धांत ।

निरुद्ध, निर्गमन वि, सं—निणय करनेवाला । निर्गमन (-अ) वि—निर्णय

किया हुआ । निर्दिष्ट (-अ) वि—निर्णयके योग्य ।

निर्दिष्ट वि—दयाहरित, निर्दयी, बेरहम ।

निर्दिष्ट सं—प्रदर्शन ; आदेश ; उल्लेख ।

निर्दिष्ट वि, सं—निर्देश करनेवाला ।

निर्दिष्ट (-अ) वि—विवाद-रहित, सहनशील ।

निर्दिष्ट सं—निश्चय, निर्णय ।

निर्दिष्ट वि—धूमशूण्य धुआँ-रहित । [(-नेत्र) ।

निर्दिष्ट वि—एकटक, जिसमें पलक न गिरे

निर्दिष्ट वि—गलानशील वेऔलाद ।

निर्दिष्ट सं—विशेष रूपसे कथन ।

निर्दिष्ट (-अ) सं—क्षेप, आवाह, शीघ्रशीघ्र

आग्रह, जिद्द (निर्दिष्ट, निर्दिष्टातिशय) ;

विधान (देवदेव, अज्ञातिशय) ।

निर्दिष्ट सं—निवाना बुताना, बुझाना ;

शांत करना । निर्दिष्ट वि, सं—बुतानेवाला ।

निर्दिष्ट (-अ) वि—बुता हुआ ।

निर्दिष्ट सं—निर्वाह, संपादन ; पालन ।

निर्दिष्ट वि, सं—निर्वाह करनेवाला ।

निर्दिष्ट (-अ) वि—निर्वाह किया हुआ ।

निर्दिष्ट (-अ) वि—विघ्न या बाधा रहित ।

निर्दिष्ट वि—विचार-रहित । निर्दिष्टात् क्रि

वि—विचार न करके ; न छाँट कर ।

निर्दिष्ट (-अ) वि—दुःखित, खेदयुक्त, पछताया हुआ, विरक्त ।

निर्दिष्ट वि—निर्दिष्ट । निर्दिष्टात् क्रि वि—

विवाद न करके । निर्दिष्टात् वि—जो विवाद

नहीं करता, शांत, भोला ।

निर्दिष्टात्, निर्दिष्टात् वि—अविरोधी, निर्वीर

जिसका किसीसे विरोध नहीं है ।

निर्दिष्ट वि—अभिन्न । सं—भेदका अभाव

(अपत्तिनिर्दिष्ट, अपनी सत्ताके साथ

भेद न करके) ।

निर्दिष्ट वि—विप रहित ।

निर्वीज वि—बीज या जीवाणु रहित ।

निर्वीज (-ज-अ) वि—कमजोर, दुर्बल ।

निर्वृद्धि वि—बुद्धि-हीन, वेवकूफ । [वैराग्य ।

निर्वद स—खेद, अनुताप ; निराशा ,

निर्वीध वि—अज्ञानी, मूर्ख ।

निर्वीज वि—चक्रगते निष्कपट, भोला, सीधा ।

निर्वीज स—चिंताका अभाव ।

निर्वीज वि—निडर, साहसी ।

निर्वृत्त वि—जिसमें भूल नहीं है, शुद्ध ।

निर्वृत्त वि—जिसमें मक्खी या कोई दूसरा जीव न हो । [हो, ममता-रहित ।

निर्वृत्त वि—जिसे ममता वासना या दया न निर्वृत्त स—एक बीज जिसे विसर डालनेसे जल निर्मल होता है ।

निर्वृत्त स—उत्तम रचना, बनानेका काम ; वनावट, गठन । निर्वृत्त वि, स—बनाने-वाला । निर्मिष्ठ (-अ) वि—बनाया हुआ ।

निर्वृत्त (-अ) स—देवताको चढ़ाया हुआ , फूल माला आदि । [(काम-दा-दा) ।

निर्वृत्त (-अ) वि—मुक्त, रिहा ; छोड़ा हुआ

निर्वृत्त वि—मूल-सहित उखाड़ा हुआ ; मूल-रहित (-जनक) ।

निर्वृत्त स—गणेश ध्यान साँपकी छोड़ी हुई त्वचा, केचुली ; कवच, बकतर ।

निर्वृत्त (-जा-) स—उत्तम पीढ़न, अत्याचार, बदला (देव-) । निर्वृत्त वि, स—पीढ़न करनेवाला । निर्वृत्त (-अ) वि—उत्पीड़ित, अत्याचारित ।

निर्वृत्त (-अ) वि—वशाश्र वेशर्म । [रहित ।

निर्वृत्त (-अ) वि—आसक्ति-रहित, सम्बन्ध-निर्वृत्त वि—लोभ-रहित ।

निर्वृत्त वि—रोआं-रहित ।

निर्वृत्त स—आलय, मकान, आधार ।

निर्वृत्त वि = निर्वृत्त ।

निर्वृत्त स—नीलाम । निर्वृत्त वि—नीलामका, नीलाम सम्बन्धी ।

निर्वृत्त वि—विज्ञान लवलीन ; निमग्न ।

निर्वृत्त स—अस्थिरता प्रकाश (शक्तिवाद का शब्द-दत्त) ।

निर्वृत्त स—नौसादर ।

निर्वृत्त स—गताका भंडा, ध्वजा । निर्वृत्त,

निर्वृत्त स—निदरा न, चिह्न, लज्ज (वक्र-दत्त निर्वृत्त दत्त) । निर्वृत्त-निर्वृत्त स—पहचान ।

निर्वृत्त स—रात्रि, रात (दिवा-) ।

निर्वृत्त (-अ) वि—निर्वृत्त धारदार, तीखा ।

निर्वृत्त स—आधी रात । निर्वृत्त-निर्वृत्त स—रात्रि, गहरी रात ।

निर्वृत्त स—निर्वृत्त, निर्वृत्त ज्ञान ; निर्वृत्त, सिद्धांत (कृत्त- , दृष्ट-) । वि—निर्वृत्त

निर्वृत्त-सन्देश, अवग्य, जरूर । निर्वृत्त स ; वि—निर्वृत्त करनेवाला । निर्वृत्त (-अ)

वि—निर्वृत्त ।

निर्वृत्त वि—अचल, अटल, स्थिर ।

निर्वृत्त (-अ) वि—वेफिक चिंतारहित ।

निर्वृत्त (-अ) वि—चेष्टा-रहित, आलसी ।

निर्वृत्त स = निर्वृत्त ।

निर्वृत्त (-अ) स—उत्तम तरकश । निर्वृत्त वि, स—तरकशवाला, तीरंदाज ।

निर्वृत्त (-अ) वि—बठा हुआ ; लेटा हुआ ।

निर्वृत्त (-अ) वि—मिल, डिङ्गा, गोला ।

निर्वृत्त (-अ) वि—जिसका निषेध किया गया है । [स—गहरी नींद ।

निर्वृत्त वि—निद्रित, निस्तब्ध, सुनसान ।

निर्वृत्त (-अ) वि—निद्रित, सोया हुआ ।

निर्वृत्त स—निर्वृत्त सिंचन, सींचना ।

निर्वृत्त स—वाक्, शान-मनाही, निषेध ।

निर्वृत्त वि, स—निषेध करनेवाला ।

निर्वृत्त (-अ) स—सोनेका सिक्का, मुहर ।

निकम्प (-अ) वि—कंपन-रहित, स्थिर ।
 निरुध्र वि—जिस जमीनमें कर या माल-
 गुजारी नहीं देनी पड़ती ।
 निरुद्ध वि—करुणा-रहित, निर्दयी ।
 निरुध्र वि—कमहीन, बेकार ; आलसी ।
 निरुध्र (-अ) स—सार, निचोड़, खुलासा ।
 निरुध्रन, (-गन) स—वशिकरण निकालना ।
 निरुध्रित, (-गित) वि—निकाला हुआ,
 बहिष्कृत ।
 निरुध्रि स—निखार, अव्याप्ति मुक्ति छुटकारा ।
 निरुध्र स—वशिर्गमन बाहर निकलना ।
 निरुध्र (-अ) वि—निकला या निकाला हुआ ।
 निरुध्र स—मूल्य, वेतन ; भाडा, विक्रय,
 बिक्री ।
 निरुध्र (-अ) वि—क्रियाहीन, निश्चेष्ट ।
 —अतिव्याप्त स—स्वयं निश्चेष्ट रहकर
 दूसरेके काममें ल्कावट डालना ।
 निरुध्र प्रत्य—अवलंबी (धर्म—, एक—) ।
 निरुध्र स—निष्ठा, दृढ़ विश्वास (—वान, —
 बत्ती) ।
 निरुध्र स—शूद्र थूक ।
 निरुध्रि स—फसला, निपटारा, मीमांसा ;
 समाप्ति, उत्पत्ति (वाङ्, -) ।
 निरुध्र (-अ) वि—सम्पन्न, समाप्त ।
 निरुध्रन स—सम्पादन । निरुध्रन वि, स—
 सम्पादन करनेवाला । निरुध्रनौध्र (-अ),
 निरुध्रन (-अ) वि—सम्पादन करनेके योग्य ।
 निरुध्रनित (-अ) वि—सम्पादित ।
 निरुध्रि (-अ) वि—पीसा हुआ ; कुचला हुआ ।
 निरुध्र (-अ) वि—प्रकाश-रहित, प्रभाहीन ।
 निरुध्र (-अ) स—स्वभाव, प्रकृति (—भाज) ।
 निरुध्र स—एक पौधा ।
 निरुध्र स—वध, विनाश । वि—विनाशकारी ।

निरुध्र (-अ) वि—तरंग-रहित, स्थिर ।
 निरुध्र (-अ) वि—स्पंदन-रहित, स्थिर ।
 निरुध्र (-अ) वि—इच्छा-रहित ।
 निरुध्र (निरुध्रन) स—शब्द, आवाज ।
 निरुध्र (-अ) वि—विनाशित, जो मार डाला
 गया है ।
 निरुध्र, निरुध्रन (-अ) (पद्यमें) क्रि—
 (उसने) देखा, निहारा ।
 निरुध्र (-अ) वि—स्थापित, स्थित ; गुप्त ।
 नीच वि—नीच नीचा, निकट, अधम, अभद्र ।
 स—निम्न स्थान नीची जगह । —इनाति
 वि—नीचोंका-सा ।
 नीच, नीच वि—निम्न, नीचा, झुका हुआ ।
 नीच स—घोंसला, आवास ।
 नीच (-अ) वि—जो ले जाया गया है ।
 नीचा स—एक प्रकार वस्त्र धान कोढ़ो ।
 नीचा वि—जो ले जाया जा रहा है, जिसका
 ग्रहण किया जा रहा है ।
 नीच स—जल, पानी ।
 नीच (-अ) वि—छिद्र-रहित ।
 नीच, निच वि—शब्दरहित ; चुप, मौन ।
 नीच, निच वि—रस-रहित ; असिक
 (—लाक) । [आरती ।
 नीचावन, (-ना) स—अनेक उपचारोंसे पूजा,
 नीचावन वि—रोग-रहित, चंगा, स्वस्थ ।
 नील वि—नीले रंगका ; काला । स—नील
 रंग । —कृष्ण (-अ) स—शिव, एक
 चिड़िया जिसका कंठ नीला होता है । —कृष्ण
 स—जो नीलके पौधोंकी खेती कराता है ।
 —कृष्ण स—नील रंग बनानेकी कोठी या
 कारखाना । —ग्राह स—नीलगाय । —ग्राह
 स—कृष्णके प्यारका नाम ; नील मणि ।
 नीला स—नीलम ।

नीनाउ (-अ) वि—कुछ नीले रंगका, आसमानी ।

नीनाश्र स—नीला वस्त्र; नीला आकाश ।
वि—जिसका कपड़ा नीला हो । नीनाश्री
सं—नीलो साड़ी ।

नीनिमा सं—नीला रंग; नीलापन ।

नीनाश्र, निनाश्र स—झूठा पाला; कुहरा ।
नीनाश्रिका सं—आकाशमें कुहरेकी तरह
प्रकाश-पुज या नक्षत्रोंका समूह ।

शून (-नो), शूनो शूनो, शूनोना कि,
वि=वृत्तान ।

शूँ सं—सूतका गोला ।

शूँशूँ, शूँ शूँ सं—घंटी, गलेकी कौड़ी ।

शूँ, शूँ सं—घाँटे गुच्छा (थंड़े—),
लोढ़ा । लघु अर्थमें शूँ ।

शून सं—नमक नोन । शूनिश, स—
नमक बनानेवाली एक जाति, नोनिया ।

शू सं—नूर, ज्योति, प्रकाश, दाढ़ी ।

शूना, शूना वि—लला, हाथ-रहित ।

शूँ सं—शूँ शूँ घुँघरु ।

शूँ (-अ) सं—नाच । —शूँ वि—जो नाच
रहा है । स्त्री—शूँशूँ ।

शूँ (-अ) सं—नरोंका पालक, राजा ।

शूँ (-अ) वि—निंद्यी, जालिम, क्रूर ।

ने अन्व—नहीं (नहेने) । कि—(तू) ले
(कनय ने) ।

नेहे कि—नाहे नहीं है । —शूँ वि=
नाष्टावादा ।

नेहे सं—नेहे, नकुल नेवला ।

नेहे, नेहे, (-लो) वि—बेहके द्वारा
वशीभूत, दुलारा ।

नेहे (नेवा) (कि परि १६)=अज्ञ लेना ।

नेहेन (-नो), नेहेना (कि परि १६)—
अज्ञाना लिखाना, ग्रहण कराना ।

नेहेन (नेहेचानो), नेहेना (कि परि
१६)=नेहेन ।

नेहे, नेहे, नेहे, वि—नेगा ।

नेहे, नेहे सं—नेहेन लंगोटी । [चुटिया ।

नेहे हेहे, (नेहे—) सं—छोटा चूड़ा,

नेहे, शूँ वि, सं=नेहे । [लता ।

नेहे (नेहे), शूँ सं—चिथड़ा,

नेहे सं—भेडिया ।

नेहेन सं—कृपादृष्टि ।

नेहे (नेहे), शूँ सं—दिल्ली, नखरा ।

नेहे (नेहे), नेहे वि—जानकर अनजान

बनने वाला । नेहे, (-ना), नेहेना

सं—दिखावटी भोलापन ।

नेहे (नेहे), नेहे सं=नेहे ।

नेहे (नेहे), नेहे सं=नेहे ।

नेहे सं=नेहे । [वाला ।

नेहे (नेहे) वि—बायें हाथसे काम करने

नेहे (नेहे), नेहे वि—मुड़ा; खुला; पत्ती

आदिसे रहित (—ताजगाह); आभूषणरहित

(—गत) । —नेहे सं—वैष्णवोंका एक

संप्रदाय ।

नेहे सं—निन्न श्रेणीका मुसलमान ।

नेहे (नेहे), नेहे सं—कानि लता जिससे

घर या चौका लीपा जाता है ।

नेहेने नेहे कि—मुसलमान, नौद बेहोशी

आदिसे ढीला पड़ जाना ।

नेहेन (-नो), नेहेना, नेहेना (कि

परि १६)—लिप्त होना, लिपटे रहना । वि—

लिप्त, लिपटा हुआ ।

नेहेन स—नेपथ्य, अभिनय आदिमें परदेके

भीतरका स्थान जहाँ नट सजते हैं । नेहेन

कि वि—परदेकी ओरसे ।

नेहे, नेहे (कि परि १)=नेहे । [पांडुरोग ।

नेहे, नेहे स—कानि लोग कवल रोग,

नेवू सं—नीवू (कागड़ि—, पाठि—; कयना—, नारंगी) ।

नेशि, नेशौ सं—पहियेका घेरा ।

नेशाई सं—नेशाई । [बीनते हैं, निवार ।

नेशार सं—चौड़ा फीता जिससे चारपाई

नेशे सं—शाखी मल्लाह ।

नेशा सं—नेशा । —थोर वि—नशेबाज ।

नेशाई, नेशाई सं—निहाई, जिस लोहे पर धातु पीटते हैं ।

नेशत कि वि—नितास निहायत, अत्यंत ।

नेशबिल कि—(उसने) देखा, ताका ।

नेकटा (नइकट्य-अ) सं—निकटता ।

नेकश (-अ) वि—विशुद्ध (—कूनोन, जिसने

उर या कण्ड के कुलमें कन्या न व्याही हो) ।

नेनाथ वि—गर्मीकी ऋतु सम्बन्धी ।

नेवेना (-अ) सं—देवताको चढ़ाया हुआ भोग ।

नेनराश, नेनराश (-अ) सं—निराशा ।

नेन (-अ) वि—रातका (—विछानत्र) ।

नेनरा वि—गंदा, घृणा-योग्य, मैला ; अश्लील । सं—कूड़ाकरकट, गद्दी चीज ।

नेनराशि सं—नेनरा आचरण घृणित व्यवहार, बुरा बरताव ।

नेकर सं—नौकर । नेकरि सं—नौकरी ।

नेकमान सं—नेकमान नुकसान ।

नेकर (नोकर) सं—नकर लंगर ।

नेका सं—नुकता, बिन्दु ।

नेकास सं—विज्ञापन, नोटिस (—आवि कश) ।

नेका सं—लोढ़ा ।

नेनाता (नोन्ता, वि—नवगाछ खारा ।

नेना सं—नोना, नमकका वह अंश जो पुरानी दीवारोंमें लगा मिलता है, शरीफा ।

नेना सं—लोहा, लोहेकी चूड़ी (सधवाका चिह्न) ।

नेना (कि परि २०)—नत इठरा भुकना ।

नेना (-नो), नेना (कि परि १४)—

नत करा भुकाना । वि—भुका हुआ ।

नेमक सं—नाकका लोलक ।

नेना सं—जीभ, खानेका लालच ।

ने (नउ) सं—नाव, नौका ; जहाज

(—मना) । नेका, (-का) सं—नाव ।

नेका-खौवी वि, सं—जो नाव चलाकर

जीविका निर्वाह करता है, मल्लाह । नेवश

सं—जंगी जहाजोंका वेड़ा । नेवाशिनौ

सं—जल सेना ।

नेका सं—नेका, बसि के, उलटी ; घृणा (—इनक) ।

नेका सं—बटवक वरगद ।

नेका (-अ) वि—रखा हुआ, स्थापित, अर्पित ।

नेका (नैवटा), नेका, नेका, नेका, नेका,

नेका, नेका, नेका, नेका —नेका

आदि देखो ।

नेका सं—एक छोटी गोल मछली ।

नेका सं—तर्कशास्त्र, न्याय, इनसाफ । वि—

तुल्य, सदृश, सा, भाँति (गच्छ—) ।

नेकातः कि वि—न्यायसे । —निष्ठ (-अ)

वि—न्यायवान । —निष्ठ सं—न्यायपरता ।

—अथ सं—न्यायका रास्ता, धर्ममार्ग ।

नेका (नैज्य -अ) वि—उचित ।

नेका सं—धरोहर, अपण, त्याग, धर्मार्थ प्रदत्त सम्पत्ति ।

नेका (-अ) वि—कुबड़ा, औंठा ; टेढ़ा ।

नेका वि—कम, अल्प । —कत्र, —कत्र कि

वि—कमसे कम । नेका वि—कशवशी

कमज्यादा । नेका (अ) सं—कशवशी

कमज्यादा ।

अ

-अ प्रत्य -आशे पीनेवाला (-अश, पादश) ;

पालनेवाला (आश, नृश) ।

अश्ल, अश्ल स—पहुँची, कलाई पर पानने का एक आभूषण ।

अश्ल स—गिड़िब शप सीढ़ीका उँडा ।

अश्ल, (-ल) स—उपश्ल जनेऊ ; उपनयन-संस्कार (—लश, —लश) ।

अश्ल कि वि—बारबार ।

अश्ल, अश्ल, अश्ल=अश्ल, अश्ल, अश्ल ।

अश्ल वि, स—प तीस, ३५ ।

अश्ल वि, स—प सट, ६५ ।

अश्ल वि, स—पचहत्तर, ७५ ।

अश्ल वि, स—प चानने, ६५ ।

अश्ल वि, स—पचीस, २५ ।

अश्ल स—सौर मासकी पचीसवीं तारीख ।

अश्ल वि, स—प तालीस, ४५ ।

अश्ल वि, स—अश्ल ।

अश्ल वि, स—अश्ल ।

अश्ल स—पाकेट, जेब । —आश स—पाकेटभार, गिरहकट ।

अश्ल (पक्ष-अ) वि—आश, पका, उफेद (—लश), पकाया हुआ (—लश), निपुण (अश्ल) । अश्ल स—आश्ल पकाशय, पेटमेंका वह स्थान जहाँ अन्न पचता है ।

अश्ल (पक्ष-अ) स—पक्ष, पाख, पख ; तरफ ; दल ; १५ दिन, विशेष अवस्था (आश्ल अश्ल श्ल, आश्ल अश्ल), विवाहकी संख्या (द्वितीय अश्ल श्ल) । —अश्ल स—दो विरोधी पक्षोंके एकमें योगदान । —आश्ल स—तरफदारी । —आश्ल वि—तरफदार । —आश्ल, —आश्ल स—तरफदारी । —अश्ल स—पंखका आधार,

अश्ल कीतरी भाग । —अश्ल स—सहायक लोग, सहायकोंका दल । आश्ल स—आश्ल जंगका लकवा । आश्ल (-अ) स—पक्षका अत पूर्णता या अभाव । अश्ल स—अश्ल पक्ष, किसी विषयकी दूसरी तरफ । आश्ल कि वि—अश्ल पक्षमें, परतु । अश्ल (-अ) वि—पक्ष-सम्यक्, दलका । आश्ल स—आश्ल अश्ल अश्ल अश्ल । अश्ल (पक्षी) स—आश्ल पक्षी, चिड़िया । अश्ल—अश्ल । अश्ल स—अश्ल । आश्ल स—आश्ल, आश्ल पोखरा, गढ़ा ; जमीनका मेड़ ।

अश्ल (-अ) स—आश्ल, अश्ल कीचड़ । अश्ल (-अ) स—अश्ल कमल । अश्ल स—कमलवाला तालाव । अश्ल वि—कीचड़दार, गढ़ा । अश्ल स—कीचड़ निकालकर तालाव आदिका साफ करना ; (व्यंगमें) जीर्ण-संस्कार ।

अश्ल स—आश्ल, आश्ल श्ल, कतार, अश्ल लेखकी पंक्ति, सतर ।

अश्ल, अश्ल स—अश्ल (अश्ल) ।

अश्ल स—अश्ल ।

अश्ल वि—आश्ल ल गढ़ा । । [सड़ना ।

अश्ल स—आश्ल रसोई, हाजमा । अश्ल, अश्ल स—अश्ल, आश्ल (पंच—) स—कीचड़में चलनेका शब्द । अश्ल, आश्ल वि—कीचड़दार ।

अश्ल (कि परि १)—सड़ना । वि—सड़ा, गंदा । —अश्ल स—उमस, जिसमें बहुत पसीना निकलता है ।

अश्ल (नो), अश्ल (कि परि १०)—सड़ाना ।

अश्ल (-अ) वि—पचने योग्य, पकाने योग्य ।

अश्ल (-अ) स—अश्ल, अश्ल ।

अश्ल (पञ्च-अ) वि, स—आश्ल, ५ पाँच,

५। —गद्य (-अ) स—दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर। अक्ष स पाँच भूतोंमें मिलन, मृत्यु। अक्ष क्रि वि—पाँच प्रकारसे, पाँच बार। —नथ स—जिस पशुके पैरोमे पाँच पाँच नाखून हैं। —पात्र स—पूजामें व्यवहृत एक पात्र। —श्रद्धा स—आरतीका पाँच मुखवाला दीया। —श्राव, —वाश स—प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान। —छूठ स—पृथ्वी, जल, अग्नि वायु, आकाश। —शक्र स—तन्त्रोक्त पाँच सावन मद्य, मांस, मछली, मुद्रा, मैथुन। —वज्र (-अ) स—वेदपाठ, अतिथि-सत्कार, श्राद्धतर्पण, देवता-पूजा, गवादि पशुकी सेवा। अक्षशुभ (-अ) स—गर्भिणीको पंचम मासमें सेवन कराने योग्य दही, दूध, घी, शहद और चीनी। अक्षत्र (-अ) वि, स—पचपन, ५५। अक्षत्र वि, स—पचास, ५०। अक्षलिख (-अ) स—चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा और त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा वाक्, हाथ, पैर, मलद्वार और उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ। [ठठरी।

अक्षत्र स—अक्षत्र, शंका पिंजडा; अक्षत्रा, कङ्काल अक्ष स—पाँच बूटीवाला ताश।

अक्षिका, अक्षी, अक्षि स—अक्षिप चांग, पत्रा।

अक्षे स—पटकनेका शब्द। क्रि वि—एकएक (—क'रे बारा गेल), (बारबार—अक्षेअक्षे, अक्षेअक्षे)।

अक्षे स—वस्त्र, चित्र, नाटकका पर्दा। —अक्षुष स—आग्निमाना शामियाना। —वाग, अक्षेवाग स—ठावू, शिविर तबू।

अक्षे (पट्का) स—एक आतशबाजी (फटनेसे शब्द होता है), मछलीका फेफड़ा। वि—दुबला (वाग—)।

अक्षेकान (-नो), अक्षेकाना (क्रि परि १६)—फेफड़ा, आछाड़ देना पटकना; हराना।

अक्षे स—अध्याय; छत, परवल। —अक्ष क्रि—मर जाना (व्यंगमें)।

अक्षे (अ) स—बड़ा ढोल, कानका पर्दा।

अक्षे (क्रि परि १)—मेल होना, बनना, पटरी बैठना, राजी होना। [करना, वशमें लाना।

अक्षेन (-नो), अक्षेना (क्रि परि १०)—राजी अक्षेवाग स—अक्ष देखो।

अक्षे स—कपड़ेकी पट्टी या लंबी धज्जी, बाजार का विभाग (जाश—, ठूना—)।

अक्षे वि—निपुण, दक्ष, चतुर, समर्थ।

अक्षेया, अक्षे स—चित्रकार।

अक्षेन स—अक्षे परवल।

अक्षे (पट्-अ) स—अक्षे पीढ़ा, तख्ता, सिंहासन, पट्टा, सनद, पट्टा। —अक्षे स्त्री—अक्षेवागी पटरानी।

अक्षेन स—पाठ, पढ़ना, आवृत्ति, अध्ययन।

अक्षेनीय, अक्षे (-अ) वि—पढ़ने योग्य।

अक्षे (-अ) वि—पढ़ा हुआ। अक्षेवान वि—जो पढ़ा जा रहा है। अक्षेवा स—छात्रावस्था पढ़ाईकी अवस्था, विद्या अध्ययन काल।

अक्षे स—भाग्य (—आवाग); सौभाग्य, हिसाब करने पर जो सख्या मिलती है (गड़—); लागत। [(अक्षे—)।

अक्षे स—पतन, अवनति, गिरी हुई चीज अक्षेअक्षे स—कपड़ा आदि फाड़नेका शब्द।

अक्षेअक्षे (पट्-अ पट्-अ) वि—पतनोन्मुख, गिरने लायक।

अक्षेनी स—अक्षेवागी पढोसी।

अक्षे (क्रि परि १)—पढ़ना। स—पाठ, अध्ययन (अक्षे—, अक्षे-अना, अक्षेव रहे)। वि—पठित (—रहे)।

पड़ा (कि परि १)—गिरना, लेटना पड़ जाना ; दूसरी जगह या अवस्थामें आना (पड़े जान पड़—, दिपड़—, पाड़—) ; पड़ा गटना (बनेर टोका राकि पड़ आए), हमला करना (जाराउ—) ; उपस्थित होना, घटना (नूतन वस्त्र—, नन—, दुःख—), कम होना, घटना (देना—, ओर— । वि— पतित (—राड़) । [पढ़ाना ।

पढ़ान (नो), पढ़ाना (कि परि १०)— पढ़िशन, पढ़ेन स—कपड़ेको चौड़ाईको ओर के सूत ; बरतन ।

पढ़ा, पढ़े स—छात्र, विद्यार्थी ।

पढ़े वि—गिरा हुआ, पड़ा हुआ (—राड़) ।

पढ़ेपढ़े वि—पढ़पढ़, पठनामूढ़ गिरने लायक ।

पण स—प्रतिज्ञा ; जूआ ; बानी, दांव, शर्त ; देहज ; दाम ; बीस गंहे ।

पण (पण्ड-अ) वि—विफल, व्यर्थ नष्ट । —रस स—बृथा श्रम ।

पण्डित वि, स—पंडित, विद्वान सस्कृत जानने वाला, सस्कृत या बंगलाका शिक्षक (—नशपत्र) । —रस (-अ) वि, स—पंडित होकर भी जो व्यवहारिक विषयमें मूख हैं । पण्डितद्व (-अ) वि, स—जो अपंडित होकर भी अपनेको पंडित समझता है ।

पण्डित स—शिक्षकका कार्य (रूज—रुश) ।

पण्डितो वि—पंडित-सा, सस्कृतशब्दपूर्ण (—डावा) ।

पण (-अ) स—दिक्खेद्वय विकनेकी चीजें ; महसूल, किराया, मूल्य । वि—विकने योग्य (-द्वय) । —बौध स—दूकानोंकी कतार । —गाना स—दूकान, बाजार, कारखाना ।

पण्ड (-अ) स—फतिंगा, उड़ने वाला कीड़ा ।

पण्ड (अ) स—उना, पंख । पण्डो, (-वि) स—भादि चिटिया ।

पण्ड स—पाद, पड़ गिरना, अधोगति ।

पण्डामूढ़ वि—पण्डित के पढ़ गिरने लायक ।

पण्डा स—निमान कटा । पण्डो वि भजवाला ।

पण्ड (पत्तन) स—निमांग आरम्भ, नाव डालना (गाड़ी—दश), नगर ।

पण्डि वि—पटं पर दी हुई (जमीन) जिस जमीन पर नियत मालगुजारी देनी होती है (—दश) । —नद स—पट्टेदार ।

पण्ड (-अ) स—पत्र, स्त चिट्ठी, पत्ती, छपा हुआ कागज (नशप—) ; पन्तर (दर्द—) ; बगरा (जिनर—, दिशान—) । —भां स—चिट्ठी पढ़ना कि वि—चिट्ठी पढ़ते ही । —पूठे स—पत्तीका दोना । —राद, राइद स—हरकारा ।

पण्ड स—पथ, मार्ग, रास्ता (शोभा—, पगडंडी) । —रस स—रास्ता बनाने या मरम्मत करने के लिए कर । —रस स—पण्ड मार्गव्यय ।

—गण्डा कि—राह देखना, प्रतीक्षा करना ।

—जथा (दै-) कि—जदिश पड़ा सरक जाना, भाग जाना । —शाय (-अ) स—रास्ते का छोर । —जाइ (-अ), —शाय वि—भूला-भटका ।

पण्ड दाना कि—रास्तेमें बैठाना, सब कुछ छीन लेना ।

पण्डा कि वि—मार्गके बीचमें, चलते-चलते ।

पण (-अ) स—वह हलका खाद्य जो रोगीको दिया जाता है । वि—हितकर ।

पण स—पा, छत्र पैर ; पद, नौकरी, दोहा, संख्या (जोखेद—) । —रुण स—पा

देना पैर रखना । —गण स—गणानि दहलना । —शाय, —शाय स—चरणोंमें

आश्रय । —छाउ (-अ) वि—वक्त्राख बरखास्त, मौकफ । —दण्ड (-अ) वि—कुचला हुआ । —धृति सं—पैरकी धूल । —अक्षर सं—पल्लव-सा कोमल चरण । —आख (-अ) सं—आश्रय उठा तलवा । —आर्थी वि—उमेदवार, चरणोंमें आश्रय चाहने वाला । —अक्ष क्रि वि—पैदल । —अक्ष, —अक्ष सं = अक्ष । —अक्ष सं—आ छोटो पैर चाटना, खुशामद करना । —अक्ष सं—आ छेपा पैर दवाना । —अक्ष सं—आ अक्षान पैर फिसलना, कर्तव्यसे गिरना । अक्ष (-अ) वि—उच्च पदमें स्थित । अक्षान सं—नाथि लात । अक्ष (-अ) सं—पदचिह्न । अक्षान्ति, अक्षान्ति सं—पैदल सैनिक । अक्षान्ति (-अ) वि—चरणोंमें गिरा हुआ । अक्षान्ति सं—अनुसरण, पैरके चिह्नोंसे चलना । अक्षान्ति वि—अनुसरण करनेवाला । अक्षान्ति, अक्षान्ति (-अ) सं—चरण-कमल । अक्षान्ति सं—आ देखा पदार्पण, आगमन, प्रवेश । अक्षान्ति सं—चरणोंमें आश्रय । अक्षान्ति (-अ) वि—चरणोंके आश्रित । अक्षान्ति वि—लात मारा हुआ । अक्ष अक्ष क्रि वि—पग पगमें, बारबार । अक्षान्ति सं—पदमें या वेतनमें वृद्धि ।

अक्ष सं—उक्ति तमगा ।

अक्षी, (-वि) सं—उपाधि, खिताब ।

अक्ष (पद-अ) सं—उत्पन्न कमल । —आग स—छो एक लाल मणि, चुन्नी । —आग, —आग-आग वि—जिसकी आंखें कमलके दलके समान हैं । अक्ष स्त्री—लक्ष्मी ; बगालकी एक बहुत बड़ी नदी । अक्ष सं—जिस तालाबमें अनेक कमल होते हैं । अक्ष (-अ) वि = अक्ष । अक्षान्ति स्त्री—देवी मनुसाका नाम । अक्षान्ति

स्त्री—लक्ष्मी । अक्षान्ति सं—आलसी-पालथी ।

अक्ष, अक्ष सं—काठान कटहल ।

अक्ष प्रत्य—अक्ष, -त्व आदि भाववाचक प्रत्यय (शिन्नी—, आक्षि—) ।

अक्ष, अक्ष सं—अक्ष ।

अक्ष सं—अक्ष सांप ।

अक्ष (-अ) वि—अक्ष, पाक । अक्षान्ति (-अ) वि—जो अक्ष हुआ है । अक्षान्ति (-अ) वि—जो अक्ष किया गया है ।

अक्ष सं—शुभ चिह्न सौभाग्य । —अक्ष (-अ), अक्ष वि—भाग्यवान्, सु-लक्षण-युक्त ।

अक्ष, अक्ष (-अ) सं—दूध, जल । अक्षान्ति सं—नाला, नहर, सोता ; नदीवा पनाला ।

अक्षान्ति सं—पगवर, मुहम्मद ।

अक्षान्ति सं—छो छूटा पजार, स्लीपर ।

अक्ष सं—पैदाहश, जन्म ।

अक्षान्ति वि—नष्ट, बरबाद ।

अक्ष सं, वि = अक्ष । [अक्ष—आक्षेप] ।

अक्ष सं—पैसा, रुपया-पैसा, धन (अक्ष अक्षान्ति वि—दुधार (गाय) ।

अक्ष वि—अक्ष देखो ।

अक्ष सं—एक छद जिसमें चौदह चौदह अक्षरों की दो पंक्तियां हों ।

अक्षान्ति सं—बादल, मेघ ।

अक्षान्ति सं—स्तन ; बादल ।

अक्षान्ति, अक्षान्ति सं—समुद्र, सागर ।

अक्ष वि—अक्ष गर, पराया । सं—दूसरा आदमी (-अक्षान्ति धन) । क्रि वि—आद, अनंतर (अक्ष— ; अक्ष अक्ष, अक्ष अक्ष, एकके बाद दूसरा) । —अक्ष सं—कांच, आईना । —अक्ष सं—जीवनका अंतिम भाग, परलोक (—अक्षान्ति अक्ष) । —अक्ष (-अ) वि—पराया, दूसरा । —अक्ष

स्त्री—खेली। —भाषा सं—दूसरे पेपर उगनेवाला पोथा। —हृषी सं—दूसरे विषयमें चर्चा, दूसरेकी निंदा। —हृषा सं—घनावटी केश। —हृष्ट (-अ) सं—दूसरेका अवगुण। —हृषी वि, सं—दूसरेके आश्रयसे जीनेवाला। —हृ (-अ) क्रि वि—परलोकमें, भविष्यत्तमें दूसरे स्थानमें। —हृषी स्त्री—दूसरेकी स्त्री। —हृष सं—पतिमें भिन्न दूसरा पुरुष। —हृष सं—निंदा। —हृष सं—प्रवास, परदेश। —हृषी वि, सं—प्रवासी। —हृषा सं—हृषी वि, सं=हृषी। —हृ सं—कौआ जो कोयलके बच्चोंको पालता है। —हृष (-अ, स—गैर (कौए) के द्वारा पली हुई कोयल। —हृष सं—प्रमाद, भ्रम, अज्ञान। —हृष (-अ) सं—आपत्त खीर। —हृषा सं—दूसरेकी सहायताकी प्रतीक्षा। —हृषा सं—वि—जो दूसरेकी सहायता चाहता है। —हृ (-अ) क्रि वि—परसों। —हृषा वि—ईर्ष्या, डाह करनेवाला। —हृ (-अ) सं—पराया धन। —हृष सं—दूसरेका हित। —हृषी, (-हृषी-) सं—परांठा। —हृष सं—अधिशान पहनना। —हृष सं—स्पर्श। —हृष सं—पारस-पत्थर। —हृष क्रि वि—परसों। सं—कुल्हाड़ी। —हृषा (क्रि परि १) —हृषा पहनना (हृषा—, हृषा—, हृषा—)। वि—पहना हुआ। —हृषा सं—फूलोंका रेणु। [निवृत्त। —हृषा सं (पराह्मुख) वि—विमुख; प्रतिकूल, अज्ञान सं—प्राण। [पहनाना, लगाना। —हृषा (-हृषी), हृषा (क्रि परि १०) —हृषा (-अ) सं—दूसरेका दिया हुआ भोजन। —हृषा (-अ) सं—घदल। —हृषा सं—

लौट आना, पुनरागमन। —हृषा (-अ) वि—जो लौट आया गया है। —हृषा (-अ) वि—लौट आया हुआ। —हृषा सं—लौट आना, प्रत्यागमन। —हृषा सं—नाभित नार्त, हन्नाम। —हृषा (-अ) वि—दूसरेके अधीन। —हृषा (-अ) वि—दूसरे पर निर्भर रहने वाला। —हृषा (-अ) वि—दूसरेका आश्रित। —हृषा (-अ) सं—आनेवाला दिन। —हृषा (-अ) वि—यात्रा प्राप्त, पराजित। —हृषा (-अ) वि—उप—विशेषता विशेष आदि मुख्य उपमर्ग। —हृषा सं—चिन्तन, योजना, कल्पना। —हृषा (-अ) वि—बहुत क्रिष्ट। —हृषा सं—सेवक। —हृषा सं—पोशाक पहनावा। —हृषा (-अ) वि—साक। —हृषा वि—परिमित, सीमावद्ध, विभक्त। —हृषा (-अ) वि—पूरा, पूरा अवस्थान्तर प्राप्त। —हृषा सं—परिणाम, अवस्थान्तर प्राप्ति। —हृषा सं—अंतिम अवस्था या फल, भविष्य। —हृषा (-अ) वि—विवाहित। —हृषा वि, स्त्री—विवाहिता। —हृषा सं—विवाह करनेवाला, पति। —हृषा सं—पश्चात्ताप, खेद। —हृषा (-अ) वि—पड़ताया हुआ। —हृषा (-अ) वि—संतुष्ट। —हृषा (-अ) वि—अत्यन्त वृद्ध। —हृषा सं—वचनेके लिए पुकार। —हृषा सं—विशेष-रूपसे दर्शन, निरीक्षण। —हृषा वि, सं—निरीक्षण करनेवाला। —हृषा वि—डिखाई पड़नेवाला। —हृषा सं—पश्चात्ताप, खेद। —हृषा सं—शरीरमें धारण, पहनना; पहननेका वस्त्र। —हृषा वि—पहननेके योग्य। सं—पहनने का वस्त्र। —हृषा सं—घेरा। —हृषा (-अ) वि—अच्छी तरह पका, अनुभव, बुद्धिमान।

—अश्वी वि, स—विरुद्ध, शत्रु । —आक
सं—इक्ष्म हाजमा । —आगि, —आगि सं—
श्रृंखला । वि—सजाया हुआ । —अक्रिउ
(-अ) सं—चित्रमें वस्तुओंके दूरत्व निकटत्व
आदिका प्रकाश । —अकृ (अ) वि—प्लावित,
दूबा हुआ । —अहन सं—किसी वस्तुके
भीतरसे ताप बिजली आदिका प्रवाह । —अश्वी
वि—जिसके भीतरसे ताप विद्युत् आदि
प्रवाहित हो सकते हैं । —आन, अश्वीआन सं—
अश्वान निदा । —आनक, आनो वि—निदक ।
—आन सं—कुटुब, पत्नी । —अकृ (-अ)
वि—वैष्टित घिरा हुआ । —अवन सं—
बड़े भाईके पहले छोटे भाईका विवाह ।
—अवन सं—बहुत दर्द, सोच-विचार ।
—अवन, —अवन सं—घेरा, दायरा, मडल
(शृंखला—) । —अवन, (-अ) सं—परोसना ।
—अवनिठ, (-विठ) (-अ) वि—परोसा
हुआ । —अवनक वि, सं—परोसने वाला ।
—अवन सं—पराजय । —अवन सं—धूमना,
प्रदक्षिणा । —अवष्टे (-अ) वि—विच्युत, गिरा
हुआ । —आप सं—तौल । —अविति सं—
नाप नाप विद्या । —अवन (-अ) वि—परिमाण
करने योग्य, नापने योग्य । —आव सं—
चुकता । —अवन सं—शोधन, साफ करना ।
—आव वि—साफ, स्वच्छ, स्पष्ट निष्कपट,
छंदर । —अकृ (-अ) वि—साफ किया हुआ ।
—अवाशि सं—समाप्ति, खातमा । —अवन सं—
चौड़ाई, विस्तार । —आवा सं—सीमा, हद ।
—अविति सं—हालत । —अकृ वि—स्पष्ट,
प्रकाशित, खिला हुआ । —अकृ (-अ) वि—
चुआया हुआ । —अवनोष (-अ) वि—दिल्लीगी
के योग्य । —अविति (-अ) वि—पहना हुआ ।
—अकृ (-अ) वि—वर्जित, छोड़ा हुआ ।
अविति सं—अकृथाई खाई खन्दक ।

अविति सं—सौरभ, सुगंध ।
अश्वी स्त्री—परी ; छंदरी स्त्री ।
अश्वीका, (-अ) सं—परीक्षा, इम्तहान, जांच ।
अश्वीकक वि, सं—इम्तहान लेनेवाला ।
अश्वीकक सं—परीक्षा लेना । अश्वीककौष (-अ)
वि—परीक्षाके योग्य ; जिसकी परीक्षा ली
जायगी । —आव सं—जिस गृहमें परीक्षा
होती है । —आवन वि—जिसकी परीक्षा
ली जा रही है ; परीक्षाके अधीन । —आ
सं—परीक्षा देनेके इच्छुक । अश्वीककृ (-अ)
वि—जिसकी परीक्षा या जांच हो गयी है ।
अश्वीककौष (-अ) वि—इम्तहानमें कामयाब ।
अकृक वि—कठोर कडा (-आक) ।
अकृ कि वि—आश्रय अत्र बाद, अनंतर, अत्र
अकृ कि वि—एकके बाद दूसरा, क्रमसे ।
अकृ कि वि—उपर ।
अश्वीक (-अ) वि—जिसके विषयमें प्रत्यक्ष
ज्ञान नहीं है, इंद्रियोंसे परे, अप्रत्यक्ष ।
अश्वीककौष वि—अत्र गलत दूसरेके
आश्रयसे जीनेवाला ।
अश्वीक सं—परवाह, शका, फिक्र ।
अश्वीकाना सं—आज्ञापत्र, परवाना ।
अकृक, (-अ) सं—आकृ पाकड़ ।
अकृक (-अ) सं—मेघ, बादल ।
अकृ (-अ) सं—पत्ता, पत्ती ; पान । —आवा
सं—पत्तीसे छाया हुआ घर, झोंपड़ी ।
अकृ सं—अवनिका परदा, आवरण
(आवरण—) ; (व्यंगमें) शम, लज्जा,
सकोच, जनानखाना । —अवन, (-अ)
वि—पर्दानशीन । —अथा सं—छिर्योंको बाहर
निकलकर लोगोंके सामने न होने देनेकी
रवाज ।
अकृ (-अ) सं—अवन उत्सव, त्योहार, गांठ,
जोड़, दो गांठोंके भीतरका हिस्सा ।

पर्वत सं—पहाड़। पर्वत (-अ) वि—
पहाड़ो। —अर्थात् वि—पर्वत या, पहाड़।

पर्वत (-अ) सं—त्योहारका दिन।

पर्वत (पर्वत-अ) सं—पर्वत पहाड़।

पर्वत वि, स—अभरणकारी। पर्वत स—
अभरण।

पर्वत (-अ) कि वि—यदि तब, भी।

पर्वत सं—समाप्ति, तात्प्रा, परिणाम।

पर्वत (-अ) वि—परिणाम-प्राप्त।

पर्वत सं—परीक्षण निरीक्षण। पर्वत
वि, स—निरीक्षण।

पर्वत (-अ) वि—घोषट्वाली।

पर्वत सं—पानी धारी, क्रम, एक ही अर्थ का
शब्द। —अर्थात् कि वि—धारी धारी।

पर्वत (-ना) स—अच्छी तरह विचार
या आलोचना। पर्वत (-अ) वि—
विशेष रूपसे आलोचन।

पर्वत (-अ) वि—पराजित, हारा हुआ।

पर्वत (-अ) वि—वामी ; सदा।

पर्व सं—घड़ी या दंड का ६० वां भाग समय,
क्षण, मांस (पर्वत), पहल, किसी
समतल वस्तुमें ऊंची रेखा (—राजे ग्रन्थ)।

पर्व (पल्ला) वि—भगुर, दूधनेवाला।

पर्व (पल्ला) स—परवलकी पत्ती।

पर्व सं=पर्वत।

पर्व सं—पर्व कीचड़।

पर्वत (-अ-) सं—पल्लव।

पर्व सं—तेल घी आदि उठानेके लिए उस्ता
वाली कटोरी।

पर्व सं—पर्वत प्याज।

पर्वत वि—भगोड़ा।

पर्व (-नो) कि=पर्वत।

पर्व (-अ) स—पर्वत पुलव।

पर्व सं—पर्वत भागना, चपत होना।

पर्वत (-अ) वि—भाग, टुआ। पर्वत
वि—जो भाग रहा है।

पर्व सं—पर्व पर्वत जिनके फल सुंदर लाल
परतु गंध रसिन होने हैं, पल्लव, शाक ; पर्व,
पर्वत (पर्व-पर्वत)। [मिट्टीकी पर्व।

पर्व सं—पर्वत काट देनेमें जमी हुई
पर्वत (-अ) स—पर्वतकी श्रुति। वि—
पर्व, पर्व ; पर्व। [पर्वत।

पर्वत, पर्वत सं—पर्वत, पर्वत पर्वत,
पर्वत, पर्वत सं—पर्वतकी नीलियोंका बना
पर्वत-या मट्टी पर्वतके एक ओजार।

पर्व सं—कोपल नयी पत्ती ; आवरण
(पर्व-)। —अर्थात् वि. सं—पर्वत-
माला। पर्वत (-अ) वि—जिसमें नये नये
पर्व हैं ; हग-भरा, विस्तार-युक्त (—पर्वत)।

पर्व, पर्व सं—पर्वत मुहला ; गांव।

पर्व (पल्ला) स—पर्वत पोखरा, कीचड़दार
स्थान, दलदल। [पर्वत।

पर्व सं—पर्वत, ऊन। पर्वत वि—पर्वतका

पर्व (-अ) कि—(वह) प्रविष्ट हुआ, घुसा।

पर्वत कि वि—पर्वत काट, अनंतर, पीछे
(पर्वतकाट, पर्वतकाट, पर्वतकाट)।

पर्व सं—पर्वत। कि वि—पीछे, बाद
अनंतर। पर्वत, (-अ) वि—पर्वतका,
पर्वत ; पर्वत देगीय।

पर्वत (पर्वत-अ) सं—पर्वत-आवरण,
एक तांत्रिक आवरण। पर्वत सं—एक
तांत्रिक साधक।

पर्वत (पर्वत) सं—विकनेकी चीजोंका
टोकरा। [इष्टि]।

पर्वत (पर्वत) सं—पर्वत घौड़ार (—
पर्वत सं—पर्वत (पर्वत-) ; व्यवसाय
का विस्तार ; मरोज सुवस्कील आदिकी
अधिकता।

भगवती सँ—दुकानदार, बेचनेवाला। स्त्री—
भगवतीनी।

भगवती सँ—पसेरी।

भगवती (-नो), भगवती (क्रि परि १६)—
पढ़ताना, अकसोस करना। भगवती स—
पश्चात्ताप, पढ़तावा।

भगवती सँ—भगवती पहर।

भगवती, भगवती सँ—सौर मासकी पहली
तारोख। वि—पहला। क्रि वि—पहले, आगे।

भा सँ—पैर टाँग; पाया।

भाई सँ—पाई, पैसैके तिहाई मूल्यका एक
छोटा सिक्का, बड़ा घड़ा (छड़ भाई)।

भाई सँ—पैदल सिपाही, प्यादा।

भाईकार, (-कर) स—थोक माल खरीद कर
जो खुदरा बेचता है, फुटकर बेचनेवाला।

भाईकात्री वि—थोक मालके भावका।

भाईथाना सँ=भाईथान।

भाई सँ=भाई।

भाई सँ—पंजनी।

भाई स—भान, भान टाँका, एक गलने
योग्य धातु जो धातुके बर्तन जोड़नेमें कास
आती है, चीढ़का पेड़।

भाई स—नल।

भाई स—चूरण, चुकनी, चेहरे पर
लगानेकी छग धित चुकनी।

भाई सँ—पौंड, लगभग आधा सेर,
बिलायती सोनेका सिक्का।

भाई (भा-) सँ—डबल रोटी।

भाई सँ—पावना, लहना, लेन (जना—)।
—भाई सँ—अपने पावनेका धन। —भाई
सँ—लेनदार।

भाई (क्रि परि ८)—पाना, मिलना,
सकना, लगाना (झू—, घू—), आवेश
होना (झू—)। वि—पाया हुआ।

भाई (-नो), भाई (क्रि परि १६)—
दिलाना (ठाका भाई देखा)।

भाई सँ—भाई, भाई राख, खाक। वि—भुरा
खाकी। भाई वि—झू—झू— झूल लगा
हुआ, कलकित।

भाई सँ—ब्रह्मन रसोई, परिपाक, हजम,
परिणति, केशकी शुक्लता (झू—धरा)।

—भाई सँ—घटनाचक्र, पड़्यंत्र। —भाई
(-अ) स—पाकस्थली, पेटमें अन्न पचनेका

स्थान, पकानेका यंत्र। —भाई स—
बाबाघर रसोई घर। —भाई सँ—पेटमें

अन्न पचनेका स्थान। —भाई स—
रसोई करनेका बरतन। —भाई सँ=

बड़ेभाई।

भाई सँ—भाई बटनेसे डोरी रस्सी आदिमें
पड़नेवाली ऐठन, घुमाव (—भाई,

भाई—), पेच (झिझि—)।

भाई सँ—भाई, काका कीचड़।

भाई (पाकाना), भाई (क्रि परि
१६)—धरा पकड़ना। भाई स—पकड़

(धरा—)। भाई स—पकड़ (—धरा)।
भाई (पाकाना), भाई (क्रि

परि १६)—मसूड़ेसे चवाना।

भाई (क्रि परि ३)—पकना, छेद होना
(झू—), अनुभवी होना। वि—पका,

अनुभवी, अभिज्ञ, निपुण, पूरा (—एक मन),
टिकाऊ (—धरा), जलाया हुआ (—शेट);

ईंट पत्थर आदिसे बना हुआ (—भाई, —
वाड़ी); पका (—कथा, —भाई)। —भाई

सँ—विवाहकी बातचीत पक्की करना, तिलक।
—भाई, भाई, (-भाई) सँ—झूझा थोड़ी

उमरमें बूढ़ों-सा बर्ताव। —भाई सँ—पक्की
लिखावट, छंदर हस्ताक्षर। —भाई स—

असली सोना। —भाई सँ—पक्की हड्डी,

बूढ़ेका शरीर (जो अनेक दुःख कष्ट सहकर मजबूत हुआ है) ।

श्रीकांठि स—सनका सूखा डठल ।

श्रीकांठि वि—ब्रागा दुबला-पतला (-गड़न)

श्रीकान (नो), श्रीकानो (कि परि १०)—पाक लेशना बटना, मरोड़ना, गालो बनाना, लपेटना, उलफाना ; सलाहके लिए इकट्ठा होना (इठेना—) ; पकाना (कन—, कूटि—) । वि—घटा हुआ, लपेटा हुआ, उलझा हुआ ; पका हुआ ।

श्रीकांठाकि स—पक्की बात, दोनों पक्षोंमें कर्तव्यका निश्चय । वि—निर्धारित, निश्चित । कि वि—स्थायी रूपसे ।

श्रीकांठि, (-का) स—श्रीका देखो ।

श्रीकांठि स—श्रीकांठि ।

श्रीकांठि वि—पक्की तौलका, ८० तोले या उससे अधिककी तौल वाला ।

श्रीकांठि (-कि, -खान) स—पाकिस्तान ।

श्रीकांठि स—पाकडका पेठ । [करके या हो कर ।

श्रीकांठि कावे कि वि—घटनाचक्रते लाचार श्रीकांठि वि—श्रीका पक्का, पूरा ।

श्रीकांठि (पाखना) स—श्रीका, जाना पख, डैना । श्रीकांठि, (श्रीकांठि) स—जाना श्रीकांठि डैनेका भपट्टा ।

श्रीकांठि स—जाना, श्रीकांठि पंख, डैना, श्रीकांठि पर, पंखा (—करा, पखा झलना) ।

श्रीकांठि कि—पखारता है धोता है (प्रायः पद्यमें) ।

श्रीकांठि, श्रीकांठि स—पक्षी, पखेरु, चिड़िया ; मिलमिलीकी पटरी, पहियेका आरा ।

श्रीकांठि स—श्रीकांठि-पखावज । श्रीकांठि वि, स—पखावजी ।

श्रीकांठि, श्रीकांठि स—पगड़ी, साफा ।

श्रीकांठि वि, स—पागल ; सिद्धी, सनकी,

(प्यारमें) भोला । श्रीकांठि—श्रीकांठि, श्रीकांठि । श्रीकांठि वि—पागला (—कूट) ; पागल-सा, सनकी । श्रीकांठि, (-का) स—पागलपन, सनक, नटखटी । [होनेके योग्य ।

श्रीकांठि (-अ) वि—पक्ति-भोजनमें शामिल श्रीकांठि (पाडाश), श्रीकांठि वि—श्रीकांठि पोला, फोका । स—एक मछली ।

श्रीकांठि वि, स—पांच ५ । श्रीकांठि, श्रीकांठि स—सौर मासकी पांचवी तारीख ।—श्रीकांठि स जीरा, मंगरेला, मेथी, सौंफ राई—इन पांच मसालोंका मेल ।—श्रीकांठि, (—श्रीकांठि, -श्रीकांठि) वि—पंचमेल ।

श्रीकांठि वि, स—रसोइया, पचानेवाला ।

श्रीकांठि स—श्रीकांठि खुजली जिसमें छोट्टे बड़े फफोले निकलते हैं । [काढ़ा ।

श्रीकांठि स—पचनेकी क्रिया, हाजमा, पाचक, श्रीकांठि स—काढ़ा ।

श्रीकांठि काढ़ि, श्रीकांठि स—गौ हांकनेकी छड़ी ।

श्रीकांठि स—सत्यनारायण शनिचर लक्ष्मी आदि की कथाकी कवितापुस्तक (शनिचर—, लक्ष्मीचर—), कहानी (अथर्व—) ।

श्रीकांठि श्रीकांठि—रसोई पकानेवाली ।

श्रीकांठि स—श्रीकांठि दीवाल, चहारदीवारी ।

श्रीकांठि (-अ) वि—पचने या हजम होनेके योग्य ; पकाने लायक ।

श्रीकांठि (पाछांठि), श्रीकांठि (कि परि १६)—पछांठि, पछांठि । [अंश ।

श्रीकांठि (पाछांठि) स—पैताना ; निचला श्रीकांठि स—निचल चूतड़ ।—श्रीकांठि वि—श्रीकांठि श्रीकांठि तीन किनारे वाली (साड़ी) ।

श्रीकांठि स—श्रीकांठि पटकन, पछांठि ।

श्रीकांठि, श्रीकांठि, श्रीकांठि कि वि—पीछे । स—पीछेकी दिशा (—श्रीकांठि, —डाका), पीछा (—श्रीकांठि, पीछा करना) । श्रीकांठि, श्रीकांठि

क्रि वि—गच्छाते, पिछने पीछे (—नागा, दिक् करना, पीछे पड़ना); बादको, अतमें।

भाष्ट्र क्रि वि—यदि, अगर, शायद, पीछे।

भाष्ट्र स—भाष्ट्र रईकी वत्ती जिससे सूत काता जाता है। [पसली।

भाष्ट्र, भाष्ट्रा स—पंजर, कंकाल; ठठरी, भाष्ट्रा स—पजावा, भट्टा।

भाष्ट्रा स—कंधे और जाँघके नीचे हाथ रख कर किसी आदमीको उठाना (—रुंवे धरा वा तोना, —कोना)।

भाष्ट्रि स—पश्चिम।

भाष्ट्री वि—नछात्र पाजी, शरारती।

भाष्ट्रा स—कब्रतन हथेली; थावा पंजा, हथेलीकी छाप। [पजाबी।

भाष्ट्राव स—पंजाब। भाष्ट्रावी वि, स—भाष्ट्रावि स—एक ढीली कमीज, पंजाबी।

भाष्ट्रि स—कोठा पटुआ; भाष्ट्रि तह (कापड़—कड़ा, —भाडा, तह खोलना), पटिया, तख्ता, सिंहासन, तख्त (ब्राह्म—, —ब्राही); वैष्णवों का पीठस्थान, अस्ताचल (श्रद्धा भाष्ट्रे बज्जनेन); गृहस्थीका रोजाना काम (वागी—भाष्ट्रा)। —किले वि—भाष्ट्रे ईंटके रंग का। —नौ, भाष्ट्रेनी स—भाष्ट्राभाष्ट्रे भाष्ट्री खेवट, पार करने वाला मल्लाह।

भाष्ट्रे स—पटुता, निपुणता। [गुलाबी।

भाष्ट्रे वि—भाष्ट्रिकले ईंटा-सा रंगवाला, भाष्ट्रेनिश्रु (अ. स—पटनेका पुराना नाम।

भाष्ट्रे स—तख्ता, चक्री (बूकर—, छातीकी चौड़ाई या हिम्मत)। —उन स—लकड़ी का मचान। [टुकड़ा।

भाष्ट्रेनि स—छायाये हुए गुड़का बरफीनुमा

भाष्ट्रि स—कतार, पंक्ति, जोड़ेका एक (एक—छूटा), एक चटाई (नीलम—)।

भाष्ट्रि, भाष्ट्रि स—शृंखला (अत्रिभाष्ट्रि), शैली, कतार। —श्रुति स—अंक-गणित।

भाष्ट्रेश्वरी स्त्री—भाष्ट्रेश्वरी पटरानी।

भाष्ट्रेश्वर, (—श्री) वि—पटवारी, नफा-नुकसानके विषयमें बहुत अधिक छानबीन करनेवाला (भाष्ट्रेश्वरी वृद्धि)।

भाष्ट्रे स—पट्टा, कपड़ेका जोड़ा (को—, फेड़—)। भाष्ट्रे स—गलमुच्छा, गालों परके बढ़ाये हुए बाल।

भाष्ट्री स—छागन बकरा। स्त्री—भाष्ट्री।

भाष्ट्रान स—पठान।

भाष्ट्रान (—नो), भाष्ट्राना (क्रि परि १०)—पठाना, भेजना (ढक—, वंज—, बुला भेजना)।

भाष्ट्र स—नदी तालाब आदिका किनारा, तीर, कपड़ेका किनारा; चलानेके लिए पैरका दवाव ((केंकिडे—फेड़वा)। [चूर)।

भाष्ट्र वि अत्यंत, पक्का (—भातान, नदीमें भाष्ट्रा स—भल्लो सुहृदा। भाष्ट्रागं। स—भल्लोवाग गांव, देहात। —भाष्ट्रे वि—देहाती। —भाष्ट्रे स—पड़ोसी। —भाष्ट्राव कड़ा क्रि—इतना अधिक भगड़ा करना जिससे सुहृद भरेके आदमी इकट्ठे हो जायँ।

भाष्ट्रा (क्रि परि ३)—भाष्ट्रित कड़ा गिराना, उतारना (कल—, उगरेवर तार—थेक—), अंडा देना, बिछाना (बिछाना—), चोटसे गिराना (एक कोपे फेड़ केना); चिल्लाकर कहना (गालि—, डाक—)।

भाष्ट्रान (—नो), भाष्ट्राना (क्रि परि १०)—गिरवाना, उतारवाना। धूम—, छलाना।

धूम-भाष्ट्रानो वि—छलानेवाली। धूमभाष्ट्राने छड़ा स—बच्चोंको छलानेका गीत।

भाष्ट्रि स—नदीके पार जाना, नदीके इस पारसे उस पारका फैलाव।

पाँडे सँ—पाँडे ।

पाँडि सँ—उ हाथ, —धर, —धर सँ—
विवाह, मादी । —पाँडे सँ—कर्मन् हाथ
मिलाना ; विवाह ।

पाँडा सँ—पंडा, मुखिया ; प्रबंधक—
(नज़र—, नज़र—) ।

पाँडान सँ—पंडाल, सभा-मंडप ।

पाँडू स—दवा, दानवा कवल-रोग । पाँडू,
पाँडू वि—दवाण पोला, फीका ।
पाँडू निमि सँ—पुस्तक आदिकी हाथकी
लिखी प्रति, कापी ।

पाँडे सँ—पाँडे पाँडे ।

पाँड सँ—पतन (दृष्टि—, दुःख—) ; क्षात्र,
बहाव (दृष्टि—), नाश, क्षय (दृष्टि—दवा) ;
निक्षेप (दृष्टि—, कर्म—) ।

पाँड सँ—पाँड, पाँडा पत्ती (कर्मा—) ।
ज्योनारमें पत्तल विद्यानेका प्रबन्ध (—पाँडा,
—कर्मा), पत्तर (लाठार—) । —पाँडि
सँ—बच्चोंके लिखनेके लिए ताड़के पत्तीका
गुच्छ । —पाँडोना, भागनेकी तयारी
करना) ।

पाँडक स—पाँड पाप, गुनाह । पाँडकी वि,
स—पापी । स्त्री—पाँडकीनी ।

पाँडूवा, —दवा, —दवा सँ—छोटा कुर्जा ।

पाँडन सँ—नीचे गिराना, उतारना ; चुआना,
विद्याना, नाश करना ।

पाँडना वि—पतला (—कागज, —दवा) ;
महीन, दुबला-पतला (—पाँडन) ।

पाँडपाँड स—दाँडपाँड ।

पाँडा स—पाँड, पाँड पत्ता, पन्ना (बहिद—) ;
फेलेका पत्ता जिसपर भोजन करते हैं ।
लाठार—, पलक । पाँडर—, चरण ।

पाँडा (क्रि परि ३)—विद्याना विद्याना, फलाना
(विद्याना—) ; जिहा गढ़ा भीख माँगना

(लाठर काछ शठ—) ; रखना, स्थापित
करना, उन्मुख करना (कान—, कान— ;
घाड़ि—, डट— ; ठे—, दही जनाना
बूझ— ; बाधा—, सिर पर लेना ; नगाव—
नयी गृहस्थी शुरू करना) । वि—फेला
हुआ, स्थापित ।

पाँडान (-नो), पाँडाना (क्रि परि १०)—
विद्याना, सम्बन्ध जोड़ना (नई—) ।
वि—दनावटी सम्बन्धसे युक्त (—दान) ।

पाँडि सँ—पाँडि कतार । —पाँडि सँ—उन्न
उन्न दानवीन (—पाँडि कदिरा थोड़ा) ।

पाँडि उप—निष्ठ जातिका बोधक उपसर्ग
(—काद, —नेव, —शन) ।

पाँडिबत्त (-अ) स—पातिव्रत, सतीधर्म ।

पाँडि सँ—पंक्ति, पाँडि, कतार ; शास्त्रीय
व्यवस्था-पत्र (—दवा) ।

पाँडि वि—नीचे गिराया हुआ । [अवस्था ।

पाँडि (-अ) स—पतित होनेका भाव या
पाँडि वि—गिरनेवाला ।

पाँडि सँ—पता, ठिकाना, समाचार ।

पाँड (-अ) सँ—वर्तन, आधार, विषय, पाँड,
योग्य व्यक्ति (नगाव—) ; आदर्श (बावि
छाड़वाव—नई) ; दूल्हा, वर । पाँड (-अ)
वि—वरके साथ विवाहित (कछा—कर्मा) ।

पाँडर स—पत्थर, पत्थरकी थाली, नग,
मणि (बावि—) । पाँडरि, पाँडरि सँ—
पयरी । पाँडर वि—पत्थरका (—कर्मा) ।
पाँडर सँ—समुद्र, विशाल जल-राशि
(अर्द्ध—) ।

पाँडर (-अ) स—अथवा मार्गव्यय ।

पाँड सँ—पाँडर ; मूल, जड़, ग्लोकका चौथाई
अंश ; चौथा हिस्सा । —पाँड स—पाँडरि
वहलना । —पाँडि वि—पेदल चलने वाला ।
—पाँड सँ—पन्नेके नोचकी टोका, फुटनोट ।

—प वि, स—जड़से पीनेवाला, वृक्ष पेड़।

पानश्री स—ईसाई धर्मका पुरोहित या प्रचारक।

पानाड़ स—पानाड़ मकानके पीछेवाला कूड़ाखाना।

पानान स—पावदान।

पाइका स—जूता, खड़ाक।

पानानक स—चरणामृत।

पानान वि—पाने पान, तीन-चौथाई।

पाठ (-अ) स—पैर धोनेका जल।

पान स—पीना, पान। —पाव स—शराब पीनेकी आदत। —पाइ स—जल या शराब पीनेका पात्र।

पान स—ठान पान; पानका बीड़ा।

पान स—पान एक गलने योग्य धातु जो धातुके बतन जोड़नेमें काम आती है।

पानकोड़ि, -ड़ी (पानकउड़ी) स—पनडुब्बा (चिड़िया)।

पानडूबा (पानतुआ) स—गुलाब-जामुन।

पानमि (पान्शि) स—एक हलकी नाव।

पानमे (पान्शे) वि—किया फ्रीका, स्वादहीन।

पानी स—पानीमें तरनेवाला-पौधा, शरबत मिष्ठानि—; तुल्य, सा (पात—पूत)।

पानि स—जल, पानी। —पानस, पानसख (-अ) स—कनकसख छोटी चचक। —कन, पानकन स—सिंघाडा। [वस्तु।

पानीश (-अ) वि—पीने योग्य।; स—पेय

पाने क्रि वि—शक्ति ओर, तरफ।

पाइ स—पानीसे भिगोया हुआ बासी भात।

पाइ (पान्थ -अ) स—अधिक राहगीर। —निवास, —पाना स—धर्मशाला, चट्टी, सराय।

पात्रा स—पन्ना, मरकत।

पात्र स—पाप, गुनाह; विपत्ति, बला (विनाश

कत्रा), पापी। —पात्र स—अशुभ ग्रह।

पात्र (-अ) वि—पापनाशक। —वृक्ष स—बुरी अकड़। वि—बुरी अकड़ वाला।

पात्रि स—कुलेश्वर पखडी।

पात्र स—पापड।

पात्रि स—पपीहा।

पात्रा स—पैरकी धूल पोंछनेके लिए दरवाजे पर रखा हुआ बिछावन।

पाव स—गाँठे गाँठ, पर्व, दो गाँठोंके बीचका हिस्सा (बाइल्लेब—, बाइल्लेब—)।

पाव वि, स—पवित्र करनेवाला; अग्नि।

पावदा (पावदा) स—एक छोटी पतली सड़ली। [स्त्री—पावनी।

पाव वि—पवित्र करनेवाला। स—शोधन।

पाव वि, स—पापी, अधम; नीच आदमी (पा-)। स्त्री—पावरी। [यत्र।

पाव स—पप, कुण आदि से जल उठानेका

पावथाना स—पैखाना, शौचालय।

पाववि स—शोषा टहलना।

पावजास स—इखात्र पाजामा।

पावतास स—पतरा, कामके पहले घमड।

पावदन क्रि वि—शोषा, पनडुब्ब पैदल।

पावपाव क्रि वि—शक्तिपाने कदम कदम पर।

पावरा स—पावरा कबूतर कबूतर।

पावरा स—पावरा, पत्रावरा खीर।

पाव स—पाया, पावा, खंभा। —पावि स—उच्च पदके कारण घमंड।

पाव स—मलद्वार।

पावरा स—खीर।

पाव स—नदी आदिका दूसरा किनारा (पावे बाउरा); उत्तरण, पार होना, उद्धार, प्रांत, तीर (अ—, उ—),

पाव वि—समर्थ।

पावका (-अ) वि—पत्रावरा पराया, पारलौकिक।

श्रीराम वि—पार जानेवाला, समर्थ, निपुण ।
 श्रीराम, श्रीराम सं—उपवासके दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन ।
 श्रीराम (-अ) सं—परत व्रता, अधीनता ।
 श्रीरामक क्रि वि—श्रीराम, मछल श्रेष्ठ हो सके तो, संभव हो तो ।
 श्रीरामिक वि—पारलौकिक ।
 श्रीराम सं—श्रीराम पारा ।
 श्रीरामनी वि—दक्ष, निपुण ; दूरदर्शी, परिणाम देखनेवाला ; बुद्धिमान । श्रीरामनी सं—बुद्धिमानी ।
 श्रीरामार्थिक वि—मोक्ष सम्बन्धी ।
 श्रीरामार्थी (-अ) सं—श्रीरामार्थिकता लगातार होनेका भाव, सिलसिला ।
 श्रीरामलौकिक वि परलोक सम्बन्धी ।
 श्रीराम (पार्श्व) सं—एक छोटी मछली ।
 श्रीरामनी (पार्श्व) सं—श्रीरामनी फारसी, पारसी ।
 श्रीरामनी वि—फारस देश सम्बन्धी । सं—फारस देशका निवासी । श्रीराम (-अ) सं—फारस देश ।
 श्रीराम सं—श्रीराम पारा ।
 श्रीराम वि—सदृश, तुल्य, सा (श्रीराम—)
 श्रीराम (क्रि परि ३)—सकना, समर्थ होना, याघ्रा हीन या अनुमति प्राप्त होना (उद्देश्य श्रीराम, जो अथवा वही श्रीराम) । [पार होना ।
 श्रीराम (-नो), श्रीरामनी (क्रि परि १०)—श्रीरामनी सं—पार होनेका महसूल ।
 श्रीरामश्रीराम सं—दोनों किनारे, एक किनारेसे दूसरे किनारे गमन ; समुद्र ।
 श्रीरामश्रीराम सं—श्रीराम कवच ।
 श्रीरामश्रीराम सं—समुद्र, दोनों तीर ।
 श्रीरामश्रीराम सं—पुराण आदिका विधि-पूर्वक सम्पूर्ण पाठ ।
 श्रीरामश्रीराम सं—दक्षिण इनाम ।

श्रीरामश्रीराम (-अ) सं—श्रीराम, सजावट ।
 श्रीरामश्रीरामिक वि चारों ओरका ।
 श्रीरामश्रीरामिक वि—परिभाषा सम्बन्धी ।
 श्रीरामश्रीराम सं—सदस्य, राजसभाके लोग, अनुचर ।
 श्रीराम सं—एक सुगंधित फूल ।
 श्रीराम (-अ) सं—वचनकी कठोरता ।
 श्रीराम (-अ) सं—पृथक्ता, भेद ।
 श्रीराम (-अ) वि—पृथ्वी सम्बन्धी, इस लोकका (-अ, -अ) ।
 श्रीराम सं—उत्सव, त्योहार, अमावस्या आदि पर्वमें किया जानेवाला श्राद्ध । श्रीराम सं—त्योहारका इनाम, त्योहारी ।
 श्रीराम (-अ) वि—पर्वतीय पहाड़का, पर्वतमय, (-अ) ; पर्वतमें रहने या उत्पन्न होनेवाला (-अ, -अ) ।
 श्रीराम (पार्श्व -अ) सं—श्रीराम बगल, दिशा ।
 श्रीराम सं—सहचर ; सुसाहब । श्रीराम सं—श्रीराम करवट लेना या बदलना ।
 श्रीराम सं—श्रीराम ।
 श्रीराम सं—पालक (श्रीराम—), एक उपाधि ; समूह देल, कुंड (श्रीराम—) ; नाव चलानेका पाल ; चंदवा, शामियाना ।
 श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम सं—पालकका साग ।
 श्रीरामिक वि—पालन करनेवाला । सं—पर, डेना ।
 श्रीरामिक सं—निविक पालकी ।
 श्रीराम, श्रीराम, (-अ) सं—श्रीराम पलक ।
 श्रीराम सं—उलटाना, पलटाना ।
 श्रीरामिक वि—उलटाना, दूसरे पक्षके द्वारा किया हुआ (-अ, -अ) ।
 श्रीराम (नो), श्रीरामनी (क्रि परि १६)—उलटाना, पलटाना, लौटाना, बदलना ।
 श्रीरामिक (पालक) सं—जिसके साथ

विवाहका सम्बन्ध किया जा सके (—
धर) ।

शानन सं—शोषण रक्षण पालन, परवरिश ।

शाननोत्र (—अ) वि—पालने योग्य । शाननिष्ठ ।
सं—पालनेवाला । स्त्री—शाननिष्ठौ ।

शान-शोषण सं—पालने योग्य पावण या
स्योहार ।

शाना सं—छोटी डाली (डाल—), बारी,
पारी । (—कविश काख कर, एहेवात्र
आशत्र—), संगीत कीतन या अभिनयका
विषय (कश्चिदत्र—), तुषार, पाला,
हिम ।

शाना (क्रि परि ३)—पालना, पालन करना ।

शानान सं—जीन, काठी, शक्र खन
गायका धन ।

शानान (—नो), शानानो (क्रि परि १०)—
शानान कर भाग जाना, चम्पत होना ।

शानि, (—नौ) सं—शानि ढेर, कतार, श्रेणी,
अन्नकी एक नाप, पाली भाषा ।

शानिठ वि—शोषा पाला हुआ । सं—एक
उपाधि । स्त्री—शानिठा ।

शानिण सं—पालिश, चिकनाहट ।

शानो सं—सि घाड़ा आदिका मैदा, बाली ।

शानोशन सं—मग्न पहलवान ।

शाना (—अ) वि=शाननोत्र ।

शाना सं—किवाड़ (मरकात्र—); पलड़ा
(फाड़ि—); बटखरा ; होड़ (—दोषा) ;
दूरी, फासला (दूर—); वश, फेर (दूषि
तात्र शानात्र पछे) ।

शानि सं—मड़ि-रस्सी, बंधन, गुच्छा, पास,
बगल । शानाशानि क्रि वि—पास-पास ।
वि—सटा हुआ ।

शानि सं—शे राख, कूड़ा (छाई—) ।

शानि वि—शानवर्ग खाकी ।

शानव वि—पशु-सम्बन्धी, पशु-सा ।

शानविन वि—पशु-तुल्य, पशुका ।

शाना सं—चौपड़, चौसर, पांसा ।

शानि वि, सं—फंदावाला, वहेलिया ।

शानाछा (अ) वि—पश्चिम देश सम्बन्धी,
दूरोपका (—गुलता), पीछेका ।

शाना (अ), शाना वि सं—अधार्मिक
नास्तिक, पाखंडी ।

शाना सं—शान पत्थर । वि—कडा, बेरहम,
पासंग (—डाढ़, तराजू बराबर
करना) ।

शान (पाश वि—परीक्षामें उत्तीर्ण । सं—
इम्तहानमें कामयाबी (—करा, शानेन खबर) ;
अभिनय रेलगाडी आदिमें जानेका आज्ञा
पत्र ; पास pass । [गया ।

शानविन (—अ) (पद्यमें) क्रि—(वह) भूल
शाना सं—पर्वत, पहाड़, करारा ।—उत्ति
सं—तराई । शानाछि, शानाछे वि सं—
पर्वतीय, पहाड़ी । शानाछी सं—पहाड़ी
जाति । वि—पहाड़का ।

शानात्र सं—पहारा, चौकसी, रखवाली ।
—शाना, (—छना) सं—पहारावाला,
सिपाही, कान्स्टेबल ।

शिक सं—कोकिल कोयल, चबाये हुए पानका
रस, पीक, थूक ।—दान,—दानि सं—
पीक-दान, उगल-दान ।

शिकल, शिक (पिग-अ) वि—कुछ पीला ।

शिक सं—कोयलेसे बनी एक कठिन वस्तु
जिसे गला कर सड़कों पर दिया जाता है,
पीक, थूक, एक फल, आड़ू ।

शिकारि सं—पिचकारी ।

शिकारि, (शिक-) सं—जमाया हुआ
मोटा-कागज, दफ्ती ।

शिकारि, (शिक-) सं—आंखकी मैल या कीचड़ ।

प्रिच्छिन, (-इ-) वि—प्रिच्छिन फिसलनेवाला, तेलहा ; लसलसा ।

प्रिच्छ स—पीठा (पिच्छ, पीछे) । —छेन स—पीछेकी ओरका आकर्षण, मसता । —न वि—पीछे हटनेवाला, अनग्रसर ।

प्रिच्छ स—पीछा, पीछेका स्थान (—दिक्) ।

प्रिच्छ, प्रिच्छा वि=प्रिच्छिन ।

प्रिच्छान (पिच्छलानो), प्रिच्छाना, प्रिच्छाने (क्रि परि १७)—प्रिच्छाने फिसलना (प्रि—) ।

प्रिच्छान (-नो), प्रिच्छाना, प्रिच्छाना (क्रि परि ११) —पीछे जाना, हट आना, पीछे रह जाना, पिछड़ना ।

प्रिच्छ क्रि वि, स=प्रिच्छ ।

प्रिच्छा, (-इ) स—प्रिच्छा, दाँठ पिजड़ा ।

प्रिच्छा, प्रिच्छा (क्रि परि ५)—लईको खोंच कर रेशा अलग अलग करना ।

प्रिच्छा स—दाँठ पिजड़ा, ठरती ।

प्रिच्छे स—ताशके चेलमें एक बारका दान ।

प्रिच्छे स—अष्टाद मार । [पीटनेका मुगरा ।

प्रिच्छेना (पिच्छेना), (-इ) स—छत फर्श आदि प्रिच्छेप्रिच्छे (पिच्छेपिच्छे) स—बार बार आँख मींचना और खोलना, हर बातमें टोकनेकी आदत ; पाकसाफ रहनेकी सनक । प्रिच्छेप्रिच्छे वि—हर बातमें टोकनेवाला, अत्यधिक पवित्रता का सनकी ।

प्रिच्छे, प्रिच्छे (क्रि परि ५)—पीटना, ठोंकना ।

प्रिच्छेन, प्रिच्छेनि, प्रिच्छेनि स—अष्टाद मार ।

प्रिच्छेन (-नो), प्रिच्छेनाना, प्रिच्छेनाना, प्रिच्छेनाना (क्रि परि ११)—प्रिच्छे पीटना ; दाँठ मारना, ठोकना, पिटवाना । [चावल ।

प्रिच्छेनि, प्रिच्छेनि स—जलके साथ पिसा हुआ प्रिच्छेन स—पकाइया, छप्पटे चम्मक (-इच्छे) ।

प्रिच्छे स—पूछ पीठ, पीछा, पीछेका स्थान ;

आगेका स्थान (प्रिच्छेद प्रिच्छे छिन—२७ छेन) । —दाँठ स—रीढ़ । प्रिच्छेप्रिच्छे, प्रिच्छेप्रिच्छे वि—प्रिच्छे प्रिच्छे एकके बाद दूसरा (—इच्छे छेन) । क्रि वि—पीठकी ओर पीठ रखकर ।

प्रिच्छा, प्रिच्छे स—प्रिच्छे पिसा चावल या दाल नारियल छेना खोआ आदि मिलाकर बनायी हुई मिठाई ।

प्रिच्छा, प्रिच्छे स—पीड़ा, पाटा, चतूरा ।

प्रिच्छे स—पीड़ा ।

प्रिच्छे (-अ) स—पकाये हुए चावल आदिका गोल लोंदा जो श्राद्धमें पितरोंको अर्पित किया जाता है, डला (छेका—, बाज—) ।

—द (-अ) स—पिंड-दान करनेवाला, पिंडाधिकारी । [चीनीमें पकाया हुआ खजूर । प्रिच्छे, प्रिच्छे, प्रिच्छे स—प्राश्चर्य छेनि पिंडली, प्रिच्छे स—पीतल ।

प्रिच्छे स—प्रिच्छा पिता । —द्वय (-अ) वि—पिताके तुल्य । —दाँठ (-अ) स—पितरों के लिए श्राद्ध तपण आदि । —द्वय स—पिताका वंश । —प्रिच्छे स—पितरलोग । —दाँठ स—मृत पिताका श्राद्ध आदि कर्तव्य । —प्रिच्छे (-अ) स—कुआर की कृष्ण प्रतिपदासे अमावस्या तकका समय ; पिताके साथ सम्बन्ध-युक्त कुटुम्बी । —प्रिच्छे स—पुरखा । प्रिच्छे (-अ) स—चचा । —द्वय स्त्री—प्रिच्छे फूफी, बुआ । —द्वय (-अ) वि—पिताके तुल्य ; पिताके समान पूज्य । —इच्छे स—प्रिच्छेपिच्छे पिताका हत्यारा ।

प्रिच्छे (-अ) स—पित्त । —दाँठ, प्रिच्छेप्रिच्छे स—पित्तकी थैली । —द्वय (-अ), —नाभिक वि—पित्तका दोष दूर करनेवाला । —प्रिच्छे स—अधिक भूख लगने पर भोजन न

मिलनेसे पित्तका वृथा खाव । —वक्ता स'—
भुखके समय थोड़ासा खाव खाना ।

शिवन स'—पीतल

शिवान्न स'—पिताका घर, नेहर । [युक्त ।

शिव्य (-अ) वि—पैतृक, पितासे सम्बन्ध-

शिविय स'—अशौच दीया, चिराग ।

शिवान स'—थाप कोष, स्यान, ठकन ।

शिन स'—आनशिन पिन, कांटा ।

शिनान स'—नाकमें घाव होनेका रोग पीनस ।

शिवण्ड स'—शिवोलिका च्यूं टी ।

शिवा, शिव स'—पीपा ।

शिवगा स'—प्यास, लालच । शिवगित (-अ),

शिवगो वि—प्यासा । शिवग वि—पीने या

पानेके इच्छुक ।

शिवोलिका स' = शिवण्ड ।

शिवूल, (शिव-) स—पिप्पली ।

शिवन स'—पीपल ।

शिवन स'—शिवाना प्यादा, हरकारा, चिट्टी-रसां ।

शिव वि, स'—प्रिया, प्रेमिका (पद्यमें) ।

शिवान्न, शिवान्न, (शिव-) स—प्याज ।

शिवान्न, (शिव-) स'—डालवागा प्यार । शिवान्न,

(शिव-) वि—प्यारा । स्त्री—शिवानी, (शिव-) ।

शिवाना स'—वाटि प्याला ।

शिवान, (-ना)—प्यास । शिवानो वि—प्यासी ।

शिवान स'—कमीज, कुर्ता ।

शिवानो, शिवानो स'—एक पतित ब्राह्मण जाति ।

शिवि स'—वक्तावि रकाबी ।

शिवित्ति, (-वै-), शिवित्ति स'—प्रेम, इश्क ।

शिव स'—हाथी, फील, दवाको गोली ।

—थाना स'—फीलखाना । —शिव स'—

च्यूं टोंकी तरह एक स्थानमें जमाव,

गड्ढेसे च्यूं टोंका कु डके साथ निकलना ।

—शिव स'—दीवट ।

शिव स'—श्रेष्ठ तिल्ली ।

शिवित्ति स'—मांस । —शिव (-अ) स'—स्तन ।

शिवन वि—चुगलखोर, निंदक ।

शिव, शिव (क्रि परि ५)—वाट पीसना ।

वि—पिसा हुआ । शिवई स'—पिसाई ।

शिव (-अ) वि—पिसा हुआ, मसला हुआ,

कुचला हुआ ।

शिवक स' = शिव ।

शिव, शिव (पिशे) स'—फूफा । शिवी, शिवि

स्त्री—फूफी, हुआ । शिवतूत (-अ), (-ता)

वि—फुफेरा (—डाई, —वान, —दर, —

शानी) । शिवतूत स'—पति या पत्नीका

फूफा । शिवतूत स्त्री—पति या पत्नीकी

फूफी ।

शिवन स'—पिस्तौल, तमचा ।

शिवित (-अ) वि—भ्यानमें रखा हुआ, बिपा

हुआ ।

शिव, शिव स'—एक फल, आड़ू ।

शिव स'—रोग, क्लेश, दर्द । शिव वि,

स—पीडा देनेवाला । शिवन स'—क्लेश

दान, मर्दन, सादर ग्रहण (शानि-) ।

शिवित (-अ) वि—रुग्ण, क्लेशित । —शिव,

(शिव-) स'—दवावके साथ अनुरोध ।

शिव वि—रुग्ण पीला । शिव (-अ, वि—पान

किया हुआ, पिया हुआ ।

शिव वि—स्थूल, मोटा ।

शिवन स' = शिवान ।

शिव वि—स्थूल, मोटा, बलवान ।

शिव स'—अमृत, सुधा ।

शिव स'—मुसलमान साधु ।

शिव स'—एक भाग, पोई ।

शिव स'—पुरुष, नर । शिव शिवी वि, स्त्री—छिनाल ।

शिव (-अ) स'—पुरुषका जननेन्द्रिय ।

शिव (-अ) स'—पुरुषत्व, पुरुषका भाव ।

शिव, शिव स'—साँढ़ । वि श्रेष्ठ (नद्र-) ।

शुद्ध स—शुद्धिनी तालाव, पोखरा ।

शुद्धाशुद्ध (-अ) क्रि वि—वारिक छाननीके साथ, अति सूक्ष्म ।

शुद्ध (पुच्छके) वि—छोटा, नन्हा (—छले) ।

शुद्ध (-अ) स—जड़ दुन, पूँछ ।

शुद्ध (क्रि परि ६) —पूछना ।

शुद्ध (क्रि परि ६) —गोछ, पोछा पोंछना ।

शुद्धान (-नो), शुद्धानो, शुद्धनो, पोछानो (क्रि परि १०, —पोछानो पोंछनेका काम दूसरेसे कराना ।

शुद्ध स—पीव, मवाद । [सचित धन ।

शुद्धि स—पूजी, मूलधन । —गोछे स—

शुद्ध (-अ) स—समूह, राशि, ढेर । शुद्धित (-अ), शुद्धित (-अ) वि—ढेर लगा हुआ ।

शुद्धित (-अ) वि—ढेर लगाया हुआ ।

शुद्धि स—आवरण, आधार, जिससे पकड़ा जाता है (छू—, पक—), अंजलि (कर—, इडाक्षनिशुद्धे); दोना (पक—); औपघ पकानेका एक मुँह-बघ बर्तन । शुद्धित (-अ) वि—पुष्टपाक किया हुआ ।

शुद्धिनि, शुद्धिनि स—पोटली, छोटी गठरी ।

शुद्धि स—एक छोटी मछली ।

शुद्धि स—पुटीन, खड़िया मिट्टीकी बुकनीमें तीसीका तेल आदि मिलाकर बनाया हुआ एक पलस्तर जिससे गीशा आदि सटाते हैं ।

शुद्धान (-नो), शुद्धानो, शुद्धनो, पोछानो (क्रि परि १३) —जलाना, भस्म करना, मनमें दख देना । वि—जला हुआ दग्ध ।

शुद्ध (-अ) स—पुण्य, धर्म, शुभ कर्म, पुण्य-जनक काय । —दम । वि—पुण्यजनक कर्म करनेवाला । —दीर्घ वि स—पुण्य कर्म करके जिसने यश पाया है । —लगा वि—जिस नदीका जल पवित्र माना जाता है ।

—दम स—पुण्यकी शक्ति । —हाव वि, स—

शुद्धकोर्षि । शुद्धाश (-अ) स—जिस दिन पुण्य कर्म किया जाता है, पर्व-दिन ।

शुद्धि स—शुद्ध खिलौना, गुड़िया (बहुर—), आँखकी पुतली ।

शुद्धि स—मोतीकी शकलवाली काँचकी छोटी गोली, इससे माला बना कर वच्चे गुड़िया को पहनाते हैं ।

शुद्धशुद्ध स—बड़ी सावधानी ।

शुद्ध स—गुड़िया ; मूर्ति ।

शुद्धिका, शुद्धि, (-नौ) स—शुद्ध गुड़िया ।

शुद्ध स=शुद्ध ।

शुद्ध, शुद्ध (-अ) स—छले, छनन, सूत-लड़का, बेटा, पुत्र । —काम वि, स—पुत्रकी कामना करनेवाला । —वधू स्त्री—पतोहू । शुद्धी, शुद्धिका स्त्री—कछा लड़की । शुद्धी (-अ) वि—पुत्र सम्बन्धी ।

शुद्धि, शुद्धि स—पोथी, हाथकी लिखी पुस्तक ।

शुद्धिना स—पुदीना ।

शुद्धिनि क्रि, वि—आवात्र फिर, फिर भी !

शुद्धिनि क्रि वि—आवात्र फिर, पुनः ।

शुद्धिस्थान (पुनस्तथान) स—फिरसे उठना, मृत्युके बाद फिर जीवित होना ।

शुद्धिनि क्रि वि=शुद्धिनि । [पुनर्जन्म ।

शुद्धि (-अ) वि—फिरसे उत्पन्न । स—शुद्धि स्त्री—दो बार विवाहिता स्त्री ।

शुद्धिना स—प्रत्यागमन, लौट आना (जगन्नाथ—) ।

शुद्ध (-अ) क्रि वि—आवात्र पुन, फिर ।

शुद्ध, शुद्ध, शुद्ध स—पूर्व दिशा । वि—पूर्व दिशा का, पूर्वी (शुद्ध भास्विता, शुद्ध भास्वाव) । शुद्ध, शुद्ध वि—पूर्वैया (—शब्द) ।

शुद्धिनि (पुण्यशर) वि अग्रवर्ती । क्रि वि—सामने, पूर्वक (अग्र—) ।

शुद्धिनि क्रि वि—सामने, आगे ।

भूतवाच स—नगरका फाटक, महलको ह्योदी ।

भूतन (-अ), भूतनो वि—पुराना ।

भूतनात्री स्त्री अन्त पुरमें रहनेवाली स्त्री ।

भूतख (-अ) वि—भूतशृङ्खला पूरा, भरा ।

भूतवागी स—नगरनिवासी ।

भूता, भूता वि—पूरा, पूर्ण, भरा । —भूति
क्रि वि—पूरा भरकर, पूर्ण रूपसे ।

भूता क्रि वि—प्राचीन समयमें । स—पुराना
जमाना (—उद्य, —विस्) ।

भूता, भूता (क्रि परि ६)—पूण होना, भर
जाना ; पूण करना, भरना, घुसाना, भीतर
रखना ।

भूतातद्ध (-त -अ) स—प्राचीन युगका वृत्तान्त,
इतिहास । —विस्, —ऊ वि, स—प्राचीन
तत्त्वका जाननेवाला । [जमानेका ।

भूतातन वि—भूतनो पुराना, प्राचीन, पुराने
भूतान (-नो), भूतानो, भूतनो, भूतानो (क्रि
परि १३)—पण करना, भरना, पूरा करना
(आशा—, लक्ष ठोका—) ।

भूतातद्ध (-अ) स = भूतातद्ध ।

भूति स—भूति पूरी, पूड़ी ।

भूतिवा स—कागखेर मोड़क पुड़िया ।

भूतीव स—विष्ठा मल, गू ।

भूत वि—मोटा, स्थूल (— कागख) ।

भूत स—पुरोहित, पुजारी । [चलनेवाला

भूताग (-अ), भूतागागी वि—ब्रह्मगागी आगे
भूतावाः स—पुरोहित ।

भूतावर्तों वि—सामनेका, आगेवाला ।

भूत स—भूत, भूतका पुल ।

भूत स—हर्ष, आनद, रोमांच । भूतकिठ (-अ)
वि—हर्षित । [समोसा ।

भूति स—एक प्रकार भूति एक मिठाई, मीठा

भूतिन स—उठ तीर, नदीका किनारा ।

भूतिमा स—वाशिन, भूटेलि बडल, पुलिदा ।

भूतिमा स—पुलिस, पुलिसका जिम्मा (भूतिमा
देवता) ।

भूति क्रि = पोषा ।

भूतिगी स—भूत, भूतवाच तालाब ।

भूति वि—प्रचुर, बहुत, पूर्ण ।

भूति (-अ) वि—तैयार, स्थूल ; पका या पाला
हुआ । भूति सं—पोषण, समर्थन, मजबूती ।

भूति (-अ स—भूत फूल । —भूति सं—
ऊपरसे फूलोंको वर्षा । —भूति स—

मधुमास वसत ऋतु । —भूति स—भूतवाच
भूति पुखराज । भूतिभूति स—भूति भर
फल जो देवता आदिको चढ़ाया जाता है ।

भूतिभव स—फूलोंका मधु । भूतिठ (-अ)
वि—फूला हुआ । भूतिठा स्त्री वि—
ऋतुमती ।

भूति स—भूतिभूति भूति ।

भूति, भूति स—भूतिभूति भूति, उपासना,
स्वागत । भूति स, वि—भूति करनेवाला,
पुजारी । भूति स—भूति, आदर । भूतिभूति
स, वि—भूति । भूति (-अ) वि—भूति
योग्य । भूति, भूति स—भूति देव
मंदिरका पुजारी । भूति (-अ) वि—
भूति जिसकी भूति की गयी है,
सम्मानित । [(भूतिभूति कत भूति) ।

भूति (क्रि परि ६)—भूति करना, भूति

भूति (-अ) वि—भूति, पाक ।

भूति वि—भूति भूतिभूति भूतिभूति ।

भूति स—भूति भूति भूति भूति, भूति ।

भूति स = भूति ।

भूति स = भूति ।

भूति स = भूति ।

[है, पूर ।

भूति स—भूतिभूति भूति, जो भीतर भूति जाता

भूति स—भूति, भरनेकी क्रिया, समाधान

(भूति—), भूति । भूति वि—भूति करने

वाला। स—वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्याको गुणा किया जाय, प्राणायामका प्रथम अंश। शूर्ण (अ) वि—पूर्ण किया हुआ। शूर्णविः स, वि—पूर्ण करनेवाला।

शूर्ण (अ) वि—पूर्ण, पूरा, भरा; अखंड, समूचा, समाप्त; सफल। —काम वि—जिसकी कामना पूर्ण हुई है। —गर्भ स्त्री—आत्म-आत्मा जिसका गर्भ पूर्ण हुआ है। —शूर सं—नाडि पूर्ण विराम पाई। —दद (अ) वि—पूर्ण युवा। —नाडा सं—पूरी मात्रा, समूचा अंश। शूर्णा सं—पूरी आयु। वि—जीव जीवो। शूर्ण स—पूर्ण चंद्रमा।

शूर्ण (अ) सं—जनताके हितके लिए तालाब खोदना रास्ता बनाना आदि कार्य (—विभाग)।

शूर्ण (अ) स—श्व पूर्य वि पिछला, पीछेका, पहलेका; पूर्व दिशाका (—शक्तिमान)। —गाने वि—आगे चलने वाला। —काम स—पहलेका अनुभव, भविष्यकी घटनाके विषयमें ज्ञान। —उन वि—पहलेका। —रात्रि स—रात्रिका प्रथम भाग। —रात्रि सं—गत रात्रि, पिछली रात। —नक्षत्र स—भविष्य घटनाका चिह्न। —नक्षत्र स—पहलेका अभ्यास, पूर्व जन्मका संस्कार। शूर्णाश्र वि—आपाणाद आदिसे अत तकका। शूर्णाश्र क्रि वि—आपाणाद के पहलेकी अपेक्षा। शूर्णाश्र सं—जो पहले बनला दिया जाता है, सूचना, भूमिका। शूर्णाश्रि क्रि वि—आपाणाद के पहलेसे। शूर्णाश्रि (अ) स—दिनका प्रथम अंश। शूर्ण (अ) वि—श्व युक्त लगा हुआ। शूर्ण सं—श्व जिज्ञासा।

शूर्ण स—परिवारमें जिसकी रसोई अल्ला पकती है।

शूर्ण, शूर्ण वि—स्थूल; विशाल महान्।

शूर्ण (अ) वि—छिन्नान्ति पूजा हुआ

शूर्ण (अ) सं—पीठ; पीछेकी दिशा,

ऊपरका अंग। —अर्ध सं—अर्धान्न

चम्पत। —ल (अ) स—हार कर पलायन।

शूर्ण सं—पुस्तकके पन्नेका एक पृष्ठ। शूर्णा

(अ) सं—पुस्तकके पृष्ठकी क्रमिक सख्या।

शूर्ण वि—शोर-शूरी कीचड़दार; कीचड़सा।

शूर्ण सं—मोरकी फैलायी हुई दुम (—द्वारा)।

शूर्ण (पच), शूर्ण स—शोर मरोड़, घुमाव,

पेच; कुटिलता, कपट, धोखा; समस्या;

सकट। शूर्णा, शूर्णा, शूर्णा (पं-)

वि—कुटिल; जटिल; पेचदार

शूर्ण, शूर्ण (पंचा), शूर्ण स—उल्टा।

शूर्ण—शूर्ण, शूर्ण।

शूर्ण (पंचानो), शूर्णा (क्रि परि १०)

—शूर्णा वटना, लपेटना; जटिल करना।

शूर्ण स—एक कल्पित देवता, कहा जाता है

कि उसके असरसे बच्चोंको मिरगीका रोग हो

जाता है (शूर्णा शूर्णा)।

शूर्ण स—पीछा (—नक्षत्र, पीछा करना)।

शूर्ण (क्रि परि ५)=शूर्ण।

शूर्ण वि—पृष्ठोंवाला (शूर्ण—)।

शूर्ण सं—उदर, पेट, गर्भ; मन। —शूर्ण

क्रि—मल कठिन होना। —कामशूर्ण क्रि—पेट

में दर्द होना। —नक्षत्र शूर्ण, —नामानो क्रि—

पतला दस्त होना। —शूर्ण क्रि—अधिक भोजनसे पेट

भर जाना। —शूर्ण वि—अजीर्ण रोगी।

—शूर्ण क्रि—गर्भ होना। शूर्ण शूर्ण स—

पेटकी बीमारी, उदरामय पतला दस्त।

शूर्ण शूर्ण सं—दिलकी बात।

पेटेरा सं—पिटारा, बाकस, पेटी ।

पेटो (क्रि परि ५) —पिठो पीटना, ठोंकना ।

वि पीटकर गढा हुआ (—लाश्वर कड़ा) ;

जो ठोंक कर बजाया जाता है (—चड़ि) ।

पेटोई सं—पिटार्ई । [वशीभूत ।

पेटोः, पेटोश वि—अधीन, आज्ञाकारी,

पेटोन (क्रि परि ११) = पिठोन । [हिस्सा ।

पेटि स—पेटो, कमरबंद ; मछलीके पेटका

पेटूक वि—पेटू, भोजन-प्रिय ।

पेट्रु सं—पेट्रोल एक तेल petrol

पेड़ा (पैड़ा), पाड़ा सं—पेड़ा, एक मिठाई ।

पेड़ापौड़ि सं = पौड़ापौड़ि ।

पेटू नून सं—पाजामा, इजार pantaloons

पेठनी, पेठ्ठी स्त्री—प्रेतनी, भूतनी ; मैली-

कुचैली बदसूरत औरत ।

पेठि वि—तुच्छ, हीन ।

पेठे सं—छोटे छूड़ि छोटी टोकरी ।

पेन सं—कलम कलम pen

पेनशन सं—निवृत्ति-वैतन, पेन्शन pension

पेनसिल सं—पेन्सिल pencil

पेपे सं पपीता । [वस्तु, पेय ।

पेव (-अ) वि—पीने योग्य । सं—पीनेकी

पेवरा सं—पिशाच प्याज ।

पेवरा सं—प्यादा, हरकारा ।

पेवरा, पेवरा, पेवारी—पिशाच देखो ।

पेवरा सं—अमरुद ।

पेवरा सं—पिशाच प्याला ।

पेरु सं—पेरु, मुर्गीसी एक चिड़िया ।

पेवन (नो), पेवना (क्रि परि १०)—पार

होना, व्यतीत होना ।

पेवक सं—कील, कंटिया ।

पेव वि—कोमल, लघु ।

पेश सं—पशुथे हापन पेश ।

पेश वि—छंदर, कोमल ।

पेशा सं व्यवसाय, पेशा । —काव, —कव,

सं, वि—वेण्या । —दाव वि—पेशेवर,

व्यवसायी । —दावो वि—पेशा सम्बन्धी,

व्यापारिक । [या गाँठ ।

पेशी, पेशि सं—शरीरके भीतर मांसकी गुत्थी

पेशाशख सं—नाचनेवालीका ढोला लहगा ।

पेश सं—पजन, रातो पीसना, चूर्णन । , पेशी

सं—लोढ़ा ; चक्री । पेशि (-अ) वि—पीसा

हुआ । पेशा क्रि, पेशाई सं—पिशा देखो ।

पेश सं—पिस्ता ।

पेशा (, पेशा), (-अ) सं—जनेऊ ।

पेशाशख (-अ) वि—पितामह सम्बन्धी ।

पेशक वि—बपौती ।

पेशिक वि—पित्त सम्बन्धी ।

पेशाच वि—पिशाच सम्बन्धी । पेशाचिक वि—

पिशाच सम्बन्धी, पिशाचका-सा ।

पेशन, पेशण (-अ) सं—निंदा-प्रचार,

सुगलखोरी । [भाव—] ।

पेशा सं—पुत्र, लड़का, बेटा (ठाकुर—, देवर ;

पेशा सं—बंसीका शब्द, सहनार्ईका धारावाही

सुर ; दूसरेका अनुयायी होना या हमें हाँ

मिलाना ।

पेशा सं—कीड़ा, कीट ।

पेशा (-अ) वि—शल मजबूत, अनुभवी ।

पेशाशख सं—पूजाशख पुखराज ।

पेशा, (-अ) सं—लेप लेप (एक—अ) ;

पौड़ना (बाड़—) ।

पौड़ा, पौड़ाना (क्रि परि ६)—पूँछ देखो ।

पौड़ना सं—बड़ पूँछ गठरी, गट्टर ।

पौड़ो सं—भकनि नाकका बलगम ; मछलीकी

आँत ।

पौड़ सं—दहन, दाह (—थाड़ा) ।

पौड़ा (क्रि परि ६)—जलना, दग्ध होना ।

वि—जला हुआ, दग्ध (—काँठ, —कथान) ।

पौड़ान (-नो), पौड़ानो (क्रि परि १३)—
पूड़ान देखो ।

पौड़ाने वि—जलाने या सताने वाला ।

पौड़ स—नाव, जहाज (अर्ध—) । पौड़-
शुद्ध (-अ) स—जहाजका कप्तान या चालक ।

पौड़ स—घरके खम्भेका जमीनमें गाड़ा हुआ
अंश । [फर्श तक नींव ।

पौड़, पौड़ा स—बाहरी जमीनसे मकानकी
पौड़ा (क्रि परि ६)—धोखित कर, गांठ
गाढ़ना, जमीनमें बाँस आदिका कुछ हिस्सा
गाढ़ना (श्रुति—) ; रोपना (शाब्—) । वि—
धोखित वि—गाड़ा हुआ ।

पौड़ स—एक उपाधि एक जाति ।

पौड़ा स—सराफ, छनार ।

पौड़ावि स—सराफी ।

पौड़ा स—रोहू आदि बड़ी मछलीका वच्चा ।
—माछ स—रोहू आदि मछली ।

पौड़ा स—पाव, चौथाई । —बादा स—
सतरंजका एक दान ; (व्यगमें) सौभाग्य ।

पौड़ाडी स्त्री—जच्चा, प्रसूति ।

पौड़ान (-नो) (क्रि परि १४) = पौड़ान ।

पौड़ान स—खड़, किशानि पुआल ।

पौड़ा, पौड़ान—पूड़ा, पूड़ान देखो ।

पौड़ा स—पनाइ पुलाव ।

पौड़ा स = पौड़ा ।

पौड़ाद, (-दा-) स—अच्छिन्न पोशाक । पौड़ादी
वि—भद्र समाजमें जानेके लिए पहनने योग्य
(—दापड़) ।

पौड़ स—पोस, पालनेवालेके वशमें रहना
(दूद—माने) ।

पौड़ा स—पूरा महीनेका त्योहार ।

पौड़ा स—पुष्टि, पालन, वधन । पौड़ा वि—
पालनेवाला, पुष्ट करनेवाला (शब्द—) ;
सहायक । पौड़ा स—समर्थन, सहायता ।

पौड़ाद, पौड़ा (-अ) वि—पोषण-योग्य,
पालने लायक । पौड़ा स—परिवारके लोग
जिनका पालन किया जाता है (—वर्ग) ।

पौड़ा (क्रि परि ६)—पोसना, पालन करना
(पालि—, छेजे—) ।

पौड़ान (-नो), पौड़ानो (क्रि परि १४)—
प्रयोजनके अनुरूप होना, पोसाना, पटरी
बैठना ।

पौड़ादे वि—शरीरकी पुष्टि करने वाला पुष्टई ।

पौड़ा, (पौड़ा) स—डाक (—कार्ड, —माष्टर) ।

पौड़ा (-अ) स—पोस्ता । —दाना स—
पोस्तेका दाना ।

पौड़ा स—शॉट, गंठ हाट, सट्टी, गज पुस्ता ।

पौड़ान (-नो), पौड़ानो (क्रि परि १४)—
पौड़ान प्रभात होना ; पौ फटना (दात—) ;
तापना (दाद—, दाहन—) ; सहना
(शर्मा—) ।

पौड़ा (पउड़ा) (क्रि परि १), पौड़ान (-नो),
पौड़ानो (क्रि परि १५)—पहु चना, उपस्थित
होना, पहु च पाना (अठ डैहते शॉट पौड़ा
ना) ; पहु चा देना (दाद दाड़ि पौड़ि
ना) ।

पौड़ानिक (पउत्तलिक) वि—मूर्ति-पूजक ।

पौड़ानिक स—मूर्तिपूजा । [स्त्री—पोती ;

पौड़ा (-अ) स—पोता, पुत्रका पुत्र । पौड़ा

पौड़ानिक वि—बारबार होनेवाला । स—वह
दशम लव जिसमें एकही अक बारबार आता
है recurring.

पौड़ा वि—चौथाई कम, पौन (—दात्र) ।

पौड़ा (-अ) वि—पुर या नगरमें उत्पन्न ; पुर
सम्बन्धी ।

पौड़ा स—पुरुष-सा उद्यम, पराक्रम, साहस ।

पौड़ाद (-अ) वि—आदमीका किया हुआ,
पुरुष सम्बन्धी ।

पौरोहित्य (-अ) सं—भूकृतिगिरि पुरोहितका काम, पुरोहिताई ।

पौरोहित्यिक वि—पूर्व जन्मका ।

पौरोषर्ष (-अ) सं—पूर्वापर सम्बन्ध, धारा-वाहिक भाव, क्रम, सिलसिला ।

पौरोहित्यिक वि—पूर्व दिनका ।

पौष सं—पूसका महीना । पौषा, पौष वि—पूसमें उत्पन्न ।

पौ सं—बच्चोंके रोनेका शब्द चेंचें मेंमें ।

पौषपौष=पौष ।

पौष, पौषा—पौष, पौष देखो ।

पौषपौष सं—हवाईके साथ माँग, घेघे मेंमें ।

पौषपौष वि—रोते हुए माँगने वाला ।

पौषा सं—लेखका अनुच्छेद, पं.रा paragraph

पौषाशु सं—हवाई जहाजसे कूद कर उतरनेका छातानुमा यत्र, पराशूट । —वाशिनो सं—छतरीः फौज ।

पौषा वि—प्रिया, प्यारी । स्त्री—राधिका ।

पौषपौषा सं—सवारी, यात्री, पसिजर ।

पौष वि—रूप, जाहिर । पौष सं—प्रकाशन, प्रकट करना । पौष (-अ) वि—प्रकट किया हुआ ।

पौष (-अ), पौष सं—अधिक कपन, कपकपी । पौषा (-अ) वि—अधिक कपित ।

पौषा सं—श्रणी, जाति, भद, किस्म, उपाय (कि पौषा ?) । पौषाशु सं—दूसरा प्रकार (पौषाशु) ।

पौषा (-अ) वि—प्रकाशित करने योग्य, लोगोंकी दृष्टिके भीतरका (—ज्ञान); लोगोंके समक्ष (—निष्ठा) ।

पौषा (-अ) वि—झुलाना बिखेरा हुआ, विविध ।

पौष (-अ) वि—सत्य, यथाथ, सचा,

असली, प्रस्तावित । —पौषा वि—वस्तुतः असलमें ।

पौषा सं—स्वभाव, चरित्र, धर्म, प्रकृति, दुनिया; प्रजा, नारी । —पौषा (-अ) वि—स्वाभाविक । —पौषा (-अ) वि—स्वाभाविक अवस्थामें स्थित ।

पौषा (-अ) वि—पौषा उत्तम ।

पौषा सं—उग्रता, प्रबलता तेजी, अत्यंत क्रोध । पौषा (-अ) वि—क्रोधित ।

पौषा (-अ) सं—पौष, पौष कमरा, कोठरी, कोहनीसे कलाई तक हाथ ।

पौषा सं—किसी कार्यकी सिद्धिके लिए विशेष प्रकारका अनुष्ठान (पौषा—, पौषा—) ।

पौषा वि—तीव्र, तेज (—पौषा) ।

पौषा सं—अग्रगति, क्रमिक उन्नति ।

पौषा (-अ) वि—निडर, ढोठ, वेहया, निस्संकोच बात करनेवाला । स्त्री—पौषा ।

पौषा वि—यथेष्ट, काफी ।

पौषा सं—प्रयास, अनेक आदमियोंकी चेष्टा ।

पौषा सं—आवरण । —पौषा सं—गनाटे पुस्तककी जिल्दके ऊपरका कागज या कपड़ा ।

पौषा सं—सतान उत्पादन, गभधारण, जन्म ।

पौषा सं—प्रजा, रियाया, रैयत, सतान, जनता । —पौषा सं—जनताके प्रतिनिधियोंके द्वारा राज्य-परिचालन । —पौषा सं—सृष्टि करनेवाला ब्रह्मा; तितली ।

पौषा सं—विशेष ज्ञान, संकेत, चिह्न ।

पौषा (-अ) वि—प्रणाम करनेवाला, प्रणाम करता हुआ ।

पौषा सं—बड़े और पूज्य व्यक्तिके चरणों पर या जमीनमें, सिर रखकर प्रणाम अथवा अपने सिर पर हाथ जोड़कर नमस्कार ।

पौषा सं—प्रणाम करते समय दिया जानेवाला

घन वस्त्र आदि (ठाढ़—, धड़—, शाउघीव
—काण्ड) ।

अणानी स—पद्धति, रीति, शैली ; नाली जल-
[डमरुमध्य ।

अणान स—इष्टा मौत ।

अणिशठ स—घरती पर माथा टेक कर प्रणाम ।

अणान्ठि (-अ) वि—प्रेरित प्रवर्तित ।

अठि उप—विरोधी विपरीत बदला आदि अर्थ-
वाचक उपसर्ग । —काव स—उपाय

निवारण (दाणद—, विणदव—) । —हून

वि—विलुद्ध, विपरीत । —हूति स—तसवीर,
मूर्ति । —हूति स—विपरीत क्रिया, बदला,

प्रयोगके बाद जो क्रिया होती है (धेवधेव—) ।

—वाउ स—बडलेमें आवात, बार करनेवाले
पर बार । —छाउ (-अ) वि—जिस

विषयमें प्रतिज्ञा की गयी है । —निहूठ (-अ)

वि—लौट आया हुआ । —निव्रउ कि वि—

निरतर, सदा । —अण (-अ) स—विलुद्ध

पक्ष, प्रतिवादी, शत्रु । —अखि स—प्रतिष्ठा,

इज्जत (—शान्नी) । —अण कि वि—

पग पगमें । —अण स—दुरे कामका

कुफल (आणद—), बदला सजा ।

—अण स—दण आदिमें पतित प्रकाशका

दूसरी ओर लौट आना । —अणि वि—

प्रतिविम्बित । —अण स—प्रत्युत्तर, जवाब

का जवाब । —अण स—पड़ोसी । —विधान

स—प्रतिकार, निवारण ; बदला, प्रतिशोध ।

—विशान स—प्रतिकार करनेकी इच्छा । —

अण स—पड़ोस ; चारों ओरके विषय । —अण

स—पड़ोसी । —अण (-अ) वि—प्रकाशित,

ज्ञात । —अण स—प्रतिनिधि, जमानती ।

—अण वि—विपरीत, उल्टा (—दिवाह,

निम्न वर्णके पुत्रके साथ उच्च वर्णकी

स्त्रीका विवाह) । —अण (-अ) स—पर्याय,

गुंज । —अणि स—प्रतिज्ञा । —अण (-अ)

वि—निपिद्ध । —अण स—समिति, स्थायी

सभा । —अण स—सस्थापन । —अण

स—लौटा लेना, निवारण । —अण स—

किरणकी वक्रता प्रकाशक मोड़ । —अण

(-अ) वि—बाधाप्राप्त, रोका हुआ । —अण

स—हत्यारेकी हत्या । अण वि, स—हत्यारे

की हत्या करने वाला । —अण स—

प्रतिशोध, बदला ।

—अण वि तुल्य, सदृश (जानव—) ।

अणैक स—नमूना, चिह्न ।

अणैकाव स = अणिकाव ।

अण वि—प्रचुर ; वृद्धि, बहुतायत ।

अण (-अ) वि—प्राचीन ; प्राचीनकाल

सम्बन्धी । —अण (-अ), —अण स—

पुरातत्त्व । —अण स—पुरातत्त्वका

जाननेवाला ।

अण वि—आन्तर भीतरी, पीछेका ;

पाश्चात्य । [(अण—)]

अण (-अ) स—अवयव, अणका अण

अणदाइ स—पाप, दोष ।

अणविदान स—नमस्कारके उत्तरमें नमस्कार ।

अणार्ण स—अण लौटाना, वापसी ।

अण (-अ) कि वि—प्रतिदिन, रोज ।

अणान स—अणका उपेक्षा, त्याग ।

अणाण स—देवताका आदेश । अणाणि

(-अ) वि—देवताका आदेश पाया हुआ ।

अणानव स—अणदेश आना लौटा लाना ।

अणाण स—कृत कर्मके फल रूपसे या दूसरेसे

कुछ पानेकी आशा । अणाणि वि—आकांक्षी ।

अणाव (-अ) वि—आसन्न, समीपका ।

अणाउ (-अ) वि—बाधाप्राप्त, रोका हुआ ।

अणुखि स—उत्तर, जवाब ।

अणुउ (-अ) अ—परतु, बल्कि ।

अतुल्य स—उत्तरका उत्तर ।

अतुल्य (प्रत्युत्थान) स—आगे हुए व्यक्ति के सम्मानाथ खड़ा होना ।

अतुल्य (-अ) वि शीक मन्त्र पर उत्पन्न ।
—मति, —वृक्ष स—उपस्थित वृक्ष उसी क्षण कर्णव्य निश्चय करनेको बुद्धि । वि—वैसी बुद्धि वाला । —मति (-अ) स—वैसी बुद्धि प्रयोग करनेकी शक्ति ।

अतुल्य स—दृष्टान्तके विरुद्ध दृष्टान्त ।

अतुल्य स—मान्य व्यक्तिके स्वागतके लिए आगे आगमन या जाते हुए उनके साथ साथ कुछ दूर तक गमन ।

अतुल्य स—उपकार करनेवालेका उपकार ।

अति (-अ) वि—प्रसिद्ध, नामी । —नामा,
—रणा वि—नामवर, मशहूर, विख्यात ।

—अथ प्रत्य—देनेवाला (अथ—) ।

अतीत स—निद्रा दीया, दीपक ।

अतुल्य (-अ) वि—प्रकाशित ; घमंडी ठीठ ।

अतुल्य (-अ) वि—दानके योग्य ।

अतिताम्र (-अ) स—परदादा, दादाका बाप । अतिताम्र स्त्री—दादाकी माँ ।

अतुल्य (-अ) स—पोतेका पुत्र । अतुल्य स्त्री—पोतेकी पुत्री ।

अतुल्य वि—आसक्त, उन्मुख, झुका हुआ (अतुल्य—), आसानीसे किसी अवस्थाको प्राप्त होनेवाला (जाव—, उत—) ।

अतुल्य (-अ) स—प्रवाह, वायु । —माण वि—बहनेवाला । अतुल्य स—प्रवाहित होना, बहना । [जनश्रुति ।

अतुल्य स—ज्जति कथा कहावत, मसल, अतुल्य स—सूगा, विद्रुम, सामुद्रिक प्राणी-विशेषसे उत्पन्न प्रस्तर-सदृश पदार्थ coral (लाल प्रवाल एक रत्न है), अंकुर । —द्वीप स—प्रवाल कीटजात पदार्थसे उत्पन्न द्वीप ।

अतुल्य स—विदेशमें निवास ; विदेश । अतुल्य स—विदेश-वासी । स्त्री—अतुल्य ।

अतुल्य स—स्रोत, अविच्छिन्न गति (वायु—, विष्णु—) । (पद्यमें—अतुल्य) । अतुल्य (-अ) वि—प्रवाहयुक्त । अतुल्य वि—बहनेवाला, प्रवहमाण । अतुल्य स्त्री—नदी ।

अतुल्य (-अ , वि—भीतर गत, घुसा हुआ ।

अतुल्य वि—वृद्ध, बहुदर्शी, अनुभवी । स्त्री—अतुल्य ।

अतुल्य स—श्रेष्ठ वीर । [हुआ ।

अतुल्य (-अ) वि—ज्ञानप्राप्त, निद्रासे जगा अतुल्य (-अ) वि—नियुक्त, सलग्न, उद्यत, रत, आरब्ध ।

अतुल्य स—रूपहा, अभिरुचि, मनका झुकाव (कर्ण—, भाग—) । —इन्द्रा क्रि—इच्छा होना । —थाका क्रि—प्रवृत्ति रहना । —गार्ग्य स—काम्य कर्मका अनुष्ठान, सांसारिक विषयों या भोगोंका ग्रहण ।

अतुल्य (-अ) वि—बहुत वृद्ध या वृद्धि-प्राप्त ।

अतुल्य स—तितल्व गमन भीतर जाना, घुसना, पैठना (शृङ्ग—करा) ; जानकारी (इन्द्रा तल्व—करा) । (पद्यमें—अतुल्य) ।

अतुल्य वि—स—प्रवेश करने या कराने वाला ।

अतुल्य स—जिससे प्रवेश किया जाय, प्रवेश-पत्र, टिकट, विश्वविद्यालयमें प्रविष्ट होनेकी परीक्षा, प्राथमिक पुस्तक ।

अतुल्य (-अ) वि—जिसे प्रविष्ट कराया गया है ।

अतुल्य (-अ) वि—प्रवेश-योग्य ।

अतुल्य स—गायना, आवाज बादस, धीरज, दिलासा (शोक—दोष), ज्ञान, जागना ।

अतुल्य स—बादस देना, ज्ञान देना, जागरित करना, उत्तेजित करना । अतुल्य (-अ)

वि—जिसे दिलासा दिया गया है ।

अथर्वशास्त्रं स—संन्यास संन्यासी हो कर भ्रमण ।
 अथर्वशास्त्रं स—दृष्ट आँधी, तूफान, वायु ।
 अथर्वशास्त्रं स—उत्पत्ति, जन्म, कारण, प्रभाव
 अथर्वशास्त्रं स—नीति, चक्र, उज्ज्वलता ।
 अथर्वशास्त्रं स—दृष्ट सूर्य, दिवाकर ।
 अथर्वशास्त्रं स—आठ; नक्षत्र सुबह, सवेरा । अथर्वशास्त्रं,
 अथर्वशास्त्रं वि—उपहृष्ट (—हृष्ट) ।
 अथर्वशास्त्रं स—गति सान्ध्य प्रभुत्व, अमर ।
 अथर्वशास्त्रं वि विभिन्न पृथक्; प्रकाशित ।
 अथर्वशास्त्रं स—नक्षत्र मालिक, स्वामी, राजा, ईश्वर,
 महात्मा । [निकला हुआ ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—प्रचुर, अत्यन्त, उत्पन्न,
 अथर्वशास्त्रं स—आदि इत्यादि, वगैरह ।
 अथर्वशास्त्रं स—निगम्य ज्ञान ।
 अथर्वशास्त्रं स—अथर्वशास्त्र आयु ।
 अथर्वशास्त्रं स—सर्वत, विग्रासका हेतु प्रदशन
 (—दश); परिमाण (अथर्वशास्त्र—); पूरी
 नापका (—दृष्ट) । अथर्वशास्त्रं क्रि वि—
 प्रमाणक अनुसार । —अथर्वशास्त्रं स—किसी
 प्रसंगक प्रमाण स्वरूप ग्रंथोंकी सूची । —अथर्वशास्त्रं
 वि—पूरी नापका (—दश, —अथर्वशास्त्र) ।
 —अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—जिसका प्रमाण
 आवश्यक है । —अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—प्रमाणसे
 सिद्ध । अथर्वशास्त्रं स—प्रमाण करनेवाला,
 ज्ञाता । अथर्वशास्त्रं (-अ), अथर्वशास्त्रं (-अ)
 वि = अथर्वशास्त्रं ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) स—नानाका वाप, परनाना ।
 अथर्वशास्त्रं स—अथर्वशास्त्र—नानाकी माँ ।
 अथर्वशास्त्रं स—अथर्वशास्त्र, अति, विस्मृति ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—प्रमाणित, ज्ञात, निश्चित ।
 अथर्वशास्त्रं स—निश्चित ज्ञान । [सुखिया ।
 अथर्वशास्त्रं स—आदि वगैरह । वि स—प्रमाण;
 अथर्वशास्त्रं क्रि वि—अथर्वशास्त्रं, अथर्वशास्त्रं सुखसे
 (दृष्ट, —अथर्वशास्त्र) ।

अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—प्रमाणित करने योग्य,
 अवधार्य, परिमेय । स—प्रमाणित करने
 योग्य विषय । [दहसूत्र रोग ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) स—वातुक्षय रोग, सूजाक,
 अथर्वशास्त्रं स—विलास आमोद-प्रमोद (—दान,
 —उत्पन्न) । अथर्वशास्त्रं स—हर्ष उत्पादन ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—हर्षित, आनन्दित ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—संयत, नियमित, पवित्र ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) स—प्रयास, चेष्टा, उद्यम ।
 अथर्वशास्त्रं स—नदियोंका संगम-स्थान (देव—,
 विष्णु—); इलाहाबादमें गंगा और यमुना
 का संगम-स्थान, तीर्थराज ।
 अथर्वशास्त्रं स—प्रस्थान, गमन, यात्रा । अथर्वशास्त्रं
 (-अ) वि—प्रस्थित, गत ।
 अथर्वशास्त्रं स—प्रयत्न, परिश्रम । अथर्वशास्त्रं वि—
 प्रयत्नशील, अभिलाषी ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—प्रयोग किया हुआ, नियुक्त,
 सम्मिलित, उल्लिखित, अर्पित । क्रि वि—
 के कारण (अथर्वशास्त्रं,—, रोगके कारण;
 विषय,—, द्वयके कारण) ।
 अथर्वशास्त्रं स—प्रयोगकर्ता, प्रयोजक, अनुष्ठाता ।
 अथर्वशास्त्रं स—व्यवहार, इस्तेमाल; नियोग,
 उल्लेख, उदाहरण । [प्रेरक ।
 अथर्वशास्त्रं स—प्रयोक्ता, स चालक, प्रवर्तक,
 अथर्वशास्त्रं स—द्वयकाव्यक्तता; हेतु,
 कारण प्रयोग करना, उद्देश्य । अथर्वशास्त्रं
 (-अ) वि—द्वयकाव्यक्तता आवश्यकता ।
 अथर्वशास्त्रं (-अ) वि—प्रयोग-योग्य ।
 अथर्वशास्त्रं स—प्रेरणा या उत्तेजना देनेवाला,
 उमकाने या उभाड़ने वाला । वि—उत्तेजक ।
 अथर्वशास्त्रं, अथर्वशास्त्रं स—प्रेरणा, उत्तेजना,
 उत्साहदान, नियोजन, प्रवर्तन । अथर्वशास्त्रं
 (-अ) वि—उत्साहित, उमकाया हुआ ।

अत्रोर्ध्व (-अ) सं—अंकुर, कली, कौपल, कल्ला ; उगना, जमना ।

अत्रोर्ध्व सं—प्रलाप वकना ।

अत्रोर्ध्व (-अ) सं—लटकी हुई वस्तु, ढाली, टहनी, माला । [लटकता हुआ ।

अत्रोर्ध्व सं—लटकना । अत्रोर्ध्व (-ज) वि—

अत्रोर्ध्व सं—संसारका विनाश, कल्पान्त ।

अत्रोर्ध्व, कर्त्तृ, (-कर्त्तृ) वि—प्रलयकारी, भयंकर ।

स्त्री—अत्रोर्ध्वकर्त्री, (-कर्त्री) ।

अत्रोर्ध्व सं—व्यर्थकी बातें, निरर्थक वाक्य

(—वका, भाग्यवत्, अत्रोर्ध्व—) ।

अत्रोर्ध्व वि—लयप्राप्त, तल्लीन, तन्मय ।

अत्रोर्ध्व (-अ) वि—बहुत लालची, लोभी ; लोभाकृष्ट ।

अत्रोर्ध्व सं—लेप, उबटन (कानात्र—

उपवेश—, —अत्रोर्ध्व, —माथानो, —

माथानो) ।

अत्रोर्ध्व सं—लोभ उत्पादन, लालच

(अत्रोर्ध्व—) ; लोभजनक विषय (—इहेते द्वे

थाका) । अत्रोर्ध्व (-अ) वि—प्रलोभनके

बशीभूत, जो ललचाया गया है ।

अत्रोर्ध्व सं, वि—प्रशसा करनेवाला, सराहने

वाला । अत्रोर्ध्व सं—प्रशसा करना ।

अत्रोर्ध्वनीय (-अ) वि—प्रशसाके योग्य ।

अत्रोर्ध्व (-अ) वि—प्रशसा-प्राप्त । अत्रोर्ध्व

स—तारीफ, बढ़ाई, गुण-वर्णन । अत्रोर्ध्व

(-अ) वि=अत्रोर्ध्वनीय ।

अत्रोर्ध्व सं—शान्त करना, निवारण, शान्ति

(अत्रोर्ध्व —) । अत्रोर्ध्व (-अ)

वि—हास-प्राप्त, शान्त, निवारित (अत्रोर्ध्व—

इहेथाछे) ।

अत्रोर्ध्व (-अ) वि—उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, योग्यतम

(—काल) ; प्रशंसनीय, उदार (—अत्रोर्ध्व) ,

चौड़ा (—अत्रोर्ध्व) ; विशाल ।

अत्रोर्ध्व सं—प्रशसा, स्तुति ।

अत्रोर्ध्व (-अ) वि=अत्रोर्ध्वनीय ।

अत्रोर्ध्व सं—छोटी शाखा, टहनी, ढाली ।

अत्रोर्ध्व (-अ) वि—स्थिर, धीर, चंचलता-

रहित (—अत्रोर्ध्व, —अत्रोर्ध्व, —अत्रोर्ध्व) ।

अत्रोर्ध्व (-अ) सं—शिष्यका शिष्य ।

अत्रोर्ध्व (प्रश्न-अ) सं—प्रश्न, जिज्ञासा (—अत्रोर्ध्व,

प्रश्न पूछना) । —अत्रोर्ध्व सं—प्रश्नका

उत्तर या मीमांसा । अत्रोर्ध्व सं—प्रश्न

और उत्तर ।

अत्रोर्ध्व (प्रश्न) सं—आशंका, नाई बढ़ावा,

सिर चढ़ाना, बच्चोंको उनकी प्रार्थित वस्तु

दे दे कर उनकी आदत बिगाड़ना (—अत्रोर्ध्व) ;

सस्तेह व्यवहार, नम्रता ।

अत्रोर्ध्व सं—फेफड़ोंमें वायु ग्रहण ।

अत्रोर्ध्व (-अ , वि—अत्रोर्ध्व पूछने योग्य ।

अत्रोर्ध्व सं—पूछनेवाला ।

अत्रोर्ध्व (-अ) वि—आसक्त, अनुरक्त । अत्रोर्ध्व

सं—आसक्ति, अनुरक्ति, प्रेम, प्रसंगोपात्त

विषय (अत्रोर्ध्व—सं—लक्षणका लक्ष्यसे बाहर

भी गमन अतिव्याप्ति ।

अत्रोर्ध्व (प्रश्न-अ) सं—प्रस्ताव, आलोच्य

विषय, सम्बन्ध, वार्ता, आसक्ति, अध्याय,

अवसर (कथा-अत्रोर्ध्व) । —अत्रोर्ध्व, अत्रोर्ध्वः

क्रि वि—प्रसंगक्रमसे, संयोगसे ।

अत्रोर्ध्व वि सन्तुष्ट, खुश, अनुकूल (—अत्रोर्ध्व,

अत्रोर्ध्व—अत्रोर्ध्व, —अत्रोर्ध्व) ; शान्त और प्रकुल ;

निर्मल (—अत्रोर्ध्व नदी) ।

अत्रोर्ध्व सं—जनन, गर्भविमोचन, जन्म, उत्पत्ति,

बच्चा, सन्तान, फल, फूल । —अत्रोर्ध्व क्रि—

बच्चा जनना, व्याना । —अत्रोर्ध्व क्रि—बच्चा

जनाना, प्रसव कराना । —अत्रोर्ध्व (—अत्रोर्ध्व)

क्रि—प्रसव होना । (अत्रोर्ध्व—अत्रोर्ध्व क्रि—फल

होना । अत्रोर्ध्व-अत्रोर्ध्व स्त्री—जिस स्त्री या

स्त्री-पशुको असी दक्षा होनेवाला है ।

अगविठा सं—जनयित्स, पिता । स्त्री—

अगविठो अगविनी । [फैलना ।

अगव सं—विस्तार, फैलाव । अगव सं—

अगत सं—प्रसादी, पूज्य व्यक्तिका जुठा

प्रसाद ; प्रसन्नता ; अनुग्रह (प्रशंसा—स—

देवीको चढ़ाया हुआ मांस प्रसाद) । अगव

क्रि वि—अनुग्रहक फलस्वरूप ।

अगव सं—शरीरकी शोभा सम्पादन, वस्त्र

आभूषण आदि सम्पादन । अगव क्रि वि, सं—

सजानेवाला । अगव सं—छिनि, काँइ

कधी, सजानेकी सामग्री । अगविठ (अ)

वि—सजा सजाया, सम्पादित ।

अगव सं—विस्तार फैलाव पसार, सचार,

गमन । अगव सं—विस्तार करना

फैलाना, पसारना बढ़ाना (रुठ—कड़ा, हाथ

फैलाना या पसारना) ; प्रचार करना ।

अगविठ (अ) वि—फैलाया हुआ, पसारा

हुआ । अगव वि फैलानेवाला, व्यापक,

विस्तृत (दूर—) । अगव (अ) वि—

फैलाने योग्य । अगव वि—जो फैल

रहा है ।

अगविठ (अ) वि—विख्यात, मशहूर, नामी,

पहुँचत-विदिन । अगविठ सं—ख्याति,

शोहरत, जनश्रुति (जाति—) ।

अगव (अ) वि—निद्रित सोया हुआ ।

अग वि, सं—जननेवाली, माता (द्रष्ट—) ।

अगव (अ) वि—उत्पन्न, प्रसव किया हुआ ।

अगव स्त्री—जन्मा ; उत्पन्न कन्या । अगविठ

स्त्री—जन्मा, जेननी ।

अगव सं—दून फूल कुठम ।

अगव (प्रसृत-अ) वि—फैला हुआ, विस्तृत ।

अगव (प्रस्तर) सं—आधवे पत्थर । अगवोड्ड

(अ) वि—पत्थरमें परिणत ।

अगव वि—तयार, उद्यत ; बना हुआ ।

अगविठ सं—तैयार करनेकी क्रिया, निर्माण ।

अग (प्रस्थ-अ) सं—उडाव मांग अर्ज चौदार्द,

विस्तार, फैलाव ।

अग, अग (अ) सं—थाना, ठाँ अदद, मद,

एक तरह की वस्तुओंका समूह (अद-

विधान) । [अगविठ (अ) वि गत ।

अगव (प्रस्थान) सं—गमन, यात्रा, प्रस्थान

अगव, अगविठ (प्रस्फुटित-अ) वि—खिला

हुआ (—कूश्म) ।

अगव सं—स्पंदन, कंपन ।

अगव (प्रस्वन) सं—कधी मरना, सोता,

फुहारा, क्षरण । [मूत्रत्याग (—कधी) ।

अगव सं—पेशाव, मूत्र ; पेशाव करना,

अगव (अ) वि—आवात-प्राप्त, छोटे

छाया हुआ, बाधा-प्राप्त ।

अगव सं—पहर, तीन घटेका समय । [प्रहार ।

अगव सं—अस्त्र-शस्त्र, आयुध, हथियार ;

अगव सं—पहरेदार । स्त्री—अगविनी ।

अगव सं—हास्य-रसात्मक नाटक, दिल्ली ।

अगव (अ) वि—प्रहार छाया हुआ, धायल ।

अगविका सं—अशनि, पहेली, समस्या ।

अगव सं—अशनि, चहार-दीवारी ।

अगव (अ) वि—प्राकृतिक ; गैवार । सं—एक

प्राचीन भाषा । [अगव (अ) ।

अगव सं—पहलेका समय, पूर्वकाल

अगव वि—पूर्व जन्मका ; पहलेके समयका ।

अगव सं—अदृष्ट, भाग्य, नसीब ।

अगव (अ) सं—अथवा तीव्रता ।

अगव (अ) वि—पूर्व-कथित ।

अगवविशगिक वि—जिस समय तकका

इतिहास जाना गया है उससे पूर्व युगका ।

अगव सं—छोटी आंगन, सहन ।

अगव वि—पूर्वमुखी ।

थाशुर्भाव, स—आविर्भाव; प्रकट—होना, प्रथम
 प्रकाश, उत्पत्ति, बहुल उद्भव (गुणाव—)।
 थाशुर्भूत—(—अ—); वि—आविर्भूत, प्रकट;
 उत्पन्न।
 थापनिक, वि—प्रदेश-सम्बन्धी—(—लाव—)।
 थापनिक, स—प्रान्तीयता, एकही भाषाका
 विभिन्न-प्रदेश-जात विकार।
 थाशु—(—अ—) स—श्रेष्ठता, मुख्यता,
 प्रधानता—(—मेश—), नेतृत्व, प्रभाव।
 थाशु (—अ) स—अन्त, सीमा, किनारा,
 सिरा, प्रदेश—(गोश—)।—खड़ी वि—
 प्रान्तस्थ।
 थाशुव स—वृक्षरहित विशाल मदान्।
 थापण स—गोश्रान्ना प्राप्त-कराना, दिलाता।
 थापक वि—प्राप्त करानेवाला।
 थाशु (—अ) वि—नक पाया हुआ।—काल स—
 उचित-समय। वि—मुमुर्षु।—वयश्च (—अ)
 वि, स—गावानक बालिग।—बोवन वि,
 स—जवान, युवक। स्त्री—थाशु-बोवन।
 थावण स—आवरण-वस्त्र, ओढ़ना, चादर।
 थावना—(—अ) स प्रबलता, शक्तिकी
 अधिकता।—वर्षाश्रतुका।
 थावणे स—वर्षाश्रतु। थावण (—अ) वि—
 थाजालिक वि—सुबहका।
 थागणिक वि—प्रमाण-सिद्ध, विश्वास-योग्य,
 प्रधान, मुखिया। स—समाजपति; एक
 उपाधि।
 थाश—वि—सदृश, तुल्य, समान-चरावर,
 लोभग; कुछ-कम, (—दृश— शैल, —मश
 शयछे)। स—मृत्युकामनासे—उपवास
 (थाप्राश्रयण)।—अधिकोश-स्थलोमें।
 थाशे, थाशे, थाशण—कि—वि—अकसर;
 थाशणिक (—अ) स—पाप-क्षालनके लिए
 कठोर तप या पुण्यदान, दंड, हरजाना।

आश्रित वि—साधारण, लगभग, प्राय या बहुधा होनेवाला ।

आश्रित सं—उपश्रित तीन ओर पानीसे विरा हुआ स्थल-भाग ।

आश्रित सं—एक व्रत जिसमें भोजन छोड़कर मृत्युकी प्रतीक्षामें बैठे रहते हैं ।

आश्रित (-अ) सं—अदृष्ट भाग्य, किस्मत फलोन्मुख पापपुण्य-संस्कार । वि—जिसका आरम्भ हो गया है । आश्रित (-अ) सं—आरम्भ ।

आश्रित सं वि—प्रार्थी, याचक ।

आश्रित सं—प्रार्थना करना, याचना । आश्रित सं—याचना, आवेदन, विनती । आश्रित (-अ), आश्रित (-अ) वि—प्रार्थना के योग्य । आश्रित, आश्रित सं—प्रार्थी, याचक । आश्रित (-अ) वि—याचित, जिस विषयके लिए प्रार्थना की गयी हो वांछित ।

आश्रित सं—भोजन (अन्न) ।

आश्रित (-अ) स—प्रशस्तता, श्रेष्ठता, फलव । [मीमांसक ।

आश्रित (प्रास्निक) स—प्रग्न पूजनेवाला, आश्रित सं—श्रम इमारत, महल ।

आश्रित वि—प्रहर-सम्बन्धी । [पूर्वाह्न ।

आश्रित (-अ) सं—दुपहरके पूर्वका समय, आश्रित (-अ) वि—आश्रित आश्रित प्रिय, प्यारा स्त्री—आश्रित (सयोधनमें—आश्रित) । —आश्रित सं—प्रिय कार्य करनेकी इच्छा, शुभ कामना । —आश्रित वि—शुभेच्छु । —आश्रित वि—प्रिय वचन बोलने वाला ।

आश्रित स—प्रीति सम्पादन, हर्षित करना ।

आश्रित (-अ) वि—सन्तुष्ट, आनन्दित, हर्षित, सुख । आश्रित सं—सन्तोष, आनन्द, हर्ष, सुखी, प्यार, प्रेम (—आश्रित, —आश्रित) ।

आश्रित, (-आश्रित) सं—आनन्दके लिए भोज, खुशीकी दावत ।

आश्रित वि—प्रीतिका अनुभव करने वाला ।

आश्रित वि, सं—दर्शक, निरीक्षक ।

आश्रित सं—दर्शन, दृष्टि, चक्षु । आश्रित (-अ) वि—दृष्ट, देखा हुआ । आश्रित (-अ) वि—दर्शनीय, देखने योग्य ।

आश्रित सं—दर्शन निरीक्षण, चर्चा, अभिनय नृत्यादिका देखना । आश्रित, आश्रित (-अ) स—रंगालय, नाट्यशाला, मानमन्दिर, वेधशाला observatory. [आश्रित ।

आश्रित स—भूत, पिशाच, मृतक प्राणी । स्त्री—आश्रित, वि—पानेका इच्छुक ।

आश्रित सं—आनवाग्रा प्रणय, प्रीति, अनुराग, प्यार, मुहूर्त्त (आश्रित, आश्रित) । आश्रित सं—प्रेमी । स्त्री—आश्रित ।

आश्रित (अ) वि—वांछित, प्रिय ।

आश्रित स्त्री—प्रियतमा, प्रेमिका ।

आश्रित वि—भेजनेवाला, प्रण करनेवाला ।

आश्रित सं—भेजना, नियोग । आश्रित सं—नियोग, प्रवृत्ति शक्ति प्रतिभा आदिका स चार (—आश्रित, —आश्रित) । आश्रित (-अ) वि—भेजा हुआ, प्रेषित, प्रेरणा-प्राप्त ।

आश्रित वि—प्ररक, भेजनेवाला ।

आश्रित सं—प्रेरण, भजना । आश्रित सं—प्रेरणा । आश्रित (-अ) वि—प्रेरित, नियोजित ।

आश्रित (-अ) वि—भेजने योग्य । सं—भृत्य, नौकर ।

आश्रित (-अ) वि—पूर्वकथित ।

आश्रित (-अ) वि—गाढ़ा हुआ ।

आश्रित (-अ) वि—विदेश गया हुआ । —आश्रित स्त्री—जिस स्त्रीका पति विदेश गया हुआ है ।

आश्रित (प्रठव-अ) वि—आश्रित अर्थ ।

प्रव (-अ) स—लुना वेड़ा ; तैरना । —मान
वि—जो तैर रहा हो ।

प्रावन स—जलका बहाव, बाढ़, तैराना ।
प्रावर स, वि—प्लावित करने वाला । प्राविठ
(-अ) वि—जलमें डूबा हुआ । प्राविठा
स—जल पर तैरानेकी शक्ति । प्रावी वि—
प्लावित करनेवाला (कून—) ।

प्रिश, प्रीश स—तिल्ली तिल्लीकी वृद्धि
प्रूठ (-अ) स—तीन मात्राओंका स्वर (रोने
गाने पुकारनेमें), —गति स—उछल कर
चलना । वि—उछल कर चलने वाला ।

प्रेग.स —एक सक्रामक रोग plague
प्रेन वि—कोरा सादा जो नकाशीदार न हो
समथल plain स—हवाई जहाज plane
प्राप्लेफ़ स—प्लेटफ़ाम, रेल स्टेशनका चबूतरा,
मंच platform

फ

फ़ेश्वठ, (-२) स—फटकार, भगड़ा, फजीहत ।
फकिर स—फकीर । फकिरि स—फकीरी ।
फकिरी वि—फकीरका, फकीर-सा ।
फकड़ वि, स—रागल, फाखिन बकवादी ;
धोखेबाज । फकुड़ि स—फाखनामि बकवाद ।
फका वि—कुछ भी नहीं, खाली ।
फकिका स—कैकि कूट प्रश्न, पहेली ।
फकक वि—रागल बकवादी । फककमि स—
रागलता बकवाद ।
फकमि स—एक प्रकारका आम ।
फके स—फटनेका शब्द ।
फकेक, फाटेक स—फाटक । फाटेक स—
—काग़ागात्र जेलखाना, कैद । [जुआ ।
फकेका स—बिकनेवाली चीजोंके भाव पर
फकेकिरि स—फिदकिरी ।

फाटिक वि—स्वच्छ निर्मल, पारदर्शक (—ऊन)
स—स्फटिक । [कथन ।

फड़फड़ स—कपड़ेके फटनेका शब्द, लगातार
फड़ि स—गुच्छ फतिंगा ।

फड़िना, फड़े स—दलाल जो थोक माल खरीद
कर फुटकर बेचता है, फेरीवाला ।

फगा, फग स—फन । फगी स—साँप । स्त्री—
फगिनी ।

फतूरा स—फतूही -छोटा कुर्ता ।

फतूर वि—निश्च जिसकी सारी सम्पत्ति या
पूँजी नष्ट हो गयी है ।

फतु स—जय, फतह, सिद्धि ।

फतावा स—फतवा ।

फन्नि स—फद छल, धोखा, कूट कौशल ।
—वाङ वि—छलिया, धोखेबाज, कुचक्री ।

फगवनामान स—जो बिना झुलाये किसी काममें
दखल देता है या अपनेको कर्ता जतानेके लिए
बाते करता है । फगवनामानि स—वैसा काम ।

फगुता स—मुसलमानी उपासना ।

फगमाना स—फसला, राय । [दूर ।

फगक स—फर्क, भेद । वि—भिन्न, पृथक,

फगकान (-नो), फगकाना (कि परि १६)—
कैक क़रा अलग करना (भा—) ।

फगकुर स—पतली चीजोंके हिलनेका शब्द ।

फगमान स—बादशाह या नवाबका आज्ञापत्र,
फरमान । [फरमाइश करना ।

फगमान (-नो), फगमाना (कि परि १६)—

फगमाण स—फरमाइश, आज्ञा । फगमाणी
वि—फरमाइशी ।

फगमा, (-गा) वि—गोरा, गौर (गाँवर क—) ;

साफ (थाकाश—इश्वर) ; खतम, समाप्त
(काव—) ।

फगमि, फगमि स—टड़ुड़ि फरशी ।

फगाम स—फर्ग, विछौनेकी चादर ; नौकर जो

विद्यौना विद्याना वत्ती जलाना आदि काम करता है । [वि—फराँसीसी ।

कन्नौ स—फाँस देशका आदमी या भाषा ।

कन्नौ स—फर्याद नालिश, असियोग ।

कन्नौ स—फर्यादी, मुद्दी, वादी ।

कन्नौ (-अ) स—जानिदा फिहरिस्त, फद ।

कन्नौ स—पुस्तकके जितने पृष्ठ एक बारमें छपते हैं, फरमा ।

कन्नौ स—फल (शाँख—दूध, —भाड़ा) ; परिणाम

(भाँषे—) ; हिसाब लगानेसे जो सख्या

मिलती है (डाँग—) ; उपकार, फायदा

(डेव—इटरा) ; बाण भाला छुरी आदिका

फल । —कथा स—अंतिम बात, सारांश ।

—कथा वि, स—परिणाम देखनेवाला ।

—कथ (-अ) वि—फल लगा हुआ, फलदार ।

—कथ (-अ), —कथ वि—फल देनेवाला, उप-

कारक ।

कथद स—बाण आदिका फल, पत्तर

(डाँग—), डाल । [सरमें ।

कथः क्रि वि—फलस्वरूप, इस लिङ्ग मुक्त-

दन्त (-अ) वि—फल देनेवाला ।

कथन स—फलकी पैदाइश, घटनाका घटना

या सत्य होना, फल होना या मिलना ।

कथना वि—कथाना ।

कथय (-अ) वि—फला हुआ, फल देनेवाला ।

कथयति स—किसी पुण्य कार्यके करनेसे

जो फल होता है उसका विवरण या उसका

श्रवण अत्यधिक प्रशंसा-वाक्य ।

कथना (फलशा) स—एक खर्दमिट्टा छोटा फल,

फालसा ।

कथना स—कथ बाण आदिका फल, संयुक्त

बाण का अंतिम अक्षर (र कथा), र कथा,

न कथा, न कथा, न कथा) ।

कथा (क्रि परि १) —फल होना, सत्य होना ।

वि—फलदार ; (फा—सालमें दो बार फल देने वाला) ।

कथा वि—फैलाया हुआ ।

कथाका स—कृत कर्मके फलकी आशा ।

कथाग्र स—फलकी उत्पत्ति या उसका

मौसिम ।

कथान (-नो), कथाना (क्रि परि १०)—फल

पैदा करना अपनी योग्यता बढ़ा कर दिखाना

(दिख—) ।

कथाना वि—अमुक फलाँ, फलाना ।

कथाक स—कर्मका भला या बुरा फल ।

कथाव स—च्युड़ा दही मिठाई आदिका भोजन ।

कथाव वि—वसा भोजन जिसको—प्रिय है

(—वाइन) ।

कथिठ (-अ) वि—फला हुआ, फलदार, सफल

(व्याख्येयगणना—इटरा) ।

कथे क्रि वि—फलस्वरूप, परिणामतः ।

कथोद स—फलका उदय ।

कथोद्वि (फलोन्मुख) वि—जो शीघ्र फल देगा,

फल देनेमें उद्यत ।

कथिनिष्टि स—काजनाभि ह सी-दिल्ली, मजकी ।

कथ (-अ) अ—एकएक, अचानक, तुरंत ।

स—दियासलाई जलानेकी तरह शब्द ।

कथकी (फण्का) वि—बाणगांठी डीला (—गुँगा) ।

कथकान (-नो), कथकाना (क्रि परि १६)

—फिसलना, हाथसे निकल जाना ।

कथकस स—फासफोरस नामका मौलिक

तत्त्व (दियासलाई बनानेमें लगता है) ।

कथस स—खेतकी उपज, फसल ।

कथो वि—फसल सम्बन्धी ।

स—अकबरका चलाया हुआ संवत् ।

कथेकथस स—छोटी मोटी चीजोंकी

काँक, काँके स—घलुआ ।

काँक स—फासला, अंतर, दूरी, खुला हिस्सा,

खाली स्थान, अवकाश। वि—पृथक्, अलग,
खाली। —जल स—अचानक पाया हुआ
मौका (कौकिली किछू भाषा)। —कौक
वि—उकीठ उकीठ अलग अलग दूर दूर
(क'द्रे भाषान)।
कौक वि—खुला, उन्मुक्त, खाली, फजूल।
सं—खुला स्थान। —कौक वि—प्रायः खाली
(क'द्रे)।
कौक सं—कर्तव्यकी अवहेलना और उसे
छिपानेकी चेष्टा (कौकिली भाषा), धोखा,
कूट प्रेम, पहली। —कौक वि—धोखेबाज,
कर्तव्य पूरा न करनेवाला।
कौक सं—बायोत्र अवीर।
कौक सं—कौकिली।
कौक वि—बायोत्र बकवादी, बातूनी,
अतिरिक्त, फौजिल, जमीनसे अधिक खर्च।
कौक सं—बायोत्र बकवादी।
कौक सं—विनाश, छिद्र दरार।
कौक सं—कौक।
कौक सं—दरार।
कौक (कि परि ३)—छिद्र बायोत्र फटना।
कौक (-नो), कौकिली (कि परि १०)—फाड़ा,
छेदीन फटवाना, फटना। वि—फाड़ा हुआ।
कौक कौक सं—आपसमें तोड़फोड़ (भाषा)।
कौक (कि परि ३)—छेड़ी फाड़ना, चीरना।
कौक सं—ज्योतिषके द्वारा निर्धारित मृत्यु-
योग या विपत्तिकी सभावना (कौकिली)।
कौक सं—बायोत्र, धाना पुलिसकी चौकी।
कौक (फाटना) सं—मड़ली, पकड़नेकी
बाँसोकी। डोरीमें बाँधी हुई हलकी लकड़ी
या सोले का टुकड़ा जो जल पर तैरता रहता
है। (कौकिली भाषा)।
कौक सं—फाड़ा, वृत्तके व्यासका फासेला
कौक (कि परि ३)—फालना (भाषा)।

कौकिली वि—बड़ा सुह । या घेरा वाला
(—शब्द)।
कौक सं—फालना।
कौक सं—संकट, विपत्ति, भौचकापन।
कौक (कि परि ३)—फूलना, हवा भर जाना,
समृद्ध होना (भाषा)। वि—पोला
कौक (-नो), कौकिली (कि परि १०)—
फूलना, हवा भरना। वि—फूला हुआ।
कौक सं—नफा, फायदा।
कौक सं—त्याग-पत्र, चुकती।
कौक सं—फारसी।
कौक सं—हलका फाल।
कौक वि—फालतू, अतिरिक्त।
कौक, कौक सं—लेबी टुकड़ा, फाँक।
कौक वि—फालाया हुआ।
कौक सं—कतरा, लवा पतला टुकड़ा।
कौक सं—फालगुन मास।
कौक सं—रस्सीका फंदा या गाँठ जो
आसानीसे ढीला किया या कसा जा सकता है।
कौक वि—बायोत्रा ढीला; भड़ाफोड़।
कौक (कि परि ३)—खुल कर गिरना, घसना
(अड़ित उना, शब्द) ; बिगड़ जाना, नष्ट
होना (गजनेर कौकिली भाषा)।
कौक (-नो), कौकिली (कि परि १०)
—बिगाड़ना, नष्ट करना, विपत्तिमें डालना।
कौक सं—उबड़न फाँसी, रस्सीका फंदा।
कौक वि—फी, प्रत्येक।
कौक सं—टीस ; सुसकराहट (क'द्रे भाषा)।
कौक, कौक वि—कौकिली फीका, पीला।
कौक सं—कौकिली पतल, उपाय, कौशल,
तदवीर।
कौक, कौक, कौक सं—एक चिड़िया, गुल्ल।
कौक वि—कौकिली धूर्त।
कौक वि—भाषाई ठीक, बराबर। सं—

मूर्छा, बेहोशी । —काँटे वि—सजा हुआ, बना-ठना ।

किटन, किटन सँ—एक चार पहियेवाली घोड़ा गाड़ी (इसका टक्कन खोल सकते हैं) ।

किठा, किठ स—फीता ।

किनकि सँ—कुनिद्र चिनगारी, तेज पतली धारा (—दिग्धे ब्रह्म छोटे) ।

किनकिन सँ—पतलापन । किनकिने वि—पतला (—भूति) ।

किनिक सँ—प्रभा, ज्योति ।

किवठ, केवठ सँ—अर्थात् वापस । वि—वापस किया हुआ, लौट आया हुआ (विनाउ—) ; लौटता हुआ (—डाक) ।

किवठि सँ—वापसी । क्रि वि—लौटते समय । किरा, केरा (क्रि परि ५)—लौट आना, अभिमुख होना, घूमकर देखना ; घूमना ; बदलना (कपान—, देशावा वा शरीर—, अच्छा होना) ; टहलना ।

किरान (-नो), किरानो, केरानो (क्रि परि ११)—केवठ जेठवा वापस करना, लौटा देना (कापड़—) ; प्रार्थना न सुनकर वापस करना (डिशात्री—) ; लौटा लाना ; बदलना (हंकाव बज—), फिरसे लगाना (घट्टे हून—) । [वनन हेराफेरी ।

किराकिरि, (केरा—) सँ—बाबराव केवठ वा किरिशी सँ—फिरंगी, गोरा ।

दिविठि सँ—कन' फिहरिस्त ।

किव क्रि वि—पुनः, फिर (—बार) ।

सिदाज स—फोरोजा ; फोरोजी रंग ।

किमिदि सँ—फुसफुसाहट ।

पी सँ—दर्शनी पारिव्रमिक, फीज (डाकावेद—) ; वेतन (झुल्लेद— ; कर (कोर्ट—) ।

दे स—कूँकार फूँक ।

कूँक क्रि वि—फूँककी तरह शीघ्र ।

कूँक सँ—कूँकार फूँक (बाड़—) ।

कूँकर, कोँकर सँ—छिज छेद, सुराख, खाना ।

कूँकरान (-नो), कूँकरानो (क्रि परि १८)—पुकारना, चिल्लाकर बोलना, चिल्लाना ।

कूँक, कूँक वि—फूँकसे बनाया हुआ, पोला, हलका (—शिनि) । स—फूँका ।

कूँका, कोँदा (क्रि परि ६)—फूँकसे उड़ाना, फजल खर्च करना ; फूँकना ।

कूँक सँ—बौद्ध संन्यासी ।

कूँक (फुचके) वि—कूँक छोटा, नन्हा ।

कूँक सँ—१२ इंचकी नाप, फुट ।

कूँक सँ—उबलनेकी हालत (बज—धरा) । —कनाई सँ—कुछ भूना हुआ मटर उर्द आदि ।

कूँकि (फुट्कि) सँ—विन्नु बिंदी, चुकता ।

कूँकन सँ—उबलनेकी अवस्था, खिलने या पहले पहल निकलनेकी हालत (बज—, कून—, शनि—, कथा—) ।

कूँक (-अ) वि—उबलता या खौलता हुआ ; खिला हुआ (—कून) ।

कूँककूँक वि—गोरा (—छेल) ।

कूँकन सँ—फुटवाल, बड़ा गेन्द ।

कूँक, कूँक स—छिज छेद, सुराख । वि—सुराखदार, छेदवाला ।

कूँक, कोँक (क्रि परि ६)—खिलना (कून—, आकाश तारा—, मूँख शनि—) ; निकलना (मूँख कथा—) ; खुलना (भावित्र काथ—) ; उबलना, खौलना (बज—), सोफना (डात—) ; गर्मी पा कर फूलना (थड़े—) ; गड़ना, घंसना (कोँक—) । वि—खिला हुआ (—कून) ।

कूँकन (-नो), कूँकानो, कूँकनो, कोँकानो (क्रि परि १३)—खिलाना, विकसित कराना (कून—) ; खौलाना (बज—) ; उभाना,

गढ़ाना । वि—खिला हुआ, खौला हुआ ;
चुभा हुआ ।

शूठोनि, शूठेनि, शूठेनि स—गढ़ाने या चुभानेकी
क्रिया (नाउ—), शेखी, चाल ।

शूठि स—फट, एक प्रकारका खरबजा ।
—फाटो वि—फूटकी तरह फटा ।

शूठो=शूठो । [पीनेका शब्द ।

शूडूक, शूडूत स—चिड़ियाके उड़ने या हुका
शूडूका स—शू फंक ।

शूडू स्त्री—पिरो फ फो ।

शूवान, शूवन स—शू कोई काम करानेके
पहले उसकी मजदूरी या पारिश्रमिक निश्चित
करण, ठीका ।

शूवान (-नो), शूवानो, शूवने (क्रि परि १३)—
खतम होना (ठाका—, ठान—, गढ़—) ।

शूठि स—शूठि आनद, मौज । —वाइ वि—
मौजी, उमंगी ।

शूज स—फूल, कुसुम, प्रसवके समय जो
मांसपिंड सतानकी नाभिके साथ लगा
रहता है, आवलनाल । —रुनि 'स'—फूल-
गोभी । —कात्र स—वस्त्र आदि पर नकाशी ।
—शुठि स—शुठि खरिया मिट्टी । —शुठि,
—शूठि स—एक आतश बाजी जिसके
जलानेपर चिनगारियाँ टपकती है । —नान,
—नानि स—फूलदान, गुलदस्ता । —वावू स—
शौकीन आदमी, छैला, बांका । —शय स—
उडवाछि छहागरात, विवाहकी तीसरी रातको
दपतिके एक साथ फूलोंकी शय्या पर पहले
पहल शयन, फूलोंका बिछौना ।

शूज वि—पूरी नापका (—शठा, —खामा) ।

शूज (-अ) वि—फूल लगा हुआ ।

शूजवि, शूजवि स—दाल पीस कर तेलमें भूना
हुआ बड़ा आदि, फूलौरो, पकौड़ी ।

शूजा, शूजा (क्रि परि ६)—शूठ २७३ फूलना,

सूजना, मोटा होना, धनवान होना । वि—
फला हुआ ।

शूजान (-नो), शूजानो, शूजनो (क्रि परि १३)
—शूठ करा, शूजान फुलाना ।

शूजेल तेल स—सुगंधित तेल ।

शूका, शूका वि—फुलका, पतला और पोला
(—शूठि) । स—पतलो परत, मछलीके
कानका भीतरवाला क घोसा अंग जिसे हिला
हिला कर वे सांस लेती है ।

शूका स—शूज चिनगारी ।

शूज (-अ) वि—शूठ खिला हुआ (-शूजम) ;
फैला हुआ (—खामा—), प्रफुल्लित
(—खानन) ।

शूजशूठि स—हाटे खाड़ा फुडिया, फुंसी ।

शूजशूठि स—फेफड़ा, फुसफुसाहट ।

शूजनान (-नो), शूजनानो, शूजनो, शूजनानो
(क्रि परि १८)—फुललाना, बहकाना ।

शूठे स—शूठ सियार, जो सियार बाघके
पीछे रह कर चिल्लाता रहता है । —नागा
क्रि—छेछाछ करा दिक करना, चिढ़ाना ।

शूकड़ा, (शूजा-) स—शूजा शाखाकी
शाखा, एक विषयसे उत्पन्न दूसरा विषय ;
भू भूट । [पीला, फीका ।

शूकाण (फकाश), -ज, (शूजा-) वि—पाशुवर्ग
शूका (फैचाह), (शूजा-) स—शूकड़ा भू भूट,
आफत । [पगड़ी ।

शूठो (फैटा), (का) स—शूठि फेंटा, छोटी
शूठोन (फैटानो), शूठोनो (क्रि परि १०)—
नाड़ियाँ काँगाओ हाथसे हिलाकर फुलाना,
फेंटना (दाल-नाठो—) ।

शून (फैन) स—माड़ फेन । शूना स—
—गाँव भाग, गाज ।

शूनान (फैनानो), शूनानो (क्रि परि १०)—
शूनाशूठ करा फेंटना ; बढ़ा कर बोलना ।

फेनागुगान (फे-) वि—भागदार,
फेनवाला । फेनाशित (फेनायित-अ) वि—
फेरा हुआ । फेनिन (फेनिल वि—गफेन
भागदार, फेनमे भरा ।

फेनि स—बड़ा बतसा ।

फेक्यासि स—अ ग्रेजी फरवरी मास ।

फेर क्रि वि—यावार, भून्वाव फिर, पुन ।
स—वेष्ट, वष्टेन घेर (दाभष्ट्र—, कथा—),
स कट (क्षेत्र—, क्षेत्रे गड़ा), बदल,
परिवर्तन (वक्र—) ।

फेरत स—क्रिडत वापस । फेरत वि—प्रकाशत
लौटा हुआ (दिनात—, ह—); लौटते
समयका । स—घेर (—दिने शांति गरा) ।

फेरा, फेराने—विवा, किरान देखो ।

फेराव वि—पनाशित फरार । फेरावो वि—
पनाशक भगेडा (—ग्रानाशो) ।

फेवि स—धूमकर सौदा विक्रय, फेरी ।

फेर स—देष्टे ।

फेरेव स—क्षुद्रवि, अक्षुद्रा फरेव । —वाड
वि—फेरेवो । —वाडि फेरेवि स—फरेव,
घोखा ।

फेन वि—अच्छोर्ष नाकामयाव (परीक्षा—
इष्ट) । स—फेनेलिश दिवाला (बाह—
इष्टेन) ।

फेना (फैलना) वि—फेक देने लायक ।

फेना (फेला) (क्रि परि १)—निष्फेन करा
फेकना (शूड—, विपने—), खतम करना,
चुकना (द्विवा—, थोडा—); अचानक
कुछ करना (नेथे—) । वि—छोड़ा हुआ,
फेका हुआ । —हडा क्रि—लापरवाहीसे
बिखेरना ।

फेनाट (फेनाट) (का—) स—दंष्ट्रा
भभट, दिक्कत, आफत ; भगड़ा । फेनाट
वि—भंभटिया, भगडालू ।

फोकर स—ककर ।

फोकरा (फोक्ला) वि—प्रशून टांत रहित ।

फोका स—कूका ।

फोटा क्रि, वि—कूना ।

फोतो स—विन् वि दी, नुकता ; फि तिलक,
ताशकी बुदकी, छोटा । वि छोटा, नन्हा
(अक—मेथे) । —फोटा क्रि—तिलक लगाना,
शरीरमें चदन आदिका चिह्न लगाना ।
जैसे—स—भैया दूज, भ्रातृ द्वितीया ।

फोटाथाक स—याताक-छि अक्सी तसवीर ।

फोड स—छिद्र-करण ; छेद (ए फोड ७—) ।

फोडन स—मक्का छौंक, बघार, (व्यगमें)
वातघीत करते समय बीच बीचमें मंतव्य
(टिप्पणी) प्रकटन ।

फोड़ा स—फोटेक, दग फोडा ।

फोड़ा (क्रि परि ६)—छिद्र करना, छेदना ।

फोटा वि—बुच्छ, नि सार, फोकाट ।

फोपरा (फोपरा), (फो-) वि—फोपरा
भंभरा, पोला । [फूल सी जड़ ।

फोपन स—नारियलके भीतर उत्पन्न अकुरकी

फोपान (-नो), फोपाना (क्रि परि १४)—

भयवाशेन फोप सिसकना ; फुफकारना ।

फोपरा स—फुहारा, फौवारा ।

फोला क्रि, वि—फूना ।

फोस स—फुफकार, क्रोधकी गर्जना ।

फोसका (फोसका) स—फफोला, झाला ।

फोसगान क्रि—फूगान ।

फोज (फउज) स—मेसज्ज फौज, पलटन,

सेना । —नार स—सेनापति, कोतवाल ।

—नारि स—मारपीट खून आदि सम्बन्धी
मुकदमा । —नारो वि फाजदारी ।

फोकरा (फकड़ा) स—कैकड़ा ।

फोकाशे, फोका, फोटा = फेकाशे, फेना,
फेला ।

का का स—गरीबी या बेकारीका भाव प्रकाश ।

काका स—आँखका आश्चर्य चकित भाव (—क'त्र जाउश) । [fashion.

काशन स—शौकीनी दंग; रिवाज, रीति कानान स—केशन ।

काम स—काँठायाँ दाँवा (शबर—, जगमात्र—) ।

कानेन स—फलालेन एक पशमी वस्त्र ।

व

वहे स—वहि पुस्तक, किताब । अ—बिना, सिवाय (तोभा—, ठा—क) । [फल ।

वंश स—फालसेकी तरहका एक खटमिट्टा

वहेँ स—नावका डाँड़ नाव खनेका बल्ला ।

वडे स्त्री—वधू बहू, पत्नी, दुलहिन, पतोहू ।

—रुथारु स—कोयल जातिकी एक

चिड़िया । —काँटेकी स्त्री—बहूको सताने

वाली सास । —मिदि स्त्री—भौजाई, भाभी ।

—जाउ स—पाकनार्थ विवाहके बादका

एक संस्कार जिसमें दुलहेके कुटुम्बी नयी

दुलहिनका लूआ हुआ अन्न खाते हैं ।

वडेनि स—दिनकी पहली बिक्री (—कत्रा,

—शुश्रा) ।

वडेज, वोज स—शूकन बौर, मंजरी ।

वडश वि=वश ।

वडशाटे वि=वथा ।

वश स—कुल, वंश, बाँस । —गठ (-अ)

वि—बपौतीसे प्राप्त । वशख स—उच्च

कुलकी एक श्रणी जो कुलीनसे नीचे है ।

—धर स—कुलकी रक्षा करनेवाला, संतान ।

—वृक, —जडा स—वशावली, कुर्सीनामा ।

—पानन स—बसलोचन, बाँसके भीतर

उत्पन्न एक कडी वस्तु । वशाश्रय स—कुल की परम्परा । वशाश्रयिष्ठ स—कुलका इतिहास । वशैव, वश (-अ) वि—कुलमें उत्पन्न, कुल सम्बन्धी ।

वशै स—वाश, वधू बाँसुरी । —द, —धात्री वि स—वाँसुरीवाला, श्रीकृष्ण ।

वर स—वग बगुला ; एक फूल । —धार्मिक स—बगुला-भगत । —वक्ष स—भभका, अक खींचनेका एक यन्त्र retort.

वरना स—बहिया, जिस गायको अभी बछड़ा नहीं हुआ है ।

वरवर स—बकवाद, बकबक ।

वरवा स—छाग, छागन, पाँछे बकरा । वरवि, (-त्री) स्त्री—शशि, पाँछे बकरी ।

वरवीर स—बकरीद, एक मुसलमानी त्योहार ।

वरवय स—दूसरेके बदले हस्ताक्षर करनेवाला ।

वरवग, (वग-) स—फीता आदि फँसानेका काँटा, अकुसी buckles.

वरविण स—बकसीस, इनाम ।

वरग्री स—एक उपाधि, बल्लो ।

वका (क्रि परि १)—बकना, धमकाना । वि—वथा आवारा ।

वकाटे, वकामि —वथा देखो । [बकवाना ।

वकान (-नो), वकानो (क्रि परि १०)—

वकावकि स—वकना भगडा, धमकी ।

वकुनि स—धमकी, फटकार ।

वकून स—मौलसरी ।

वकेश वि, स—बाकी, शेष, बकाया ।

वकु (-अ) स—मुह, मुख आनन ।

वकु (-अ) वि—बाका टेढ़ा, तिरछा । —दृष्टि

स—तिरछी नजर, कटाक्ष । वक्षीकषण स—

बाकानो टेढ़ा करना । वक्ष्याकि स—श्लेष,

ताना ।

वक्षी वि, स—बाकी, बकाया ।

वरु, वरुः (वरु-अ) सं—वरु छाती, हृदय
(वरुद्वय, वरुःद्वय) ।

दक्षायण वि—जो कहा जायगा ।

वयत्र स—भाग, अंश, हिस्सा । —दात्र स—
हिस्सेदार ।

ବନ୍ଧା, ବନ୍ଧା, ବନ୍ଧାଟେ, ବନ୍ଧାଟେ, ବନ୍ଧାଟ, ବନ୍ଧାଟେ
 ଦ୍ଵି—ବାଚାଳ ଉଚ୍ଚବାଦୀ; ଆଦାରା। ବନ୍ଧାମି,
 ବନ୍ଧାମି, (—ମୋ) ଶ—ଆଦାରାପନ।

वशेषा सं - बखिया सिलाई ।

दश स्—वह षगुला ।

વગવગ્રહ જ—ઇન્દ્રાદિ આદિ, વગરહ ।

रत्न स—घगल, काँख; पासका स्थान
निकट । —गदा स—घगलमें दबाकर धारण ।
रत्न स—रत्न धली ।

दशा सं—एक दशगुला (व्यगर्मे) । स्त्री—वती ।

वशि सं—घरगी गाड़ी, एक फूलकी थाली जिसका किनारा बहुत ऊँचा नहीं होता और भीतरकी तरफ जरा मुड़ा रहता है।

वक्षिण वि-बांका टेढ़ा ।

वङ्ग (वङ्ग-अ) स — बाणा जैन बंगाल; पूर्वी
बंगालका पुराना नाम। वङ्ग वि बंगालमें
उत्पन्न। सं—कायस्थोंको एक भेणी।

दशैव (-अ) वि—वगाल सम्बन्धी ।

वज्रा स - भगवा, तत्परार ।

दक्ष स—वत्सर, साल, वर्ष । बह्वर्षि स—
 बाष्पविक्रम नाम्ना सालाना श्राद्ध ।

वज्र सं—घड़ी नाव वजरा ।

वञ्जय वि—रक्षित, स्यापित, कायम, स्थिर ।

यच्छाठ वि -यदजात, यदमाश, दुष्ट । यच्छाठि
सं—यदमाशी ।

रक्षन्, रक्षन् स—घोखा, छल। रक्ष वि, स—
घोषेयाज, धूत, टग। रक्षिठ वि—प्रतारित,
जो मगा गया हो, रहित।

दे सं—वरगन्धका पेड़ ।

बटे (बटो) कि-हो । [(ठाँ-)] ।

गोरेबा (चट्केरा) सं—विष्णु दिल्ली
 बंठि सं—तरकारी आदि काटनेका हथुआ जो
 एक लकड़ी पर खड़ा रहता है।

बटिका, बटौ स —बटि, रुनि बटौ, गोली ।

बट्टे, बट्टे स — ब्राह्मणका बालक ।

गुग्गुलु सं—कपड़की छोटी थैली, बटुवा ।

बटे क्रि—अब है, हो (दुबिड—सेठ—) । वि—
ठीक (बा बटे ता दिछू ना दिछू—, जनश्रुतिका
कुछ मूल अवश्य हैं । बाबा—, ताई—) ।
अ— (प्रश्नमें) ताई नाकि ऐसा है क्या
(बटे ?), धमकीमें (बटे रे ।) ।

বড় (অ) বি—খুব বহুত, ল্যাড়া (—রাগকা,
—মবেছে) ।

बढ़ (-अ), बढ़े वि-श्रुत बहुत ज्यादा
(-ई, -लन); बढ़ा, लबा, उमरमें

बड़ा (—छले, —बटे, —बाबू); ऊँचा

(—दश, —वत्त), धनो (—जाक); अत्यत;

निहायत। —शकट। अ—प्राय, अकसर

(—घटे ना)। —कथा स' शोखीकी बात

(હોટ મુથે—) । —ગજા સ—શેલી, ઘમડ,

উচ্চ স্বর (—ক'রে বলা) । —জোর বি—

વહુત અધિક દુઝા તો (—પણ ટાકા નામ શવે) ।

—१।कूव सं—वठ ठाकूव, डालव भसुर, पतिके

वड़े भाई । —दिन सँ—बड़ा दिन । —माशूख

सं—घनी, बड़ आदमी। —भूवि सं—

बडे-आदमीपन बढ़प्पन । —मान्खो, —मान्खो

सं-धनो सा चाल (—छान)। —श्रु

स—अधिक आशा या उत्साह (—क'रे

अर्थात् निराश क'वो ना) . [औजार, वंशो ।

दंडशि, वङ्गशि सं—मङ्गली फसानेका एक

बड़ा स—पीसी हुई दाल आदिकी तली हुई

टिक्रिया बढ़ा।

दड़ाई स'—घमढ, शेखी, गव ।

वडिज (बडिस) स—जनानी कुर्ती bodice
 वडि स—हल गोली, वटी ; कुम्हड़ौरी, बढी ।
 वडैन स—विभाजन, बाँटना । वडैक वि, स—
 बाँटनेवाला । [वत्तीसवीं तारीख ।
 वडिज वि, स—वत्तीस, ३२ । वडिज स—
 वड (-अ) स—वाछा (प्यारमें) वेटा ; वाछा,
 भावक बच्चा, बछड़ा । —उत्र स—बछड़ा ।
 —उत्री स्त्री—बछिया ।
 वडज स—वड्क साल, वष ।
 वड वि—थोड़ाप, मक्क बुरा । —थत वि—विच्छे
 बदसूरत, भद्दा । —थथान स—बुरी इच्छा,
 बुरा मतलब, बदचलनी । —खवान स—
 गाली । —नास स—बदनामी, निंदा । —व
 स—बदबू । —वागै वि—थोड़ेमें बहुत खफा
 होनेवाला । —खव स—अपवित्राक बद-
 हजमी ।
 वडन स—मुख, चेहरा ।
 वडना स—बघना ।
 वडव, वडविका, वडवी स—कून बेर । [पीर ।
 वडव स—मुसलमान मल्लाहोंका माना हुआ एक
 वडन स—विनिमय परिवर्तन बदला, पलटा ।
 वडनान (-नो), वडनानो (क्रि परि १६)—
 बदलना । वडनावडलि स—अनन्यवडन
 परिवर्तन । वडलि स—बदली, तयादला ।
 वडाज (-अ) वि—दाता उदार ।
 वडि स—देवद्वैत चिकित्सक ; एक जाति ।
 वड (-अ) वि—बाधा, आवक बधा हुआ
 (—इवरो, थालिछा—) ; बड (कावा—,
 गृष्टि—) ; क्रमवार स्थापित (श्रौ—, शाग—) ।
 —पत्रिकर वि—कमर कसा हुआ, उद्यत ।
 —गृष्टि वि—मुट्टी बधा हुआ, कृपण । —गून
 वि जिसकी जड़ जमानमें अच्छी तरह गड़
 गयी है, सनमें अच्छी तरह जमा हुआ (गूझाव
 —इश) । वडाभानि वि—हाथ जोड़ें हुए ।

वडौण स—नदीके मुहाने पर पानीसे घिरी
 हुई त्रिकोण धरती ।
 वड स—इच्छा कल्ल, हत्या । —इशौ, —शन
 स—वधस्थान, मसान वडाई (-अ)
 वि—हत्याके योग्य ।
 वडिज वि—काग बहरा ।
 वडू, वडू स्त्री—वडे बहू, दुलहिन, पतोहू, पत्नी
 (गूज—, जाइ—, कून—) । —खन, सधवा
 विवाहिता नारी । [नन्ही बहू ।
 वडूटि, वडूटि, (-गै)—लौ थोड़ी उमरकी बहू,
 बंधू स्त्री प्रिय मित्र, प्रणयी ।
 वडा (-अ) वि—हत्याके योग्य । —डूमि स—
 वधस्थान, मसान ।
 वन स—अठरा, अठरा, अठरा, विभिन्न वन,
 जंगल । —छत्र, वने छत्र वि स—जो वनमें
 चरता है (पशु व्याघ्र आदि) । —जारी वि,
 स—वनमें भ्रमण करने या रहने वाला । वनख,
 वनखाठ (-अ) वि वनमें उत्पन्न । —विडाज
 स—वन-बिलाव । —डावन स—छत्र डेडाठि
 जगलको रसोई जिसमें हर एक आदमी
 कुछ कुछ लाता है । —शाख स—वनमानुष ।
 वनवन् स—तेजीसे घूमनेका भाव (—क'द्व
 घोडा) ।
 वना (क्रि परि १)—मतका मेल होना, पटरी
 बैठना (तात्र मजे आमात्र वने ना), होना
 (बाका—, भागल—) ।
 वनाठ स—एक मोटा ऊनी कपड़ा, बनात ।
 वनान (-नो), वनानो (क्रि परि १०)—मतका
 मेल कराना, पटरी बैठाना, मेल रखना ।
 वनानी स—घना ज गल ।
 वनाम अ—उत्रके उर्फ, खिलाफ बनाम ।
 वनिता स्त्री—स्त्री, पत्नी नारी । [स्थिति ।
 वनिवनाठ स—मनका मेल, पटरी बैठनेकी
 वनिघ्रात, वनेम स—जिष्ठ नीव, बुनियाद ।

दनिशानो, दनदौ वि—खानदानी (—दण, —
दडलोक)।

दरूई सं—उग्रिनीशक्ति वहनोई । [छान]।

दन् सं—खंड, हिस्सा (तिन दन् प्रौठ दिवा)

दन्ना, दन्म सं—खव स्तुति । दन्द वि, सं—

बंठना करनेवाला । दन्नोश्च, दन्ना (—अ)

वि—बंठनाके योग्य ।

दन्द सं—ब दरगाह ।

दन्दिठ (—अ) वि—जिसकी बंठना की गयी
है

दन्नी सं—रुद्रनौ कैदो । वि—वद (वाङ्म—)

स्त्री—दन्दिनी ।

दन्नु सं—याद्वेबाहू व दूक ।

दन्ने कि—बंठना करता हू (—नालवम्) ।

दन्नि सं—ब दगी, सलाम ।

दन्नेड सं—बदहा इतजाम, प्रबंघ

दन्नादल (—अ सं—बदहा इतजाम, प्रबंघ,
ब डोवस्त ।

दन्ना (—अ) वि—बंठना या पूजाके योग्य
दन्नापाथाव, बांझा, दानाओं सं—
ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

दन् (—अ) सं—दन्नी, दान व धन, गांठ,
गिरह, रोक ; दैनिक कार्यको समाप्ति (दून

प्रौठगाइ— ; अवकाश, छुट्टी (पूजाव—) ।

वि—आवद्ध, बंधा हुआ, ब द (दन्ना—रुद्र,
दन्—इडा) ; रहित, स्थगित, रुका हुआ
(जाकान—, दाहादि—) ।

दन्ड सं—रेहन, गिरवी, गिरो । दन्दी वि—
रेहन रखा हुआ ।

ददन सं—दान बांधनेकी क्रिया ; बांधन ।

ददन्, ददनी सं—जिससे कोई चीज बांधी
जाय । ददनी सं—डाण्डके घेर-लकीर,
कोष्ठक ।

दद सं—मित्र, दोस्त, हितैषी ।

दद्व वि यमरुम, डेहूनीहू, डेवड़ा-बावड़
ऊधड़-खावड़ ऊंचानीचा, सुरदरा ।

दका (—अ) वि फल-रहित संतान रहित,
बांधनेके योग्य । दका स्त्री—दाका बांध ।

दका (—अ) वि बुना जंगली ।

दका सं—दान, धन प्रादन बाढ़ ।

दगन सं—दाना बीज बोनेकी क्रिया ; दगन
बुनाई, बुनावट ।

दगू सं शरीर, देह ।

दगुा सं—बोनेवाला वपनकर्ता । [टीला ।

दध (—अ) सं—धुस्स वद, किलेकी भीत,

दध, दधवम्, दध सं—शिवके उपासकोंका
गाल-वाद्य जिसमें दधवम शब्द होता है ।

दधन सं—दधि क, उलटी ।

दधि सं—दधन कै ; विदधिया मिचली, मतली
(गा—दधि करा) ; क से निकली हुई वस्तु ।

दधेठे सं—बनदध समुद्री डाकू ।

दध सं—वय, उमर, अवस्था, आयु, यौवन
(दधःप्राप्त, वालिग) । —कृम सं—उमर

उमर । —नक्षि सं—बचपन और यौवनकी
संधि । दधइ, दधइ (—अ) वि—उमरदार,
जवान, अधड़ । दधइ स्त्री वि—विवाह-
योग्या । [—करा] ।

दधकटे सं—दधन वर्जन, त्याग (विदेश्य विनिव
दधइ सं—बोहेड़ा ।

दधन सं—दाना बुननेकी क्रिया (दध—) ।

दधन, दधन सं—उमर, अवस्था ; अधिक
उमर, यौवन । —दाड़ा सं—जवानीमें चेहरे
पर उत्पन्न फोडिया । दधना वि—उमरका
(बाधा—, मय—) । दधमोठि वि—उमरके
योग्य ।

दध (—अ) वि—उमरवाला ; अधिक उमरका,
सयाना । स्त्री—दधका । [स्त्री—दधइ ।

दध (—अ) सं—सखा, दोस्त, हमजोलो ।

वशा सं—पानीपर तैरने वाला निशान, बोया ।

वशाटे वि—आवारा, भ्रष्टाचारी ।

वशान, वशन सं—वसन चेहरा, मुख मराडल ।

वशान सं—घयान, बखान हाल, चेहरा ।

वशाय, वशय सं—चीनी मिट्टी आदिका वर्तन ।

वशेठे (गेल) (गैलो) क्रि वि—‘मुझे परवा नहो इस अर्थका प्रयोग । [दोहा ।

वश्य, वश्य सं—अरबी फारसी या उर्दूका

वश्य वांछा क्रि—आवारा हो जाना, भ्रष्ट होना ।

वशोच्छाठ (अ) वि—उमरमें बड़ा । [धर्म ।

वशाय सं—यौवनके स्वाभाविक गुण दोष या

वश सं—किसी देवता या बड़ेसे मांगा हुआ

मनोरथ, दुलहा (वश-कन); पति । वि—

उत्तम, श्रेष्ठ (वक्—, उत्तम मित्र) ।

वश, वश (अ अ—वरन् बल्कि ।

वशकाल सं—बंदूकची, मालिककी रक्षा

करने वाला सिपाही ।

वशक सं—विवाहमें बरातियोंका मुखिया ।

वशखाल (अ) वि—मौकूफ, गत ।

वशखला वि विलुप्त, अन्यथा ।

वश सं—कड़ीके ऊपरकी तिरछी लकड़ी या

लोहा जिस पर छत बंठाया जाती है ।

वशगि, वशी सं—मराठा लुटेरा ।

वश सं—फूस आदिसे छाया हुआ खेत जिसमें पानकी खेती होती है ।

वश सं—सम्मानके साथ ग्रहण या नियोग

(गतिष्ठ—करा, श्रुत-का—करा); पूजा,

स्वागत, स्वीकार (का—); प्रार्थना ।

—एला सं—सूप या डलिया जिसमें वरण या

पूजाके सामान रहते हैं । वशी (अ) वि -

वरण या मनोनीत करने योग्य, प्राथनीय ।

वशवक् वि—पदच्युत बरखास्त, मौकूफ ।

वश वि—वर देने वाला । स्त्री—वशन ।

वशान सं—वर प्रदान ; वर ।

वशाय सं—नौकर, हुकुम ब्रजाने वाला ।

वशखाल (-स्त -अ) सं—वरदायक, सहन ।

वशन सं—वर्ण, रंग ।

वशखाल (अ) सं—देवताके वरसे उत्पन्न

पुत्र, देवताको कृपा या शक्ति पाया हुआ

आदमी (गवशखाल— विशिष्ट विद्वान) ।

वशवक् (-अ) वि—वर देनेवाला ।

वश सं—जुगाद, छाया छल वक् ।

वश, वक्, सं—बर्फी, एक मिठाई ।

वशखाल सं—बोड़ा, एक पतली लंबी फली

जिसकी तरकारी बनती है ।

वशवर्गिनी स्त्री—छंदरी स्त्री ।

वशखाल सं—वर या दूल्हेको पहनानेकी माला ।

वशखाल (-अ) सं—बारात ।

वशखाली सं—बराती ।

वशखाल वि—वरण करनेवाला । सं—पति ।

वश सं—वर्षा, बारिश । वशन (पद्यमें) सं—

वपण ।

वश सं—वशा संसृज ।

वशखाल स्त्री—छंदरी स्त्री ।

वशखाल, वशखाल सं—कौड़ी, सूत, रस्सी ।

वशखाल सं—कामका भार, भाग्य, किस्मत

(—भाज नश) ।

वशखाल (-अ) वि—निर्धारित, नियत । सं—

दी जानेवाली वस्तुका नियत परिमाण ।

वशखाल सं—विवाहमें वरके साथ कन्याके

घर गमन ।

वशवक् क्रि वि—हमेशा, सदा, हर दफे, सीधे,

निकट । वि—तुल्य, ठीक ।

वशखाल सं—आशीर्वाद और अभय ।

वशखाल सं—विवाहमें वरको दिये जानेवाले

आभूषण ।

वश (-अ) सं—सूअर ।

वशन (पद्यमें) सं—वर्षण, बारिश ।

वर्द्धि (-अ), वरौशन वि—श्रेष्ठ, पूजनीय । स्त्री—
वर्द्धि, वरौशनी ।

वरुण, स—जल देवता ; नेपथुन ग्रह ।

वरेण्य (-अ) वि—श्रेष्ठ पूजनीय ।

वरद्वय (-अ) स—उत्तरी व गाल ।

वर्ग स—प्राचीन मराठी सेना जो मुसलमानी
अमलमें बगालमें लूटमार करतो थो ।

वर्ग (-अ, स—व रंग ; अक्षर, जाति ।

—ज्ञान स—अक्षर-परिचय । —वर्ण्य (अ)

स—ब्राह्मण । —शाला स—ककहरा ।

—वर्द्ध, —वर्द्ध वि—दोगला ।

वर्णन, वर्णना स—विवरण, व्याख्या, गुण-
कथन । वर्णनीय (-अ) वि—वर्णन करने
योग्य । वर्द्ध (-अ) वि—कथित ।

वर्द्धन स—स्थिति, स्थापन जोविका, पेण ।

वर्द्धनी स—गोल परिधि, वृत्त चक्र ।

वर्द्ध (क्रि परि १), वर्द्धन (-नो), वर्द्धना
(क्रि परि १६) —सौजूद रहना (देखे बर्द्ध
धार), कृतार्थ होना (वादोधाना गेव बर्द्ध
गन) ; वपातीसे प्राप्त होना ।

वर्द्ध, वर्द्धि, वर्द्धि स—गर्ह वत्ती दीया ।

वर्द्धी प्रत्य—स्थित अर्थका प्रत्यय (वर्द्ध—
वृद्ध—)

वर्द्ध वि—गोल । स—गोल वस्तु ।

वर्द्ध (वत-अ) स—भाग पय, रास्ता ;
आचार ।

वर्द्धन स—वृद्धि करण बढ़ाना । वर्द्ध वि—
बढ़ानेवाला । वर्द्धन वि—बढ़नेवाला । स—
पाँचवीं व गालका एक नगर । वर्द्ध (-अ)
वि—वृद्धिप्राप्त बढ़ा हुआ । वर्द्धि वि—
बढ़ने वाला ।

वर्द्धि स—वर्द्धि ।

वर्द्धि वि—अपभ्रंश गंवार, नीच । [वक्तर वाला]

वर्द्ध (-अ) स—वर्द्ध वक्तर । वर्द्धी वि—

वर्द्ध । स—क्षत्रियोंकी एक उपाधि ; वरमा देश ।

वर्द्ध स—वर्द्ध भाला, बरछा ।

वर्द्ध (-अ) स—साल वष ।

वर्द्धि वि—वर्षा सम्बन्धी । स—बरसातो ।

वर्द्धन (-नो), वर्द्धना (क्रि परि १६) —वर्द्धण
करना ।

वर्द्धि (-अ) वि—सबसे वृद्ध ।

वर्द्धी वि—वर्द्धण करने वाला ।

वर्द्धि (-अ) वि—वर्द्ध उमरवाला ।

वर्द्धन वि—वृद्धत वृद्ध । स्त्री—वर्द्धनी ।

वर्द्धन स—वर्द्ध ओला, पत्थर ।

वर्द्ध स—शक्ति, बल, ताकत, सामर्थ्य । वर्द्ध
(-अ) वि—शक्ति देने वाला । —वर्द्ध

क्रि वि—वर्द्ध बलसे, जबरदस्ती । —वर्द्ध

वि—शक्तिवाला ; बहाल, कायम, कारगर ।

—वर्द्ध स—यन्त्रविद्या, यन्त्रगति-शास्त्र
mechanics

वर्द्ध स—वर्द्ध गेद, बाल (वृद्ध—) । —वर्द्ध

स—साहब-मेमोंके नाचका उत्सव ।

वर्द्ध स—उवाल, उफान ।

वर्द्ध स—वर्द्ध बेल ; नामझ बर्द्ध ।

वर्द्ध स—वर्द्ध, वर्द्ध क गन, हाथमें पहननेका
कड़ा ; मडल । वर्द्धि (-अ) वि—क गन
पहना हुआ, क गनसा गोल ; घेरा हुआ,
वेष्टित ।

वर्द्ध (क्रि परि १) —वर्द्ध कहना, बोलना,
जताना, सूचित करना ; सम्मति देना ; उल्लेख
करना । वि—कथित, कहा हुआ (—वर्द्ध) ।
—वर्द्ध स—वर्द्धवर्द्ध वातचीत, वातालाप ।
क्रि—समझाना । —वर्द्ध स—आपसमें कथन
(जोकर बोल-लोग कहते हैं they say) ।

वर्द्ध स—वर्द्धवर्द्ध ।

वर्द्धन (-नो), वर्द्धना (क्रि परि १०) —वर्द्धन
कहलाना ।

बनि स—यज्ञमें चढ़ायी हुई वस्तु, पशु जो देवताके सामने काटा जाय (भोग—) ।

बनि, बनी स—शरीरमें चमड़ेकी शिकन, बवासीरसे मलद्वारमें सांसकी गिल्टी । बनिठ (-अ) वि—शिकनदार, शिथिल ।

बनिश, ब'ले कि वि—कारणसे, के हेतु ; जीव (जे एन ब'ले) । कि—कह कर ।

बनिशवि वि—ज्यस्कृत, मोहित मोहित, उत्तम ।

अ—बाश्वा शाबाश, वाह वाह ।

बनीवर्द्ध (-अ) स—बैल, बघा ।

ब'ले=बनिश ।

बकन स—बाकन छाल । [स—एक हरिण ।

बग्गा स—नागाय लगाम, बाग । —शत्रि बगोक, बगिक (बलिमक) स—छेष्टि दीमकोंका लगाया हुआ मिट्टीका ढेर, बाँवो ।

बहम स—उल्ल, बर्षा बरखा, भाला ।

बहि, बहौ, बहव्री, (-त्रि) स—लता, बेल ।

बश स—अधीनता, काबू, अधिकार ; प्रभाव (देवबल) । बशवद वि—बशमें, अधीन, वशीभूत । बशतः कि वि—कारणसे, के हेतु (छन—, अशान—) । बशत स—अधीनता । बशौ वि—बश करनेवाला जितेन्द्रिय ।

बशद, बशाद वि—वशीभूत, आज्ञाधीन ।

बश (-अ) वि—बश करने योग्य । बशत स—अधीनता ।

बग, बाग वि—प्रचुर, काफी, भरपर, बस ।

बगठ स—रहनेकी स्थिति (—बाठि) ।

बगठि स—वस्ती, आवादी ; घर, वास ।

बगवाग स—बराबर निवास ।

बगा स—चर्वी, मेद ।

बगा (कि परि १)—बैठना ; आरम्भ होना, कुछ कालके लिए जारी रहना (शठे—, घेना—) ; जमना (दहे—, कलेव नौछे

काग—) । वि—बैठा हुआ (—लाक, —काथ) ।

बगान (-नो), बगानो (कि परि १०)—बैठाना, लगाना, मारना (किम—, काग—) ; जड़ना (बांठिठे गाथ—), हतोत्साह करना । वि—बैठाया हुआ, स्थापित ।

बग स—घन ; कायस्थोंकी एक उपाधि । —श, —कुरा, —गडी स्त्री—पृथ्वी । —धात्रा स—यज्ञोपवीत विवाह आदि शुभ कार्यमें दीवाल पर धोकी जो पाँच या सात धाराएँ दी जाती हैं ।

बग स—छात्रा वीरा, बड़ा थैला ; गाँठ । —गठ वि—अधिक दिन गाँठमें रहनेसे सड़ा । —बनौ वि—बोरेमें भरा हुआ ; गाँठमें बाँधा हुआ ।

बखि, बखौ स—पेड़ू, मूत्राशय ; वास, आवादी, गरीबोंकी घास फूस खपड़े आदिकी वस्ती ।

बश (-अ) वि—बाश्क ढोने या ले जाने वाला (आछा—, बाज—) । स—बाश्न सवारी, यान ; पथ । बशन स—ढोनेकी क्रिया, वहन, लेकर गमन । बशनौय (-अ) वि—ढोने योग्य । बश्मान वि—जो बह रहा है ; जो ढोया जा रहा है ।

बश्र स—नौका, नाव ; जहाज ; जहाजोंका वेड़ा, पनहा, चौड़ाई, अज (शते बश्र, लम्बाई-चौड़ाईमें) ।

बश, बश (कि परि २)—बशन कड़ा ढोना, वहना ; सहना ; समर्थ रहना । बशे बांश कि—हानि होना (बड़ बसे गेन, कुछमी हानि नहीं होगी) ।

बशान (-नो), बशानो, बशानो (कि परि १२)—बहाना, प्रवाहित करना ; ढोनेका काम दूसरेसे कराना ।

बहि, बहे स—कृत्य किताब, बही ।

वशिः उप - वाशि वाहर । वशिश्, वशिश् (-अ)

वि- वाहर वाला ।

वशिष्ठ (-अ स - नाव ; जहाज ; डाँड ।

वशिष्ठ (वशिष्ठ -अ) स - वाहरका अंग,
अनात्मनीय ।

वशिष्ठ श्रु स - वाहरो दुनिया ।

वशिर्वाणि स - वाशि वाशि नकानका वाहरो
हिस्सा , व ठका ।

वशिर्वाणिष्ठ (-अ) स - दूसरे देशोंसे व्यापार ।

वशिष्ठ (-अ) वि वाहरका, वाहरी ।

वशिष्ठा (-अ) वि वाहर निकला हुआ ।

वह वि-अनेक बहुत, अधिक । —काल

वि-पुराने जमानेका । —उग्र वि बहुत,

अत्यंत, अनेक प्रकारका । वहु (-अ)

क्रि वि-बहुत जगह, अनेक स्थलोंमें । —गर्भी

वि-अनुमयी अनेक विषयोंका जानने वाला ।

—गर्भिता स - अनुभव, अभिज्ञता । —गर्भीक

वि-जिसके अनेक पत्नियाँ हैं । —विष

(-अ) वि-अनेक प्रकारका । —ठाही

वि, स - अधिक बोलने वाला, वाचाल,

अनेक भाषाओंका जानने वाला । —बुधो

वि-अनेक दिशाओंमें (—श्रुति) । —रूपी

वि-स्वांगी । स - गिरगिट, छिपकली ।

—शान्ति वि - जिसके अनेक मालिक हैं ।

वह्वीहि वि- बहुत धान या अन्न वाला । स -

एक समास ।

वह्वी, वह्वी स - वह्वी ।

वहि स - अग्नि, आग ।

वह्वाश्च (वव्भाश्च) स - भारी आडम्बर ।

वह्वाश्च (वव्भाश्च -अ) स - आडम्बर

के साथ आरम्भ ।

वा अ - किरा या, अथवा ; सम्भावना प्रकट

करनेमें (शब्द वा, शायद होगा) ; वितर्कमें

(वदन् वा ना शब्द, फर्क नहीं होगा ?) ।

वां वि-वाग वायाँ ।

वाहे स - वायु , सनक (लुटि—) ; व्यासन,

शोक, चसका (गाहवा—) । [-उग्रानौ) ।

वाहे स्त्रो-पेजेवर नाचनेवाली (-नाच, -बौ,

वाहे स = वाह ।

वाहेवन स - वाइविल, इ जोल ।

वाहेव क्रि वि - वाशि वाहर । | डाल ।

वाहेन स - ताड़ नारियल आदिको पत्ता सहित

वाहेन वि, स - वाईस, २२ । वाहेन स -

वाईसवीं तारीख ।

वाहेन, वाग स - बसूला, लकड़हारेकी कुल्हाड़ी ।

वाहेनिकेन स - वाइसिकिल, दो पहियेकी पैर-

गाड़ी bicycle

वाडेति स - भुजाका एक गहना ।

वाडेव्री स - एक निन्न जाति ।

वाडेन स - गाना गाकर भीख मांगने वाला

एक सम्प्रदाय , एक प्रकारका कीर्तन ।

वांश, वाग स - दोनों ओर फैलाये हुए हाथों

की लम्बाई, लगभग चार हाथ , जलकी गहराई

की एक नाप (लगभग ४ हाथ) (दण—अण) ।

वांश (क्रि परि ४) - नाव चलाना, डाँड़

खेना ।

वागना, वाङ्ना स - बंगाल ; बंगला भाषा ;

चार छप्परो वाला बंगला ।

वाः अ - वाश्वा वाह वाह, शाबाश, दिल्लगी

या विस्मय प्रकाशक शब्द ।

वाक् स - कथा बात (—वाक्त्रो, —वाक्,

—वक्त्र) ; विद्या , बोलनेकी इन्द्रिय ।

वाक् स - बहंगी, टेढ़ापन ; नदी रास्ता

आदिकी मोड़ ।

वादन स = वदन ।

वाका वि - वक् टेढ़ा, तिरछा , कपट । स -

श्रीकृष्णका एक नाम, बाँकविहारो । —वाक्

वि-टेढ़ा-मेढ़ा ।

बाका (क्रि परि ३) —टेढ़ा होना, विरुद्ध होना, राजी न होना (बेंके रग) ।

बाकान (-नो), बाकानो (क्रि परि १०) —टेढ़ा करना । वि—टेढ़ा । [बकाया ।

बाकि सं—शेष, बचा हुआ अंश, बाकी, बाक्य (-अ) सं—कथा बात, वचन ; वाक्य ।

बाकान सं—वचन-दान, स्वीकार । —बाक सं—तीखी या कड़ी बात । —बाकौ वि—

वकवादी । —बाक सं—व्यर्थको वाते । बाकानाप सं—वार्तालाप ।

बाकन, बाक (बाकश अ) सं—घाकल, सडूक, पेटी (काळर—, टिनर—, कागज्र—, काश—, शठ—, गहनार—) । —बाक वि—सडूकमें व द ।

बाथान सं—वर्णन, वधान, प्रशसा । बाथारि सं—बाणर कानि, ठा बांसकी तीली या खपाची ।

बाग सं—बगीचा, कौशल ; तरीका (काज्र—, खाना), मौका (बाग ऐवहि) ; शासन (—माना) । —बाग सं—लगाम । [अडंगा ।

बागड़ा सं—बाघात बाघा, विन, अडचन, बागाड़र सं—बातोंका आडम्बर ।

बागाव सं—उद्यान बगीचा, बाग । —बाड़ि सं—बागवाला मकान ।

बागान (-नो), बागानो (क्रि परि १०) —कौशलसे प्राप्त करना (बाकवि—, बाक—), वशमें लाना (बाड़ाके—) । ठेड़ि—, ठेड़ि— क्रि—तिरछी मांग फैलाकर दोनों ओरके वालोंको भेड़के सींग-सा ऊँचा करना ।

बागिठा सं—छोटा बाग, बगीचा ।

बागौ वि—अच्छा बोलनेवाला, वाक्य-विशारद ।

बाग्रा सं—ज्ञान, कौशल फंदा ।

बाग्राज सं—वाक्योंका आडम्बर ।

बाग्रा (बाग्राइ-अ) सं—झिड़की, धमकी ।

बाग्रा (-त्त-अ) वि—प्रतिज्ञात, प्रतिश्रुत, अंगीकृत वचन दिया हुआ । [(कन्या) ।

बाग्रा वि, स्त्री—विवाहके लिए वचनबद्धा बाग्रा सं—कन्या व्याहनेके लिए वचनदान ।

बाग्रा सं—पासी, दुसाध एक निम्न जाति ।

बाग्रा स्त्री—सरस्वती ।

बाग्रा स—वाकशैली, मुहावरा ।

बाग्रा विठा सं—भगड़ा, कलह तक ।

बाग्रा विम सं—वाक्यमें शब्दोंका यथास्थान स्थापन या प्रयोग syntax

बाग्रा (बाग्री) वि—सुवक्ता । सं—बाग्रा ।

बाग्रा (-अ) वि—स यत्त-वाक्, मौन ।

बाग्रा (-अ) सं—कंठनली, वागिन्द्रिय ।

बाग्रा (-अ) सं—भगड़ा, कलह, तर्क ।

बाग्रा स—वाक्य बोलनेमें रुकावट, गला रुंधना ।

बाघ सं—बाघ बाघ, शेर । स्त्री—बाघिनी ।

बाघा सं—बाघ (तुच्छार्थमें) । वि—बड़ा, तेज (—तेजून) ।

बाघी सं—ईर्ष्याकर कोड़ा बाघी ।

बाग्रा, बाग्रा सं—पूर्वी बंगालका निवासी ।

बाग्रा, बाग्रा, बाग्रा, बाग्रा सं—बंगाल ;

बंगला भाषा । वि—बंगला भाषा सम्बन्धी या उसमें रचित (—बाकर) ।

बाग्रा, बाग्रा सं—बंगाली । स्त्री—बाग्रा, (—डा—) ।

बाग्रा वि सं—शब्द या वाक्यका उच्चारण ।

बाग्रा (बाग्रा-मय) वि—शब्दोंसे रचित, बाग्री ।

बाग्रा स—बाइठ सँकरी और बहुत लंबी नावोंके तेजीसे चलानेकी होड (—थेला) ।

बाग्रा वि—बाधक बतानेवाला । बाग्रा सं—पाठ । बाग्रा वि—बाधक मौखिक, जवानी ।

बाग्रा स—छाननी, छांटना, चुनना ।

बोछा (क्रि परि ३)—बचना, जीवित रहना ;
 छुटकारा पाना (देखे गेन) ।
 बोछान (-नो), बोछाना (क्रि परि १०)—बचाना,
 जीवित करना, रक्षा करना (नञ्जा थैदे—,
 ठाक—) ; बचा रहना (आइने बोछिअ छना) ।
 बोछान वि—अधिक बोलनेवाला, बकवादी ।
 स—बोछानता ।
 बाछि वि—बाछिनक जवानी ।
 बाछाना स—बचाव, रक्षा, उवार ।
 बाछ स—शान, शावक बच्चा, शिशु ।
 बाछ (-अ) वि—दशमोष्ठ कहने योग्य अक्षिपेय ।
 स—व्याकरणमें क्रियाका कर्ता या कर्मसे
 अन्वय (कछु—, कर्म—, भाव—) ।
 बाछनि स—बाछा, बच वेटा ; मनोनयन ।
 बाछिकाद, (बाछ-) स—कर्तव्य-अकर्तव्यका
 विचार, छानबीन । [(बाछाधन) ।
 बाछा स—बच वेटा, स्नेह-सबोधन, शिशु
 बाछा (क्रि परि ३)—घिनना, चुनना, पृथक्
 करना । वि—चुना हुआ, साफ । —बाछ
 वि—चुने हुए । बाछाई स—निर्वाचन, साफ
 करनेकी क्रिया ।
 बाछुर स—बछड़ा, बछिया । [बाज ।
 बाज स—बज्र वज्र (—गड) ; छेन शिकरा
 बाजराई वि—कड़ा और ऊँचा (—गना) ।
 बाजनदाय स—बजाने वाला, बाजा वाला ।
 बाजना स—बाज बाजना (गान—, ठाकर—) ।
 बाजरा स—टोकरा ; बाजरा ।
 बाठा (क्रि परि ३)—बजना, घड़ीमें समय
 होना (ठाठे देखेछे) ; घननेमें कड़ा मालूम
 होना (राने—), घुरा लगाना (थाए
 देखेछे) । वि—बजने वाला (—बड़ि) ।
 बाठान (-नो), बाठाना (क्रि परि १०)
 —बजाना ; ठोंक कर जाँचना (ठाक—,
 शङ्कि—) ।

बाखाउ वि—बाजार ।
 बाखि स—जकि इन्द्रजाल, जादूगरी
 (डाख—, —कर), आतशबाजी
 (—पोझाना) ; दाँव, बाजी (—बाथा) ;
 खेल । —बाउ स—खेलमें जीत ।
 बाझी स—घोडा बाण, बाजी ।
 बाझीकरण स—औषधि प्रयोगसे कामोद्दीपनी
 बाछू स—बाँहका एक गहना ; पल गके
 बगलवाली लकड़ी ।
 बाछे वि—तुच्छ निकरुमा, फजूल, फालतू ।
 बाछेबाध (-अ) वि—जवत ।
 बाँबा, बाँबा स्त्री—बहू, बाँझ ।
 बाझी (-अ) वि—चाहने-योग्य ।
 बाझा स—इच्छा, चाह । बाझिठ (-अ) वि—
 चाहा हुआ, प्रार्थित । —कल्लतर स—सभी
 इच्छाओंका पूरा करने वाला ; ईश्वर ।
 बाँट स—मार्ग, रास्ता पथ ।
 बाँटे स—शहन दस्ता (कोपाने—),
 गाय आदिके स्तनकी डेपुनी ।
 बाँटेबास स—बटरा, बाट ।
 बाँटेना स—पीसा हुआ मसाला, जो पीसा
 जाता है (—बाँटे) ।
 बाँटेपाउ, (-पात्र) स—डाकू, लुटेरा, राहजन ।
 बाँटेपाड़ि, (-पात्रि) स—डकैनी, राहजनी
 (कोपेय उभर—) ।
 बाँटेपडे, (-गूरे, -ज) स—बटलोई ।
 बाँठा स—कटोरा (पाने—, पानदान) ।
 एक छोटी मछली ; बट्टा, छूट ।
 बाँठा, बाँठा (क्रि परि ३)—पीसना (मजना—) ।
 वि—पीसा हुआ ।
 बाँठा (क्रि परि ३)—बाँटना ।
 बाँठावि स—छेनी, खुानी ।
 बाँठि स—अब्राजा प्याली, कटोरी ।
 बाँठि स—छोटा मकान (उछान—) ।

बाटी स—बाड़ि मकान, घर ।

बाटून स—गोली, गेंद । [(भाग—)]

बाटोशारा, (बाँ-) स—बटन बटवारा ; तकलीम
बाँठी, बाँठा स—बट्टा ; छूट ।

बाड़ स—वृद्धि, बढ़ाव, बढ़ती । बाड़ति वि—
आवश्यकतासे अधिक, फालतू । [स—बढ़ती ।
बाड़ल (-अ) वि—बढ़नेवाला, समाप्त
(बरे छान—)]

बाड़ई, बाड़ई, बड़ई स—छूता बढ़ई ।

बाड़ति स—बढ़ती, वृद्धि अधिकता ।

बाड़न, बाड़ू स—बाँठा बढ़नी, झाड़ ।

बाड़ल (-अ) वि—बाड़ देखो ।

बाड़ा (क्रि परि ३)—बढ़ना, परोसनेके लिए
सजाना (भाउ—) । वि—बढ़ा हुआ,
परोसनेके लिए सजाया हुआ (—भाउ) ।

बाड़ान (-नो), बाड़ाना (क्रि परि १०)—

बढ़ाना, प्रशंसा करना, इज्जत दिखाना ।

बाड़ाबाड़ि स—अधिक वृद्धि, अधिक मात्रामें
कोई काम (—करा) ।

बाड़ि स—आघात चोट (भाँटि—) ।

बाड़ि, बाड़ी स—मकान, घर । (कोठा—, स—
पक्का मकान । बाड़— स—बाहरको सजिल ।
बड़व— स—सुखरार) । बाड़ी बाड़ी—हर
एक मकान ।

बाड़ूखे स—बन्ध्याप्राश्ना । [लिं ग ।

बाणनिद्र (-अ) स—नम दा नदीमें प्राप्त शिव-

बाणिजा (-अ) स—यवनाय व्यापार ।

बाणिन स—भूमिमा बंडल ।

बात स—वायु, हवा (बाताहत) ; गठिया ।

—कर्म (-अ) स—अधोवायु त्याग ।

बातनान (-नो), बातनाने (क्रि परि १६)—

बतलाना, समझा देना ।

बातावि स—एक प्रकारका बड़ा नीबू ।

बाताशन स—खाना ज गला, भरोखा ।

बाताग स—वायु (—करा, पंखा भलना) ।

बाताग स—बतासा । [अष्ट (—वृक्ष)]

बाताहत (-अ) वि—हवासे घायल या नष्ट-
बाति स—दीया, बत्ती (गाँधेय—) ।

बातिक स—बाई सनक, पागलपन ; अथवा शथ
शौक (गाँधेय—) ।

बातिन वि—रङ्ग, खारिज ।

बातून वि—पागल, सनकी ।

बात्या स—बाड़ आँधी ।

बाथगिक वि—सालाना, वार्षिक । [प्रति स्नेह ।

बाथग्य (-अ) स—माता-पिताका सततिके
गथान स—गोशाला, गोचर भूमि ।

बास स—वाक्य (अश्—) ; कथन, तर्क
(बासाश्—) ; झगड़ा ; विचार, मत

(अर्थात्—) ; बाधा, प्रतिबंध, शत्रुता
(—गाथा) ; वजन, त्याग (—अश्) ।

बादे—क्रि वि—सिवाय, छोड़कर (तूभि
आमि—) ; बाद (तिन दिन—) ।

बादक वि, स—बजानेवाला, बजवैया ।

बादन स—बाजा बजानेकी क्रिया ।

बादर स—बादल । [सा ।

बादर स—बानर, बंदर । बादर वि—बंदरका-

बादल स—वर्षा वर्षा, बारिश । बादला स—
बारिश । वि—वर्षा सम्बन्धी, बदलीका ।

बादले, बादले वि—वर्षा सम्बन्धी, वर्षा
अस्तुमें उत्पन्न ।

बादशाह, बादशा स—बादशाह । बादशाहि,
(—गाई) स—बादशाहत । बादशाहो,

(—गाई) वि—बादशाहका-सा ।

बादा स—घना जंगल ; जलमय स्थान ।

बादाड़ स—जंगल ।

बादाय स—नौकाय पाव नावका पाल, बादाम ।

बादित (-अ) वि—बजाया हुआ ।

बादिख (-अ) स—याजा ।

बौद्धिप्रोत्ता सं—डोरिया रगोन कपडा (इससे प्रायः रजाई बनायी जाती है) ।

बानो वि, स—बोलने वाला, दार्शनिक मत मानने वाला (अर्थवत्—); मुहूर्त, फरियादी । स्त्री—बानिनी ।

बानो स्त्री—बासी, लौंडी बांटी ।

बाइस स—चमगादड़ ।

बाजे कि वि—बाज देखो ।

बाछ (-अ) स—बाजा, बाजिका बजना ।
—बाँट (-अ) स—बाजे-बाजे ।

बाध स—बाधा, प्रतिबंध, बाधता (-बाधा) ।

बाध सं—बांध, बंध ; घुस्स ।

बाधक वि—बाधा देनेवाला । सं—विघ्न, एक स्त्री रोग, रजोगोष ।

बाधन स—बंधन (नड़ि—, बंधे—) ।
बाधनि, बाधुनि सं—बंधन ; श्रृंखला (कथा—) ।

बाधा सं—विघ्न, रुकावट, प्रतिबंध, अड़चन, कार्यके आरंभमें छींक आदि अशुभ लक्षण ।

बाधा (कि परि ३) —अटकना, फँसना (पेरबेदे कापड़—); नियम-विरुद्ध होना (नयके बाधे, आशेन बाधे); कठिन मालूम होना । (गोन—, गड़बड़ाना, भगड़ा खटा होना । बायना—, मुकदमा छिड़ना । बू—, लड़ाई छिड़ना) ।

बाधान (-नो), बाधानो (कि परि १०)
—अटकाना, फँसाना, उलझनमें डालना छेड़ना (भूषकि—, बगड़ा—) ।

बाधा सं—बद्ध रहन, गिरो ।

बाधा (कि परि ३) —बांधना (वेड़ा—, बाना—, बंधे—, बंध—), रोकना (डोरगाड़ि—); मिलना, जमना (बन—, बनाने—); कड़ा करना (बू—, साहस करना); रचना (गान—) । वि—बाँधा

हुआ ; नियत (—बाहिना) । बांधाई सं—बाँधाई । —बांधि सं—बांधाबांधि निग्रह बांधा हुआ नियम ।

बाधान (-नो), बाधानो (कि परि १०)
—बांधवाना, बनवाना (बाँध—, बंध—) ।

वि—बाँधा हुआ ; बनाया हुआ ।

बाधित (-अ) वि—बाधा-प्राप्त ; कृतज्ञ, एहसानमंद (—इच्छा, —थाका) ।

बाधा (अ) वि—बाधाग्रह आज्ञाकारी (बाधे—); मजबूर होने वाला (इच्छे—, कश्ति—) । बाधाता सं—बशमें रहनेका भाव, आज्ञाका पालन करना । बाधाबाधकता सं—एकके दूसरेके बशमें रहनेका सम्बन्ध ।

बान सं—बधा, बंधन प्राप्त बाढ़ ।

बानान वि—जिसकी पेदी फट गयी है (नोका—इच्छा); अस्त-व्यस्त ।

बानर सं—बंदर, कपि । बाधरे वि—बंदरका-सा । स्त्री—बानरी ।

बानान स—हिज्जे, अक्षर-विन्यास ।

बानान (-नो), बानानो (कि परि १०)
—बनाना, रचना, रसोईके लिए काटना (तबकादि—) । वि—बनाया हुआ, रचा हुआ ; काटा हुआ । [(गहना—)]

बांनि सं—बनानेकी मजदूरी, बनवाई
बाध (-अ) स—कैसे निकली हुई चीज ।

बाधा स—गाना गुलाम, बाँदा, नौकर ; (व्यंगमे) आदमी (बाधि तेमन—नई) ।

बाधव सं—बांधव, कुटुंबी ; दोस्त । बाधवी स्त्री—बधुकी पत्नी, पुरुषका नारी-बांधु ; सखी, सहेली ।

बाध सं—बाधा पिता, बाप, जनक ; स्नेह-संबोधन वेदा ; (तुच्छार्थमें—बाध) ; भय विस्मय आदि सूचक शब्द (बाधे !) । बाधे

थेनाले माघे लाङ्गाने वि—घरसे निकाला हुआ, आवारा ।

वांशालु (-अ) सं—बापको गाली (—कृश)

वांशी, वांशि स—भूकृतिनी तालाब ।

वांश सं—बाप देखो ।

वांशुल सं—बाफता एक रेशमी कपडा ।

वांशुल अ—झुल, दहन वायु (वांशुल—) ।

वांशुल स—क घे तक लटकते हुए धुंधला बाल ।

वांशुल सं—बबूल ।

वांशुल सं—बाप पिता, बाप, स्नेह-संबोधन,

वेटा, देवता साधु आदिकी उपाधि,

(—विश्वनाथ, गार्ध—); भय विस्मय कष्ट

आदि सूचक शब्द । वांशुल सं—साधु,

संन्यासी, स्नेह-संबोधन (वांशुल—) । वांशुल

जीवन सं—स्नेह या आदर सूचक संबोधन ।

वांशुल सं—बाबू; कर्मचारी (वांशुल

वड़—); शौकीन, विलासी, छैला । —शिवि,

—शाना, —शानि सं—शौकीनी, छैलापन,

बड़े आदमीकी-सी चाल ।

वांशुल सं—एक छोटी चिड़िया जो ताड़ खजूर

आदिकी टहनियोंमें लटकता हुआ घोंसला

बुनती है, बया ।

वांशुल सं—बावर्ची, मुसलमान रसोईदार ।

वांशुल वि—दां बायाँ (—दिक); विरुद्ध

(विधि—) । सं—बायीं ओर ।

वांशुल वि, सं—बौना, नाटा आदमी; ब्राह्मण ।

वांशुल सं—ब्राह्मणका अधिकार (तुच्छार्थमें) ।

वांशुल स्त्री सुन्दरी स्त्री, नारी ।

वांशुल स—एक तांत्रिक साधन जिसमें

मदिरा मांस मछली मुदा और मैथुन

आवश्यक है । वांशुल स, वि वैसा

साधक ।

वांशुल (अ) वि—जिसके पेच बायीं ओर

हो (—श्व) ; बायीं ओर घूमने वाला ।

वांशुल कि वि—मालके साथ (लाव—धरा गड़ेछे) ।

वांशुल सं ब्राह्मण, वाभन, रसोइया ।

वांशुल वि—दान दहिना ।

वांशुल सं—वायु, हवा ।

वांशुल स—बपाना, पेशगी; किसी वस्तुके पानेके लिए वचनको जिद या हठ ।

वांशुल, वांशुल, वांशुल (-अ) वि—वायु सम्बन्धी, वायुके तुल्य ।

वांशुल सं—काक कौआ ।

वांशुल सं—तबलेके साथ बायीं ओर बजाये जानेवाला बाजा बायाँ ।

वांशुल स—वायु, हवा, वायु-रोग, सनक ।

—श्व (-अ) वि—पागल, सनकी । —वान

सं—हवाई जहाज ।

वांशुल सं—छात्र सिनेमा ।

वांशुल सं—बार सप्ताहका दिन, दफा (अइ—,

अठारक—); वारी (—गड़ा), समूह साधारण

(—नाग्री, वेश्या) । सं—मनाही । वांशुल

वांशुल, वांशुल कि वि बार बार, पुनः पुनः ।

वांशुल सं, वि = वांशुल (—क'रे दां) ।

वांशुल (-अ), वांशुल वि, स—बारह, १२ । —भूत

सं—साधारण मनुष्य, ऐरा-गैरा आदमी ।

—भेजे वि—बारहो महीने होने या फलने वाला, बारहमासी ।

वांशुल वि—मना करने या रोकने वाला ।

वांशुल स—लकड़ीकी बड़ी थाली ।

वांशुल सं—रोक, निषेध, मनाही । वांशुल

(-अ) वि—निषेध करने या रोकने योग्य ।

वांशुल स—श्लो हाथी ।

वांशुल स—घात समाचार ।

वांशुल, (-वधू, -बनिठा) स्त्री—वेश्या ।

वांशुल स—वोभ ठोने वाला । वांशुल

वांशुल सं—वोभ ठोनेका काम या मजदूरी ।

वाग्निविज्ञान वि—रोकने या मना करने वाला ।

वाग्निहविः स—वारहसि गा, एक हरिण ।

वाग्निहविः स्त्री=वाग्निहविः । [(वाग्निहविः)]

वाग्निहविः स—दूसरी बार दूसरा सन्ध्या

वाग्निहविः, वाग्निहविः स—वरासदा, बालान ।

वाग्निहविः स—इन पानी । [(वाग्निहविः—) barrack

वाग्निहविः स—सिपाहियोंके रहनेका घर

वाग्निहविः (-अ) वि—रोका या मना किया हुआ ।

वाग्निहविः, वाग्निहविः, वाग्निहविः स—बादल, मेघ ।

वाग्निहविः, वाग्निहविः स—पान रोपने और बेचने वाली एक जाति ।

वाग्निहविः स—बादल ।

वाग्निहविः वि—एक बार ।

वाग्निहविः (-अ) स—उत्तरी व गालके ब्राह्मणों या कायस्थोंकी एक श्रेणी ।

वाग्निहविः स—मुहल्लेके सभीकी सहायतासे किया जानेवाला उत्सव या पूजा आदि ।

वाग्निहविः (-अ) स—वातां, समाचार, खबर ।

—वह (-अ) स—खबर ले जाने वाला दूत ।

वाग्निहविः स—देखन भंडा ।

वाग्निहविः (-अ) स—वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

वाग्निहविः स—चिकना करनेके लिए लेप ।

वाग्निहविः (-अ) वि=वाग्निहविः । —नाग वि—मना किया जाने वाला ।

वाग्निहविः स—जौका महीन आटा, वाली ।

वाग्निहविः वि—सालाना । वाग्निहविः स—दक्षिणा जो सालमें एक बार गुरुओं या पंडितोंको दी जाती है ।

वाग्निहविः स—बालक, शिशु । —विद्या (-अ)

स—पुराणोंमें कथित अगुंठके समान अपि, (तुच्छार्थमें, नादान वच्चे (युवकोंका वच्चेका-सा वर्ताव देख कर कहा जाता है) । —व्यास स—शिशु पालन । —विद्या स्त्र वचनमें विधवा । —वाग्निहविः (-अ)

स—वच्चोंकी बात । —वाग्निहविः स—वच्चोंका रोग । —वच्चे वि—वच्चोंका-सा ।

वाग्निहविः स—बालटी ।

वाग्निहविः स—बाइल ।

वाग्निहविः स—कंगन, कड़ा, बालिका ।

वाग्निहविः स—दला, असगल (—निम्न शक्ति) ;

अशुभ सूचक बातोंके उत्तरमें उक्ति (वाग्निहविः, मरवे देन) । [इत्यादि ।

वाग्निहविः स—कोठेके ऊपरका कमरा,

वाग्निहविः स—ब्रह्मदेई पतली रजाई, रुईदार ओढ़ना । [प्रकारका उसका भुजिया चावल ।

वाग्निहविः स—चावल ढोनेवाली बड़ी नाव, एक

वाग्निहविः स—बागूका बालू । —वाग्निहविः स—बालूका टीला या पहाड़ ।

वाग्निहविः स—उपशान तकिया ।

वाग्निहविः, वाग्निहविः स—बालू ।

वाग्निहविः (-अ) स—लड़कपन ।

वाग्निहविः स—बाँस । —वाग्निहविः स—जमीनकी

हड दिखानेके लिए बाँस या खूटा गाढ़नेकी क्रिया ।

वाग्निहविः, वाग्निहविः स—बाँसुरी ।

वाग्निहविः वि, स—बासठ ६२ ।

वाग्निहविः (-अ) स—भाप ; आँसू (—वाग्निहविः, वाग्निहविः) ; आभास, लेश (वाग्निहविः वाग्निहविः) ।

—वाग्निहविः स—अग्निहविः, धूआँकश । —वाग्निहविः,

—वाग्निहविः, —वाग्निहविः स—ब्रह्मवाग्निहविः रेलगाड़ी ।

वाग्निहविः (-अ) वि—भाप-सम्बन्धी ।

वाग्निहविः स—अवस्थान, स्थिति, निवास ; वस्त्र, छगघ, महक ।

वाग्निहविः अ=वत् ।

वाग्निहविः (वाग्निहविः) स—अद्भुत ।

वाग्निहविः (वाग्निहविः-अ) स—वाग्निहविः ।

वाग्निहविः स—अवधित करण, वासन ; वस्त्र, पात्र (वाग्निहविः, —वाग्निहविः) ।

वाग्ना स—इच्छा ।

वाग्ना स—केलेके पेड़का छिलका ।

वागञ्जिक वि—वसन्त सम्बन्धी ।

वागञ्जी स्त्री—दुर्गा देवी । वि—वसन्त सम्बन्धी,

वासंती रंगका । —पूजा स—चैत्र शुक्ल

सप्तमीसे नवमी तक की जानेवाली दुर्गापूजा ।

वागव स—इंद्र ।

वागव स—दिन दिवस (वरि—, आदि—) ।

—वस स—जिस कमरेमें विवाहकी रात्रिको
दुलहा-दुलहिन रहते हैं । —वाग्ना स—विवाह
की रात्रिको दुलहे-दुलहीनके साथ स्त्रियों
का जागना ।

वागा स—जाड़ाटे बाड़ि डेरा, किरायेका
मकान ; घोंसला, (गाथि—), जानवरोंके
रहनेका स्थान (वाघव—, गाथेव—) ।

वागा (क्रि परि ३)—समझना ।, —डाल—
क्रि—प्यार करना ।

वागाए वि, स—किरायादार ।

वागित (-अ) वि—सुवासित, सुगन्धित ।

वाग्निना स—वाशिंदा, निवासी ।

वागौ वि—रहनेवाला, निवासी, वासो

(—जठ) । —वस स—जिस कमरेमें सुबह

भाड़ू नहीं लगाया गया है । —कापड़ स—

रातका पहना हुआ कपड़ा । —विघ्ने, —वे

स—विवाहके दूसरे दिनका कुशसिडका आदि

अनुष्ठान । —गड़ा स—पिछली रातका मरा

हुआ मुर्दा । —गूथ स—सुबह बिना धोया

मुख ।

वाघ स—निवासस्थान, पुस्तैनी मकान ।

वि—वंश-परंपरासे वसा हुआ (—जिगे) ।

—काव स—इंजीनियर । —गाथ स—जो

पुराना साँप घरमें डेरा बनाये रहता है ।

—शात्र वि, स—उद्वासित ।

वाश (-अ), वाश्क वि—चोभ दोने वाला ।

(जत्र—);, ले जाने वाला (गवाह-
वाश्क) ।

वाशन स—जिसके द्वारा ढोया जाय, सवारी ।

वाशवा, वाश अ—वाः, शावाश वाह वाह,
शावाश ।

वाशाजत्र वि, स—बहत्तर, ७२ ।, वाशाजत्र

वि—७२ साल उमर वाला, बढ़ापेके

कारण जिसकी बुद्धि काम नहीं देती ।

वाशाश्र वि—बहादुर, वीर । स—एक उपाधि

(वाश्र—, वाश्रा—) । वाशाश्रि स—बहादुरी ।

वाशाश्रौ काठ स—साखू आदिकी कड़ी

लकड़ी ।

वाशाना, वाशन स—बावना किसी वस्तुके

पानेके लिए बच्चों आदिकी जिद या हठा ;

छूत बहाना ।

वाशन्न (-अ) वि, स—बावन, ५२ ।

वाशन्न स—बहार, शोभा । [नियुक्त, मुकरर]

वाशन वि—बहाल बहाल, ज्यों-का-त्यों, कायम,

वाशित (-अ) वि—ढोया हुआ, बहा हुआ,

जिसके द्वारा चलाया जाय (गश्क— वान) ।

वाशिनौ स—सेना, फौज, नदी । वि—ढोने-

वाली, बहनेवाली (कानीडे गश्क उठव—) ।

वाशिव, वात्र स—बाहरी स्थान । क्रि वि—

बाहर । वि—निकला हुआ । वाशिवे, वाशेवे

क्रि वि—बाहर, दूसरी जगह ।

वाशिवन्न क्रि—वाशिव श्र बाहर निकलता है ।

वाशिवन्न (-अ) क्रि—वाशिव श्र बाहर निकला ।

वाशी-वि—ढोनेवाला (जत्र—) ।

वाह स—झूझ भुजा, बाँह । —वस स—हाथ या

शरीरकी शक्ति । —गूथ स—काँख, बगल ।

—गूथ (-अ) स—कुश्ती ।

वाश्या (-अ) स—बहुतायत, अधिकता ।

वाश (वाज्ज-अ) वि—बाहरका, बाहरी-

(—वग—) । —जान स—बाहरी विषयोंका

ज्ञान, होश। —शैल्वि (-अ), वाशैल्वि
सं—बाहरी इन्द्रिय। [वि—ढोया जानेवाला।

वाश (वाञ्छ-अ) वि—ढोने योग्य। —मान
वाश (वाञ्छे) सं—मल, पखाना, दस्त।
—दूरा क्रि—पखाना फिरना। —गाँव क्रि—
माड़ा लगाना। —वाँव क्रि—पखाने जाना।

वाश्चाफोटे (वाञ्छाफोट) सं—वाँह पर थप्पड़,
ताल ठोंकनेकी क्रिया; ललकार।

विडेनि सं—झिलका-रहित उड़दकी ढाल।
दिश (-अ), दिशति वि, सं—दिश, दूढ़ि बीस,
२०।

विकृ वि—खिला हुआ; केश-रहित।

विकृ वि—भयंकर (—जोसदात्र, —शूर्ति),
उत्कंड (—शठ)।

विकृना क्रि=विद्वाना।

विकृषित (-अ) वि—अधिक कपित।

विकृषान वि—भयजनक, भीषण।

विकृष सं—विरुद्ध दिशाका खिचाव, आकर्षण
का उल्टा repulsion

विकृष वि—अंशरहित, अमूर्ण, बिगड़ा हुआ;
व्याकुल। विकृषात्र (-अ) वि—जिसका
कोई अंग टूटा या खराब है।

विकृषित, विकृषित (-अ) वि—खिला हुआ।

विद्वान (-नो), विद्वाना (क्रि परि ११)—विक
जाना, खपना।

विद्वान स—परिवर्तन, अवस्थान्तर, खराबी,
सड़ाव, परिवर्तनसे उत्पन्न वस्तु जैसे दूधका
विकार दही; तेज बुझारके कारण बुद्धिका
विकार, प्रलाप। विद्वानो वि—परिवर्तनशील,
विकारको प्राप्त होनेवाला। विद्वान (-अ)
वि—विकृत होने योग्य। [पंहर (—द्वना)
विद्वान, वैद्वान, विद्वान सं—यथवा ३ तीसरा
विद्वान, विद्वान सं—विकास, पिलना, प्रकाश।
विकृषिनि सं—द्वज-द्वना खरीद-फरोलत।

विकृषण स—इष्टाना चारों ओर फैलाना
(चाणोद—) radiation

विकृष (-अ) वि—विकारप्राप्त। —नखिद
(-अ) वि—पागल, सनकी। विकृषि स—
विकार।

विकृष सं=विकान।

विकृष सं—विक्रि वेचना, विक्री। विकृषी वि—
वेचनेवाला। विक्रि सं—विक्री, फरोलत।
विकृषित (-अ) वि—विका हुआ। विकृषा
वि, सं—वेचनेवाला। स्त्री—विकृषी। विकृष
(-अ) वि—विकने योग्य।

विकृषा सं—विकार, विकृति। [कृत—]।
विकृष (विकृषत-अ) वि—बाइत घायल
विकृषित (-अ) वि—द्वितराया हुआ, वेचै
(—छिड)।

विकृष (-अ) वि—हिलाया हुआ; चंचल।
विकृष सं—फेंकाव, निक्षेप; वेचैनी (छिड—)।
विकृष सं—हिलाव, चंचलता, वेचैनी।
विद्वान (-अ) वि—प्रसिद्ध, नामवर। विद्वानि
स—प्रसिद्धि, नामवरी।

विगृषान (-नो), विगृषाना, विगृषाना (क्रि
परि १७)—बिगड़ना, खराब होना; विरुद्ध
होना; बिगाड़ना।

वगृष (-अ) वि—अतीत बीता हुआ।

विगृषित (-अ) वि—निदित, घृणित।

विगृषित (-अ) वि—गला हुआ।

विद्वान (-अ) सं—देवताकी मूर्ति; शरीर;
युद्ध, शब्द विच्छेद।

विद्वान सं—अशक्ता अलगा अलगा होनेकी
क्रिया; विग्लेपण; ध्वंस।

विद्वान सं—वित्त, लगभग ६ इंच।

विद्वान सं—बीधा, ३२० × २० वर्ग हाथ भूमिका
परिमाण, एक एकर का प्रायः तृतीयांश।

विकृषण वि—घुद्धिमान, अनुभव, निपुण।

विचित्रण सं—भ्रमण, टहलना ।

विचार सं—तर्क, बहस, विचार, मीमांसा, फैसला (शक्तिप्र—) । विचारक सं—विचार करनेवाला, हाकिम । विचारणीय, विचार्य (-अ) वि—विचारने योग्य । विचारानय स—अदालत । विचारित (-अ) वि—विचार किया हुआ ।

विगल स—थड़ पुआल, चारा ।

विधि, वीधि सं—बिया, बीज ।

विचिक्षा स—सदेह, शक ।

विर्ण (-अ) स—बारीक चूर्ण, महीन छुकनी ।

विर्णित (-अ) वि—अच्छी तरह चूर्ण किया हुआ ।

विच्छू स—काँकड़ा बिछा बिच्छू । [स—पतन ।

विच्छा (-अ) वि—गिरा हुआ, पतित । विच्छाति बिछा स—बिच्छू, गोजर ।

विद्यान (-नो), विद्याना (क्रि परि ११)—भाता बिद्याना । वि—बिद्याया हुआ ।

विद्याना स—बिद्याना, बिस्तरा ।

विच्छूटे, विच्छूति स—एक जंगली पौधा जिसके छूनेसे जलन पैदा होती है और खुजलाता है, बिच्छूका पौधा । [में जमात्र ।

विषविष स—किलविष छोटे कीड़ोंका एक स्थान विषया स—दुर्गा; भांग; दुर्गासूति जलमें बहानेकी तिथि, आश्विन शुक्ल दशमी ।

विषयी, (-नि) स—विश्व बिजली ।

विषाति स—भिन्न जाति । विषाती (-अ) वि—भिन्न जातिका ; अत्यंत (-काथ) ।

विषिगीया स—विजय पानेकी इच्छा । विषिगीय वि—विजय पानेके इच्छुक ।

विष्वि स—बिजली ।

विष्वन स—शे शे ठोना जम्हाई ।

विष्वो वि—बेजोड़, दो से भाग देनेके अयोग्य ।

विष्व (विगं-अ) वि—ज्ञानी, पंडित ।

विष्ठा (-अ) वि—अच्छी तरह जाना हुआ ।

विष्ठा (-अ) वि—अच्छी तरह जानने योग्य ।

विटे स—काला नमक ।

विटेकन (बिट्कैल) वि—बदसूरत, भद्दा ।

विटेशी स—पेड़, वृक्ष ।

विटेल (बिट्ले) वि—धूत, पाजी, दुष्ट ।

विट्ट (-अ) स—बायविट्टंग ।

विट्टविट्ट स—अस्पष्ट धीमी बात ।

विट्टना, विट्टन स—वृथा चेष्टा, धोखा ; छेड़ । विट्टित (-अ) वि—वंचित, धोखा खाया हुआ ; हानि उठाया हुआ ।

विड़ा, विड़े, विंड़े स—बीड़ा, गेंदुरी ; पानके २० गड़ेकी ढोली ।

विड़ान स—बड़ान बिल्ली ; बिलाव । स्त्री—विड़ानी । —उभरी वि—बगुला भगत ।

विड़ि स—बीड़ी, पानका बिड़ा ।

विठथा (बितण्डा) स—कुतर्क ।

विठलि स—विषत बित्ता ।

विठाण्डि (-अ) वि—भगाया हुआ ।

विठान स—ठाणेश चंदवा, मडप ।

विठिकिछि वि—बदसूरत, भद्दा ।

विठक (-अ) वि—वृष्णा-हीन, निरुपह, जिसमें इच्छा न हो । विठका स—अनिच्छा, घृणा, विराग ।

विठ (-अ) स—सम्पत्ति, जायदाद, धन ।

विठल (-अ) वि—बहुत घबड़ाया हुआ ।

विठकुटे, (-वूटे) वि—बदसूरत, भद्दा ।

विदाय स—दूर करण, अपसारण (आपन—करा) ; जानेकी आज्ञा (—ठांवा) ; बिदा, प्रस्थान, खसत ; बिदाई ; दक्षिणा (बाक—काठानी—) ।

विदायण स—तोड़फोड़ । विदायक वि—तोड़ डालनेवाला (श्रम—) ।- विदायित वि—तोड़ा हुआ ।

विशोषी वि—जलानेवाला ; जलन पैदा करने-
वाला ।

विश्वी स्त्री—विद्यावती स्त्री ।

विद्विष (-अ) वि—विठाड़ि । [घायल ।

विह (-अ) वि—विंधा हुआ, छेद किया हुआ,
विश्रब्धाना सं—विजलीकी चमक ।

विश्व सं—विजली । विश्वार्ध (-अ) वि—
जिसके भीतर विजली है । विश्वाम, विश्रब्धाना
सं—विजलीकी रेखायें, विश्वार्ध सं—
विजलीकी तरह गति ।

विश्राशाशै वि—विद्यामें उत्साह देनेवाला ।

विद्राविड (-अ) वि—पिबला हुआ ।

विद्व सं—दिल्ली, हँसो, मजाक ।

विद्व सं—विद्वान व्यक्ति ।

विद्वद्व (-अ) वि—पठिततुल्य ।

विदिष्ट (-अ) सं—द्वेषका पात्र ।

विध, विध सं—प्रकार (नानाविध) ।

विध सं—छिद्र, छेद ।

विंधा, विंधा (क्रि परि ५)—झांझा विंधना, छेदना ।

वि—विंधा हुआ, छिद्रा हुआ ।

विंधान (-नो), विंधाना, विंधाना, विंधाना
(क्रि परि ११)—विंधाना, छेद कराना ।

विधान सं—विधि व्यवस्था, नियम ; संपादन
(गणना—) ।

विश्व अ—कायण कारणसे ।

विधि सं—नियम, व्यवस्था, कानून, पद्धति,
क्रम, उपाय ; तकदीर ; ब्रह्मा । —पूर्व
क्रि वि—विधिने, नियमसे । —द्वि (-अ)
वि—नियम-वद् । —द्वि क्रि वि—नियमसे,
अच्छी तरह । —विधि सं—कर्मका लेख,
भाग्य । —द्वि (-अ) वि—उचित ।

विधि सं—इच्छा, इरादा ।

विधि, विधि (-अ) वि—कपित ।

विधि वि—काष्ठ दुखी । स्त्री—विधि ।

विध्व (-अ) वि—उचित, ठीक, करने योग्य ।

विध्व (-अ) सं—विनाश, लोप । विध्व

वि—नाश करने या होने वाला । विध्व (-अ)

वि—नष्ट, वरगद ।

विनड (-अ) वि—झुका हुआ, प्रणत । विनडि

सं—विनय, नम्रता, झुकाव प्रार्थना ।

विनिनि, विनिनि सं—वेणी वंधन ।

विनिन (-नो), विनिनाना, विनिनाना (क्रि परि ११)

—वेणी गूँथना, लट सन आदि बंट कर वेणीकी
तरह बनाना, विलाप करना (विनिन कान) ।

वि—वेणीकी तरह गूँथा हुआ ।

विनिन वि—नाम-हीन, गुप्त-नाम ।

विनिन वि—नाशवान, ध्वंसशील ।

विनि, विनि क्रि वि—विना, सिवाय (विनि श्रुता
श्रुति) । [हुआ ।

विनिःश्रुत (विनिःश्रुत-अ) वि—निकला

विनिड (-अ) वि—निद्राहीन (—ब्रह्मनौ)

विनिड सं—निद्राका अभाव, जागरण ।

विनिश्रुत सं—पतन, दैवी बला ।

विनिश्रुत सं—थकाना लौटना, वापसी ।

विनिश्रुत (-अ) वि—लौटाया हुआ, रोका
हुआ । विनिश्रुत (-अ) वि—लौटा हुआ,
रुका हुआ ।

विनिश्रुत सं—बदला, परिवर्तन ।

विनिश्रुत सं—अर्पण, प्रयोग । [प्रेरित ।

विनिश्रुत (-अ) वि—नियुक्त, आदिष्ट,

विनिन सं—आगोश विनोद खेल-कूद । वि—

मनोहर (—द्वि) । विनिन सं—तोपण

(छिद्र—) । विनिन स्त्री—तोपण
करनेवाली, राधिका ।

विधि सं—ताशका एक खेल ; क्रमिक तीन

ताशोंका समूह ।

विधि सं—झांझा वूँट ; विंधी, चिह्न । —विधि

(-अ) सं—जरा भी (—कानि ना) ।

विश्राज सं—स्थापन, सजावट, रचना (लक्ष—) ।

विश्रुत (-अ) वि—स्थापित, सजाया हुआ ।

विश्रुतक वि—खतरनाक ।

विश्रुति, (-नी) सं—दुकान, बाजार ।

विश्रुतक सं—विपत्तिका समय । [रँडुआ ।

विश्रुतक वि—गुणनात्र जिसकी पत्नी मर गयी है,

विश्रुतक वि—खतरनाक ।

विश्रुत सं—धुरा मार्ग (—गायी) ।

विश्रुतक सं—विपत्तिसे उद्धार ।

विश्रुतक (-अ) वि—विपत्तिमें पड़ा या फसा हुआ । [वाला ।

विश्रुतक सं, वि—विपत्ति दूर करना या करने-

विश्रुत (-अ) वि=विश्रुतक ।

विश्रुतक (विपन्मुक्ति) सं—विपत्तिसे छुटकारा ।

विश्रुत सं—कर्मका फल, विपत्ति, विपरि-
णाम ।

विश्रुत सं—मन्त्राग सौतेला बाप ।

विश्रुत सं—वन, जंगल ।

विश्रुत वि—विशाल, बहुत बड़ा, महान ।

विश्रुतक सं = विकर्षण ।

विश्रुतक (-अ) सं—धोखा, भगड़ा, नियोग ।

विश्रुतक (-अ) वि—व चित्त, धोखा खाया हुआ । विश्रुतक स्त्री—निर्दिष्ट स्थानमें जा कर नायकको न पानेवाली नायिका ।

विश्रुत वि—निष्फल, नाकामयाब, असिद्ध ।

विश्रुत सं—बोलनेकी इच्छा । [करनेवाला ।

विश्रुत वि—जो विवाद कर रहा है, भगड़ा

विश्रुत सं—कै करनेकी इच्छा, ओकाई ।

विश्रुत सं—गढ़ा, गुफा, छिद्र ।

विश्रुत सं—व्योरा, वृत्तान्त, वर्णन । विश्रुती सं—विवरण युक्त लेख (गजानन काव्य—) ।

विश्रुत (-अ) वि—जिसका रंग विकृत हो गया है, मलिन, फीका ।

विश्रुत (-अ) सं—चक्र, परिवर्तन, एकमें दूसरेका

भान । —वाप सं—मायावाद, स्वप्नमें आत्म-निष्ठ मनके द्वारा अनेक वस्तुओं तथा व्यक्तियों की कल्पनाकी तरह ब्रह्म-निष्ठ मायाके द्वारा इस विचित्र सृष्टिकी कल्पना हुई है ऐसा वेदान्तका सिद्धान्त ।

विश्रुत, विश्रुत (-अ) वि—नगा ।

विश्रुत सं—भास्कर, सूर्य ।

विश्रुत सं—विदेश, परदेश । विश्रुती वि—देशत्यागी ; सन्न्यासी ।

विश्रुत सं—भगड़ा, विरोध, तकरार, मुकद्दमा ।

विश्रुती वि—भगड़ालू ; विवाद सम्बन्धी (—गण्डि) । सं—मुद्दालेह ।

विश्रुती स्त्री—बीबी, मेम ; ताशकी बीबी ।

विश्रुताना सं—मेमोंकी तरह चाल या शौकीनी । —कूड़ा स—कोहड़ा काशीफल ।

विश्रुत (-अ) वि—छनसान, अकेला ।

विश्रुत सं—विद्वान्, पंडित ।

विश्रुत (-अ) वि—वर्णित, विस्तृत । विश्रुति सं—वर्णन, व्याख्या, मतव्य । [ज्ञान ।

विश्रुत सं—धर्मज्ञान, वैराग्य, हिताहितका

विश्रुत सं—विचार । विश्रुतनी (-अ), विश्रुत

(-अ) वि—विचारके योग्य । विश्रुत (-अ)

वि—विचार किया हुआ । [परेशान ।

विश्रुत (-अ) वि—शुद्धिवाञ्छ घबड़ाया हुआ,

विश्रुत (-अ) वि—घँटा हुआ, खडित, अलग किया हुआ ।

विश्रुत सं—प्रभा, किरण, प्रकाश ।

विश्रुतक—वि, सं—भाग करनेवाला, भाजक ।

विश्रुत (-अ) वि—भाग करने योग्य, भाज्य ।

विश्रुत, (-ना) सं—चिंता, विचार ।

विश्रुतनी सं—रात्रि, रजनी ।

विश्रुत सं—सूर्य, अग्नि, चंद्रमा ।

विश्रुत सं—परदेश ।

विश्रुत वि—मशगूल, लवलीन, तन्मय ।

विजाटि स—गढ़वड़ी, संकट ।
 विजाळ (-अ) वि—भ्रममें पतित, हक्काबक्का ।
 विजाळि स—भ्रम ।
 विजानक, विजाना वि—अनमना, उदास ।
 विजा स—वीमा ।
 विजाज स्त्री—सौतली माँ ।
 विजानवांठि स—हवाई जहाजका अड्डा ।
 विजुव वि—प्रतिकूल, खिलाफ ।
 विजुव (-अ) स्त्री—सद्य प्रसूति ।
 विज्रा, विज्रे स—विवाह, शादी ।
 विज्रान, विज्रान स—प्रसव (तिन—) ।
 विज्रान (-नो), विज्राना, विज्राना (क्रि परि ११)
 —प्रसव करना, जनना, व्याना ।
 विज्राक्षि वि, स—वैराक्षि ।
 विज्रु (-अ) वि—वैराग्य-युक्त, अनुराग-रहित;
 नाराज ; परेशान (—करा) । विज्रु स—
 वैराग्य ; परेशानी (—कर) ।
 विज्रु (-अ) वि—निवृत्त । विज्रु स—निवृत्ति ।
 विज्राग स—आसक्ति-हीनता, उदासीनता,
 वैराग्य ।
 विज्राज स—स्थिति, अवस्थान । विज्राजमान
 वि—अवस्थित, शोभमान, मौजूद । विज्राजित
 (-अ) वि—अवस्थित ।
 विज्रानकरे वि, स—घानने, ६२ ।
 विज्राणि, (-ई) वि, स—बयासी, ८२ ।
 विज्रा वि—कुरूप ; असन्तुष्ट । [मील ।
 विज स—गर्भ गढ़ा, गुफा ; जलमय स्थान,
 विजक वि—पृथक् ; अनोखा । क्रि वि—अच्छी
 तरह । अ—आश्चर्य !
 विजाळ, विजळ स—विलायत । विजाळी,
 विजिठी वि—विलायती ।
 विजान (-नो), विजाना, विजाना (क्रि परि ११)
 —वांटना, वितरण करना । [वस्तु ।
 विजि स—वितरण, वांटना, पट्ट पर देना, बंटो-

विजोश्मान वि—लय होने वाला ।
 विजगन, विजग स—पोतना ; लेप ।
 विजोदन स—दर्शन, अवलोकन ।
 विजोदन स—हिलाव, मथन ।
 विजोम वि—विपरीत, उलटा ।
 विजोम वि—चंचल, अस्तव्यस्त, लालचभरा ।
 विज (विजु -अ) स—झीकन बेल ।
 विज स, वि—वीस, २० ।
 विजक (-अ) वि—बहुत सुखा ।
 विजि (विजि) वि—कृत्रिम भद्दा, बदसूरत ;
 अप्रिय (—रुखा) ।
 विज (विजरा -अ) स—संसार, ब्रह्माण्ड ।
 वि—समस्त, तत्मास । —जनौन वि—समस्त
 संसार या मनुष्य सम्बन्धी । —निष्क,
 —निष्क वि—सभीकी निंदा करनेवाला ।
 —विजुठ (-अ) वि—जगत्-प्रसिद्ध ।
 विजगनौव (-अ) वि—विजग ।
 विजग, विजग स—विश्वास ; पुतबार ।
 —जावन स—विश्वासका पात्र । —रुखा
 वि—वेईमान । विजाण (-अ) वि—विश्वास-
 योग्य । [आराम ।
 विजाग, विजाळि (विजान्ति) स—विभ्राम,
 विज स—विष, जहर । —रुखा (-अ) स—
 विपका घड़ा ; ईर्ष्या । विज (-अ) वि—
 विष-नाशक । —रुखा, —नोठ स—जहरीला
 दाँत । —रुखा (-अ) वि—जहरीला । —रुखा
 स—जहरीला फोड़ा ।
 विज वि—पात्र भीषण, बहुत कठिन, उत्कट ;
 असमान, बेजोड़ ; श्वासनालीमें खाद्य-
 वस्तुके घुस जानेसे हिचकी (-नागा, -खाँड) ।
 विज स—विषय, वस्तु, जायदाद । विजक वि—
 सम्बन्धी, विषयका । विजो वि—गृहस्थोंमें
 आसक्त, दुनियादार । स—जाननेवाला,
 ज्ञाता, आत्मा ।

विशान (-नो), विशाना, विशाना (क्रि परि ११)
 विषयुक्त होना ; बहुत दर्द करना (कोड़ा विशिश
 ठा) ।
 विश्व सं—जिस समय दिन और रात का मान
 बराबर होता है । —गच्छि सं—चैत्र-
 संक्रान्ति ।
 विष्ठा सं—छ मल ।
 विश्वास सं—गठभेद, अभिन अन्तमेल, मन-
 मुटाव, विरोध । [विरुद्ध ।
 विमर्श (-अ) वि—भिन्न प्रकार का, उलटा,
 विमर्श सं—खुदाका नाम ग्रहण ; (व्यगर्मे)
 श्रीगणेश, कार्यारंभ (विमर्शित गणप) ।
 विमर्ग (-अ) सं—त्याग, मलत्याग, विसर्ग, (:)
 यह चिह्न । [रोग ।
 विमर्ग (-अ)—शरीरके चमड़ेमें तीव्र जलनका
 विश्रुति सं—हैजा, कालरा । [हुआ, व्यास ।
 विश्रुत (बिस्त्रुत-अ) वि—विस्तृत, फैला
 विश्रुत (-अ) वि—छोड़ा हुआ, फेंका हुआ ।
 विश्रुत (विस्तर) वि—अनेक, प्रचुर ।
 विश्रुत (बिस्फारित-अ) वि—फैला हुआ,
 खुला हुआ (—नख) ।
 विश्रुत, विश्रुत सं—विश्रुत ।
 विश्रुत वि—शीघ्र जलने या भभकने वाला ।
 विश्रुत सं—धड़के के साथ फटना या जल
 उठना ।
 विश्रुत (विश्रुत) सं—आश्चर्य । —कर,
 विश्रुत (-अ) वि—आश्चर्यजनक । —छि
 (अ) सं—आश्चर्यका (! यह) चिह्न ।
 विश्रुत, विश्रुत (-अ) वि—
 विस्मित, आश्चर्य-चकित ।
 विश्रुत (बिस्त्रुत -अ) वि—पतित, गिरा हुआ ।
 विश्रुत (बिस्त्रुत) वि—स्वादहीन, बेमजा ।
 विश्रुत, विश्रुत, विश्रुत सं—पक्षी, चिड़िया ।
 श्री—विश्री, विश्री, विश्रिनी, विश्रिनी ।

विश्रुत क्रि वि—विना, सिवाय ।
 विश्रुत सं—विहार, भ्रमण ।
 विश्रुत सं—प्रभात, सवेरा ।
 विश्रुत (बिस्त्रुत) वि—व्याकुल, घबड़ाया हुआ ।
 शीति सं—तरंग, लहर । —अ (-अ) सं—
 लहरका टूटना ।
 शीति सं—विधि, शीति बिधा, बीज, जीवाणु
 (शीति—, शीति—) ; मूल, कारण । —अ
 (-अ) सं—अपने हृष्ट देवका प्रतीक-स्वरूप
 मंत्र ।
 शीति सं—वाहन पंखा झलना, हवा करना ।
 शीति सं—एक साग ; चीनी ।
 शीति (-अ) वि—गत, गुजरा हुआ । —का
 वि—कामना-रहित । —नि (-अ) वि—
 निद्राहीन । —वाग वि—आसक्तिसे मुक्त ।
 —अ (-अ) वि—जिसकी श्रद्धा नष्ट हो
 गयी है ।
 शीति, शीति, शीति सं—श्रेणी, पांति, वृक्ष-
 छायायुक्त मार्ग ; दूकान ।
 शीति सं—वीणा ।
 शीति सं—ऊदबिलाव ।
 शीति (-अ) वि—धृणा-योग्य, बदसूरत ।
 शीति-अ वि—वीर पुत्र जननेवाली ।
 शीति सं—तंत्रोक्त एक साधन । शीति
 सं—वैसा साधन करनेवाला ।
 शीति सं—वक्ष छाती, सीना, हृदय । —गा
 क्रि—दुख सहनेके लिए तैयार होना ।
 —वाग क्रि—विपत्तिमें मन दृढ़ करना ।
 शीति सं—बुकनी, चूण, छुटकुला ।
 शीति सं—छोटी गठरी, पोटली ।
 शीति वि—पाखंडी । शीति सं—पाखंड ।
 शीति, शीति, शीति (क्रि परि ६)—
 मूँदना, भर जाना (गर्द—) । वि—मूँदा
 हुआ, भरा हुआ ।

वृक्षान (-नो), वृक्षानो वृक्षानो, वृक्षानो (क्रि परि १३)—भरना । वि—भरा हुआ ।
वृक्ष स—बोव, समझ, वृक्ष, दाढ़स
(—माने ना) ।

वृक्ष, वृक्ष (क्रि परि ६)—समझना,
जानना, विचारना । —पड़ा, (वृक्ष पड़ा)
सं—वातचीतके द्वारा निवटेरा ।

वृक्षान (-नो), वृक्षानो, वृक्षानो, वृक्षानो
(क्रि परि १३)—समझाना, जताना, व्याख्या
करना, दाढ़स देना ।

वृक्षि क्रि—मुझे ऐसा लगता है, ऐसा अनुमान
होता है, शायद (वृक्षि—बाग वृक्ष ? वृक्षि
वा) ; है क्या ? (वृक्षि वृक्षि ?) ।

वृक्षि सं—छाना चना ; वृक्षि जूता ।

वृक्षि सं—वृक्षि (—नाव) ।

वृक्ष, वृक्ष वि, सं—वृक्ष, वृक्ष ; उमरदार ;
वृक्ष (—आड़न—अगूठा) । स्त्री—वृक्ष ।
वृक्षानि, वृक्षानो, वृक्षानि (-नो), वृक्षानो
सं—वृक्षाना वृक्षान ।

वृक्षान (-नो), वृक्षानो, वृक्षानो (क्रि परि
१३)—वृक्ष होना ; वृक्षाना हुआ ।

वृक्षि सं—५ गंठा ।

वृक्ष वि—नगेमें चूर । सं—वृक्ष विंदु ।

वृक्षि सं—वृक्षि, ज्ञान समझ, अक्ष ।
—वृक्षानो क्रि—दिमाग लड़ाना —गमा
(-अ) वि—वृक्षि द्वारा जानने योग्य ।
—वृक्षि वि—वृक्षिके द्वारा जीविका चलाने
या काम निकालने वाला । —वृक्ष (-अ)
सं—वृक्षिका लोप । —वृक्ष सं—वृक्षिमानी,
होशियारी ।

वृक्ष सं—वृक्षि, वृक्षि वृक्षि ।

वृक्ष सं—वृक्षान ।

वृक्ष, वृक्ष (क्रि परि ६)—वृक्ष वृक्ष वृक्ष ;
वृक्ष वृक्ष वृक्ष ।

वृक्ष, वृक्षानि, वृक्षानि सं—वृक्षानि ; वृक्षानि ।

वृक्षानि वि—वृक्ष जगली । सं—जगली जाति ।

वृक्ष सं—वृक्षानेकी इच्छा, भूख । वृक्षि
(-अ) वि—भूखा । वृक्षि वि—वृक्षानेकी
इच्छा, भूखा ।

वृक्ष सं—वृक्ष ।

वृक्ष सं—अंगूठेकी चौड़ाई, लगभग एक इंच ।

वृक्ष सं—वृक्षी, वृक्ष, बालोंकी कलम ।

वृक्ष सं—वृक्षि वृक्षि चिड़िया ।

वृक्षान (-नो), वृक्षानो, वृक्षानो, वृक्षानो
(क्रि परि १३)—हलके हाथसे फेरना (वृक्षान
शत —, वृक्षि—) ।

वृक्षि सं—वृक्षी, वाक्य, भाषा ।

वृक्ष सं—वृक्षाने वाच भेड़िया ।

वृक्ष (वृक्ष-अ) सं—गोष्ट, उष्ट्र पेड़,
दरख्त । —वृक्ष, वृक्ष सं—पेड़की
छाया । —वृक्ष सं—वृक्षान-वृक्षि बागवाला
मकान । वृक्ष (-अ) सं—पेड़की
चोटी ।

वृक्ष (-अ) वि—वृक्ष किया हुआ ; आदरके
साथ गृहीत । वृक्षि सं—वृक्ष ; घेरा ।

वृक्ष (-अ) सं—गोला, मंडल ; चरित्र (वृक्ष) ।

वृक्ष (-अ) वि—वृक्ष, उमरमें बड़ा (वृक्ष—,
वृक्ष—) । सं—वृक्ष आदमी । स्त्री—
वृक्ष । —वृक्षान सं—दादाका दादा ।
—वृक्षान सं—दादाकी दादी । —
वृक्षान सं—नानाका दादा । —वृक्षान
सं—नानाकी दादी ।

वृक्षानि सं—वृक्षान आड़न अंगूठा ।

वृक्षि सं—वृक्षि बढ़ती, उन्नति (वृक्षि—, उन्नति,
तरकी) ; व्याज, सुद । —वृक्ष (-अ) सं—
यज्ञोपवीत विवाह आदि शुभ कार्यके पहले
पितरोंके अभ्युदयके लिए किया जाने वाला
भ्रातृ ।

बुल (-अ) स—बोटा डंठल (पूष्पत्र—, —छाउ), लनाथ स्तनकी देपुनी ।

बुलिक स—विश विच्छू, एक राशि ।

बुल (-अ) स—साँड़, बैल, बर्धा, एक राशि ।

—बुल (-अ) वि—साँड़की तरह कधावाला ।

बुल स—बुलकोष फोता ।

बुलार्थ (-अ) स—एक प्रकारका श्राद्ध जिसमें चार साँड़ उत्सर्ग करके छोड़ दिये जाते हैं ।

बुलू स—भटा सा एक बहुत छोटा फल ।

बे स—विधे विवाह, शादी । [उपसर्ग ।

बे उप—अभाव विरोध निन्दा आदि सूचक

बेसाईनी वि—गैरकानूनी ।

बेसाकन वि—बुद्धिहीन, मूर्ख ।

बेसादव, बेसादव वि—अनिष्ट, अभद्र ।

बेईमान वि—विशान्नाटक बेईमान ।

बेउम स्त्री—बेवा, विधवा ।

बेउमविम वि—लाचारिस ।

बेकूफ, बेकूव वि—बेवकूफ, मूर्ख ।

बेथाप स—मेल न होना, पटरी न बैठना ।

बेथाप्रा वि—बेढब ।

बेगलिक वि—निरुपाय लाचार । स—लाचारी ।

बेगत्र क्रि वि—बिना, बगैर ।

बेगात्र स—बेगार (—थाँठा, —ठना) ।

बेगन स—भंटा, बैंगन ।

बेगनी, बेगनी, बेगनी वि—बैजनी । स—बैसन

मिलाकर भुना हुआ बैंगनका लंबा टुकड़ा ।

बेगोह वि—अगोशालो विशुद्धल, अस्तव्यस्त ।

बेड (बैड) स—बाग मँढक । बेडाँठि स—बेडेर

शाना मँढकका दुमदार बच्चा ।

बेज्या-बेज्यो स—विश्व-विश्व कहानीका मर पक्षी और मादा चिड़िया ।

बेज (बैज) (क्रि परि १)—बेचना । —बेना

स—खरीद-फरोख्त ।

बेज्या वि—बेचारा ; गरीब, भोलाभाला ।

बेजान वि—चरित्र-हीन, अष्ट । स—निंदित आचरण ।

बेज्या स—जारज, दोगला ।

बेज्या वि—अत्यंत, बहुत अधिक, अनुचित ।

बेज्या (बैजार) वि—नाराज, परेशान ।

बेकि, बेकि स—बेडेल नेवला ।

बेक, बेकि स—बेच, लबी चौकी ।

बेठा (बैठा), ब्याठा स—बेठा, पुत्र ; (तुच्छार्थक)

सम्बोधन (उत्र—) । स्त्री—बेटी । —बेन

स—लड़का, पुत्र, पुरुष, मर्द ।

बेठे वि—नाटा, बौना ।

बेठिक वि—भूल, गलत ।

बेड़ स—घेरा, परिधि ।

बेड़ा (बैड़ा) स—टटर, टट्टी (बाणत्र—, —देउशा) । वि—घेरनेवाला (—जान) ।

बेड़ा (क्रि परि १)—घेरना ।

बेड़ान (बैड़ानो), बेड़ानो (क्रि परि १०)—

टहलना, घूमना, चहल-कदमी करना ।

बेड़ान स—बिड़ान बिल्ली ।

बेड़ि स—बेड़ी, बटलोई पकड़नेका एक लोहे का औजार ।

बेड़े वि—उमदा, बढ़िया, अच्छा ।

बेड़े वि—बेड़-काठा दुम-कटा ।

बेड़ण वि—बेढब, बेडौल ।

बेठ स—बैत ।

बेठन स—शाशना धेतन, तनखा । —बुक्,

—बोशी वि—धेतन पर काम करनेवाला ।

बेठन (-अ) वि—बतरह, बहुत अधिक ; दूसरे प्रकारका ।

बेठनविब वि—अशिक्षित, गँवार ।

बेठम स—बैतकी लता ।

बेठन वि—स्वादहीन ; बिना तारका, बेतार ।

बेठन स—प्रेत, भूत ; स गीतमें तालका

। अक्षिपत्रि सं—शोधकी एक वामारा, वरावरा।

बेल सं—बेला बेला फूल ; बेल फल ।

बेलन, बेलना, बेलून सं—बेलना ।

बेला (बेला) सं—बेला, समय, दिनका समय
(—शांश, —गड़ा, दिन ढलना) ; देर,
विलंब (—करे घूम जायन) ; मौका, अवसर ;
विषयमें (निष्पन्न—) । —बेलि कि वि—दिन
रहते । [फूल ।

बेला सं—समुद्रकी रेतीली भूमि, बेला

बेला (बेला) (कि परि ?)—बेलना ।

बेलून सं—गुबारा ।

बेल वि—बलुआ, बालूभरा (—शांति,
—पाथर) । —बाह सं—एक छोटी मछली ।

बेलेला वि—बेहया, लपट, मतवाला ।

बेलेला सं—फोड़े आदि पर पल्लुतर ।

बेलेशात्री वि—काँचका बना (—छुड़ि) ।

बेलिक वि—बेहया, दुष्ट, लपट ।

बेल सं—मञ्जा वेश, पोशाक, आभूषण । बेली
वि—वेशधारी भेष पहना हुआ ।

बेल वि—जान अच्छा, अधिक, खूब (—करे
कान बना) । सं—अधिकता (कम—, —कम) ।

बेलन सं = बेलन ।

बेलर, बेलर सं—बेसर, नथ ।

बेलि सं—अधिकता । बेली वि—अधिक ।

बेल (बेलम -अ) सं—मकान, गृह ।

बेलन सं—बेरा घेरा, प्रदक्षिण । बेलित (-अ)
वि—घिरा हुआ । बेलनी स—जिससे घेरा
जाय ।

बेलन (बेलन), बेलन सं—बेलन, दाल-घूर्ण ।

बेलन = बेलन ।

बेलनकारी वि—गैरसरकारी ।

बेलात (बेशात) सं—बचनेकी चीजें । बेलाति
सं—बिक्री, बेचना । बेलाती सं—पनसारी,
दुकानदार, बिसाती ।

बेलागल वि—जिसको समहालना कठिन है ।

बेशरा, बेशर (-अ), बेशरा वि—जिसका छर
ठीक नहीं है, बेसरा ।

बेश (-अ) वि—सीमासे अधिक, बेहद ।

बेशई = बेशाई । बेशन = बेशान ।

बेशात वि—दूसरेके हाथमें गया हुआ ।

बेशात वि—बेहया ।

बेशर सं—बिहार प्रदेश ।

बेशरा = बेशरा ।

बेशला सं—बेहला, एक बाजा ।

बेशिाव सं—हिसाबका न होना । वि—
बहुत अधिक । बेशिावी वि—हिसाब-रहित
(—लोक, —श्रवण) ।

बेश, बेशा वि—बेहोश ।

बे (बड़) सं—पुस्तक । कि वि—सिवाय ।

बे कि कि वि—अवश्य । [वाला, संदिग्ध ।

बेकलिक (बड़-) वि—किसी एक पक्षमें होने

बेकाल सं—बेकाल तीसरा पहर । बेकालिक,

बेकालीन वि—तीसरे पहरका (—आश्रय) ।

बेकाली सं—देवताको तीसरे पहर दिया
जाने वाला खाद्य ।

बेकलिक (-अ) सं—विचित्रता ।

बेकल सं—सभा, मजलिस ; हुका बठानेका
आधार, बैठकी । —थाना सं—बठका ।

बेकली वि—मजलिसके योग्य (—गान) ।

बेकल सं—डाँढ़ ।

[करनेवाला ।

बेकलिक वि—बेकलिकारी बेतन लेकर काम

बेकलिकी सं—पुराणोक्त एक नदी जो यमके द्वार
पर मानी जाती है ।

बेकलिक वि—वेदान्त सम्बन्धी, वेदान्तका
ज्ञाता, अद्वैतवादी । सं—अद्वैतवादी व्यक्ति ।

बेकलिक वि—विदेश सम्बन्धी, परदेशी ।

बेक (-अ) सं—कविब्राह्म बौद्ध, चिकित्सक ;
ब्राह्मणोंसे नीचेकी एक जाति । [सम्बन्धी ।

बेकल, बेकलिक वि—ठाड़ित बिजली-

वैश्व (-अ) वि—उचित, ठीक ।

वैश्व (-अ) स—विघवापन । [विषमता ।

वैश्व (-अ) स—भिन्न धमका भाव,

वैश्व (-अ) स—विपरीत भाव, विरुद्धता ।

वैश्व (-अ), वैश्व (-अ) वि—एक माताके

गर्भसे दूसरे पिताके द्वारा उत्पन्न (—जाता) ।

वैश्विक वि—विवाह-सम्बन्धी । स—समन्वी ।

स्त्री—वैश्विका ।

वैश्व स—धन-सम्पत्ति, दौलत, विभूति ।

वैश्व (-अ) स—ग्रवराहट, वेत्तवरी ।

वैश्व (-अ), वैश्व (-अ) वि—सौतेली

मातासे उत्पन्न (—जाता, —उग्री) ।

वैश्विक वि—हवाई जहाज सम्बन्धी । स—

हवाई जहाजी ।

वैश्व (-अ) स—वैर, शत्रुता । —निर्वाण स—

—अस्त्रोपकरण वगैरे । वैश्व स—शत्रु ।

वैश्विक वि—जिसके मनमें वराग्य उत्पन्न हुआ

है । स—वैष्णवोंका एक भिक्षुक सम्प्रदाय ।

वैश्विक (-अ) स—भिन्नता, विलक्षणता ।

वैश्व स—वैश्व वैशाख मास । वैश्विक वि—

वैशाख मासका (काल— स—चंद्र वैशाखके

तीसरे पहर वायु-कोणसे आनेवाला तूफान) ।

वैश्विक (-अ) स—विशेषत्व, विलक्षणता ।

वैश्व (-अ) स—भिन्नता, विषमता ।

वैश्विक वि—विषय-सम्बन्धी, दुनियादार ।

वैश्विक (-अ) स—अनमेल, भिन्नता ।

वैश्विक वि—तैज दौड़ या घूमनेका वेग सूचक (—दंष्ट्र (लोड़ाने)) ।

वैश्विक वि—व वक्रफ, मूख । वैश्विक स—

व वक्रफ; नादानता । —गोष्ठि स—बड़ा

घर ।

वैश्विक, (वै-) स—गहरी, पोखरी ।

वैश्विक वि—नक-बंठा, नक-फट्टा ।

वैश्व, (वै-) = दूध ।

वैश्व स—छात्र बोझ । वैश्विक स—भार

लादना । वि—भार लादा हुआ ।

वैश्व, वैश्विक = दूध, दूधिक ।

वैश्व स—नाव, नौका boat.

वैश्विक वि—बकरेका-सा (—गर्भ) । [टंफुनी ।

वैश्विक स—उठल (कलत्र—, फूल—, पाठा—) ;

वैश्विक स—बड़े नाव ऐनेका छोटा डौड़ ।

वैश्विक स्त्री—दृष्टादृष्टा, बडेन्द्रि भाभी,

भौजाई ।

वैश्व स—एक साँप ।

वैश्विक स—शतरंजकी गोटी ।

वैश्विक स—बोतल, बड़ी शीशी ।

वैश्विक स—बटन, कमीज आदिकी गोल धुंडी ।

वैश्विक वि—स्वादहीन, फीका ।

वैश्विक स—बूँदिया, एक मिठाई ।

वैश्विक वि—ज्ञाता, जाननेवाला ।

वैश्विक स—बोध, समझ, ज्ञान, बुद्धि, अनुभव,

(—कल, —शब्द) ; अनुमान, ठाढ़स,

जागरण । वैश्विक वि, स—जताने वाला,

जगाने वाला । वैश्विक स—चेताना, जताना,

जगाना ; दुर्गा-पूजाके पूव आश्विन शुक्ला

पष्ठीके दिन देवमूर्तियोंके जगानेका

अनुष्ठान । वैश्विक (-अ) वि—बोध-प्राप्त ;

जगाया हुआ । वैश्विक (-अ) वि—जानने

योग्य ।

वैश्विक स्त्री—जगनी बहन । —वि स्त्री—बहनकी

लड़की । —श्री स—बहनका लड़का

(वैश्विक या वैश्विक केवल स्त्रियोंके साथ

सम्बन्ध बतलाता है । पुरुषोंके लिए उनके

स्थानमें—जगनी या जगने कहा जाता है) ।

वैश्विक = बुना ।

वैश्विक स—जगनीपति बहनोई ।

वैश्विक = बनिबाद ।

वैश्विक वि—दूध गुंगा ।

बोश सं—बम, गाड़ीका वह लंबा बाँस जिसके साथ जूआ लगा रहता है ।

बोशा सं—विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहेका गोला, बम ; बोरेमेंसे चावल आदिकी बानगी निकालनेके लिए एक नुकीली कलछुल ।

बोशाई सं—बंबई ; एक आम । वि—बंबईका (—छात्र) ।

बोशेटे सं—जलदस्त्यु, दरियाई डाकू ।

बोशाल सं—एक बड़ी मछली ।

बोशका, (—था) सं—धुरका ।

बोशा सं—छटेर थल, छाना बोरा ।

बोरो सं—एक घान ।

बोन सं—बुनि बोली, बडेल बौर ।

बोनता सं—बरै ।

बोनान=बूनान ।

बोशेथ=बैशाथ ।

बो (बड) स्त्री—बहू, दुलहिन, पत्नी ।

—ठाकण=बोठान । —तात=बडतात ।

बोशन सं—पंखा झलना । बोशनी सं—पंखा ।

बोशन सं—सरकारी आदि भोजनोपकरण ; प्रकाशन ; व्यंजन । [धवराया हुआ, परेशान ।

बोशिव्यु (—अ) वि—काममें फंसा हुआ ;

बोशिवेक सं—अभाव, राहित्य (बम बोशिवेक) ।

बोशित (—अ) कि वि—बिना, सिवाय ।

बोशस सं—विपरीत भाव, लंघन, खिलाफी (कथार—) ।

बोश सं—वेदना दद, कष्ट । बोशित (—अ) वि—दुःखित, कुंशित । बोशो वि—हमदद (बोशार—) । [(काश—बाणदेश) ।

बाणदेश सं—छूता, अहिना बहाना ; सिलसिला

बावकन सं—वियोग, घटाव ।

बावगा, बावगात्र सं—व्यापार, रोजगार, पेशा, उद्यम । बावगाश्री, बावगादात्र सं—व्यापार करनेवाला, रोजगारी, पेशेवर ।

बावर्डा सं—व्यवहार करनेवाला, विचारक, हाकिम ।

बावशात्र सं—आचरण, बर्ताव, कानून (—शास्त्र) ।

बावशात्रवीर, (—वीर) सं—बाईन बावगाश्री, उकीन वकील । बावशार्थ, बावशर्वा (—अ)

वि—व्यवहारके योग्य ।

बावशित (—अ) वि—ओटवाला, ढका हुआ ।

बाव सं—व्यय, खच, क्षय । [अलग व्यक्ति ।

बाटि सं—पृथक्त्व, एक एक वस्तु ; अलग

बासन सं—विषयमें अधिक आसक्ति, नशा ; विपत्ति । बासनी वि—किसी प्रकारके व्यासनमें आसक्त ।

बास (—अ) वि—काममें लगा या फंसा हुआ, धवराया हुआ । —बाशीन वि—जलद्वाज ।

—गमसु (—अ) वि—चंचल, जलद्वाज, उतावला ।

बां, बाड, बेड, सं—ढेक मेंढक । [विवरण ।

बाथा, बाथान सं—अथ प्रकाश, व्याख्या,

बाग सं—चमड़ आदिका थैला जिसे आसानीसे खोला और बंद किया जा सकता है, बैग ।

बाथात सं—बाधा, प्रतिबध । [बधनहाँ ।

बाथ (—अ) सं—बाघ, शेर । —नथ सं—

बाड=बां । बाडाठि=बेडाठि ।

बागमा-बागमौ=बेशमा-बेशमौ ।

बाज सं—छल, कपट, विलंब ; सूद ; बिछ्छा badge.—छति सं—कपट प्रशंसा ।

बाजार=बेजार ।

बाटि सं—गद खेलनेका वल्ल bat

बाटो=बेटो ।

बांउ सं—ब ड बाजा band

बाण्डु सं—घाव आदि पर बांधनेकी पट्टी ।

बादड़ा = बेशड़ा ।

बादान सं—फलाव (भूथ—करा) ।

बाध सं—बहेलिया ।

वागार्थी सं = वागार्थीशास्त्र ।

वागधन सं — फैलाव, विस्तार । वागधक वि — व्यापनेवाला, सर्वत्र फैला हुआ ।

वागधा (क्रि परि ३) — व्यापना, सर्वत्र फैलना ।

वागधा सं — बटना, दाँड वारदात, समारोह, विषय, कार्य, रोजगार । वागधात्री वि, सं — रोजगारी ।

वागधि वि — व्यापनेवाला, सर्वत्र फैला हुआ (दान —, दान —, दक्ष —) । [(दाँधी —) ।

वागधु (-अ) वि — नियुक्त, लगा हुआ

वागधु (-अ) वि — सबत्र फैला हुआ, पूर्ण ।

वागधि सं — व्याप्त होनेका भाव ; (दर्शनमें) एक पदार्थमें दूसरे पदार्थका पूर्ण रूपसे फैला हुआ होना ।

वागदर्शन सं — लौट आना, वापसी । वागवर्तित (-अ) वि — लौटाया हुआ । वागवृत्त (-अ)

वि — लौट आया हुआ, वर्तित । [पेशा ।

वागवर्ण सं — वागवर्ण, वागवर्ण कारोवार रोजगार,

वागवर्णिक (वाग-) वि — व्यवहार सम्बन्धी, लौकिक (-नञ्, यह दृश्यमान संसार जो जाग्रत अवस्थामें सत्य रूपसे प्रतीत होता है) ;

क्रियात्मक (-ञाशिठि) ; कानून सम्बन्धी ।

वाग्वे सं — रोग, बीमारी ।

वाग्वे सं — वसरत ।

वाग्वे सं = वाग्वे ।

वाग्वे सं — वारिस्टर ।

वाग्वे सं — साँप ; हिंसक पशु ।

वाग्वे (-अ) वि — अत्यंत आसक्त ।

वाग्वे (-अ) वि — बाधा प्राप्त, रोका हुआ ।

वाग्वे (-अ) वि — कथित उक्त, उच्चारित ।

वाग्वे सं — उलटा क्रम, अनियम ।

वाग्वे सं — ज्ञान, अनुभव, पांडित्य ; (व्याकरणमें) शब्दके धातु आठिका विभाग ।

वाग्वे (-अ) वि — ज्ञानी, पंडित, अनुभवी ।

वाग्वेक वि — जताने या समझाने वाला ।

वाग्वे (-अ) सं — युद्धमें सेनाको सजानेका तरीका । [हवाई जहाज ।

वाग्वे सं — आकाश । — वाग्वे सं — विमान

वाग्वे (-अ) सं — फोड़ा, फुंसी ।

वाग्वे, (-ठि) सं — लता, वेल ।

वाग्वे (ब्रम्ह-अ) सं — निगुण परमात्मा,

संसारका मूल कारण व्यापक चेतन

सत्ता (-अ, -ज्ञान -वाग्वे) ; सगुण

ईश्वर (-ज्ञा) । — वाग्वे वि, सं —

अपने आत्मा रूपसे ब्रह्मको जाननेवाला ;

ब्राह्म समाजके अनुयायी व्यक्ति । — वाग्वे

सं — वाग्वे ठाँहि खोपड़ी । — वाग्वे (-अ),

— वाग्वे सं — ब्राह्मण जो मर कर प्रेत हुआ

हो । — वाग्वे (-अ) सं — ब्रह्मपुत्र नदी । — वाग्वे

वि, सं — अद्वैतवादी, वेदान्ती । — वाग्वे (-अ)

सं — तालु का छिद्र । — वाग्वे सं — ब्राह्मणका

दिया हुआ सराप । — वाग्वे (-अ) सं —

जनेऊ ; वेदान्त-सूत्र । — वाग्वे (-अ) सं —

ब्राह्मणकी संपत्ति । — वाग्वे वि — ब्राह्मणका

हत्यारा ।

वाग्वे (-अ) सं — वरमा देश । [जमीन ।

वाग्वे, वाग्वे (-अ) सं — ब्राह्मणको दी हुई

वाग्वे सं — विलायती शराब ।

वाग्वे (-अ) वि — ब्रह्म सम्बन्धी, आर्य समाज

की तरह बंगालका एक धर्मसंप्रदाय सम्बन्धी

(-धर्म, -गर्मा) । सं — ब्राह्म धर्मका

अनुयायी व्यक्ति । वाग्वे स्त्री — ब्राह्म

समाजकी महिला ।

वाग्वे सं — लज्जा, शर्म । [लकीर bracket

वाग्वे सं — दीवालमें लगी अंकुसी, घेर

झाँके सं — सोखता blotting paper.

वाग्वे सं — जनानी कुर्ती blouse.

७

७ सं—नक्षत्र, तारा, ग्रह ; भ्रम ; भूल ।

७क स—एकाएक आग गंध आदिके निकलने का भाव, भक्त ।

७क वि, स—भगत । ७कति सं—भक्ति ।

७क (-अ) वि, स—भक्त, सेवक, अनुयायी, भात । —विष्णु वि—बगुला भगत । [बहनोई ।

७गिनी, ७ग्री स्त्री—बहन । —गति सं—

७ग (-अ) वि—टूटा हुआ, खंडित, गिरा हुआ (—खूँ), नष्ट (७ग्रांशः) ; हारा हुआ ।

—दूत सं—हारनेकी खबर लानेवाला दूत ।

—श्राव वि—टूटनेवाला, जिसका नाश होना

ही चाहता है । ७ग्रांश (-अ) सं—भित्त,

खंडित अंश । ७ग्रांश सं—खंडहर ।

७ग्री=७गिनी ।

७ज (-अ) सं—७ठा टूटना, टेंढ़ापन (जि—),

नाश, (श्राव—) ; हारकर भागना (ग्रा—

लंघन) ; लंघन, तोड़ना (श्रित्ति—) ; अंत,

समाप्ति (गडा—) ; ७जौ त्योंरी (ज—) ।

—कूजीन सं—जिस कुलीनका विवाह-

सम्बन्ध बंधन या श्राद्धिके घरमें हुआ है ।

—श्राव वि—टूटनेका भगुर, भुरभुरा ।

७जौ, ७जि सं—अंग हिलानेका ढंग, ढग

(बगिवात्र—, बगिवात्र—) ।

७जिया = ७जौ ।

७ज्ज वि—टूटनेका भगुर, भुरभुरा । [उलझन ।

७ज्ज (भज-अ कट-अ) सं—बड़ाटे भक्त,

७जन सं—भजन, कीर्तन, पूजा ।

७जन, ७ज सं—बुरी सलाह, भांजी ।

७जा (क्रि परि १)—भजना, उपासना करना ।

७जान (-नो), ७जाना (क्रि परि १०)—

उपासना कराना, सलाह दे कर राजी करना,

प्रमाणित करना, सही साबित करना ।

७क्षक वि—तोड़ने रोकने या भांजी मारने वाला ।

७क्षन सं—तोड़ना, रोकना, नाश ।

७छेछे सं—बुलबुले आदिके फटनेका शब्द ।

७छोछा, ७छोछा सं—ब्राह्मणोंकी एक उपाधि ।

७छ सं—बड़ी नाव, कायस्थोंकी एक उपाधि ।

७छ सं—ढोंग, वाहरी आडवर । [भटकना ।

७छकान (-नो), ७छकाना (क्रि परि १६)—

७छेछे सं—टुका पीनेका शब्द ।

७निता सं—कविके द्वारा कवितामें अपने नामका उल्लेख, कथा वातचीत या व्याख्यानका आडवर-पूर्ण आरंभ । [—पाखंड ।

७ण (-अ) सं, वि—कपट, पाखंडी । ७ण सं

७ण वि—गण विफल, नष्ट, व्यर्थ । [सूचक नाम ।

७ण (-अ) सं—बौद्ध सन्यासियोंका सम्मान

७ण (-अ) वि—सभ्य, सज्जन (—लोक, भद्रपुरुष), शिष्ट (—व्यवहार) । स—

कल्याण । ७ण सं—वसत-वाजे रहनेका

निजी मकान । ७ण वि—भद्र पुरुषकेयोग्य ।

७ण सं—भनभनाहट ।

७ण (क्रि परि १)—कहना, बोलना, अपने नामका कवितामें उल्लेख करना ।

७ण सं—नक्षत्र-मंडल, राशिचक्र ।

७व (-अ) स—जन्म, उत्पत्ति, पैदाइश ; सत्ता,

स्थिति, ससार, दुनिया, शिव । —वृत्त वि—

आवारा, भटकनेवाला । —वृत्त वि, सं—

ससार-बंधनसे उबारनेवाला, ईश्वर । —ग्रा

स—ससार-बंधनसे मुक्ति । —वृत्त सं—

संसार-बंधन, बार बार इस ससारमें जन्म

ग्रहण । —जीवा सं—जीवन-काल, जिंदगी

(—ग्रावण या ग्राव कर, मर जाना) ।

७व (-अ) वि—आपके समान ।

७व सं—ससार-समुद्र । [होनेवाला ।

७व (-अ) सं—होनहार । वि—अवश्य

छवी स—जिसने हठ किया है ।

छवा (-अ) वि—शांत, शिष्ट, साधु, होनहार ।

छवायू (-अ) वि—भद्र-सा, भद्र, शिष्ट ।

छवा, छवा वि—भैससे उत्पन्न ।

छवातुर, छवाई (-अ) वि—ढरा हुआ, ढरपोक ।

छवान वि—ढरावना, विकट ।

छव स—भार, दवाव, टेक, आश्रय, अधिकार ; आवेरा । वि—समस्त, पूरा, परिमित ।

छवठि वि—भरा हुआ, पूर्ण, भरती ।

छवन स—घटिया कसकूट ।

छवना स—भार, दवाव, आश्रय ।

छवछव स—गंधका फैलना । (प्यारमें)

छवछव । छवछव, छवछव वि—महकीला ।

छव स—जड़ सन्मान, इज्जत ।

छवना स—भरोसा, विश्वास ।

छवा स—सालसे लड़ी हुई नाव ।

छवा (क्रि परि १)—भरना ; भर जाना । वि—भरा हुआ, पूर्ण । —छाँव स—भरी हुई नदी ।

—छोवन स—भरी जवानी ।

छवाठि वि—पूर्ण, भरती ।

छवान (-नो), छवाना (क्रि परि १०)—भराना ।

छवाठि वि—पूर्ण ।

छव स—छाना भरी ।

छवठ (-अ) वि—पोसा हुआ ; भरा हुआ ।

छवन स—छाँवा भूजना । छवठ (-अ) वि—भूना हुआ ।

छवनना, छवन स—घमकी, डाँट, फटकार ।

छवठ (-अ) वि—घमकाया हुआ ।

छव (-अ) स—भाला, वरछा ।

छव, छव स—भाल, रीछ ।

छव, छव वि—पानपानी-सा, फीका ।

छव स—शत्रु धोँकनी, भायी, मशक ।

छव (भय-अ) स—शत्रु राख । छव, छव स—जलनेके बाद जो कुछ बचा रहता है ।

छवा, छवाठ (-अ) वि—भस्ममें परिणत ।

छवाठ (-अ) वि—भस्म किया हुआ ।

छा स—आलोक प्रकाश, ज्योति, प्रभा ।

छाँव स—जलान सगा आई, मित्र, वरावर वालोंके लिए सवोधन । —छाँव स्त्री—

भतीजी । —छाँव स—भतीजा । —छाँव स—भैयादूज ।

छाँव स—घरवाली नाव, बजरा ।

छाँव स—भाव, दर, दाम ।

छाँव स—भग, विजया, वृष्टी ।

छाँव स—भाँजी ।

छाँव स—भाँसा, घोखा ।

छाँव वि—जगै हिस्सेदार ।

छाँव स—विभाग, बँटवारा, अंश, हिस्सा ; खंड, स्थान ; गणितका भाग । —छाँव स—भाग देने पर जो बचा रहता है । —छाँव वि, स—अंश ग्रहण करनेवाला । —छाँव स—भाग देनेकी शैली ।

छाँव (क्रि परि ३)—जलान कर भागना । छाँव स—मृत पशु फेकनेका स्थान, मरघट । छाँव (-नो), छाँवाना (क्रि परि १०)—छाँवाना भागना ।

छाँवछाँव स—आपसमें बँटवारा ।

छाँवछाँव (-अ), छाँवना, छाँवने (भागने) स—छाँवा । छाँवछाँव, छाँवनी स्त्री—

भाँजी । छाँवछाँव, छाँवनी स्त्री—भाँजी । छाँव (-अ) स—कण, अपृष्ठ तकदीर, नसीब, किस्मत । —छाँव क्रि वि—भाग्यसे । —छाँव वि—किस्मतवर । —छाँव वि—वदनसीब ।

छाँव, छाँव क्रि वि—भाग्यसे ।

छाँव स—छाँव । छाँवनि स—छाँव भाँजी ; रेजगारी, रेजगी । छाँवनी वि, स्त्री—परिवारके लोगोंमें फट डालनेवाली ।

छाँव, छाँव क्रि वि—भाग्यसे । छाँव स—छाँव । छाँवनि स—छाँव भाँजी ; रेजगारी, रेजगी । छाँवनी वि, स्त्री—परिवारके लोगोंमें फट डालनेवाली ।

छाँव, छाँव क्रि वि—भाग्यसे ।

छाँव स—छाँव ।

छाँवनि स—छाँव भाँजी ; रेजगारी, रेजगी ।

छाँवनी वि, स्त्री—परिवारके लोगोंमें फट डालनेवाली ।

भांडाने वि—तोड़नेवाला ।

भाङ्ग, भाङ्ग स—भाः भग । भाङ्गड़, भाङ्गड़ स—जिम्मेदार भगोड़ी । [मछली ।

भाङ्गन, भाङ्गन स—नदीके तीरका घँसना, एक भाङ्गा, भाङ्गा (क्रि परि ३)—टूटना, तोड़ना, खोल कर कहना । वि—टूटा हुआ, तोड़नेवाला (शङ्खभाङ्गा थाण्डिन) । भाङ्गाभाङ्गा वि—टूटाफूटा, भग्नप्राय, टूटीफूटी (भापा) ।

भाङ्गान (-नो), भाङ्गानो, भाङ्गानो (क्रि परि १०)—तुड़वाना, भाँजी मरवाना । वि—टूटा हुआ, तुड़वाया हुआ ।

भाङ्ग स्त्री—भाईकी स्त्री, भावज ।

भाङ्ग स—भाँटे, शङ्खान भाँज, तह ।

भाङ्गन स—पात्र, योग्य व्यक्ति (उडि-) ।

भाङ्गा (क्रि परि ३)—भूना । वि—भूना हुआ (-जान) । भाङ्गाभाङ्गा वि—भूना हुआ-सा, सतस, दुःखी ।

भाङ्गा (क्रि परि ३)—तह करना, भाँजना, मुगदर आदि घुमाना, अलापना ।

भाङ्गि स—भूनी हुई तरकारी । [हुआ ।

भाङ्गित (-अ) वि—भाग किया हुआ, बटा

भाङ्गा (-अ) स—भाग करने योग्य अंक । वि—विभागयोग्य ।

भाँटे स—वंशका परिचय देनेवाला, भाट ।

भाँटे स—एक छोटा पौधा ।

भाँटे, भाँटे स—नदी जलका समुद्रकी ओर प्रवाह, भाटा । भाँटे, भाँटे स—नदी-जलके उतारकी दिशा ।

भाँटे स—गेंद ।

भाँटे, भाँटे स—भट्टा, घोबीके कपड़े भट्टीमें सिझानेकी ह डी, शराबकी भट्टी ।

भाँटेभाँटे, (-शांति) स—एक रागिणी ।

भाँड़े स—पुरवा, कुल्हर ; भाँड़, मसखरा ।

भाँड़ाभि, (-भा) स—मसखरापन ।

भाड़ा स—किराया । वि—किराये पर दिया जानेवाला (—गाढ़ि) । भाड़ाभाड़ा, भाड़ाभाड़े स—किरायादार । वि—किराये पर दिया जानेवाला ।

भाँड़ान (-नो), भाँड़ानो (क्रि परि १०)—घोखा देना, ठगनेके लिए छिपाना (नाम—) ।

भाँड़ा स—भाँड़ा भटार । भाँड़ात्री स—भटारी । [प्रकाश ।

भाँ स—छल, घोखा, बनावटी बर्ताव ; दीप्ति,

भाँ (-अ) स—बर्तन, पात्र, बाजा (शङ्ख—) ।

भाँड़ा स—भटार । भाँड़ात्री स—भटारी ।

भाँड़ा स—बरगद, एक छोटा पौधा ।

भाँ (-अ) वि—बाजानाकिठ रोशन ।

भाँ स—बग्न पकाया हुआ चावल । भाँ स—चावलके साथ सिझाया हुआ आलू आदि । भाँ भाँ स—भात और उसके साथ सिझाया हुआ दूसरा खाद्य ।

भाँ स—भत्ता ।

भाँड़ा स—भाँड़ा भटार ।

भाँ स—प्रकाश, प्रभा, शोभा ।

भाँ स—भादो, भाद्रपद । भाँ, भाँ वि—भाद्र मासका । [स्त्री ।

भाँ स—भाँ, भाँ स्त्री—भाँ, भाँ छोटे भाँकी जान स—छल घोखा, बनावटी बर्ताव, प्रकाश, ज्ञान, प्रभा, शोभा ।

भाँ (क्रि परि ३)—ढेंकीसे कूट कर अनाजसे चोकर अलग करना (शान—) ।

भाँ, भाँ स—बाण भाप । भाँगा, भाँगा वि—भाप-सा, पसीना-सा ।

भाँ स—अस्तित्व, हस्ती, सत्ता, स्थिति, उत्पत्ति ; हालत, तरीका, मनका भाव, चिंता, मनशा, प्रीति, दोस्ती (शून्त्र शून्त्र शून्त्र शून्त्र—शून्त्र), आशय । —गठि स—हालत, लक्षण । —गठि (-अ) वि—गुढ़ार्थक,

उत्तम भावोंसे पूर्ण। —शांशी वि—मर्मज्ञ,
दूसरेके मनकी इच्छाका ग्रहण करनेवाला।
—उद्दिष्ट स—विचारकी पवित्रता।

जान स—चित्तन; सजावट; स्रष्टा। जाना
स—चित्त फिक्र, सोच; पुट।

जाना (क्रि परि ३)—सोचना, सोचमें पड़ना,
व्याकुल होना। [सोचमें डालना।

जाना (-नो), जानाना (क्रि परि १०)—

जाना स—मनके भावका परिवर्तन।

जानि (-अ) वि—चित्तित, फिक्रमद, सोचमें
पड़ा हुआ, पुटपाक किया हुआ।

जाना (भावोन्माद) स—नाना मनके भावों
की अधिकतासे विह्वलता।

जान (-अ) वि—भावना करने योग्य।

जान स—ऊदविलाव।

जाना जहै स—मानौ जहै सादू।

जाना स—जहै भाई, भइया।

जान स—भार, बोझ, जिम्मेवारी, वजन, दवाव;
घबराहट; पालन-पोषण, रखवाली, समूह,
बह गी। वि—कठिन (शब्द—)। —कष्ट

(-अ) स—माध्याकपणका केंद्र। —राश,
—राशद, —राशी वि—बोझ देनेवाला।

—दश (-अ) वि—भार सह सकनेवाला।

जाना स—राश मचान।

जाना जहै (-अ) वि—भारकी अधिकताके
कारण अभिभूत (दश—, दश—)।

जाना वि—गभीर स्वभाववाला (—बेबाक,
—बक, —बाक)। जानिहै, (-है)
वि—गभीर प्रवृत्तिका।

जाने, जानि वि—वजनदार, भारी, कठिन,
अत्यंत (—दश, —विश)।

जाने वि, स—बोझ देनेवाला।

जान (भालो), जाना वि—उत्तम, अच्छा,
च गा, तदुत्तम, भोलाभाला, उचित (—दश)

न।), सम्मति-सूचक शब्द (—जहै शब्द)।
स—कल्याण, हित। जानपन वि—अच्छा
और बुरा। स—शुभाशुभ; स्वादिष्ट
भोजन; मृत्यु।

जानाना (भालोवाशा) (क्रि परि ३) प्यार
करना, आसक्त होना, पसंद करना। स—
प्रेम, प्रणय, प्यार, मुहब्बत, स्नेह।

जानू स—जबूक भालू, रीझ।

जानू स—भइर, जेठ, पतिका बढ़ा भाई। —वि
स्त्री—जेठकी कन्या। —जान स—जेठका
पुत्र, जेठौत।

जानह (-अ) वि—तैरता हुआ। [हुआ।

जानान वि—भासता हुआ, प्रकाशमान, तैरता

जाना (क्रि परि ३)—तैरना, न डूब जाना,
उतराना, बह जाना, प्लावित होना (जाथे
जाने शब्द—)। जानाजाना वि—द्विधला, अग-
भीर। [तैराना।

जानान (-नो), जानाना (क्रि परि १०)—
जानू स—भइर, जेठ।

जानू (भाग्यशर) वि—उज्ज्वल, चमकदार।

जिह्वा स = जिह्वा।

जिह्वा (भिक्षा), जिह्वा स—भिक्षा, प्रार्थना,
भिक्षासे प्राप्त वस्तु। जिह्वाशू (-अ) स—
जो द्विज बालक जनेऊके समय किसीसे भिक्षा
लेकर उसके पुत्रके समान हो जाता है।
जिह्वा-वा स्त्री—वैसी भिक्षा देनेवाली स्त्री।

जिह्वा स—भिक्षा, भीख।

जिह्वा, जिह्वा, जिह्वा स—भिक्षा मा,
भिक्षुक।

जिह्वा, जिह्वा (क्रि परि ५)—भींगना, तर होना,
नरम होना, पसीजना। जिह्वा, जिह्वा वि—
जिह्वा, चार्ड भींगा हुआ, तर, गीला। जिह्वा
जिह्वा स—भींगी बिल्ली, जिह्वा रुस्तम
(निन्दार्थमें)।

डिज़ान (-नो), डिज़ानो, डिज़नो, डेज़ानो (क्रि परि ११) —भिगोना, गीला करना ।

डिज़िटे सँ—डाक्टरकी फीस या मेहनताना ।

डिज़िफिलि, (-किनिभि) सँ—जान, डुआगि बनावटी बर्ताव, पाखंड, बीमारीका बहाना ।

डिज़ो, डिज़ो सँ—बाख वह स्थान जिस पर घर उठाया जाय । डिज़ोमाटि, (डिज़ो-) सँ—घरके नीचेकी मिट्टी (—उत्खनन करी) ।

डिज़ सँ—झनडा भीड़, जमावड़ा ।

डिज़ा, डेज़ा (क्रि परि ५)—तीरमें लगना, मिलना, जुटना ।

डिज़ान (-नो), डिज़ानो, डिज़नो, डेज़ानो (क्रि परि ११)—तीरमें लगाना (डोबे नौका—) ।

डिज़ि सँ—डिज़ि, बनिशान नीव, जमीनसे फर्श तककी दीवार, ओर (छात्रि डिज़ि) ।

डिज़ि क्रि वि—भीतर । सँ—भीतरी स्थान ।
—बाड़ि सँ—अंदर महल, रनिवास । डिज़ि
डिज़ि क्रि वि—तल तल भीतर ही भीतर, छिप कर ।

डिज़ि वि—डरपोक, कायर ।

डिज़ि स—डिज़ि नीव, दीवाल, मूल कारण ।
—शैन वि—अश्लक, निर्मूल, मिथ्या, निराधार ।

डिज़िगान वि—छेदनेवाला ।

डिज़ि वि—दूसरा, गैर (—गं) ।

डिज़ि (-अ) क्रि वि—झाड़ा, बिना सिवाय, छोड़कर । वि—दूसरा, अलग, खंडित ।
—कृति वि—विभिन्न रुचिवाला ।

डिज़ि सँ—लखेरी ।

डिज़ान सँ—गिठानादि शक मिठाई बनानेके लिए भट्टीका जलाना और पकाना ।

डिज़ि स—मूर्छा, बेहोशी, गश ।

डिज़ि सँ—भिषती, मशक ।

डो, डोडि सँ—भय, डर ।

डोडू, डिडू वि—डोडू डरपोक ।

डोडूगति सँ—दुढ़ापा, अधिक उमरके कारण बुद्धिका टिकाने न रहना ।

डोडा वि—डरावनी ।

डोडू वि—डोडू डरपोक ।

डूँशे, डूँशे सँ—गाछ मिट्टी, भूमि, देश ।

डूँशेफाड़ वि—एकाएक आविर्भूत, नया बढ़ा हुआ, नया रुपयावाला ।

डूँशे सँ—डोशिक जमींदार, एक उपाधि ।

डूँ वि=डूँ ।

डूँ (-अ) वि—डूँख खाया हुआ, भोगा हुआ ; अंतर्गत, शामिल । —डोशू वि—

अनुभवी, कष्ट उठा कर जिसने अनुभव प्राप्त किया है । डूँखावण सँ—खानेके बाद जो कुछ पड़ा रहता है, जूठन ।

डूँख सँ—भ्रम भरना, भुगतान ।

डूँखि सँ—भोग, दखल ।

डूँ सँ—भूख । डूँ वि—भूखा । [कष्ट उठाना ।

डूँगा, डोँगा (क्रि परि ६)—भुगताना, भोगना,

डूँगान (-नो), डूँगानो, डूँगनो, डोँगानो (क्रि परि १३)—कष्ट देना ।

डूँखित (-अ) वि—डूँख खाया या भोगा हुआ ।

डूँगान स—भारतके उत्तर हिमालयके ऊपरका भूटान देश । [स—बुलबुला ।

डूँडूडू स—बुलबुलेका शब्द । डूँडूडूडू

डूँडू स—तोड़ । डूँडू वि—तुंदिल ।

डूँडू, डूँडूडू सँ—कटहलके कोयेके अलावा भीतरी अखाद्य अंश ।

डूँडूडू, (डूँ) वि—भूत प्रेत सम्बन्धी ।

डूँन स—भूनी हुई दालके साथ बनी हुई सूखी खिचड़ी । [सार-रहित ।

डूँडा, डूँडा, डूँ वि—पोला, झूठा, दिखावटी,

डूँडूडू=डूँडूडू ।

छा, छा सं—खाँड़, कच्ची शकर ।

छ सं—ऊँ भौंह । [अयोग्य ।

छ सं—भूल, गलती, चूक । वि—गलत,

छना, छाना (क्रि परि ६)—भूलना, गलती करना, मोहित होना (रूप देख—) ।

छाना (नो), छाना, छाना, छाना (क्रि परि १३)—भुलाना, मीठी मीठी बातें कहकर ठगना, समझाकर या दूसरे विषयमें मन खींचकर बच्चोंको ठग करना, मोहित करना । वि—बहलाने योग्य (छेन-छाना छड़ा) ।

छाना वि—जो अक्सर भूल करता या भूल जाता है (—मन) । [घसनेका शब्द ।

छा, छा सं—पानी कीचड़ आदि में डूबने या छवि, छा सं—चोकर, भूसी ।

छा, छा सं—धुएँ के साथ उठे हुए कोयले के चूर, काजल । —रानि सं—वैसे काजलसे बनी स्याही ।

छ सं—पृथ्वी, भूमि, स्थान । —छि (-अ) सं—मानछि पृथ्वीका नक्शा । —छा सं—पृथ्वीको छाया जो ग्रहणके समय चंद्रमा पर पड़ती है । —छा (-अ)

वि—घरती पर गिरा हुआ । —छा सं—पृथ्वीके सम्बन्धमें सारी बातोंकी विद्या ।

—छा सं—पृथ्वी पर पापोंका भार । —छा सं—भारत और सारी पृथ्वी ।

—छा (-अ) वि—घरतीपर गिरा या लोटा हुआ । —छा सं—जमींदार ।

छं छं=छं ।

छ सं—भूत, प्रेत, जिन, शैतान ; जीव, प्राणी, जगतका उपादान—मिट्टी जल अग्नि वायु और आकाश ये पाँच भूत । वि—

गत, अतीत । —छा सं—कातिकी कृष्णा चतुर्दशी । —छा (-अ) वि—जो

पहले था (—मथी) । —छा सं—भूत प्रेत आदि, प्रेत रूपसे जन्म । —छा सं—

मंत्रोंके द्वारा शरीरके पाँच भूतोंकी शुद्धि । छाविष्ट (-अ) वि—जिसपर भूत सवार हुआ है । [घन ।

छा सं—अणिमादि आठ ऐश्वर्य, विभूति, छाछ=छाछ ।

छा वि—व्यापक, सर्वव्यापी । सं—ब्रह्म । छा सं—भूमि, जमीन, खेत, पृथ्वी ; आधार, खान । —छा (-अ) सं—भूडोल ।

—छा वि—घरतीपर पतित, समथल, चौरस । छा सं—वक्तव्य विषयकी सूचना ; अभिनेताका अंग या चरित्र ।

छा (-अ) वि—घरती पर गिरा हुआ ; जन्मा हुआ (गलान—छेन) ।

छाधिकारी सं—जमींदार । छा क्रि वि—पुनः, फिर । वि—प्रचुर, अनेक ।

छा वि स्त्री—अनेक (—अभिजा) । छा सं—बहुत अनुभव । छाछा छा क्रि वि—बारबार ।

छा (-अ) वि—अनेक, प्रचुर । छा सं—बहुत, प्रचुर (—छाछन) ।

छा सं—छाछ, छात्र पीतलका वधना । छा (-अ) वि—पाला-पोसा, पूर्ण । छा वि वेतन-प्राप्त । छा सं—वेतन, मजदूरी ; पालन, पोषण ।

छा (-अ) वि—गवा भूना हुआ । छाछाछा सं—चिल्लाकर रोनेका शब्द, कुत्तेका भौंकना ।

छाछन (भंडूचानो), छाछाना, छाछाना (क्रि परि १६)—मुह बनाना । छाछनि, छाछि सं—चिढ़ानेके लिए मुखकी विकृति (—छाछ, मुह बनाना) ।

छा, छा वि—छाछा भौचका, हकावका ।

भेध, भेद स—वेश, भेख, भेस ।

भेजान (भेजानो), भेजानो (क्रि परि १०)—

भेजान मुँह बिगाड़ना, किसीकी नकल कर उसे चिढ़ाना ।

भेजा, भेजान = भिजा, भिजान ।

भेजान (भजानो), भेजानो (क्रि परि १०)—

बंद करना, किवाड़ लगा देना, उठगाना ।

भेजान (भैजाल) वि—मिलावटी, खोट मिलाया हुआ । स—मिलावट, खोट ।

भेटे स—भोगाउ, भेजानेक भेंट, उपहार, मुलाकात ।

भेटेकि स—एक मछली ।

भेड़ा (भैड़ा) स—मेष, भेड़ा । स्त्री—भेड़ी ।

भेड़रा, भेड़े वि—भेड़-सा ; स्त्रीण ; कायर ।

भेड़े वि—बोका बेवकूफ, कायर, निकम्मा ।

भेडर = भिडर । —का वि—भीतरका, अन्तरस्थ ।

भेठो वि—भात खानेवाला ।

भेठो वि—छेदनेवाला ।

भेद स—भेदनेकी क्रिया, भिन्नता, मतभेद, विच्छेद ; दस्त । भेदक, भेदो वि—

छेदनेवाला । भेदखान (-द-) स—भिन्नताका ज्ञान, समान न समझना । भेदन स—

भेदनेकी क्रिया । भेदनोष्ठि स—शत्रुपक्षके लोगोंको बहकाकर अपनी ओर मिलाने या

उनमें द्वेष उत्पन्न करनेकी नीति । भेदित (-अ) वि—भेदा हुआ । भेदनोत्र (-अ), भेद

(-अ) वि—भेदनेके योग्य ।

भेजना वि—जान देखो ।

भेँश स—भोंपा, भोंपू ।

भेवा (भैवा), भारी वि—बोका बेवकूफ, भौचक्का । भेवाका, (भा-) स—हक्काबक्का होनेकी हालत ।

भेवो, (-त्रि) स—बड़ा झोल, नगाड़ा ।

भेवरा स—अवरा, अड़ि रेंड । —भाँझा क्रि—

बेकार बैठा रहना, व्यर्थका काम करना ।

भेव वि—कृत्रिम बनावटी, खोटा । [जादूगरी ।

भेवकि स—बाइ, ईश्वराल जादू । —बाँझि स—

भेना (भैना) स—धव बेड़ा ।

भेवका = भवका । [—भुगु इश्वर नष्ट होना ।

भेवो, भेवो वि—भुगु नष्ट, अष्ट । भेवो बाँझा

भेवान (-नो), भेवानो (क्रि परि १६)—भुगु

इश्वर नष्ट होना, बिगड़ जाना ।

भेवक, भेवका (भैवक -अ) वि—भिक्षासे प्राप्त ।

स—भिक्षान्न, सन्न्यास ।

भेवक, भेवका (-अ) स—दवा ; इलाज ।

भो स—संबोधन सूचक शब्द ।

भो स—बाँझरीका शब्द, गुंजन ; खालीपन (घर भो भो) ; वेग सूचक शब्द (भो कद्वे जोड़ दिम) ।

भोखवा (-अ) वि—खाने या भोग करने योग्य ।

भोगवती स—पाताल-नागा ।

भोगा स—कौंकि धोखा । [देखो ।

भोगा, भोगान, भोगानो—भुगा, भुगान

भोगावि स—कष्टभोग ।

भोगावतन स—भोगका आधार, शरीर ।

भोगानि स—अधिक भूखके कारण थकावट ।

भोग स—भोजनोत्सव, ज्योनार ।

भोगन स—खाना, खानेकी वस्तु, भोज,

ज्योनार । भोगवि वि, स—खिलानेवाला ।

भोको वि, स—खानेवाला (गान- ,

आवि-) ।

भोखवावि स = भेवकिवावि ।

भोखानि स—कृत्रिम कटार, छुरा ।

भोवि वि—भूतान देशका । स—तिब्बत देश,

वोट, सम्मति । भोविभूति स—पक्ष या

विपक्षमें सम्मति दान । [भूत-कत्रा) ।

भोवि वि—भोंधरा, बोलती बंद (शैली)

डोन्ड सँ—ऊड़विलाव ।
 डोन्ता, डोन्ता वि—मोटा, तु दिला ।
 डोन्, डोन् वि—चूर (जगान—इच्छा) ।
 डोन्दा सँ—वरमा, छेड़नेका एक औजार ।
 डोन्दा सँ—अमर भौरा । [जीवन—] ।
 डोन्दा सँ—तड़का । वि—पूरा, भर (दिन—,
 डोन्दा सँ—छद्मदेश वेश, भेस । [शिव ।
 डोन्ता वि—भूलनेवाला, आत्मविस्मृत । सँ—
 डोन्ता, डोन्तान=डूना, डूतान ।
 डोन्डोन्डा सँ—सांसका शब्द ।
 डा सँ—भेड़का शब्द ।
 डावाठाका=डवाठाका ।
 डागि, (-गौ) सँ—दुर्गन्धन भ वर ।
 डाडूगूड (-अ)=डाइगो ।
 डागनाग वि—धूमने या चक्कर काटने वाला ।
 डा सँ—डर भौंह, भौं । —दूठि, लकूठि, (-गौ)
 सँ—अभंग । —केश सँ—दृष्टिनिक्षेप,
 ताकना, ग्रहण योग्य समझना (लक्ष्य
 कद्वे ना) । —विमान सँ—सुंदर दंगसे
 अंका संचालन । —नडा सँ—सुंदर टेढ़ी
 भौंह । —नकट सँ—अंका इशारा ।

म

मडे सँ—वाँसकी सीढ़ी, निसेनी, खेतके ढेले
 तोड़नेका यंत्र, हेंगा ।
 मडेन, मडेन स—कपड़े पर काला धब्बा ।
 मडे सँ—मधु शहद । —शक स—मधु-
 मक्खियोंका छत्ता । —माहि सँ—मधुमक्खी ।
 मडेवि स—लोवि सौफ ।
 मडेवा (क्रि परि ७)—मधुन दवा मथना ।
 मडेवा सँ—मानना मुकदमा ।
 मडेवा स—दूधोद मगर, घड़ियाल, एक राशि ।
 मडेवा=मोदवा ।

मकाई, मका सँ—भुट्टा, मकई ।
 मकूफ सँ—दशरथ, अवांशति छुटकारा, मौकूफ ।
 मकन सँ—मुवकिल ।
 मकव सँ—मुसलमानी मटरसा । [लिखना ।
 मकश (-अ) स—अभ्यास, लिखे हुए पर
 मग सँ—आराकान देशका निवासी, वरमी
 (मगद मूलक, अराजक देश) ; दस्तादार
 गिलास ।
 मगखि सँ—कपड़ेका किनारा ।
 मगखान सँ—सबसे ऊंची टहनी ।
 मगलछौ स्त्री—दुर्गा ।
 मग सँ—लकड़ी आदिके दूटनेका शब्द । मग मग
 सँ—दूटने या चवानेका शब्द । मगमग वि
 —मचकनेवाला, खस्ता (प्यारमें—मगमग) ।
 मगकान (-नो), मगकाना (क्रि परि १६)—
 मोच आना । मगकानि सँ—मोच ।
 मग्व सँ—मगशजव वैष्णवोंका भोज ।
 मगलन=मगनन । [ऊपर-कथित ।
 मगकूव सँ—मजकूर, लिखित विवरण । वि—
 मगवूठ वि—मक, मूठ मजवूत, टिकाऊ ।
 मजा सँ—मजा, मजाक, आनन्द ; सजा
 (—छेद भावे) । —माव वि—मजेदार ।
 मजा (क्रि परि १)—मशगूल होना, लवलीन
 होना, मोहित होना, विपत्तिमें फँसना, तालाव
 आदि भर जाना, ब्यादा पक जाना । वि—
 कीचड़से भरा हुआ (तालाव आदि),
 ब्यादा पका ।
 मजान (-नो), मजाना (क्रि परि १०)—मोहित
 करना, विपत्तिमें डालना ; भ्रष्ट करना (झू—) ।
 मजूर, मजूर वि—संचित, मौजूद ।
 मजूरमाव सँ—मालगुजारीका हिसाब रखने-
 वाला, एक उपाधि । [मजदूरी ।
 मजूर सँ—मजदूरी मजदूर । मजूरि स—
 मजून सँ—मजदूरी स्नान, गोता ।

गच्छा सं—नलीकी हड्डीके भीतरका गुदा, गुदा ।
 —गच्छ (-अ) वि—गच्छनिश्चित दिलमें जमा हुआ, बान पड़ा हुआ ।
 गच्छन सं—गच्छन मंजना, मंजन ।
 गच्छव वि स्वीकृत मंजूर । गच्छवि सं—मंजूरी ।
 गच्छे सं—कड़ी चीजके टूटनेका शब्द ।
 गच्छेका सं—घट्टेवर छात्रेवर गच्छा छप्परके ऊपरका सिरा, मटका, एक रेशमी कपड़ा, कपट निद्रा (—घट्टे थाका) ।
 गच्छेकान (-नो), गच्छेकाना (क्रि परि १६)—
 शब्दके साथ मरोडना (आड़ू—, घाड़—) ।
 गच्छेकि सं—झाला मटका ।
 गच्छेक सं—गच्छागच्छी मरी, ववा ।
 गच्छेगच्छ सं—लकड़ी आदिके टूटनेका शब्द ।
 गच्छा सं—लाग, शव, मुर्दा ।
 गच्छाक्ष, गच्छाक्ष वि—गच्छवशा जिस स्त्रीकी सतान जिदा नहीं रहती ।
 गच्छ सं—४० सेरकी तौल, मन ।
 गच्छवक्ष (-अ) सं—कलाई । [(जाछे—)] ।
 गच्छ (-अ) सं—गाड़ माड़ी, लेई-सी वस्तु
 गच्छन सं—गोलक, परिधि, चक्र, प्रदेश (वक्ष—),
 ग्रामका प्रधान या मुखिया, एक उपाधि ।
 गच्छा सं—गोल या मंदिर-नुमा मिठाई ।
 गच्छ (मत्) सं—सम्मति, राय, सिद्धांत, धारणा, विधि ।
 गच्छ (मतो), गच्छा, गच्छन वि—सदृश, तुल्य, अनुसार, योग्य । सं—प्रकार (नानागच्छ) ।
 गच्छन सं—अभिप्राय, तात्पर्य, नीयत (कू—);
 कौशल, तरकीब । —वाक, गच्छनवि—
 कनिषाक मतलबी, स्वार्थी । [मनमुटाव ।
 गच्छागच्छ सं—भिन्न मत, मतोंका अनैक्य,
 गच्छागच्छ सं—सम्मति असम्मति ।
 गच्छाक्ष सं—मोतिचूर, एक मिठाई ।
 गच्छाक्ष सं—शत्रुपक्षा, खटमल ।

गच्छ (मत्त अ) वि—मतवाला, मस्त ।
 गच्छा (-अ) सं—गाछ मछली । —गच्छा स्त्री—
 सत्यवतो, वेदव्यासकी माता । —झोपी सं—
 खेले मछुआ । —गच्छी सं—श्राद्धके बाद तेरहवें
 दिन आमिष खाकर नियम-भंग, तेरही ।
 गच्छागच्छी वि—मछली खानेवाला ।
 गच्छवि वि—नशा पैदा करने वाला ।
 गच्छी (-अ) वि—मेरा, मेरे सम्बन्धका ।
 गच्छी वि—शराब सा, शराबी । [मछली ।
 गच्छी सं—गाछ गाछ एक छिलका-रहित
 गच्छ (-अ), गच्छा, गच्छानी—गच्छ देखो ।
 गच्छ सं—शहद, शराब, वसंत । वि—मीठा,
 मधुर । —कच सं—भौरा । स्त्री—गच्छी ।
 —गच्छ (-अ) सं—मधुमक्खियोंका छत्ता ।
 गच्छ (-अ) सं—भौरा । —गच्छी सं—मथुरा ।
 गच्छी (-अ) सं—काकिन कोयल ।
 गच्छ वि—मीठा, आनंद जनक । गच्छी सं—
 मधुरता, मिठास ।
 गच्छी सं—वसंतोत्सव ।
 गच्छा (-अ) सं—गाछ बीच, कमर, भीतरका
 भाग, अवकाश । वि—बीचका, भीतरका ।
 —गच्छ सं—दुपहर । —गच्छी वि—बीचका ।
 सं—पंच, मध्यस्थ । —गच्छी, गच्छी सं—
 बीचबचाव । —गच्छ (-अ) वि—अधेड़ । —
 गच्छ (-अ) वि—धनौ ३ दक्षिण गच्छागच्छ ।
 मध्यम वगका । —गच्छ (-अ) सं—आधी
 रात, रातका दुपहर । गच्छ (-अ) वि—
 बीचका । सं—गच्छी विचवान, बीचबचाव
 करनेवाला ।
 गच्छ सं—४० सेरकी तौल, चित्त, मन, याद,
 स्मरण, विचार, पसंद, सकल्प, इच्छा
 —कच्छा सं—मनमुटाव । —कच्छन कच्छ
 क्रि—विरहसे चित्त बेचैन होना । —गच्छा
 २६६ क्रि—चित्त उदास होना । —गच्छा

वि—उदार सरल, सीधा । -ग्रज वि—ख्याली,
मनगढ़ंत, काल्पनिक । —देवत्रा क्रि—
ध्यान देना । —शोभन क्रि—प्रीति या
समर्थन प्राप्त होता । —लाड क्रि—दिल
टूटना । —जग इव क्रि—नाराज होना ।
-मन्त्रा वि—उदास, हतोत्साह । —आशाना क्रि
—किसीके इच्छानुसार काम करके उसे खुश
करना । —वांछा क्रि—किसीके इच्छानुसार
काम करके उसका सद्भाव कायम रखना ।
मन मन क्रि वि—अपने मनमें । मन इव
क्रि—मनमे लगाना (आमात्र अशेष मन रहेन,
मुझे ऐसा लगा) ।

मनःकलित / -नकल्पित -अ) = मनगड़ा ।
मनःकृष्ट (-अ), मनःशील स—मनका कष्ट ।
मनःशूल (-अ) वि—अश्वमेध मनभावन, प्रिय ।
मनःस्थान स—दिल और जान ।
मनःसाक्षात् स—मनोनिवेश ध्यान ।
मनसा सं—मुनका ।
मननौत्र (-अ) वि—चिताके योग्य ।
मनःशूल स—अच्छाष्टि सं—मनकी दृष्टि ।
मनसा (-नशा) स्त्री—सांपोंकी देवी । सं—
एक कटीली भाड़ी । [अभिलाषा ।
मनसा (-नशा), मनसायना स—मनकी कामना,
मनसायन सं—अच्छाष्टि पद्धतावा, मनका कुश ।
मनसा (-नशा) वि—बुद्धिमान, महामना,
स्थिर चित्तवाला ।
मनसायन स—मनोनिवेश मनमुटाव । [भोजना ।
मनसायन सं—मानी आदर्श, ठाकसे रुपया
मनसा सं—प्रभु, मालिक ।
मनसायन सं—मानी बैग, रुपये पैसेकी थैली ।
मनसायन स—शाकीनी चोजोका बेचनेवाला,
शाकीनी चीजें (-लादान) । [पंडित ।
मनसा स—बुद्धि । मनसा वि, स—विद्वान,
मनसायन सं—निर्वाचन, पसंद, चुनाव ।

मनोनिवेश = मनःसाक्षात् ।
मनोवाश सं—मनकी कामना ।
मनोविकार स—मनका विकार ।
मनोव्य (-अ) स—दिलका टूटना । [हालत ।
मनोवाश स—मनसा, अभिप्राय, मनको
मनोव्य (-अ) वि—अश्वमेध मनभावन ।
मनोवाश (-अ) = मनसायन ।
मनोवाश सं—ध्यान, एकाग्रता ।
मनोवाश वि—मनको लुभानेवाला ।
मनोवाश सं—एक प्रकारका कीर्तन ।
मनोवाश सं—एक मिठाई ।
मन्त्र (-अ) सं—मन्त्र (शृंगार—, गाथार—,
दीक्षा—) ; मन्त्रणा, रहस्य । —अष्टि सं—
मन्त्रणाका गुप्त रखना । —शूल (-अ) वि—
मन्त्रसे पवित्र किया हुआ । —शूल (-अ) वि
—मन्त्रसे मोहित । —देवत्रा क्रि—दीक्षा देना ।
मन्त्र वि—शैव सुस्त, मंद, धीमा ।
मन्त्र (-अ) वि—शराब खराब, बुरा, अशुभ,
दुष्ट, बीमार, अल्प, सुस्त, धीमा ।
मन्त्रा सं—मांग या दामकी कमी ।
मन्त्राकाश सं—संस्कृतका एक छंद (जैसे—
मेघदूतका) ।
मन्त्राश्रि सं—अपच, अजीर्ण, बदहजमी ।
मन्त्रा सं—छोटा करताल, खजनी । [गया है ।
मन्त्रोत्थ (-अ) वि—जो धीमा या क्षीण हो
मन्त्र (मन्मथ -अ) सं—मदन ।
मन्त्र सं—क्रोध, गुस्सा, शोक ।
मन्त्राश्रि, मन्त्राश्रि सं—मुफस्सल, नगरके बाहरका
स्थान, गांव ; पिछली पीठ (कागड़ेन मन्त्र—) ।
मन्त्राश्रि सं—नगर नकद । वि—कुल ।
मन्त्र (-अ) सच—मेरा । मन्त्रा सं—आसक्ति,
प्रेम, स्नेह, मोह, अपनापन ।
-मन्त्र प्रत्य—भरा, पूर्ण (मन्त्राश्रि, मन्त्राश्रि) ।
मन्त्रा सं—मैदा, महीन आटा ।

शब्दान स—गाँठ मैदान ।

शब्दा स—मैना ; मुआयना ।

शब्दा स—हलवाई ।

शब्दा वि—मैला, गदा, काला, मलिन । स—
मैल, मल, विष्ठा । [मिलाया जाता है ।

शब्दान स—मोयन, जो धी मैदा गूँधते समय

शब्दान स—एक बड़ा साँप, अजगर ।

शब्द वि—नाशवान, मरनेवाला ।

शब्दक = गड़क ।

शब्द स—शूल मौत । शब्दाशब्द वि—मरणासन्न ।

शब्दाशोच स—मृत्युके कारण अशौच ।

शब्दाशुथ (-न्मु-) वि—मरणासन्न, मुसुपु ।

शब्द स—मर्द, पुरुष । [दर्द ।

शब्द स—दिल, हृदय । शब्दो वि—दरदो हम-

शब्दशब्द (मर-अ-मर-अ) वि—मृतप्राय, मुसुपु ।

शब्दशब्द स—मौसिम ; मौका । शब्दशब्दो वि—
मौसिमी ।

शब्दा (क्रि परि १)—मरना, घटना, कम होना ।

वि—मृत, मुर्दा ; क्षीण । शब्दा शब्द स—
शुष्क सुखी खाल, रुसी ।

शब्दाइ स—धान रखनेका गोल खत्ता ।

शब्दि, शब्दिशब्दि अ—विस्मय आनंद सहानुभूति
आदि भाव सूचक शब्द ।

शब्दि स—मिर्चा । शब्द—, स—काली मिर्च ।
शब्दा—, स—लाल मिर्चा ।

शब्दिश, शब्दि स—मुर्चा, जग । [खेलकर ।

शब्दिश वि—मरनेको तैयार । क्रि वि—जानपर
शब्दिशिक स—मृगतृपा, मरुस्थलमें जलका भ्रम ।

शब्द स—मरुस्थल ।

शब्दि स—इच्छा, मरजी ।

शब्दान स—एक बड़ी जातिका कैला ।

शब्द (-अ), शब्द (-अ) स—शब्द मर्द, पुरुष ।

वि—साहसी, वीर । शब्दनि, शब्दनि स—
मरदानगी, साहस । शब्द, शब्द वि—पुरुष

जातिका । शब्दनी, शब्दनी स्त्री—मर्दका-
सा स्वभाव वाली स्त्री ।

शब्द (-अ) स—दिल, हृदय, शरीरका
संघिस्थान जहाँ आघात पहुँचनेसे अधिक
वेदना होती है ; आशय, अर्थ, रहस्य ।

शब्दशब्द वि—हृदय-वेधक । शब्दाशब्द स—
—संघिस्थलमें या हृदयमें आघात ।

शब्दाशब्द (-अ) वि—हृदयमें आघात प्राप्त ।

शब्दाशब्द वि—हृदय-वेधक । शब्दार्थ (-अ)
स—तात्पर्य, गूढ़ अर्थ । शब्दो वि—रहस्य

जानने वाला, हमदर्द । शब्दाशब्दो वि—
शब्दाशब्द स—भेद खोलना । [स गमरमर ।

शब्दशब्द स—सूखे पत्तोंके टूटनेका शब्द ;

शब्द स—मैल, विष्ठा, मुर्चा, पाप, स्त्रियोंके
पैरमें पहननेका कड़ा ।

शब्दशब्द स—मुलस्मा, गिल्ट, कलई ।

शब्दा स—मैल, मैलापन ।

शब्दा (क्रि परि १)—मलना, मसलना । कान—
क्रि, स—कान ऐंठना ।

शब्दाशब्द स—पुस्तकका आवरण, जिल्द ।

शब्दिश स—मलीदा, एक कोमल ऊनी वस्त्र ।

शब्दिश वि—शब्दा मैला, गदा, कलकित, उदास ।

शब्दिशिग स—मैलापन, मलिनता ।

शब्दक स—शब्दा मच्छड़ ; मशक, चमड़ेका थैला
जिसमें पानी भर कर ले जाते हैं ।

शब्दशब्द वि—मशगूल, लवलीन ।

शब्दशब्द स—नये जूतेका शब्द ।

शब्दा स—मच्छड़ ।

शब्दान स—स्मशान, चघका स्थान । [रूप ।

शब्दाशब्द, शब्दाइ स—'महाशय' शब्दका संक्षिप्त

शब्दाशब्द स—मसहरी ।

शब्दशब्द स—सिंहासन ।

शब्दशब्द (-अ) स—एक महीन चटाई ।

शब्दा (मशाल) स—मसाला ।

बर्जि, बर्जो स—लिखनेकी स्याही । —झौरी
स—कबानो छुर्क, करणिक । [तीसी ।

बर्जना, बर्जने, (मग्ने), बर्जना स—उजि
बर्जद, बर्जद, बर्जद स—मसूर दाल ।

बर्जदिका, बर्जदो, (बर्जदोका) स—शीतला,
छोटी माता ।

बर्ज (मसून) वि—चिकना, तेलहा, कोमल ।

बर्ज स— भविष्यत दिल्ली, मसखरी ।

बर्ज (-अ) वि—बड़ा, विशाल, महान, अत्यत ।

बर्जद स—दावात । [अदालत ।

बर्जना स—जिलेका एक अश, सुनसफी
बर्ज=मोड़ ।

बर्जद (-स-) स—महत्का आश्रय ।

बर्जद (-अ) वि—माननीय ।

बर्जद स—मुहम्मद । बर्जदो (-अ) वि—
मुहम्मदका ; मुसलमानी ।

बर्जद स—मुहम्मद । [अंश ।

बर्ज स—भवन, बड़ा मकान, जमींदारीका

बर्ज स—अभिनयका अभ्यास, शिक्षाका
परिचय ।

बर्जद वि—विशाल शरीरवाला ।

बर्जद स—पिता, माता, आचार्य, पति ।

बर्जद स—महान धार्मिक व्यक्ति, ऋणदाता,
वनिया । बर्जद स—महाजनी, लेन देनका
व्यवसाय । बर्जदो वि—रूपेकी लेन देनका
व्यवसाय सम्बन्धी ।

बर्जद वि, स—महान तपस्वी ।

बर्जद वि—महान प्रतापी ।

बर्जदो स—नवरात्रिकी नवमी तिथि, दूर्गा-
पूजाका तीसरा या अंतिम दिन ।

बर्ज (-अ) स—महत्स्वामी, महंत ।

बर्जपाठ स—महापाप, ब्राह्मणकी हत्या,
मदिरापान चोरी, गुरुपत्नी-गमन और इनमें
छे किमीके साथ सम्बन्ध ये पाँच महापाप हैं ।

बर्जपाठ (-अ) स—प्रधान मंत्री, एक उपाधि ।

बर्जद स—छठछन्द गौरांग महाप्रभु ।

बर्जदो, (-अशान) स—मृत्यु, मृत्युके
लिए यात्रा ।

बर्जदो स—देवताका प्रसाद, मांस-प्रसाद ।

बर्जदो वि—बर्जदो महात्मा ।

बर्जदो स—मुहाफिज, कागजात रखनेवाला ।

बर्जदो स—गौतम बुद्ध ।

बर्जदो स—कृष्णकोट ।

बर्जदो वि—बड़ी महिमा वाला ।

बर्जदो (-अ) वि—बहुत कीमती ।

बर्जद, बर्जद, बर्जद (-अ) वि—बहुत महंगा ।

बर्जद स—बड़ा समुद्र ।

बर्जद स—जमींदारीका अश ।

बर्जद स—शारदीय नवरात्रिकी पिछली या
आग्विन कृष्ण अमावस्या ।

बर्जदो स—नवरात्रिकी अष्टमी तिथि ।

बर्जद स—भंस, भंसा ।

बर्जद (-अ) स—वृक्ष, पेड़ ।

बर्जद स—द्वेष्ट केंचुआ ।

बर्जद स—महुआ ।

बर्जदो—माँ, माता ; माताके समान स्त्री
या कन्या अथवा देवीके लिए स बोधन
(गिरीना, बडेना, मा इर्गा) ; विस्मय या भय
सूचक शब्द (उवा । नागा ।) । मा-बर्जदो वि—
मातृहीन ।

बर्जद स—स्तन (—बाँधना, —दोना) ।

बर्जद=बर्जना ।

बर्जदो स—कसम खानेका एक शब्द ।

बर्जद स—आधा कोस, मील ।

बर्जद (-अ), बर्जदो वि—मांसाहारी ।

बर्जद, बर्जद स—मकड़ी । (पोका-बर्जद,
कीड़े-मकोड़े) ।

बर्जद स—कानकी वाली ।

भाकान स—एक छोटा फल जो देखनेमें बहुत लाल परंतु भीतरके बीये कड़ुए और काले हैं ।

भाकू स—डरकी । [नहीं निकलती ।

भाकू (-अ) स, वि—जिस पुरुषके दाढ़ी-मूछ

भाथन, भाथन स—मक्खन ।

भाथा (क्रि परि ३)—मलना, लगाना (ठेल—) ;

गू घना (ब्रज—) ।

भाथान (-नो), भाथानो (क्रि परि १०)—

लगाना, पोतना, चुपड़ना, मलना । भाथाभाथि

स—आपसमें तेल अबीर आदि अधिक

लगाना, अधिक घनिष्ठता या मेलमिलाप ।

भाथ स्त्री—पत्नी, स्त्री, जोरु ।

भागा, भागा (क्रि परि ३)—मांगना, चाहना ।

भागन, भागन स—याचना, भिक्षा । भागना,

भाडना क्रि वि—मुफ्तमें ।

भागी स्त्री—औरत (अवज्ञामें) ।

भाकुर=भाकुर ।

भाग, गि=भाग । [१०)—मंगवाना ।

भागान (-नो), भागानो, भाडानो (क्रि परि

भाग, भागन स—मचान, मंच ।

भाह स—भाह मछली । —बाडा स—एक

मछली पकडनेवाली चिड़िया ।

भाहि स—मक्खी । —भात्रा वि—मक्षिकाके

स्थानमें मक्षिका लिखनेवाला, मूर्ख

नकलनवीस या केरानी ।

भाह स—पेड़के तनेके बीचका हिस्सा ।

भाजन स—मंजन ।

भाजा स—कोमर कमर ।

भाजा (क्रि परि ३)—माँजना, रगड़ कर साफ

करना । वि—माँजा हुआ (—भागन) ।

भास स—मध्य, बीचका भाग । —थान स—

बीच, मध्य-भाग । भासाभासि वि—बीचका,

मध्यवर्ती । क्रि वि—बीचमें । भास भास क्रि वि

—बीच बीचमें, कभी कभी ।

भासात्र स—मध्य, बीच ।

भासात्रि वि—मध्यम श्रणीका, छोटे बड़े या भले-बुरेके बीचवाला ।

भासौ, (-सि) स—मल्लाह, माँझी ।

भासा स—माँझा, गुड्डीके डोरे पर चढ़ाया जाने-वाला कलफ ।

भाटकोठा स—मिट्टीका दुमंजिला मकान ।

भाटि, (-ठी) स—मिट्टी, धरती । वि—नष्ट (काह

—हवा) । —देवा क्रि—कर देना, गाढ़ना ।

—भाड़ानो क्रि—आना, पधारना । भा भाटि

भाटि करा क्रि—शरीरमें अकड़ मालूम होना ।

भाटि भास स—भोला-भाला आदमी ।

भाठ स—बगवान मैदान, खेत । भाठ भात्रा

भाठ क्रि—वृथा नष्ट होना ।

भाठा स—भाथन मक्खन ; घोल छाछ, मट्ठा ।

भाड़ स—माँड़ी, भातका पसावन ।

भाड़ा (क्रि परि ३)—मलना ; माँड़ना (देव—) ।

भाड़ान (-नो), भाड़ानो (क्रि परि १०)—

मलवाना, पधारना, पेर रखना ; कुचलना ।

भाड़ि स—गाढ़ा रस ; मसूडा ।

भाड़ी, (-ढ़ि) स—मसूडा ।

भागदक (-अ) स—छोटा बालक, बौना ।

भाउ स—तरल अंश, राव । वि—मोहित, पराजित ।

भाउन स—मत्त होना, सड़ाव, खमीर ।

भाउवर वि, स—मुखिया, प्रधान, इज्जतदार, मातबर ।

भाउ स्त्री—माँ, जननी, माता या कन्याके समान स्त्रीके लिए संबोधन (बच्चा—, सास, बच्चा—, पतोहू) ।

भाडा (क्रि परि ३)—मत्त होना, उमंगसे उछलना ; सड़ना, खमीर पैदा होना ।

भाडान (-नो), भाडानो (क्रि परि १०)—मत्त करना, मोहित करना सड़ाना ।

भाताभाति सं—मत्त-सा बतोंव, उद्धल-कूद ।
 भातान वि—मतवाला, शराबी ।
 भातुःशना = भातुशना ।
 भातून सं—मामा । स्त्री—भातुशानी ।
 भातुद वि—माता सम्बन्धी । [वध करनेवाला ।
 भातुषाजी, (-भातुद, -शला) वि, सं—माताका
 भातुषा सं—माताकी मृत्युके बाद उनके
 श्राद्धादिका कर्तव्य और उसका भार ।
 भातुषक (-अ) सं—माताकी तरफके आदमी,
 नानाके घरके लोग । [मौसी ।
 भातुशना, भातुःशना स्त्री—माताकी बहिन,
 भातुछ (-अ) सं—माताके स्तनका दूध ।
 भातुशना, (-शना) वि—भातान मतवाला,
 मत्त, लवलीन । [सीधी रेखा ।
 भातु सं—मात्रा, परिमाण, अक्षरके ऊपरवाली
 भातुष (-अ) सं—श्रद्धाकाव्रता, श्रेष्ठा डाह,
 दूसरेकी उन्नति देख कर मनमें जलन ।
 भातु सं—मस्तक, सिर, बुद्धि, चोटी, छत ;
 मुखिया । —छेहू कदा क्रि—आत्म-सम्मान या
 अहंकार दिखाना । —शोभा भातुषा क्रि—
 बहुत शरमि दा होना । —काणे, —थोडा
 क्रि—घरती पर सिर धुनना । —थोडा सं—एक
 कसम । —थोडा क्रि—हानि करना, नुकसान
 पहुँचाना, सिर खाना । —भातुष सं—पागल-
 पन, सिद्ध । —शत्रु सं—उत्तेजना, क्रोध ।
 —शनाक्रि—नाक घुसाना, हस्तक्षेप करना ।
 —शना सं—सिरके बाल साफ करने या तेल
 छग घित करनेका एक मसाला । —भातु सं
 —सिर-धूमना । —शना सं—शिरःश्रेष्ठा सिर-
 दद । —भातुषा वि—भातुषाके सनकी । —
 भातु सं—सिर-दद ; भातु जिम्मेवारी, गरज ।
 —श्रेष्ठा वि—लज्जा या अपमानसे सिर नीचा ।
 भातुषा भातुषा क्रि वि—सीमा तक,
 लयालय ।

भाताला, भातान (-अ) वि—बुद्धिमान,
 माथावाला । [का खाने योग्य कोमल अंश ।
 भाति, भाति सं—खजूर आदि पेड़के सिरके भीतर
 भातुष वि—मथुरा-सम्बन्धी । सं—श्रीकृष्णकी
 मथुरा-लीला ।
 भातु सं—एक प्रकारका ढोल ।
 भातुष सं—एक खट्टा फल, एक कंटीला पेड़ ।
 भातु स्त्री—मादा ।
 भातुष सं—चटाई । [बाँधते हैं ।
 भातुषि सं—कवच, जिसमें दवा भर कर बाँहमें
 भातुष (-अ) वि—मेरे सहस्र ।
 भातुष स—मद्रास । भातुषी वि—मद्रास
 सम्बन्धी । सं—मद्रास-निवासी ।
 भातुषा सं—मदरसा । [संग्रह ।
 भातुषी सं—मधुकरी, अनेक गृहोंसे भिक्षा-
 भातुषि वि—दुपहरका ।
 भातुष वि—बीचवाला, मध्यस्थ । भातुषिक
 वि—दो श्रेणियोंके बीचवाला ।
 भातुषा सं—पृथ्वीके मध्य भागका वह
 आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर
 खींचता रहता है ।
 भातुषिक = भातुषि ।
 भातु सं—पमाना, तौल, नाप । —छि (-अ)
 सं—नक्शा । —दु (-अ) सं—दूनादु
 तराजू ; भातुषा पैमाना । —भातुष सं—
 ग्रह-नक्षत्रोंका दर्शन-स्थान ।
 भातु सं—इज्जत, प्रतिष्ठा, प्रेमीके ऊपर कोप ;
 वह कार । —भातुषा (-नो), (-ना) क्रि—
 इज्जत गंवाना । —भातुषा (-नो), (-ना)
 क्रि—मानमोचन करना, रुठे हुए प्रियको
 मनाना । —द (-अ) वि—इज्जत देने या
 रखने वाला । —भातु (-अ) स—अभिनन्दन-
 पत्र । —शानि सं—सम्मानकी हानि,
 वद्वज्जती ।

मान, मानक स—एक बड़ी जातिका बंड़ा।

मानठ स—मानसिक मनौती, मानता।

मानन, मानना स—मान, इज्जत। माननीय (-अ) वि—इज्जतदार। (खत लिखनेमें मान्य पुरुषके लिए—माननीयेश्वर और स्त्रीके लिए—माननीयाश लिखा जाता है)।

मानसिक वि—मनका। स—मनौती।

माना स—मनाही, मुमानियत।

माना (क्रि परि ३)—आदर करना, मान देना, विश्वास करना, समझना, स्वीकार करना, मानना।

मानान वि—सुदृश्य, सुंदर, योग्य। स—शोभा, योग्यता। मानानगई वि—योग्य, उपयोगी, ठीक, शोभा देनेवाला।

मानान (-नो), मानानो (क्रि परि १०)—शोभा देना, अच्छा प्रतीत होना (वैश मानिअच्छे); स्वीकार कराना।

मानिक स—लाल रंगका एक मणि; प्यारका सम्बोधन। —छाड़ स—बगुलेकी जातिका एक चिड़िया, (व्यंगमें) दो मित्र जो सदा एक-साथ रहते हैं या जिनका स्वभाव एक-सा है।

माश्व स—मनुष्य, आदमी, व्यक्ति; पालन-पोषण, परवरिश (छेल—करा)। वि—मनुष्य सम्बन्धी। (छेल—, स—बालक, बच्चा। बन—, स—आदमीकी शकलका एक बड़ा बंदर, बनमानुस। जान—, स—भला आदमी। बख्ख—, स्त्री—औरत)।

माने स—अर्थ, तात्पर्य, आशय।

मानावात्र स—जंगी जहाज man-of-war

माना (-अ) स—मद होनेका भाव, कमी, छस्ती।

माश्व (-अ) वि—माननीय, मानने योग्य।

स—मान, इज्जत। माश्वि स—मान, इज्जत।

माप स—नाप; क्षमा। मापक वि, स—नापनेवाला। मापकाठि स—पैमाना।

मापजोख स—नापजोख, नाप-तौलकर परिमाण या वजन निर्धारण।

मापा (क्रि परि ३)—नापना।

माफ, माप स—माफना क्षमा, माफी, छूट (ढाकात्र अफ—)।

माफिक वि—तुल्य, समान, अनुरूप।

माफेड: क्रि—डरो मत।

मागड़ि स—घावकी पपड़ी। [—मुकदमेबाज।

मागला स—गकदमा मुकदमा। —वाङ वि, स—

माग, मागू स—मागून मामा। मागाठ (-अ),

मागाठा वि—ममेरा। मागाशुत्र स—ममिया

ससर। मागौशाण्डू स्त्री—ममिया सास।

मागूली वि—मामूली, साधारण, प्रचलित, चलता।

माग क्रि वि—मागू सहित, मै।

माग स—ममता, स्नेह, प्रेम, जादूगरी, कपट,

अज्ञान, अविद्या, प्रकृति, ब्रह्मकी

शक्ति जो ससारकी कल्पना करती

है। —काग स—कपट खदन। —

खान स—गृहस्थीके बंधनका फंदा। —वग

क्रि वि—ममताके कारण। —वाह स—वेदांत

का अद्वैतवाद जिसमें यह ससार ब्रह्म-शक्ति

मायाकी कल्पनामात्र माना जाता है।

माग स—कामदेव; प्रहार, मार। —श्व,

(—वात्र) स—मारपीट। —कूटे, (-टो)

वि—छोटी छोटी बात पर मार-पीट करनेवाला।

—शूथ (-अ), (-शूथ) वि—मारनेमें तैयार

या उद्यत। [या कौशल, चालबाजी।

मागणैठ (मारपेच), मागणाठ स—बातोंका पेच

मागवाड़ी=मागवाड़ी। [गोली।

मागवन, मागव स—सगमर या शीशेकी

मागशेठ स—महाराष्ट्र, मराठा। [जाना)।

माग वि—मृत, नष्ट (-वाडा, —गडा, मर

नाश्र (क्रि.परि ३) —मारना बध करना, हत्या करना ; खुराना (ठोका—, शब्दे—) ; पंढ करना (दब—) ; घसाना (दन—) ; पीटना, ठोंकना, ठोंक कर बैठाना, लगाना ; चिपकाना ; करना (दिशदकि—, दिल्ली करना, इकब्रानी की बातें करना) । नान—, चाल मारना । दृष्टि—, ऐश आराम करना । डैदि—, भाँकना । छूटे—, लोड़—, दौड़ पड़ना । नाद—, कूद पड़ना । नाज्जोब—, धोतीके सामनेका बटोरा और लटकाया हुआ अंश पैंरोक बीचमेसे पीछे ले जाकर कालके साथ कस कर खोंचना) । वि—लगा हुआ (ठिठ्ठि—, नाई—) । नाज्जोबि स—मारपीट ।

नाज्जोबि स—मराठा । नाज्जोबि स—मराठी भाषा ।

नाज्जोब (मारात्तक) वि—प्राणनाशक, मार डालनेवाला ; भीषण ।

नाज्जि, नाज्जो स—बडक मरी, बवा (—उद, नश—) । [देश-निवासी ।

नाज्जोबो, नाज्जोबो स—मारवाड़ी, मारवाड़-नाई स—निशान चिह्न (—नाश्र क्रि—चिह्न लगाना । वि—चिह्नित) । [कपड़ा ।

नाज्जिन स—अमेरिका-निवासी ; मारकीन नाज्जि (-अ) स—पय, रास्ता (खान—, गाँवो—) ; मलद्वार ।

नाज्जि स—अंग्रेजी मार्च मास ।

नाज्जिना स—क्षमा, माफी । नाज्जिना (-अ) वि—क्षमाके योग्य ।

नाज्जिन = नाज्जिन ।

नाज वि—ऊँचा (—इनि) । स—एक जाति ; माला (शड़—) ।

नाज स—माल, बस्तु, धन ; मालगुजारी, मदिरा । —नाना = दानानां दाना । —खज्ज स—मालगुजारी देनेवाला । —खज्जि स—शब्द, शब्दना मालगुजारी । —खनि स—

मालगुजारी पर लिया हुआ खेत । —नाज स—उपद्रव सामग्री, बनानेका सामान ।

नाज्जोबि स—नाश्र में देखो ।

नाज्जि (-अ) स—फूलोंका बगीचा ।

नाज्जोब, नाज्जो स—मालपूजा ।

नाज्जिनि स—ऊँची भूमि ।

नाज्जो स—अधरा, मिट्टीका बड़ा कसोरा ।

नाजो स—नाज, शद माला, गजरा ; समूह श्रेणी । —दर, —नाद वि, स—माला

बनानेवाला । —दर स—विवाहके समय दुलहे-दुलहिनमें माला-बदलौवल ।

नाजो स—नारियल बेल आदिकी खोलीका कटोरा-सा टुकड़ा । [मल्लाह ।

नाजो, नाजो स—ज्जिन एक जाति, धीवर,

नाजोइ स—इक्ष्वर नद मलाई ।

नाजिना स—नाजो माला ।

नाज्जि स, वि—ज्ञान, बोध, मालूम ।

नाजो स—ज्जिन धीवर, मल्लाह ।

नाज (-अ) स—माला ।

नाजो स—मल्लाह, माँझी ।

नाद, नादकनाइ स—उरदकी दाल ।

नाद स—माशा, ८ रत्तीकी तौल ।

नाज स—मांस ; महीना । —नाज स—महीनेका अंतिम दिन । —नाश्रिना स—मासिक वेतन । नाज्जोब (माशोहारा) स—मासिक वृत्ति या सहायता ।

नाज्जोब (-तो) (-इला) वि—मौसैरा ।

नाज्जोब स—मौसिया सहूर । स्त्री—नाज-नाजो । [पत्रिका ।

नाजिक वि—हर मासका । स—मासिक

नाजो, (-जि) स्त्री—मौसी ।

नाज्जि स—शुल्क, महसूल, भाड़ा ।

नाज्जि स—मस्तूल ।

नाश्रिना, नाश्रिनि स—मासिक वेतन ।

भाषिण (-अ) सं—एक जाति ।

भाषु स—महावत ।

भिडेक्षिमा स—अजायब घर ।

भिडेनिजिगानिठि स—नगरकी सफाई आदिका प्रबंध करनेवाला सस्था, म्युनिसिपलिटि, नगरपालिका ।

भिष्टवि स—मिसरी ।

भिष्टा, बिष्ट वि—भिथा भूठा । क्रि वि—वृथा ।
—भिष्टि क्रि वि—भूठमूठ, निरर्थक ।

भिष्टिन स—भावावावा जलूस ; मुकदमेका कागजपत्र । [फैसला ।

भिष्टे स—भिल मेल । —भाटे स—निबटेरा,

भिष्टेभिष्टे स—दिमदिमाना, बार बार आँखें खोलना और बंद करना । भिष्टि-भिष्टि क्रि वि—दिमदिमाते हुए । स—अधखुली आँखोंको दृष्टि । भिष्टेभिष्टे वि—दिमदिमाता हुआ ; कपटी (—शत्रुता) । [होना, खतम होना ।

भिष्टो, भेष्टो (क्रि परि ५)—चुकना, सम्पन्न भिष्टोन (-नो), भिष्टोना, भिष्टेना, भेष्टोना (क्रि परि ११)—समाप्त करना, निबटाना ।

भिष्टा, बिष्ट वि—भिष्टि मीठा, मधुर ।

भिष्टाई, भेष्टाई स—भिष्टाई मिठाई ।

भिष्ट (-अ) वि—परिमित, थोड़ा, संयत ।
—भाष्टी वि—कमखर्च । —भाष्टि स—कमखर्ची । —भाष्टी वि—कम बोलने वाला ।

भिष्टव स—बारातमें दूल्हेके साथ जानेवाला लड़का, शहबाला ।

भिष्टा, बिष्ट स—मित्र, दोस्त ।

भिष्टाक्षर=भिष्टाक्षर ।

भिष्टाक्षर स—संयत आचरण । भिष्टाक्षरी वि—संयत आचरण करनेवाला, संयमी ।

भिष्टाक्षि स—मित्रता, दोस्ती ।

भिष्टाक्षर, भिष्टाक्षन स—अल्प भोजन ।

भिष्टाक्षरी, भिष्टाक्षी वि—अल्प-भोजी ।

भिष्टि स—नाप (फख—) ; ज्ञान ।

भिष्ट (-अ) स—दोस्त ; कायस्थोंकी एक श्रेणी और उपाधि ।

भिष्टाक्षर स—पद्यके दोनों चरणोंके अंतिम अक्षरोंमें तुकवाला छंद, तुकांत ।

भिष्टा, बिष्टा वि—भिष्टा भूठा, कपटी । क्रि वि—निरर्थक । स—भूठ । भिष्टाक्षर, भिष्टाक्षर स—भूठा बर्ताव, कपट आचरण । भिष्टाक्षर स—भूठी बात । भिष्टाक्षरी स, वि—भूठ बोलनेवाला । स्त्री—भिष्टाक्षरी ।

भिष्टाक्षर=भिष्टाक्षरी ।

भिष्टि स—बिनती, प्रार्थना, अर्ज ।

भिष्टिभिष्टि स—क्षीणताका लक्षण प्रकाश (—क'त्र कथा बनी, —क'त्र आछन बनी) । भिष्टिभिष्टि वि—धीमा ।

भिष्टा, भिष्ट स—पुरुष, मर्द (तुच्छार्थमें) ।

भिष्टा स—मीना, सोने चांदी आदि पर किया जानेवाला रंगबिरंगा काम ।

भिष्टा स—मीनार, स्तंभ ।

भिष्टि=विनि ।

भिष्टि स—मिनट, ६० सेकंड ।

भिष्टा स—मियाँ, महाशय ।

भिष्टाक्षर स—मीआद, समय, कद । भिष्टाक्षरी वि—मीआदी (—ब्र) ।

भिष्टान (-नो), भिष्टाना, भिष्टेना (क्रि परि ११)—भुरभुरा न रहना, नरम नम या मन्द हो जाना । वि—नरम, उत्साह-हीन ।

भिष्टाक्षर=भिष्टाक्षर ।

भिष्ट स—मेल, एकता, छलह, समता, दोस्ती, तुक, कपड़े आदि तैयार करनेकी मिल या कारखाना ।

भिष्टन स—मिलाप, मेल, संयोग, भेंट, एकता ।

भिष्टनाञ्छ (-अ) वि—जिस कहानीके अंतमें नायक-नायिकाका मिलाप होता है ।

बिना, बिना (क्रि परि ५)—मिलना, जुड़ना, जुटना, प्राप्त होना, समान होना, ठीक होना, तुकान्त होना । बिनाबिना, बिनाबिना सं—मेल-मिलाप ।

बिना, बिना (मैला) (क्रि परि ५)—आँखें खोलना, ताकना (जाँच में देख) ।

बिना (-नो), बिनाबे, बिनाबे, बिनाबे (क्रि परि ११)—मिलाना, तुक मिलाना, मिलान करना, गल जाना, लुप्त होना (भूथ नष्ट या आकाश में बिना बिना) ।

बिना (-अ) वि—संयुक्त, मिला हुआ, इकट्ठा, प्राप्त ।

बिना सं—मिश्रण, मेल । वि—स्याही-सा (-दान) । बिनाबिना सं—कालेपनका लक्षण प्रकाश । बिनाबिना वि—काला ।

बिना, बिना (क्रि परि ५)—मिलना, मिश्रित होना (तेज बल में) । बिनाबिना, बिनाबिना सं—मेलजोल, घनिष्टता ।

बिना (-नो), बिनाबे, बिनाबे, बिनाबे (क्रि परि ११)—मिलाना, घोलना । वि—मिला हुआ, मिश्रित, घोला हुआ ।

बिना, बिना, बिना सं—मिश्रण, मिलावट ।

बिना वि—मिलनसार, मेली, जलदी हिलमिल जानेवाला ।

बिना (-अ) वि—मीठा, मधुर, छत्कर । बिना, बिना सं—बिनाबे मिठाई, मीठी वस्तु । बिना सं—मिठास । —बू सं—गृहस्थकी प्रसन्नता के लिए मेहमानका थोड़ी मिठाई खा लेना ।

बिना (-अ) सं—गायत्री खीर ; मिठाई ।

बिना सं—मिस्र देश Egypt.

बिना सं—दाँत काला करनेका मजन ।

बिनाबे स्त्री—अगरेजोंकी लड़की (नौकर-नौकरानियोंकी भापामें) ।

बिना सं—कारीगर, मिस्तरी । बाइ—, सं—थवई । बूबा—, सं—बड़ई । [मोतीचूर ।

बिना वि—महीन, सूक्ष्म । —नाना सं—

बिना सं—सूरज, सूर्य ।

बिना सं—बूथ मछली ।

बू सं—बानि में (ग्रामीन) ।

बू सं—बूख मोती ।

बू सं—दलिया, दूँड़ि कली, कौपल । बू सं (-अ) वि—जिसमें कलियाँ आयी हों, अधखिला ।

बू (-अ) वि—थोना खुला, छटा हुआ, मुक्ति प्राप्त, छोड़ा हुआ, साफ (बड़ई—बू) ।

—दूँड़ि वि—गना हाड़ि नि.स कोच, खुलमखुला । —दूँड़ि, —दूँड़ि वि, स्त्री—खुले केशवाली । —दूँड़ि वि स्त्री—खुली वेणी-वाली । —दूँड़ि (-अ) वि—खुले हाथों दान करनेवाला ।

बू सं—बानन, बाग मुह, मुख, चेहरा ; प्रवेशका भाग, छिद्र, मुहाना ; आरंभ ; नोक ; सामना ; प्रधान । —बानग बू क्रि—मुख खोलना या चलाना । —बू क्रि—घमकाना । —बू क्रि, —बू क्रि क्रि—भदी वाते कहना, गाली देना । —बू क्रि क्रि—बूबाने मुँह बिगाड़ना । —बू क्रि क्रि—क्रोध आने पर कुछ न कह कर मुँह खींचे रहना । —बू क्रि क्रि—मुँह ताकना, आशा करना, —बूबान (-नो) क्रि—मुँह चलाना, लगातार गाली देते रहना । —बू क्रि—दूँड़ि या दुलहिनको आशीर्वादके लिए देखना । —बू क्रि—सुरन आदिके खानेसे मुँह खुजलाना । —बू क्रि क्रि—नाक-सों सिकोड़ना । —बू (-खचन्द्र-अ) सं—चंद्रमा-सा छंदर मुख । —बू सं—स लज्जासे मुँह पीला पड़ना । —बू वि

—लज्जिला मुँहचोर । —छवि (-खच्छवि)
सं—चेहरा । —बागछा, —नाछा सं—
फटकार । —गछ (-खपत्र-अ) सं—भूमिका,
आर भ । —गछ (-खपद्-अ) स —कमल-सा
सुंदर मुख । —गछ (-खपात्र-अ) सं—
अगुआ, मुखिया । —गछा वि—जिसका
मुँह जल गया है (एक गाली) । —गछा
वि—स्पष्टवक्ता । —गछान (-खबै-) स
—मुँह फैलाना । —लज्जा (-खभ-) स —
मुँह बिगाड़ना । —लज्जा सं—क्रोध
या दुखके कारण मुखका भारीपन ।
—लज्जा स—इज्जत बचाना । —लज्जा
सं—चेहरेका लावण्य । —लज्जा वि—
स्वादिष्ट । —लज्जा सं—भोजनके बाद खाने
योग्य पान मसाला आदि । ग्रंथ (-अ) वि
—कठस्थ, याद, मुखमें स्थित । ग्रंथ छन-
कानि (लज्जा) कि—मुँहमें कालिख पोतना ।
ग्रंथ वि—वाचन अधिक बोलनेवाला, बातूनी,
आवाज करता हुआ, अगुआ, मुखिया ।
लज्जा—ग्रंथा । ग्रंथा (-अ) वि—आवाज
करता हुआ ।
ग्रंथा स —शवके मुखमें अग्नि प्रदान ।
ग्रंथान (-नो), ग्रंथाना, ग्रंथाना (कि परि १३)
—पेर बढ़ाये रहना, मुहतक आना ; चौकन्ता
रहना ।
ग्रंथाग्रंथ, ग्रंथाग्रंथ कि वि—आमने-सामने ।
ग्रंथाग्रंथ (-अ) स —ग्रंथ थुक ।
ग्रंथाग्रंथ, (-जौ) =ग्रंथाग्रंथाग्रंथ ।
ग्रंथि सं—सूरन आदिकी आँख या गाँठ ।
ग्रंथि वि—मुख वाली (छल—, गछाग्रंथ—) ;
ओर (अलग्रंथि) ।
ग्रंथग्रंथ =ग्रंथाग्रंथाग्रंथ ।
ग्रंथ ग्रंथ कि वि—लोगोंके मुँहसे छन कर,
न लिख कर, पहलेसे तैयारी न करके ।

ग्रंथो वि—मुखवाला (गछाग्रंथ—) ; ओर
(अग्रंथ—) । [एक उपाधि ।
ग्रंथाग्रंथाग्रंथ, ग्रंथाग्रंथ, ग्रंथग्रंथ सं—ब्राह्मणोंकी
ग्रंथाग्रंथ स—नकली मुख, चेहरा ।
ग्रंथ स—मूंगकी दाल ।
ग्रंथा सं—मोटा रेशम ।
ग्रंथ सं—मुगदर, गदा, हथौड़ा ।
ग्रंथ (-अ) वि—मोहित, आसक्त, बालक-सा
भोला ; मूर्ख ।
ग्रंथन =ग्रंथन । [शिवा कि—मुसकुराना ।
ग्रंथि सं—मुसकान । ग्रंथिग्रंथ शिवा, ग्रंथि
ग्रंथान (-नो), ग्रंथाना, ग्रंथाना, गछाग्रंथाना
(कि परि १८)—ग्रंथान मरोड़ना, पेंठना,
बटना ।
ग्रंथग्रंथ सं—ग्रंथग्रंथ देखो ।
ग्रंथनका सं—स्वीकार पत्र, मुचलका ।
ग्रंथि सं—धातु गलानेकी कटोरी ।
ग्रंथो, ग्रंथि स —ग्रंथकात्र मोची, चमार ।
ग्रंथग्रंथ स —एक फूलका पेड़ ।
ग्रंथग्रंथो सं =ग्रंथग्रंथो ।
ग्रंथग्रंथ कि वि—एकदम, बिलकुल ।
ग्रंथ, गछा (कि परि ६)—गछा पोंछना, साफ
करना ।
ग्रंथान (-नो), ग्रंथाना, ग्रंथाना, गछाग्रंथाना (कि
परि १३)—गछाग्रंथाना दूसरेका अग्र पोंछना ।
ग्रंथग्रंथ, ग्रंथग्रंथ सं—नाच गानका प्रदर्शन ;
पावनेमेंसे छूट ।
ग्रंथ (-अ) स —एक तृण या घास, मूँज ।
ग्रंथ स—मुट्टी, दस्ता, बेंट ।
ग्रंथ, ग्रंथि, ग्रंथो स—मुट्टी, दंडी हुई हथेली ।
वि—मुट्टीभर । [लावा ।
ग्रंथि स—गुड़ या चीनीका रस मिला-हुआ
ग्रंथग्रंथ स—भुरभुरी चीजके टूटनेका शब्द ।
ग्रंथग्रंथ वि—भुरभुरा ।

शूझा, शूझा 'सं'—मछलीका सिर ; सिरा, छोर ।
शूझा, शूझा वि—मूँड़ा हुआ (—माथा), धय-
प्राप्त (—खाँटा) ।

शूझा, मोझा (क्रि परि ६)—तह करना, मोड़ना,
लपेटना । वि—तह किया हुआ, लपेटा हुआ ।
शूझान (—नो), शूझानो, शूझनो, मोझानो (क्रि
परि १३)—मोझा कर मूँड़ना, सिरके बाल
बनाना ; कतरना ; छाँटना । वि—मूँड़ा
हुआ, छाँटा हुआ ।

शूझा नाथन, (शूझा—) स सुखा मक्खन ।
शूझि स—फरही, मुरमुरा ; मछलीका सिर
(नाछर—बछे) ; कपड़ेका तह किया हुआ
किनारा, ओढ़ना (लप—लपटा) ।

शूझा स—शूझा मछलीका सिर ।
शूझापाठ (मुगडपात) स—सिर काटना, सजा ।
शूझ सं—मूत पेशाव ।
शूझा, मोझा (क्रि परि ६)—पेशाव करना ।
शूझान (—नो), शूझानो, शूझनो, मोझानो (क्रि
परि १३)—पेशाव कराना ।

शूझवद्धा वि—मुतफरिक, तरह-तरहका ।
शूझनो, शूझनो स—गुमास्ता, मुनीम, एजट ।
शूथा, शूथा सं—मोथा ।
शूठा (क्रि परि ६)—मूँड़ना ।
शूठि (—अ) वि—प्रसन्न, खुश, मूँटा हुआ ।
शूठी, (—दि) सं—मोठी, बनिया, पनसारी ।
—थाना सं—मोठीखाना, पनसारीकी दुकान ।
शूठा (—अ) स—मूगकी ढाल ।

शूठात्र स—शूठा ।
शूठे स—मुद्दे, वादी, अभियोक्ता ।
शूठ सं—मोआद, अवधि ।
शूठाकदाश, (—ल्ल—) स—शव होने और जलाने
वालों, चण्डाल, डोम ।
शूठाकर स—छापनेवाला, मुद्रक । —श्रमा
स—छपाईकी गलती ।

शूठादन सं—मुद्रण, छपाई ।
शूठानाव सं—किसी अंगके हिलाने या
वातचीतमें किसी एक खास शब्दके दुहरानेकी
आदत, तकिया कलाम, मखुन तकिया ।
शूठाण (—अ) स—सीसेका भस्म, मुरदाख ।
शूठिका सं—छाँटा अंगूठी ।
शूठे स—मुशी, लेखक, विद्वान । शूठेदान
स—विद्वत्ता, पाण्डित्य ।

शूठेव स—मुसिफ ।
शूठे वि—मुफ्त, बिना दामका ।
शूठे वि—मरणासन्न ।
शूठि स—मुर्गी ।
शूठस स—मूर्छा, बेहोशी ।
शूठि सं—मूर्ति, शकल, चेहरा ।
शूठ स—ताकत, सामर्थ्य ।
शूठो, शूठो सं—रक्षक, बली । शूठिदान
स—मुखवी-सी चाल (व्यगमे) ।
शूठि स—नर्मा, डननानी नाली, मोरी ।
शूठ स—शव, मुरदा । शूठिकाराण—
मुद्राकरण ।

शूठवी वि—स्थगित, मुलतवी ।
शूठा, शूठा स—मूली ।
शूठक, शूठक सं—देश, मुलक ।
शूठिक स—कट्टे मुक्किल, दिक्कत । —बागान
सं—स कट-निवारण ।
शूठान (—नो), शूठानो, शूठनो, मोषानो
(क्रि परि १८)—दगिबा वाटवा उत्साह भंग
होना, दिल टूटना, मुरझाना ।
शूठन, शूठन, शूठन स—छंकिब मोना
मूसल, मुगदर । शूठनवार, (—धात्रा) सं—
मूसलवार ।
शूठा सं—धातु गलानेकी कटोरी, घड़िया ।
शूठ (—अ) सं—अढकोष, फोता ।
शूठि स—मुट्टी, बेंट, दस्ता । वि—मुट्टीभर ।

—डिक्का स'—मुट्टी भर चावल आदिकी भिक्षा ।

—अथ (-अ) वि—इने-गिने, थोड़े । —आग

स'—ढोटेका उबध टोटेका दवा, चुटकुला ।

भूगमि स'—मुसलमान ।

भूगमि स'—मुसाफिर, यात्री ।

भूगमि स'—भगड़ा मसौदा ।

भूगमि, भूगमि, (-ब्री) स—केशानो मुहरिर्, करणिक । [बार बार ।

भूगमि क्रि वि—पुन । भूगमि क्रि वि—

भूगमि वि=भोशमान ।

भूगमि वि—आवा गूंगा ।

भूगमि (-अ) वि—मूर्ख ; मुग्ध ।

भूगमि (-अ) स'—पेशाब । —कृष्ण (-अ) स'—
एक रोग जिसमें पेशाब कष्टसे होता है ।

भूगमि स'—भूगमि मूर्ति ।

भूगमि (-अ) वि—आवा वेवकूफ, अपढ़ ।

भूगमि स'—भिकड़, गोड़ा जड़, आदि कारण,
उत्पत्ति-स्थान । वि—प्रथम, प्रधान । —
गोधन स'—प्रधान गायक । —धन स'—
पूजा । —भूगमि (-अ) स'—दोषभय अपने
इष्टदेव या देवीका मंत्र ।

भूगमि स'—भूगमि मूर्ति । वि मूलस्वरूप ।

भूगमि स'—मूल कारण ।

भूगमि (-अ) वि—आदि कारण रूप ।

भूगमि, भूगमि स'—जड़से उखाड़ना ।

भूगमि, भूगमि स'—इन्द्र मूसा, चूहा ।

भूगमि (-अ) स'—हिरन, मृग । —नाभि, —भट

स'—कछरो कस्तूरी । —ब्राह्म, भूगमि (-अ)

स'—सिंह । भूगमि स्त्री, वि—मृगलोचनी ।

भूगमि स'—भूगमि रेडू जातिकी एक मछली ।

भूगमि, भूगमि स'—मिट्टी (भूगमि, भूगमि) ।

भूगमि (-अ) वि—मरा हुआ, मुरदा । भूगमि स'

—मृत शरीर, शव, मृत्युके कारण अशौच ।

भूगमि (-अ) वि—मुमुर्षु, मरणासन्न । भूगमि

वि—विगड्गीक रंडुआ । भूगमि वि=भूगमि ।

भूगमि वि, स्त्री=भूगमि ।

भूगमि वि, स्त्री=भूगमि ।

भूगमि स'—भूगमि ।

भूगमि स'—पत्थरका कोयला ।

भूगमि स'—अंग्रेजी मई महीना ।

भूगमि (मैवा) स'—मैवा ।

भूगमि वि—वनावटी, नकली, जाली ।

भूगमि स'—बादल । —कृष्ण क्रि—बादल छा

जाना । —आवा क्रि—बादल गरजना ।

भूगमि स'—घटा । —भूगमि (-अ) स'—

बादलका गर्जन । भूगमि (मैवा) वि—

भूगमि बादल छाया हुआ ।

भूगमि, भूगमि स'—चेहरे पर की चित्ती ।

भूगमि स्त्री—भूगमि विनी मछली बेचनेवाली ।

भूगमि, भूगमि स'—खान मछुआ । वि—मछली

सम्बन्धी, मछली-सा, मछली खानेवाला ।

भूगमि स'—मछलीका बाजार ।

भूगमि (-अ), भूगमि वि—मकला, दूसरा (—

छेले) । भूगमि (मेज्दा) स'—मकले

भाई साहब ।

भूगमि स'—मिजाज । भूगमि वि—मिजाज-

दार, घम डी । [जमीन ।

भूगमि, भूगमि स'—भूगमि फल, पक्षी बनी हुई

भूगमि वि=भूगमि ।

भूगमि वि—मिट्टीका बना, मिट्टी-सा ।

भूगमि, भूगमि स'—कलेजी ।

भूगमि स'—मिट्टी । [रेंडर] ।

भूगमि वि—मैदान सम्बन्धी, मैदानका (—

भूगमि (मैदा) स'—लेड़ा भेड़ा । वि—भेड़ा-सा

मूख, वेवकूफ ।

भूगमि स'—पदक, मेडल ।

भूगमि (मैथर) स'—मेहतर । स्त्री—भूगमि ।

भूगमि स'—मेथी ।

मेधि, मेथी सं = गाथि ।

मेना (मैदा) वि—मादा-सा, निकम्मा ।

मेनाभात्र वि—वेवकूफ, नालायक ।

मेदि सं—मेहदी ।

मेहर वि—कोमल, चिकना, काला । [शर्मीला ।

मेनी सं—विल्ली । —गूथा वि—नाछूक

मेघान सं = मिशान ।

मेघ स्त्री—कन्या, लडकी; औरत । —भाश्व

स्त्री—औरत, नारी, स्त्री, पत्नी । मेघनौ

वि—स्त्री-सा ।

मेघवाइ सं—मिरजई ।

मेघाग (मैराप) सं—मण्डप ।

मेघागत सं—मरम्मत, संस्कार । मेघागति सं
—मरम्मतका काम या उसकी मजदूरी ।

मेग सं—मिलन, एकता, छलह, विवाहमें
कुलका मेल (झुनिश—) ।

मेला (मैला) वि—अनेक, बहुत । स—मंला,
नुमाइश ।

मेला (मैला) (क्रि परि ५)—कपडा आदि
सूखने देना ।

मेला, मेलान क्रि = मिला, मिलान ।

मेशा, मेशान क्रि = मिला, मिलान ।

मेव सं—भेड़ा भेड़ा ।

मेस (मेस) सं—होटल जहाँ बहुतसे आदमी
रहते और रुपये दे कर खाते हैं ।

मेसा सं—मौसा ।

मेशगनि सं—एक कीमती लकड़ी । [—मजदूरी ।

मेशन सं—मिहनत । मेशनति, मेशनताना स

मेशसि सं—मेदि मेहदी ।

मेशरवान वि—मिहरवान ।

मेख (मइत्र-अ) वि—मित्र सम्बन्धी । मेख,

मेखर (-अ) सं—ब्राह्मणोंकी उपाधि ।

मेकरबो वि—जिसकी मालगुजारी नियत है ।

मेकाविला सं—मुकाबला, फंसला, निवेदना ।

मेकाव सं—मुकाम, रहनेका स्थान ; व्यापार
का स्थान ।

मेकात्र सं—मुखतार । [दृढ ।

मेकाग (मोक्खम) वि—निर्वात अव्यर्थ, अचूक,

मेगन सं—मुगल । मेगनाइ (मोगलाइ)

वि—मुगलका ।

मेा सं—नोक, सिरा, मूँछ ।

मेा स—पाक मरोड़, ऐंठन ।

मेाफान (-नो), मेाफाना = मूँछान ।

मेा सं—केलेका फल ।

मेाह, मेा सं—गोंक मूँछ ।

मेाहा, मेाहान = मूँहा, मूँहान ।

मेा सं—बला, गोंठि गठरी, मोटरी, बोझ ।

वि—कुल, सब, संक्षेपमें कथित (—रथा) ।

मेागिगि क्रि वि—मोटे हिसाबसे । मेागे

क्रि वि—एकरावसे एकदम, बिलकुल, सिर्फ ।

मेागेर उगत्र क्रि वि—सब ओर विचार करके ।

मेागेन सं—शोकान मोड़ना (झूनि—) ।

मेागे वि—मोटा ; बड़ा, अधिक (—गाशिन,

—ठाका) ; जिसमें कारीगरी नहीं है (—

काज) । —मेागे वि—छूछूछू मोटाताजा ।

मेा सं—बौक मोड, घुमाव ।

मेा सं—भूनिश पुड़िया ।

मेा सं—ग्राम गाँव या दलका मुखिया ।

मेा सं—मुखियापन ।

मेा सं—बेंतका बना ऊँचा गोल आसन,

मोड़ा ; ऐंठन, मरोड़, शरीरकी अकड़ तोड़ना

(आड़ा-मेाडा भाजा) ।

मेाडा, मेाडान = मूड़ा, मूँडान ।

मेाडा, मेाडान = मूडा, मूँडान ।

मेाडावक्र क्रि वि—मुताबिक ।

मेाडावक्र वि—कायम, स्थापित, नियुक्त ।

मेाडि सं—मोती ।

मेाडिचूर, (मडि-) सं—मोतीचर ।

मोदक सं—मिठाई लड्डू ; हलवाई ।
 मोदित (-अ) वि—आनंदित, हर्षित ।
 मोदप्रसवे—आमादप्र हमलोगोंका ; आमादिगके
 हमलोगोंको ।
 मोदक क्रि वि—परंतु, संक्षेपमें ।
 मोना सं—ढेंकीका मूसल ।
 मोमवाति सं—मोमवत्ती ।
 मोश सं—लावे आदिका लड्डू आ ।
 मोर सर्व—आमात्र मेरा ।
 मोरग सं—कूट्टे मुर्गा । स्त्री—मूखी ।
 मोरसा सं—मुरब्बा ।
 मोरा सर्व—आमात्र हमलोग ।
 मोनाकाठ सं—मुलाकात ।
 मोनात्रय वि—मुलायम ।
 मोला सं—मुल्ला, मौलवी ।
 मोय सं—गश्च भसा ।
 मोवड़ान=मूवड़ान ।
 मोमजम, मूखनिर सं—मुसलमान ।
 मोमादेव सं—मुसाहब । मोमादेवि सं—
 मुसाहबी ।
 मोश (-अ) सं—मूर्ख, बेहोशी, भ्रम, अज्ञान,
 मूर्खता मोह, ममता । —मोत्र सं—
 अज्ञानसे भ्रांति । —निजा सं—मायाके
 प्रभावसे अज्ञान, जादूकी निद्रा ।
 मोशडा, मशड़ा सं—सामना, आगेका स्थान ;
 मोरवा ; अभिनयका अभ्यास ।
 मोशु (-अ) सं = मशह ।
 मोशर सं—सालके आरम्भमें दूकानके नये
 हिसाबका खोलना (नूतन थाता—) ।
 मोशाना, मोशना सं—मुहाना, नदीमुख ।
 मोशगान (मोज्जमान) वि—मोह-प्राप्त ।
 मोक्षिक (मउक्ति) सं—मूछा मोती ।
 मोषाक, मूषाक सं—मधुमक्खियोंका छत्ता ।
 मोठाठ, मूषाठ सं—नियत समय पर नशा

पीनेकी इच्छा, अफीम आदि नशीली वस्तुका
 सेवन ।

मोमाहि = मूडेमाहि ।

मोमरा सं—एक छोटी मखली ।

मोरी सं—मूडेवि सौंफ ।

मोरगी वि—मौससी ।

मोनवी सं—मुल्ला, मौलवी ।

मोनाना सं—मुसलमान विद्वानकी उपाधि ।

मोनिक वि मूल सम्बन्धी, आदिका (—
 गवेषणा) । सं—ब्राह्मणों या कायस्थोंको
 एक श्रेणी । —वर्षा ऋतुका, मौसिमी ।

मोश सं—मौसिम, वर्षा ऋतु । मोशवी वि
 मोश सं—म्याँव, विल्लीकी बोली ; जिम्मेवारी
 (—मायनावे के ?) ।

माकमाक (मैजूमैज्) सं—हरारत । माकमाक
 वि—हरारत-सा, बेचैन । [स्ट्रेट ।

माकिष्टे (मंजिस्ट्रेट) सं—जिलाधीश, मजि-
 माके (मैजेन्टा) सं—एक लाल रंग ।

मानेजार (मैनेजार) सं—मनेजर, प्रबंधक ।

माप (मैप) सं—नक्शा, मानचित्र ।

मालेविश (मैलेरिया) सं—मलेरिया बुखार ।

मिशमण वि—मरणासन्न ; उदास ।

मान वि—मलिन, मुरझाया हुआ, उदास,
 अप्रसन्न, थका, दुर्बल । मानिश सं—मलिनता,
 उदासी, थकावट । [वि—नीच ।

मूछ (म्लेच्छ अ) सं—बदन म्लेच्छ, अहिन्दू ।

य

य (ज-अ) सर्व—यत् जितने (—अन, —दिन) ।

यक (जक) सं—यक्ष, जक, प्रेत जो गाढे हुए
 धनका पहरा देता है (यक्रेर धन) ।

यक (जकृत) सं—कलेजी ।

यका (जक्का) सं—तपेदिक ।

वक्षन (जलन) क्रि वि—जब, जिस समय, जिस कारण । —उक्षन क्रि वि—जिस किसी समय, असमयमें, बार बार ।

वक्ष (जग्य -अ) सं—यज्ञ । —वृक्ष सं—बड़ी जातिका गूलर ।

वक्ष (जत्) नर्व—जो, जिस । —विक्षि क्रि—कुछ, थोडा-बहुत । —विक्षिनाति क्रि—जिसके ऊपर और कुछ नहीं है, बहुत अधिक ।

वक्ष (जत-अ) वि—संयत नियमित ; जितना, जितने (—जाद, —जादा, —उक्ष) । —विक्षि क्रि—जो कुछ है सब, जितना ।

वक्षन (जतन) सं—जतन, यत्न ।

वक्षान (जतमान्) वि—यत्नशील, कोशिश करनेवाला ।

वक्षि (जति) सं—छंदके चरणोंके अतमें विराम । —विक्षि (-अ) सं—कामा पाई आदि चिह्न । —विक्षि, —वक्षि (-अ) सं—यथायोग्य स्थानपर यति न रहनेसे छंदा का दोष ।

वक्षि, वक्षी (जति) सं—स न्यासी ।

वक्षद (जतेक्) वि—जितना, जितने ।

वक्ष (जतन-अ) सं—चेष्टा, कोशिश, उद्यम, सेवा, ध्यान । —वृक्षद क्रि वि—यत्नसे । —वक्षन वि—कोशिश करनेवाला । वक्षि क्रि वि—यत्नके साथ, हिफाजतसे ।

वक्ष (जत्र-अ) क्रि वि—जहाँ, जिस विषयमें । —वक्ष (-अ) क्रि वि—जहाँ तहाँ ।

वक्ष (जथा) वि—जैसा, जिस प्रकार, जितना । क्रि वि—जैसे, अनुसार । —वक्षि क्रि वि—जैसी आजा है । —वक्षि क्रि वि—जैसी इच्छा हो, इच्छानुसार । —वक्षि (-अ) वि—जैसा करना उचित हो वैसा । —वक्षि वि—तरतीब-वार । —वक्षि क्रि वि—क्रमसे । —वक्षि क्रि वि—ज्ञानके अनुसार । —वक्षि (-अ) वि—

यथार्थ, ठीक । —वक्षि क्रि वि—जहाँ तहाँ । —वक्षि क्रि वि—नियमानुसार । —वक्षि (-अ) क्रि वि—पहलेकी तरह, वैसे ही । —वक्षि क्रि वि—ज्योंका त्यों, विधिके अनुसार । —वक्षि (-अ) वि—यथायोग्य, यथार्थ, ठीक, ज्योंका त्यों । —वक्षि क्रि वि—रुचिके अनुसार । —वक्षि (-अ) क्रि वि—जैसा शास्त्रमें है । —वक्षि क्रि वि—जहाँ तक हो सके । —वक्षि (-अ) सं—सारी सम्पत्ति । —वक्षि (-अ) क्रि वि—सामर्थ्यके अनुसार । —वक्षि सं—योग्य स्थान, नियत जगह । वक्षि क्रि वि—जहाँ, जिस स्थान पर ।

वक्षि (जयार्थ-अ) वि—ठीक, वाजिय, सत्य ; योग्य । वक्षिः क्रि वि—वक्षिः सचमुच, वस्तुतः ।

वक्षि (जयेच्छ-अ) क्रि वि—इच्छानुसार । वक्षिः सं—स्वेच्छाचार, मनमाना आचरण । वक्षिः वि—मनमाना आचरण करनेवाला । वक्षिः=वक्षिः ।

वक्षि (जयेष्ट-अ) क्रि वि—जितना चाहिये । वि—बहुत, अनेक, खूब । [मुनासिब ठीक ।

वक्षि (जयोपजुक्त-अ) वि—यथोचित, वक्षि (जद्वधि) क्रि वि—जिस समयसे ।

वक्षि (जदि) क्रि वि—अगर, यदि, शायद । वक्षि क्रि वि—निहायत यदि । वक्षि क्रि वि—यद्यपि, अगरचे, ऐसा होने परभी । वक्षि क्रि वि—अथवा यदि । [निर्भर रहनेवाला ।

वक्षि (जद्विष्य-अ) वि—भाग्य पर वक्षि (जत्र-अ) सं—औजार, हथियार, मशीन, अंग ; बाजा, जतर । —वक्षि स—औजार और उसके साथका सामान ।

वक्षि (जत्रना) स—कुश, तकलीफ ।

वक्षि (जत्री) वि, सं—यत्रका चालक, बाजा बजानेवाला ।

बव (जव) सं—जौ ।

बवदीप (जवदीप) सं—जावा टापू । [बवनी ।

बवन (जवन) स—म्लेच्छ, अहिन्दू । स्त्री—

बवश्च (जव-अ-स्थव-अ) वि—स्थगित, जिसका निबटेरा न हुआ हो ।

बवागू (जबागू) स—जौका म ड ।

बवानिका (जवानिका), बवानौ सं=बवान ।

बविष्ठ, बवौयान् (जबीयान्) वि—कनिष्ठ, छोटा ।

बवे (जवे) क्रि वि—यथन जब ।

बम (जम) सं—यमराज । —कृ० (-अ) सं—मृत्युके बाद यमराजके द्वारा पापकी सजा ।

—द्वितीय सं—भैयादूज । —शूद्र सं—कुमारियोंका एक व्रत । —ब्रह्म सं—यमराजकी दी हुई सजाका कुश ।

बमक (जमक) स—एक ही उच्चारणवाले दो शब्दोंकी पुनरावृत्ति । वि—यमज, जुड़वाँ ।

बमज (जमज) वि—जुड़वाँ ।

बमानौ सं=बवान ।

बमोधन (जमोधन) वि—नामवर ।

बमोयती, बमोदा (जमोदा) स्त्री—नटकी स्त्री जिसने श्रीकृष्णको पाला था ।

बमिधू (जमिधु) सं—मुलेठी ।

बा (जा) स्त्री—जा देवरानी, जेठानी ।

बा सर्व—बाश जो कुछ । [जैसे ही ।

बाहे (जाह) क्रि वि—बहेतू जिस कारण, बाह्य (जावा) (क्रि परि ६)—जाना, गत होना, नष्ट होना, करते जाना, रहना ।

बाछ (जाचा) (क्रि परि ३)—मांगना, चाहना, जांचना, आंकना । बाछहे स—कृत, दामका अ दाजा । [जचवाना, परीक्षा कराना ।

बाछन (-नौ), बाछना (क्रि परि १०)—

बाछ्णा (जाच्छा) सं—प्रार्थना, मांग ।

बाछ्ठाहे (जाच्छेताह) वि—भद्दा, खराब ।

बात् (जात -अ) वि—गत, भूत, प्राप्त, ज्ञात ।

बात्ता (जाता) स्त्री—देवरानी, जेठानी ।

बा-त्ता (जा-त्ता) = बाश-ताश ।

बात्ताबात्ता (जातायात) स—आनाजाना ।

बात्ता (जात्रा सं—यात्रा, गमन, प्रस्थान, निर्वाह उत्सव आदिमें देवताका जलूस (ढोल—, बान—); जलूस (ढोल—); दृश्यपट-रहित नाटक (—दृश्या, —गान, बात्ताबिनय); वार, दफा (ए—बेछे गल) ।

बात्तिक (जात्रिक) सं—यात्री, मुसाफिर ।

बाथातथा (जाथातत्थ-अ) सं—सत्यता, यथार्थता । [सम्बोधन ।

बाद् (जादु) सं—जादू; बालकके लिए स्नेह-

बादृष (जादृष-अ) वि—जिस प्रकारका, जैसा ।

बान (जान) सं—सवारी, यान ।

बात्तिक (जात्रिक) वि, सं—यंत्र-सम्बन्धी; यंत्र चलानेवाला ।

बापक (जापक) वि—वितानेवाला । बापन सं—विताना, व्यतीत करना ।

बाप्य (जाप्य-अ) वि—जो रोग एकदम आराम नहीं होता दबा हुआ रहता है ।

बावञ्चोवन (जावञ्चोवन) क्रि वि—जीवन भर । वि—जीवन भरका । [सारा, सब ।

बावत् (जावत्) क्रि वि—तक, जब तक । वि—बावतीय (-अ) वि—सब ।

बावन्निक वि—म्लेच्छ सम्बन्धी । [समय ।

बाग (जाम) स—पहर, तीन घंटेका

बाबावर (जाजावर) वि, स—बजारा, सदा घूमनेवाला ।

बावन्ननाहे (जावन्ननाह) वि—बहुत अधिक ।

बावन्न सर्व—बाशबहे जिसका ही ।

बाश (जाहा) सर्व—जो कुछ, जो । —ताश वि—खराब, बुरा (—बना, —थाह) ।

बांश (जांहा) क्रि वि—जैसेही, ज्योंही (—बना उथनि); जहाँ, जैसे ।

वाशक, वाशव, वाशक, वाशव सर्व—जिसको,
जिसका, जिनको, -जिनका (आदरार्थक
एकवचन) । [एकवचन] ।

विनि (जिनि) सर्व जो व्यक्ति (आदरार्थक
शेष (जीशु : स—ईसा-मसीह ।

बूठ (जुक्त-अ) वि—जुड़ा हुआ, मिलित,
संयुक्त, योग्य, उचित । —कब=झोड़ता ।
—अन्य स—संयुक्त प्रांत, उत्तरप्रदेश ।

बूझि स—न्याय, विचार, युक्ति, सलाह ;
मिलन, स योग ।

बूझ १२ क्रि वि—एकही साथ, समकालमें ।

बूझी (जुगी) सं—एक निम्न जाति ।

बूझा, बूझ (जोझा) (क्रि परि ६)—लड़ना,
युद्ध करना ।

बूठ (जुव्) वि—युक्त, सहित । [व्यापृत ।

बूझाना (जुध्यमान्) वि—लड़नेवाला, युद्धमें
बूझना सं—लड़नेकी इच्छा । बूझ वि—
लड़नेके इच्छुक । सं—एक जापानी कुन्ती ।

बूझ सं—भुगड, दल ।

बूझ (जूझ) स—बूझाना रसा, जूस ।

वे (जे) सर्व—जो (—कह, —किछु, —इछु,
—काइने, —करक, —अकाव) । अ—कि (जे
बनिज वे दोकान बफ) ; विस्मय-सूचक (इष्टि
एलो वे !), अधिकता-सूचक (वे खड़ इष्टि !) ।
—जे सब—जो कोई । वि—मामूली ।

वेहे क्रि वि—जैसे ही, ज्यों ही । सर्व—जो ।

वेथाने (जेखाने) क्रि वि—जहां, जिस
स्थानपर, जिस हालतमें । —जेथाने क्रि
वि—जहाँ तहाँ ।

वेथा, वेथाव (जेथाय) क्रि वि—जहाँ ।

वेन (जैन-अ) क्रि वि—मानो, जिससे
(एमन क'दर वन वेन न्नाष्टे इव) ; सावधान
करनेमें (जे'थे—जुलो ना), प्रार्थनामें
(वे उगवान—दोग गावे) ।

वेमन (जेमन) वि—जैसा, जिस प्रकारका ।

क्रि वि—जैसे यथा, जैसे ही, ज्योंही ।

—उमन वि—जैसा-तैसा, मामूली
वेमनके क्रि वि—जैसे ही । वेमनि, वेमनि
वि—जैसा । क्रि वि—ज्योंही, जभी ।

वेका (जोक्ता) वि—सयोग करनेवाला ।

वेग (जोग) स—योग, मिलन, जोड़, योग-
दर्शन, योगसाधन, जरिया (जोका वेग) ;
समय (बाखिवेग) । —कब क्रि—जोड़
लगाना । —कब क्रि—योगका हिसाब करना ।
—जुगडा, —दान कब क्रि—गामिल होना,
हाथ बँटाना ।

वेगाड़ (जोगाड़) सं—आयोजन, तैयारी,
प्रवन्ध । —बूझ (अ सं—सामानका जुटाना ।

वेगाळे वि—सामान जुटानेमें चतुर ।

वेगान (जोगान) सं—गर्ववराज सामानका
जुटाना या जुहाना supply.

वेगान (जोगानो), वेगानो (क्रि परि १४)
—गर्ववराज कब लाकर देना, जुटाना, जुहाना,
अभावकी पूर्ति करना । [मिलन, एकता ।

वेगावेग (जोगाजोग) सं—सम्मेलन, भेट,
वेगेश (जोगेश) स—विष्णु ।

वेगव सं—जोड़नेवाला ; स्थल-डमरूमध्य ।

वेगन (जोजन) स—चार कोस ।

वेग (जोग) सं—लड़ाका ; लड़ाई ।

वेगान (जोआन) स—अजवायन ।

वेगि, वेगा (जोपा) स्त्री—स्त्री, औरत ।

वेगि (जउत्तिक्) वि—युक्तिसे सिद्ध ।

वेगूक (जउतुक) सं—दहेज, जहेज ।

वेथ (जउथ-अ) वि—मिला हुआ, साभेका
(—काशवार) ।

वेन (जउन-अ) वि—योनि सम्बन्धी । [पद ।

वेववाञ्छा (जउव-अ-राज्य-अ) सं—युवराजका

व्र

ब्रह्म सं—ब्रह्म शोर-गुल, चिल्लाहट ।

ब्रह्म क्रि=ब्रह्म ।

ब्रह्मना, ब्रह्म सं—रवाना, यात्रा । वि—
प्रेरित, जानेके लिए निकला हुआ ।ब्रह्म सं—रंग, वर्ण, दिल्लीगी, मजाक,
ताशका एक रंग, किसी एक बारके खेलमें
जिस रंगके ताशोंको प्रधानता दी जाती है ।ब्रह्म सं—तरह तरहके रंग । ब्रह्म, ब्रह्म
वि—रंगीन, रंग-बिरंगा । ब्रह्म वि—अनेक
रंगोंका ।

ब्रह्म सं=ब्रह्म ।

ब्रह्म सं—प्रकार, तरह, ढंग । एक—, वि—
एकसा, न भला न बुरा । —ब्रह्म वि—
तरह तरहके । ब्रह्म वि—नाना प्रकारके ।ब्रह्म (-अ) सं—खून, रुधिर । वि—लाल,
रंजित, रंगा हुआ, आसक्त । —ब्रह्म सं—
खूनका बहाव । —ब्रह्म (-अ) वि—जिसकी
जोभ लाल है । —ब्रह्म, —ब्रह्म सं—शरीरके
रक्तका विकार । —ब्रह्म वि—खून पीनेवाला ।—ब्रह्म सं—इलाजके लिए शरीरसे खून
निकालना । ब्रह्म (-अ) वि—खूनसे
तराबोर । ब्रह्म (-अ) वि—कुछ लाल ।
ब्रह्म सं—रक्तपात । ब्रह्म सं—
लाल कमल ।

ब्रह्म सं—अनुराग, आसक्ति ।

ब्रह्म सं—लाली । ब्रह्म वि—लाल ।

ब्रह्म (रखन) सं—रक्षा, पालन, रखवारी ।

ब्रह्म वि, सं—रक्षा करनेवाला, रखनेवाला ।

ब्रह्म सं—बचाव, बचाव, राखी ।

ब्रह्म सं—सावधानीके साथ रक्षा,
निगहवानी । ब्रह्म (-अ) वि—रक्षा करने
योग्य । ब्रह्म (-अ) वि—रक्षित, पाला-पोसा ।(रक्षित) कायस्थोंकी एक उपाधि । ब्रह्म स्त्री
—रखेली । ब्रह्म सं—ब्रह्म पहरेदार, संतरी ;
रक्षक । ब्रह्म (-अ) वि—रक्षा करनेके योग्य ।
ब्रह्म सं—कनपटी । —ब्रह्म वि—थिथिठे
चिचिड़ा । —ब्रह्म क्रि—किसीकी आदत
या स्वभाव पहचानना ।

ब्रह्म सं—ब्रह्म रंगत, मजा, आनंद, रगड़ ।

ब्रह्म (रगड़ाना), ब्रह्म (क्रि परि १६)
—ब्रह्म, ब्रह्म कत्रा रगड़ना ।

ब्रह्म=ब्रह्म । ब्रह्म, ब्रह्म=ब्रह्म, ब्रह्म ।

ब्रह्म (-अ) सं—नाट्य, नाट्यशाला, अभिनय-
गृह, रणभूमि, मल्लभूमि, अखाड़ा ; दिल्लीगी,
मजाक, मजा, रंगा । —ब्रह्म वि—ब्रह्म
रंगीन, मजेदार । —ब्रह्म (-अ) सं—
हँसीकी अगभंगी । —ब्रह्म सं—आमोद-
प्रमोद, रगरली, दिल्लीगी ।ब्रह्म (-नो), ब्रह्म (क्रि परि १०)—ब्रह्म
रंजित करना, रगना । वि—रंजित, रंगा
हुआ ।

ब्रह्म वि—ब्रह्म रंगीन, रंजित ।

ब्रह्म (क्रि परि १)—रचना, बनाना । [ब्रह्मिनी ।

ब्रह्म सं—ब्रह्म घोड़ी । स्त्री—ब्रह्म,
ब्रह्म सं—चीड़ वृक्षका सूखा गोंद (तारपीन
निकाल लेने पर जो बाकी रहता है) ।

ब्रह्म सं—मड़ि रस्सी ।

ब्रह्म, ब्रह्म सं—प्रचार, शोहरत ।

ब्रह्म सं—माघ कृष्ण चतुर्दशी ।

ब्रह्म (क्रि परि १)—प्रचारित होना (ब्रह्म—,
अफवाह उड़ना) ।ब्रह्म (-नो), ब्रह्म (क्रि परि १०)—प्रचारित
करना । ब्रह्म (-अ) वि—प्रचारित ।

ब्रह्म सं—दौड़ ।

ब्रह्म सं—युद्ध, लड़ाई, जग ; शब्द, आवाज ।

—ब्रह्म सं—जगी जहाज । —ब्रह्म वि—

स्त्री—लडाई करनेवाली । व्रण वि—मन्दा-
मान आवाज करता हुआ । व्रण स—आवाज
करना । व्रणिठ (-अ) वि—ध्वनित ।

व्रण (रड-अ) वि—वृक्षा वेधालाद ; फलरहित ।

व्रण स्त्री—वृक्षा वाँक, विधवा, वेण्या ।

व्रण (-अ) वि—आसक्त नियुक्त, लवलीन ।

व्रण स—रत्न ।

व्रणि स—रत्नी, आनन्द, सम्भोग, आसक्ति ।

व्रणि वि—घट्टत थोड़ा या छोटा (एकव्रणि गण) ।

व्रण (-अ) स—रत्न, मणि, सर्वोत्तम वस्तु या

व्यक्ति । —गड' (-अ) वि—जिसके भीतर

रत्न हो । स—समुद्र । —गड' स्त्री—

सुपुत्रकी माता । —व्रण, —व्रण स—

जौहरी । —व्रण, —व्रणविजौ, —व्रणविनौ=

व्रणगर्भा । व्रणव्रण, व्रणान्तर स—व्रणव्र

गहना जड़ाऊ गहना ।

व्रण वि—रदी खराब (—वान) ।

व्रण स—घोंस, मार ।

व्रण स—लकड़ी या बाँस जिसमें पाँव रख

कर कुछ ऊँचे पर चलते हैं stilt [—शाना) ।

व्रण स—व्रण, पाँव रसोई बनाना (—गूठ,

व्रण (-अ) स—अभ्यास, रत्न । व्रण व्रण

क्रि वि—अभ्यासके द्वारा क्रमशः, रफ़ता

रफ़ता । [निर्यात ।

व्रणानि स—रफ़तनी, मालका बाहर जाना,

व्रण स—निजिष्ठ फ़ैसला, निवेदना, खातमा,

भाषा (व्रण—) ।

व्रण स—वीणाकी तरहका एक बाजा ।

व्रण स—रवड़ । [पाये भाया हुआ ।

व्रणवि वि—बिना झुलाये या बिना निमंत्रण

व्रि स—सूर्य, रविवार । —व्रण स—रविवार ।

—व्रण (-अ), —व्रण (-अ) स—रवी, वह

फसल जो बसत ऋतुमें काटी जाती है ।

व्रण स—व्रणनी, व्रण केला ।

व्रणि स—व्रणि रस्सी । व्रण स—व्रण रस्सा ।
व्रण स—व्रण । [वरौनी ।

व्रणि (रणि) स—किरण, लगाम, रस्सी ;

व्रण स—रस ; स्वाद, जल जुकाम शुक्र, घनका

मद (उग्रौ — व्रण), मजाक रगत, पारा

रसायन । —व्रण स—चीनीके शरीरमें पकाये

हुए नारियलका लट्ठ । —व्रण स—रस-

कपूर । —व्रण स—व्रणवोंका टीका या

तिलक । —व्रण स—रसका लेश (उग्र व्रण

—व्रण) । —गड' (-अ) वि—रससे भरा ।

—व्रण स—रसगुला, छेनेकी एक बंगला

मिठाई । —व्रण स—गुड़ या चीनीके शरीरे

में तला हुआ डालका बड़ा । —व्रण वि स्त्री—

रसिका । स—रसोई घर । —व्रण वि—

रसज्ञ । —व्रण (-अ) स—रंगमें भंग ।

—व्रण वि—रसिक, रसभरा । —व्रण स =

व्रणव्रण । —व्रण स—श्रेष्ठ रसिक ; पारा ।

—व्रण स—रासायनिक परीक्षाका स्थान ।

—व्रण स—व्रण ई गुर, सिगरफ । व्रण

(-अ) स—जुकामके कारण शरीरका भारी-

पन । व्रण स—सुरमा । व्रणिका (-अ)

स—जुकामकी अधिकता ।

व्रण स—सिपाहियोंका भोजन, खाद्य ।

व्रण (क्रि परि १)—रसदार होता, गीला होना,

कोमल होना, थोड़ा सड़ना ।

व्रणान (-नो), व्रणाना (क्रि परि १०)—रसदार

या कोमल करना ।

व्रणान स—सोने आदिको चमकाना, उज्ज्वल

करनेका मसाला, बातोंमें रस भरना,

रगीली बातें करना ।

व्रणान स—नीच रस साहित्यके नव रसोंमें

जो सभ्य समाजके योग्य नहीं है ।

व्रणान वि—रसदार । स—आम ।

व्रणाना स—रसीली बातचीत ।

ब्रजभाषा, (-भाषन) सं—रसका स्वाद ग्रहण ।
 ब्रजि स—रसीद ।
 ब्रजई स—रसोई । —घर स—रसोईघर ।
 ब्रजवि, स—रसोइया (-वाइन) ।
 ब्रजन स—ब्रजन लहसून ।
 ब्रजल स—रसूल, पैगंबर ।
 ब्रजल कि वि—छिपकर, एकान्तमें ।
 ब्रज (-अ) स—गुप्त भेद, गूढ़ तत्त्व, मजाक, दिल्लगी । वि—गुप्त । ब्रजनाथ स—रसीली बातचीत, गुप्त प्रेमालाप । [ठहरना ।
 ब्रज, ब्रज (क्रि परि २)—थाका रहना, ब्रज स—रव, शब्द, आवाज (मूत्र—जई, ब्रज—काड़ा) ।
 ब्रज स्त्री—राधिका ; छोटी सरसों ।
 ब्रज, ब्रज स—रांगा । —ब्रज स—धातु-पात्र भालनेका रांगा । ब्रज स—रांगेका वरक ।
 ब्रज स—रान ।
 ब्रजि स—एक छोटा पौधा जो बगीचेके चारों ओर घेरनेके लिए लगाया जाता है ।
 ब्रज स—पूर्णमा ।
 ब्रज (क्रि परि ३)—रखना, रक्षा करना, आश्रय देना, कायम रखना, पालना, नियुक्त करना, छोड़ना, स्थगित करना ।
 ब्रज स—चरवाहा, रखने वाला । ब्रजि स—चरवाही ।
 ब्रजि स—राखी, रक्षाबंधनका डोरा ।—
 पूर्णिमा स—श्रावणपूर्णिमा ।
 ब्रज स—अनुराग, आसक्ति, प्रेम, रंग, लाली ; गुस्सा (—कब्र, —गढ़) । ब्रज (-अ) वि—क्रोधित, खफा ।
 ब्रज (क्रि परि ३)—क्रोध करना, बिगड़ना ।
 ब्रजन (-नो), ब्रजान (क्रि परि १०)—क्रोधित करना, नाराज करना ।
 ब्रज (-अ) वि—क्रोधसे घेहोश ।

ब्रज (-अ) वि—क्रोधित, खफा ; आसक्त ।
 ब्रज वि—क्रोधी, क्रोधित ; आसक्त ।
 ब्रज स—ब्रा । [शकरकंद ।
 ब्रज, ब्रज वि—लाल । —ब्रा स—
 ब्रजन (-नो), ब्रजान, ब्रजान (क्रि परि १०)—लाल करना, रंगना ।
 ब्रज स—राज्य, राजा । —कन्या, —कन्या स्त्री—राजकुमारी । —कौब (-अ) वि—राज्य सम्बन्धी, सरकारी । —गति स—सिंहासन, राजाका पद । —कब्र स—सम्राट ।
 —ग स—राजा, राजाके तुल्य लोग (ब्राज—ब्राज) । —ग (-अ) स—सिंहासन । —ग (-अ) स—राजाका दिया हुआ सनद । —ग स—राजपूत ।
 —गाना स—राजपूताना । —ग स—राजाके वंशके लोग, राजकर्मचारी ।
 —गाना स—राजमहल । —ग स—एक जाति । —ग, (-ग) स—राजाका सक्कान ।
 —विधि स—शासन कानून । —विध स—गदर । —ग स—थवईका मददगार मजदूर । —गि स—थवई । —ग स—
 विवाहके लिए दूल्हे-दुल्हिनकी जन्म-राशियों का मेल जो शुभ माना जाता है ।
 ब्रज वि—चांदीका ।
 ब्रज, ब्रज स—श्रेणी, पंक्ति, समूह, रेखा ।
 ब्रज (-अ) वि—शोभित । ब्रज (-अ) क्रि—विराजमान हुआ, शोभित हुआ ।
 ब्रज वि—स्वीकृत, राजी, माननेको तैयार ।
 —ना स—राजीनामा, स्वीकारपत्र ।
 ब्रज (-अ) स—राज्य, रियासत, शासन ॥
 ब्रजालिक स—राजतिलक । ब्रज वि—
 तमाम, बहुत अधिक (ब्रजालिक मन्त्र) ।
 ब्रज स्त्री—विधवा, घेवा ; रखेली ।
 ब्रज स—बगालमें गंगाके पश्चिमका प्रांत ।

वांठेश (-अ), वांठे वि—ब्राह्मणोंकी एक श्रेणी सम्बन्धी, गंगाके पश्चिम प्रांतका।

वांठ सं—रात्रि, रात। —किसि कि—किसी कामके लिए रातमें अधिक विलंब करना।

—वांठेन कि—रात बिताना। —कान वि—जिसे रातको नहीं सूझता।

वांठावांठि कि वि—रातके अंदर, रातोंरात।

वांठि सं—रात्रि, रात।

वांठून वि—वांठा लाल (—उदय)।

वांठि, (-जो) सं—रात, रजनो (समासमें कुछ शब्दोंके बाद—वांठ होता है जैसे चषवांठ, दिवांठ, पियांठ, भूषवांठ, भूषवांठ, भषवांठ)। —उद वि, सं—रातमें विचरने-वाला, निशाचर। —वांठ सं—रातमें निवास; रातमें सोते समय पहननेका कपड़ा।

वांठाइ (-अ) वि=वांठकान।

वांठा, (वंश सं—रंदा)।

वांशनि, वांशनी (-घनी) सं=वांशनि।

वांश कि=वांश।

वांशनि, वांशनी, वांशनी सं—अजवाइन-सा एक मसाला। स्त्री—रसोई पकानेवाली।

वांश, वांश (कि परि ३)—रसोई पकाना। वि—पकाया हुआ।

वांश सं—रसोई बनाना, रसोई। —क सं—रसोई-वर। —वांश सं—रसोई और उसके सम्बन्धित काम।

वांश सं—पतला और सहका हुआ गुड़, राव।

वांशि सं—खड़ी।

वांशि सं—कृदा-करकट।

वांश सं—परशुराम, वल्लराम, श्रीरामचंद्र।

वि—बड़ा (—शर्ग, —न)। —श्व सं—इंद्रधनुष। —वांशि सं—सुर्गो।

वांशाउठ, (-श्व), वांशा सं—रामावत, एक धर्मग्रन्थ संप्रदाय।

वांश सं—सम्मति, राय; एक उपाधि। —वांशिनो स्त्री—बड़ी वांशिन, उग्रा या कर्कशा नारी। —वांशाउठ सं—राय बहादुर। —

वांश सं—राय साहय।

वांश सं—छिन्नाद्वय धजा रेंयत, रियाया। वांशो वि—रेंयतका।

वांश सं—वांश राशि, टर (उद—छिन्नि); जन्मराशि। —नाम सं—जन्मराशिके अनुसार दिया हुआ नाम जिसका प्रायः व्यवहार नहीं होता। —वांशो वि—गंभीर स्वभाव वाला, सजीरा।

वांशि सं—ढेर, संख्या, राशि।

वांशुठ (-अ) वि—छूँछूँछूँ, गानाद्वय टेर लगाया हुआ।

वांश सं—लगाम, रास।

वांशन वि—जीभ सम्बन्धी।

वांश सं—गंद गंधा। [वाला पौधा।

वांश (रास्ना) सं—दूसरे पेड़ पर उगने वाला स—राह (—श्वर); उपाय (श्व—)।

—वांश सं—राहजन। —वांशि सं—राहजनी।

वांशि (-अ) सं—अभाव।

वांशो सं—पथिक, राहगीर।

वांशि सं—चावियां रखनेकी अंगूठी; अंगूठी।

वांशि, वांशि सं—रीठा।

वांशु सं—वांशु। बड़वांशु सं—काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सय ये छः हानि-कारक चित्तवृत्तियां।

वांशु सं—रफू।

वांशि सं—सिहरनेका भाव।

वांश, वांश सं—डाह, द्वेष, गुस्सा। [द्वेष।

वांशवांशि, वांशवांशि (-अवि) सं—आपसमें

वांश, वांशि सं—ग्रहदोष, पाप।

वांशाना सं—रिसाला, घुड़सवार सेना।

बीति सं—दंग, प्रकार, परिपाटी, शैली, रवाज, स्वभाव, बर्ताव । —ग्रठ (-अ) क्रि वि—नियमानुसार, अच्छी तरह, बहुतायतसे ।

बीम सं—कागजके २० दिस्ते ।

बीन सं—लकड़ी या धातुकी घिरनी जिसमें सूत लपेटा जाता है ।

ब्रे सं—रेहू मछली ।

ब्रेउन सं—ताशका ईंटा ।

ब्रथा, ब्राथा (क्रि परि ५)—आक्रमण करनेके लिए खड़ा हो जाना या तैयार होना ; रोकना ।

ब्रथा, ब्रथा वि—रूखा, सूखा, तेलरहित (—माथा) ; जिसमें भोजन नहीं देना पड़ता (—माहिनात्र ठाकर) ।

ब्रौ वि, सं = ब्राँ ।

ब्र (-अ) वि—बीमार । स्त्री—ब्रं ।

ब्रज, ब्राज (क्रि परि ६)—रचना, अच्छा मालूम होना । [दायर ।

ब्रू वि—थोड़ा खड़ा, सीधा, समान, दाखिल ; ब्रु सं—रोटी ।

ब्रू (-अ) वि—बंद, रोका हुआ, घेरा हुआ ।

ब्रू, ब्रा (क्रि परि ६)—रोकना ।

ब्रूब्रू, (-ब्रू) सं—घुंघरुका शब्द ।

ब्रू, ब्रू, (-ब्रू) सं—चांदी । ब्रूनी, ब्रूनी वि—चांदीके तबकसे मढ़ा हुआ, रुपहला, चांदी-सा । (ब्रूनी ठाविमव दब्रुब्रू थोले—रिश्ततसे सभी काम होते हैं) ।

ब्रूज सं—रूमाल । [लगाना ।

ब्रू, ब्रा (क्रि परि २०)—ब्राज कब्र पौधा

ब्रू सं—लकीर खींचनेका गोल डंडा ; लकीर ।

ब्रू सं—पतला कंगन ।

ब्रू, ब्रू (-अ) वि—खफा, क्रोधित ।

ब्रूज, (ब्रू-) सं—एक चमार संत ।

ब्रू (-अ) वि—प्रसिद्ध, शब्दके व्युत्पत्ति-लब्ध

अर्थसे भिन्न अर्थ प्रकट करनेवाला ; कड़ा, कठोर, अप्रिय ।

ब्रू सं—शकल, सुरत, सौंदर्य, नेत्रका विषय ; तरह, प्रकार (ब्रू, नानाब्रू) ; स्वरूप (उदाहरण ७१) ; विभक्ति युक्त शब्द या धातु । —ब्रू सं—उपब्रू कहानी । —ब्रू सं—रांगा मिला हुआ सीसा । ब्रू (-पशी) वि स्त्री—छंदरी ।

ब्रू सं = ब्रू ।

ब्रू (-अ) वि—रूपयुक्त, प्रकट ।

ब्रू वि—स्वरूप (नृमिश्रकृष्ण विष्णु) ।

ब्रूब्रू सं—दब्रू, छन रवाज ।

ब्रू सं—अन्न नापनेका एक बर्तन ।

ब्रू सं—रकाब ; रकाबी, तश्तरी ।

ब्रू सं—लकीर, चिह्न, थोड़ी जगह । —ब्रू सं—न्यामिति ।

ब्रू, (-ब्रू) सं—रेजगी, रुपयेसे कमके सिक्के (पैसे नहीं) ।

ब्रू सं—बानाभाण रुईदार ओढ़ना, रजाई ।

ब्रू, ब्रू सं—रजिस्ट्री ।

ब्रू सं—बेतार या बिजलीकी लहरसे बात संगीत आदिका प्रचार ।

ब्रू सं—ब्रू रेंड (ब्रू ब्रू) ।

ब्रू सं—ऊँचरेती ।

ब्रू सं = ब्रू ।

ब्रू सं—रिआयत, छुटकारा, अनुग्रह ।

ब्रू सं = ब्रू ।

ब्रू सं—रेल, रेलगाड़ी । [देर तक रहती है ।

ब्रू सं—बाजा बजनेके बाद जो ध्वनि थोड़ी

ब्रू सं—ब्राह्म कब्र थोड़ा राशन ration.

ब्रू, (-ब्रू) सं—ब्रू देखो ।

ब्रू सं—गतिका होड़, घुड़-दौड़ race

ब्रू सं = ब्रू ।

ब्रू (-अ) सं—भूँछि, मजल नकदी, पूंजी ।

व्रशई सं—रिहाई, छुटकारा ।

व्रशान सं—रेहन, गिरवी ।

व्राक सं—रोकड़, नकद रुपया ।

व्राकर सं—नकद रुपयेका हिसाब ।

व्राका सं—रुका, पुर्जा ।

व्राध सं—आक्रोश क्रोध, द्वेष ; जिद ।

व्राध क्रि=इश ।

व्राधा वि—बीमार, रोगी, दुबला-पतला ।

व्राधाके वि—दुबला-पतला, कृश । व्राधापटेका

वि—कृश और दुबला ।

व्राधै सं—बीमार आदमी । वि—बीमार ।

रुत्रो—व्राधिनी ।

व्राज क्रि=इश । [रोजाना मजदूरी ।

व्राज सं—रोज, प्रतिदिन, तारीख, दिन,

व्राज सं—भूत-प्रेत भाड़नेवाला, ओम्हा ।

व्राथी, व्राठा वि—रही, खराब ।

व्राद सं—व्राद धूप । '—ढा' क्रि—धूप

निकलना । —पड़ा क्रि—धूप उतरना, बेला

ढलना । —प्राशन (-नो) क्रि—धूप तापना ।

व्राद स—नियत इलाकेमें धूम कर पहारा

round

व्रादन स—रोना, लन, हलाई ।

व्राद सं—बाधा, रोक । व्राधित (-अ) वि—

रोका हुआ । व्राधक, व्राधी वि—रोकनेवाला ।

व्राध (क्रि परि १)—रोकना ।

व्राधा (क्रि परि १)—रोपना ।

व्राध सं—व्राध रोम, देहके बाल । —इश सं

—लोमकूप । व्राध वि=व्राध ।

व्राधक सं—रोम देश निवासी । [पागुर ।

व्राध (अ), व्राधन सं—उदित-ज्वर जुगाली,

व्राधर्ष, (-इश) स = व्राधर्ष ।

व्राध (-अ) स = व्राधर्ष । व्राधकित (-अ)

वि—जिसके रोंगटे खड़े हुए हैं ।

व्राधनी, (-रनि) सं—देहके रोंगटे ।

व्राधार्थन, व्राधार्थन सं—रोमोंका निकलना,
रोमांच ।

व्राध क्रि=व्राधा ।

व्राधा सं—रोंगटा, रोम, रोयाँ ।

व्राधक सं—व्रक, छाता घरके सामनेवाला

खुला चतूतरा ।

व्राधमान वि—जो फट-फूट कर रो रहा है ।

व्राध सं—व्र शब्द ; चिह्नाहट । [चौकी ।

व्राधनर्छादि सं—शहनाईका बाजा, रोशन-

व्राधनाई, व्राधनि स—रोशनी ।

व्राध (-अ) क्रि—नव्वर कर ठहरो ।

व्राध, व्राध सं—चढ़ना, चढ़ाई ।

व्राधित सं—इशान रेहू मछली । [भयकर ।

व्राध (-अ) सं—व्राध धूप । वि—प्रचंड,

व्राध (-अ) सं—रुपा चांदी ।

व्राध सं—गरम चादर या ओढ़ना ।

न

नव्व (क्रि परि ७)—नव्व लेना, ग्रहण करना

साथ रखना, पसंद होना ।

नव्वान (-नो), नव्वानो (क्रि परि १६)

—नव्वान लिवाना, ग्रहण कराना ।

नव्वानि सं—आवश्यक सामग्री, लवाजमा ।

नव्व सं—लकलाट ।

नव्व, नव्व सं—नख, गुड्डी उड़ानेका धागा ।

नव्वक सं—लचक (वेत — कट्टे) ; (लघु

अर्थमें—निकलिक) । नव्वक, निकलिक वि—

लचकनेवाला ।

नव्व (लक्ख-अ) सं—दृष्टि, नजर, ध्यान,

निशाना, लक्ष्य ; लाख, सौ हजार (—पति) ।

नव्व (लक्खण) सं—लक्ष्मण ।

नव्वी (लक्खी) रुत्री—लक्ष्मी, कमला, सम्पत्ति,

घरकी मालकिन । वि—सुशील (—इश) ।

—शाफ़ा वि—(जिसे लक्ष्मी छोड़ गयी है,

अभागा, बदनसीब, आवारा ।

लगन सं—लगन, विवाहका मुहूर्त । लगनमा
सं—जिस समय विवाह पूजा आदिके लगन
होते हैं ।

नगा सं—श्रीरुणि लगा, लंबा बांस जिसके
सिरेमे पेडमे फल आदि तोड़नेके लिए
अकुड़ी हो, नाव धकेलनेका बांस ।

नगि सं—लगी ।

नगड़ सं—ड्डा, गदा । [का कारवार ।

नगि सं—रेहन रख कर सूद पर रुपया लगाने
नडा सं—लका ; लाल मिच ।

नखन सं—यत्किम डांकना, लंघन ; उपवास ।
नखनीश (-अ) वि—डांकने था लघन करने
के योग्य । [लाजेंज ।

नखखूग, नवनखू सं—चीनीकी रंगीन मिठाई,

नख्खा सं—नख शर्म, संकोच ; मान । —
रुद्र, —इनरू वि—लज्जाजनक । —बडी स्त्री
—लजवन्ती, छुईमुई । नख्खानू वि—लजीला ।

नटकान (-नो), नटकानो, (क्रि परि १६)
—टोडान, बूझान लटकाना । वि—लटकाया
हुआ । [लटकने वाला ।

नटगटे सं—लचक, लटक । नटगटे वि—
नटवश्य सं—साथके बहुतसे असबाब ।

नटोत्रि सं—लाटरी, एक जूआ ।

नडा (क्रि परि १)—लड़ना, युद्ध करना ।
नडाई सं—लड़ाई, युद्ध, भगड़ा ।

नड़ान (-नो), नड़ानो (क्रि परि १०)—
लड़ाना । [लड़ाका ।

नड़ाये, नड़िये वि—लड़ने वाला, युद्ध-प्रिय,
नरन सं—लालटेन ।

नगडड (-अ) वि—विश्रुल, डेनटेगागटे अस्त-
व्यस्त, उलटा-पुलटा ।

नठान (-नो), नठानो (क्रि परि १०)—लताकी
तरह फैलना । नठाने, नठानो वि—लता
की तरह फैला हुआ ।

नगठान (-नो), नगठानो (क्रि परि १६)—
लिपटना, उलभना, जकड़ना ।

नगु (-अ) सं—लगाव, संयोग (एकलप्रे
पौठ विधा छत्रि) ।

नवश (-अ) स—लौंग ।

नवनखूग=नखखूग ।

नखखान वि—नाकोदम, परेशान ।

नख (-अ) सं—नाक कुदान, उछाल । —

नख (-अ) सं—नाकबाँप, नाकनाकि
कूदफाँद । नखन सं—उछलना, कूदना ।

नश (-अ) वि—लटका हुआ, लंबा, खड़ा ।
सं—लंबाई, समकोणमे स्थित खड़ीरेखा ।
—मान वि—मानाश्रमान लटकता हुआ ।

नश वि—लंबा । सं—लंबाई । —नश
क्रि—नशाशन कर भाग जाना, चंपत
होना । नशाई सं—नश लंबाई (नशाई-
छाँड़ाई—लंबाई, चौड़ाई, शेखीकी बाते,
ढींग) । नशाटे वि—लबा-सा । नशानशि
क्रि वि—लंबाईकी ओर । नशित (-अ)
वि—लटकता हुआ । [का खलासी ।

नशकर सं—लशकर, पैदल फौज, जहाज
नशन सं—नशन लहसून ।

नश (-अ) क्रि—नश लो ।

नशना सं—नाशना पावना, लेना ।

नशना सं—क्षण ।

ना सं—लाख, लाह ।

नाशन सं—लकीर, रेखा, लैन, रैलकी लैन ।

नाडे सं—लौकी, कदू ।

नाकनिक वि—लक्षण द्वारा समझने योग्य
(अर्थ), लक्षणसे भविष्य बतानेवाला ।

नाका सं—लाख, लाह । —नमा सं—अनलक,
आलता अलता ।

नाथ वि, स—नक लाख, सौ हजार ।

नाथराज सं—निरु मुआफी, जागीर ।

नाग स—नागान लगाव, पहुँच ।

नागनई वि—ऊँचगुल योग्य, ठीक बैठा हुआ ।

नागा (क्रि परि ३)—लगाना, जुडाना, रुकना, उपयोगी होना, ठीक बैठना, चोट लगाना, दर्द करना ।

नागाउ वि—लगा हुआ, सटा हुआ ।

नागाड़ = नागाड़ ।

नागान (नो), नागानो (क्रि परि १०)—लगाना, मिलाना, जोड़ना, शिकायत करना ।

नागानि स—हूँकनि चुगली, शिकायत ।

नागास स—लगाम, बाग ।

नागिन, नागि विभ—इच्छा लिए ।

नाशन स—हल, हर । नाशनो वि, स—हरवाहा, खेतिहर ।

नाशन स—लेख दुम, पूछ । नाशनो वि, स—लेखद्वारा दुमदार ; वदर ।

नाशन वि—लाचार, मजबूर ।

नाश स—थई लावा ।

नाश स—जञ्जालाज । नाशक वि—लजीला ।

नाशन स—लांछन, निशान, कलक । नाशन स—डाँटफटकार, हतक, निदा । नाशित (-अ) वि—घमकाया हुआ, निदित, अपमानित, चिह्नित, कलकित ।

नाटे वि—तह-खुला (डाँड-करा कागड़—करा) । स—स्तभ, खंभा ; नीलाममें विकनेवाली चीजोंका समूह, नीलाम ; जमींदारी का अश, प्रादेशिक शासक, लाट (बड़—, छोटे—) ।

नाटोई स—नाटोई परेता ।

नाटिम, नाटो स—लट्टू ।

नाठानाठि स—डडोसे मारपीट ।

नाठि स—छड़ी, लाठी, डडा । —नाठे स, वि—लाठीसे चोट या घायल । नाठिशाल, लपटन स, वि—लट्टे, लाठीवाला ।

नाउ छू, नाछू = नाछू ।

नाथि स—लात ।

नाथ=नाथ ।

नाथा (क्रि परि ३)—लादना । नाथाई वि—लटा हुआ ।

नाथ स—मक्क कुदान, उछाल ।

नाथान (-नो), नाथानो (क्रि परि १०)—कूदना, उछलना । नाथानाकि, नाथानास स—कूदफाँद ।

नाथन, नाथन स—लौकी आदि कई तरह की सब्जियोंकी मिली हुई तरकारी ।

नाथनो (-अ) स—छिनाला ।

नाथन वि—गावानक वालिग ; लायक योग्य ।

नाथ स—लाला, लार, थूक । —काणे,

—गड़ान, —गड़ा क्रि—लार टपकना ।

नाथन वि—कुछ लाल ।

नाथन स—लाड़-प्यारसे पालन ।

नाथन वि—लानूष लोभी, लालची ।

नाथन (-लशा) स—लोभ, लालच ।

नाथ स—लार ।

[लालची ।

नाथनित (-अ) वि—अतिशय लानूष बहुत

नानित (-अ) स—सौंदर्य, खूबसूरती, काति ।

नाथ स—मक्का लाश, शव ।

नाथ, नाथ स—स्त्रियोंका नाच ।

निकलिक—नकनक देखो ।

निथन स—निपि लिपि, लेख, लिखना ।

निथा, लेथा (क्रि परि ५)—लिखना, चिट्ठी भेजना, अंकित करना । वि—लिखा हुआ (शाष्ट-लेथा वहे) ।

निथान (-नो), निथानो, निथनो, लेथानो (क्रि परि ११)—लिखाना ।

निथित (-अ) वि—लिखा हुआ । निथितव्य

(-अ) वि—लिखने योग्य ।

निथित वि—छलेखक ।

निष्ठावर्त स—एक शैव संप्रदाय ।

निहू स—लीची ।

निभि स—चिट्ठी, अक्षर, लेख, चित्र, वर्णमाला । — कर, —कात्र वि—लेखक, नकल उतारने वाला (—थमाद, नकल उतारने में गलती) ।

निशु (-अ) वि—लिपा हुआ (कर्म—, टेल—) ; संलग्न, अनुरक्त, जुड़ा हुआ । — भाव वि—जिसके पैरकी अंगुलियाँ चमड़ेसे जुड़ी हुई हैं । [लालची, लोभी ।

निष्ठा स—लालच, लोभ । निष्ठा वि—निष्ठ । स—यकृत । [लुप्त, गायब ।

नीन वि—लयप्राप्त, मिलित, तन्मय, लवलीन ; नीमा स—विलास, खेल, प्रमोद, अवतारों की लीला (कृष्ण—, —धूमि, —थला) ; जीवनका खेल (भव—, मानव—) । नीमावृत्त (-अ) वि—हावभाव-युक्त ।

नू स—गर्म हवा, लू ।

नूहे= नोहि ।

नूकावृत्ति, (नूका-) स—एक खेल जिसमें कई लड़के चोर बनकर छिप जाते हैं ; आपस में छिपाव, आँखमिचौली ।

नूकान (-नो), नूकानो, नूकनो (क्रि परि १३) —छिपना, छिपाना । वि—गुप्त, छिपा हुआ ।

नूकावृत्त (-अ) वि—गुप्त, छिपा हुआ ।

नूक्ति स—लुंगी ।

नूक्ति स—पूड़ी ।

नूटे, नूठ स—नूठन लूट, बिखेरी हुई चीजों का बहुतसे आदमी मिलकर ग्रहण (शक्ति—) । —ठग, —गाँठ स—बहुतसे आदमी मिलकर लूट ।

नूठा, नूठा (क्रि परि ६) —लूटना ; लोटना ; भरतीसे छ जाना (अकल नूठितेछे) ।

नूठान (-नो), नूठानो, नूठनो, नूठानो (क्रि परि १३) —गड़ागड़ि देना लोटना ।

नूठापूति, (नूठा-) स—गड़ागड़ि लोटपोट (शमते शमते—) ।

नूठेरा स—लूटेरा, डाकू ।

नूठन स—लूट ; लोट । नूठित (-अ) वि—लूटा हुआ ; जमीन पर गिरा हुआ ।

नूथ (-अ) वि—गायब, छिपा हुआ ।

नूथ (अ) वि—लालची, ललचाया हुआ ।

नूठा स—मकड़ीका मकड़ी । —तख स—मकड़ीका जाला ।

नूथे स—लेई । [परि १६] —लंगढ़ाना ।

नूथान (लूट चानो), नूथानो, नूथानो (क्रि नूठा (लूट टा), नूथि=नूठा, नूथि ।

नूठा (लूट टा) वि—थोड़ा, थक लंगड़ा । स—एक आम ।

नूथ स—निभि लेख, लिखा हुआ विषय (निना—) ; चिट्ठी । [—] ; रेखा ; गिनती ।

नूथ स—लेख, लिपि, लेखन, हस्ताक्षर (शब्दत्रय) (क्रि परि ५) —लिखना, चिट्ठी भेजना । वि—लिखा हुआ । —गड़ा स—लिखना-पढ़ना, विद्या (—नूथ) ; लिखापढ़ी, कानूनसे लिखकर देना (मिलि नूथगड़ा करे देना) ।

नूथान (-नो), नूथानो = लिथान ।

नूथानिधि स—लिखापढ़ी, पत्र-व्यवहार ।

नूथित (-अ) वि—लिखाया हुआ, अंकित ।

नूथ (-अ) स—लिखनेयोग्य, लिखित (—नूथ) ।

नूथट, नूथट (लूट ट) स—नूथि लंगोटी ।

नूथड़, नूथड़ स—दुम, पूँछ ।

नूथि स—सने हुए आटेका लोँदा ।

नूथ (लूज), नूथ स—नूथल दुम ।

नूथ (लूजा) स—मछलीकी दुम या पिछला हिस्सा (—नूथ) ।

लेखूँ सं—लेखूँ दुम ।

लेखा (लेखा), खाँडा सं—ब्रह्माटे भक्त, अडचन ।

लेखिकनि सं—गोपन पानत्रुश गुलाब-जामुन-सो
एक छेनेको मिठाई ।

लेख स—ब्रह्मण लेखके समान पोतनेको चोज ;
लेई, पोतना, रजाई । लेखक वि—पोतने
वाला ।

लेखान (-नो), लेखानो=लेखानो ।

लेखन स—पोतना (गोग्र—, चन्दन—) ।

लेखनौ (-अ), लेख (-अ) वि—पोतने
योग्य ।

लेखा (क्रि परि १)—निकाला पोतना, लीपना ।

लेखाका स—थाम लिफाफा । —श्रव (-अ)
वि—जिसकी बाहरी दिवावट अच्छी है ।

लेखू=लेख ।

लेखोलेख स—नींवूकी महकवाला सोडा-वाटर ।

लेखान (-नो), लेखानो (क्रि परि १०)—काटने
के लिए दौड़ाना (कूद—) ।

लेखान वि—बार बार चाटनेवाला ; लौ
निकलता हुआ (—यन्निश) ।

लेख सं—अल्प अक्ष, थोड़ा हिस्सा (—भाष) ।

लेख, लेखन सं—छाँटा चाटना । लेखी वि—चाटने
वाला । लेख (लेखक-अ), लेखनौ (-अ)

वि—चाटने योग्य, चाट कर खाने योग्य ।

लेखिक (लह-) वि—लेखन सम्बन्धी ; लिखित
(—भाष) । [का सम्बोधन ।

लो अ—अज्ञा अरी, स्त्रियोंके द्वारा दूसरी स्त्री

लोख सं—आदमी, व्यक्ति (लाल—, बड़—,
छो—, —नयागम) ; लोग, जनता । —छू

स—लोगोंको दृष्टि । —छत्रि (-अ) सं—
मनुष्यका चरित्र । —निष्ठा स—बदनामी ।

—मत्त स—जनताकी राय । —ब्रह्म स—

जनताको प्रसन्न करना । —कथा सं—

जनसख्या । —नयागम स—लोगोंका

आगमन या जमाव । —द्वि सं—जनताका
हित । लोखः क्रि वि—समाजकी दृष्टिमें,
लोगोंके सामने । —पिडाग्र सं—ब्रह्मा ।

—श्रव सं—लोकोक्ति, कहावत,
जनश्रुति । —श्रवि वि—ससारमें विख्यात ।

—नञ्ज स—जनताके सामने लज्जा ।

—नौना सं—उपनीषा जीवनका खेल ।

लोखान, लोखान सं—नुकसान, हानि ।

लोखान स—सामाजिक प्रथा ।

लोखानी वि—अलौकिक, लोकोत्तर, अनोखा ।

लोखाना स—बदनामी ।

लोखाना स—आत्मियोंका अभाव ।

लोखान वि—नास्तिक, चार्वाक । स—
नास्तिक मत ।

लोखान (-अ) स—अनेक मनुष्योंका जमाव ।

लोखान स—व्यक्ति वस्ती ।

लोका वि—लुच्चा, लपट ।

लोके स—जमीन पर लोटना ; एक कवूतर ।

लोके, लोकेन=लूँ, लूँन ।

लोना, लोना वि—नववांछ नमकीन, लोना ।

लोपा वि—लुप्त, गायब, नष्ट ।

लोका (क्रि परि ६)—ऊपरसे गिरनेवाली वस्तु
को पकड़ना ।

लोच स—लालच, चाह । लोचन सं—
प्रलोभन । लोचनौ (-अ) वि—लोभ करने

योग्य, लोभजनक । लोचित (-अ) वि—
ललचाया हुआ । लोचि वि—लालची ।

लोख सं—शरीरके छोटे छोटे बाल ।—द्व सं—
शरीरके चमड़ेमें छोटे छोटे छेद जहाँसे लोम

निकलते हैं । लोख वि—अधिक रोमवाला ।

—श्व (-अ), —श्व, लोखा (-अ) स—
हर्ष भय आदिके कारण रोंगटे खड़े होना,
रोमांच ।

लोख सं—वक्ष आंसू ।

नौन वि—शिथिल, लटकता हुआ, हिलता-झोलता, उत्सुक, लोभी ।

नौनू वि—बहुत लालची ।

नौष्टे, नौष्टे (-अ) स—छिन डेला ।

नौह (-अ) स—लोहा ; लोहू ।

नौश स—लोहा , लोहेकी चूडी (सधवाका चिह्न) । —नकड़ स—लोहा लकड़ी आदि ।

नौश स—नूँसे लोई, एक प्रकारका कंबल ।

नौकिक्ता स—सामाजिक शिष्टाचार ; विवाह आदिके समय इष्ट-मित्रोंके द्वारा भेट ।

नौना (-अ) स—लालच ।

नौश (-अ) स—लोहा । वि—लोहेका ।

—कात्र स—लोहार । —वश् (-वर्त -अ) स—

रेलकी पटरी । —ग्न स—ग्निका मूरचा, जंग ।

नौशित्य (-अ) स—ब्रह्मिणी लाली ।

नौाठे, नौाठे स—कोशिन लँगोटा ।

नौावाठे स—जो नाव जहाजके साथ बधी रहकर उसके साथ साथ चलती है, पिछलगा आदमी ।

भ

भ वि, स—भृ सौ (भृ भ) ।

भकत्र, भकत्र स—शिव, एक मछली । भकत्री, भकत्री स्त्री—दुर्गा ।

भगन, भग्न स—प्रशंसा, कथन, उल्लेख ।

भक स—एक प्राचीन जाति, युग । भकादिता (-अ) स—राजा शालिवाहन । भकाज (-अ) स—राजा शालिवाहनका चलाया हुआ संवत् जो ईस्वी सनसे ७८ या ७९ साल कम है ।

भकटे स—गाढ़ी गाड़ी ।

भकल स—मछलीका छिलका, अंश, टुकड़ा ।

भकून, भकूनि स—गीघ ।

भकून स—शुभाशुभ लक्षण ।

भक (-अ) वि—समर्थ, ताकतवर ; कड़ा, मजबूत ।

भक्ति स—बल, सामर्थ्य । —भानी वि—शक्तिमान, ताकतवर । —भस स—बल, ताकत । —भन स—रावणका फेंका हुआ

अस्त्र जिसके लगनेसे लक्ष्मण अचेत हो गये थे ।

भकू स—शांख सत्तू ।

भक्य (-अ) वि—साध्य, जो किया जा सके ।

भथ स—शौक, व्यासन, चसका ; पसंद ।

भथेत्र छिनि स—शौकीनी चीज ।

भकनौय (-अ) वि—श काके योग्य ।

भकद्र = भकत्र ।

भकल स—भय, डर, संदेह ।

भक्य (-अ) स—भान्थ शंख, घोंघा । —छिन

स—छफेद चील । —कू स—एक बड़ा

साँप । —बनिक = भान्थरी । —वि स—

जोका स खिया ।

भकक्र स—साही ।

भकिना, भकन स—सहिजन ।

भकिक = भकिक्रि ।

भकि, भकि स—हरदीकी तरहका एक कंद जिसका चूर्ण अरारोट-सा इस्तेमाल होता है, तीखुर ।

भक वि—भक सड़ा । [रस्सियाँ आदि बनती हैं ।

भक स—सन, एक पौधा जिसकी छालसे

भक (-अ) वि, स—भ सौ, १०० । भक स—

सैकड़ा, सौकी संख्या, सौ वस्तुओं

की समष्टि (भक्ति—) ; शताब्दी । भकक्र

क्रि वि—सकडे । भकिक्रि, भकिक्रि स—१से

१०० तककी गिनती । भकक्र स—सौ

अश्वमेध यज्ञ करनेवाले इंद्र । भकथि वि—

जिसमें सैकड़ों गाँठें हैं, बहुत ही फटापुरना ।

भकत्री स—प्राचीन कालकी एक तोप ।

भकृग (-अ) वि—सौवाँ । भकन स—

कमल । भठक्ष क्रि वि—सैकड़ों प्रकारसे, सैकड़ों खंडोंमें । भठयात्री वि—जिस वीघने पारे को सौ बार जलाया है ; जिसके हाथमें सैकड़ों रोगी मरे हैं । भठयूथ वि—जो किसी विषयके सम्बन्धमें उत्साहके साथ बोलता है । भठयूथ स—झंठो भाडू । भठयूथी स—सतवार । भठयूथि स—दूरी । भठयः क्रि वि—सैकड़ों प्रकारसे । भठयः, भठयः स—शताब्दी, सदी । भठयः वि—एक सौ ।

भनि स—शनिग्रह (अशुभ) । भनित्र दशा स—साढ़े साती । भनित्र दृष्टि स—शनि ग्रहको देवताकी दृष्टि जो मनुष्यके लिए अशुभ मानी जाती है । भनिवार स—शनिवार ।

भर्तनः क्रि वि—धीरे धीरे ।

भर्तनम्भ स—शनि ग्रह ।

भभ स—भाभ चटाई ।

भभ (-अ) वि—शाप-प्राप्त ।

भभ स—सफर ।

भभत्री स—एक छोटी मछली ।

भव (शव) स—शव, लाश, मुर्दा । —वावच्छ्र स—मुर्दको चौरफाड़ । —वाधना स—मुर्दपर बैठ कर एक तांत्रिक साधना ।

भवव स—वाध बहेलिया ।

भवाधव स—अरथी, जनाजा ।

भववात स—एक मुसलमानी त्योहार ।

भव (-अ) स—ध्वनि, लफ्ज । —काय स—अभिधान लुगत । —वक्र (-अ) स—वेद —ल्लो वि—शब्दवेधी ।

भवाश्मान वि—शब्द करता हुआ ।

भवित (-अ) वि—ध्वनित, शब्द-युक्त ।

भव स—शान्ति ; मनका समय ।

भवन स—यम, शान्ति संपादन ; घटाना ।

भवव स—सांभर मृग ।

भव्व स—भाद्व वोंघा ।

भवठान स—भतान । भवठानि स—भैतानी । भवठानी वि—शैतान सम्बन्धी ।

भवन स—भाना लेटना सोना, निद्रा, शय्या ।

भवित (-अ) वि—सोया हुआ । भवितकारभै स—आपाठ शुक्ल एकादशी, हरिशयनी ।

भवान वि—लेटा हुआ, सोया हुआ ।

भवा (शज्जा) स—विशाना विस्तर, पलंग ।

भवागत (-अ) वि—विस्तर पर पड़ा हुआ, बहुत बीमार ।

भव स—वाण, तीर, सरकंडा । —भवा स—वाणोंकी शय्या जिस पर पितामह भीष्म पड़े थे । —नखान स—धनुष पर वाण चढ़ाना ।

भव स—मलाई, वालाई । —भुवित्रा स—मलाईकी गिलौरी ।

भवकल स—शरद् ऋतुका चंद्रमा ।

भवव स—आश्रय वचाव, रक्षा, घर ; रक्षक । भववागत (-अ), भववागत्र (-अ), भववार्थी वि—शरणार्थी । भववा (-अ) वि—शरण लेने के योग्य, रक्षा करनेमें समर्थ ।

भववी, (-वि) = भवनी ।

भवविन् स—शरद् ऋतुका चंद्रमा ।

भवव स—शरवत ।

भवव स—लज्जा, शर्म ।

भवा स—मिट्टीका कसोरा, हंडीका ढक्कन ।

भववान स—वृद्ध धनुष ।

भविक वि, सं—हिस्सेदार, साम्नी । भविकाना वि—हिस्सेमें प्राप्य । भविकी, भविकानी वि—साम्नेका ।

भठ (-अ) स—कड़ा शर्त, नियम ।

भवत्री स—रात्रि, रात ।

भतव स—टिड्डी, पतंग ।

भना स—सलाई, जल्य ।

भनाका स—लोहेकी सलाई, छड़ ; दियासलाई ।

शक (-अ) स—मछलीका छिलका ; छाल ।
 शकी वि—छिलकेदार ।
 शश, शशक स—खरहा, खरगोश । शशविषाण स—
 खरहेका सींग, असम्भव वस्तु ।
 शशवाञ्छ (-अ) वि—बहुत घबराया हुआ ।
 शश, शश स—हरी घास ।
 शमा स—खीरा ।
 शञ (-अ) स—फसल, अनाज, गल्ला ; गरी ।
 शञ्ज स—शहर, नगर । —तलि स—शञ्ज
 उभरके शहरके आसपासकी घस्ती । शञ्ज
 वि—शहरी, नगर-निवासी ।
 शहिद, शहीद स—शहीद, धर्म युद्धमें मृत व्यक्ति ।
 शी = शि ।
 शींहे स—बबूल-सा एक पेड़ ।
 शाकत्र, शाकत्र वि—शिवका, शंकराचार्यके द्वारा
 लिखित (—भाषा, वेदान्त-सूत्रकी टीका) ।
 शाक स—भाजी, सब्जी, खानेयोग्य पत्ती
 (शाक—) ।
 शाकान्न (-अ) स—शाक और भात ।
 शाकुनिक वि, स—शाकुन जाननेवाला, पशु-
 पक्षियोंका शब्द सुनकर शुभाशुभ निणय करने
 वाला, बहेलिया ।
 शाख (-अ) वि, स—देवीका उपासक, तांत्रिक ।
 शाका (-अ) स—एक प्राचीन क्षत्रिय जाति,
 गौतम बुद्ध ।
 शांथ, शांक स—शख शंख । —वाञ्छान क्रि—
 शंख फूकना । शांथा स—शंखकी चूड़ी ।
 शांथात्री स—शखसे चूड़ी अंगूठी और दूसरी
 चीजें बनाने और बेचनेवाली एक जाति ।
 शांथवान् स—शकरकड़ । [भूतनी, चुड़ैल ।
 शांथूनी, शांकूनी, शांथिनी, शांकिनी स्त्री—
 शाक स—शाक, खानेयोग्य पत्ती । [शागिर्दी ।
 शागत्र स—शागिर्द, चेला । शागत्रि स—
 शांठि स—वस्त्र ।

शांति, शांति, शांति स—जनानी धोती, साड़ी ।
 शांठा (-अ) स—धूर्तता ।
 शांठा वि—जिसमें फल नहीं लगता ।
 शांति, शांति = शांति ।
 शांति, शांति = शान, शान्ति ।
 शांति स—शादी, विवाह ।
 शान स—सान, कसौटी ; पकी फर्श (—वाधान) ।
 शाना स—ताँतकी कंधी ।
 शाना (क्रि परि ३), शानान (-नो), शानाने
 (क्रि परि १०)—सान धराना । वि—सान
 धराया हुआ, तेज किया हुआ ।
 शानित वि—सान पर तेज किया हुआ ।
 शाष्ट (-अ) वि—रूका हुआ, चुप, शिष्ट, विनयी
 (—छेल) ।
 शांति स—निवृत्ति, स्थिरता, अमन । —छज
 स—पूजा होम आदिके पश्चात् पवित्र जल
 का छिड़काव ।
 शाप स—बद-हुआ, सराप । —छष्टे (-अ)
 वि—शापके फल-स्वरूप हीन दशा प्राप्त ।
 शापाष्ट (-अ) स—शापका अंत । शापित
 (—अ) वि—शाप प्राप्त ।
 शावक स—शाना घच्चा (श्व—, शक्ति—) ।
 शावल स—खोदनेका रंभा ।
 शावाण अ—बलिशक्ति वाह वाह ।
 शाव (-अ) वि—शब्द सम्बन्धी । शाविक
 वि—शब्द-शास्त्रका जाननेवाला, व्याकरणका
 ज्ञाता । [पगड़ी ।
 शावला वि—काला । स—दुशाले आदिकी
 शावा स—दिया, दीपक । —दान स—चिराग-
 दान, शमादान ।
 शावि स—हसए आदिको बेंटमें कस कर
 बिठानेके लिए लोहेकी चपटी अंगूठी, शामी ।
 शाविशाना स—चाँदवा, शामियाना ।
 शाविन वि—अंतगत ; सहज ।

भाष्यक सं—घोंघा ।

भाष्यक सं—बाण, तीर ।

भाषित (-अ) वि—लिटाया हुआ ।

भाषी वि—लेटनेवाला । स्त्री—भाषिनी ।

भाष्यल वि—शिक्षाप्राप्त, विनीत, सजा दे कर वशमें किया हुआ, शाइस्ता ।

भाषी स्त्री—सुग्गी, शारिका ।

भाषीव वि—शरीर सम्बन्धी । भाषीवर वि, सं—शरीरधारी ; आत्मा ; वेदांत-सूत्र ।

भाष सं—कमीज ।

भाषन सं—बाघ बाघ, शेर ।

भाष सं—साख, दुशाला ; घर, जगह (कृक—, काबात्र—) । —भाष वि—साखके पेड़सा ऊचा ।

भाषन सं—शलजम ।

भाषति सं—छोटी सकरी नाव ।

भाषा सं—घर, जगह ; साला, एक गाली ।

भाषा स्त्री—सालेकी स्त्री, सरहज ।

भाषि सं—हेमन्त ऋतुका धान ।

भाषिक सं—एक छोटी चिड़िया ।

भाषी वि—युक्त, विशिष्ट (वन—) ।

स्त्री—भाषिनी ।

भाषी स्त्री—साली, एक गाली ।

भाष सं—कमलकी जड़, कुमुदका फूल । [पेड़ ।

भाषनी (शालमली) सं—भिषुल गाह सेमलका

भाषी स्त्री—शुष्क सास ।

भाष सं—फल बीज आदिका गुदा । भाषा वि—गूदावाला ; मालदार ।

भाषन सं—दमन, सजा, संचालन, आज्ञा, विधि ; सनद (ठाव—) । —भाष (-अ)

सं—राज्यशासन-प्रणाली । भाषनी (-अ)

वि—शासन-योग्य । भाषित (-अ) वि—दंडित, परिचालित । [देना ।

भाषा (कि परि ३)—भाषन कर्ता धमकाना, सजा

भाषान (-नो), भाषाना (कि परि १०)—सजा का भय दिखाना, डराना । [शिक्षक ।

भाषित, भाषा वि—शासक, सजा देनेवाला,

भाष सं—बाघा बादशाह, महाराजा ।

—भाषा सं—बादशाहका लड़का । स्त्री—

भाषा स्त्री । भाषन भाष सं—शाह शाह ।

भिडन (-नो), भिडन—भिडन देखो ।

भिडनि=भयानिका । [रस निकालता है ।

भिडनी सं—खजूरके पेड़का तना छीलकर जो

भिड, भिड सं—सींग ।

भिडभा सं—शीशमका पेड़ ।

भिक सं—गंवाले छद् ।

भिकनि सं—भोटा नाकका बल्लाम ।

भिकड़ सं—जड़, मूल, सोर ।

भिकन सं—सांकल, जंजीर ।

भिका, भिका, भिक सं—छीका, सिकहर ।

भिकक (भिकक) सं—सिखानेवाला, उस्ताद, गुरु । भिकक (-कता) सं—शिक्षक होनेका भाव, शिक्षण-कार्य ।

भिकन सं—अध्ययन, शिक्षा, तालीम, उपदेश ।

भिकनी (-अ) वि—शिक्षा देने योग्य ।

भिकनी सं—शिक्षक । स्त्री—भिकनी ।

भिक सं—शिक्षा, सीख, तालीम, अध्ययन, अभ्यास, उपदेश, अनुभव । —नवि सं—नवसिखुआ । —नवि सं—नवसिखुआपन ।

—नवि (-अ) वि—जिसमें शिक्षा मिले ।

भिक सं—सिख, नानकपंथी ।

भिक, भिक (कि परि ५)—सीखना, अभ्यास करना । वि—सीखा हुआ ।

भिकान (-नो), भिकाना, भिकना, भिकाना (कि परि ११)—सिखाना, अभ्यास कराना ।

वि—शिक्षा-प्राप्त, सिखाया हुआ ।

भिकी सं—भूत मोर ।

भिड—भिड सींग ।

शिक्षा, शिक्षा स—सिंगका बाजा, सिंगा, तुरही ।

शिक्षाड़ा, शिक्षाड़ा स—सिंघाड़ा ।

शिक्षि, शिक्षि स—सिंधी मछली ।

शिक्षन, शिक्षित (-अ) स—घूघरू आदिका शब्द गुंजन ।

शिक्षिनी स—मूत्र घूघरू ।

शिक्षि, शिक्षि स—छिड़ सीटी ।

शिक्षि, शिक्षि स—शिन सीटी ।

शिक्षि वि—काला, नीला । —कठ (-अ) स—नीलकंठ, शिव ; मोर ।

शिक्षान स—सिरका तकिया, सिरहाना ।

शिक्ष स—सेम, छीमी ।

शिक्ष स—सेमल ।

शिक्ष, शिक्षि स—सेम, छीमी ।

शिक्ष स—सिरहाना ।

शिक्षान, शिक्षान स—शृंगान गीदड़ । [नागफनी ।

शिक्षानकांठा स—एक काँटेदार पौधा,

शिक्ष, शिक्षि स—सिर, मस्तक । शिक्षिगोड़ा स—माथाधरा सरदद ।

शिक्ष स—शिरा ; छोटी नाड़ी ; ऊँची रेखा (गाँडा—) । —गाँडा स—वेरुण रीढ़ ।

शिक्षनाम स—चिट्ठी आदिके ऊपर पानेवालेका नाम-पता ।

शिक्षनि, शिक्षि स—पीरको चढ़ायी हुई मिठाई या आटा केला चीनी आदि मिली हुई वस्तु ।

शिक्षण स—गाँड़ पगड़ी । [पगड़ी ।

शिक्षण स—सिरको बचानेवाली टोपी या

शिक्षा स—शिरा, खून बहनेवाली नाड़ी, ऊँची रेखा । शिक्षा (-अ) वि—शिरवाला ; ऊँची रेखायुक्त । [आदर पूर्वक मानने योग्य ।

शिक्षाशक्ति (-अ) वि—सिर पर धरने या

शिक्षानाम=शिक्षनाम । [दी हुई पगड़ी ।

शिक्षापा स—सम्मान या पुरस्कारके रूपमें

शिक्षाभाग स—अगला हिस्सा, ऊपरका अंश ।

शिक्षाकृश (-अ) स—सिरका बाल ।

शिक्ष स—कब्रका ओला, पत्थर ; सिलवट (—नाड़ा) ; सान धरानेका पत्थर ।

शिक्षा स—पत्थर, ओला (—बुट्टि) । —बुट्टि स—शिलाजोत । —गुठे (-अ) स—सिलवट । —शिक्षि स—शिलालेख ।

शिक्षा स—शीशा, काँच । शिक्षि स—शीशी ।

शिक्षि स—हिम, ओस ; शीतवस्तु ।

शिक्ष स—छोटा बच्चा (—कृष्ण, शृंग—) ।

—कान स—बचपन । —शिक्षि (-अ) स—बाल-साहित्य । —खनड वि—बच्चोंका-सा ।

शिक्ष स—शीशमका पेड़ ।

शिक्षक, शिक्षमात्र=शिक्षक ।

शिक्ष (-अ) स—लिंग, पुं-जननेन्द्रिय । शिक्षा-पत्रपत्राक्ष वि—कामुक और पेड़ । [की लौ ।

शिक्ष स—शिक्षक बखशी अनाजकी बाल ; दीपक

शिक्ष स—सीटी ।

शिक्षन स—रोमांच, सिहरना ।

शिक्षान (-नो), शिक्षानो (क्रि परि १, १०), शिक्षन (-नो), शिक्षनो (क्रि परि १७)—रोमांच होना, सिहरना ।

शिक्ष स—जलकी बूढ़ ।

शिक्ष वि—ठंडा, सर्द ; शांत, वृत्त ; देवताका संध्या समयका भोग । —शिक्षि स—एक प्रकारकी बहुत चिकनी घटाई ।

शिक्षना रुग्नी—चेचकके रोगकी देवी ।

शिक्षा स—चंद्रमा ।

शिक्षा स—ठंडक और गर्मी या धूप ।

शिक्षा (-अ), शिक्षा वि—अधिक ठंडकसे क्लेशित ।

शिक्षा (-अ) वि—ठंडक और गर्मी ।

शिक्ष (-अ) स—सिर, सिरा, चोटी ।

शिक्षन स—अनुशीलन, अभ्यास ।

रैद=रिद । [चोंचसी नाक वाला या वाली ।
 रुक सं—तोता, रुग्णा । —नाग वि—तोतेकी
 रुकठादा सं—शुक्रग्रह ।
 रुकि, रुकिरा सं—दिद्रु सीप ।
 रुखड, (-रि) सं—सुखनेके कारण बिकनेवाली
 चीजोंका जो वजन कम हो जाता है ।
 रुखना, रुखना वि—सुखा ।
 रुखा, रुखा वि—सुखा ; जिसमें वेतनके अतिरिक्त
 भोजन-वस्त्र नहीं दिया जाता ।
 रुंथा, रुंथा (कि परि ६)—सुंधना । [सुंधाना ।
 रुंथान (-नो), रुंथाना, रुंथना (कि परि ६)
 रुथान (-नो), रुथाना, रुथना (कि परि १३)
 —सुखना, सुखाना ; दुबला होना ; उपवास
 करना । वि—सुखा हुआ, सुखाया हुआ ।
 रुठि वि—शुद्ध, पवित्र । —राइ=रूँठि ।
 रुंठेका, रुंठेका वि—सूखा और सिकुड़ा हुआ ।
 रुंठेकी वि—सूखा हुआ (-गाइ) ।
 रुंठि सं—फलो, छोमी ।
 रुंठ सं—सोंठ सूखा अद्रक ।
 रुंठ सं—सूँड़ ।
 रुंठे सं—कलवार । [कलवार ।
 रुठ (-अ) स—सूँड़ । रुठी सं—हाथी ;
 रुथान (-नो), रुथाना, रुथना, रुथाना
 (कि परि १८)—सुधारना, शोधना, संस्कार
 करना ; सुधरना । [देना ।
 रुश, रुश (कि परि ६)—अड़ा करना, चुका
 रुश (कि परि ६)—पूछना । [पूछना ।
 रुथान (-नो), रुथाना, रुथना (कि परि १३)
 रुडू वि—सिर्फ, केवल ; खाली (-शठ) । रुडू
 रुडू कि वि—बकाया हुआ, बिना कारण ।
 रुन, रुनि स—रूद्र कुत्ता ।
 रुना, रुना (कि परि ६)—सुनना, ध्वनि करना,
 मानना, पालन करना । वि—सुना हुआ, श्रुत ।
 रुनान (-नो), रुनाना, रुनना, रुनाना (कि

परि १३)—सुनाना ; धमकाना । रुनानि
 सं—सुनवाई ।
 रुदा सं—सदेह, जक, शुद्धा ।
 रुड स—मंगल, कल्याण । वि—मंगलप्रद,
 कल्याणकारी । —रूठि सं—विवाहके समय
 सिर पर चढ़ाकर उड़ा कर दुलहे और दुलहिनका
 आपसमें ताकना । —रूठि सं—सुहागरात ।
 रुडरुड, रुडरुड वि—कल्याणकारी । सं—
 शुभंकारी नामक गणित-पुस्तकका लेखक ।
 रुडाकाछी, रुडाकाछी वि—शुभचिंतक ।
 रुड (-अ) वि—गान सफेद ।
 रुंठा, रुंठा सं—रोजा ।
 रुडाणाका, (रुंठा-) सं—रोपुंठार कीड़ा ।
 रुडाद, रुडाद, रुडाद सं—सूर ; एक गाली ।
 रुड सं—शुरु, आरंभ । [शोरवा ।
 रुडस सं—नागदेव हाथ मांसका जूस,
 रुला, रुला सं—सोआ, एक साग ।
 रुड सं—सूस ।
 रुडा सं—सेवा, परिचर्या ।
 रुवा, रुवा (कि परि ६)—सोखना, चूस लेना ।
 रुव (-अ) वि—रुधना सूखा, नीरस ; उदास ।
 रुव सं—रुडाद सूर ।
 रुव (-अ) सं—आकाश, उन्ना, बिंदी, सिफर ।
 वि—खाली । —रूठि सं—खाली नजर,
 रुदास इष्टि ।
 रुं, रुं (-अ) सं—रूना सूप ।
 रुगान (रुगाल) सं—भिन्नान गीदड़ ।
 रुग (रुंग-अ) सं—गि सींग ; शिखर, चोटी ।
 रुंकी वि—सींगवाला ।
 रुगना (रुंगला) सं—रुदान सिवार ।
 रुंका=रुंका ।
 रुगद स—मुकुट, शिखर ।
 रुंथा, रुंथान=रुंथा, रुंथान ।
 रुग सं—रुगा बिस्तरा । —रूठि सं—विवाह

की रात्रिमें दुलहे-दुलहिनके साथ जागनेवाली स्त्रियोंको दूसरे दिन सुबह बिस्तरा उठानेके लिए वरपक्षकी तरफसे दिये जानेवाले रुपये जो स्त्रियाँ आपसमें बाँट लेती हैं।

लैस सँ—सेठ, महाजन, सौदागर। [परजाता।

लैकानी, लैकानि, लैकालिका सँ—हरसिंगार,

लैकिस सँ—स्त्रियोंका साड़ीके नीचेवाला पहनावा जो घुटनों तक लटकता है।

लैशन सँ—मिश्रण गीदड़।

लैस सँ—सूली, एक अस्त्र।

लैक सँ—ताखा, ताक shelf

लैस सँ—अंत, समाप्ति, बाकी, नाश। वि—

अंतिम, आखिरी (—वचन) ; समाप्त, खतम,

बचा हुआ। लैस दिन सँ—अंतिम दिन,

मृत्युका समय। लैसलैसि क्रि वि—समाप्त होनेके समय, आखिरी वक्त।

लैज (शङ्क-अ) सँ—ठठक।

लैथिला स—शिथिलता, लापरवाही।

लैव (-अ) वि—शिव सम्बन्धी। सँ—शिवका उपासक।

लैवान, लैवन सँ—लैवना सिवार।

लैव (-अ) सँ—पहाड़। वि—पर्वत सम्बन्धी। —ब्राह्म सँ—हिमालय।

लैव सँ—बचपन, लड़कपन।

लैवश = लैव।

लैक सँ—गम, रंज, मृत्युसे दुःख, शोक (गूँ—, टोकात्र—, —गोत्र)। लैकालू धि—शोकसे व्याकुल। लैकानन सँ—शोक

की आग या जलन। लैकालित (-अ) वि—शोकात्। लैकालिह (-अ) वि—शोकात्।

लैकालिग सँ—शोकका वेग।

लैकाल, लैकाल, लैकालन = लैकाल, लैकालन।

लैकाल, लैकाल सँ—पश्चात्ताप, अफसोस, शोच, शोक करना। लैकालीन (-अ) वि—शोक

करनेके योग्य, जिसकी हालत देखकर दुःख होता है।

लैकालि सँ—रक्त, खून। लैकालिह (-अ) वि—रक्तमात्रा लहूसे लथपथ।

लैकाल सँ—सूजन, किसी अंगका फूलना।

लैकाल सँ—परिशोध, चुकता, बदला, शोधन।

—लैकाल स—चुकता और निवृत्तेरा।

लैकाल सँ—शोधन, शुद्ध करना, साफ करना, संशोधन ; चुकता। लैकालि (-अ) वि—

शोध हुआ। लैकालीन (-अ) वि—शोधने योग्य।

लैकाल = लैकाल।

लैकाल, लैकालन = लैकाल, लैकालन।

लैकाल वि—छंदर, मनोहर।

लैकाल सँ—सुन्दरता, छटा। —लैकाल ना क्रि—अच्छा नहीं लगता। लैकालि (-अ) क्रि—

शोभित हुआ। लैकालाल सँ—मिष्टि जलूस।

लैकालि (-अ) वि—शोभायमान। [सोना।

लैकाल, लैकाल (क्रि परि १०) —लैकाल कर लेटना ;

लैकालन (-नो), लैकालनो (क्रि परि १४) —

लैकालना, लैकालना। [शोरगुल।

लैकाल सँ—शोर, चिह्नाहट। —लैकाल सँ—

लैकाल सँ—एक क्षार, शोरा।

लैकाल स—एक मछली।

लैकाल = लैकाल।

लैकाल सँ—सूखापन ; क्षयरोग ; नासूर।

लैकाल वि—सोखनेवाला। [सोखा हुआ।

लैकाल सँ—सोखना। लैकालि (-अ) वि—

लैकाल = लैकाल।

लैकाल सँ—घोषणा, डिहोरा।

लैकालि (शङ-), लैकालि वि—शौकीन ;

कमनीय। लैकालि सँ—शौकीनी।

लैकाल (-अ) वि—मातागत मतवाला, आसक्त,

मशहूर (मान—)। लैकालि सँ—छंदि

कलवार। लोष्ठिकान्न स—कलवारखाना,
शराबकी दुकान।

लोर्व (शउर्ज-अ) स—साहस, पराक्रम।

शमान (शशान) स—सरवट, रम्यान।

शम्भ (शम्भु) स—शोषणादि दाढ़ी और मूँछ,
पाछि दाढ़ी। शम्भन वि—दाढ़ी और मूँछ-
वाला।

शाना स्त्री—काली (देवी)। स—एक चिढ़िया।
—शृङ्गा स—कालीकी पूजा जो दिवालीकी

शतको होती है। [शानो स्त्री—शानी साली।

शानक, शान स—शाना साला। शानिका,
शेन स—बाख शिकरा।

शवन (सवन) स—शाना छनना; कान।

शवनीय, शव, शवा (-अ) वि—छनने योग्य।

शम (सम) स—मेहनत। —झौरी वि स—
मछूर मजदूर। —बावि स—शाम पसीना।

शमन (समन) स—बौद्ध सन्न्यासी।

शमिक = शमझौरी। [(ठेकाइ—)]

श्राद्ध (श्राद्ध-अ) स—श्राद्ध; नाश, वृथा व्यय

श्राद्ध (श्रान्त-अ) वि—थका; धीमा, निवृत्त।

श्राष्टि स—थकावट; विश्राम। [बौद्ध साधु।

श्रावक (श्रावक) वि—छननेवाला स—चेला,

श्रावण (श्रावन) स—सावन। वि—श्रवण-
इंद्रिय सम्बन्धी। श्रावने, श्रावने वि—
सावनमें उत्पन्न।

श्री (श्री) स—लक्ष्मी, सम्पत्ति, धन, सौभाग्य,
शोभा, कांति (श्रेष्ठ—, विभी)। श्री, श्रीमान्,
श्रीगुरु, श्रीगुरु, श्रीगुरु स—नामके पहले आदर
और स्नेह सूचक उपाधि (देवता देवतुल्य
व्यक्ति या पवित्र वस्तुके पूर्व—श्री)। जैसे,—

श्रीश्रीगुरु, श्रीगुरु, श्रीगुरु, श्रीगुरु। जीवित
व्यक्तिके नामके पूर्व—श्री। आदरमें—श्रीगुरु,
श्रीगुरु। अधिक आदरमें श्रीगुरु। स्नेहमें श्रीमान्।
महिलाके नाममें श्रीमती; आदरमें श्रीगुरु।

सन्न्यासी देवता आदिके नाममें श्रीगुरु। जैसे
श्रीगुरु श्रीगुरु श्रेष्ठगुरु, श्रीगुरुगुरु श्रीगुरु।

श्रीगुरु (श्रीगुरु-अ) स—जगन्नाथ पूरी।

श्रीगुरु स—जेलखाना (व्यगमें)।

श्रीगुरुगुरुगुरु (-गुरुगुरु)—पूज्य व्यक्तिको रत
लिखनेके आरंभमें ऐसा लिखा जाता है।

श्रीगुरु स—सौभाग्य या धनकी वृद्धि।

श्रीगुरु (-अ) वि—जिसकी शोभा या संपत्ति नष्ट
हो गयी है। [—यशस्वी।

श्रुत (श्रुत-अ) वि—सुना हुआ। —कौटिलि वि

श्रुति (श्रुति) स—श्रवण, कान, लोकोक्ति
(ज्ञान—), वेद। —श्रुति वि, स—कोई वाक्य

सुनतेही जिसको याद हो जाता है।

श्रुतिगुरु वि—जो सुना जा रहा है।

श्रीगुरु, श्रीगुरु (श्रीगुरु) स—श्रुति, गात्रि कतार,
कक्षा, दल जाति।

श्रीगुरु (श्रीगुरु), श्रीगुरु स—निष्ठ चूतड़।

श्रीगुरु (श्रीगुरु) स—सुननेवाला। श्रीगुरुगुरु
स—सुननेवाले। श्रीगुरु (-अ) वि—

सुननेयोग्य। श्रीगुरु (-अ) स—कान, श्रवण-
न्द्रिय, वेद। श्रीगुरु (-अ) स—वेद-वेदांग

में पारंगत व्यक्ति, ब्राह्मणोंकी एक श्रेणी।
श्रीगुरु (अ) वि—वेद-विहित।

श्रीगुरु (-अ) वि—छिना शिथिल, ढीला।

श्रीगुरु स—श्रीगुरु तारीफ; श्रेणी। श्रीगुरुगुरु,
श्रीगुरु (-अ) वि—प्रशंसा योग्य।

श्रीगुरु (-अ) वि—सयुक्त, मिला हुआ।

श्रीगुरु स—श्रीगुरु फीलपा। [लज्जा, इज्जत।

श्रीगुरु वि—शिष्ट, भद्र। श्रीगुरु स—शिष्टता,

श्रीगुरु स—सयोग, आलिंगन; ताना।

श्रीगुरु (श्रीगुरु) स—रक्त, शिकन, श्रेष्ठ, बलगम।

श्रीगुरु वि—बलगम सम्बन्धी। [परसों]।

श्रीगुरु (-अ) वि—आगामी दिन (श्रेष्ठ,
श्रेष्ठ स—आगामोद्ग चापलूसी।

शुद्ध सं—सुद्ध ।

शुद्ध (शब्द) स्त्री—शाब्द सास ।

शुद्ध सं—साँस ग्रहण और त्याग ।

शुद्ध सं—हिंसक पशु ।

शुद्ध सं—साँस, दमा, मृत्युके पूर्वकी साँस (श्वासी—छाँ, नाडि—) ।

शुद्ध (अ) सं—शुद्ध श्वासी सुफेद कोढ़ । शुद्धी सं—शुद्ध श्वासी सुफेद कोढ़ी ।

शुद्ध वि—गाना, सुद्ध सुफेद, शुद्ध । —शुद्ध सं—विनाश विलायत, इंग्लैंड ।

शुद्ध (-अ) सं—शुद्ध सुफेदी, सुफेद कोढ़ ।

व

वृष्टि वि, सं—वृष्टि, ६ । —वृष्टि (-अ) सं—तांत्रिक साधनके लिए शरीरके भीतरके छ. स्थानोंमें कल्पित छ प्रकारके पद्म (श्वासात्र, श्वासीन, श्वासीभूत, अनाशु, विलुप्त ७ आकाश) । —वृष्टि सं—वृष्टि भौरा ।

वृष्टि (-अ) सं—वृष्टि साजिश ।

वृष्टि नर्तन सं—सांख्य, पातंजल, पूर्वमीमांसा, वेदांत, वैशेषिक, न्याय—वेदके अनुयायी ये छ दर्शन-शास्त्र । [नामदे ।

वृष्टि (-अ) सं—वृष्टि, वृष्टि, वृष्टि, वृष्टि । वि—

वृष्टि वि—वृष्टि सडमुसंड, तगड़ा । वृष्टिगार्क (-अ) वि, सं—तगड़ा और गवार, शुक्राचार्य के दो पुत्र ।

वृष्टि वि, सं—वृष्टि साठ, ६० ।

वृष्टि स्त्री—वृष्टि ; सतानकी रक्षा करनेवाली देवी । —वृष्टि सं—वृष्टि-वृष्टि तब जेठ शुक्ला पक्षीको दामादके लिए भेट ।

वृष्टि वि, सं—साठ, ६० ।

वृष्टि, वृष्टि स्त्री—वृष्टि देवी संतानकी रक्षा करनेवाली देवी । वृष्टि वृष्टि सं—संतानके

रक्षार्थ पक्षी देवीका नाम उच्चारण । वृष्टि वृष्टि क्रि वि—वृष्टि देवीकी कृपासे ।

वृष्टि वि—वृष्टि मासमें होनेवाला या प्रकाशित होनेवाला अथवा किया जानेवाला ।

वृष्टि सं—संतानके जन्मके बाद छठी रातको की जानेवाली पूजा, छठी ।

वृष्टि वि, सं—वृष्टि सोलह, १६ । सं—वृष्टिमें १६ प्रकारके दानकी सामग्रियाँ । वि—सोलहवाँ ।

वृष्टि (-अ) वि, सं—सोलह, १६ । —वृष्टि वि—सोलहों आने, पूरापूरा ।

ज

ज- उप—सहित, युक्त (मङ्गल, मङ्गलवार) ; सदृश, समान (मङ्गल, मङ्गल) ।

ज- स्त्री—सखी, सहेली । सं—दस्तखत ।

ज- सं—साईस ।

ज- सं—उपार्जन भट, सौगात ।

ज- सं—ऊँच खरीद, सौदा, व्यापार ।

ज- सं—जगत्, बगिक सौदागर, व्यापारी ।

ज- वि—जगत् सवा ।

ज- = जगत् ।

ज- क्रि वि—जगत्, छाड़ा सिवाय ।

ज- सं—आवृत्ति सवार, घुड़सवार ।

ज- सं—आवृत्ति सवारी, गाड़ी ।

ज- सं—आवृत्ति सवार ।

ज- सं—प्रश्न, सवाल, जिरह ।

ज- = जगत् । ज- = जगत् ।

ज- सं—विपत्ति, मुसीबत, आफत ; स करो रास्ता (जिरह—) । वि—खतरनाक ।

ज- (-अ) वि—आफतमें फँसा हुआ ।

ज- मङ्गल, मङ्गल सं—मिलन मेल, जोड़, संग्रह ।

मशकल, मशकल (-अ) वि—संग्रह किया हुआ । मशकल, मशकल स—संग्रह करनेवाला ।

मशकल, मशकल (-अ) स—संकल्प, उद्देश्य, पक्का इरादा । —विश्व स—विश्व दुवधा ।

मशकल, मशकल स—संजन, कीर्तन ।

मशकल, मशकल—वि—परिपूर्ण (विश्व—, शोध—) । [थावा—श्वे ना] ।

मशकल स—पर्याप्त, यथेष्ट परिमाण (एकमत्र मशकल, मशकल स—इष्टित इशारा, निशान, चिह्न । [संकोच ।

मशकल, मशकल स—दूरी लज्जा, हिचकिचाहट, मशकल, मशकल स—संचार, एक स्थानसे दूसरे

स्थानमें गमन ; संक्रांति, संक्रामक रोग आदिका फैलना । मशकल, मशकल (-अ) वि—संचारप्राप्त, फैला हुआ ।

मशकल वि—संचारित, व्याप्त ; सम्बन्धी, विषयक (विश्व—काशी) ।

मशकल स—सौर मासका अंतिम दिन ।

मशकल स—आंदोलन, हलचल, व्याकुलता, बचनी । मशकल (-अ) वि—बेचैन ।

मशकल वि—(समासके अन्तमें) संख्या-परिमित, संख्या-पूरक (मशकल या मशकल मशकल मशकल, दसवाँ श्लोक) ।

मशकल स—गणना, गिनती, अंक, विचार ।

—मशकल वि—जो संख्यामें अधिक हैं (—मशकल) । —मशकल वि—जो संख्यामें कम हैं (—मशकल) ।

मशकल (-अ) वि—गिना हुआ, विचारा हुआ ।

मशकल स—गिनती ।

मशकल स—निर्णय, प्रचार ।

मशकल (-अ) वि—गिनने योग्य ।

मशकल, मशकल (-अ) वि—मिला हुआ, योग्य,

उचित । (संगत) स—गानेके साथ बाजेका मेल ।

मशकल, मशकल स—मिलन, मेल, सामंजस्य, योग्यता ; दौलत (—मशकल, —मशकल) ।

मशकल (-अ) वि—एकत्र किया हुआ, बटोरा हुआ । [वि—छिपाया हुआ ।

मशकल स—छिपाव । मशकल (-अ)

मशकल (-अ) स—संग्रह, संचय । मशकल, मशकल वि, स—संग्रह करनेवाला ।

मशकल (-अ) स—दल, समूह, समिति, बौद्ध भिक्षुसमाज ।

मशकल (-अ) स—संघपे, संघटन ।

मशकल स—पूर्व वधपूरा साल ।

मशकल स—संयम, दमन, रोक, सम्हाल (मशकल—) ; छिपाव ।

मशकल, (-ना) स—स्वागत, सम्मान ।

मशकल (-अ) वि—स्वागत किया हुआ, सम्मान-प्राप्त ।

मशकल (-अ) वि—युक्त, सहित ।

मशकल स—खबर, समाचार ; बातचीत (मशकल—) । —मशकल (-अ) स—समाचार पत्र, अखबार ।

मशकल, (-वाह) स—जगद्वहन बोझ ढोना, देह मलना । मशकल वि, स—जगद्वहारी बोझ ढोनेवाला, देह मलनेवाला ।

मशकल स—ज्ञान, होश ।

मशकल वि—उत्तम रूपसे विदित ।

मशकल स—रचना, संघटन ।

मशकल (-अ) वि—लवलीन, निद्रित ।

मशकल (-अ) वि—आवृत्त, गुप्त ।

मशकल स—घबराहट, वेग ।

मशकल, मशकल, (-ना) स—अनुभव, बोध, ज्ञान । मशकल (-अ) वि—अनुभव करने योग्य ।

मंथ (शंजत-अ) वि—नियंत्रित, नियमित, परिमित (—वाक्, मंथताशत्र) ।

मंथ (शंजम) स—नियम, निग्रह, दमन, रोक, व्रत आदिके पूर्व दिनका कृत्य । मंथन स—दमन, रोक ; व्रत आदिका पालन ।

मंथु (-अ) वि—मिलित, सहित ।

मंथोच्चन, (-ना) स—जोड़ने या मिलानेका कम । मंथोच्चित (-अ) वि—संयुक्त, मिला हुआ ।

मंथ (शंशय) सं—सदेह, शक, आगा-पीछा, दुबधा । मंथित (-अ) वि—सदेहास्पद ।

मंथित वि—सदेह करनेवाला ।

मंथ (शंस्रय) सं—आश्रय, अवलंब ।

मंथ (-अ) वि—आसक्त, लगा हुआ । मंथि स—आसक्ति, लगाव ।

मंथ स—समिति, सभा ।

मंथ (शंशार) स—जगत्, संसार, सृष्टि; गृहस्थी (—छात्र, —धर्म, —कन्या, —पाठा), विवाह (ताशत्र ईश—) । —वादा स—गृहस्थीके काय (काश्रक्षण—निर्वाह करि) । मंथी वि, सं—गृहस्थ, परिवार वाला, संसार की मायामें फसा हुआ ।

मंथि (-अ) वि—सिद्ध, पूर्ण ।

मंथि स—साथ साथ गमन, प्रवाह, आवा गमन ।

मंथि (-अ) वि—सम्बन्धयुक्त ।

मंथी वि, स—संस्कार करनेवाला ।

मंथ स—शोधन, शुद्धि, उधार (मंथ—) ; मरम्मत (धीर्—) ; धार्मिक संस्कार (उभयन—, विवाह—, —वर्जित), मन पर पड़ा हुआ प्रभाव (छान—, कर्म—, कू—), छाप ; जन्मका स्वाभाविक संस्कार (धानि—) ; पूर्व जन्मका संस्कार ।

मंथि स—संस्कार, शोधन ।

मंथ स—स्थिति, अवस्था, हालत ; समिति, जिंदगी बसर करनेका ढंग ।

मंथन स—सन्निवेश, विन्यास, स्थिति, गठन, बनावट, प्रबन्ध (अन्व—) ।

मंथ (शंशर्ष-अ) स—लगाव, सम्बन्ध ।

मंथि (-अ) वि—सम्बन्धयुक्त, हुआ हुआ ।

मंथ स—सम्बन्ध, संग ।

मंथ (-अ) वि—मिलित, एकत्रित, गाढ़ा या घना किया हुआ, जमाया हुआ, दृढ़ ।

मंथ स—संहार, नाश, वध, प्रत्याकर्षण ।

मंथि स—हत्याकारी, कातिल ।

मंथ स—विनाश, वध, समाप्ति, अन्त ; प्रलय, प्रत्याहार, खुले बालोंका गुंथना (वेणी—) । मंथ वि—संहार करनेवाला, वधिक ।

मंथि (-अ) वि—संगृहीत, मिलित ।

मंथ (-अ) वि—वध किया हुआ, प्रत्याहत, संकुचित ।

मंथि स—कच्ची रसोई, जूठन ।

मंथि वि—मंथ रहमदिल, दयालु ।

मंथि वि—मंथ, मंथ सारा, सब, कुल ।

मंथ स—सवेरा (—शुभ्रा, —वेना) ; अविलंब । मंथ मंथि वि—जल्दी जल्दी, धेला रहते) ।

मंथ स—निकट, समीप ।

मंथ अ—एक बार ।

मंथि वि—कौतूहलयुक्त ।

मंथ (-अ) वि—आसक्त, संलग्न ।

मंथ स—मंथ, मंथ सत्त ।

मंथ (शंखम) वि—समथ ।

मंथ स—मंथ शौक, चसका ।

मंथ स—मित्र, दोस्त । स्त्री—मंथी । मंथ (-अ) स—मित्रता, दोस्ती ।

मञ्जु वि—सत्त्व रज तम ये तीन गुण युक्त
(—त्रैश्वर) । [जाति ।

मङ्गोद्व (—अ) स—आदि एक गोत्रके लोग,
मधन वि—मेघयुक्त, बादल छाया हुआ (—
गगन) । क्रि वि—बार बार, निरंतर ।

मड, मर स—मसखरा ।

मडिन = मडिन ।

मङ्गट, मङ्गलन, मङ्गल, मङ्गोत्तम, मङ्गल, मङ्गल,
मङ्गल आदि—मङ्गल आदि देखो ।

मङ्ग (—अ) स—संग, सोहबत, मिलन, आसक्ति ।
मङ्ग क्रि वि—साथ, सहित । मङ्ग मङ्ग क्रि वि—
साथ-साथ ; तुरन्त ।

मङ्गल, मङ्गल आदि—मङ्गल आदि देखो ।

मङ्गिन, मङ्गिन वि—मङ्गिन संगीन, गुस्तर, संजीदा,
सकट-युक्त ।

मङ्गी स—साथी, हमजोली ।

मङ्ग, मङ्गल = मङ्ग, मङ्गल ।

मङ्गलित (—अ) वि—बुरा डरा हुआ, चकित ।

मङ्गलन वि—चंदन पोता हुआ ।

मङ्गलान क्रि वि—प्रायशः, अकसर ।

मङ्गल वि—मङ्गल चलनेवाला ।

मङ्गल स—मन्त्री, वजीर ; सहायक ।

मङ्गलन वि—जीवन्त चेतन ।

मङ्गल (—अ) वि—चेष्टा-युक्त ।

मङ्गलित (—अ) वि—चरित्रवान । [दौलतमद ।

मङ्गल वि—जिसका खच अच्छी तरह चलता हो,

मङ्गल (—अ) वि—सुराखदार ।

मङ्गनी स्त्री—सखी, सहेली ।

मङ्गल (शज्ने) स—सहिजन ।

मङ्गल वि—जलयुक्त, आँसुओंसे पूण ।

मङ्गल वि—जागता हुआ, सावधान ।

मङ्गल स—एक जातिका मनुष्य । मङ्गलौव
(—अ) वि—एक जातिका ।

मङ्गल स—मङ्गल साही ।

मङ्गल वि—जीवित, जिंदा ।

मङ्गल वि—ताकतवर । मङ्गल क्रि वि—जोरसे ।

मङ्गल स—सजावट । मङ्गल (—अ) वि—
सजा-सजाया ।

मङ्गल वि—चेतन, ज्ञानयुक्त । मङ्गल क्रि वि
—ज्ञानतः जानते या ज्ञान रहते हुए, होशसे ।

मङ्गल स—संग्रह, पूँजी, संचय । मङ्गल स—
संचय करना, जमा करना । मङ्गल वि—
संचय करनेवाला ।

मङ्गल स—विचरण, गमन, संचार, कपन ।

मङ्गल स—एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन,
गति, विस्तार । मङ्गलित (—अ) वि—संचार
या प्रचार किया हुआ, फैलाया हुआ ।

मङ्गल (—अ) वि—उत्पन्न, पैदा । [भालर ।

मङ्गल स—संजाफ, मगजी, गोद, किनारा,
मङ्गल अ—भट (—क'द्व म'द्व भ'द्व) ।

मङ्गल स—सठक ।

मङ्गलान (—नो), मङ्गलाना (क्रि परि १६)—
भागना, चपत होना, सटकना ।

मङ्गल वि—सरपट, बहुत तेज दौड़का भावसूचक ।

मङ्गल वि—बधाई ठीक, सही ।

मङ्गल वि—डाकका महसूल सहित ।

मङ्गल स—साजिश, षड्यंत्र ।

मङ्गल स—बलम भाला, बरछा ।

मङ्गल (—अ) वि—बुरा घोखा हुआ ।

मङ्गल स—सड़ासड़ा ; खुजली गुदगुदी आदिका
अनुभव ।

मङ्गल स—सालन, मसालादार तरकारी ।

मङ्गल, मङ्गल स—तेज चालका शब्द (—क'द्व
मि'द्व म'द्व, म'द्व इ'द्व—क'द्व तलाशित्र बार
क'द्व) ।

मङ्गल (—अ) क्रि वि—सदा, हमेशा ।

मङ्गल (—तता) स—स—सज्जनता, ईमान-
दारी ।

म००० (-अ) वि, सं—सत्रह, १७ ।

म००० (-अ) वि—सावधान, होशियार ।

म००० (-अ), (-अ) वि—देवमात्र सौतेला ।

म०००, म००० स्त्री—म००० सौत । म००० वि—
सौत सम्बन्धी ।

म००० स्त्री—माक्षी पतिव्रता, मृत पतिके साथ जो
स्त्री जल मरती है । —मा० सं—मृत पतिके
साथ एक चितामें जोवित स्त्रीका जलना ।
—मि०, —म० सं—(व्यंगमें) सतीपन ।

म००० (-अ) सं—सहपाठी, सहाध्यायी ।

म००० (-अ) वि—प्यासा, तृष्णापूर्ण ।

म००० वि—तेजाला जोरावर, पनपता हुआ ।

म००० (-अ) वि, सं—म००० ।

म००० सं—मा० दाह, शव जलानेकी क्रिया ;
सम्मान आदर ।

म००० स्त्री—विमात्रा सौतेली माँ ।

म००० वि—श्रष्ट, उत्तम, साधु ।

म००० वि, सं—सत्तर, ७० ।

म००० क्रि वि—होने पर भी ।

म००० (-अ) सं, वि—सत्य, यथार्थ, ठीक,
सही । —निष्ठ (-अ) वि—सत्यमें निष्ठा
रखनेवाला, सत्यवादी । —श्रुति (-अ)
वि—दृढ़ प्रतिज्ञा करनेवाला । —लज (-अ)
सं—प्रतिज्ञा-भंग । —म० (-अ) वि—
वचनको पूरा करनेवाला ।

म००० वि, सं—सत्य और मिथ्या ।

म००० वि—म० सच, सही । म००० म००० क्रि
वि—सचमुच, वास्तवमें, वाकई ।

म००० (-अ) सं—एक सदावर्त ।

म००० क्रि वि—शीघ्र, जल्दी, तुरंत ।

म००० सं—मकान, घर ; निकट ।

म००० वि—दयालु, रहमदिल ।

म००० वि—प्रधान, उच्च, सदर ; बाहरी ।

सं—ब्योढ़ी, मकानका बाहरी हिस्सा ।

—आना सं—सबजज, जिलाधीश ।

म००० (-अ) वि—घमंडके साथ, गर्वयुक्त ।

म००० वि—सत् और असत् अच्छा और बुरा ।

म००० सं—सौदागर ।

म००० (-अ) स—सदावर्त ।

म००० वि—महानुभाव ।

म००० स—शुभ इच्छा ।

म००० सं—योग्य उत्तर ।

म००० (-अ) सं—शुभ उद्देश्य ।

म००० सं—उत्तम उपाय ।

म००० (-अ) वि—एकसा, समान, तुल्य ।

म००० सं—गवालोंकी एक जाति ।

म००० सं—अच्छा बर्ताव, उत्तम उपयोग ;
(व्यंगमें) भोजन ।

म००० सं—अच्छे काममें खर्च ।

म००० स—मित्रता, दोस्ती, प्रेमभाव ।

म००० (-अ) सं—मकान, घर ।

म००० (-अ) क्रि वि—अभी, तुरंत । वि—इसी
समयका, ताजा ।

म००० स्त्री—सौभाग्यवती । [गुण युक्त ।

म०००, म००० वि—एक धर्मवाला, समान
मन—मान ।

म००० (-अ) सं—शनाक्त ।

म००० (-अ) वि—अति आग्रहयुक्त ।

म००० (पद्यमें) अ—म० साथ, सहित ।

म००० (-अ) वि—फैलाया हुआ, निरंतर ।

म००० (-अ) वि—दुखी, सताया हुआ,
तपाया हुआ ।

म००० सं—म० तैरना ।

म००० सं—अच्छी तरह तृप्ति दान । म०००
क्रि वि—बहुत सावधानीसे ।

म००० (-अ) वि—भयभीत ।

नद्यान स—बहुत डर । —वाप स—राज्याधि-
कार प्राप्तिके लिए हिंसात्मक कार्य ही साधन
है ऐसा मत ।

नन्दि (-अ) वि—संदेहयुक्त ।

नन्दिशान वि—संदेह करनेवाला, शक्ती ।

नक्षान स—खोज, निशाना, रहस्य, भेद,
निशाना लगाना (क्षत्र शत्र —) ।

नक्षि स—मिलन, जोड़, गाँठ ; मेल (वक्षः—) ;
दिन और रात या दो तिथियों के मिलनेका
समय । —श्रद्धा स—नवरात्रमें दुर्गा-पूजा
की अष्टमी और नवमी तिथियोंकी संधि
समयकी विशेष पूजा । [परिणत ।

नक्षिठ (-अ) वि—मिलित, संयुक्त, मदिरामें

नक्षिष्ट वि—खोज करनेके इच्छुक, खोजी ।

नक्षि स—छोटा चिमटा, चिमटी ।

नक्षिकटे वि—अति समीप ।

नक्षिकर्ष (-अ) स—निकटता । नक्षिकृष्टे (-अ)
वि—पासवाला, समीपका ।

नक्षिशन, नक्षिधि स—समीपता ; समागम ।

नक्षिणाठ स—एकमें मिलन (९१—) ; समूह,
पतन, मृत्यु, त्रिदोषका विकार ।

नक्षिवक्ष (-अ) वि—दृढ़तासे बंधा हुआ, गूथा
हुआ । [तल्लीन, एकाग्र ।

नक्षिविष्टे (-अ) वि—प्रविष्ट, सामने रखा हुआ,
नक्षिवेष स—स्थिति, संयोग, अंतर्भाव ।

-नक्षिठ (-अ) वि—(समासके अंतर्में) सदृश,
तुल्य (षट्—) । [अच्छी तरह स्थापित ।

नक्षिष्ठि (-अ) वि—पासवाला, सटा हुआ ;

नक्षाल (-अ) वि—समर्पित, छोड़ा हुआ ।

नक्षानि स—संन्यास, गृहस्थाश्रमका त्याग ;
एक रोग जिससे एकाएक हृद्गति बंद होकर
मृत्यु हो जाती है । नक्षानि स—संन्यासी ;
चतुर्थाश्रमी, भिक्षु । स्त्री—नक्षानिनी ।

नक्षार्ज (शन्माग-अ) स—उत्तम मार्ग ।

नक्ष स—बड़ी चटाई ।

नक्ष (-अ) स, वि—जो अपने पक्षमें हो,
सहायक, तरफदार, पंखवाला ।

नक्ष (-अ) वि, स—विरोधी, शत्रु ।

नक्षी स्त्री—नक्षिनी सौत ।

नक्षीक वि—नक्षीक पत्नीके साथ ।

नक्षिवात्र वि—परिवारके साथ ।

नक्षन स—गीलेपनका लक्षण प्रकाश (लिङ्—
कृच्छ्र) । नक्षन वि—गीला ।

नक्ष (क्रि परि १)—सौंपना, अर्पण करना, देना ।

नक्ष, नक्ष स—बैत चाबुक आदि मारनेका
शब्द ।

नक्ष वि—चौथाईके साथ, सवा ; पैरवाला ।

नक्षन स—गीली वस्तु खाने या बैत चाबुक
आदि मारनेका शब्द ।

नक्षि (-अ) स—एकही कुलमें उत्पन्न सातवीं
पीढ़ी तकका पुरुष जो एकही पितरोंको पिंड
दान करता है । नक्षिीक स—मृत्युके एक
साल बादका श्राद्ध ।

नक्ष (-अ) वि, स—सात, ७ । नक्ष स—
सातका समूह । नक्षि वि स—सत्तर ७० ।

नक्षी स—पुराणके अनुसार पृथ्वीके सात
विभाग—जंबु, प्लक्ष, शालमलि, कुश, क्रौंच,
शाक और पुष्कर । नक्षी क्रि वि—सात
भागोंमें, सात प्रकारसे, सात बार । नक्षी
स—विवाहमें वर और वधूका एकसाथ सात
कदम चलना, भाँवर । नक्षी स—

पुराणके अनुसार पृथ्वीके नीचे वाले सात लोक
अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल,
रसातल, पाताल । नक्ष वि—सातवाँ ।

नक्षी स—सातवीं तिथि । नक्षीक, नक्षीक
(-अ) स—पुराणके अनुसार—भूः, भुव,
स्वः, जन, महः, तपः, सत्य, ऊपरके ये सात
लोक । नक्षीक (-अ) स—पुराणके अनुसार

—लवण, इन्दुरस, छुरा, घृत, दधिमड, क्षीर,
स्वादूदक ये सात समुद्र ।

मशाय स—शुद्ध हफ्ता, सात दिन ।

मशयुक्त (-अ) वि—प्रतिभायुक्त, बुद्धिमान ;
फुर्तीला, स कोच-रहित ।

मशयान वि—प्रमाण सहित, प्रमाणित ।

मशय स—विदेश भ्रमण, सैर, सफर ।

मशय स—भूतिमात्र एक छोटी मछली ।

मशय वि—फलयुक्त, सार्थक, कामयाब । —काम,
—यनोपपन्न वि—जिसकी कामना सिद्ध हुई है ।

मश वि—कुल, सारा, समस्त । —बाबा वि—
हरफन-मौला । मशय सर्व—मशय सबलोग ।

मशय सर्व—सबलोग । क्रि वि—सब समेत
(—शौच ठेका) ; अब (—मशय) ।

मशय स—आनाख सब्जी, तरकारी ।

मशय (-अ) स—समान वर्ण, स्वजाति ।

मशय वि—ताकतवर । मशय क्रि वि—ताकतसे,
जबरदस्ती । [सिनेमा] ।

मशय वि—बोलता (—छिड़, —हवि, बोलता
मशय स—सूर्य ; ईश्वर ; जन्मदाता । मशय
वि स्त्री—प्रसन्न करनेवाली ।

मशय वि—विनय सहित ।

मशय वि—विरामयुक्त, जो लगातार न हो ।

मशय क्रि वि—अच्छी तरह, उत्तम रूपसे,
ब्योरेवार ।

मशय वि—विस्तार सहित ।

मशय वि—शक्ति हरा, सज्ज ।

मशय स—सत्र, धैर्य ।

मशय—मश देखो ।

मश (-अ) वि—बायाँ, बायाँ और दाहिना
दोनों । —मशय वि, स—दोनों हाथोंसे बाण
चला सकनेवाला, अजेन, जो दोनों हाथोंसे
समान काम कर सकता है ।

मशय स्त्री—सधवा ।

मशय (-अ) वि—समान प्रतियोगी, प्रतिद्वन्द्वी ।

मशय (-अ) वि—कुल, सारा, सब ।

मशयान (-नो), मशयानो (क्रि, परि १६)—
समझना ; समझाना ।

मशय वि—उचित, योग्य, ठीक ।

मशय वि—जिसकी सतह बराबर है ।

मशय (-अ) वि—गत, बीता हुआ ।

मशय वि—बहुत अधिक ।

मशय स—अदालतमें हाजिर होनेका हुक्मनामा ।

मशय स—पर्यायवाची शब्द synonym.

मशय स—मेल, अवरोध, मिलन ।

मशय (-अ) वि—युक्त, मिलित ।

मशय (-अ) = मशय ।

मशयगौ, मशयश (-अ) वि—एक उमरका ।

मशय स—समूह, मिलन, साभेकी कपनी,
मिलित उद्योग । मशय वि—नित्य सम्बद्ध,
उपादानभूत । —काय स—उपादान
कारण ।

मशय वि—सम्मिलित, नित्य सम्बन्धसे युक्त ।

मशयना स—सहानुभूति, हमदर्दी ।

मशय वि—हमदर्द, सहानुभूति-सम्पन्न ।

मशय स—एक-सी हालत ।

मशययात्र स—साथ, एकसाथ गमन ।

मशय स—समय, वक्त (अग्न—, अकटोद—) ;
अवसर, फुरसत, मौका ; अंतिम समय ।

मशयय स—दूसरा समय । मशयय क्रि
वि—दूसरे समय । मशयय क्रि वि—समय
समय पर, कभी कभी । मशयय वि—
समयके उपयोगी । यथामशयय क्रि वि—
ठीक समय पर ।

मशयय वि—समर्थन करनेवाला ।

मशयय स—किसी प्रस्तावके पक्षमें सम्मति
प्रदान । मशयय (-अ) वि—समर्थन-प्राप्त ।

मशयय स—सौंपना, त्याग देना, दान देना

(कना—, याद—) । मगष्टि (-अ) वि—
सौपा हुआ । [या व्यक्तियोंका समूह ।

मगष्टि स— मोटे कुल, एक श्रेणीके सब पदार्थों
मगष्टान्त्रिक वि—एक समयका । [वद्ध ।

मगल (-अ) वि—मगल सब, कुल ; समास—
मगल स—पहेली, जटिल विषय, उलझन
(कठिन मगलान्न भण्डि) ।

मगाकौर्ण (-अ) वि—पूर्ण, घना, संकुल ।

मगागठ (-अ) वि—आया हुआ । मगागम स
—मिलन, आगमन ।

मगाछत्र (-अ) वि—आच्छन्न छाया हुआ ।

मगाड स—समाज, समुदाय, सभा, गरोह,
वैष्णवोंकी समाधि । —छाउ (-अ) वि—
समानसे निकाला हुआ । —मगल स—
समाज-मुद्धार । —मगल स—समाजका
प्रधान व्यक्ति ।

मगादर स—विशेष आदर, सम्मान । मगादृउ
(-अ) वि—विशेष आदर प्राप्त ।

मगाधा, मगाधान स—निजिष्ठ फैसला
मीमांसा ।

मगान वि—तुल्य, बराबर, सहज (—वर्ग) ।

सं—नाभि या उदरकी वायु । मगानाधिकरण
वि, स—जिनका आश्रयस्थान एक है ।

मगाश्रुण्ड स—बराबरका सम्बन्ध या औसत ।

मगाश्रुव स—बराबरका अंतर या फासला ।
मगाश्रुबान, मगाश्रुव वि—समानांतर, बराबर
दूरीवाला (—व्रथा) ।

मगाश्रु वि—पूरा करनेवाला । मगाश्रुका वि—
जिससे वाक्यका अर्थ पूरा होता है (—किन्ना) ।

मगाशन स—पूरा करना, समाप्त करना । मगाशित
(-अ) वि—समाप्त या पूरा किया हुआ ।

मगाशेव (-अ) वि—प्राप्त, विपत्तिमें फँसा हुआ,
समाप्त । [खातमा, अत ।

मगाश (-अ) वि—पूरा, खतम । मगाशित स—

मगादर्शन स—ब्रह्मचर्य-काल समाप्त होनेपर
गृहस्थाश्रममें लौट आना ; विश्वविद्यालयके
उत्तीर्ण छात्रोंको उपाधि वितरणका उत्सव
convocation [तल्लीन ।

मगाविष्ट (-अ) वि—प्रविष्ट, समाया हुआ ;
मगावृउ (-अ) वि—अच्छी तरह ढका हुआ,
घेरा हुआ ।

मगावर्ण सं—एकमें मिलाना, एकमें स्थित या
अंतर्गत होना, प्रवेश । मगावर्णित (-अ)
वि—स्थापित प्रविष्ट कराया हुआ । [रोह ।

मगावृष्ट (-अ) सं—आरंभ, अनुष्ठान, समा-
मगावृष्ट (-अ) सं—धूमधाम ।

मगार्थ (-अ), मगार्थक वि—एकही अर्थवाला ।

मगालोचना, (-छन) सं—दोष-गुणकी आलोचना ।

मगालोचक वि—समालोचना करनेवाला ।

मगालोचिउ (-अ) वि जिसकी समालोचना की
गयी है । मगालोच (-अ) वि—समा-
लोचनाके योग्य ।

मगान सं—अनेक पदोंका एकमें मिलन ।

मगागळ (-अ) वि—अधिक आसक्त, लवलीन ।

मगागळि स—अधिक आसक्ति ।

मगागौन वि—आसीन बैठा हुआ ।

मगाशत्र, मगाशत्र, मगाश्रुति स—संग्रह, संक्षेप,
समूह । मगाश्रुत (-अ) वि—संग्रह किया
हुआ । [स्थापित, एकाग्र, मीमांसित ।

मगाश्रु (-अ) वि समाधि प्राप्त, गाढ़ा हुआ,
मगिशि सं—मगिशि सभा ।

मगिश (-अ) वि जलता हुआ, उत्तेजित ।

मगिश, मगिश स—हवनकी लकड़ी, ईंधन,
अग्नि ।

मगोक्त्रण सं—समान या बराबर करना, एक
स ख्याके साथ दूसरी स ख्या या स ख्याओंको
समानताका निर्देश ।

मगोक्त्रण, मगोक्त्रा स—अच्छी तरह दर्शन,

समालोचना ; खोज । मभीकाकात्रो वि—
फलाफल या पूर्वापर विचार कर काम
करनेवाला ।

मभीटीन वि—मगल उचित, योग्य, यथार्थ ।

मभीत्र, मभीत्रण सं—वायु, हवा ।

मभीश (-अ) सं—सम्मान प्रदर्शन, पूज्य
व्यक्तिके सामने संकोच ।

मभीश सं—इच्छा, चेष्टा ।

मभीथ सं—मभीथ सम्मुख, सामना ।

मभीष्ठि वि—आश उचित, योग्य ।

मभीष्ठ सं—समूह संग्रह ।

मभीष्ठ सं—नाश, ध्वंस, बरबादी ।

मभीथान सं—उदय, उत्पत्ति, जगना । मभीष्ठि
(-अ) वि—उठा हुआ, जागा हुआ ।

मभीष्ठक वि—बहुत उत्सुक ।

मभीष्ठ सं—उदय, उत्थान । मभीष्ठि (-अ)
वि—उदित, उठा हुआ ।

मभीष्ठ, मभीष्ठ वि—समस्त, कुल, सब, सारा ।

मभीष्ठ सं—उत्पत्ति, आविर्भाव ।

मभीष्ठ (-अ) वि—उदयत, तैयार, उतारू ।

मभीष्ठ (-अ) वि—बहुत उन्नत ।

मभीष्ठि सं—अधिक उन्नति ।

मभील, मभीलक वि—मूल सहित, कारण सहित ।

मभील (-अ) वि—बढ़ा हुआ, सम्पन्न, दौलत-
मद । मभील सं—ऐश्वर्य, दौलत ।

मभील वि—महित साथ ।

मभील, मभील सं—स पदा, ऐश्वर्य, दौलत ।

मभील (-अ) वि—पूरा किया हुआ, सिद्ध,
दौलतमद ; युक्त (शक्ति—) ।

मभील (-अ) सं—संसर्ग, सम्बन्ध, नाता ।

मभीलित (-अ), मभीली (-अ) वि—
सम्बन्धयुक्त, नातेका, रिश्तावाला । मभीली
वि, सं—नातेदार ।

मभील सं—पतन, गिरना ।

मभीलन, (-ना) सं—निर्वाह, समापन, पूरा
करना, संपादकका काम । मभीलित (-अ)
वि—पूरा किया हुआ, संपादकके द्वारा शोधा
हुआ । मभील (-अ) वि—संपादित या
पूरा करने योग्य ।

मभील सं—कोठा, ठीठा डिब्बा ।

मभील (-अ) वि—संयुक्त, मिलित । [अभी ।

मभीति कि वि—इशानौर, अक्षुना इस समय,

मभीदान सं—समर्पण, दान (कथा—);
स प्रदान कारक । मभीता वि—दान करने
वाला ।

मभीता सं—अधिक विस्तार ।

मभीति सं—प्रेम, प्रणय ; संतोष ।

मभील (-अ) वि—बधा हुआ, जुड़ा हुआ ।

मभील (-अ) सं—सम्पर्क, सम्बन्ध, संयोग,
नाता, विवाहका प्रस्ताव (मेश्वर इष्टे—
आशिषाए); सम्बन्ध कारक । मभीली
वि, सं—सम्बन्ध-युक्त, रिश्तेदार ; साला ।

मभीली (-अ) वि—सम्बन्धी, विषयक ।

मभील सं—मभील सांवर मृग ; पंजाबकी एक
भील ।

मभील=मभील ।

मभील सं—कोढ़न छौंक ।

मभील सं—अवल बन, सफर-खर्च, धन ।

मभीलित (-अ) वि—मभीलित युक्त, सहित ।

मभील (-अ) वि—ज्ञान-प्राप्त, चेतन ।

मभील सं—उत्पत्ति, जन्म, संभावना, हो
सकनेके योग्य होना । —मभील वि—होने योग्य ।

मभीलना, (-न) सं—होगा ऐसा अनुमान,
संभावना । मभीलनी (-अ), मभीली (-अ)
वि—जो होगा ऐसा अनुमान होता है,
होनहार । मभीलित (-अ) वि—जिसकी
आशा की जाती है, संभव ।

मभील सं—मभील देर, संग्रह ।

मञ्जरी, मञ्जरी स—आवाज, कथावाणी बात-
चीत; स बोधन, अभिभाषण। मञ्जरी
(-अ) वि—जिससे बातचीत की गयी है।

मञ्जरी (-अ) वि—आठ उत्पन्न।

मञ्जरी (-अ) वि—मिलित, मिलकर। —मञ्जरी
सं—मिलित प्रवेष्टा। [उपभोग।

मञ्जरी स—छवपूर्वक व्यवहार, स सर्ग,
मञ्जरी स—सम्मान, आदर गौरव। मञ्जरी
(-अ) वि—शरीफ, गौरव-युक्त। मञ्जरी
क्रि वि—सम्मान प्रदर्शनके लिए उतावला
होकर, आदरके साथ।

मञ्जरी (-अ) वि—सम्मत, अनुमोदित, राजी,
सहमत। मञ्जरी सं—अभिमत, आज्ञा,
इजाजत। —कर्म क्रि वि—आज्ञासे।

मञ्जरी स—मञ्जरी मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

मञ्जरी स—सम्मान-प्रदर्शन, स्वागत।

मञ्जरी (-अ) वि—प्रतिष्ठित इज्जतदार।

मञ्जरी स—अच्छी तरह साफ करना

मञ्जरी स—आँखों को झाड़ू।

मञ्जरी (-अ) वि—सदृश, अनुसार।

मञ्जरी स—मिलाप, मेल, स योग, भेंट,
मुलाकात। मञ्जरी (-अ) वि—मिलित
मिला हुआ। मञ्जरी स—सभा।

मञ्जरी स—सामना। वि - सामनेका आमने-
सामनेका। मञ्जरी क्रि वि - सामने समक्ष।

मञ्जरी वि—सामने अग्रसर।

मञ्जरी स—जमावड़ा, सभा एकमें मिलाना।

मञ्जरी (-अ) स—अधिक मोह। मञ्जरी

सं—मुग्ध करना। वि—मोहित-करनेवाला।

मञ्जरी (-अ) वि—अत्यंत मोहित।

मञ्जरी क्रि वि—अच्छी तरह, उत्तम रूपसे।

मञ्जरी स्त्री—अनेक राज्योंकी अत्रीवरी, सम्राट
की पत्नी। [मञ्जरी यत्नके साथ।

मञ्जरी (-अ) वि—चेष्टित। मञ्जरी क्रि वि—बढ़

मञ्जरी—मञ्जरी।

मञ्जरी स—मञ्जरी ताल, तालाव।

मञ्जरी स—प्रभु, मालिक, राज्य-संस्था,

सरकार, गुमास्ता, कारिंदा (विद्व—

वाङ्मय—)। मञ्जरी स—गुमास्तेका काम।

मञ्जरी वि—राजकीय राज्यका, जनताका।

मञ्जरी वि—जोगीला, आवेशपूर्ण, सरगर्म,

भरापूरा (आनन्द—)। [(मञ्जरी उदाहरण)।

मञ्जरी, (मञ्जरी) स—किसी घटनाका स्थान

मञ्जरी स—असबाब, सरअंजाम, सामग्री।

मञ्जरी, मञ्जरी, (-वि) स—पथ, मार्ग, रीति,

तरीका।

मञ्जरी स—गिलास आदिका ढक्कन।

मञ्जरी स—मोड़नि व्यर्थका कर्तृत्व

दिखाना, डोंग।

मञ्जरी स—मञ्जरी शरवत। [लाकर देना।

मञ्जरी (-अ) स—आगान जुटा देना, जुहाना,

मञ्जरी स—मञ्जरी शर्म, लज्जा।

मञ्जरी वि—सीधा, निष्कपट, भोलाभाला; सहज।

मञ्जरी (शर्पे) स—सरसों।

मञ्जरी वि—रसदार, रसीला।

मञ्जरी स—मञ्जरी कमल।

मञ्जरी स—मञ्जरी ताल, तालाव।

मञ्जरी (-अ) स—मौजाना सरहद।

मञ्जरी स—मञ्जरी मिट्टीका कसोरा।

मञ्जरी (क्रि परि १)—सरकना, हिलना, निकलना,

इस्तेमाल करना।

मञ्जरी स—मञ्जरी सराय।

मञ्जरी (-नो), मञ्जरी (क्रि परि १०)—

हटाना, सरकाना, चुराना, गवन करना।

मञ्जरी वि—सरसरी, स क्षिप्त, जल्दीमें किया

हुआ (—विचार)।

मञ्जरी = मञ्जरी।

मञ्जरी, मञ्जरी स—सरसों।

मन्त्रोत्पत्ति स—रे'गनेवाला कीड़ा, छातीके बल
चलनेवाला प्राणी ।

मन्त्र वि—महीन, बारीक, सूक्ष्म, पतला, क्षीण ।
—कान्ति स—चावल उरद आदि पीस कर
बनाई हुई रोटी ।

मन्त्र वि—समान, सदृश ।

मन्त्रगमिन्=मन्त्रगमिन् ।

मन्त्र वि—उत्तम, अच्छा ।

मन्त्राक्ष स—मन्त्र कमल ।

मन्त्राक्ष स—सरोद, एक प्रकारका बीन ।

मन्त्राक्ष स—शुद्धिनी तालाब ।

मन्त्राक्ष (-अ) स—मन्त्र कमल ।

मन्त्राक्ष वि—क्रोधित । मन्त्राक्ष क्रि वि—क्रोधसे ।

मन्त्र (-अ) स—सृष्टि, उत्पत्ति, प्रकृति ; यथा
अध्याय ; त्याग ।

मन्त्र (-अ) स—मन्त्र शर्त । [सरदारका काम ।

मन्त्राक्ष स—सरदार, नायक । मन्त्राक्ष वि—

मन्त्रि स—कक्षवाग्ग जुकाम, सरदी, ठंडक,

गोलापन । मन्त्रि-मन्त्रि स—तेज गर्मीके सहने
के कारण मूर्च्छाका भाव, लहलहाना ।

मन्त्र (-अ) स—साँप, भुजंग । स्त्री—मन्त्री,

मन्त्रिणी । मन्त्रीवाच स—साँपका डसना ।

मन्त्रिः स—वृत्त घी ।

मन्त्रिण वि—टेढ़ा-भेड़ा, पंचदार ।

मन्त्री वि—गतिशील, चलनेवाला ।

मन्त्र (-अ) सर्व, वि—सब, कुल, समस्त ।

मन्त्राक्ष (-अ) वि—सब कुछ सहनेवाला ।

मन्त्राक्ष स—पृथ्वी । —मन्त्र (-अ) वि—सर्वत्र

जानेवाला । —जनन वि—जनताके हितके

लिए कृत (—शर्माश्रय) । —नाश स—

सत्यानाश । —नाश, (-नान) वि—

सत्यानाश करनेवाला । स्त्री,—नाशनी,—

नाशनी । —नाश वि—सब प्रकारके मतवाले

(—नाशिन) । —मन्त्र वि—सर्वात्मक,

सबमें व्याप्त । स—ईश्वर । —मन्त्र क्रि वि—

सब विषयमें, सब प्रकारसे । —मन्त्र (-अ)

वि—सभीको सम्मति प्राप्त । —मन्त्र (-अ)

स—सब धन, सब कुछ । —मन्त्र (-अ)

स—सब धन और सम्पत्तिका नाश । वि—

जिसका सब कुछ नष्ट हो गया है ।

मन्त्रोत्पत्ति स—मन्त्रोत्पत्ति रात्रि, रात ।

मन्त्राक्ष (-अ) स—सब अंग । मन्त्राक्षीय

वि—सब अंगोंका (—कृष्ण) ।

मन्त्राक्ष स्त्री—शर्मा दुर्गा । [कर्ता ।

मन्त्राक्ष वि, स—हरता-धरता, एकमात्र

मन्त्राक्ष क्रि वि—सबके ऊपर ।

मन्त्र स—सरसों ।

मन्त्र (-अ) वि—लज्जित, शर्मिंदा, शरमीला ।

मन्त्र स—सलाह ।

मन्त्राक्ष=मन्त्राक्ष ।

मन्त्रि, मन्त्र स—वक्ता, पत्नी ।

मन्त्रि स—जल, पानी ।

मन्त्र (-अ) वि—डरा हुआ, भयभीत ।

मन्त्र (-अ) वि—शब्द-युक्त । मन्त्राक्ष क्रि वि—

आवाजके साथ, शब्द करते हुए । [कर ।

मन्त्रोत्पत्ति क्रि वि—शरीरके साथ, मूर्ति धारण

मन्त्राक्ष (-अ) वि—हृदयारवन्द ।

मन्त्राक्ष (-अ) वि—सज्जित ;

मन्त्राक्ष वि—गर्भवती, गाभिनी ।

मन्त्राक्ष क्रि वि—सम्मान और उतावलीके साथ ।

मन्त्राक्ष क्रि वि—मान या आदरके साथ ।

मन्त्राक्ष वि—समुद्रके साथ (—धरा) ।

मन्त्राक्ष स—संकटकी स्थिति, डाँवाडोल

हालत ।

मन्त्राक्ष (-अ) वि—सेना सहित ।

मन्त्राक्ष (शस्ता) वि—शनैः शस्ता ।

मन्त्राक्ष (शस्त्रीक) वि—पत्नीके साथ ।

मन्त्राक्ष (शस्त्रेह -अ) वि—शस्त्रेह-युक्त ।

जम्भू (-अ) वि—लालसा-युक्त ।

जम्भू (जम्भित-अ) वि—मुस्कुराता हुआ, प्रफुल्ल ।

जम्भू (-अ) क्रि वि—सहित ।

जम्भू वि—सहनेवाला (भाव—, प्रःगम्भ) ।

जम्भू वि, सं—एकसाथ काम करनेवाला, सहकारी ।

जम्भू सं—आमका पेड़ ; सहयोग ।

जम्भू सं—साथ गमन, पतिके शवके साथ पत्नीका सती होना ।

जम्भू वि—सहज, सहल, आसान, सरल ।

जम्भू क्रि वि—आसानीसे, सहजमें, सरलतासे, मामूली कारणसे (जम्भू चाटे ना) ।

जम्भू वि—जन्मके साथ उत्पन्न (कर्षद्र—दूधन) ; एकसाथ उत्पन्न । —जम्भू सं—जन्मके साथ उत्पन्न ज्ञान और चेष्टाये ।

जम्भू वि—प्राकृतिक । सं—वैष्णवोंकी साधनाकी एक रीति । [पत्नी ।

जम्भू वि—एक धर्मवाला । जम्भू स्त्री—

जम्भू सं—सहन, वरदास्त । जम्भू (-अ) वि—सहन करने योग्य ।

जम्भू वि, सं—एकसाथ पढ़नेवाला ।

जम्भू सं—सोहवतसे प्राप्त शिक्षा, स सर्ग, सदाचार ।

जम्भू सं—एकसाथ रहना, संभोग ।

जम्भू सं—पत्नीका मृत पतिके साथ सती होना । [करनेवाला ।

जम्भू वि, सं—एकसाथ चलने या यात्रा जम्भू=जम्भू ।

जम्भू वि—हर्षयुक्त, आनंदित ।

जम्भू क्रि वि—शृंगार अचानक, एकाएक ।

जम्भू सं—योग शास्त्रोक्त षट्चक्रोंमें सिरके अदरका नीचेकी ओर मुह किया हुआ सहस्रदल कमल ।

जम्भू, जम्भू (क्रि परि २)—सहन करना, सहने योग्य होना (गा—) । वि—सहन करने योग्य ।

जम्भू सं—एकसाथ पढ़नेवाला ।

जम्भू (-नो), जम्भूना, जम्भूना (क्रि परि १२) —सहन कराना ।

जम्भू सं—गमनवेदना हमदर्दी ।

जम्भू सं—सहकारी, मददगार, सहायक ।

जम्भू (-अ) वि—ह सता हुआ (-वदन) ।

जम्भू सं—जड़े, शङ्ख दस्तखत ।

जम्भू-जम्भू वि—समान, अनुरूप, तक, योग्य ।

जम्भू-वि—नापके अनुरूप । दूध—वि—छातीतक ऊँचा । गानान—, वि—ठीक ।

जम्भू वि—सहनशील, क्षमावान ।

जम्भू सं—जड़े साईस ।

जम्भू वि—शुद्धवान, उदार दिलदार ।

जम्भू सं—सगा भाई । जम्भू स्त्री—सगी चहन । [सहन, वरदास्त (-द्वारा) ।

जम्भू (शङ्ख-अ) वि—सहने योग्य । सं—

जम्भू (शङ्खादि) सं—जम्भू चाटे भारतके पश्चिम समुद्रतटकी पर्वतमाला ।

जम्भू, जम्भू जम्भू, जम्भू सं—वेग-सूचक शब्द, सन (जम्भू या जम्भू कद्व छविछो छल गेल । जम्भू जम्भू या जम्भू जम्भू कद्व शङ्खा वहेछ । जम्भू जम्भू जम्भू कद्व) ।

जम्भू=जम्भू ।

जम्भू वि, सं—सँतीस, ३७ ।

जम्भू सं—बिहारके दक्षिणपूर्वी प्रांतमें रहनेवाली एक आदिम जाति । जम्भू वि—साँवताल जाति सम्बन्धी ।

जम्भू (-अ), जम्भू (-अ) सं—दोगलापन ।

जम्भू, जम्भू वि—इशारेका, सकेत सम्बन्धी ।

जम्भू (-अ) सं—कपिल-प्रणीत दर्शन-शास्त्र ।

मांशांगिक वि—संग्राम सम्बन्धी ।

मांशांगिक, (मांशांगिक) वि—मांशांगिक प्राणघातक, भयानक । [बाद करने योग्य ।

मांशांगिक, मांशांगिक वि—सालाना, एक वर्ष के

मांशांगिक वि—समाचार सम्बन्धी । स—समाचार-पत्र-सेवी ।

मांशांगिक वि—पारिवारिक परिवार सम्बन्धी (—अवस्था), लौकिक ; दुनियादार ।

मांशांगिक (—अ) स—समुदाय, समष्टि ।

मांशांगिक (शाकांश-अ) वि—लालसायुक्त, लोभी ।

मांशांगिक स—निवास-स्थान, पता ।

मांशांगिक स—शराब परोसनेवाला ।

मांशांगिक स—थूल पुल सेतु ।

मांशांगिक वि—अक्षरयुक्त, शिक्षित ।

मांशांगिक (शाकांश-अ) वि—प्रत्यक्ष । क्रि वि—सामने, सम्मुखमें, समक्ष । स—भेंट, मुलाकात । —का स—प्रत्यक्ष करना, मुलाकात करना । —अक्षर (—अ) स—प्रत्यक्ष या निकटका सम्बन्ध ।

मांशांगिक स—गवाही ।

मांशांगिक स—गवाह । मांशांगिक (—अ) स—गवाही, इजहार । मांशांगिक भाषान क्रि—गवाहको फोड़ लेना ।

मांशांगिक, मांशांगिक स—साबूदाना ।

मांशांगिक वि, स—अग्निहोत्री ।

मांशांगिक, मांशांगिक=मांशांगिक, मांशांगिक ।

मांशांगिक (—अ) वि—अ गसहित, पूर्णांग; समाप्त, पूरा । मांशांगिक (—अ) वि—अंगों और उपांगों सहित, दलबल सहित ।

मांशांगिक, मांशांगिक स—निम्न श्रेणीमें विधवाका विवाह, सगाई । [दोस्त ।

मांशांगिक, मांशांगिक, मांशांगिक स—संगी, साथी, मांशांगिक=मांशांगिक ।

मांशांगिक, मांशांगिक वि—सत्य, खरा, शुद्ध, सच्चा ।

मांशांगिक स—मांशांगिक, (अ) सजावटका सामान, पोशाक, जेवर (जांशिक—); उपकरण, सामान । —अक्षर स—नाटकके अभिनेताओं के सजनेका घर । मांशांगिक (—अ) वि—सजित, सुहावना ।

मांशांगिक स—मांशांगिक सजा ।

मांशांगिक (क्रि परि ३)—सजना, सजधज करना, स्वांग करना, खाने या पीने योग्य बनाना (पान—, भाषा—) । वि—सजित ।

मांशांगिक=मांशांगिक । [भाव ।

मांशांगिक (—अ) स—समान जाति होनेका मांशांगिक (—नो), मांशांगिक (क्रि परि १०)—सजाना ।

मांशांगिक स—मांशांगिक भाषा फूल ले जानेकी टोकरी । मांशांगिक, मांशांगिक स—सजी ।

मांशांगिक, मांशांगिक वि—मांशांगिक, टांका ताजा (—अ) । मांशांगिक स—मांशांगिक वक्तर । —मांशांगिक स—वक्तरबंद गाड़ी ।

मांशांगिक, मांशांगिक स—मांशांगिक, शाम । मांशांगिक स—मच्छड़ भगानेके लिए पुवाल आदिका धुआँ ।

मांशांगिक स—मांशांगिक साजिश ।

मांशांगिक, मांशांगिक स—इशारा, सकेत, संक्षेप ।

मांशांगिक (क्रि परि ३)—मांशांगिक सदाना, चिपकाना ।

मांशांगिक स—साटन, चिकना रेशमी कपड़ा ।

मांशांगिक स—ज्ञान, चैतन्य, स्पर्श-ज्ञान ।

मांशांगिक वि—आड बरके साथ ।

मांशांगिक स—बुलाहट पर उत्तर या आवाज (—मांशांगिक, —अक्षर); प्रतिक्रिया, शब्द, खलबली, शोरगुल (मांशांगिक—मांशांगिक) ।

मांशांगिक स—सँडसी ।

मांशांगिक वि—साढ़े आधेके साथ ।

मांशांगिक वि, स—सात, ७ । —मांशांगिक वि, स—सँतालीस, ४७ । —मांशांगिक, —मांशांगिक स—सात

लड़वाला हार। —गांठ स—नाना प्रकार,
उपेक्षित। —बछि वि, स—सरसठ, ६७।

गांठल स—अविच्छेद।

गांठलान (-नो), गांठलानो (क्रि परि १६)—
तरकारी आदिको तेल या घी में थोड़ा भूना,
छींकना।

गांठ स—ताशका सत्ता।

गांठल स—तैराई (—जुवा, —कांठा)।

गांठलान (-नो), गांठलानो (क्रि परि १६)
—तैरना, पोरना।

गांठल वि, स—सतहत्तर, ७७।

गांठलन वि, स—सन्तानवे, ६७।

गांठल (-अ) वि, स—सन्तावन, ५७।

गांठल वि, स—सत्ताइस, २७। गांठल
स—सत्ताइसवीं तारीख।

गांठल, (-नै) वि स—सत्तासी, ८७।

गांठल वि—अत्यंत, अधिक।

गांठल वि—सत्त्वगुणसे उत्पन्न, सतोगुणी,
साधु।

गांठ स—संग, साथ। गांठो स—मित्र, दोस्त,
साथ रहने या चलनेवाला। गांठ क्रि वि—
संग, साथ, सहित।

गांठ वि—आदरके साथ।

गांठ वि—छुफेड, शुक्ल, सादा; भोलाभाला।
—गिधा, —गिधे वि—चनाइश्च जिसमें
आड़ वर न हो, भोलाभाला।

गांठ स—गांठि गांठी, विवाह।

गांठो स—सवार।

गांठ स—इच्छा, कामना, शौक; गमंवती
स्त्रीको किसी खास वस्तु खानेकी रुचि;
उसे वैसी वस्तु खिलानेका उत्सव
(—जुवा, —जुवा)। —बछि क्रि—इच्छा
पूरी होना, मजा चखना। गांठ क्रि वि—
खेच्छासे।

गांठ (-अ) स—गुण योग्यता आदिकी
समता, तुल्यता।

गांठ (क्रि परि ३)—साधना, सिद्धिके लिए
अभ्यास करना; अनुरोध या विनती करना
(बड़ेबाद बछि—); बिना कहे कुछ करना
(गांठि वा जल (थेले या ना); करना (बाद
—, शत्रुता करना)। वि—अभ्यास द्वारा
परिमार्जित (—गना)। —गांठि स—
बारबार अनुरोध या विनती।

गांठल वि—मामूली, आम जनताका, सब,
सब श्रेणियोंका (नदगुणवेद—गड)। स—
जनता। —उछ (-अ) स—गणतंत्र,
प्रजातंत्र।

गांठ स्त्री—साधन करनेवाली।

गांठल स—(योगशास्त्रमें) शरीरके भीतरका
दूसरा चक्र या पद्म।

गांठ वि—उत्तम, शिष्ट, माजित, धार्मिक।
स—साधु, संत, सज्जन, संन्यासी;
सौदागर। —ठाठा स—साहित्यकी
भाषा।

गांठ (-अ) वि—सिद्ध करने योग्य, आसान,
आराम होने या करने योग्य (—ब्राह्म)।
स—सामर्थ्य, शक्ति (गांठ कूनाइ ना)।
—बछि (-अ) क्रि वि—सामर्थ्यके अनुसार,
यथाशक्ति। —गांठल स—बहन विनती,
अनुरोध। गांठलौठ (-अ) वि—शक्तिसे
बाहरका।

गांठो स्त्री—सती, पतिव्रता।

गांठ स—चीनी मिट्टी आदिकी थाली।

गांठ, छाना (क्रि परि ३)—सानना।

गांठ स—शहनाई। [चोटी।

गांठ स—पहाडके ऊपरवाली चौरस भूमि,
गांठल वि—अनुरोध या विनतीके साथ।

गांठ (-अ) वि—अत्युक्त, सीमावद्ध।

माछात्रा सं—कृपणात्सु स तरा ।

माछी सं—स तरी, पहरेदार ।

माछना, माछन सं—ढाड़स ।

माछा वि—संध्या सम्बन्धी, शामका ।

माछिषा (-अ) सं—समीपता ।

माछिपाठिक वि—सन्निपातसे उत्पन्न ।

माछ सं—साँप, भुजंग । माछे गच्छे नाछिउ ना

जाछे—साँपभी मरे लाठी भी न दूटे ।

माछे सं—लपेट ; ढींग ।

माछे वि—जिसमें ऊँच नीचका भेद न हो, जो मिले उसे पूरा (—थाछा) । [बागछेन ।

माछेन (-नो), माछेना (क्रि परि १६)—

माछेना, माछे सं—मदारी ।

माछेक (-अ) वि—अपेक्षायुक्त, जिसमें दूसरे विषयकी अपेक्षा है ।

माछे वि—साफ, स्वच्छ, स्पष्ट । माछा वि—

अच्छा साफ । माछे सं—सफाई । [युक्त ।

माछेका सं—अवकाश ; फुसत । वि—अवकाश-

माछेना वि—अच्छे स्पष्ट, रूपवाला ।

माछे वि—समाप्त, खतम । [लगाना ।

माछे सं—साबुन । —माछा वि—साबुन

माछेक वि—आलस्यवाला ।

माछे=माछे

माछे सं—सबूत, प्रमाण ।

माछेक वि—पुराना, प्राचीन ।

माछे (-अ) वि—निर्धारित, तय ।

माछेमाछेन क्रि वि—गृथाश्रुति आमने-सामने ।

माछेन क्रि वि—अश्रुति सामने, आगे ।

माछेन (-नो), माछेना (क्रि परि १६)—
सँभलना, सयत करना, रोकना, रखना ;
सँभलना, बचना ।

माछेक वि—समाज-सम्बन्धी, मिलनसार ।

सं—उत्सवादिमें भेंट । माछेक सं—
सामाजिक व्यवहार ।

माछेक (-अ) वि—साधारण, मामूली, तुच्छ ।

माछेकः क्रि वि—सामान्यतया, साधारण-
रूपसे । [सावधान करनेका शब्द ।

माछेन अ—सँभल जाओ ! सं—

माछेना = माछेना ।

माछेक = माछेक ।

माछेक (-अ) सं—समीपता ।

माछेन सं—ज्वीन देशकी नाव । [हामी ।

माछे सं—शेष, समाप्ति, खातमा, सम्मति,

माछे सं—वाण, तीर, तलवार ।

माछेन वि—संध्या समयका ।

माछे सं—सागर, तालाब ।

माछे सं—लहगा ।

माछेक (-अ) सं—संध्याका समय ।

माछेक (-अ) सं—अभिन्नता, सयोग, ईश्वरके
साथ मिलन या सयोग ।

माछे सं—सार, असली भाग, तत्त्व, सारांश,
संक्षेप, खाद, पास ; कतार, पक्ति । वि—श्रेष्ठ,
संक्षिप्त । —माछे (-अ) वि—सार-गर्भित ।

—माछे वि—सार ग्रहण करनेवाला । —माछे

वि—सारवाला, उत्तम । —माछे सं—

सारयुक्तता । —माछे (-अ) वि—साररूप,

श्रेष्ठ । —माछे (अ) सं—माछे फौलाद ।

माछेक वि—रेचक, दस्तावर ।

माछेक, (मा-) सं—सारंगी ; जहाज
चलानेवाला, मृग ; अमर, मोर ; हाथी

माछेक सं—सार गिया ।

माछे सं—अश्रुमात्र हटाना, सरकाना ।

माछेक, (माछे-) वि—कतारमें लगाया हुआ,
श्रेणीबद्ध ।

माछेक (-अ) सं—बूझ कुत्ता ।

माछेक (-अ) सं—सरलता, भोलापन ।

माछे सं—सारस, हंस ।

माछे (क्रि परि ३)—माछेक कर मरम्मत

करना, सुधारना, नीरोग या स्वस्थ होना ।
खतम करना, विपत्ति या दुर्गतिमें डालना
(मरने का देना ; देना देना) ।

नादा वि—समस्त, पूरा, व्याकुल, बेचैन होना,
विपन्न ।

नादान (नो), नादाना (कि परि १०)—
सरम्मत करना, सुधारना, नीरोग करना ।

नादान (-अ), नादाना वि—सारवाला ।

नादि, नाद स—श्रेणी कतार (—श्री,
—श्री, —श्री, —श्री) ।

नादि सं—मल्लाहोंका एक गाना । [सुगो ।

नादी, नादि सं—नादि एक चिड़िया,

नाद (अ) स—समरूपता ईश्वरके समान
रूपकी प्राप्ति । [वाला ।

नाद, नाद, नाद स—जहाज चलाने

नाद (-अ) वि—साथक, अथवा, मानीहार,
साथी । —नाद सं—एकसाथ चलनेवाले
सौदागरोंका दल ; वणिक् । [साढ़े ।

नादि, नाद (-अ) वि—नाद आधेके साथ,

नाद (-अ) वि—सबका । —नादि वि सब

समयका । —नौन वि—सब लोगोंमें प्रधान

(—नौन) । —नादि वि—सब जातियोंका ।

—नादि वि—सब देशोंमें व्याप्त । —नादि

वि—अंतर-राष्ट्रीय, सब राष्ट्रोंका ।

नादि वि—सर्वत्र व्याप्त ।

नादोलो वि—विश्वव्यापी स—सज्जाट,
चक्रवर्ती ; पड़ितोंकी एक उपाधि ।

नाद वि—सरसोंका ।

नाद=नाद ।

नाद सं—साल, सन (व गला सन विक्रमीय
संवत्से ६५० साल कम है) । —नादि
सं—सालका अंत ; वार्षिक विवरण ।

नाद, नाद वि—अलंकार-युक्त । स्त्री—
नाद ।

नादि=नादि ।

नादविना स—मालमिश्री । [सालसा

नाद सं—खून साफ करनेकी एक दवा ।

नादि=नादि ।

नादिना वि—सालाना, वार्षिक ।

नादि सं—नाद पत्र । नादि सं—

पंचायत । नादि वि—पंचायत सम्बन्धी ।

नाद सं—साल, एक लाल कपड़ा ।

नादा (-अ) स—अपने इष्टदेवके लोकमें
निवास, एक प्रकारकी मुक्ति ।

नादि, नादि सं—कांचका किवाड़ ।

नाद सं—खर्चमें कमी ।

नाद वि—आन्धरा (—नद) ।

नाद सं—गायके गलेमें लटकता हुआ
कंवलसा चमड़ा ।

नाद (-अ) सं—स ग, सहायता ।

नादि वि—स्वाभाविक ।

नाद सं—साहू, साव, बनियोंकी एक उपाधि ।

नाद, नाद स—साहव । नाद,

नाद वि—अंग्रेजोंका-सा बर्ताव ।

नाद वि—साहवका, अंग्रेजोंका-सा ।

नादि=नादि ।

नाद सं—महल आदिका प्रधान फाटक ।

नाद सं—बाबूका वाला, रेत ।

नाद, नादि, नाद सं—सूका, चवन्नी ;

छीका, सिकहर । नादि वि—चौथाई
(—नाद) ।

नाद स—बादशाही सिक्का ।

नाद (-अ) वि—तर, गीला ।

नाद सं—सिगरेट ।

नाद सं—नगना नाद एक कँटीली झाड़ी ।

नाद, नाद (कि परि ५)—सीमना ।

नादान (-नो), नादाना, नादाना, नादाना
(कि परि ११)—सिमाना ।

जिक्कन स—सींचना । जिक्किठ (-अ) वि—
सींचा हुआ ।

जिक्कान (-नो), जिक्काना, जिक्काना (क्रि
परि १७)—घुणासे नाक-मौं सिकोडना ।

जिठि स—जिग सीटी ।

जिड़जिड़ = जड़जड़ ।

जिंड़ि स—सीढ़ी, जीना, सोपान, बाँस
आदिकी सीढ़ी, निसेनी ।

जिंथि, जिंथा स—जोख मांग, स्त्रियोंकी
मांगका एक जेवर । —काठा क्रि—मांग
फैलाना ।

जिंश्र स—सि दूर ।

जिंध स—सेंध । —काठि स—सेंध काटनेका
एक औजार । जिंधान, जिंधेल, वि—
सेंधिया ।

जिधा वि—जोधा सीधा । स—भाटा चावल
दाल तरकारी नमक आदिका सूखा
परोसा ।

जिनेया स—जनकिन्न वायस्कोप, सिनेमा ।

जिन्कू स—बड़ा संदूक ।

जिन्दूर स—जिंश्र सिंदूर ।

जिगाशै, जेगाशै स—सिपाही, संतरी ।

जिक्के स—सोमेट, विलायती मिट्टी ।

जिक्का, जिक्का स—सिरका ।

जिक्कजिक्क स—सिहरनेका भाव (गा—कत्रा) ।

जिक्कि स—सरेस । —कागख स—बलुआ
कागज ।

जिक्क स—रेशम, रेशमी कपड़ा ।

जिक्का स—सृष्टि करनेकी इच्छा । जिक्कू
वि—सृष्टि करनेके इच्छुक ।

जीठाठाग स—वर्धमानकी एक मिठाई ।

जीन स—नाटकका परदा या दृश्य । [सूई ।

जीवन स—जनाई सिलाई । जीवनी स—छूँट

जोख (-अ) स—जिंथि मांग । जोखक

स—सिंदूर । जोखिनी स्त्री—सौभाग्यवती,
सधवा स्त्री, बहू । जोखिगधन स—
गर्भवती स्त्रीका एक संस्कार ।

जोगाना स—जमीनकी हद चौहद्दी ।

जीन स—सुहर, ठप्पा ।

जोग, जोगक, जोगा, जोग स—सीसा धातु ।

जोग स—प सिलके भीतरका सीसा ।

जुका, जरु, जरुनि स—करेला आदि मिलाकर
पकायी हुई बिना मिर्चकी एक तरकारी
जो भोजनके आरंभमें खायी जाती है ।

जुथला, (जरु-) स—जूतके भीतरका छक-
तला ।

जुथवर स—शुभ समाचार ।

जुगठिठि वि—छडौल ।

जुगत (-अ) स—बुद्धदेव ।

जुगावि—अत्यंत सुंदर ।

जुठिठि (-अ) स—सुदीर्घ समय ।

जुठेठ वि—संतुष्ट, प्रसन्न ; सावधान ।

जुखला वि—अनेक जलवाली ।

जुखि स—सूजी, रवा ।

जुठाग स—अच्छी डौल ।

जुधज (-अ) स—सुरग, सेंध ।

जुधजुध = गड़गड़ ।

जुधजुधि स—काठूकूठ गुदगुदी ; सुरसुराहट ।

जुधक, जुधक = गड़ाक ।

जुठोन, जुठोन स—जुठोन अच्छी डौल ।

जुठा, जुठा स—डोरा, सूत, धागा ।

जुठावि—जुथाई स्वादिष्ट ।

जुस स—सूद, व्याज । —थावि वि—सूदपर
रुपया लगानेवाला ।

जुमरि, जुमरी स—बगालकी खाड़ीके पासवाले
'सुंदरवन' नामक जंगलमें उत्पन्न एक कीमती
लकड़ी ।

जुमि स—कूश कुसुमका फूल ।

श्री, श्रुति, श्रुति स—श्रुति सूर्य; चिषयसूची।
 श्रुतिकारि (-अ) स—सूर्यका काम; सिलाई।
 श्रुतिबोली स—सिलाईसे जिसकी जीविका
 चलती है, दर्जी। श्रुतिभेद (-अ) वि—बहुत
 घना (—बहुत)। श्रुति (-अ) स—
 सूर्यकी नोक। वि—सूर्यकी नोकके समान,
 कणामात्र।

श्रुतिकारि—जच्चा। स—प्रसूतकी रोग।
 श्रुतिकाश, श्रुतिकाश स—बोलावट घर
 सौरी।

श्रुत (-अ) स—श्रुत सूत, डोरा, धागा; क्रम,
 सूत्र, धारा, संक्षिप्त वाक्य (नाश—),
 नियम, विधान। —कार स—सूत्र-रचयिता।
 —धर स—छूटाव बढ़ई। —श्रुत स—
 आरंभ, श्रीगणेश।

श्रुत (-अ) स—सत्य और प्रिय वाक्य।
 श्रुत स—जान रसा, पकायो हुई दाल। —कार
 स—रसोइया।
 श्रुत स—सूरज, तपन, दिवाकर।
 श्रुत स—सृष्टि करनेकी क्रिया, निर्माण,
 उत्पादन। श्रुति (-अ) वि—निर्मित,
 बनाया हुआ।

श्रुत स—वह। श्रुत स—वह, वही।
 श्रुति स—नावके भीतरका जल उलीचकर
 फेंकनेका पात्र।

श्रुत स—बापन सेवा।
 श्रुति क्रि वि—बुलौत सिवाय।
 श्रुत स—सेक। —श्रुति क्रि—सकना।
 श्रुति (स क्रा) स—श्रुति सोनार।
 श्रुति, श्रुति (क्रि परि १)—सेकना।

श्रुति स—पुराना जमाना। श्रुति वि—
 पुराने जमानेका।
 श्रुति स—मिनटका दूँवाँ भाग, सेकंड।
 श्रुति स—श्रुति स खिया।

श्रुति स—वह स्थान। —कार वि—वहाँका।
 श्रुति क्रि वि—वहाँ।

श्रुति स—सागौनका पेड़।
 श्रुति (सैदात्), श्रुति=श्रुति।
 श्रुति, श्रुति स—सिंचाई, छिड़काव। [फेंकना।
 श्रुति (क्रि परि १)—सींचना, जल उलीचकर
 श्रुति (-अ), श्रुति वि—तीसरा (—छेले,
 श्रुति)। [एक व्रत।

श्रुति स—शामका दीपक, लडकियोंका
 श्रुति स—एक तरहकी वस्तुओंका समूह।

श्रुति स—श्रावथाना पखाना।
 श्रुति श्रुति (श्रुति ते), श्रुति श्रुति वि—
 सीला, तर (—धर)। [सीला होना।
 श्रुति (-नो), श्रुति (क्रि परि १०)—
 श्रुति स—सितार बाजा।

श्रुति स—श्रुति पुल, बाँध।
 श्रुति-श्रुति क्रि वि—श्रुति वहाँ।
 श्रुति स—साथी, सहयात्री।
 श्रुति स—एक उपाधि।
 श्रुति स—सेनापति।
 श्रुति स—सिपाही।

श्रुति स—अग्रज सितंबर मास।
 श्रुति स—उपभोग (वाशू, श्रुति—);
 व्यवहार, भोजन, पान (श्रुति—,
 श्रुति—); सेवा, पूजा। श्रुति (-अ)
 वि—जिसकी सेवा की गयी है।
 श्रुति, श्रुति (-अ) वि—सेवा या सेवन
 करनेके योग्य। श्रुति, वि—जो सेवा कर
 रहा है। श्रुति वि—जिसकी सेवा की
 जा रही है।

श्रुति स—सेवा, परिचर्या, पूजा; भोजन,
 भोग। —श्रुति स्त्री—स न्यासी आदिकी
 रखेली।

श्रुति, (-श्रुति, -श्रुति) स—पुजारी, देवोत्तर

सम्पत्तिकी आमदनी भोग करनेका अधिकारी । [या पीनेवाला (शक्ति—) ।
 मौ वि—भोग करनेवाला (शक्ति—) ; खाने
 मौ (-अ)—मवन देखो ।
 मौदे स—सिद्ध ।
 मौकानन स — ; यह चिह्न ।
 मौशे स—कानि, गनि स्याही ।
 मौशाना, मौशान वि—छात्र चतुर, सयाना ।
 मौ स—सेर, सोलह छटाँक । मौश, मौश
 वि—सेरकी तौलवाला (शक्ति— बाटिशारी) ।
 मौश वि—श्रेष्ठ, सबसे उत्तम ।
 मौश वि—मौश, मौशक वैया ।
 मौश, मौश क्रि वि—सिर्फ, केवल ।
 मौश स—आफिस, दफ्तर, सरिस्ता । —मात्र
 स—सरिस्तेदार ।
 मौशे स—सिलाई । [नजराना ।
 मौश स—सलाम । मौश स—नखर
 मौश स—भूनिन रेतीला तट । [पद ।
 मौश (-अ) स—सेनापतिका कार्य या
 मौश स—सेंधा नमक ।
 मौ=मौ ।
 मौश वि—सीधा, सरल, अकपट, सहज ।
 मौश स—सोंडा, डंडा ।
 मौश स—सोडा, एक खार ।
 मौश (-अ) वि—वेचन ।
 मौश स—सहोदर, सगा भाई ।
 मौश वि—सुखी मिट्टीमें पानी पड़ने पर जैसी
 गंध निकलती है वसी गन्धवाला ।
 मौश स—सोना, सुवर्ण । वि—सुनहला
 (—शुभ, —याग) । —शुभ स—एक पत्ती जो
 दस्तावर होती है । मौशानी स—सुनहला ।
 मौशक वि—उपकरण या सामग्री सहित ।
 मौशक (अ) स—विचारके लिए अदालतमें
 भेजना, सुपुर्द ।

मौश, (-शक्ति) वि—उपाधि-युक्त, सगुण ।
 मौश स—सीढ़ी ।
 मौश (-अ) वि—जवान, समय ।
 मौश स—स्वाद ।
 मौश स—शक्ति चैन, शांति ।
 मौश स—शोरगुल ।
 मौश स—एक क्षार, शोरा ।
 मौश स—खनदर ईला सुराही ।
 मौश स—एक जलका पौधा जिसका तना
 सुखाने पर बहुत हलका हो जाता है और
 जिसे चीर चीर कर विवाहका मौर टोप आदि
 बनाया जाता है, खुखड़ी ।
 मौश स—सुलह । —नामा स—सुलहनामा ।
 मौश स—आम्र प्यार, दुलार । मौशगिनी,
 मौशगिनी स्त्री—आम्रिणी लाडली ।
 मौशगिनी स—सुहागा । [आसानी ।
 मौश (-अ) स—सुगमता, सरलता,
 मौश (अ) स—सुकुमारता कोमलता ।
 मौश (शक्ति-अ) स—सूक्ष्मता, वारीकी ।
 मौश=मौशिन ।
 मौश वि—मौश बौद्ध ।
 मौश (-अ) स—सुगंध, सुशब्द ।
 मौश =मौशौरी ।
 मौश (-अ) स—सज्जनता, भद्र व्यवहार ।
 मौश (-अ) स—जन्मकी श्रेष्ठता ।
 मौशगिनी स—विश्व विजली ।
 मौश (-अ) स—आम्र इमारत, महल ।
 —किशौटिनी वि—इमारतोंके बुजोंवाली
 (नगरी) ।
 मौश (-अ) स—सुदरता, खूबसूरती ।
 मौशगिनी (-अ) स—उत्तम भाग्य सुश-
 किस्मती । —काम क्रि वि—भाग्यसे ।
 मौश (-अ) स—भाइयोंमें प्रेम । [शत्रु हन ।
 मौश (-अ) स—सुमित्राके पुत्र, लक्ष्मण या

जोश (-अ) वि—शांत, देखनेमें सुंदर ।

जोश (-अ) वि—सूर्यका । —अश्व स—सूर्य
और उसके ग्रह उपग्रह आदि ।

जोश स—सुंदरता

जोशपृष्ठ (-अ) स—पूर्ण समानता ।

जोशनी, (-न), जोश, जोश स—दोस्ती,
मित्रता ।

जम्भ (शकन्द -अ) स—कार्तिकेय ।

जम्भ (-अ) स—कंधा कंधा ; पेड़का तना,
ग्रंथका अध्याय, युद्ध । जम्भावात्र स—सेना-
निवास, छावनी, फौज ।

जून स—स्कूल, मदरसा ।

जू, जेजू स—जंग पेच ।

जवन स—पतन, गिरना, अस्पष्ट उच्चारण ।
ज्वलित (-अ) वि—पतित, गिरा हुआ ;
अस्पष्ट उच्चारित ।

जोश (स्टार) स—* ऐसा तारा-चिह्न ।

जोश स—अगितबोट ।

जोश स—शहरके भीतरवाली चौड़ी सड़क ।

जन (स्तन) स—कूट, जघनाश्रय, बाई स्तन,
स्त्रियों और मादा पशुओंकी छाती जिसमें दूध
रहता है । जनक वि—दूध-मुँहा । जन्म
(-अ) स—स्तनका दूध । जन्मजीवो,
जन्मपाशो वि—दूध पीनेवाला ।

जवक स—गुच्छा, समूह ।

जक (-अ) वि—जो जड़ या अचल हो गया
है ; मूर्छित, बहरा ।

जख (-अ) स—तृण आदिका गुच्छा ।

जख (-अ) स—थाग, थूँटि, खभा, पेड़का
तना ; निश्चलता, रोक । जखन स—सुन्न
करना, स्कावट, मंत्र आदि द्वारा सुन्न
करना या रोकना । जखित (-अ) वि—
आश्चर्य-चकित, सुन्न ।

जख स—थाक तह, परत ।

जखक वि—स्तुति करनेवाला ।

जखित (-अ) वि—निश्चल, गोला ।

जख (-अ) वि—जिसकी स्तुति की गयी है,
प्रशंसित । जखि स—जव स्तुति प्रश सा ।
जखिवान स—प्रश सा वाक्य । जख (-अ)
वि—जवाई प्रशंसा या स्तुतिके योग्य ।

जख स—राशि, ऊँचा टीला, बौद्धोंका स्मारक
टीला । जखाकात्र वि—टीलेके समान ।

जखीकृत (-अ) वि—ढेर किया हुआ ।

जखन स—जख चोर । जखन, जख (-अ)
स—जखता, छुरि चोरी । जखी स—
चोर ।

जखाक स—ढाढसकी बात, झूठी प्रश सा ।

जखा वि—स्तुति या प्रशंसा करनेवाला ।

जखा (-अ) स—जव स्तुति ।

जखा स—निरर्थक बात ।

जो छी—नारी, औरत, पत्नी । —जात्र
स—विवाहके समय स्त्रियोंके द्वारा परछन ।
—जोकर स्त्री—नारी, औरत । —जख वि—
जखी स्त्रियोंका-सा, स्त्रियोंमें पाये जाने
योग्य ।

जख (-अ) वि—स्त्रीके वशीभूत ।

जख (-स्थ -अ) प्र—स्थित, विद्यमान
(कथं) । [हुआ ।

जखित (स्थगित -अ) वि—स्थगित, रोका
जखि स—थकई, राज ।

जखि वि—बृद्ध, बूढ़ा ।

जख स—स्थान, देश, भूमि, जमीन ; विषय,
हालत (जख जख—ऐसी हालतमें), पात्र,
आधार । —जख वि—जमीन पर रहने या
विचरण करनेवाला । —जख (-अ) स—
एक फूल जो पझ या जपासे बड़ा है ।
जखाजिख (-अ) वि—स्थानापन्न, प्रतिनिधि,
एजजी । जखी स—स्थल, स्थान (वनजखी,

[शब्द]

नक्षत्र (-अ, वि-स्थानीय, जगहका । [वि-निश्चल, स्थिर ।

शङ्ख सं-खंटा, स्तम्भ, शाखा-रहित वृक्ष ।

शङ्ख (-अ) वि-रहनेके योग्य ।

शान सं-जाग्रता जगह, स्थान, भूमि, आवास स्थिति । शानाश्रय सं-दूसरा, स्थान ।

शानाश्रित (-अ) वि-दूसरे स्थानमें भेजा हुआ । शानोत्र (-अ) वि-स्थानिक, किसी स्थानका, स्थानापन्न, तुल्य, समान (शिष्टशानोत्र) ।

शानक वि-स्थापन करनेवाला । [कला ।

शानक (-अ) सं-राजगोरी भवन निर्माण शान (-ना) सं-रखना, अर्पण ।

शानिक (-अ) वि-स्थापित ।

शानक वि-अचल (-नान्ध, जायदाद) ।

शानो वि-स्थितिशील टिकाऊ, स्थिर ।

शानिक (-अ) सं-स्थायी रहनेका भाव ।

शानो सं-भादभाद रसोईका वरतन, हड्डी, घटलोई ।

शित (-अ) वि-अवस्थित, स्थिर, वर्तमान, मौजूद । शित सं-टिकाव, मौजूदगी, स्थिरता । शितिशानक वि-लचीला, जो सिकोड़ कर छोड़ देनेपर अपनी पूर्वस्थिति को प्राप्त हो जाता है ।

शुन वि-मोटा, इंद्रियग्राह्य ।

शुन (-अ) सं-स्थिरता, दृढ़ता ।

शुन (-अ) सं-स्थूलता, मोटाई ।

शान (-अ) वि-नहाया हुआ ।

शान सं-नाश नहाना । -बाबा सं-ज्येष्ठ पूर्णिमाको जगन्नाथ देवका स्नान-उत्सव ।

शानाश्रय सं-नहानेका कमरा, गुस्लखाना ।

शानोत्र (-अ) वि-स्नानके उपयोगी ।

सं-स्नानकी सामग्री ।

शानो वि-स्नान करनेवाला ।

शान सं-शरीरके भीतरकी नस । शानिक वि-स्नायु सम्बन्धी । [तेलहा ।

शान (-अ) वि-कोमल, शीतल, चिकना, नरम स्त्री-पतोहू ।

शान (-अ) सं-भावनाओं पर, प्रेम, कनिष्ठके ऊपर स्नेह (गाहू- , व्याहू- , गहन) ; तेल आदि (-प्रश) ।

शान (-अ), शान सं-क्रमिक गति और विराम, धीरे धीरे कम्पन (शक्ति-) ।

शानिक (-अ) वि-कम्पित ।

शान सं-दूसरेको हराने या साहसका काम करनेकी इच्छा, होड़, घमड़, ठिठई ।

शानिक (-अ) वि-स्पर्धा-युक्त । शानो वि-स्पर्धा करनेवाला ।

शान (-अ) सं-छांश, ठंकाठंकि छूना, त्वचाका अनुभव । -शानो वि-छांशक संक्रामक, छुतहा । शान सं-स्पर्श करना, छूना । शानो वि-छूनेवाला ।

शान (-अ) वि-साफ दिखाई देने या समझमें आनेवाला, व्यक्त विशद, खुल्लमखुला ।

शानिक सं-श्रवणात्र स्पीट ।

शान वि-छूने योग्य ।

शान (-अ) वि-छूना हुआ ।

शान, शक्ति सं-घड़ी आदिकी कमानी ।

शानिक (-शैक) सं-एक प्रकारका पारदर्शक पत्थर, बिलौर । [शान सं-सूजन ।

शान (-अ) वि-झूना, झंझा फूला हुआ ।

शान (-अ) वि-विकसित खिला हुआ, स्पष्ट ; फटा । शान सं-खिलना, खोलना ।

शानोत्र वि-खिलनेको उन्मुख । शानिक (-अ) वि-खोला हुआ, विकसित ।

शान सं-विकास, उमर, ऐश, स्पंदन ।

शानिक सं-फोड़ा ।

शब्दार्थ स — विकसना, विस्फोट ।

श्रवण (शरन स — स्मरण, याद, चिन्ता, ध्यान ।
श्रवणातीत (अ) वि — स्मृतिसे अतीत, बहुत
पुराना । श्रवणीय (-अ), श्रव्य (-अ) वि —
स्मरणके योग्य ।

श्रावण स — याद दिलाना ।

श्राव (श्राव -अ) वि, स — स्मृति या वस
शास्त्रका जानने वाला ।

श्रित (-अ) स — धीमी हँसी, मुसकुराहट ।
वि — मुसकुराता हुआ ; खिला हुआ ।

श्रुत (-अ), श्रुत स — श्रवण टपकना, चलना ।
श्रुत स — रथ । श्रुती वि — टपकने वाला,
चूनेवाला ।

श्रुतक स — श्रीकृष्णके हाथकी एक मणि ।

श्रांतश्रांत = श्रांतश्रांत ।

श्रु (श्रु) स — फूलकी माला ।

श्रु (श्रु) वि — गिरा हुआ ।

श्रु (-अ) वि — श्रुति, श्रावण चुआया हुआ ।

श्रु क्रि वि — सिर्फ, केवल ।

श्राव, श्रावः स — प्रवाह, बहाव । श्रावश्री,
श्रावश्री, श्रावश्री स्त्री — बहाववाली
नदी । [पत्थरकी पटिया ।

श्रु (श्रु), श्रु स — लिखनेके लिए काले
श्रु वि — निज, स्वयं । स — धन । श्रु वि —
अपना-अपना, अलग-अलग ।

श्रु स — स्वर्ग ।

श्रु (-अ) वि — अपना, निजी ।

श्रु (-अ) वि — अपना किया हुआ ।
— श्रु (-अ) स — कुलीनके वंशमें जिसने
कुलीन मर्यादा तोड़ी है यानी जिसने वंशज
या श्रोत्रियके घरमें कन्या ब्याही है ।

श्राव (-अ) वि — अपना खोदा हुआ ।

श्रु (-अ) वि — स्वाधीन, आजाद, च गा,
अपने आप उत्पन्न । स — स्वेच्छा, स्वास्थ्य ।

श्रुत स — शब्द आवाज । श्रुत (-अ)
वि ध्वनित ।

श्राव स — अपना नाम । — श्राव (-अ), —
श्राव (अ) वि — अपनी कीर्तिके द्वारा प्रसिद्ध ।

श्रुत, श्रुत (-अ) स — सपना, निद्रा ।

श्रावण स — सपनेमें पाया हुआ देवताका
आदेश । श्राव (-अ) वि — सपनेमें पाया
हुआ । श्रावण (-अ) वि — निद्रासे
जगा हुआ ।

श्राव स — स्वरूप, मनकी हालत, वस्तुका
धर्म, प्रकृति । — श्रुत स — जिस कुलीनके
वंशमें कुल-प्रथा न टूटी हो । — श्रुत (-अ),
— श्रुत वि — स्वाभाविक, सहज । [बयान ।

श्रावण स — किसी विषयका ठीक ठीक
श्रुत, श्रुत स्त्री — मदाकिनी, जो नदी
मानस सरोवरसे निकलकर बदरीनारायण
होते हुए हिमालय स्थित देवप्रयागमें गंगासे
मिली है, अलकनदा ।

श्रुत (-अ) वि — स्वर्ग सिधारा हुआ ।

श्रुति स — स्वर्गमें गति ।

श्रु (-अ) स — सोना, कांचन । — काव स —
सोनार । — श्रु वि — जहाँ सोना पैदा होता
है, बहुत उपजाऊ । — श्राव स — अच्छा
मौका । — श्रु स — मकरध्वज ।

श्रु (-अ) वि — बहुत थोड़ा ।

श्राव स्त्री — भगिनी बहन ।

श्राव स — शुभागमन, कुशल ।

श्राव (-अ) स — स्वास्थ्य, स्वच्छदता ।

श्रु स — धर्म पसीना, भाप ।

श्रु (-अ) स — स्वेच्छाचार । वि — स्वेच्छा-
चारी, असंयत । श्रु स्त्री — स्वेच्छाचार
करनेवाली, छिनाल । [(-धन) ।

श्रावण (-अ) वि — अपना कमाया हुआ

इ

इंशेई, इंशेई स — हल्ला-गुल्ला, चिल्ल-पों ।

इंशेऊ, इं'ऊ विभ — थैके से ।

इंशेवा, इं'व क्रि—हो कर । क्रि वि—तरफ से, भीतर से (गद्या इं'व काभी याव) ।

इंश (क्रि परि ७)—होना, रहना, घटना, पेंडा होना, बढ़ना, व्यतीत होना ।

इंश वि—सत्य, उचित (—कथा) । स—स्वत्व, हक, अधिकार ।

इंशिक स —विवरण, हकीकत ।

इंशिक स—हकीम ।

इंशिक स—गन्निशिक पाचन, हाजमा । इंशिकी वि—हजम करानेवाला, पाचक ।

इंशिक स—थू मालिक ।

इंशे क्रि वि—झट, जल्दी, शीघ्र, बिना विचारे ।

इंशे (क्रि परि १)—पीछे हटना या सरकना, रुकना । [हटाना, रोकना, हराना ।

इंशेन (-नो), इंशेनो (क्रि परि १०)—पीछे

इंशे (-अ) स—शंटे हाट, वाजार । —गान स—गढ़बड़ी, शोरगुल ।

इंशे स—जिद, ज्यादाती । —कात्री वि—उजड़ु, बिना विचारे काम करनेवाला ।

इंशे क्रि वि—एकाएक, अकस्मात् ।

इंशेकान (-नो), इंशेकानो (क्रि परि १६)—पिछाना फिसलना ।

इंशेवइ क्रि वि—ठाड़ाठाड़ि जल्दी-जल्दी ।

इंशेवइ वि—जल्दी मचानेवाला, जल्दबाज ।

इंशेइ स—लसलसाहट । इंशेइ वि—लसलसा ।

इंशेइ, इंशेइ स —बसीटे जाने या लुढ़कने का भाव (—क'वरे टोना) ।

इंशे, इंशेन स—फिसलनेका शब्द ।

इंशे स—शड़ा हंडा ।

इंश (-अ) वि—वध किया हुआ, मृत, नष्ट ।

—छाड़ा=नष्टोछाड़ा । —डागा, —डागा

(अ) वि—अभागा, वदनसीब ; एक गाली । स्त्री—इंशजिनी, इंशजिनी । —इंश

(-अ) वि—जिसकी श्रद्धा नष्ट हो गयी है ।

—इंश स—अवज्ञा, अनादर । —इंश

(-अ) वि—किरकड़वाकिरकड़ हकबकाया हुआ ।

इंशमर वि—जिसका आदर या दुलार नष्ट हो गया है ।

इंशम वि—निर्वास आशाहीन, नाउम्मेद ।

इंशे विभ—इंशेऊ, थैके से ।

इंशेकि स—इंशेऊकी हरें ।

इंशेन स—इंशेन हरताल ।

इंशे, इंशे स—हत्या, वध, कत्ल ; मंदिमें धरना देना । [खोज ।

इंशे स—हदीस, मुसलमानोंका धर्म-शास्त्र ;

इंशे (-अ) स—सीमा, हद्द । वि—ज्यादासे ज्यादा । (इंशे वि—वेहद, सीमा-रहित ।

इंशे स—सरहद, सीमा । इंशे (-अ)

वि—बड़ाबड़ा बहुत हुआ तो ज्यादासे ज्यादा ।

इंशेन स—हत्या, वध, कत्ल । इंशेन (-अ),

इंशे (-अ) वि—हत्याके योग्य । [शंठे] ।

इंशेन स—जल्दी चलनेका भाव (—क'वरे

इंशे, इंशे स—काशान जबड़ा ; हनुमान, लंगूर ।

इंशेन (-अ) वि—घबराया हुआ ।

इंशे (-अ) वि—हत्या करने योग्य । । इंशे

वि, स—हत्यारा । स्त्री—इंशे । इंशेन

वि, स—हत्यारा, अड़चन डालनेवाला ।

इंशे स—लगभग १ मन १५ सेरकी अग्रजी तौल, हडर ।

इंशे (-अ) वि—इंशे देखो ।

इंशेन वि—जिसकी हत्या की जा रही है ।

इंशे, इंशे वि—जो मारने काटने या डसनेके लिए दौड़ रहा है ।

शुद्धा स—हृष्टता, ससाह ।

शुद्धि (-अ) स—घृत-युक्त अन्न, आमिष-रहित
भात दाल तरकारी आदि ; वैसा अन्न भोजन
करना (—करा) । शुद्धि-वि—वैसा अन्न
भोजन करनेवाला, मछली मांस आदि
आमिष न खानेवाला ।

शुद्धि वि—होनेवाला, भावी (—आशा) ।

शुद्धि-शुद्धि, शुद्ध-शुद्ध (-अ) वि—अभी अभी होने-
वाला (—आशा) ।

शुद्धि स—शुद्ध गाय बैलका शब्द ।

शुद्ध स—अश्व, घोडा । क्रि—होता है ।

शुद्ध (-अ), शुद्धि क्रि वि—शायद ।

शुद्धि वि—नाशक तंग, हैरान, उत्पीड़ित ।

शुद्धि स—परेशानी ।

शुद्धि क्रि—शुद्ध देखो ।

शुद्ध स—शिव ; भाजक संख्या । वि—
हरनेवाला, नाशक (भाज—) ; हर, फी ।

शुद्ध स—अडचन, बाधा ।

शुद्ध स—हरकारा डाकिया ।

शुद्ध स—हानि, हर्ज ।

शुद्ध स—चोरी, लूटना, नाश, भाग करना ।

शुद्ध स—ताशका पान ।

शुद्ध स—धर्म-घटे हड़ताल ।

शुद्धि क्रि वि—हमेशा, सदा ।

शुद्ध स—अक्षर, हर्फ ।

शुद्धि वि—हर तरहकी बोली बोलनेवाला ।

शुद्ध स—हृष्टको ध्वनि । [आनन्दित, हर्षित ।

शुद्ध स—हृष्ट, आनन्द । शुद्धि (-अ) वि—

शुद्ध (क्रि परि १)—हरना, चुराना ।

शुद्धि स—विष्णु, हरि, कृष्ण । वि—हरा ।

—कृष्ण स—पीला चदन । —वाग्व स—

एकादशी, उपवास । —वाग्व स—हरिध्वनि ।

—शुद्ध, (—शुद्ध) स—हरि-पूजाके बाद

बतासे बिखेरना और लूटना । शुद्धि-शुद्धि वि—

हरि और हरके समान अभिन्न । शुद्धि स—
अत्यज ।

शुद्धि स—हरताल । [चतुर्थी ।

शुद्धिनी, (-तानिका) स—भाद्र शुद्ध

शुद्धि स—हलदी । शुद्धि (-अ) वि—

शुद्ध पीला ।

शुद्धि स—हर्ष, आनन्द ।

शुद्धि स—शुद्धि हरे ।

शुद्धि वि—हरनेवाला, नाशक । [महल ।

शुद्धि (-अ) स—आमिष, अष्टानिका इमारत,

शुद्ध, शुद्ध स—स्वर-रहित व्यंजनका सांकेतिक

नाम । शुद्ध, शुद्ध (-अ) स—शुद्ध व्यंजन

जिसमें स्वर न मिला हो । वि—व्यंजनांत ।

शुद्ध स—माषण हल, हर ; हाल, बड़ा कमरा ।

शुद्ध स—आगकी लौ, गरम हवाका प्रवाह ।

शुद्धि वि—पीला ।

शुद्ध स—कसम, हलफ ।

शुद्ध स—ढीला होनेका लक्षण प्रकाश ।

शुद्धि वि—ढीलाढाला ।

शुद्धि स—बलदेव ।

शुद्धि स—कानकूट जहर ।

शुद्धि स—हरवाहा, किसान ।

शुद्ध स—शुद्धि हलदी । [हुआ ।

शुद्ध स—हंसना । शुद्धि (-अ) वि—हंसता

शुद्ध (-अ)—उन देखो ।

शुद्ध (हस्त अ) स—शुद्ध हाथ ; भुजा, बांह ।

—शुद्ध (-अ) वि—हाथमें आया हुआ, प्राप्त,

हासिल । —माषण स—हाथकी सफाई ।

—निधि स—हाथकी लिखावट । शुद्धि

स—दूसरेका अधिकार । शुद्धि (-अ)

वि—दूसरेके अधिकारमें गत या दूसरेको

प्रदत्त । शुद्धि स—हाथ डालना,

हस्तक्षेप ।

शुद्धि स—शुद्ध, हाथी, गज, मातंग । शुद्धि

(-अ), श्लिषक सं—माछ फीलवान, महावत ।

श्लिषर्ष (-अ) वि—अत्यंत मूर्ख ।

शं, शा, शं अ—स्वीकृतिसूचक शब्द. हाँ । शं

सं—एक संबोधन (शंइ, शंशा) ;

मुंह वाना (शं करा) । शं शं सं—रोकनेका

शब्द (— कर कि) ।

शंइ सं—झूठ जभाई ।

शंइयागना सं—दुलहेको दुलहिनके वशीभूत करनेके लिए पीसे हुए आंवले मेथी आदिका पिंड । [चिह्न (-) ।

शंइएन सं—दो शब्दोंके बीचका समास-सूचक

शंइन सं—शन पतवार ।

शंइं सं—हवाई एक आतशवाजी ।

शंइगो, (शंइ-) सं—रोनेके साथ चिल्लाहट, कहानीके राक्षसकी गर्जना ।

शंइना सं—हौदा ।

शंइश सं—वाताज हवा ; वातावरण ।

शंइना सं—बिना हवाला ।

शंइनाउ सं—उधार, ऋण, मंगनी । शंइनाउ वि—उधार या मंगनी लिया हुआ ।

शंक सं—हाँक, पुकार, ललकार । शंकराक,

शंकराक सं—घबराहटका लक्षण प्रकाश ।

शंका (क्रि परि ३)—हाँकना, बोली बोलना ।

शंकान (-नो), शंकाणा (क्रि परि १०)—भगाना, चलाना, हाँकना ।

शंकाशंकि सं—बार बार हाँक ।

शंकिम सं—हाकिम, शासक, विचारपति ।

शंकिम, शंकिम स—हकीम, यूनानी चिकित्सक । शंकिमि, शंकिमि सं—हकीमी ।

शंकिमो, शंकिमो वि—हकीमका, यूनानी इलाज सम्बन्धी ।

शंकिवि—घरदार-रहित, कगाल ।

शंकिव, शंकिव सं—मगर, एक हि सक बढ़ी मझली ।

शंकिग, शंकिग सं—माया दंगा, हंगामा, उपद्रव, फिसाद, भगडा ।

शंकि (क्रि परि ३)—छींकना ।

शंकि सं—छींक ।

शंकिल सं—हिरासत, हाजत ।

शंकिवि सं—उपस्थिति, मौजूदगी ; यूरोप-निवासियोंका भोजन (छाटे—) ।

शंकि (क्रि परि ३)—जलमें बहुत भींगनेसे विगड़ जाना नष्ट होना या घाव हो जाना ।

सं—जलमें भींगनेके कारण फसलका नाश ;

हाथ-पैरका एक प्रकारका घाव ।

शंकिवि, सं—हजार, सहस्र ।

शंकिवि—हाजिर, उपस्थित ।

शंकि सं—हाट, हफ्तेमें एक या दो बार लगने-वाला बाजार (—बग ; —करा, हाटमें खरीद-फरोख्त करना, हल्ला मचाना) । — शं

(अ) सं—सारा विषय या भेद । शंकिवि, सं—हाटमें बेचनेवाला ।

शंकिना (-नो), शंकिना (क्रि परि १६)—उलट-पलट कर खोजना ।

शंकि (क्रि परि ३)—पंदल चलना । शंकि

सं—बहुत अधिक चलना । शंकिशंकि स—बार बार आना-जाना । [टेक कर बैठना ।

शंकि स—झाड़ छुटना । — गाड़ कि—घुटने

शंकि स—हड्डी, अस्थि । — गाड़ स—हड्डी-पसली । — शंकि (-अ) वि—आँखोंपाख

आदिसे अत तक । [एक बड़ा पक्षी ।

शंकिगि, (-ज) स—खगेश, गीघकी जातिका

शंकि सं—ह डो, ह डिया ।

शंकिगि, (शंकि-) सं—देवताके ठीक सामने की ओर जमीनमें गाड़ा हुआ बलिकाष्ट जिसके ऊपरका अंश तीन चार इंच चौरा हुआ रहता है और जिसमें गर्दन फँसा कर बलिका पशु काटा जाता है ।

शंङिठाठा स—खाकी रगकी एक चिड़िया ।

शंङी स—डोम, दुसाध ।

शंङू स—कपाटि (थेना) कबड्डी ।

शंङी स—शंङ हड्डी ।

शंङ स—हाथ, हस्त, बाँह, १८ इंचकी नाप ;

अधिकार, अभ्यास ; दाँव । —कड़ि स—
हथकडी । —छना कि—मारनेके लिए हाथ

चलना ; किसी काममें दक्षता रहना ।

—छानान (-नो), (-ना) कि—हाथ

चलाना, फुर्तीसे काम करना । —छनकान

(-नो), (-ना) कि—कुछ करनेके लिए

उतावला होना । —शानि स—हाथ हिलाकर

इशारा । —छान स—चोरीकी आदत ;

कजूसी । —छानि स—कड़-छानि ताली ।

—छाना कि—मारनेके लिए हाथ

उठाना । शंङछाना स—किसीकी कृपासे

प्राप्त धन या भोजन वस्त्र (भोजन शंङछानाग्र

थाका) । —छेछा कि—छूना, हाथ देना,

कोई काम शुरू करना । —छेथा कि—हस्त-

रेखा या नब्ज देखना । —छेरा वि—वशीभूत ।

—छेरी वि—कजूस । —छाटि स—शैचसे

आकर हाथमें मिट्टी मलना । —छा स—

निपुणताकी ख्याति, नामवरी । —छाई

स—हाथकी सफाई । शंङ कनये कि वि—

हाथसे परीक्षा करके । शंङ शंङ कि वि—

अवसर तत्काल, तुरंत । [टटोलना ।

शंङछान (-नो), शंङछाना (कि परि १६)—

शंङ स—बाँट दस्ता, बेंट, मूठ ।

शंङ स—कलछुल, बडा चमचा ; कमीज

आदिका हाथ, अहाता । [हथियाना ।

शंङान (-नो), शंङाना (कि परि १०)—

शंङशंङि स—हाथापाई ।

शंङिग्र स—हथियार ।

शंङि, शंङी स—हाथी, मातंग ।

शंङी वि—एक हाथकी नापवाला (आठ-शंङी
शुति) ।

शंङी स—हथौड़ी ।

शंङु वि, स—नीम हकीम, ठग वैद्य ।

शंङुछि स—शिशुका प्राय ६ वर्षके वयसमें
विद्यारंभ जब कि उसका हाथ पकड कर
पत्थरकी थाली आदि पर खडिया मिट्टीसे
ककहरा लिखाया जाता है ; आरंभ ।

शंङा वि—मोटा, स्थूल, बेवकूफ ।

शंङा स—धावा आक्रमण ।

शंङा (कि परि ३)—फेंकना, मारना (छेन—
नखनवाग—) । —शंङि स—मारकाट ।

शंङि स—छनारका अशिकुंड ; भाती, धौंकनी ।

शंङिग्रान (-नो), शंङिग्राना (कि परि १६)—

तरल वस्तु हथेलीसे शब्दके साथ पीना ।

शंङ, शंङान, शंङानि—शंङ देखो ।

शंङुग स—शंङिग्रेश्वर शब्द तरल वस्तु हथेलीसे
पीनेका शब्द, आंसुभरा (—नखन काँटा) ।

शंङ वि—आधा (—शंङा, —छिछिटे) ।

शंङ, शंङ स—दम, हाँफा, साँस, दमा ।

शंङान (-नो), शंङाना (कि परि १०)—

हाँफना । शंङानि स—दमा । [नखरा ।

शंङ स—स्त्रियोंका हाव । —छा स—मटक,

शंङा वि—बेवकूफ-सा ।

शंङी स—काफ़ी, निथी हवशी । [सनकी ।

शंङा वि—गूंगा-बहारा, गूंगा, मूख ; पागल,

शंङिलदात्र स—हवलदार ।

शंङुवू स—जलमें डूबना और उतराना ।

शंङाछे, शंङाछे वि—छाछे काठान कगाल,
अभागा ।

शंङ स—छोटी चेचक ।

शंङि, शंङि स—शंङिछि बकैयाँ, छेछे पट,
लेनेके लिए उतावलीका भाव (—छेछे
गड़ा) ।

शमवड़ा (हामवड़ा) वि—घमंडी, अपनी बढ़ाई करनेवाला ।

शमला सं—हमला, धावा आक्रमण ।

शमा, शमाशुद्धि सं—बकैयाँ, बच्चोंका घुटनेके बल चलना ।

शमानद्वि सं—इमामदस्ता ।

शमात्र सं—हम्माम, गरम जलका स्नानागार ।

शमना क्रि वि—हमेशा, सदा ।

शशा सं—इश गाय-त्रैलका शब्द ।

शशन सं—साल, वर्ष ।

शशवान = श्ववान ।

शशा सं—हया, लज्जा, शर्म ।

शश सं—माला, हार ; दर, भाव ; भाग ; पराजय, शिकस्त [सख्या ।

शशक वि—हरनेवाला । सं—चोर, भाजक

शशमोनिश सं—हमोनियम बाजा ।

शशा वि—जिसका कुछ खो गया है (शा—, आश्रय) ; जो खो गया है (—शन, —निधि) ।

शशा (क्रि परि ३)—हारना, शिकस्त खाना ।

शशान (नो), शशातो (क्रि परि १०)—हराना, पराजित करना ; हिराना, खो जाना, गंवाना, नष्ट होने देना । वि खोया हुआ ।

शशाम सं—हराम, सूअर । —शान, (—शाना) सं—हरामजादा, एक गाली । स्त्री—शशामजानी ।

शशाशत्रि क्रि वि—शशशत्रु और सतन ।

शश सं—हार, पराजय (—शान) ।

शशिकेन सं—हरीकेन लालटेन ।

शशी सं, वि—हरनेवाला, हार पहना हुआ । स्त्री—शशिवी ।

शशिक्रि वि—हृदयमें उत्पन्न, आंतरिक ।

शश (-अ, वि—हरने या भाग करने योग्य ।

शश सं—श, नाशन हर, हल ; लोहेका बंद जो पहियेके चारों ओर घेरेपर चढ़ाया जाता

है, पतवार ; दशा, हालत, वर्तमान समय ।

वि—आधुनिक, चलता (—वाकी) । —शाश

सं—नये सालके हिसाबकी बही । —शाश

क्रि वि—वर्तमान समय तक ।

शशक वि—हलका, लघु ।

शशिक्रि वि—फिलहाल ।

शशाक, शशाकान वि—हैरान परेशान ।

शशाक सं—हलाल, जबह ।

शशि वि—ताजा, टटका ।

शशुशेकर सं—शशुश हलवाई ।

शशुश सं—शशुशलोचन हलवाई ।

शशिश सं—दुशाले आदिका किनारा ।

शश सं—शश हसी ।

शश सं—हस, वक्त

शशक (हाँशकल) सं—कबू, कब्जा ।

शशपातल सं—अस्पताल ।

शशका सं—दम घुटनेका लक्षण प्रकाश (शेष शेष—करा) ।

शशा (क्रि परि ३)—हँसना । [हँसाना ।

शशान (-नो), शशातो (क्रि परि १०)—

शशान (-नो), शशातो (क्रि परि १०)—

गहरा काटना ।

शशि सं—शश हसी । —शशि सं—हँसी-युक्त आनंद । शशाशशि सं—परस्पर आलोचना और हँसी, हसी-मजाक ।

शशिक्रि वि—प्राप्त, सम्पन्न ; सिद्ध, हासिल । सं—सिद्धि, वसूल ।

शशुशान सं—एक सुगंधी छोटा फूल, हँसनाहना ।

शशुश, शशुश सं—हँसली ।

शश (-अ) सं—शशि हँसी । शशाश

सं—हँसीके साथ वार्तालाप । शशुश

सं—बहुतोंकी हाँसीका उच्च शब्द ।

शशाशुशक वि—हँसी पैदा करनेवाला ।

शश अ—हाय हाय । शशकात्र स—हाय हाय शब्द, विलाप ।

शश शिशि, शश स—हँसीका शब्द, ठहाका । शि, शि स—हींग ।

शिमा, शिमन स—हत्या, कतल हि सा, डाह । शिम स—डाह । शिमक वि—शिम हि सा करनेवाला । शिमिठ (-अ) वि—जिसको हिंसा की गयी है । शिमानू वि—हिंसक । शिमक, शिमिठ वि—डाह करनेवाला । शिम (-अ) वि—हिंसा करने योग्य । शिम (-अ), शिमक वि—खूंखार हिंसा करनेवाला ।

शिमस स—कौशल, चतुराई ।

शिका स—क्षक हिचकी ।

शिक्ष स—शि हींग ।

शिंछान (नो), शिंछानो, शिंछानो, शिंछानो (क्रि परि १७)—घसीटना ।

शिछा, (-छे) वि, स—नपु सक, हिजड़ा ।

शिखरी स—ई२२ ई०से शुरू होनेवाला मुसलमानी संवत् ।

शिखन, शिखन स—एक वृक्ष जिसकी लकड़ी केवल जलानेके काममें इस्तेमाल होती है ।

शिखिबिखि स—घसीट लिखावट, टेढ़ी-मेढ़ी लकीरे । [साग

शिका, शिखिका, शिखि स—एक जलज तित्त शिफ़िशि—शुद्ध देखो । [(काष्ठ—)]

शिफ़िक स—छेना धक्का, दबाव, धक्का-धक्का शिठयण स—हित करनेकी इच्छा ।

शिमू, शिमू स—हि दू । शिमूशानि स—हि दूका आचार । शिमूशान स—हि दुस्तान, भारत ।

शिमूशानो वि—भारतीय, हि दी-उदू-भापा-भापी । स—हि दी-उदू मिली हुई भापा ।

शिमोण, (-जा) स—जाला हि डोला, झूला, पालना ।

शिम स—शीतऋतु, ठंढक, पाला । वि—ठ ठा ।

—कत्र स—चंद्रमा । —गिबि स—

हिमालय । —ग्रुच स—(भूगोलमें) उत्तरी या दक्षिणी ध्रुवके समीपका भूभाग जहाँ सूर्यका

ताप अत्यंत अल्प है । —शिला स—

कबका आला, पत्थर, बरफ । शिलानो स—

पाला, बरफ । [थकावट (— थांछा)]

शिमिगि (हिमूशिमू) स—कठिन काम करनेकी

शिमू स—साहस, हिम्मत ।

शिम स—हृदय, मन ।

शिमिगि (-रन्मय) वि—सोनेका, सुवर्णमय ।

शिमिक स—कसोस ।

शिमिगि वि—झंकावांका टेढ़ा-मेढ़ा, लहरिया ।

शिम, शिम स—आश्रय, आसरा, उपाय, गति (—कत्रा, —जागान) ।

शिमाल स—तरंग, हिलोरा ।

शिम, (-ज) स—हिस्सा, अंश ।

शिमव, शिमव स—हिसाब गिनती ; विचार (—कत्र काज कत्र) । शिमवनिव स—

हिसाब लिखनेवाला । शिमवो, शिमवो वि—

विचारसे काम करनेवाला, हिसाब सम्बन्धी ।

शिमिगि स—मिरगी रोग ।

शिशि स—हँसीका शब्द ; जाडेंसे काँपते हुएका शब्द । [हीन, क्षीण, रहित ।

शोन वि—अवम, नीच, नि दित, दीन, मुफलिस, शीवक, शीवा, शीव स—एक रत्न, हीरा । शीवक

ट्रैक्छो (छेल) वि—हीरेका टुकड़ासा (लड़का) । [गर्जना ।

शंकात्र, शंकात्र स—किसीको डरानेके लिए शक स—अंकुडी ।

शंका, शंका स—हुका । [हुक्मत ।

शकू स—हुकूम, आदेश । शकू स—प्रभुत्व, शकू = शकू ।

शकू स—सामयिक उत्साह या आंदोलन

का विषय, अफवाह। इच्छा वि—
इच्छा वि आंदोलन-प्रिय।
इच्छा सं—हुजूर, प्रभु।
इच्छा सं—तकरार, हुज्जत।
इच्छा अ—छे, छान भट, एकाएक।
इच्छा भाति स—उल्लू-कूद और गोरगुल।
इच्छा, (-का) स—वर्जन किवाड़ बंद करने का अर्गल; जो दुलहिन पतिके पास जानेमें डरती है।
इच्छा सं—बड़ी बड़ी या बहुतसी चीजोंके एक साथ गिरनेका शब्द (—कदम गड़ा)।
इच्छा स—तंजीसे जल आदिके गिरनेका शब्द; पेटकी गड़गड़ाहट।
इच्छा, इच्छा स—काम करानेके लिए ताड़ना, धक्का। इच्छा, इच्छा स—धक्कमधक्का।
इच्छा स—झुंफि फरवी, फरही।
इच्छा सं—हुंड़ी।
इच्छा (-अ) वि—हवन किया हुआ।
इच्छा स—निराशा, डर।
इच्छा, इच्छा सं—बड़ा उल्लू। [हट।
इच्छा, इच्छा सं—अधिकार या कार्यक्षेत्रकी सीमा, इनग्री, इच्छा वि—हुनरमंद।
इच्छा सं—बदरका शब्द।
इच्छा वि—हुवहु, ज्योंका त्यों, अक्षरशः।
इच्छा सं—इच्छा डरानेके लिए गर्जना।
इच्छा=शमडि।
इच्छा स्त्री—हूर, अप्सरा।
इच्छा सं—डक (—कूटान)।
इच्छा, इच्छा सं—कोलाहल, चिल्लाहट, गुलगपाड़ा।
इच्छा, (-ना) वि—बन्दा नर। सं—विलाव।
इच्छा स—भगे हुए मुलजिमकी शक्क-सूरतका विवरण, हुलिया।
इच्छा स—उन् मांगलिक उत्सवमें स्त्रियोंके

द्वारा जीभ हिलाकर एक प्रकारकी मुसध्वनि।
इच्छा सं—हुलड।
इच्छा, (-न) स—होश, सावधानी, चेत।
इच्छा, (-इं) वि—होशियार, सावधान, सचेत, चतुर। इच्छा, (-इं) स—होशियारी, सावधानी।
इच्छा सं—चिटियो आदिके भगाने या उठानेका शब्द। इच्छा-इच्छा सं—हुश हुश ऐसा शब्द (ब्रेनगाड़ि—कदम गले)।
इच्छा सं—हवा या आगके जलनेका शब्द; यातना सूचक शब्द (बू—कदम)। [कलेजा।
इच्छा सं—हृदय, मन। —गिच्छा (-अ) सं—इच्छा (-अ) वि—चुराया हुआ, लाया हुआ।
इच्छा सं—हृदय, मन। क्रि वि—हृदयमें।
इच्छा (-अ) वि—हृदयग्राही, मनोहर। इच्छा सं—जोशद मित्रता। [गिड़ाहट।
इच्छा, इच्छा स—चिन्ती सूचक शब्द, गिच्छा-इच्छा वि—अकस्मात् प्रयुक्त। —कान सं—भटका। इच्छा, इच्छा सं—भटका, भक्कभोर।
इच्छा सं—इच्छा हिचकी।
इच्छा (-नो), इच्छा=इच्छा।
इच्छा वि—नगण्य मामूली, तुच्छ।
इच्छा वि—नीच अवतल, नीचा (गाथा—कदम)।
इच्छा स—सिर (दच्छा)। वि—प्रधान (—गच्छा)।
इच्छा वि—हड्डिया।
इच्छा=शक्तिशाली।
इच्छा क्रि वि—इच्छा यहाँ।
इच्छा (-नो), इच्छा, इच्छा (क्रि परि १०) प्रिय-विरहसे व्याकुल होना।
इच्छा (हैदे), इच्छा अ—अजी, अबे।
इच्छा (हैनो) वि—अन्य ऐसा (—विनिश्चय) : इससे (—कदम)।

शेना सं—मेहदि मेहं दी ।

शेनाञ्ज सं—व्रक्षणाद्वक्ष्य हिफाजत ।

शेय (-अ) वि—त्यज्य, निवृष्ट ।

शेयानि, (है-) सं—प्रदेहिका, पहेली ।

शेयस्त्र सं—अपनवदन हेराफेरी ।

शेय (हैरा) (क्रि परि १)—देखा देखना ।

शेयन सं—अवहेलना, अवज्ञा ; भुक्नेका भाव ।

शेला (हैला) सं—अवज्ञा, उपेक्षा, अनायास (शेलाव) ।

शेला (क्रि परि १)—झोंका भुक्ना ।

शेलान (हैलान्) सं—टेक कर स्थिति (—मेउवा) ।

शेलान (हैलानो), शेलानो (क्रि परि १०)—भुकाना, नीचा करना, हिलाना । वि—भुका हुआ । [जोता जाता है (—गक) ।

शेल स—एक विप-रहित साँप ; जो हलमें शेलका = शिक्का ।

शेलन सं—रसोई घर चौका ।

शेलो सं—हँसली, एक टेढ़ी छुरी ।

शेलनेल (-अ) स—फैसला, निबटेरा ।

शेलूक (हड़तुक) वि—शेलूवाही युक्तिवादी ।

शैम (-अ) वि—सुवर्णमय, सोनेका ।

शैमल (-अ), शैमलिक वि—हेमत कालका ।

शैमला सं—जलका एक पौधा जिससे छप्पर छाया जाता है या चटाई बनायी जाती है ।

शैल सं—ठोकर, चलते समय पैरके अंगूठेमें किसी कड़ी वस्तुके सघर्षसे लगनेवाली चोट ।

शैलेन सं—होटल ।

शैलका वि—मोटा, सडमुसड ।

शैला क्रि वि—उथाने वहाँ ।

शैलङ सं—लकड़बग्घा ।

शैलन वि—तुं दिला ।

शैमवालाशरा वि—गङ्गा नामवर (आदमी) ।

शैमिउपाधि सं—होम्योपथी ।

शैमि सं—मोम उभगव होली ।

शै सं—हँसीका शब्द ।

शैक (हउज) सं—बड़ा चहबच्चा ।

शैम सं—सौदागरी दफ्तर ; वणिक संघ ।

शै अ—शै हाँ ।

शैम वि—हीनताके साथ लालच जाहिर करने वाला ।

शै (हैट) स—अंग्रेजी टोप ।

शै (हश-अ) वि—छोटा, नाटा, अल्प, लघु ।

शै सं—कमी, घटती, अल्पता, क्षय ।

शै सं—लज्जा, शर्म ।

शै सं—घोडेका शब्द, हिनहिनाहट ।

शैम, शैमन सं—आनद, हर्ष । शैमिठ (-अ)

वि—आनदित, हर्षित । शैमिनो वि—आनद देनेवाली । स—बिजली ।

परिशिष्ट

क्रियाके रूप

इस कोशमें क्रियाके आग, क्वा, थाङ्वा आदि मूल रूपही लिखे गये हैं जो संज्ञा मात्र है। भाषामें प्रचलित उनके विभिन्न रूप इस परिशिष्टमें लिखे जाते हैं। बंगलामें क्रियाके लिखित और कथित दो प्रकारके रूप होते हैं। लिखित रूपोंके सामने कोष्ठके भीतर कथित रूप दिये गये हैं। जहां उच्चारणमें विशेषता है वहां केवल प्रथम क्रिया क्वा के विभिन्न रूपोंके सामने कोष्ठके भीतर नागरी लिपिमें उच्चारण भी दिखाया गया है। दूसरी क्रियाओं के भी उन उन स्थानोंमें वैसा ही उच्चारण होगा।

दोनों वचनों, दोनों लिंगों तथा अकर्मक और सकर्मकमें बंगला क्रियाएँ एकसी रहती हैं। केवल उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष कर्ताकी क्रियाएँ बदलती हैं। आदरायमें क्रियाके अन्तमें न लगाया जाता है और निरादरार्थमें ऐग, छिग, नि, वि आदि तुल्यार्थक विभक्तियाँ लगायी जाती हैं।

केवल प्रथम क्रिया क्वा के हर एक रूपके सामने हिन्दीमें अर्थ दिया गया है। अन्य क्रियाओंके उन उन स्थानोंमें वैसा ही अर्थ जान लेना चाहिये। खोजनेकी सुगमताके लिए क्वा क्रियाके विभिन्न कालोंके नामके पहले कोष्ठके भीतर बंगलाकी जो सख्या दी गयी है आगेकी क्रियाओंमें यथास्थान वंसी ही सख्या मिलेगी। उस सख्याके अनुसार काल मिला लेनेसे हर एक रूपका अर्थ जाना जा सकेगा*। स्थान बचानेके लिए आगेकी क्रियाओंमें कालके नाम तथा कर्ताके रूप नहीं दिये गये।

बंगलाकी क्रियायें २१ गणोंमें विभक्त कर दी गयी है। कोशमें जिस क्रियाके सामने कोष्ठके भीतर क्रि परि लिखकर जो नागरीकी सख्या लिख दी गयी है इस परिशिष्टमें उसी सख्यामें लिखित क्रियाके रूपोंके समान उस क्रियाके रूप होंगे।

निषेधार्थक ना लगनेसे कुछ क्रियाओंके रूपमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन होता है। जैसे—
कवित्राए ना या कवित्राहिन ना=कत्र नाई, कत्राए ना या कत्राहिन ना=कत्र नि; इई ना= नई; इउ ना=नउ; इऐन ना=नऐन; इन ना=नन; इन्न ना=नन्न आदि।

इसके अतिरिक्त किसी किसी क्रियाके मूल रूपमें जो कुछ परिवर्तन होता है वह यथास्थान दिखा दिया गया है।

* विशेष नियम इसी ग्रन्थकारकी 'सरल बंगला शिक्षा' पुस्तकमें देखे।

१—करना—करना (क् धातु)

(१) सामान्य वर्तमान

आमि वा आम्मा करि	मैं करता हूँ या हम करते हैं।
तूहे वा तोत्रा करिम	तू करता है या (तुच्छार्थक) तुमलोग करते हो।
तूमि वा तोम्मा कर (करो)	तुम या तुमलोग करते हो।
जे वा जाश्रा करे	वह करता है या वे करते हैं *।
आपनि वा आपनात्रा, तिनि वा ठांश्रा	आप या आपलोग, वह (आदरार्थमें) या वे
करेन	करते हैं †

(२) तात्कालिक वर्तमान

आमि वा आम्मा करिउछि (करछि, कछि †)	मैं कर रहा हूँ या हम कर रहे हैं।
तूहे वा तोत्रा करिउछिम (करछिम, कछिम)	तू कर रहा है या तुमलोग कर रहे हो।
तूमि वा तोम्मा करिउतेछ (क'रछ, कछ—कच्छो)	—तुम या तुमलोग कर रहे हो।
जे वा जाश्रा करिउतेछे (करछे, कछे)	—वह कर रहा है या वे कर रहे हैं।
आपनि, आपनात्रा, तिनि वा ठांश्रा करिउतेछेन (करछेन, कछेन)	—कर रहे हैं।

(३) आसन्न भूत

आमि वा आम्मा करिवाछि (करवाछि)	—मैंने या हमने किया है।
तूहे वा तोत्रा करिवाछिम (करवाछिम)	—तूने या तुमलोगोंने किया है §।
तूमि वा तोम्मा करिवाछ (करवाछ—छो)	—तुम (लोगों) ने किया है।
जे वा जाश्रा करिवाछे (करवाछे)	—उसने या उन्होंने किया है।
आपनि, आपनात्रा, तिनि वा ठांश्रा करिवाछेन (करवाछेन)	—आपने या उन्होंने किया है।

* वानक, नरेन्द्र, शाश्रा, कूकुर, गङ्गी, ए, ऐश, ओ, ऐश, के, वाश, वा, ताश, जा, वानकरा, वानिकात्रा, वाश्रा, ताश्रा आदि सभी संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दोंके दोनों वचनों तथा दोनों लिंगोंमें जे की क्रिया लगती है।

† आदर अर्थमें जे के स्थानमें तिनि और जाश्रा के स्थानमें ठांश्रा होता है। ऐसे ही दूसरे सर्वनाम शब्दोंमें भी चन्द्रविन्दु आदरार्थक व्यक्तिके लिए ही प्रयुक्त होता है। पिता, श्रद्धादेव, ईश्वर, हेनि, उनि, विनि, ईश्रा, एंश्रा, ऐश्रा, उंश्रा, वांश्रा, यांश्रा, कांश्रा, कांश्रा आदि सभी आदरार्थक संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दोंमें आपनि की क्रिया लगती है।

‡ कछि, दिछि आदिके स्थानमें कळि, दिळि आदि रूप भी होते हैं।

द्रष्टव्य—क्रियाके रूपके अन्तिम क, न, म, ज का उच्चारण हलन्त और छ, उ, व, ज का उच्चारण ओकारान्त है।

§ हिन्दीमें ने-युक्त कर्ताकी क्रियायें कर्मके अनुसार बदलती हैं। जैसे—काम किया है, बहुतसे काम किये हैं, बात की है, बातें की हैं, परतु बंगलामें नहीं बदलती।

(४) सामान्य भूत

आमि वा आमरा करिनाम (करनाम, करनाम)—मैंने या हमने किया ।
 ठूहे वा तोरा करिनि (करनि, करि)—तूने या तुमलोगोंने किया ।
 तूमि वा तोमरा करिने (करने, कर)—तुम (लोगोंने) किया ।
 ने वा ताशरा करिन (करन, कर—कहो)—उसने या उन्होंने किया ।
 आपनि, आपनारा, तिनि वा तौशरा करिनेन (करनेन, करने)—किया ।

(५) तात्कालिक भूत

आमि वा आमरा करितेहिनाम (करहिनाम, करिनाम)—कर रहा था—कर रहे थे ।
 ठूहे वा तोरा करितेहिनि (करहिनि, करिनि)—कर रहा था, —कर रहे थे ।
 तूमि वा तोमरा करितेहिने (करहिने, करिने)—कर रहा था,—कर रहे थे ।
 ने वा ताशरा करितेहिन (करहिन, करि—लो)—कर रहा था,—कर रहे थे ।
 आपनि, आपनारा, तिनि वा तौशरा करितेहिनेन (करहिनेन, करिनेन)—कर रहे थे ।

(६) पूर्ण भूत

आमि वा आमरा करिवाहिनाम (करेहिनाम *)—मैंने या हमने किया था ।
 ठूहे वा तोरा करिवाहिनि (करेहिनि)—किया था ।
 तूमि वा तोमरा करिवाहिने (करेहिने)—किया था ।
 ने वा ताशरा करिवाहिन (करेहिन—लो)—किया था ।
 आपनि, आपनारा, तिनि वा तौशरा करिवाहिनेन (करेहिनेन)—किया था ।

(७) हेतुहेतुमद् भूत

आमि वा आमरा करिताम (करताम, करनाम)—मैं करता या हम करते ।
 ठूहे वा तोरा करितिम (करतिम, करिनि)—करता या करते ।
 तूमि वा तोमरा करिते (करते, कर)—तुम या तुमलोग करते ।
 ने वा ताशरा करित (करत, कर—कतो)—वह करता या वे करते ।
 आपनि, आपनारा, तिनि वा तौशरा करितेन (करतेन, करने)—करते ।

(८) भविष्यत्

आमि वा आमरा करिद (करद—वो)—मैं करूँगा या हम करेंगे ।
 ठूहे वा तोरा करिवि (करवि)—तू करेगा या तुमलोग करोगे ।
 तूमि वा तोमरा करिवे (करवे)—तुम (लोग) करोगे ।
 ने वा ताशरा करिवे (करवे)—वह करेगा या वे करेंगे ।
 आपनि, आपनारा, तिनि वा तौशरा करिवेन (करवेन)—करेंगे ।

* कुछ लोग नाम के स्थानमें -नू या -नेम, ऐसे ही -तामके स्थान में-तूम या -तेम इस्तेमाल करते हैं । जैसे—करनूम, करनेम, करनेम, करनेम ; करहिनूम, करहिनेम, करिनेम ; करदूम, करदूम, करतेम, करतेम आदि । -नेम, -तेम का प्रयोग आजकल कम हो रहा है ।

(९) वर्तमान अनुज्ञा

तुई वा तोरा कर—तू कर या तुम लोग करो ।

तुमि वा तोमरा कर (करो)—तुम (लोग) करो ।

से वा ताशरा करूँ—वह करे या वे करें ।

आपनि, आपनारा, तनि वा ताशरा करूँ—आप .. करें ।

(१०) भविष्यत अनुज्ञा

तुई वा तोरा करिअ—तू या तुम लोग करना ।

तुमि वा तोमरा करिओ वा करिओ (क'रो)—तुम (लोग) करना ।

आपनि, आपनारा करिवेन (क'रवेन)—आप (लोग) कीजियेगा ।

(११) पूर्व कालिक क्रिया

करिउते (करते, कहे)—करने, करनेके लिए, करना, करते (आभि काज करिउते बाईव, से देखा करिउते बाय, तुमि बोझन करिउते बाईव, ताशरा नान करिउते चाय, आभि लेखापड़ा करिउते थाकिव) ।

करिउते करिउते (करते करते, कहे कहे)—करते करते, करते हुए (से काज करिउते करिउते गान करे) ।

करिया (क'रे)—करके (से टीण्कार करिया पड़िउतेछे) ।

करिले (क'रले, कले)—करने से (देखा करिले दिताम) ।

करिवाव (क'रवाव)—करनेका (एथन काज करिवाव मयय) ।

(१२) क्रियार्थक संज्ञा

करा—करना (गोलमाल करा डाल नय) ।

करा, करा, गंगा, मरा, हरा आदि क्रियाओंके रूप करा क्रियाके समान हैं । परंतु गन क्रियाके अनुज्ञामें गन न होकर (तुई) गोन, (तुमि) गोन (-ओ) होता है और मरा क्रियाका व कथित भाषाके भूत कालमें प्रायः लुप्त हो जाता है ; जैसे—म'न, म'नेन, म'ले, मलि, म'लाम आदि ।

२—कहा—कहना (क्हा धातु)

(१) कहि (क'ई), कहिस (क'स), कह (कउ), कहे (कय), कहन (कन) ।

(२) कहिउतेहि (कहेहि), कहिउतेहिस (कहेहिस), कहिउतेछ (कहेछ), कहिउतेछे (कहेछे), कहिउतेछेन (कहेछेन) । (३) कहियाहि (कयेहि), कहियाहिस (कयेहिस), कहियाछ (कयेछ), कहियाछे (कयेछे), कहियाछेन (कयेछेन) । (४) कहिलाय (कहेलाम), कहिलि (कहेलि), कहिले (कहेले), कहिल (कहेल), कहिलेन (कहेलेन) । (५) कहिउतेछिलाय (कहेउतेछिलाम, क'छिलाम), कहिउतेछिलि (कहेउतेछिलि, क'छिलि), कहिउतेछिले (कहेउतेछिले, क'छिले),

কহিতেছিল (কইতেছিল, ক'ছিল), কহিতেছিলেন (কইতেছিলেন, ক'ছিলেন)।
(৬) কহিয়াছিলাম (কয়েছিলাম), কহিয়াছিলি (কয়েছিলি), কহিয়াছিলে (কয়েছিলে),
কহিয়াছিল (কয়েছিল), কহিয়াছিলেন (কয়েছিলেন)। (৭) কহিতাম (কইতাম), কহিতিস
(কইতিস), কহিতে (কইতে), কহিত (কইত), কহিতেন (কইতেন)। (৮) কহিব (কইব,
কব), কহিবি (কইবি, কবি), কহিবে (কইবে, কবে), কহিবেন (কইবেন, কবেন)। (৯) ক,
কহ (কও), কহক (ক'ক), কহন (ক'ন)। (১০) কহিস (ক'স), কহিও, কহিয়ো (ক'য়ো),
কহিবেন (কইবেন, কবেন)। (১১) কহিতে (কইতে), কহিয়া (ক'য়ে), কহিলে (কইলে),
কহিবার (কইবার, ক'বার)। (১২) কহা (কওয়া)।

दृश, वृश, वृश, वृश, वृश- इन क्रियाओंके रूप कश के रूपोंके समान हैं ।

न + इ = नइ—नछि (नइ—मैं नहीं हूँ), नश्चि (न'च—तू नहीं है), नः (नः—तुम नहीं हो), नश्चन (नन—आप नहीं हैं), नश्चिने (नश्चिने—न हो तो) । इन रूपोंके अतिरिक्त नश् क्रियाके दूसरे रूपों का प्रयोग नहीं होता ।

दश क्रियाके कथित रूपोंका प्रयोग नहीं है।

३-काट्-काटना (काट् धातु)

(১) কাটি, কাটিন, কাট, কাটে, কাটেন। (২) কাটিতেছি (কাটছি), কাটিতেছিস (কাটছিস), কাটিতেছ (কাটছ), কাটিতেছে (কাটছে), কাটিতেছেন (কাটছেন)। (৩) কাটিরাছি (কেটেছি), কাটিরাছিস (কেটেছিস), কাটিরাছ (কেটেছ), কাটিরাছে (কেটেছে), কাটিরাছেন (কেটেছেন)। (৪) কাটিনাম (কাটলাম), কাটিল (কাটলি), কাটিলে (কাটলে), কাটিল (কাটলে—কাটা, কাটল—কড়া—অকমক), কাটিলেন (কাটলেন)। (৫) কাটিতেছিলাম (কাটছিলাম), কাটিতেছিলি (কাটছিলি), কাটিতেছিলে (কাটছিলে), কাটিতেছিল (কাটছিল), কাটিতেছিলেন (কাটছিলেন)। (৬) কাটিরাছিলাম (কেটেছিলাম), কাটিরাছিলি (কেটেছিলি), কাটিরাছিলে (কেটেছিলে), কাটিরাছিল (কেটেছিল), কাটিরাছিলেন (কেটেছিলেন)। (৭) কাটিতাম (কাটিতাম্), কাটিতাম্ (কাটিতাম্), কাটিতে (কাটতে), কাটিত (কাটত), কাটিতেন (কাটতেন)। (৮) কাটিব (কাটব), কাটিবি (কাটবি), কাটিবে (কাটবে), কাটিবেন (কাটবেন)। (৯) কাট, কাট, কাটুক, কাটুন। (১০) কাটিন, কাটিও, কাটিয়া (কেটো), কাটিবেন (কাটবেন)। (১১) কাটিতে (কাটতে), কাটিয়া (কেটে), কাটিলে (কাটলে), কাটিবার (কাটবার)। (১২) কাটা।

पाँदा, पाना, पात्रा, कौन, छाँद, छाँति, काँगा, बाछा, गंगा, ब्रांश, शमा आदि क्रियाओंके रूप दाढ़ी क्रियाके समान हैं।

आना क्रियाके—यात्र (तू आ), एन (तुम आओ), आगिनाम (एनाम—मैं आया),
आगिनि (एनि—तू आया), आगिनि (एनि—तुम आये), आगिनेन (एनेन—आप आये),
आगित (एन—वह आया)—इतने रूपोंमें विशेषता है।

याश् (आश्) क्रियाके केवल—याश्, याश्मि, याश्, याश्, याश्मि, श्मि (पद्यमें याश्मि), श्मिन्, श्मिन्, श्मिन्, श्मिन्—इतने ही रूप होते हैं।

৪—গাওয়া-- গানা (গাহ্, ঘাটু)

(১) গাহি (গাই), গাহিস (গাস), গাহ (গাও), গাহে (গায়), গাহেন (গান) ।
 (২) গাহিতেছি (গাইছি), গাহিতেছিস (গাইছিস), গাহিতেছ (গাইছ), গাহিতেছে (গাইছে),
 গাহিতেছেন (গাইছেন) । (৩) গাহিয়াছি (গেয়েছি), গাহিয়াছিস (গেয়েছিস), গাহিয়াছ
 (গেয়েছ), গাহিয়াছে (গেয়েছে), গাহিয়াছেন (গেয়েছেন) । (৪) গাহিলাম (গাইলাম), গাহিলি
 (গাইলি), গাহিলে (গাইলে), গাহিল (গাইল), গাহিলেন (গাইলেন) । (৫) গাহিতেছিলাম
 (গাচ্ছিলাম, গাইতেছিলাম), গাহিতেছিলি (গাচ্ছিলি, গাইতেছিলি), গাহিতেছিলে (গাচ্ছিলে,
 গাইতেছিলে), গাহিতেছিল (গাচ্ছিল, গাইতেছিল), গাহিতেছিলেন (গাচ্ছিলেন, গাইতেছিলেন) ।
 (৬) গাহিয়াছিলাম (গেয়েছিলাম), গাহিয়াছিলি (গেয়েছিলি), গাহিয়াছিলে (গেয়েছিলে),
 গাহিয়াছিল (গেয়েছিল), গাহিয়াছিলেন (গেয়েছিলেন) । (৭) গাহিতাম (গাইতাম), গাহিতিস
 (গাইতিস), গাহিতে (গাইতে), গাহিত (গাইত), গাহিতেন (গাইতেন) । (৮) গাহিব
 (গাইব), গাহিবি (গাইবি), গাহিবে (গাইবে), গাহিবেন (গাইবেন) । (৯) গা, গাও,
 গাক্, গান । (১০) গাহিস (গাস), গাহিও, গাহিয়ো (গেয়ো) । (১১) গাহিতে (গাইতে),
 গাহিয়া (গেয়ে), গাহিলে (গাইলে), গাহিবার (গাইবার) । (১২) গাওয়া (গানা) ।

৫—লিখা (লেখা)—লিখনা (লিখ্, ধাতু)

(১) লিখি, লিখিস, লিখ (লেখ), লিখে (লেখে), লিখেন (লেখেন) । (২) লিখিতেছি
 (লিখছি), লিখিতেছিস (লিখছিস), লিখিতেছ (লিখছ), লিখিতেছে (লিখছে), লিখিতেছেন
 (লিখছেন) । (৩) লিখিয়াছি (লিখেছি), লিখিয়াছিস (লিখেছিস), লিখিয়াছ (লিখেছ),
 লিখিয়াছে (লিখেছে), লিখিয়াছেন (লিখেছেন) । (৪) লিখিলাম (লিখলাম), লিখিলি
 (লিখলি), লিখিলে (লিখলে), লিখিল (লিখল), লিখিলেন (লিখলেন) । (৫) লিখিতেছিলাম
 (লিখছিলাম), লিখিতেছিলি (লিখছিলি), লিখিতেছিলে (লিখছিলে), লিখিতেছিল
 (লিখছিল), লিখিতেছিলেন (লিখছিলেন) । (৬) লিখিয়াছিলাম (লিখেছিলাম), লিখিয়াছিলি
 (লিখেছিলি), লিখিয়াছিলে (লিখেছিলে), লিখিয়াছিল (লিখেছিল), লিখিয়াছিলেন (লিখেছিলেন) ।
 (৭) লিখিতাম (লিখতাম), লিখিতিস (লিখতিস), লিখিতে (লিখতে), লিখিত (লিখত),
 লিখিতেন (লিখতেন) । (৮) লিখিব (লিখব), লিখিবি (লিখবি), লিখিবে (লিখবে), লিখিবেন
 (লিখবেন) । (৯) লিখ্ (লেখ্), লিখ (লেখ), লিখুক, লিখুন । (১০) লিখিস, লিখিও,
 লিখিয়ো (লিখো), লিখিবেন (লিখবেন) । (১১) লিখিতে (লিখতে), লিখিয়া (লিখে),
 লিখিলে (লিখলে), লিখিবার (লিখবার) । (১২) লিখা (লেখা) ।

(৬) উঠা (ওঠা)—উঠনা (উঠ্, ধাতু)

(১) উঠি, উঠিস, উঠ (ওঠ), উঠে (ওঠে), উঠেন (ওঠেন) । (২) উঠিতেছি (উঠছি),
 উঠিতেছিস (উঠছিস), উঠিতেছ (উঠছ), উঠিতেছে (উঠছে), উঠিতেছেন (উঠছেন) ।
 (৩) উঠিয়াছি (উঠছি), উঠিয়াছিস (উঠছিস), উঠিয়াছ (উঠছ), উঠিয়াছে (উঠছে),

উঠিয়াছেন (উঠেছেন)। (৪) উঠিলাম (উঠলাম), উঠিলি (উঠলি), উঠিলে (উঠলে), উঠিল (উঠল), উঠিলেন (উঠলেন)। (৫) উঠিতেছিলাম (উঠিছিলাম), উঠিতেছিলি (উঠিছিলি), উঠিতেছিলে (উঠিছিলে), উঠিতেছিল (উঠিছিল), উঠিতেছিলেন (উঠিছিলেন)। (৬) উঠিয়াছিলাম (উঠিয়াছিলাম), উঠিয়াছিলি (উঠিয়াছিলি), উঠিয়াছিলে (উঠিয়াছিলে), উঠিয়াছিলাম (উঠিয়াছিলাম), উঠিয়াছিলেন (উঠিয়াছিলেন)। (৭) উঠিতাম (উঠিতাম), উঠিতিস (উঠিতিস), উঠিতে (উঠিতে), উঠিত (উঠিত), উঠিতেন (উঠিতেন)। (৮) উঠিব (উঠিব), উঠিবি (উঠিবি), উঠিবে (উঠিবে), উঠিবেন (উঠিবেন)। (৯) ওঠ, উঠ (ওঠা), উঠুক, উঠুন। (১০) উঠিস, উঠিও, উঠিয়ো (উঠা), উঠিবেন (উঠবেন)। (১১) উঠিতে (উঠিতে), উঠিয়া (উঠা), উঠিলে (উঠলে), উঠিবার (উঠিবার, ওঠিবার)। (১২) উঠা (ওঠা)।

৩—হওয়া—হোনা (হ ধাতু)

(১) হই, হইন (হো'ন), হও, হয়, হয়েন, হন (হ'ন)। (২) হইতেছি (হচ্ছি), হইতেছিল (হচ্ছিল), হইতেছে (হচ্ছে), হইতেছেন (হচ্ছেন)। (৩) হইরাছি (হয়েছি), হইরাছিস (হয়েছিস), হইরাছ (হয়েছ), হইরাছে (হয়েছে), হইরাছেন (হয়েছেন)। (৪) হইলাম (হ'লাম), হইলি (হ'লি), হইলে (হ'লে), হইল (হ'ল), হইলেন (হ'লেন)। (৫) হইতেছিলাম (হচ্ছিলাম), হইতেছিলি (হচ্ছিলি), হইতিছিলে (হচ্ছিলে), হইতেছিল (হচ্ছিল), হইতেছিলেন (হচ্ছিলেন)। (৬) হইয়াছিলাম (হয়েছিলাম), হইয়াছিলি (হয়েছিলি), হইয়াছিলে (হয়েছিলে), হইয়াছিল (হয়েছিল), হইয়াছিলেন (হয়েছিলেন)। (৭) হইতাম (হ'তাম), হইতিস (হ'তিস), হইতে (হ'তে), হইত (হ'ত), হইতেন (হ'তেন)। (৮) হইব (হব), হইবি (হবি), হইবে (হবে), হইবেন (হবেন)। (৯) হ, হও, হউক (হ'ক), হউন (হ'ন)। (১০) হইন (হন), হইও, হইয়ো (হ'য়ো), হইবেন (হবেন)। (১১) হইতে (হ'তে), হইরা (হ'রে), হইলে (হ'লে), হইবার (হবার, হওয়ার)। (১২) হওয়া।

৫—খাওয়া—খানা (খা ধাতু)

(১) খাই, খাস, খাও, খায়, খান। (২) খাইতেছি (খাচ্ছি), খাইতেছিস (খাচ্ছিস), খাইতেছ (খাচ্ছ), খাইতেছেন (খাচ্ছেন)। (৩) খাইরাছি (খেয়েছি), খাইরাছিস (খেয়েছিস), খাইরাছ (খেয়েছ), খাইরাছে (খেয়েছে), খাইরাছেন (খেয়েছেন)। (৪) খাইলাম (খেলাম), খাইলি (খেলি), খাইলে (খেলে), খাইল (খেল), খাইলেন (খেলেন)। (৫) খাইতে, ছিলাম (খাচ্ছিলাম), খাইতেছিলি (খাচ্ছিলি), খাইতেছিলে (খাচ্ছিলে), খাইতেছিল (খাচ্ছিল), খাইতেছিলেন (খাচ্ছিলেন)। (৬) খাইয়াছিলাম (খেয়েছিলাম), খাইয়াছিলি (খেয়েছিলি), খাইয়াছিলে (খেয়েছিলে), খাইয়াছিল (খেয়েছিল), খাইয়াছিলেন (খেয়েছিলেন)। (৭) খাইতাম (খেতাম), খাইতিস (খেতিস), খাইতে (খেতে), খাইত (খেত), খাইতেন (খেতেন)। (৮) খাইব (খাব), খাইবি (খাবি), খাইবে (খাবে), খাইবেন (খাবেন)। (৯) খা, খাও, খাক, খান। (১০) খাস, খাইও, খাইয়ো (খেয়ো), খাইবেন (খাবেন)। (১১) খাইতে (খেতে), খাইরা (খেরে), খাইলে (খেলে), খাইবার (খাবার)। (১২) খাওয়া।

৬—যাওয়া—জানা (যা ধাতু)

(১) যাই, যাস, যাও, যায়, যান। (২) যাইতেছি (যাচ্ছি), যাইতেছিস (যাচ্ছিস), যাইতেছ (যাচ্ছ), যাইতেছে (যাচ্ছে); যাইতেছেন (যাচ্ছেন)। (৩) গিয়াছি (গেছি, গিয়েছি), গিয়াছিস (গেছিস, গিয়েছিস), গিয়াছ (গেছ যাচ্ছ গিয়েছ), গিয়াছে (গেছে গাঁঠি, গিয়েছে), গিয়াছেন (গেছেন গাঁঠন, গিয়েছেন)। (৪) যাইলাম, গেলাম (গেলাম গাঁতাম), যাইলি, গেলি (গেলি), যাইলে, গেলে (গেলেন), যাইল, গেল (গেল—গাঁতী), যাইলেন, গেলেন (গেলেন—গাঁতেন)। (৫) যাইতেছিলাম (যাচ্ছিলাম), যাইতেছিলি (যাচ্ছিলি), যাইতেছিলে (যাচ্ছিলে), যাইতেছিল (যাচ্ছিল), যাইতেছিলেন (যাচ্ছিলেন)। (৬) গিয়াছিলাম (গিয়েছিলাম), গিয়াছিলি (গিয়েছিলি), গিয়াছিলে (গিয়েছিলে), গিয়াছিল (গিয়েছিল), গিয়াছিলেন (গিয়েছিলেন)। (৭) যাইতাম (যেতাম), যাইতিস (যেতিস), যাইতে (যেতে), যাইত (যেত), যাইতেন (যেতেন)। (৮) যাইব (যাব), যাইবি (যাবি), যাইবে (যাবে), যাইবেন (যাবেন)। (৯) যা, যাও, যাক, যান। (১০) যাস, যাইও, যাইয়ো (যেয়ো), যাইবেন (যাবেন)। (১১) যাইতে (যেতে), যাইয়া, গিয়া (গিয়ে), যাইলে (গেলে—গাঁতী), যাইবার (যাবার)। (১২) যাওয়া।

৭০—লাফান—কুদনা (লাফা ধাতু)

(১) লাফাই, লাফাস, লাফাও, লাফার, লাফান। (২) লাফাইতেছি (লাফাচ্ছি), লাফাইতেছিস (লাফাচ্ছিস), লাফাইতেছ (লাফাচ্ছ), লাফাইতেছে (লাফাচ্ছে), লাফাইতেছেন (লাফাচ্ছেন)। (৩) লাফাইয়াছি (লাফিয়েছি), লাফাইয়াছিস (লাফিয়েছিস), লাফাইয়াছ (লাফিয়েছ), লাফাইয়াছে (লাফিয়েছে), লাফাইয়াছেন (লাফিয়েছেন)। (৪) লাফাইলাম (লাফালাম), লাফাইলি (লাফালি), লাফাইলে (লাফালে), লাফাইল (লাফাল), লাফাইলেন (লাফালেন)। (৫) লাফাইতেছিলাম (লাফাচ্ছিলাম), লাফাইতেছিলি (লাফাচ্ছিলি), লাফাইতেছিলে (লাফাচ্ছিলে), লাফাইতেছিল (লাফাচ্ছিল), লাফাইতেছিলেন (লাফাচ্ছিলেন)। (৬) লাফাইয়াছিলাম (লাফিয়েছিলাম), লাফাইয়াছিলি (লাফিয়েছিলি), লাফাইয়াছিলে (লাফিয়েছিলে), লাফাইয়াছিল (লাফিয়েছিল), লাফাইয়াছিলেন (লাফিয়েছিলেন)। (৭) লাফাইতাম (লাফাতাম), লাফাইতিস (লাফাতিস), লাফাইতে (লাফাতে), লাফাইত (লাফাত), লাফাইতেন (লাফাতেন)। (৮) লাফাইব (লাফাব), লাফাইবি (লাফাবি), লাফাইবে (লাফাবে), লাফাইবেন (লাফাবেন)। (৯) লাফা, লাফাও, লাফাক, লাফান। (১০) লাফাস, লাফাইও, লাফাইয়ো (লাফিও, লাফিয়ো), লাফাইবেন (লাফাবেন)। (১১) লাফাইতে (লাফাতে), লাফাইয়া (লাফিয়ে), লাফাইলে (লাফালে), লাফাইবার (লাফাবার)। (১২) লাফান (লাফানো)।

৭১—ফিরান (ফেরান)—ভৌদানা (ফিরা ধাতু)

(১) ফিরাই, ফিরুই, ফেরাই, ফিরাস, ফেরাস, ফিরাও, ফেরাও ; ফিরায়, ফেরায় ; ফিরান, ফেরান। (২) ফিরাইতেছি (ফিরচ্ছি, ফিরুচ্ছি, ফেরাচ্ছি), ফিরাইতেছিস (ফিরচ্ছিস, ফিরুচ্ছিস, ফেরাচ্ছিস), ফিরাইতেছ (ফিরচ্ছ, ফিরুচ্ছ, ফেরাচ্ছ), ফিরাইতেছে (ফিরচ্ছে, ফিরুচ্ছে, ফেরাচ্ছে), ফিরাইতেছেন (ফিরচ্ছেন, ফিরুচ্ছেন, ফেরাচ্ছেন)। (৩) ফিরাইয়াছি (ফিরিয়েছি), ফিরাইয়াছিস (ফিরিয়েছিস), ফিরাইয়াছ (ফিরিয়েছ), ফিরাইয়াছে (ফিরিয়েছে), ফিরাইয়াছেন (ফিরিয়েছেন)।

(কিরিয়েছি), কিরাইয়াছ (কিরিয়েছ), কিরাইয়াছে (কিরিয়েছে), কিরাইয়াছেন (কিরিয়েছেন)। (৪) কিরাইলাম (কির'লাম, কিরলাম, কেদালাম), কিরাইলি (কির'লি, কিরলি, কেদালি), কিরাইলে (কির'লে, কিরলে, কেদালে), কিরাইল (কির'ল, কিরল, কিরাম), কিরাইলেন (কির'লেন, কিরলেন, কেদালেন)। (৫) কিরাইতেছিলাম (কির'ছিলাম, কিরছিলাম, কেদাছিলাম), কিরাইতেছিলি (কির'ছিলি, কিরছিলি, কেদাছিলি), কিরাইতেছিলে (কির'ছিলে, কিরছিলে, কেদাছিলে), কিরাইতেছিল (কির'ছিল, কিরছিল, কেদাছিল), কিরাইতেছিলেন (কির'ছিলেন, কিরছিলেন, কেদাছিলেন)। (৬) কিরাইয়াছিলাম (কিরিয়েছিলাম), কিরাইয়াছিলি (কিরিয়েছিলি), কিরাইয়াছিলে (কিরিয়েছিলে), কিরাইয়াছিল (কিরিয়েছিল), কিরাইয়াছিলেন (কিরিয়েছিলেন)। (৭) কিরাইতাম (কির'তাম, কিরতাম, কেদাতাম), কিরাইতিস (কির'তিস, কিরতিস, কেদাতিস), কিরাইতে (কির'তে, কিরতে, কেদাতে), কিরাইত (কির'ত, কিরত, কেদাত), কিরাইতেন (কির'তেন, কিরতেন, কেদাতেন)। (৮) কিরাইব (কির'ব, কিরব, কেদাব), কিরাইবি (কির'বি, কিরবি, কেদাবি), কিরাইবে (কির'বে, কিরবে, কেদাবে), কিরাইবেন (কির'বেন, কিরবেন, কেদাবেন)। (৯) কিরা (কিরো,), কিরাও (কিরও, কেদাও), কিবাক (কিরক, কেদাক), কিরান (কিরন, কেদান)। (১০) কিরাস (কিরন, কেদাস), কিরাইও, কিরাইয়ো (কিরিও, কিরিয়ো), কিরাইবে (কির'বে, কেদাবে), কিরাইবেন (কির'বেন, কিরবেন, কেদাবেন)। (১১) কিরাইতে (কির'তে, কিরতে, কেদাতে), কিরাইরা (কিরিয়ে), কিরাইলে (কির'লে, কিরলে, কেদালে), কিরাইবার (কির'বার, কেদাবার)। (১২) কিরান (কিরনো, কেদানো)।

২২—নাহান (নাওয়ান)—নহলানা•(নাওয়া ধাতু)।

(১) নাওয়াই, নাওয়ান, নাওয়াও, নাওয়ায়, নাওয়ান। (২) নাওয়াইতেছি (নাওয়াছি), নাওয়াইতেছিল (নাওয়াছি), নাওয়াইতেছ (নাওয়াছ), নাওয়াইতেছে (নাওয়াছে), নাওয়াইতেছেন (নাওয়াছেন)। (৩) নাওয়াইয়াছি, (নাইয়েছি), নাওয়াইয়াছি (নাইয়েছি), নাওয়াইয়াছ (নাইয়েছ), নাওয়াইয়াছে (নাইয়েছে), নাওয়াইয়াছেন (নাইয়েছেন)। (৪) নাওয়াইলাম (নাওয়ানাম), নাওয়াইলি (নাওয়ালি), নাওয়াইলে (নাওয়ালে), নাওয়াইল (নাওয়াল), নাওয়াইলেন (নাওয়ালেন)। (৫) নাওয়াইতেছিলাম (নাওয়াছিলাম), নাওয়াইতেছিলি (নাওয়াছিলি), নাওয়াইতেছিলে (নাওয়াছিলে), নাওয়াইতেছিল (নাওয়াছিল), নাওয়াইতেছিলেন (নাওয়াছিলেন)। (৬) নাওয়াইয়াছিলাম (নাইয়েছিলাম), নাওয়াইয়াছিলি (নাইয়েছিলি), নাওয়াইয়াছিলে (নাইয়েছিলে), নাওয়াইয়াছিল (নাইয়েছিল), নাওয়াইয়াছিলেন (নাইয়েছিলেন)। (৭) নাওয়াইতাম (নাওয়াতাম), নাওয়াইতিস (নাওয়াতিস), নাওয়াইতে (নাওয়াতে), নাওয়াইত (নাওয়াত), নাওয়াইতেন (নাওয়াতেন)। (৮) নাওয়াইব (নাওয়াব), নাওয়াইবি (নাওয়াবি), নাওয়াইবে (নাওয়াবে), নাওয়াইবেন (নাওয়াবেন)। (৯) নাওয়া, নাওয়াও, নাওয়াক, নাওয়ান। (১০) নাওয়ায়, নাওয়াইও, নাওয়াইয়ো (নাইও, নাইয়ো), নাওয়াইবেন (নাওয়াবেন)। (১১) নাওয়াইতে (নাওয়াতে), নাওয়াইরা (নাইয়ে), নাওয়াইলে (নাওয়ালে), নাওয়াইবার (নাওয়াবার)। (১২) নাওয়ান (নাওয়ানো)।

২২—ঘুরান (ঘোরানো)—ঘুমানা (ঘুরা ধাতু)

(১) ঘুরাই (ঘুরই, ঘুরুই, ঘোরাই), ঘুরাস (ঘুরস, ঘোরাস), ঘুরাও (ঘুরও, ঘোরাও), ঘুরায় (ঘুরয়, ঘোরায়), ঘুরান (ঘুরন, ঘোরান)। (২) ঘুরাইতেছি (ঘুরছি, ঘুরুছি, ঘোবাছি), ঘুরাইতেছিস (ঘুরছিস, ঘুরুছিস, ঘোরাছিস), ঘুরাইতেছ (ঘুরচ্ছ, ঘুরুচ্ছ, ঘোবাচ্ছ), ঘুরাইতেছে (ঘুরচ্ছে, ঘুরুচ্ছে, ঘোরাচ্ছে), ঘুরাইতেছেন (ঘুরছেন, ঘুরুছেন, ঘোরাছেন)। (৩) ঘুরাইয়াছি (ঘুরিয়েছি), ঘুরাইয়াছিস (ঘুরিয়েছিস), ঘুরাইয়াছ (ঘুরিয়েছ), ঘুরাইয়াছে (ঘুরিয়েছে), ঘুরাইয়াছেন (ঘুরিয়েছেন)। (৪) ঘুরাইলাম (ঘুর'লাম, ঘুরুলাম, ঘোরালাম), ঘুরাইলি (ঘুর'লি, ঘুরুলি, ঘোরালি), ঘুরাইলে (ঘুর'লে, ঘুরুলে, ঘোরালে), ঘুরাইল (ঘুর'ল, ঘুরুল, ঘোরাল), ঘুরাইলেন (ঘুর'লেন, ঘুরুলেন, ঘোরালেন)। (৫) ঘুরাইতেছিলাম (ঘুরচ্ছিলাম, ঘুরুচ্ছিলাম, ঘোবাছিলাম), ঘুরাইতেছিলি (ঘুরচ্ছিলি, ঘুরুচ্ছিলি, ঘোরাচ্ছিলি), ঘুরাইতেছিলে (ঘুরচ্ছিলে, ঘুরুচ্ছিলে, ঘোরাচ্ছিলে), ঘুরাইতেছিল (ঘুরচ্ছিল, ঘুরুচ্ছিল, ঘোরাচ্ছিল), ঘুরাইতেছিলেন (ঘুরচ্ছিলেন, ঘুরুচ্ছিলেন, ঘোরাচ্ছিলেন)। (৬) ঘুরাইয়াছিলাম (ঘুরিয়েছিলাম), ঘুরাইয়াছিলি (ঘুরিয়েছিলি), ঘুরাইয়াছিলে (ঘুরিয়েছিলে), ঘুরাইয়াছিল (ঘুরিয়েছিল), ঘুরাইয়াছিলেন (ঘুরিয়েছিলেন)। (৭) ঘুরাইতাম (ঘুর'তাম, ঘুরুতাম, ঘোরাতাম), ঘুরাইতিস (ঘুর'তিস, ঘুরুতিস, ঘোবাতিস), ঘুরাইতে (ঘুর'তে, ঘুরুতে, ঘোরাতে), ঘুরাইত (ঘুর'ত, ঘুরুত, ঘোরাত), ঘুরাইতেন (ঘুর'তেন, ঘুরুতেন, ঘোরাতেন)। (৮) ঘুরাইব (ঘুর'ব, ঘুরুব, ঘোরাব), ঘুরাইবি (ঘুর'বি, ঘুরুবি, ঘোরাবি), ঘুরাইবে (ঘুর'বে, ঘুরুবে, ঘোরাবে), ঘুরাইবেন (ঘুর'বেন, ঘুরুবেন, ঘোরাবেন)। (৯) ঘুরা (ঘুরো, ঘোরা), ঘুরাও (ঘুরও, ঘোরাও), ঘুরাক (ঘুরক, ঘোরাক), ঘুরান (ঘুরন, ঘোরান)। (১০) ঘুরাস (ঘুরস, ঘোরাস), ঘুরাইও, ঘুরাইয়ো (ঘুরিও, ঘুরিয়ো), ঘুরাইবেন (ঘুর'বেন, ঘুরুবেন, ঘোরাবেন)। (১১) ঘুরাইতে (ঘুর'তে, ঘুরুতে, ঘোরাতে), ঘুরাইয়া (ঘুরিয়ে), ঘুরাইলে (ঘুর'লে, ঘুরুলে, ঘোবালে), ঘুরাইবার (ঘুর'বার, ঘোরাবার)। (১২) ঘুরান (ঘুরনো, ঘোরানো)।

২৪—ধোয়ান (ধোয়ানো)—ধুলবানা (ধোয়া ধাতু)

(১) ধোয়াই, ধোয়ান, ধোয়াও, ধোয়ায়, ধোয়ান। (২) ধোয়াইতেছি (ধোয়াছি), ধোয়াইতেছিস (ধোয়াছিস), ধোয়াইতেছ (ধোয়াচ্ছ), ধোয়াইতেছে (ধোয়াচ্ছে), ধোয়াইতেছেন (ধোয়াছেন)। (৩) ধোয়াইয়াছি (ধুইয়েছি), ধোয়াইয়াছিস (ধুইয়েছিস), ধোয়াইয়াছ (ধুইয়েছ), ধোয়াইয়াছে (ধুইয়েছে), ধোয়াইয়াছেন (ধুইয়েছেন)। (৪) ধোয়াইলাম (ধোয়ালাম), ধোয়াইলি (ধোয়ালি), ধোয়াইলে (ধোয়ালে), ধোয়াইল (ধোয়াল), ধোয়াইলেন (ধোয়ালেন)। (৫) ধোয়াইতেছিলাম (ধোয়াচ্ছিলাম), ধোয়াইতেছিলি (ধোয়াচ্ছিলি), ধোয়াইতেছিলে (ধোয়াচ্ছিলে), ধোয়াইতেছিল (ধোয়াচ্ছিল), ধোয়াইতেছিলেন (ধোয়াচ্ছিলেন)। (৬) ধোয়াইয়াছিলাম (ধুইয়েছিলাম), ধোয়াইয়াছিলি (ধুইয়েছিলি), ধোয়াইয়াছিলে (ধুইয়েছিলে), ধোয়াইয়াছিল (ধুইয়েছিল), ধোয়াইয়াছিলেন (ধুইয়েছিলেন)। (৭) ধোয়াইতাম (ধোয়াতাম), ধোয়াইতিস (ধোয়াতিস), ধোয়াইতে (ধোয়াতে), ধোয়াইত (ধোয়াত), ধোয়াইতেন (ধোয়াতেন)।

(८) धोराइव (धोराव), धोराइवि (धोरावि), धोराइवे (धोरावे), धोराइवेन (धोरावेन)।
 (९) धोरा, धोराव, धोराक, धोरान। (१०) धोरास, धोराइव, धोराइरो (धुईव, धुईरो),
 धोराइवेन (धोरावेन)। (११) धोराइते (धोराते), धोराइया (धुईये), धोराइले
 (धोराले), धोराइवार (धोरावार)। (१२) धोरान (धोरानो)।

१५—दोड़ान (दोड़नो, दोड़ानो)—दोड़ना, दोड़ाना (दोड़ा धातु)।

(१) दोड़ाइ (दोड़इ, दोड़ुइ), दोड़ान (दोड़स), दोड़ाव (दोड़व), दोड़ाव (दोड़व),
 दोड़ान (दोड़न)। (२) दोड़ाइतेहि (दोड़हि, दोड़ुहि), दोड़ाइतेहिस (दोड़हिस,
 दोड़ुहिस), दोड़ाइतेह (दोड़ह, दोड़ुह) दोड़ाइतेहे (दोड़हे, दोड़ुहे),
 दोड़ाइतेहेन (दोड़हेन, दोड़ुहेन)। (३) दोड़ाइयाहि (दोड़ेहि, दोड़ियेहि),
 दोड़ाइयाहिस (दोड़ेहिस, दोड़ियेहिस), दोड़ाइयाह (दोड़ेह, दोड़ियेह), दोड़ाइयाहे
 (दोड़ेहे, दोड़ियेहे), दोड़ाइयाहेन (दोड़ेहेन, दोड़ियेहेन)। (४) दोड़ाइलाम
 (दोड़लाम, दोड़ुलाम), दोड़ाइलि (दोड़लि, दोड़ुलि), दोड़ाइने (दोड़ले,
 दोड़ुले), दोड़ाइल (दोड़ल, दोड़ुल), दोड़ाइलेन (दोड़लेन, दोड़ुलेन)।
 (५) दोड़ाइतेहिलाम (दोड़ुहिलाम, दोड़ाहिलाम), दोड़ाइतेहिलि (दोड़हिलि,
 दोड़ुहिलि), दोड़ाइतेहिले (दोड़हिले, दोड़ुहिले), दोड़ाइतेहिल (दोड़हिल,
 दोड़ुहिल), दोड़ाइतेहिलेन (दोड़हिलेन, दोड़ुहिलेन)। (६) दोड़ाइयाहिलाम
 (दोड़ेहिलाम, दोड़ियेहिलाम), दोड़ाइयाहिलि (दोड़ेहिलि, दोड़ियेहिलि),
 दोड़ाइयाहिले (दोड़ेहिले, दोड़ियेहिले), दोड़ाइयाहिल (दोड़ेहिल, दोड़ियेहिल),
 दोड़ाइयाहिलेन (दोड़ेहिलेन, दोड़ियेहिलेन)। (७) दोड़ाइताम (दोड़ताम, दोड़ुताम),
 दोड़ाइतिस (दोड़तिस, दोड़ुतिस), दोड़ाइते (दोड़ते, दोड़ुते), दोड़ाइत (दोड़त,
 दोड़ुत), दोड़ाइतेन (दोड़तेन, दोड़ुतेन)। (८) दोड़ाइव (दोड़व, दोड़ुव),
 दोड़ाइवि (दोड़वि, दोड़ुवि), दोड़ाइवे (दोड़वे, दोड़ुवे), दोड़ाइवेन (दोड़वेन, दोड़ुवेन)।
 (९) दोड़ा (दोड़ा), दोड़ाव (दोड़ाव), दोड़ाक (दोड़क, दोड़ुक), दोड़ान (दोड़न,
 दोड़ुन)। (१०) दोड़ास (दोड़स), दोड़ाइव, दोड़ाइरो (दोड़ा), दोड़ाइवे (दोड़वे,
 दोड़ुवे), दोड़ाइवेन (दोड़वेन, दोड़ुवेन)। (११) दोड़ाइते (दोड़ते, दोड़ुते),
 दोड़ाइया (दोड़े, दोड़िये), दोड़ाइले (दोड़ले, दोड़ुले), दोड़ाइवार (दोड़वार)।
 (१२) दोड़ान (दोड़नो)।

१६—छटकान (छटकानो)—मसलना, मूँधना (छटका धातु)

(१) छटकाइ,* छटकस, छटकाव, छटकाव, छटकान। (२) छटकाइतेहि (छटकाहि),
 छटकाइतेहिस (छटकाहिस), छटकाइतेह (छटकाह), छटकाइतेहे (छटकाहे), छटकाइतेहेन

छटकाइ के चार अक्षरवाले रूपमें दूसरे अक्षरका अकार उच्चारित नहीं होता, जैसे—
 छटकाइ, धमकाइ, ऊँठाइयाहिलाम।

(चटकाछैन) । (७) चटकाइयाछि (चटकेछि), चटकाइयाछिस (चटकेछिस), चटकाइयाछ (चटकेछ), चटकाइयाछे (चटकेछे), चटकाइयाछैन (चटकेछैन) । (८) चटकाइलाम (चटकालाम), चटकाइलि (चटकालि), चटकाइले (चटकाले), चटकाइल (चटकाल), चटकाइलेन (चटकालेन) । (९) चटकाइतेछिलाम (चटकाछिलाम), चटकाइतेछिसि (चटकाछिसि), चटकाइतेछिले (चटकाछिले), चटकाइतेछिस (चटकाछिस), चटकाइतेछिलेन (चटकाछिलेन) । (१०) चटकाइयाछिलाम (चटकेछिलाम), चटकाइयाछिलि (चटकेछिलि), चटकाइयाछिले (चटकेछिले), चटकाइयाछिल (चटकेछिल), चटकाइयाछिलेन (चटकेछिलेन) । (११) चटकाइताम (चटकाताम), चटकाइतिस (चटकातिस), चटकाइते (चटकाते), चटकाइत (चटकात), चटकाइतेन (चटकातेन) । (१२) चटकाइव (चटकाव), चटकाइवि (चटकावि), चटकाइवे (चटकावे), चटकाइवेन (चटकावेन) । (१३) चटका, चटकाः, चटकाक, चटकान । (१४) चटकास, चटकाइँ, चटकाइँयो (चटकाँ), चटकाइँवेन (चटकावेन) । (१५) चटकाइँते (चटकाते), चटकाइँया (चटकाँ), चटकाइँले (चटकाले), चटकाइँवार (चटकावार) । (१६) चटकान (चटकानो) ।

इसके अनुरूप आउटान, आउटान, आउटान, आउटान आदिके (७), (८), (१०) कालके कथित रूपमें ओ के स्थानमें उ होता है ; जैसे—आउटेछि, आउटेछिन, आउटेँ । थाउरान, नउरान के उन्हीं कालोंके कथित रूपमें ओ के स्थानमें इ होता है ; जैसे—थाइँयेछे, थाइँयेछिलाम । देउरान, नेउरान के उन्हीं कालोंके कथित रूपमें देउ, नेउ के स्थानमें दिइ, निइ होता है ; जैसे—दिइयेछि, दिइयेछिन, दिइयेँ ।

१७—विगडान (विगडनो, विगडानो)—विगडना, विगडना (विगडा धातु)

(१) विगडाइ (विगडइ, विगडूइ), विगडास (विगडस), विगडाओ (विगडओ), विगडाय (विगडय), विगडान (विगडन) । (२) विगडाइतेछि (विगडछि, विगडूछि), विगडाइतेछिस (विगडछिस, विगडूछिस), विगडाइतेछे (विगडछे, विगडूछे), विगडाइतेछे (विगडछे, विगडूछे), विगडातेछेन (विगडछेन, विगडूछेन) । (३) विगडाइयाछि (विगडेछि), विगडाइयाछिस (विगडेछिस), विगडाइयाछ (विगडेछे), विगडाइयाछे (विगडेछे), विगडाइयाछेन (विगडेछेन) । (४) विगडाइलाम (विगडलाम, विगडूलाम), विगडाइलि (विगडलि, विगडूलि), विगडाइले (विगडले, विगडूले), विगडाइल (विगडल, विगडूल), विगडाइलेन (विगडलेन, विगडूलेन) । (५) विगडाइतेछिलाम (विगडछिलाम, विगडूछिलाम), विगडाइतेछिलि (विगडछिलि, विगडूछिलि), विगडाइतेछिले (विगडछिले, विगडूछिले), विगडाइतेछिल (विगडछिल, विगडूछिल), विगडाइतेछिलेन (विगडछिलेन, विगडूछिलेन) । (६) विगडाइयाछिलाम (विगडेछिलाम), विगडाइयाछिलि (विगडेछिलि), विगडाइयाछिले (विगडेछिले), विगडाइयाछिल (विगडेछिल), विगडाइयाछिलेन (विगडेछिलेन) । (७) विगडाइताम (विगडताम, विगडूताम),

बिगडाईतिस (बिगड़तिस, बिगड़ूतिस), बिगडाईते (बिगडते, बिगड़ते), बिगडाईत
(बिगडत, बिगड़त), बिगडाईतेन (बिगडतेन, बिगड़तेन) । (८) बिगडाईब (बिगडाब),
बिगडाईबि (बिगडाबि), बिगडाईबे (बिगडाबे), बिगडाईबेन (बिगडाबेन) । (९) बिगडा
(बिगडो), बिगडाओ (बिगडओ), बिगडाक (बिगडक), बिगडान (बिगडन) ।
(१०) बिगडास (बिगडस), बिगडाईओ, बिगडाईरौ (बिगडो), बिगडाबे (बिगडबे,
बिगड़बे), बिगडाईबेन (बिडबेन, बिगड़बेन) । (११) बिगडाईते (बिगडते,
बिगड़ते), बिगडाईवा (बिगड़े), बिगडाईले (बिगडले, बिगड़ले), बिगडाईबार
(बिगड़बार) । (१२) बिगडान (बिगड़नो, बिगडानो) ।

इसक अनुरूप शिष्टान क केवल कथित रूप ही प्रचलित हैं ।

१८—उलटान (उलटनो, उलटानो)—बलटना (उलटा धातु)

(१) उलटাই (उलटई, उलटूई, उलटाई), उलटास (उलटस, उलटास), उलटाओ
(उलटओ, उलटाओ), उलटार (उलटर, उलटार), उलटान (उलटन, उलटान) ।
(२) उलटাইतेहि (उलटछि, उलटूछि, उलटाछि), उलटাইतेहिस (उलटछिस, उलटूछिस,
उलटाछिस), उलटাইतेह (उलटछ, उलटूछ, उलटाछ), उलटাইतेहे (उलटछे,
उलटूछे, उलटाछे), उलटাইतेहेन (उलटछेन, उलटूछेन, उलटाछेन) । (३) उलटাইराहि
(उलटेछि), उलटাইराहिस (उलटेछिस), उलटাইराह (उलटेह), उलटাইराहे
(उलटेहे), उलटাইराहेन (उलटेहेन) । (४) उलटাইलाम (उलटलाम, उलटूलाम,
उलटालाम), उलटैलि (उलटलि, उलटूलि, उलटालि), उलटैले (उलटले, उलटूले,
उलटाले), उलटैल (उलटल, उलटूल, उलटाल), उलटैलेन (उलटलेन, उलटूलेन,
उलटालेन) । (५) उलटैतेछिलाम (उलटछिलाम, उलटूछिलाम, उलटाछिलाम),
उलटैतेछिलि (उलटछिलि, उलटूछिलि, उलटाछिलि), उलटैतेछिले (उलटाछिले,
उलटूछिले, उलटाछिले), उलटैतेछिल (उलटछिल, उलटूछिल, उलटाछिल),
उलटैतेछिलेन (उलटाछिलेन, उलटूछिलेन, उलटाछिलेन) । (६) उलटैराहिलाम
(उलटेहिलाम), उलटैराहिलि (उलटेहिलि), उलटैराहिले (उलटेहिले),
उलटैराहिल (उलटेहिल), उलटैराहिलेन (उलटेहिलेन) । (७) उलटैताम
(उलटताम, उलटूताम, उलटालाम), उलटैतिस (उलटतिस, उलटूतिस, उलटालिस),
उलटैते (उलटते, उलटूते, उलटाले), उलटैत (उलटत, उलटूत, उलटाल),
उलटैतेन (उलटतेन, उलटूतेन, उलटालेन) । (८) उलटैब (उलटब, उलटूब,
उलटाल), उलटैबि (उलटबि, उलटूबि, उलटालि), उलटैबे (उलटबे, उलटूबे,
उलटाले), उलटैबेन (उलटबेन, उलटूबेन, उलटालेन) । (९) उलटा (उलटो),
उलटाओ (उलटओ, उलटाओ), उलटाक (उलटक, उलटाक), उलटान (उलटन, उलटान) ।

(१०) उलटास (उलटस, उलटास), उलटाईउ, उलटाईयो (उलटो), उलटावे (उलटवे, उलटूवे, उलटावे), उलटाईबेन (उलटबेन, उलटूबेन, उलटाबेन)। (११) उलटाईते (उलटते, उलटूते, उलटाते), उलटाईया (उलटे), उलटाईने (उलटले, उलटूले, उलटाले), उलटाईवाव (उलटवाव, उलटावाव)। (१२) उलटान (उलटानो, उलटानो)।

इसके अनुरूप उबरान, उजरान, उमगान, फूलकान, डूकरान, झूकरान क्रियाके केवल कथित प्रथम रूप ही प्रचलित हैं। जिन क्रियाओं के सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रयोग होते हैं उनके सकर्मक प्रयोगमें प्रायः कथित अन्तिम रूप ही प्रचलित हैं, जैसे—उलटव—उलट जाता है, भाखा माह उलटाव—उलटो।

१६—देउया (दैवा)—देना (द् धातु)

(१) दि, दिस, देउ (दैओ), देय (दैय), देन (दैन)। (२) देतेहि (दिच्छि), दितेहिस (दिच्छिस), दितेछ (दिच्छ), दितेछे (दिच्छे), दितेछेन (दिच्छेन)। (३) दिराहि (दिरेहि), दिराहिस (दिरेहिस), दिराछ (दिरेछ), दिराछे (दिरेछे), दिराछेन (दिरेछेन)। (४) दिलांम, दिलि, दिले, दिल (दिले), दिनेन। (५) दितेहिलांम (दिच्छिलांम), दितेहिलि (दिच्छिलि), दितेहिले (दिच्छिले), दितेहिल (दिच्छिल), दितेहिलेन (दिच्छिलेन)। (६) दिराहिलांम (दिरेहिलांम), दिराहिलि (दिरेहिलि), दिराहिले (दिरेहिले), दिराहिल (दिरेहिल), दिराहिलेन (दिरेहिलेन)। (७) दितांम, दितिस, दिते, दित, दितेन। (८) दिव (देव), दिवि, दिवे (देवे), दिबेन (देबेन)। (९) दे, दाउ, दिक्, दिन। (१०) दिस, दिउ, दिरो, दिबेन। (११) दिते, दिरा (दिरे), दिले, दिवाव (देवाव)। (१२) देउया।

२०—शोउया, शोया—लेटना, सोना (शु धातु)

(१) शुई, शूस, शोउ, शोय, शोनि। (२) शुईतेहि (शुच्छि), शुईतेहिस (शुच्छिस), शुईतेछ (शुच्छ), शुईतेछे (शुच्छे), शुईतेछेन (शुच्छेन)। (३) शुईयाहि (शुयेहि), शुईयाहिस (शुयेहिस), शुईयाछ (शुयेछ), शुईयाछे (शुयेछे), शुईयाछेन (शुयेछेन)। (४) शुईलाम (शुलाम), शुईलि (शुलि), शुईले (शुले), शुईल (शुल), शुईलेन (शुलेन)। (५) शुईतेहिलांम (शुच्छिलांम), शुईतेहिलि (शुच्छिलि), शुईतेहिले (शुच्छिले), शुईतेहिल (शुच्छिल), शुईतेहिलेन (शुच्छिलेन)। (६) शुईयाहिलांम (शुयेहिलांम), शुईयाहिलि (शुयेहिलि), शुईयाहिले (शुयेहिले), शुईयाहिल (शुयेहिल), शुईयाहिलेन (शुयेहिलेन)। (७) शुईतांम (शुतांम), शुईतिस (शुतिस), शुईते (शुते), शुईत (शुत), शुईतेन (शुतेन)। (८) शुईव (शोव), शुईवि (शुवि), शुईवे (शोवे), शुईबेन (शोबेन)। (९) शो, शोउ, शुक, शुन। (१०) शूस, शुईउ, शुईयो, शुईबेन। (११) शुईते (शुते), शुईया (शुये), शुईले (शुले), शुईवार (शोवार)। (१२) शोउया, शोया।

২১—কৌকড়ান (কৌকড়ানো)—সিকুড়না, সিকৌড়না (কৌকড়া ঘাতু)

(১) কৌকড়াই, কৌকড়াস, কৌকড়াও, কৌকড়ায়, কৌকড়ান। (২) কৌকড়াইতেছি (কৌকড়াছি), কৌকড়াইতেছিস (কৌকড়াছিস), কৌকড়াইতেছ (কৌকড়াছ), কৌকড়াইতেছে (কৌকড়াছে), কৌকড়াইতেছেন (কৌকড়াছেন)। (৩) কৌকড়াইরাছি (কুঁকড়েছি), কৌকড়াইরাছিস (কুঁকড়েছিস), কৌকড়াইরাছ (কুঁকড়েছ), কৌকড়াইরাছে (কুঁকড়েছে), কৌকড়াইরাছেন (কুঁকড়েছেন)। (৪) কৌকড়াইলাম (কৌকড়ালাম), কৌকড়াইলি (কৌকড়ালি), কৌকড়াইলে (কৌকড়ালে), কৌকড়াইল (কৌকড়াল), কৌকড়াইলেন (কৌকড়ালেন)। (৫) কৌকড়াইতেছিলাম (কৌকড়াছিলাম), কৌকড়াইতেছিলি (কৌকড়াছিলি), কৌকড়াইতেছিলে (কৌকড়াছিলে), কৌকড়াইতেছিল (কৌকড়াছিল), কৌকড়াইতেছিলেন (কৌকড়াছিলেন)। (৬) কৌকড়াইরাছিলাম (কুঁকড়েছিলাম), কৌকড়াইরাছিলি (কুঁকড়েছিলি), কৌকড়াইরাছিলে (কুঁকড়েছিলে), কৌকড়াইরাছিল (কুঁকড়েছিল), কৌকড়াইরাছিলেন (কুঁকড়েছিলেন)। (৭) কৌকড়াইতাম (কৌকড়াতাম), কৌকড়াইতিস (কৌকড়াতিস), কৌকড়াইতে (কৌকড়াতে), কৌকড়াইত (কৌকড়াত), কৌকড়াইতেন (কৌকড়াতেন)। (৮) কৌকড়াইব (কৌকড়াব), কৌকড়াইবি (কৌকড়াবি), কৌকড়াইবে (কৌকড়াবে), কৌকড়াইবেন (কৌকড়াবেন)। (৯) কৌকড়া, কৌকড়াও, কৌকড়াক, কৌকড়ান। (১০) কৌকড়াস, কৌকড়াইও, কৌকড়াইয়ো (কুঁকড়িও, কুঁকড়িয়ো), কৌকড়াইবেন (কৌকড়াবেন)। (১১) কৌকড়াইতে (কৌকড়াতে), কৌকড়াইরা (কুঁকড়ে), কৌকড়াইলে (কৌকড়ালে), কৌকড়াইবাব (কৌকড়াবার)। (১২) কৌকড়ান (কৌকড়ানো)।

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	१०	अनघ	अवैघ	४६	२	१८	कक्षिष ।	कक्षिष एक
३	१	२३	अरग	अरग					जाति ।
६	२	१६	आडवा	आडाव	४८	२	११	कानन	कानून
१२	१	५	अवाग्रग	—अवाग्रग	५०	१	३४	वेड	वेडे
१२	१	२६	खामिनी	स्वामिनी	५२	१	३२	लोष	लोष
१२	२	१७	अध्यात्म	अध्यात्म	५२	२	१८	स्वातन्त्रा	स्वातन्त्र्य
१८	१	१४	रंगया	रंगाया	५४	१	१८	खंचड़ा	खैचड़ा
१६	२	२४	पदी	पेदी	५५	२	२६	डुलाया	डुलाया
२१	१	१३	क	क	५६	२	२३	अभ्रान्त	अभ्रान्त
२१	२	१४	दरुपयोग	दुरुपयोग	५६	२	२४	भ्रम	भ्रम
२१	२	१५	स्वच	खच	६१	२	३४	आय	आय
२२	१	५	अपशशरण	अपशशार	६३	१	२४	।	आलिम ।
२२	१	७	शं घातक	सं घातक	६३	२	२४	।	मछलीका छिलका,
२२	१	१६	दुगां	दुर्गा					रेशा ।
२२	१	३२	अज्ञात	अज्ञात	६५	१	२१	विश्राम	विश्राम
२३	१	३३	प्राकृविक	प्राकृतिक	७२	१	३४	वि	क्रि वि
२३	२	२६	नि	वि	७२	२	३१	क	क
२४	१	१७	असम्बद्ध	असम्बद्ध	७७	२	१०	जिह्वा	जिह्वा
२४	२	३	गं	सं	७७	२	१६	क्रि	
२४	२	२६	मूर्तिमें	संसार	७९	२	६	एवजमें	एवजमें
			मूर्ति ...संसारमें		८१	१	२६	यहां	यहांका या
२५	२	१३	अभाग	अभाग	८५	१	६	पेट	पेटू
३२	२	२	अय	अयू	८८	१	२२	कां ।	कांथा
३४	१	१६	शृं	शृं	८९	१	४	घृत	घृत
३५	२	२४	कद्	कद्दू	८९	१	२६	कवची	कवजि
३५	२	३४	बिच्छ	बिच्छू	८९	२	३३	बाहु	बालू
४१	२	३	खन	खून	९३	१	३३	खकसा	खेकसा
४१	२	१२	डबा	डूबा	९४	२	१५	काठगड़ा	काठगड़ा
४४	१	३४	सुम्बक	सुम्बक	९४	२	३४	जड़ा	जूड़ा

पृष्ठ	स्तम्भ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	स्तम्भ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६५	१	६	हसुआ	हँसुआ	११७	१	३०	खशारत	खैशारत
६५	१	१५	जिभड़ा	जिंभड़ा	११६	१	५	सिर	गले
६५	१	३४	काड़ा	कौड़ा	१२०	१	३	मूर्ख	मूर्ख
६५	२	१०	वारदात	वारदात	१२०	१	२८	स्त्री	स्त्री,
६६	१	२	—काना (शोण) काना(शोण)		१२१	२	२०	गक्र	गक्र
६६	१	१६	फटा	फूटा	१२१	२	२५	जरुरत	जरुरत
६६	२	१८	छला	छैला	१२२	१	१६	मुख	मूर्ख
६६	२	२३	हवसी	हवशी	१२२	२	२७	गनधूम	गनधूम
६६	२	३२	काबुलका	काबुलका	१२२	२	३१	गरदनिया	गरदनियाँ
६८	१	३३	वावगाई	वावगाई	१२४	१	१५	गजेड़ी	गँजेड़ी
६६	१	१६	हसी	हँसी	१२४	१	१८	पदा	पैदा
१०१	१	११	कँचकि	कुँचकि	१२४	१	२५	आठवे	आठवे
१०१	१	२३	कू-	कू-	१२४	२	२४	बठाना	बैठाना
१०१	२	२६	कूळ	कूळ वि	१२४	२	२८	ढर	ढेर
१०१	२	३२	कूड़ा, कूड़ा	कूड़ा, कूड़ा	१२५	१	११	कसलापन	कसैलापन
१०२	१	१६	कूडन	कूडनी	१२५	१	१६	गामूचा	गामूछा
१०२	१	१७	पर	परका	१२५	२	२	फोड़ा,—	फोड़ा—,
१०३	२	४	छोवि	छोवी	१२५	२	५	छनवाना	छनवाना
१०३	२	२५	दिवड़ी	दिवरी	१२५	२	२१	वृद्धा	वृद्धा
१०३	२	२६	कूपोकाठ	कूपोकाठ	१२५	२	२६	वश्च (-वत्त	वश्च' (-वत्त
१०५	१	२७	करानी	कैरानी	१२६	२	१२	गुठली	गुठली
१०६	१	२६	कपनी	कपनी	१२६	२	३१	छीपे	छिपे
१०६	२	२५	छोवि	छोवी	१२७	२	३३	रखन	रखने
१११	१	४	थोडा	थोड़ा	१२८	२	६	छड़ौ	छड़ौ
११२	२	२४	खरा	खैड़ा	१२८	२	२३	पर	पैर
११३	२	६	थाड़	थोफू	१२६	२	४	गड़ा	गैड़ा
११३	२	२०	थाना	थाना	१२६	२	२३	वद	बैद
११४	१	२३	खम्मा	खम्मा	१३०	१	३०	झीगद	झीगद
११६	१	२७	खकानो	खैकानो	१३३	२	५	—पेट्रे स—	स—पेट्रे
११६	१	३४	खगरा, झाड़	खैड़ा, झाड़ू	१३४	२	११	कोलू	कोलू
				झाड़ू	१३४	२	१८	फु सिया	फु सियाँ
११३	२	५	खचामेचि	खैचामेचि	१३५	२	१३	भवद	भवर
११७	१	२१	खल	खेल	१३५	२	२२	घविठ	घविठ

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	२	२६	चाक	चौक	१५६	१	११	(-ली)	(-नौ)
१३७	१	१०	चारा	चारों	१५६	१	१२	व्यक्ति	व्यक्ति
१३८	२	३०	चौहत्तरवा	चौहत्तरवाँ	१५६	२	३	निवासी	निवासी
१३८	२	३४	-रस्त्र	-रस्त्र	१५६	२	१०	बिभिन्न	बिभिन्न
१३९	१	२०	अथ	अर्थ	१५६	२	२३	फसाव	फसाव
१४१	१	६	चमेड़	चमड़े	१५६	२	३२	मातृचिह्न	मातृचिह्न
१४४	२	२२	छिड़ि	छिड़ि	१५७	२	१७	(-नी)	(-नौ)
१४४	२	२६	हिनहिनाहट	हिनहिनाहट	१५७	२	१६	सं	वि
१४६	१	१८	चुटया	चुटैया	१५७	२	२१	विश्व-सार्व	विश्व-गार्व-
१४६	१	३०	(०, १०	(१०, ११०	१५८	१	७	हुआ	हुआ
१५०	१	७	फट	फुट	१५८	२	३०	सं	वि-
१५०	२	३	चादह	चौदह	१५८	२	३२	झगिन्न	झागिन्न
१५०	२	६	चाधरी	चौधरी	१५९	१	८	दुर्गा	दुर्गा
१५०	२	१६	कम	कम'	१५९	१	१४	वृद्ध	वृद्ध
१५१	१	१२	† टा	काँटा	१५९	१	२०	पैसाइस	पैसाइश
१५१	१	१८	फलाव	फैलाव	१५९	१	२४	आवश्यक	आवश्यकता
१५१	२	३२	छा, छा	छा, छाँ	१५९	१	३१	चलमे	चलाने
१५२	१	२	दू .. स्थान	दूर स्थान	१५९	२	२	नौघ	नौघ
१५२	१	१४	छनना	छानना	१५९	२	१६	वृत्ति	वृत्ति
१५२	२	१०	छातावे	छातावे	१५९	२	२३	हुब	हुब
१५२	२	१३	सत्त सत्त	सत्त् सत्त्	१५९	२	३२	स्व भा	खंभा
१५२	२	१४	अड़ग्रा	अड़ग्रा	१६०	१	२	वृथा नष्ट	वृथा नष्ट
१५२	२	२२	पर	पर	१६०	१	७	निक्षेप	निक्षिप्त
१५३	१	६	पूणता	पूर्णता	१६०	१	१०	नौघ	नौघ
१५३	१	१०	तबालब	लबालब	१६०	१	११	ब्राशण	ब्राह्मण
१५३	१	१६	वृक्ष	वृक्ष	१६०	१	३०	पती	पति
१५३	१	२७	आदिके	आदिकी	१६०	२	२५	जाजल	जाजाल
१५३	१	३०	बिवाह	चिवाह	१६१	१	२१	दांतेदार	दांतेदार
१५४	२	२०	छंका	छंका	१६१	१	२५	अपनि	अपनी
१५४	२	२४	भूनका	भूनकर	१६१	२	३३	वाटि	वाटि
१५४	२	३१	पसिना	पसीना	१६२	२	१०	घोखेपाज	घोखेबाज
१५५	२	३	छोटे	छोटे।	१६२	२	१८	झिगीवी	झिगीवा
१५६	१	३	छा	छा-	१६२	२	२०	करनेकी	करनेके

			अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			जिव	जिव	१७३	२	७	गुणकार	गुणकारी
			जवान	जवान	१७३	२	२५	द्रम	द्राम
१६३	१	११	छोना—	—छोना	१७३	२	३२	भाव	भाव
१६३	१	१२	नाम	जीभ साफ	१७४	१	१	लुटेरा	लुटेरा
१६३	१	१३	किया जाता	की जाती	१७४	१	२	ठग	ठगा
१६३	२	६	अवस्था	अवस्था	१७४	१	२१	व्यक्ति, ब्रा	व्यक्ति, ब्रा
१६४	१	११	जोड़ा	जोड़ी	१७४	१	३३	टट्टा	ठट्टा
१६४	१	१६	छाछा	छूछा	१७४	२	२८	चौध	चौध
१६५	१	५	सुविधा	सुविधा	१७४	२	३२	टीके, न्धी	ठीके, न्धी
१६५	२	२	और	ओर	१७५	१	६	में, चगना	से, चुगना
१६५	२	२७	वेद	वेद	१७५	१	१५	ई, लुला	ई, लुला
१६६	१	२४	छावना	छावनी	१७५	१	३४	छूलाना	छूलाना
१६६	१	३१	न्द्र घूम	न्द्र घूम	१७५	२	४	ठंगा	ठंगा
१६७	१	६	बखेड़ा, विपत्ति	बखेड़ा, विपत्ति	१७५	२	१३	वस्तु	वस्तु
१६७	१	२४	भनछनारट	भनभनारट	१७५	२	१५	टकना	टेकना
१६७	२	२५	भलसानो	भलशानो	१७५	२	२०	टक	टेक
१६८	२	७	टटर	टटर	१७६	१	२७	दववना	दववाना
१६९	१	१७	भा	का	१७६	२	२६	डेव, डेव	डेव, डेव
१६९	१	२१	दुघ	दुघ	१७६	१	७	छोछा	— छोछा
१६९	२	२८	कृष्णका भूला	कृष्णका भूला	१७६	१	३१	ढगा	ढगा
१७०	१	२६	टक्	टक्	१७६	२	१	दड़श	दड़श
१७०	२	१२	अंग्रेजी	अंग्रेजी	१८०	२	२	सव	सव
१७१	१	२६	उड़ान	उड़ाना	१८१	२	३४	उभशी	उभशी
१७१	२	२६	भी	भी कम	१८२	१	२४	तानपूरा	तानपूरा
१७२	१	१०	ठीका	टीका	१८४	१	२	ठाव	ठाव
१७२	१	१६	वचना	वचाना	१८४	२	२१	एकत्व	एकत्व
१७२	२	२६	पुछताछ	पुछताछ	१८४	२	२६	ताख	ताख
१७२	२	३२	छोठा	छोटा	१८६	१	३०	हल	हल
१७२	२	३३	दुटना	दुटना	१८६	१	३३	ख	ख
१७३	१	६	पाटशाला	पाटशाला	१८७	२	१६	तराजू	तराजू
१७३	१	१५	ढेकुआ	ढेकुआ	१८८	१	३२	तैदछ	तैदछ
					१८८	२	६	तेपोग	तेपोग
					१८८	२	२०	छमंड	छमंड

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	२	३४	तालना	तौलना
१६०	२	२१	थत्रथत्रनि	थत्रथत्रानि
१६०	२	२८	थला	थैला
१६१	१	१०	थाप्पड	थप्पड
१६१	१	२०	थान (२)	थाना
१६१	२	३	(-थ)	(-थू)
१६४	१	२६	दस्तावेज	दस्तावेज
१६४	२	२२	हुजा	हुआ
१६४	२	३१	डकती	डकैती
१६५	२	२१	खराती	खैराती
१६७	१	२२	तालब	तालाब
२००	२	३१	दवाल	दैवाल
२०१	१	६	दखा	दैखा
२०४	१	१५	घड़ बेचनी	घड, बेचैनी
२०४	१	१७	कमड	कमर
२०४	१	१८	छड़ा	छड़ा
२०६	१	३	नागा	नागा
२०७	२	१३	धनी	धनी
२०७	२	२३	धुनी	धुनी
२०८	१	२१	घड़ानो	घड़ानो
२१०	१	५	डेट	डेट
२१०	१	६	खक	खक
२१५	१	१८	आपना	अपना
२१५	१	२२	छडाल	छडाल
२२३	२	२६	—कल	—कल
२२५	२	३	ठाला	ठाला
२२६	२	१	डना	डना
२२७	१	७	पदल	पदल
२२७	२	१७	पदाइश	पदाइश
२२७	२	२८	गर	गर
२२६	१	२४	करग	करग
२२६	२	३३	परब	परब
२३०	१	४	पजक	पजक

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३१	२	१६	पाकडाना	पाकडानो
२३२	१	६	गाली	गोली
२३३	१	१७	भाषाव	भाषावि
२३३	२	१६	मुहकला	मुहला
२३४	२	५	फला	फैला
२३४	२	२४	बिवाहित	बिवाहित
२३४	२	२५	भाथथ	भाथथ
२३५	१	६	पावदान	पावदान
२३५	१	३१	चट्टी	चट्टी
२३५	२	२१	पतरा	पतरा
२३५	२	२७	घमंड	घमंड
२३६	१	२	भात्रण (२)	भात्रण
२३६	१	१६	पाश	पाश
२३६	२	२६	डना	डना
२३६	१	४	नहर	नहर
२३६	१	७	ठकन	ठकन
२३६	२	२८	गोशूष	गोशूष
२४०	२	११	भूख	भूख
२४१	१	८	भूरा	भूरा
२४१	२	१२	फल	फूल
२४२	२	१२	पच	पच
२४२	२	१२, १६	प-	प-
२४२	२	२६	वा ।	हवा
२४४	१	३२	वधन	वधन
२४६	१	६	(-ज)	(-झ)
२५४	१	३	फांस	फांस
२५४	१	११	ठाग—	ठाग—
२५५	१	३१	सोले जा	खुखड़ी जो
२५५	१	३४	फलाना	फैलाना
२५६	२	६	फजल फ	फजूल...फू
२५७	१	६	फू फंक	फू फूक
२५७	१	१०	फफी	फफी
२५७	१	१४	फूबने	फूबने

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५७	२	२४	फकाशे	फैकाशे	३८८	२	१०	फल	फूल
२५६	२	२६	बलु...मुह	बलु...मुँह	३०६	१	१६	भसा	भैसा
२६०	१	१४	थली	थैली	३०६	२	१७	मजि	मँजि
२६१	१	२७, ३१	वधा	वँधा	३१२	१	१	वाशाक (२)	वाँशाक
२६१	२	१६	छड़ै	छड़ै	३१२	२	२१	भट	भँट
२६२	२	१	थावड़	थावड़ा	३१६	२	७, १४	ढर	ढेर
२६२	२	४	बादा	बाँदा	३१७	१	७	रेहू	रोहू
२६२	२	१४, १६	क	कँ	३१७	२	१८	सिक पसे	सिके... पसे
२६२	२	२२	अघड़	अघेड़	३१८	२	७	फट	फूट
२६५	१	२७	भरपर	भरपूर	३१८	२	१३	रेहू	रोहू
२६६	१	८	बठका	बँठका	३२०	२	१	नाफू = नाफू	नाफू = नाँफू
२६८	१	१६	बाह	बाँह	३२१	१	३४	छ	छू
२७०	२	१०	मजवर	मजवूर	३२१	२	१५	लड्डा	लड्डा
२७१	२	३१	वात्रठ	वात्रठा	३२१	२	२६	लड्ड	लँड
२७३	२	१४	हठा	हँठ	३२१	२	३२	लेज	लँज
२७४	२	२६	अशका	अँशके	३२१	२	३३	लजा	लँजा
२८१	१	२६	बजनी	बँजनी	३२२	१	२५	लह	लह
२८१	२	२६	वतरह	वेतरह	३२३	२	२६	सकड़े	सँकड़े
२८२	१	३१	वशात ब	वैशात वे	३२४	१	६	सतवार	सतावर
२८३	२	१७	—देकान (२)	—विकान	३२४	१	२१	मुदकी, मुद	मुदँकी, मुदँ
२८५	२	१६	चमड़	चमड़े	३२४	२	१	शतान	शँतान
२६१	२	४	ठिकाने	ठिकाने	३२४	२	११	पड़	पड़े
२६२	१	३०	शौतान	शँतान	३२४	२	२८	साभका	साभेका
२६३	१	६	भजानो	भँजानो	३२५	२	३१	हछण	हँछण
२६४	१	१६	लू	लूँ	३२६	१	१२	साख	साखू
२६८	१	२६	दुर्गा	दुर्गा	३३१	१	२०	वेद	वेद
३००	२	२३	पमाना	पँमाना	३३१	१	२२	पाँड़	साँड़
३००	२	३४	वेद्वज्जती	वेद्वज्जती	३३१	२	१७	भट	भँट
३०१	२	३०	मारपच	मारपँच	३३२	१	२१	बचनी	वेचँनी
३०३	२	२३	कड	कद	३३३	१	८	कम	काम
३०५	१	२०	मूथवठ	मूथव्रिठ	३३३	२	३०	सत्त	सत्तू
३०५	१	२४	पर मुह	पर मुह	३३४	२	१७	सठक	सटक
३०८	१	१७	मला	मेला	३३५	२	२८	हुया	हुआ

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३६	२	१३	परवाला	परवाला	३४७	२	३४	अभि	अभि
३३६	२	१६	उत्पन्न	उत्पन्न	३४६	१	२८	सकना	सकना
३३६	२	६	ठाडा	ठाडा	३४६	१	२६	सक्रा	शैक्रा
३४०	१	४	गडूठ	गडूठ	३४०	१	२५	वेचन	वेचन
३४०	१	५	गडूध	गडूध	३४०	१	२८	वसी	वसी
३४३	२	१६	वकतर	वकतर	३४३	१	२३	लिपे	लिपे
३४५	१	१६	अत्रिष्कूटे	अत्रिष्कूटे	३४६	१	७	जभाई	जभाई
३४५	२	२	साघाणर-	साधारण	३४६	२	६	मौजदगी	मौजदगी
३४७	२	७	प सिल	पेंसिल	३४६	२	२१	पदल	पैदल
३४७	२	६	मिच	मिचें	३४६	२	६	आला	ओला
३४७	२	३१	अदवि	अदवि					

প্রকাশকের নিবেদন

আগাদেব প্রতিষ্ঠান বয়স্ক শিক্ষা ব্যতীত আর অন্য কোন বিষয়ে পুস্তক প্রকাশ কবে না। আগাদেব দেশেব প্রকাশকেবা সাধারণতঃ স্থল পাঠ্য বা উপস্থানাদি প্রকাশ কবেন, কেননা তাঁহাদিগেব লাভেব দিকে দৃষ্টি না বাধিলে চলে না। আগাদেব উদ্দেশ্য হইল জাতিব সেবা। জাতিব সেবা কবিত্তে গেলে লাভ হওয়া ত দুবেব কথা, সময় সময় ববেব কডি কিছু বাহিব হইয়া যায়। এটা আগাদেব নেশা, নেশা নিজেব বোঁকেই কাজ কবে, লাভ লোকমান খতায় না। সেই নেশাব বশেই আমবা এই বাংলা-হিন্দী কোশটি বহু চেষ্টায় প্রকাশ কবিলাম।

গোপালদা এই বয়সেও কল্প শরীবে অমাহুবিব পবিশ্রম কবিয়া এই পুস্তক-খানি সম্পূর্ণ কবায় জাতিব বড় একটা সেবা কবাব সুযোগ পাইল আমাদেব এই প্রতিষ্ঠান। তাঁহাব এই অসাধারণ সেবায় মুগ্ধ হইয়া ভাবতীষ সবকাব বাহাদুর তাঁহাৰ জন্ত মাসিক শতাধিক টাকা পেন্সনেব ব্যবস্থা কবিয়াছেন। তিনি শতাব্দী হইয়া জীবিত থাকুন আর জাতিব সেবায় আবও কিছু লিখুন, ভগবানেব নিকটে আমাদেব ইহাই প্রার্থনা।

মেনার্স বঘুনাথ দত্ত এও সন্দ আগাগোড়া কাগজ বোগান দিয়া যে সাহায্য কবিয়াছেন তাহা অমূল্য। আমাদেব মত অব্যবসায়ী ও নিঃসহল প্রতিষ্ঠানেব পক্ষে এত ব্যয়বহুল কাজ সম্পন্ন কবা সম্ভব হইত না, যদি না তাঁহাবা সাহায্য কবিত্তে আগাইয়া আনিতেন। তাঁহাদিগেব নিকটে বখন আমবা এ প্রস্তাব উপস্থিত কবি, তখনই তাঁহাবা এ বিষয়ে উৎসাহ দিয়া বলেন, ভাবনা কি, কাজে নেমে পড়ুন, কাগজেব অভাব হবে না। তাঁহাদিগেব নিকটে আমবা চিবকৃতজ্ঞ।

পাইকপাড়া চলন্তিকা প্রেনেব সুযোগ্য ম্যানেজার শ্রীনগেন্দ্র নাথ মাল্লা মহাশয়েব আমাদেব এই কাজে অকৃত্রিম অনুবাগ না থাকিলে, এ পুস্তক ছাপা আমাদেব পক্ষে অনন্তব হইত। অনুজ্ঞাপম ভাবতী বুক ষ্টলেব স্বত্বাধিকারী শ্রীমান হরীকেশ বাবিক আগাদেব এই জাতি সেবা মূলক কাজে নানাবিধ উপায়ে সাহায্য কবিয়া আমাদেব বে স্বণে বন্দী কবিয়াছেন, তাহা কোন দিন শোধ হইবাব নয়।

ইতি—

সম্পাদক

বেঙ্গল ম্যাস এডুকেশন সোসাইটি

All rights reserved



